नामनिष्ठ संत

प. पू. श्री प्रेमभिक्षुजी महाराज

पत्र प्रसादी

वन्दे वन्दे पुनर्वन्दे भक्तिविनयपूर्वकम्।
प्रचारकं राम नाम्नः प्रेमभिक्षु महर्षिण्॥

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

पत्र प्रसादी

श्री प्रेमभिक्षुजी महाराज

संकलनकर्ता

आयोध्या प्रसाद मिश्र

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

संकलक, सम्पादक एवं प्रकाशक

अयोध्या प्रसाद मिश्र

मकान नं. ५५, हरिओमनगर विभाग-४,
डी-केबिन, साबरमती, अहमदाबाद (गुजरात)
मो. : ९४२७४५४३२३

प्रथम संस्करण
संवत २०६६ "गुरुपूर्णिमा"
२५, जुलाई २०१०

आवृत्तियाँ : १०००

निम्नतम मूल्य : रु. 200

टाईप सेटींग :
मानसी ग्राफिक्स
नर्सरी, लक्ष्मीनगर, साबरमती,
अहमदाबाद. दूरभाष : ९८२४०५८६८७

मुद्रक :
श्री गणेश ओफसेट
शुभ लाभ ईन्ड. ऐस्टेट,
अंबिका आईस फेकटरी सामने,
तावडीपुरा, अहमदाबाद-४.

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....
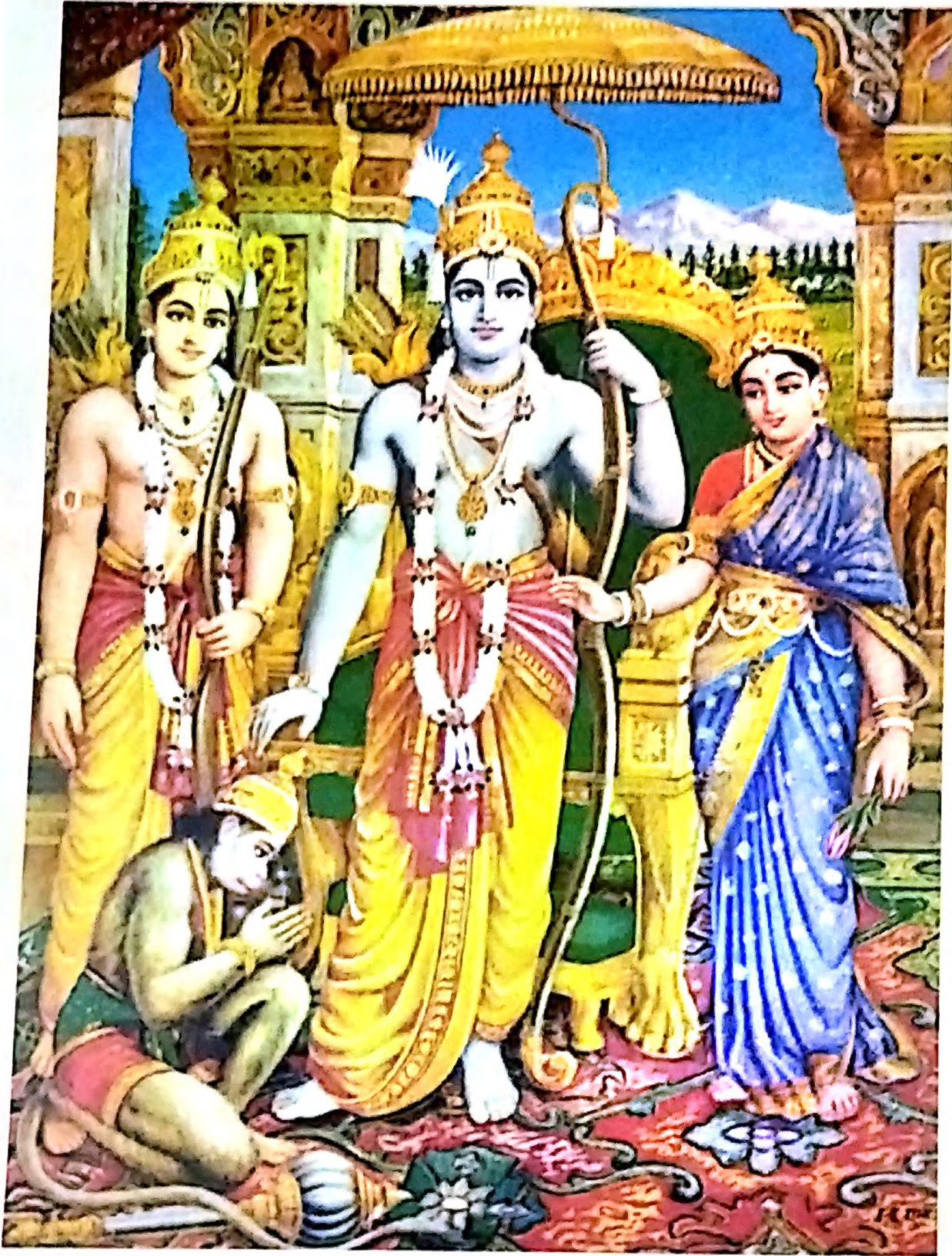
श्री राम जय राम जय जय राम...

नीलांबुजश्यामल - कोमलांगं, सीतासमारोपित वामभागम् ।
पाणौ महासायक चारु चापं, नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

आत्म निवेदनम्

परम प्रेमस्वरूप पू. महाराजश्री की स्मृति में यह ग्रंथ समर्पित है ।

अपने परम पूज्य माता-पिता सह श्री कमलाशंकर मिश्र के पावन चरण-कमलों में कोटि-कोटि नमन, जिनकी कृपा-प्रेरणा से मुझे परम संत श्री प्रेमभिक्षुजी महाराज का शुभ दर्शन प्राप्त करने एवं उनके सानिध्य में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा जिनकी कृपा-प्रेरणा सह आशीर्वाद से ही प्रस्तुत पुस्तक "पत्र प्रसादी" के प्रकाशन का दुर्लभ कार्ये करने में मैं समर्थ हो सका ।

"पत्र प्रसादी" एक विशालकाय ग्रन्थ बन गया है । इसमें अपेक्षाकृत अधिक श्रम करना पड़ा है । गुजरात में हिन्दी प्रकाशन के लिए समुचित उपलब्धता न होने के कारण इसके प्रकाशन में बहुत कुछ सावधानी रखी गई फिर भी हिन्दी साहित्य एक ऐसा महासागर है जिसमें गोताखोर भी डूब जाते है । अत: इस ग्रन्थ में अनेकों भूलों की संभावना दिखाई देती है, सुज्ञ पाठकों से नम्र निवेदन है कि ऐसी भूलो को पढ़कर सुधार लें और मुझ अल्पज्ञ को क्षमा करने की कृपा करें ।

जो भरा नहीं निज भावों से जिसमें बहती रसधार नहीं ।
वह हृदय नहीं है पथ्थर है, जिसे राम नाम से प्यार नहीं ॥

श्री प्रेम कृपा कृतज्ञ
अयोध्या प्रसाद मिश्र

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

अनुक्रमणिका

श्री राम जय राम जय जय राम...

॥ ॐ श्री रामदूतं शिरसा नमामि ॐ ॥
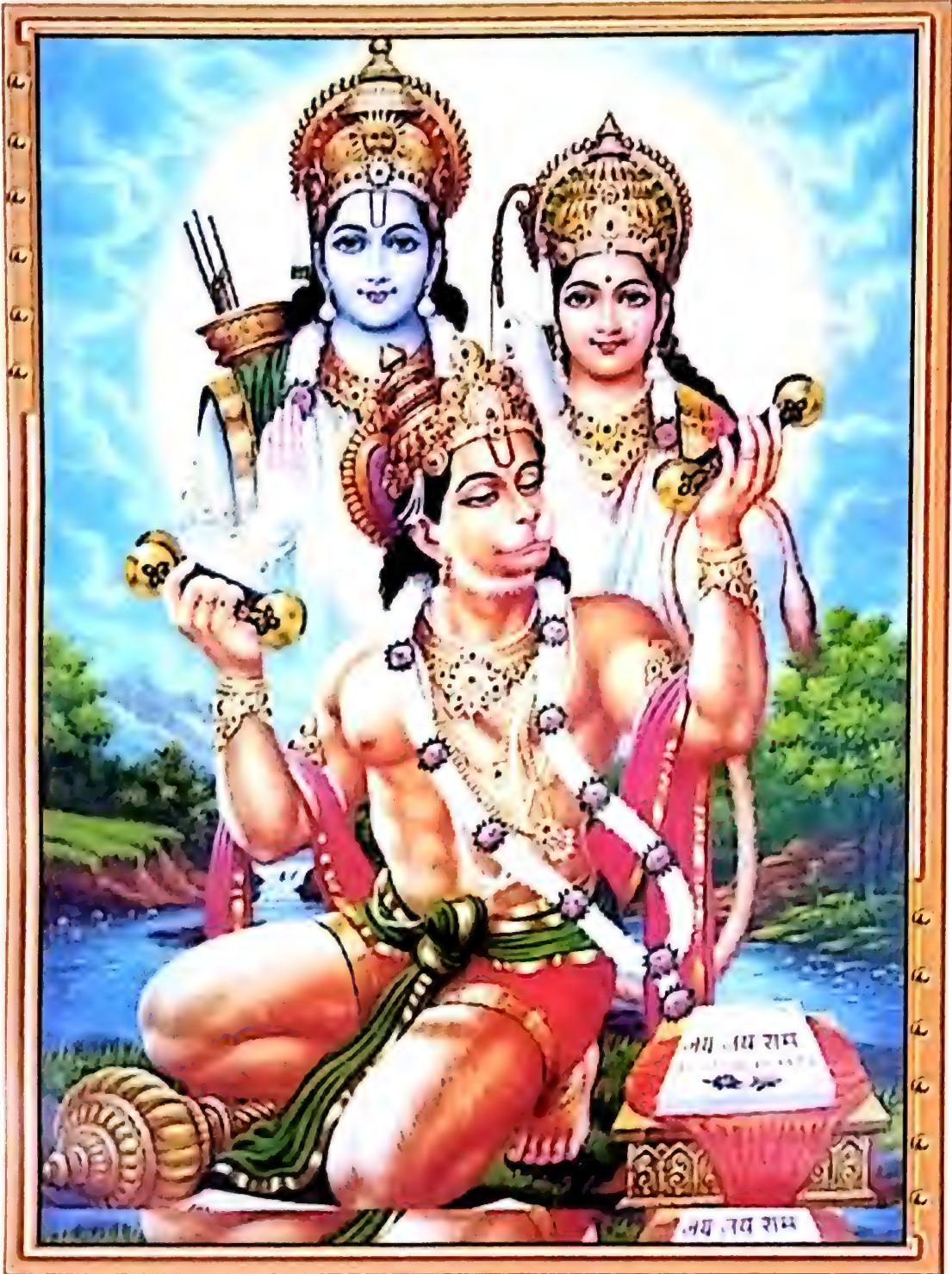
सुमिरि पवनसुत पावन नामू ।
अपने बस करि राखे रामू
लिये दोउ जन पीठ चढ़ाई

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री सद्‌गुरुदेव चरण कमलोभ्यो नमः

प्रस्तावना...

बचपन से ही माँ-बाप के दिये संस्कारो के कारण मुझे धर्म से बहुत ही लगाव है । यहाँ आने पर ऐसे लोगों से मेरा सम्पर्क हुआ जो भगवन्नाम संकीर्तन से संत महात्माओं तथा रामायण, गीता भागवत कथा से जुड़े हुए थे । यहाँ पर प्रायः हर शनिवार को सायं ६-७ बजे से नाम संकिर्तन शुरु किया जाता था और रविवार सायं ६-७ बजे पूर्णाहुति हो जाती थी कारण नाम संकीर्तन करनेवाले प्रायः सभी रेल कर्मचारी थे रविवार को सभी लोगों की छुट्टी रहती थी इसलिए शनिवार सायंकाल से नाम संकीर्तन शुरु हो जाता था । हर वर्ष चैत्र रामनवमी को ९ दिवसीय अखंड हरिनाम संकीर्तन का आयोजन सीमेन्ट फेक्टरी साबरमती में किया जाता था । उस नाम संकीर्तन में 'हरे राम... हरे राम.. राम राम हरे हरे' 'हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे' ।

इसी बीच में मेरे पूज्य गुरु भाई नाम निष्ठ धर्मानुरागी श्री कमलाशंकरजी से विशेष अनुराग हो चुका था । सभी धर्मपरायण धर्मानुरागी भक्तों को बुलाया और महाराज श्री के नाम निष्ठा नाम संकीर्तन के बारे में चर्चा कर ४० दिवसीय अखंड हरिनाम संकीर्तन के लिए संकल्प किया ।

महाराजश्री की स्वीकृति लेने जामनगर गये । पूज्य श्री को अपने विचारो से अवगत कराया । नाम संकीर्तन में आने के लिए सविनय निवेदन किया जिसे महाराज श्री ने सहर्ष स्वीकार कर लिया ।

पूज्य श्री प्रेमभिक्षु जी महाराज के सानिध्य में आने से पहले से ही नव दिवसीय अखंड हरिनाम संकीर्तन का आयोजन बहुत पहसे से हर वर्ष चैत्र रामनवमी के शुभ अवसर हम लोग करते आ रहे थे इस अवसर पर 'हरे राम... हरे राम.. राम राम हरे हरे' 'हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे' । महाराज श्री के सम्पर्क में आने के

बाद श्रीराम जय राम जय जय राम बीज मंत्र से हम लोग भी जुड़ गये ।

सं. ई. १९६७ दिसम्बर में श्री नाम महाराज श्री प्रभु कृपा प्रेरणा से प्रेरित हो श्री हनुमानजी मंदिर राणीप गांव में ४० दिनों के नाम संकीर्तन के शुभ अवसर पर पदार्पण कर तारक मंत्र श्रीराम जय राम जय जय राम उनके द्वारा ही श्री वीरपुङ्गव श्री हनुमंतलालजी के सांनिध्य में शुभारंभ किया गया ।

महाराजश्री के नाम संकीर्तन तथा दिव्य भावावेश को देखकर मानव मेदनी उमड़ पड़ती थी जो उनकी सुमधुर नाम संकीर्तन की लहरियों को सुन जाता था वह बिना आये रह ही नहीं सकता था । उनके संकीर्तन से लोग आकर्षित हो ८-१० घन्टे तक बैठकर भाव विभोर हो मंत्रमुग्ध बनकर बेभान से हो जाते थे, कुछ भावविभोर हो नाच उठते थे । मानव मात्र को कौन कहे मानो पेड़-पौधे, पशु-पक्षी उनकी धुन की स्वर लहरियों से आकर्षित हो आनन्द विभोर झूमते थे ।

महाराजश्री के साथ होने के कारण उनके सत्संग, प्रवचन नाम संकीर्तन, दिव्यभावाभेष का मुझ पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा जिसका वर्णन मेरे लिए अवर्णीय तथा असम्भव सा ही है । दिव्य भावावेष में उनके अन्दर कई स्वरुपों का दर्शन हुआ राणीप के नाम संकीर्तन से मुझ पर इतना गहरा प्रभाव हुआ दिन रात यहीं रहकर नाम संकीर्तन में लीन हो जाता था न खाने की न सोने की याद आती थी ।

महाराजश्री धुन में ८ बजे के आस पास बैठते थे और करीब २ या २-३० बजे उठते थे । वे नाम संकीर्तन के द्वारा अपने सुमधुर स्वर से धीरे-धीरे उन्मादित कर सबको भाव विभोर बनाकर स्वयं दिव्य भावावेष में नाच उठते थे उस समय इस दृश्य को देखकर सभी लोग मंत्र मुग्ध हो बेसुध हो एक स्वर से जोर-जोर से इस मंत्र का उच्चारण करने लगते थे, कुछ लोग भाव बिह्वल हो रोने लगते थे किसी को किसी से कोई रिश्ता नाता नहीं रहता था एक मात्र राम नाम से जुड़ जाने से बाह्य चेतना भंग हो जाती थी ।

महाराज श्री ६-६-८-८ घण्टे तक दिव्य भावावेश में खड़े हो कर संकीर्तन करते थे तो कभी श्रीराम, श्रीकृष्ण कभी श्री हनुमानजी का, भगवान शंकरजी, दुर्गाकाली के स्वरुपो का भी मैंने उनके अन्दर दर्शन किया । विकराल स्वरुप होने के कारण

कितने लोग तो डर भी जाते थे ।

धीरे धीरे समय गुजरता गया और संकीर्तन की पूर्णाहुति हो गई उसके बाद ३ बजे नगर कीर्तन का प्रोग्राम था । नगर कीर्तन १५ किलो मीटर लम्बा था उसमें हाथी-घोड़े, कार, ट्रक, ऊंटगाड़ी, बैलगाड़ी आदि सभी साधन सम्मिलित थे नगर कीर्तन में करीब १२-१३ घण्टे का समय लगा ।

इसी प्रकार ई. सं. १९६८ न्यु रेलवे कोलोनी साबरमती में ४० दिन का अखण्ड हरिनाम संकीर्तन का आयोजन किया गया । पूज्य महाराजश्री के सांनिध्य में उनके संकीर्तन में सारा वातावरण ढोलक, झाल, मंजीरों, करतालो के नाद से निनादित हो गूंज उठता था । आनन्द विभोर हो महाराजश्री दिव्य भावावेष में लीन हो संकीर्तन करने लगते थे तो उस समय का दृश्य देखते ही बनता था ।

जब से महाराजश्री का सानिध्य प्राप्त हुआ उसी समय से नाम संकीर्तन में इतना लीन हो गया कि जहाँ भी प्रोग्राम संकीर्तन का होता था मुझे बुलवाते थे उनके सानिध्य में तीन या चार बार दादा गुरुश्री काश्मीरी बाबा की पूण्यतिथि में भी सम्मिलित होने का महाराज श्री की कृपा प्रेरणा से सुअवसर प्राप्त हुआ था । आज भी मैं अनुभव करता हूँ कि वह कृपादृष्टि मेरे उपर सतत वरस रही है ।

महाराजश्री का अंतिम प्रोग्राम खाड़िया चार रस्ता, जमालपुर, अहमदाबाद में था । मुझे आदमी बुलाने के लिए आया और रात को १०-१५ संकीर्तन करने वालों को साथ लेकर पहुँचा । उस समय मेरा अनुष्ठान चल रहा था, मेरी दाढ़ी काफी लम्बी हो चुकी थी जैसे ही साष्टांग दण्ड प्रणाम करने के लिए झुका वैसे ही पूछ बैठे कि दाढ़ी इतनी लम्बी क्यों हो गई है ? मैंने उनसे कहा आप मिल गये इसलिए अब निकल जायेगी और संकीर्तन मंडली के साथ डाकोरजी में जाकर निकलवा दिया और फिर नाम संकीर्तन करते हुए वापिस घर आये । जहाँ भी नाम संकीर्तन होता था मेरे ठहरने का प्रबन्ध भी महाराजश्री के ही साथ होता क्योंकि मेरे ऊपर उनकी विशेष कृपा थी, उनके सानिध्य में रहने से मुझे बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त हुआ ।

महाराजश्री जब भी अहमदाबाद आते थे तो उनका ठहरने का प्रबंध श्री पुष्पनाथ महादेव मंदिर, पालड़ी में श्री रसिक महाराज के साथ होता था । मैं महाराजश्री के

निकटस्थ होने के कारण मन की भी बातें बतलाते थे उन्होंने कहा कि लोगों को इतना समझाया कि मेरे सत्संग में कुछ नहीं रखा है जितनी देर सत्संग सुनोंगे उतनी देर नाम संकीर्तन करोंगे तो तुम्हारा परमकल्याण होगा, लेकिन कोई मानता नहीं है अब तो ईश्वर से यही प्रार्थना है कि इस शरीर को उठा ले। अल्पज्ञ होने के कारण उनके इशारे को समझ नहीं पाया और अब पश्चाताप के सिया और कुछ नहीं रहा।

इन उपरोक्त बातों से मैं अत्याधिक प्रभावित हो तथा महाराजश्री की कृपा प्रेरणा से प्रेरित हो उनके प्रवचन तथा पत्र प्रसादी को संकलित कर पुस्तक का स्वरुप देने का भाव मेरे मन में स्वतः उत्पन्न हुआ। स्थिति अच्छी न होने के कारण थोड़ा निराश तो हुआ पर गुरुदेव की कृपा दृष्टि होने के कारण हर जगह हर काम में सफलता प्राप्ति हुई। प्रवचन टेप करने के लिये टेप रिकार्ड सोनी कैसेट नेपाल से लाया जहाँ-जहाँ भी प्रवचन उपलब्ध थे उनका टेप किया ।

ततपश्चात् इस कार्य से निवृत्ति हुआ कि उनके पत्रों का संग्रह करने में लग गया। इसके लिए मुझे बहुत सी कठिनाईयों का सामना भी करना पड़ा। पत्र के लिए बम्बई, बड़ौदा, पूर्व चम्पारण, मुझफ्फरपुर कई बार जाना पड़ा। चन्द्रेश्वर सिंह सराठा ने महाराजश्री का लिखा हुआ पत्र मुझे पुस्तक का स्वरुप देने के नाते तुरन्त दे दिया। कई जगहों से झेरोक्ष करा कर लाया। इस प्रकार पत्रों का संग्रह करना और पत्रों को अपने हाथ से फिर लिखना पड़ा कारण कि कही भी महाराजश्री के पत्रों में जगह नहीं रहती थी और लिखने में अक्षर बहुत ही छोटे होते थे। कम्प्युटरवाले पढ़ भी नहीं पाते थे।

महाराजश्री ने काकूभाई को लगभग १५० पत्र लिखे थे काकूभाई ने एक दिन महाराजश्री से कहा कि मैं इस पत्रों को छपा दूँ तुरन्त महाराजश्रीने जवाब दिया कि यह तेरा काम नहीं है जब समय आयेगा तब छप जायेगा।

पत्र प्रसादी के संग्रह के लिए आज तक किसी ने मुझसे चर्चा भी नहीं की यह खुद अन्तर आत्मा से प्रेरित हो प्रवचन तथा पत्र का संग्रह कर पुस्तक का स्वरुप प्रदान करने का भाव मुझमें खुद ही आया और आज ७-८ वर्षो से की गई तपस्या अब पूरी होने जा रही है।

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

इस कार्य के संपादन के लिए श्री विनूभाई महेता महुवा तथा कनुभाई गांधी महुवा ने विशेष तत्परता दिखलाई और इस कार्य हेतु मुझे प्रेरित करते रहे । स्वेच्छा से आर्थिक मदद भी प्रदान की जिसके लिए मैं उनके विशेष अनुगृहित हुँ इसके अलावा मुकेशभाई जामजोधपुर, एम. के. सिंह (बिहार), सुनिल साहू (साबरमती गोकुलधाम) जगुभाई, भोजाभगत ढाक पाटण के लिए सदा विनती भाव से प्रार्थना करता हुँ कि ईश्वर सदा नामसंकिर्तन में इन लोगों की भावना को अपनी कृपा प्रदान कर कृतार्थ कर परम मंगलमय, आनन्दमय, कल्याणमय जीवन जीने की राह दिखलावें ।

जिस पुण्य भूमि तथा महान आत्माओं ने अपने आत्मीय बल से मैंगनेट की तरह महाराजश्री जैसे को आकर्षित कर लिया उस भूमि तथा वहाँ के लोगों को मेरा शत् - शत् नमन ।

जिस भूमि में महात्मा गांधी ने जन्म लेकर,

सत्य अहिंसा का सबको सच्चा पाठ पढ़ाया ।

उसी पूण्य भूमि में श्री प्रेमभिक्षुजी सन्यास ग्रहणकर,

नाम संकीर्तन का सबको सच्चा मार्ग दिखलाया

अस्तु :- नाम संकीर्तन के अलावा ईश्वर प्राप्ति का अन्य कोई भी साधन एवं कर्म इस कलिकाल में लागू नही पड़ता, कारण हर विधान तथा कर्म दोषपूर्ण हैं । मानव जीवन का कल्याण होना एक मात्र श्री प्रभु कृपा ही है । उस कृपा की प्राप्ति का एक मात्र अमोघ साधन उसका नाम ही है क्योंकि नाम से नामी का सम्पर्क होता है रूप से नहीं ।

श्री प्रेमचरण शरण अनुरागी
अयोध्या प्रसाद मिश्र

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

संक्षिप्त जीवन दर्शन

मिथिला का पावन भू-भाग, बिहार प्रदेश के सीतामढ़ी जनपदान्तर्गत ग्राम छतौनी में उन्नीसवी शताब्दी के चतुर्थ चरण में भक्त दम्पति श्री दिनकर सिंहजी एवं माता राजवती रहा करते थे । कृषि ही आजीविका का मुख्य स्रोत था । गृह कार्य से निवृत्त हो कर बड़ी श्रद्धा और निष्ठा के साथ भगवद् भजन घंटों किया करते थे । अतिथि सेवा और भूखों को अन्नदान उनका मुख्य व्रत था । इतना कुछ होने के बाद भी माता राजवती देवी की गोद सूनी होने के कारण दोनों पति-पत्नी सदा चिन्तित रहा करते थे ।

श्री दिनकरसिंहजी नित्य की भाँति स्नानादि क्रिया से निवृत्त होकर अपने घर के समीपस्थ श्री राम मंदिर में पूजा के आसन पर बैठ कर ध्यान मग्न हैं उसी समय देखा की आराध्य देव भगवान श्री राम सामने उपस्थित है और बड़े ही मधुर स्वर में मुस्कराते हुए कह रहे हैं - भक्त ! तु चिन्ता मतकर कुछ समय के बाद तुझे एक दिव्य रत्नमणि पुत्र की प्राप्ति होगी जो तुम्हारा नाम चन्द्र, सूर्य की भाँति अजर-अमर कर जाएगा ।

पूजा अर्चना के बाद जब वह घर वापस आये तो उनका मुख मंडल प्रसन्नता से थिरक रहा था और आँखों से प्रेमाश्रु टपक रहे थे । उनकी इस दशा को देखकर धर्म परायण माता राजवतीदेवी अपने जीवन साथी (पतिदेव) से उनके मुख मंडल पर आनन्द स्मित हास्य को देखकर उनसे पूछ उठती है ।

स्वामी आज आप बहुत प्रसन्न हैं मुझे लगता है कि कोई शुभ मंगलमय समाचार सुनाने वाले हैं । देवी ! आज उस दयामय, करूणामय, दिनबन्धु की असीम कृपा हुई है जब मैं ध्यानवस्था में था देखा की आराध्यदेव रघुकुल नायक भगवान श्रीराम प्रत्यक्ष खड़े हैं और कह रहे हैं वत्स ! तु चिन्ता मत कर, तुझे एक दिव्य पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी जो तेरे नाम का संसार में.....

जय जय रघुवीर समर्थ की जय

श्री राम जयराम जयजय राम

ध्यान मूलं गुरु मूर्ति, पूजा मूलं गुरु पदम् ।
मंत्र मूलं गुरु वाक्यं, मोक्ष मूलं गुरु कृपा ॥
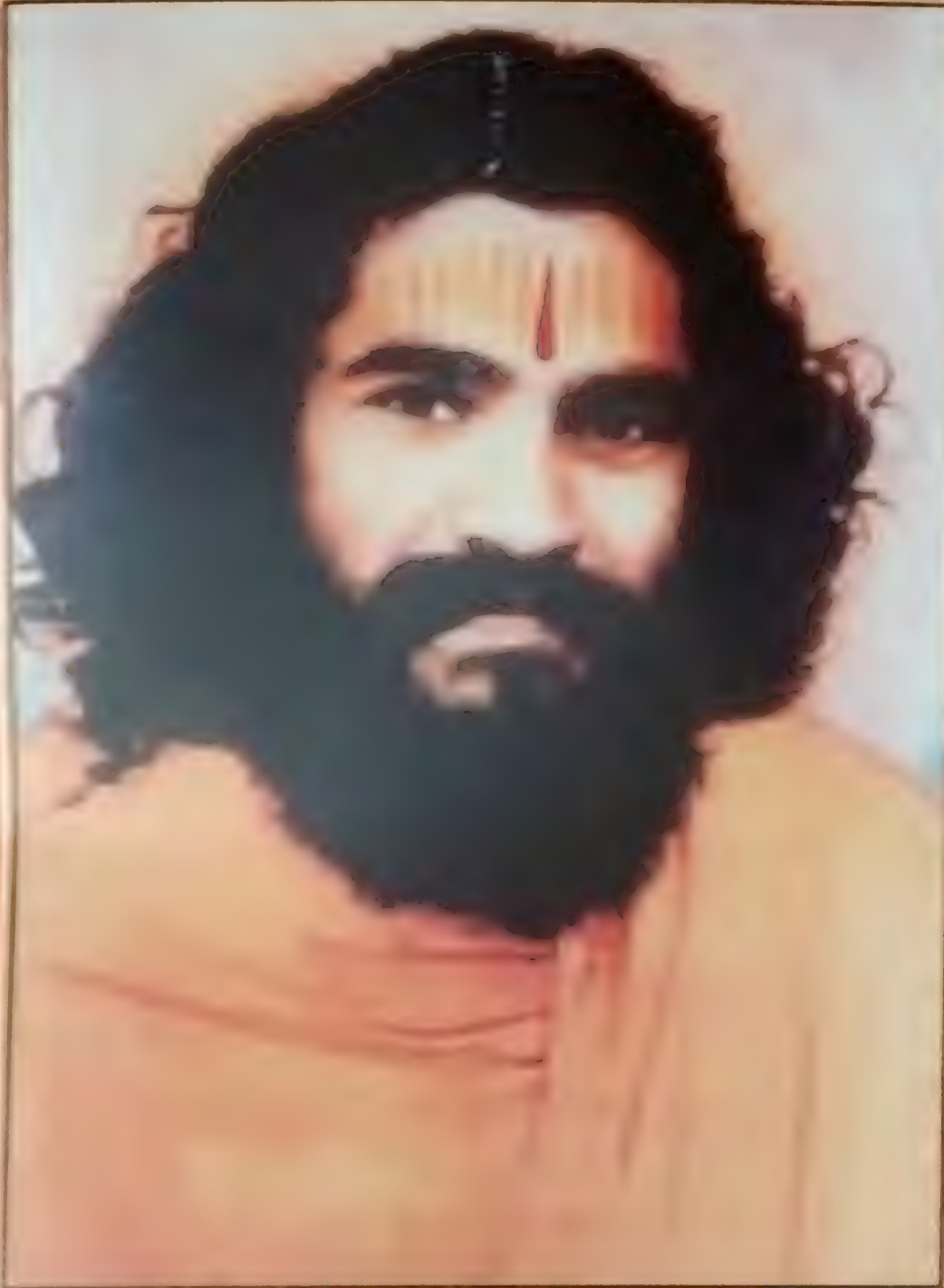
करुणावतार सद्गुरुदेवश्री काश्मीरी बाबाजी

"जय श्री राधे"

मातुश्री राजवतीदेवी यह शुभ समाचार सुनते ही आनन्द विभोर हो नाच उठी और करूणामय परम कृपालु अपने आराध्य देव प्रभु श्रीराम की कृपा पर कृतार्थ होकर बार-बार दुहाई देने लगी ।

१० महिने के बाद ही (ई. १९१२ के मध्य) मातुश्री राजवतीदेवी एवं पिता श्री दिनकरसिंहजी को एक दिव्य रत्नमणि पुत्र की प्राप्ति हुई जिसका नाम इन लोगों ने 'गया' रखा ।

माता राजवतीदेवी कहने लगी, धन्य है प्रभु जो आप मुझ अभागन पर कृपा कर कृतार्थ कर दिया और इसी तरह हँसी खुशी दो वर्ष बीत गये ।

दिनकरसिंहजी आज सुबह से व्यस्त हैं आज अपने प्राण-प्रिय पुत्र गया के जन्म दिवस के अवसर पर उन्होंने विशिष्ट भगवत् प्रेमी संतो को आमंत्रित किया है । श्री मद्रासी बाबा, श्री बोरा बाबा, रामचरण बाबा, रामलखन बाबा आदि महात्मा गण पधारनेवाले है माता राजवतीदेवी प्रसाद बनाने में जूटी हुई हैं ।

संतगण पधारे । संकीर्तन प्रारम्भ हुआ । माता राजवतीदेवी ने बालक 'गया' को गोद में लेकर उसके मस्तक को संतों के पावन चरणों का स्पर्श कराया । संतगण ने बड़ी प्रसन्न मुद्रा में आशीर्वाद प्रदान किये । श्रीराम लखन बाबा बालक 'गया' को अपने गोद में लेकर बोले - बोलो ! बच्चा जय सीया राम जय जय सीया राम... बालक ताली बजाने का भाव प्रकट करते हुए बोला... जय... सीआ आम जय जय सीआ... आ... म । उपस्थित जनसमुदाय आश्चर्य चकित हो गया । दो वर्ष के बालक के मुख से ऐसी ध्वनि का निकलना सचमुच आश्चर्यजनक ही तो था और संतो ने भविष्यवाणी की कि यह बालक महान संन्यासी बनेगा चंद्र सूर्य की भांति बालक 'गया' की किर्ती इस धरा पर सदा कायम रहेगी

यावत चंद्र दिवाकरौ, तावत पुत्रस्य, यशकीर्ति ।

इस प्रकार शैशव से ही बालक 'गया' में दिव्य लक्षण प्रकट होने लगे थे । कुछ और बड़ा होने पर वे भगवान की पूजा आरती की भी नकल किया करते है । और संख की ध्वनि श्रवणकर दौड़ पडते और बड़ी तन्मयता से भगवत् अर्चाँ को देखते, पुष्प चयन कर भगवान को समर्पित करते । कभी-कभी तो इतने ध्यानस्थ हो जाते

थे कि उनको खाने पोने की भी सुध भी नही रहती थी। माता पिता के झकझोरने पर ही बाह्य चेतना होती थी **"इस प्रकार होनहार विरवान के होत चीकने पात"** वाली कहावत चरितार्थ होने लगी थी। प्रारब्ध क्रमानुसार भक्ति का बीज तो जन्मजात ही था, अनुकूल वातावरण पाते ही वह पल्लवित - पुष्पित होने लगा।

गयासिंहजी की प्रारम्भिक शिक्षा छतौनी गाँव के पाठशाला में हुई, तत्पश्चात इनका नामांकन शिवहर मिडिल स्कूल में हुआ वहाँ से मिडील तक की शिक्षा प्राप्त कर मुजफ्फरपुर के मारवाड़ी उच्च विद्यालय में वे दाखिल हुए तथा वही से सं. १९३४ में मैट्रिक की परीक्षा द्वितिय श्रेणी में उतीर्ण कर तथा कई प्रतियोगिताओं में भाग लेकर विद्यालय का गौरव बढ़ाया।

मैट्रिक की परिक्षा जब नजदीक थी उसी समय उनके आँख में एक बड़ा फोड़ा हो गया जिस कारण हाथ से लिखने में वे बिल्कुल अस्मर्थ से हो गये थे, अगले दिन ही परिक्षा में भाग लेना था। वेदना असह्य होते हुए भी ईश्वर के प्रति अडिग श्रद्धा विश्वास होने के कारण हतोत्साह नहीं हुए रात्रि में स्थानीय गरीबनाथ महादेव के प्रसिद्ध मंदिर में पहुँचे और सिद्धासन लगाकर **"ॐ नमः शिवाय"** इस त्राण मंत्र का जप प्रारम्भ किया रात्रि भर आर्तस्वर से वे मंत्रोच्चारण करते रहे। ब्रह्म मुर्हुत में जब ध्यानस्थ थे तभी भगवान शंकरजी की कृपा हुई फोड़ा फूट गया सारे कष्ट दूर हो गये और नियत समय पर परीक्षा देकर सफलतां प्राप्त की।

उन्हीं दिनों भूकंप का प्रकोप हुआ लोगों के जानमाल काफी क्षति हुई, करूणागार श्रीगया सिंह का हृदय दहल गया, उन्होंने अपने साथियों को एकत्र करके **"भूकंप पीड़ित सेवा संघ"** की रचना की और जी जान से दुखियों की सेवा में लग गये।

महात्मा गांधी के प्रत्यक्ष जीवन तथा आत्मकथा का गयासिंह के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। गांधीजी के सम्पर्क में आने के बाद उन पर काफी प्रभाव पड़ा, आत्म संयम, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य अपरिग्रह, दया, क्षमा, देश-भक्ति तथा परोपकार भाव का समावेश उसी समय से हुआ।

ई स. १९३० में महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारत की स्वतंत्रता के लिए जो आंदोलन हुआ था उसमें उत्साहपूर्वक भाग लिया और इस क्रम में जेल यात्रा भी करनी पड़ी थी।

गयासिंह को खेल-कूद से भी बहुत लगाव था वे सघन आभ्यास में जितने निपूण थे उतने खेलकूद में भी, कबड्डी, फूटबाल के अच्छे खिलाड़ी थे कुस्ती लड़ने का अच्छा शौक था ।

एकबार गयासिंहजी घर से विद्यालय जा रहे थे बैलगाड़ी में सवार होकर एक वहु अपने ससुराल जा रही थी कुछ लुटेरो ने गहने छीनने का प्रयास किया उनकी संख्या अधिक होने पर भी सबको मार भगाया और उसे उसके ससुराल तक पहुँचाकर दम लिया ।

ई. स. १९३४ में मैट्रिक की परिक्षा पास करके उच्च शिक्षा के लिए मुजफ्फरपुर के जी. बी. बी. कॉलेज (Great Bhumihar Brahaman College) में दाखिल हुए । इनके अध्ययन का विषय कला था । परिवारिक स्थिति अच्छी न होने के कारण विवशतया उन्होंने गुरुवृत्ति (ट्यूशन) का सहारा लेते हुए अध्ययन का क्रम जारी रखा ।

तेजस्विता एवं चरित्र के निर्मलता के कारण अध्यापकगण के प्रिय पात्र बन गये थे जब कभी धार्मिक प्रोग्राम होते थे और उनसे बोलने के लिए कहा जाता था गीता, रामायण आदि ग्रंथो पर प्रकाश डालते थे तो अध्यापकगण मुग्ध होकर ए स्वर से बोल उठते थे कि गया एक दिन अवश्य महान बनेगा ।

ई. सं. १९३६ में इन्टर की परिक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद अपनी विद्यालयी शिक्षा समाप्त करके जिविकोपार्जन के लिए उत्तर प्रदेश के फरिन्दा चीनी मिल में लिपिक के पद पर नियुक्ति ली, वातावरण मनोनुकूल न होने के कारण त्याग पत्र देकर मुजफ्फरपुर फिर वापिस आ गये और भरण पोषण के लिए फिर गुरुवृत्ति (ट्यूशन) को ही अपनाया ।

समय निकाल कर प्रति दिन गरीबनाथ महादेव के दर्शनार्थ वे जाते थे । एकाग्रचित्त होकर घन्टों भगवान शंकर का पूजा और महिम्न स्तोत्र का पाठ करते-करते ध्यानास्थ हो जाते तथा बाह्य चेतना भी नहीं रहती थी । एक दिन काला नाग उनके मस्तक पर जा चढ़ा, दर्शकों ने हो हल्ला भी मचाया परन्तु वे शांत चित्त ध्यानस्थ रहे कुछ देर बाद जब आँख खुली तो सर्प वेष में शाक्षात शिव का दर्शन कर वे आनन्द विभोर हो नाच उठे ।

इसी बीच प्रभु कृपा से अबकारी विभाग में उपनिरीक्षक की नौकरी मिल गई । किन्तु वहाँ व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण क्षुब्ध होकर त्याग पत्र दे दिया । फिर कुछ समय बाद उच्चांगल विद्यालय मुजफ्फरपुर में ही संस्कृत शिक्षक के रूप में उनकी नियुक्ति हो गई । विद्यार्थीओ को उनकी पाठ्य पुस्तको का ही ज्ञान नही देते थे बल्कि उनमें सदाचार, सभ्यता एवं शिष्टाचार और धार्मिकता के भाव का भी ज्ञान प्रदान करते थे । कुछ समय बाद उनका वहाँ भी नौकरी से मन उचट गया और स्वतंत्र जीवन व्यतित कर अपने अधिक समय को भगवान की पूजा अर्चना में लगाना चाहते थे । अतः वहाँ से भी त्याग पत्र देकर घर वापस आ गये ।

समय वितता गया एक दिन मातुश्री राजवतीदेवी ने पुत्र गया को बुलाकर कहा देख बेटा मैं बुढ़ी हो चली अब मेरे से घर का काम-काज नहीं होता इसलिए अब तु अपनी शादी कर लें, यह सूनकर गयासिंह चौक पड़े और माँ को जवाब दिया कि ना... ना... मैं ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि मेरा सारा जीवन प्रभु चरणों में समर्पित हो चुका है । अपनी शादी न करने की जिद्द ठाने हुए गयासिंह अपनी मातुश्री के अनुराग भरे वचन के समक्ष आखिर कार शादी करने के लिए तैयार हो गये ।

सीतामढ़ी जनपदान्तर्गत रोहुवा निवासी श्री शिवधारीकुमार की सुपुत्री बच्चीदेवी से पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न हुआ । पाणिग्रहण संस्कार के प्रथम रात्रि में श्री गयासिंह ने वार्तालाप द्वारा इस संसार की असारता का ज्ञान कराया । प्रथम मिलन के अवसर पर ही विषय वासना, श्रृंगार रस के स्थान पर त्याग और वैराग्य भाव का उदय हुआ । यह संसार भोग भूमि नहीं त्याग भूमि है इस नश्वर संसार के सत्य का ज्ञान अपनी जीवन संगिनी सहधर्मिणी को उपदेश दिया और अच्छी तरह से समझाया । धर्मपत्नी बच्चीदेवी ने पति परमेश्वर की भावनाओं से ओत प्रोत हो उनके विचारो का समर्थ किया, इस प्रकार प्रभु मिलन की यात्रा शुरु हुई ।

जिन त्यागी वैरागी भक्ति परायण संतो के स्मरण मात्र से ग्रहस्थ जीवन पवित्र हो जाए यदि ऐसे संत महात्मा उनके घर पर आ जाय तो जीवन धन्य ही धन्य हो जाता है साथ ही उनके चरणस्पर्श पादप्रक्षालन और उनकी सेवा करने का अवसर मिल जाय तो ऐसे भाग्यशाली के भाग्य को क्या कहना ।

एक दिन संयोग से श्रीगयासिंहजी मुजफ्फरपुर रेल्वे स्टेशन पर फिर रहे थे अचानक उनकी आँखे एक गौरवर्ण दिव्य मूर्ति के उपर पड़ती है उन्हें देखते ही वे मुग्ध हो जाते हैं उनके अन्दर कोई पुरानी स्मृति गाद आ जाने से अवाक हो खड़े रहते हैं और देखते है महात्माजी कुछ जिज्ञासु भक्तों के साथ सत्संग वार्ता में लिन हैं वे उनकी अमृतमयी वाणी से आकर्षित हो वही एक कोने में बैठकर भावमग्न हो प्रवचन श्रवण करने हैं, एकाएक महात्माजी कि दृष्टि इनके उपर पड़ी, स्थिर दृष्टि से देखकर इनमें कुछ विशिष्ट संस्कार का अनुभव किया सत्संग समाप्त होने के बाद बुलाया और कहा : **"क्या नाम है तुमारा ?"** उत्तर देने में कुछ विलम्ब हुआ तो महात्माजी ने पुनः पूछा चौक गये ? बोलते क्यों नही ? धबड़ाते हुए जी... जी... मेरा नाम गयासिंह है । क्या व्यवसाय करते हो महात्माजी ने बड़े प्रेम से पूछा - जी... जी... ट्यूशन करता हूँ दुसरा कोई कार्य नही संकोच के साथ कहा । महात्माजी ने मुश्कराते हुए कहा बहुत अच्छा मास्टरजी, महात्माजी के तेजोमय मुख मंडल से प्रभावित हो उनके पावन पाद् पदमो में दंडवत् गिर पड़ते हैं ।

महात्माजी ने उनके मस्तक पर अपने कोमल हाथों से सहलाते हुए उन्हें उठाया । मस्तक पर हाथ फेरते ही मानों गयासिंह के हृदय में श्रद्धा भक्ति का स्रोत उमड़ पडा है और महात्माजी से पूछते है - बाबाजी क्या मुझ गरीब पर कृपा करेंगे । सशंक हृदय से उन्होंने महात्माजी से प्रार्थना की । मास्टरजी तुम अकेले गरीब थोड़े ही हो, गरीब तो सारा संसार है यह कहते हुए कहा :-

कबिरा सब जग निर्धना,
धनवन्ता नहि कोय ।
धनवन्ता तेहि जानिए,
जाहि राम-नाम धन होय ।

गरीबों का नाथ तो एक ही है कृपा करने वाला भी वही है रही बात मेरी, तो आप हुक्म किजिए -

"मेरी विनय है आप मेरी कुटिया पर चलने की कृपा करे ।"

"चलिए कहाँ जाना है गयासिंह चल पड़े ।"

गयासिंह उन दिनों मुजफ्फरपुर बालूघाट पर एक झोपड़ी बनाकर रहते थे । वही पर रहकर साधु संत की सेवा करते थे और उनकी कुटिया पर अवसर साधु संत आया ही करते थे । संत सेवा में उनकी बहुत निष्ठा थी । वही रहकर ट्यूशन द्वारा ही जीवन यापन करते थे ।

महात्माजी को अपनी कुटीया पर ले आए और यथासाध्य फूलफल से उनका स्वागत किया । ततपश्यात् गयासिंह को कृतार्थ कर महात्माजी प्रस्थान करने को तैयार हुए मैं अब चलूँगा, तु क्या चाहता है इतना कहते ही गयासिंह के नेत्रों से प्रेम बिह्वल आँसुओं की अविरल धारा निकल पड़ी साथ गला भी रूध गया केवल इतना ही कह पाते हैं **"जानत हहू पूछहु का स्वामी"** और उनके चरणों में लोट जाते हैं शिष्य को गुरु और गुरु को शिष्य मिल चुके हैं ।

महात्माजी काश्मीरी बाबा थे । उनका मूल नाथ श्री प्रेमानन्द था वे काश्मीर में ब्राह्मण कुल में पैदा हुए थे । लाहौर युनिर्वसीटी से एम.ए. की परिक्षा पास करने के पश्चाताप् मातुश्री से आज्ञा प्राप्त कर गृह त्याग कर दिया और संत जीवन अंगीकार किया । पुर्वजन्मों के शुभ संस्कारो से युक्त होने के कारण उन्हें किसी भी प्रकार की माया व्याप्त नहीं सकी । सर्प जिस तरह केचुल का परित्याग कर देता है उसी तरह से इन्होंने इस संसार का परित्याग कर दिया । देहरादून के टपकश्वर महादेव के मंदिर में घोर तपश्चर्या करके महादेव की घोर उपासना के फल स्वरुप वैष्णवी भक्ती प्रसाद स्वरुप प्राप्त हुई । चैतन्य महाप्रभु के उनके जीवन में काफी अच्छा प्रभाव पड़ा । काश्मीरी बाबा भगवन नाम संकिर्तन को भगवद् प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन मानते थे । गयासिंह से प्रथम मुलाकात हुई तो प्रवल आकर्षण के कारण मुजफ्फरपुर बार-बार आने लगे । प्रिय शिष्य गयासिंह के साथ हरिनाम संकीर्तन करते उनके संकीर्तन में दो धुन अत्याधिक महत्त्व पूर्ण थे :-

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
गोविन्द जय जय, गोपाल जय जय ।
राधा रमण हरि गोविन्द जय जय ।

उनकी वाणी में अलौकिक आकर्षण तथा मधुर मीठास था लोग उनके संकीर्तन

के सम्पर्क में आते भाव विभोर हो नृत्य करने लगते थे ।

प्रथम मुलाकात में दिव्य दृष्टि सम्पन्न श्री काश्मीरी बाबा गयासिंह के अन्दर सद्शिष्य का दर्शन किया । ई. सं. १९४२ प्रातःकाल का सुमधुर बेला है । मुजफ्फरपुर रेलवे स्टेशन पर उसस्थित जन समूह एक युवा संन्यासी को घेरे खड़ा है भगवा वस्त्र धारण किए तेजो दीप्त सुन्दर मुख मंडल पर मधुर स्मित हास्य अलौकिक आकर्षण झलक रहा है । कभी-कभी उनके मुख से **श्रीराम जय रा जय जय राम** की पावन ध्वनिं जुंग पड़ती है सन्यासी की आँखे बड़ी व्याकुलता से किसी अन्तरंग भक्त की पतिक्षा कर रही है भक्तों से वार्तालाप करते-करते स्टेशन पर आने वाली सड़क पर कभी-कभी पैनी निगाह से देख भी लेते हैं ।

गयासिंह दौड़ते हाफते हुए पहुँचे, उन्हें देखते ही काश्मीरी बाबा प्रसन्नता से उछल पड़े । गयासिंह दण्डवत करने के लिए झुके ही थे कि काश्मीरी बाबा ने उन्हें उठा लिया और मस्तक पर हाथ फेरते हुए बोले अभी तक क्या कर रहा था ? मैं कब से तुम्हारी राह देख रहा हूँ ।

महाराज श्री मैं आपको भेट समर्पित में लगा था इस कारण से देर होई गई । गयासिंह बड़ी कठिनाई से आठ आने इकट्ठा कर तीन आम लाये । काश्मीरी बाबा ने उन आमों को उपस्थित भक्तों में वितरित कर दिया यह देख गयासिंह को असह्य वेदना हुई कारण कि एक भी आम अपने लिए नहीं रखे, इसे तुच्छ समझ सबके सब बाँट दिये ।

अन्तर्यामी काश्मीरी बाब उनके भाव को समझ गये और हँसते-हँसते बोले :- अरे ! मास्टर जी खूद ही लाये और खूद ही बाकी रह गये यह कहकर खूद खिलखिला कर हँस पड़े और भक्त समुदाय भी । शर्मिन्दा हो गयासिंह दुःखी हो गये और उनके आँखों से आँसू टपक पड़े ।

काश्मीरी बाबा ने उन्हें दुःखी देख अपने पास बुलाकर कहा कि दुःखी क्यों होते हो देखो-देखो कमण्डल में एक आम तुम्हारे लिए और एक हमारे लिये । इस घटना से गयासिंह के उपर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा साथ ही गुरु के उपर संदेह होने के कारण आत्मग्लानि तथा पश्चाताप भी हुआ ।

काश्मीरी बाबा यात्रा पर थे उसी समय इनके शरीर में असह्य वेदना उठी, उस वेदना के निवारणार्थ अनेक उपाय किये पर विफल रहे अन्त में वेदना से तंग आकर आत्म हत्या करने की ठान ली उसी समय उनके समक्ष एकाएक काश्मीरी बाबा प्रकट हो गये बाबाजी के एक मात्र दर्शन मात्र से उनके शरीर की सारी वेदना समाप्त हो गई। बाबा जी बोले की जब कभी संकट आवे तो मेरा स्मरण करना स्वतः मैं तुम्हारे समाने उपस्थित हो जाऊँगा।

संत अपने दिव्य दृष्टि द्वारा अपने शिष्यों के पिछले अच्छे बुरे कर्मो के फल का पहले से ही अनुमान लगा लेते हैं। बुरे कर्मो का नाश इस जन्म में अपने आत्म शक्ति तथा आशिर्वाद द्वारा कर देते हैं। गयासिंह को आत्म साक्षात्कार कराने के लिए कृत संकल्प ले चुके थे। गयासिंह का मन गुरु शरणागति स्वीकार लिया और अब अध्यात्म के पथ पर अग्रसर हो प्रभु मिलन के लिए व्याकुल हो उठे।

व्याकुलता इतनी बढ़ गई कि एक क्षण भी घर रहना कठीन हो गया। श्री काश्मीरी बाबा द्वारा गृहत्याग की अनुमति न मिलने से वे सदा दुखी से रहते थे।

गयासिंह की उदासीनता को देख गुरुदेव श्री काश्मीरी बाबा से न रहा गया और गया को बुलाकर कहा : देख गया वृक्ष पर जब फल पक जाता है तो अपने आप ही धरासायी हो जाता है, उसी तरह जब तुझमें प्रबल वैराग्य का उदय हो जायेगा तो किसी से अनुमति लेनी नही पड़ेगी खुद गृहत्याग कर प्रभु मिलन की व्यग्रता से व्यथति हो स्वयं राह पर आरुढ़ हो जाएगा।

क्योंकि जो फानी दुनियाँ में अमर कहाने आते हैं।
वो कब माया मोह में फँस कर, अपना समय गवाते हैं॥

एक दिन अपने प्रिय शिष्य गया को बुलाकर कहा कि तु मुझ से क्या माँगता है। गुरु भक्ति और भगवन्नाम निष्ठा में खोय हुए शिष्यने माँग ही लिया-

"मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुर्रोकृपा"

गृह त्यागकर साधु जीवन बिताने को वे आतुर थे किन्तु गुरुदेव का आदेश था गृहत्याग के पूर्व माता जी से आज्ञा तथा आशिर्वाद प्राप्त करना जरूरी है।

अस्तु ! पूज्य महाराज श्री माताजी से आज्ञा प्रदान हेतु श्री काश्मीरी बाबाजी, रामलखनबाबाजी तथा मद्रासीबाबाजी को घर पर बुलाकर लाये, भोजनोपरान्त सुअवसर देख मद्रासी बाबा ने माता राजवती देवी से कहाँ मां ! तु बड़भागिन है जो गया जैसा भगवद् नाम निष्ठ पुत्र पाया ।

पुत्रवती युवती जग सोई । रघुपति भगत् जासु सुत होई ।
नतरुबाँझ भलि बादि विआनी । रामविमुख सुत ते हितहानी ॥

तेरा गया संन्यास ग्रहण कर अखंड साधना द्वारा भगवतप्राप्ति तेरी गोद को धन्य करना चाहता है यह सुनकर वात्सल्यमयी माता सहम उठी और गया की ओर देख फूट-फूट कर रोले लगी

कहि न जाई कछु हृदय विषाद् । मनहुं मृगी सुनि केहरिनादू ।
नयन सजल तन थर थर काँपी । मानहि खाई मीनजनु मापी ॥

महाराज श्री के पिता श्री बचपन में ही काल कवलित हो चुके थे । माता राजवती देवी दीन, हीन, मलीन एवं पति वियोग की दुर्दमनीय दशा को छाती पर पत्थर रख अपने दो पुत्रों का मुख निहार सहन कर रही थी । आज जेष्ठ पुत्र गया के विछोह की आशंका से आशंकित हो फूट-फूट कर रोने लगी ।

पूज्य श्री ने माता राजवती देवी को अश्रु भरे नयनों से निहाला और कहा - मां मुझे प्रेम पुलकित मन से प्रभु मिलन के लिए प्रसन्न चित से गृहत्याग की आज्ञा प्रदान करो जिससे मेरा कन्टक भरा पथ मंगलमय हो । हे ! माता तेरी कृपा से सदा, सर्वत्र आनन्द ही आनन्द होगा माँ रुन्द्ध कंठ से बोली बेटा मेरी क्या गति होगी ? तु ! चिन्ता मतकर जब तुम याद करोगी मैं तुरंन्त तुम्हारे पास मिलूँगा महाराज श्री के विनीत भाव से आकर्षित हो विवशतया गृह त्याग की आज्ञा प्रदान किया ।

पूज्य श्री मातुश्री के चरणों में साष्टांग दण्डवत् प्रणाम कर एवं मंगलमय आशीष प्राप्त कर वहाँ से प्रस्थान किया उस समय वहाँ का दृश्य हृदय विदारक था जिसका वर्णन दुष्कर और मनोविदारक था ।

पत्नी घर के अन्दर करुण-क्रन्दन कर रही थीं उनकी नेत्रों से आँसुओं की अविरल धारा प्रवाहित हो रही थी । आज उनके जीवन का सुनहला संस्कार उजड़ रहा

था, तीन वर्षीय बालक कामेश्वर घर में कई दिनों से विमार पड़ा था, उसी समय गयासिंहजीने अपने जीवन संगीनी अच्छी देवी से सुमधुरवाणी से प्रस्ताव किया, प्रिये ! मैं विरक्त होकर वैरागी जीवन व्यतीत करने का निर्णय कर लिया है । यह सुनकर वह सहम उठी और बोली स्वामी मेरा क्या होगा ? तु मन लगाकर देव तुल्य सांस की सेवा पूजा करना सह कामेश्वर की अच्छी तरह से देख भाल करना अब वही तेरे लिए सर्वस्व है । भगवन्नाम जप और श्रीराम की पूजा अर्चना में मन लगाना इसीमें तुम्हारा परम कल्याण है ।

तुम अपराधिन नही परम भाग्यशाली हो कि आज पति प्रभु चरणों में समर्पित हो विश्वहित के लिए संसारिक एवं पारिवारिक बन्धनों से मुक्त होना चाहता है ।

देव ! एक क्षण रुकिये घर में जाकर बर्तन में जल लाकर पावन चरणों को पखारती हैं और माथा टेक सह मौन स्वीकृति प्राप्त कर गयासिंहजी घर से बाहर हुए ।

स्नेहमयी तथा धर्माचारणी पत्नी से विदा लेकर अनुज रामनेत से मिले और अपनी गृहत्याग की भावना व्यक्त की और कहाँ कि भाई अब मैं संन्यास धारण करूँगा । रामनेतसिंहजी की भी इच्छा संन्यास जीवन व्यतीत करने की थी पर बड़े भाई के आदेश को शिरोधार्य कर घर में रह कर ही भजन-किर्तन करना स्वीकार्य किया । इस प्रकार महाराज श्री मातृश्री, पत्नी एवं धर्म परायण बन्धु प्रभु के चरणों में समर्पित कर प्रेमभिक्षुक बनने के लिए निकल पड़े । नाम की भिक्षा तो गुरुदेव श्री से प्राप्त ही हो चुकी थी सिर्फ अब प्रभु प्रेम की ही आवश्यकता थी ।

तत्पश्चात् महाराजश्री बालुघाट लौटे । वहाँ पर कई दिनों तक एकान्त में पूज्य गुरुदेवश्री काश्मीरी बाबा के साथ गूढ़ रहस्यों पर चर्चा हुई साथ ही अमरनाथ की यात्रा करने का आदेश दिया । महाराज श्री को यात्रा प्रस्थान कर चुकने के बाद काश्मीरी बाबा ने अपने प्रिय भक्त रीझनसिंह (झीटकाही ग्राम के निवासी) को कहाँ कि मैंने कुछ गया की संन्दूक में रख दिया है यात्रा से वापिस होने के पश्चात् उससे कहना कि सन्दूक में रखी हुई वस्तु अंगीकार कर ले इतना कहकर अज्ञात स्थान की ओर प्रस्थान किया ।

अमरनाथ की यात्रा से लाटते समय महाराजश्री नौ दिनों का मौन अनुष्ठान

श्रीनगर में शुरु किया। इस मौन अनुष्ठान के क्रम में ही अेक दिन उन्हें ध्यान आया कि गुरुदेव का शरीर अब नही रहा, उसी समय मौन अनुष्ठान अधुरे में छोड़ मुजफ्फरपुर के लिए प्रस्थान किया। देहरादून पहुँचने पर महन्त श्री सूरजगिरि से मालूम हुआ कि पूज्य श्री काश्मीरी बाबा भाद्रपद शुक्ल ११, सं. ई. १९४४ को असार संसार से अपने शरीर का परित्याग कर श्री प्रभुधाम सिधार गये। शोक सन्तप्त महाराज श्री मुजफ्फरपुर पहुँचकर रिझनसिंह से मिलने गये, बात-चीत शुरु होने पर रीझनसिंह काश्मीरी बाबा के आदेशानुसार गयासिंहजी से सन्दूक खोलकर उसमें रखीं हुए वस्तु को अंगीकार करने को कहा गयासिंह सन्दूक खोले और देखा कि गुरुदेव ने अपना गेरुआ वस्त्र रख छोड़ा है। गेरुआ वस्त्र देखते ही महाराजश्री समझ गये कि पूज्य गुरुदेव ने संन्यास धारण करने की स्वीकृति प्रदान कर दी है।

संन्यास जीवन धारण कर लेने के बाद ईश्वर प्राप्ति का अेक मात्र सर्व सुलभ साधन भगवन्नाम संकीर्तन का ही पाया। भगवन्नाम एवं अनुष्ठानों के प्रति अगाध प्रेम था। अत: हिमालय की गुफाओ में जाकर घोर तपश्चर्या शुरू कर दी भूमि-शयन, अल्पाहार के कारण शरीर कृसकाय में परिवर्तित हो गई थी :-

भूमि शयन वल्कल वसन असनु कन्द फल मूल।
ते कि सदा सब दिन मिलहि सबई समय अनुकूल॥

वस्त्रों में कोपीन और एक छोटा सा मारकीन का टुकड़ा शरीर पर रखते थे। अहर्निश अनुष्ठानों एवं भिन्न-भिन्न साधनाओं के कारण शरीर कृषकाय में हो गया था। जब जब हनुमानजी द्वारा प्रेरणा प्राप्त होती वे अनुष्ठान में संलग्न हो जाते थे। मुख्य अनुष्ठानों की तिथियाँ इस प्रकार है :

(१) बेट द्वारका - १३ मास का अनुष्ठान दि. १०-६-१९५४ से १०-७-१९५५ तक
(२) पोरबंदर (सुकाला तालाब) १०८ दिनों का : दि. १-९-१९५९ से १०-१२-१९५९ तक
(३) पोरबंदर (शेठ नरसी मेघजी की वाडी) ४७ दिनों का : दिनांक १०-१०-१९६१ से २६-११-१९६१ तक।

कृषकाय होने पर भी अपने इष्ट के ध्यान में ध्यानिष्ठ रहते थे। जंगली

जानवर भी स्पर्श कर वापस चले जाते थे। परिभ्रमण एवं अनुष्ठान की विविध अवस्थाओं से गुजरते हुए अन्त में पूज्य महाराजश्री सौराष्ट्र के प्रभासपाटन क्षेत्र में पहुँचे, यह वही पुण्य क्षेत्र है। जहाँ पर अन्तिम समय में भगवान श्रीकृष्ण ने उद्धवजी को ज्ञानोंपदेश दिया था। इस पवित्र भूमि में श्रीकृष्ण एवं उद्धवजी के अलौकिक मिलन की अनुभूति कर निहाल हो गये और ईश्वर साक्षात्कार की सुमधुर अनुभूति करके श्रीकृष्ण नाम सकीर्तन में लीन हो गये। नाम संकीर्तन में समाधिस्थ हो गये देह की सुध नहीं रही तत्पश्चात् उनके मन में तीव्र वैराग्य उत्पन्न हो गया। पूज्य गुरुदेव से दीक्षा ग्रहण करने के बाद जो शिषा-सूत्र बन्धन था उसका भी उन्होंने परित्याग कर दिया।

इस प्रकार का त्याग केवल संन्यासी को ही होता है। संन्यास का मूल अर्थ है - सम्यक + न्यासः। भक्ति से ओत-प्रोत और समर्पण, स्वार्थ का परित्याग, परमार्थ का अंगिकार कर इस संन्यास नाम संकीर्तन की सुगम साधना से लोगों को आकर्षित कर अनुष्ठान के मंगल आचरण का प्रर्वतक था।

यह किसको मालूम था कि सौराष्ट्र भूमि पर लिया गया यह संन्यास भविष्य में सौराष्ट्र, गुजरात एवं बिहार की भूमि को परम पावन बना देगा। उन्हीं के प्रयत्नो के फल स्वरुप आज लगभग ४६ वर्षो से अनावरत श्री भगवन्नाम संकीर्तन श्रीराम जय राम जय जय राम निम्न स्थलों पर अभी भी चल रहा है। ये पुण्य स्थल हैं :-

जामनगर	: दि. १-८-१९६४	वर्ष ४६	श्री प्रेमभिक्षु मार्ग, तलाव के पास
पोरबंदर	: दि. १५-५-१९६७	वर्ष ४३	रामधून मंदिर, भाणजी लवजी रोड.
द्वारका	: दि. १२-१२-१९६७	वर्ष ४३	श्री प्रेमभिक्षुजी मार्ग, देवी भुवन रोड
मुझफ्फरपुर	: दि. २०-६-१९७६	वर्ष ३४	श्री प्रेमभिक्षुजी महाराज स्मृतिभवन, बालुघाट (बिहार)
राजकोट	: दि. २०-४-१९८४	वर्ष २६	श्री प्रेमभिक्षुजी मार्ग, गोंधिया, होस्पिटल के सामने, कालावड रोड.

जूनागढ़ : दि. १५-८-१९९६ वर्ष १४ अंबिका चौक, वेणीभाई वकीलवाली शेरी.
महुवा : दि. २२-४-१९९७ वर्ष १३ सोसायटी मार्ग, कुबेरनाथ मंदिर पास में.

इस प्रकार महाराज श्री ने अपने जीवन में अनुष्ठानों एवं घोर तपश्चार्याओं तथा तीर्थाटन द्वारा संत जीवन बिताना अंगीकार किया ।

हे ! मानव जीवन नैया के पतवार खेवैया
मेरी शरणागति स्वीकार करो ।
हो सबकी प्रीत राम नाम में
प्राणी मात्र का उद्धार करो ॥

- प्रेम शरणागार प्रेमाधीन
अयोध्या प्रसाद मिश्र
मकान नं. ५५, हरिओमनगर विभाग-४,
डी-केबिन, साबरमती, अहमदाबाद (गुजरात)
मो. : ९४२७४५४३२३

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

-: गुरु वंदना :-

वंदन है गुरुदेव हमारा,
धन्य-धन्य मम जीवन प्यारा ॥
तव दर्शन कलि कलुष विनासे,
माया कृत अघोर निसि नासे ॥
मोह रुप दृढ़ दुर्ग ढहाओं,
अमित रुप हो प्रगट तुम्हारा ॥ बंदन है.....
मम अज्ञान तिमिर हर हर लीजै,
शाश्वत पुंज प्रकाश करीजै ॥
विषमय जीवन अमृत कीजै,
ज्ञान गंग निर्मल बहे धारा ॥ बंदन है.....
हम सब हैं प्रिय बालक तोरे,
दीन दयालु परम हितु मोरे,
जल बिन मीन दुखी हो जैसे,
तड़फत हूँ मै दास तुम्हारा ॥ बंदन है.....
बिछुड़त तुमही कोटि युग बीतें,
निज मग छाड़ि चले विपरीते ॥
अब मोहि तात तोरि सुधि आई,
हृदय कुसुम खिल उठा हमारा ॥ बंदन है.....
परम प्रकाश पुंज अघनासी,
सदा शान्ति मम् प्रिय हियवासी ॥
जीव भाव से तुम्हे पुकारूँ,
क्यों जल बिन्दु सिन्धु से न्यारा ॥ बंदन है.....
जीव ब्रह्म दो नाम उपाधी,
विद्या त्यागि अविद्या लादी ॥
भ्रान्ति रुप अज्ञान हरो प्रभु,
होय परम प्रिय मिलन हमारा ॥ बंदन है .....

- श्री प्रेमचरणरज आश्रित अयोध्याप्रसाद मिश्र

श्री राम जय राम जय जय राम...

पू. सद्‌गुरुदेवश्री प्रेमभिक्षुजी महाराज

धन्या माता पिता धन्यो धन्यात्‌धन्यतमं कुलम्‌।
यत्र श्रीरामनाम्नस्तु जापको जायते शुचिः ॥

श्री राम

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू भाई मात्रे तथा बाल गोपाल,

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृ पा से सब आनन्द है। राणिप का आनन्द तो कुछ और ही रहा। उसके बाद पालेज आया। यहाँ भी अखंड आनन्द से चल रहा है। शनिवार ता १०-२-६८ रात्रि को पूर्णाहुति है और दूसरे दिन रविवार को नगर किर्तन है। सोमवार को सौराष्ट्र अेक्सप्रेस जो यहाँ ११॥ बजे आती है उसी से आने का विचार है। १९-२-६८ से ५ दिवस मोटी कोरल नर्मदा के किनारे प्रोग्राम है। धोलका अहमदाबाद का अभी तक कोई पत्र नहीं आया है। २६-२-६८ तक सोमनाथ प्रभास पाटण के लिये साह साहेब का आमंत्रण है। आगे श्री प्रभु इच्छा ।

सभी प्रेमियो को मात्रे, प्रेमजी भाई,बाबू भाई जानी तथा रंगरेज सबको मेरा यथायोग्य सह् जय श्री राम, विशेष श्री प्रभु कृमा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू भाई तथा बाल गोपाल ।

जामनगर

शुभाशीर्वाद ।

श्री प्रभु कृपा से मैं आनन्द पूर्वक पहुँच गया। यहाँ का वातावरण भी इस समय बहुत पवित्र देखने मे आया। सभी लोगों का आपस में प्रेम था। हरजीवन वरदानवाला ने अपने बंगले के सामने चार दिवस पहले अेक नया बंगला लीया है उसी में अब उतारा है । प्लेन के उपर भी अपनी गाडी लेकर हाजिर

था। मीरा बेन के बंगले हो आया। शान्ति प्रसादजी ने भी अपनी गाड़ी फोन पर भेजी थी। माताजी भी श्री द्वारका से कल ही आया था। आज रात को द्वारका के लिये रवाना होऊँगा। और सब आनन्द मंगल है। सभी प्रेमीयों को यथायोग्य। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु
प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल। ओखा पोर्ट

आशीर्वाद।

तुम्हारी भेजी हुई अगरबतियाँ आई - उनमे पंढरपुर की dieeenking तथा राज- राणी की नमूने मे नं. २ की मोटी बत्ती अच्छी है। सुवास भी अच्छा है और बहुत देर तक जलती भी है।किन्तु मेरी समझ से कीमती ज्यादा होगी तो ज्यादा नहीं भेजना। पंढरपुर वाली बत्ती भी ठीक है। आज तुम्हारे पिता श्री यहाँ से बम्बई के लिए रवाना हो गये है। तुम्हारी माताजी की तबियत बहुत ही अच्छी लगती है किन्तु हरिद्वार जाने का उनका आग्रह हृदय मे बहुत दीखता है। मैने तो उसे समझाया कि भाई हरिद्वार मे कुछ नहीं है-यह तो भगवान का धाम है और दूसरी जगहों करता यहाँ शान्ति भी बहुत है। द्वारका से भी अधिक शान्ति बेट मे है. सेवा. पुजा. दर्शन. भजन सबका आनन्द है किन्तु समझे तो न। विशेष श्री प्रभु कृपा पूर्णाहुति का समय निकट आ रहा है। ओखा में अखंड होते हुए भी श्रीप्रभु द्वारकाधीश की ओसी अनुकम्पा इस शरीर पर है कि इच्छा न होने पर भी तीसरे-चौथे नही तो सातवें आठवें दिन तो कीसी न किसी बहाने से "कभी अखंड के बहाने कभी सप्ताह के बहाने कभी उत्सव के बहाने अपनी शरण मे बुलाये ही लेते है। उनकी अनन्त. असीम अहेतु की अनुकम्पा से तो कभी अपनी जीवन की मुराद उनकी छत्रछाया में ही पूरी हो रही है। किन्तु खबर नहीं कि

प्रभु कब तक अपनी एेसी अनुकम्पा रखेगें। अपनी हार्दिक इच्छा तो उनकी चरणाश्रय में ही जीवन विसर्जन करने की है। आगे उनकी मर्जी उनकी दया,उनकी इच्छा-अपनी ओर से तो "राजी हैं हम उसी में, जिसमे तेरी रजा है।" मात्रे ने पासपोर्ट की renuwal का फार्म भेजा है किन्तु लिखा नहीं signature हिन्दी में करे या अग्रेजी में या कीसी भाषा में चलेगा तो तलाश करके हो सके तो लिखना। वल्लभ का हाथ अच्छा हो गया होगा एेसी आशा है तुम्हारी नाक की तकलीफ की बात तुम्हारे पिता करते थे तो- शास्त्र की आज्ञा अनुसार पाँच वस्तुको छोटा हो तो भी छोटा नहीं समझना-उसका प्रतिकार जल्दी कर लेना चाहीए-(१)शत्रु (२) रोग (३)पावक (४)पाप (५)सांप। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेम-भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल।

रामनगर

शुभाशीर्वाद ।

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है। श्री अखंड का प्रवाह भी चालू है। एक पत्र तुम्हारा आया था। जिसमें मालदेव के विषय में जिक्र किया था। क्या लिखू, क्या न लिखू, प्रभु जिस रुप में जब तक रखें, तब तक उनकी कृपा प्रेरणा समझकर रहना ही है। उधर आने का भी विचार होता है किन्तु इतनी जल्दी उधर जाकर भी क्या करूँगा ? दिन प्रतिदिन सभी जगहों न्यूनाधिकांश में वातावरण बिगड़ता ही जा रहा है । लोगों का धर्म कर्म की ओर से वृत्ति हटती ही जा रही है । सत्य,सद्विचार,सदाचार किसी को प्रिय नही । भौतिकता, विलासिता, भोगपरायणता की वृत्ति ही प्रबल बनती ही जा रही है । क्या साधु सन्यासी? क्या गृहस्थ? सबका अेक ही राग-पैसा, वैभव, मकान, मठ, मंदिर किन्तु इसका विचार

ही नहीं कि इन मकानों, मठ, मंदिरों का अन्तिम मकसद क्या है ? जन्म लेना, खाना-पीना, संग्रह करना और पुन:सब त्याग कर चल पड़ना । क्या यही मानव-जीवन का लक्ष्य या फल है ? अगर मनुष्य जीवन पर्यन्त सीर्फ संग्रह ही संग्रह के लिये व्याकुल रहे तो भी क्या इन भौतिक पदार्थो से कभी भी सच्ची सुख शान्ति मिलने की आशा है । अत: मानवता या विवेकशालिनी बुद्धि तो वही कहती है कि सदा भौतिक नाशवान, क्षणभंगुर पदार्थो की चिन्ता में ही अपने मानवजीवन के दिव्य, अमूल्य धड़ियों को व्यतीत कर देना उचित नहीं, किन्तु आज का मानव तो इन शब्दों की ओर ध्यान तक देने को तैयार नहीं है । खैर ! इसमे किसी का दोष नहीं-यह तो **युगधर्म** ही है जो सबको असत्य के लिये वाध्य कर रहा है। हाँ ! इतना अवश्य है कि युगधर्म कपट और परिणाम कलह इनसे बचने के लिए अेकमात्र साधन,उपाय **"श्री भगवान्नम"** अगर जीव इन महाराज का श्रद्धा, विश्वास पूर्वक दृढ़ आश्रय ग्रहण कर ले तो वह युगधर्म से बचकर नित्यधर्म को अपना कर सुखी सानन्द हो सकता है । बस ! श्री प्रभुनाम का दृढ़ विश्वास श्रद्धा के आश्रय ग्रहण किये रहो । इसी में अपना परम मंगल है। मेरा स्वास्थ्य ठीक है वह जो बिमारी हो गई थी पूर्ण रुप से मीटी तो नहीं है किन्तु रोग में वृद्धि नही है उसकी अेक **होमियोपेथिक** दवा यहाँ नहीं मिल रही है तो वह दवा भेजने का कष्ट उठाना **दवा का नाम ह sponzia स्पोन्जीया-** अेक लाख पावर था । sponzia-100000 सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

।। श्री राम ।।

"श्री राम जय राम ज़य जय राम"

प्रिय काकू भाई तथा बाल गोपाल ।

आशिर्वाद।

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र अभी मिला है। अभी जवाब

लिख रहा हूं। श्री प्रभु की कृपा महिमा अति विलक्षण है।उसका रहस्य समझाना बड़ा कठिन है जब वह स्वयं समझाना चाहे तभी जीव को कुछ धैर्य,समझ हो सकती है। अन्यथा उसका समझना असम्भव सा ही है। ठाकुरजी के यहाँ की चोरी तो औरो के लिये तथा अपने लिये भी लाभप्रद ही हो गई। सिमेन्ट फैक्टरी के एक अत्यंत गरीब की औरत की लगभग १५०००) हजार की चोरी हो गई थी, वही उसके जीवन की कमाई थी। उसका कौन सुननेवाला था? किन्तु दिन-बंन्धु अनाथनाथ श्री प्रभु ने उसकी आर्त पुकार सुन ली और अपने यहाँ चोरी की प्रेरणा की । अगर ठाकुरजी के यहाँ चोरी नहीं होती तो इतनी सन-सनी नहीं फैलती । हरिदास ने खूब महेनत की , फौजदार की बदली कराई और सख्त तपास शुरु कराई, जिसका परिणाम यह हुआ कि दूसरे दिन बेचारी गरीब बाई का कु ल अमानत १५००० की पकड़ गई और चोरो का भी धीरे-धीरे पता लग रहा है। सबसे पहले तुम्हारा चाँदी के फ्रेम सहीत ठाकूरजी को ही उठाया और बाद श्री हनुमान डांडीवाले मंत्र महाराज को जिसमें पाँच धातुओ में से सीर्फ सुवर्ण का मंत्र ले गया और दूसरा सब यो ही छोड़कर चला गया। श्री ठाकूरजी को चाँदी के फ्रेम में यो ही छोड़कर चला गया। शायद तुमने मोती वगैरह की मालायें भेजी थी और नवीन वस्त्र वह सब ले गया चाँदी का बासन बर्तन, ठाकुजी का झाड़ी,कप वगैरह स्टेनलेस का कमंडल। बिछाने का कालीन और अेक गरम शाल,कुछ शंकराचार्य मंदिर के पूजारियों तथा डोंगरे शास्त्री वगैरह का दिया हुआ शिल्क के कपड़ें थे,वह सब ले गया है। अपने काम की कोई खास चीज नही ले गया। जब श्री ठाकुरजी को छोड़ गया तभी श्री प्रभु का प्रताप और महिमा समझ पड़ी कारण चोरी तो किसी जानकार व्यक्ति ने ही कराई है तो फिर इतनी किमती फ्रेम किस प्रकार छोड़कर चला जाता। और छोटी-छोटी चीजे ले जाता? यह सब भगवान की लीला विलास ही तो है। १४-९-६७ को वल्लभ भी आनेवाला है। वेरावल में लोगों में उत्साह,लगन बहुत है यहाँ तो वृन्दावन,अयोध्या जैसा बन गया है। प्रतिदिन ३ मंडली तो प्रभातफेरी में निकलती है,जिसमें सैंकडों आदमी

रहते हैं। अखंड का भी रंग खूब है। यहाँ के बाद सोमनाथ और प्राची में भी अखंड है। उसके बाद जूनागढ़ में है और उसके बाद नवरात्रि में अेकम से पुनम तक का पहले प्रोग्राम नक्की है,किन्तु अभी तक कोई सूचना आई नही है।राजदेवसिंह खैरवा वाले बिहार से आया है उसको अेक टेप-रेकर्डर लेना है तो बेटरी वाला, छोटा, बड़ा, मझोला की किंमत बूझते आना अगर न आ सको तो पत्र द्वारा सूचित करना,कोई भी जो अच्छा लगे और विशेष उपयोगी हो वही लेना है। मात्रे प्रेमजी भाई,बाबू भाई,वैद्यराज,मास्टर बाबू भाई रंगरेज के बाल गोपाल और जो भी प्रेमी मिले उनको मेरा यथायोग्य सह श्री राम जय राम जय जय राम। श्री मोहनलाल सेठ तथा उसके बाल गोपाल को यथायोग्य। सुधीर की नानी आ गई हो तो मेरा जय श्री कृष्ण।विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेम-भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू , मात्रे तथा बाल गोपाल !

मुजफ्फरपुर

आशीर्वाद !

श्री प्रभु की कृपा बड़ी ही विलक्षण है। नजाने श्री प्रभु कब क्या करना और क्या कराना चाहते हैं। उनकी लीला का पार पाना बड़ा ही कठिन है । न जाने वे कीसी के मृत्यु के बहाने, कितने असंख्य प्राणियों के जीवन का सृजन करते हैं और कभी जीवन के बहाने मौत का। श्री माताजी के निमित्त तुम लोगों से विदा होकर अति शिध्र ही यहाँ आना पड़ा किन्तु आने पर पता चला कि पूज्यनीय माताजी पूर्ण स्वस्थ हैं। अवस्था के अनुसार शरीर में कमजोरी और संसार में रहने के कारण और आसपास के वातावरण की वजह से मानसिक चिन्ता व्यथा अवश्य है। इसमें कोई नवीनता नहीं, कारण कि जीव जिस प्रभु को, जो ही उसका

अेकमात्र अपना सगा सम्बन्धीं है उसे भूलकंर जगत तथा जगत के प्राणियों को अपना सगा सम्बन्धीं को ही अपना हितैषी मानकर उसी में लीन रहता है किन्तु उसका अन्तिम परिणाम तो दुख और अशान्ति ही है। कामेश्वर तथा उसकी स्त्री के उच्छृंखल व्यवहार से उन्हे और भी ज्यादा दुख है किन्तु मैं कर ही क्या सकता हुं ? वे उनका मोह भी छोड़ नहीं सकती। मैं आते ही वहाँ दर्शनार्थ गया था और दो दिवस वहाँ रह कर वापिस आया। १८ वर्षो बाद मिलने पर जिसके नेत्र में आँसु तक नही आये वे ही आज मुझे देखते ही फुटफुट कर रोने लगी। अनुमान से सबकुछ ज्ञात हो गया। मैं मुजफ्फरपुर आ गया हूँ यहाँ ११ दिवस का अखंड चल रहा है, जिसकी पूर्णाहुति २४-७-६२ को होगी। श्री गुरुपूर्णिमा का उत्सव भी यही मनाया गया। वैकुन्ठ बाबू,यमुना बाबू वगैरह मिले थे किन्तु पहले जैसी विशेष तन्मयता नहीं है। देहात के लोगों में नवीन उत्साह जागृति जरुर आ गयी है और आशा है कि श्री प्रभु कृपा से पुन: अेकबार श्री रामनाम का प्रचार विस्तार जोर शोर से होगा। मेरा मन तो यहाँ विशेष नहीं लगता है किन्तु करना ही क्या है,जैसे प्रभु रखे उसमें अपना कल्याण हैं। भोला बाबू ने तो सारा भार राधे बाबू के उपर छोड़ कर निश्चिन्त से हो गये हैं। राधे बाबू तथा उनके परिवार के लोग बड़े प्रेम से सेवा करते हैं। हंमेशा परिवार के अेक व्यक्ति साथ ही लगा रहता है। पटनें में भोला न आये किन्तु राधे बाबू,उनका भतीजा तथा रामधुन मंडल वाले लगभग १५ आदमी अेरोड्रोम पर आये थे। कलकत्ते में जीवनराम ठीक समय पर आ गये थे और अपने घर पर भी ले गये। रास्ते-रास्ते और उनके घर भी सत्संग होता रहा। मैने अपने सिद्धांत की बातें की किन्तु उन्हे कोई विशेष रस नहीं आया कारण कि वे संन्यासाश्रम अहमदाबाद वाले कृष्णानन्द के शिष्य हैं। जो कथा तो हमेशा वेदान्त की ही करते है किन्तु कंचन.... के परम पुजारी हैं। मेरे सत्संग के बीच में जीवनराम अपने सुने हुए वेदान्त की बात कभी बोल उठते थे किन्तु उससे उनकी कोई विशेषता नहीं बल्कि न्यूनता ही झलकती थी। खैर! उस विषय में जो भी उन्हे हुआ हो किन्तु उन्हे स्वागत सत्कार बड़े प्रेम भाव

से किया। चलते समय बारिस बहुत जोर की होने लगी और समय कम रह गया इस कारण मोटर बहुत जोर से चलाई गई और उसी म Accideant हो गया। Accideant तो इतना भयंकर हुआ कि चारपाँच व्यक्तियो में से किसी की बचने की संभावना नही थी किन्तु सीर्फ एक ही व्यक्ति को कुछ गहरी चोट लगी और दूसरे सब के सब बाल-बाल बच गये। मैंने बहुत विचार किया तो यही निश्चय हुआ कि जब मैं उनके घर पर पहुँचा तो वस्त्र के लिये झोली खोलने पर उसमें मैंने नोट पड़े देखे और निश्चय हुआ कि आज प्रातकाल ही अनिष्ट दर्शन हुआ कारण कि मैंने तुझे बहुत मना किया था कि जब अेकबार त्याग कर दिया गया तो उसे स्वयं फिर से क्यो अपनाना चाहिए। अगर कोई देख भी ले तो मिथ्या भाषण का दोष लगे। कथन में और, आचरण में और ही। खैर! जो कुछ भी हुआ श्री प्रभु इच्छा। सभी प्रेमीयों को जय श्री राम। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्ष

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। वहाँ से निलकर मैं सुखपुर्वक पोरबंदर पहुँच गया,वहाँ अति आग्रह के कारण एक दिवस के बदले तीन दिवस रुकना पड़ा। चौथे दिवस जामनगर गया और वहाँ अेक दिवस रुककर शनिवार को द्वारका आया। यहाँ आने पर पता लगा कि,मंदिर का काम तो बहुत अधुरा ही है,किन्तु वसंत पंचमी के बाद वैशाख मास में ही मुर्हुत हैं, अेसा जानने से अब इतना लम्बा समय तक टाल-मटोल करना ठीक न समझकर,सब ट्रस्टीयों की अेक मीटींग कल्ह रखी गई और सर्वमत से यह निश्चय किया गया कि उद्घाटन का दिवस वसंत पंचमी २२-१-६९ को हो रखा जाए। मन्दिर के बाँधकाम में न हरिदास ने ही ध्यान रखा-न ईश्वरलाल पूजारी आरचीटेक्ट जिसने मन्दिर

का सारा प्लान बनाया। ईश्वरलाल को जैसा मन भाया वैसा करता रहा उसने राजकोट में अपना ऑफिस खोला है और वहाँ अधिकतर रहता है,कभी आकर देख जाया करता था जिसका परिणाम यह हुआ कि,पैसा बहुत अधिक खर्च हो गया और जैसा सुन्दर सुविधाजनक काम चाहिए वैसा काम नहीं बना। परसों मीटींग में हिसाब करने पर पता लगा कि दस हजार रुपैये हरिदास का बाकी है और तीन चार हजार व्यापारीयों का बाकी हैं और काम पूरा होने में पाँच-छ हजार और लगेगा। कुल अभी बीस हजार का तो यह देन है और उद्‌घाटन उत्सव में लगभग दस हजार खर्च होगा। यहं बात सुनकर ही मेरा मगज चक्कर काटने लगा कि इन लोगों ने कितनी बड़ी मुर्खता की है। आजकल न मालूम क्या हो गया है कि जिसे अपना मित्र समझो वही दुश्मन का काम करता है ईश्वर को श्री द्वारकाधीश का पूजारी और अपना अत्यंत विश्वाशी प्रेमी समझकर यह काम सौंपा गया था। और साथ ही यह हिदायत थी कि पैसा जितना कम खर्च हो उतना ध्यान रखना। हरिदास भी पहले बहुत लम्बी-लम्बी बाते करता था। एक लाख रुपैया इकट्ठा करना तो मेरे लिये अेक खेल है किन्तु अब तो अपने रुपैया का जिक्र करता है और करने कराने का तो कोई नाम ही नहीं। रामजी का पत्र मिल गया होगा। इन मूर्ख लोगों ने तो मुझे अेसी त्रिशंकु की परिस्थिति में डाल दिया है कि बात न पूछो। जोशी रामजी वगैरह को भी मैने बहुत डाँटा कि तुम लोगो ने मन्दिर का झझंट खड़ा करके मेरे जीवन के अयाची व्रत को भी कलंकित किया। लोग यही कहेगें बाबाजी, पैसा नहीं लेते थे, मन्दिर मे नहीं डालने देते थे अव मन्दिर के बहाने जगह-जगह पैसा माँग रहे है। खैर! जैसी प्रभु इच्छा। नादान दोस्त से अक्लमंद दुश्मन अच्छा। यह कथा यथार्थ ही हैं। तबियत भी यहाँ आकर टीक हो गई है। काकड़ा भी अेक अंग्रेजी दवा से अभी ठीक है। विशेष श्री प्रभु कृपा। सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम। श्री वसंत पचंमी २२-१-६९ का उद्‌घाटन उत्सव निश्चित है।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

अहमदाबाद

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

शुभाशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है । ७-३-६५ का मनसुख के नाम का भेजा हुआ पत्र अभी मिला। समाचार मालूम हुआ । बेचरदास साथ है । मनसुख की तबियत बहुत अच्छी नहीं है इसलिए आने का कोई निश्चय नही है। मनसुख और पूजारी के टीकट के लिए लीखा किन्तु कोई ठीकाना ही नहीं। रसिक महाराज सबके टीकीट का खर्च दे दिया किन्तु मैने उनका वापिस कर दिया क्योकि जिसने बुलाया उसको व्यवस्था करनी चाहिए, किन्तु ब्राह्मण,दूसरा द्वारका गुगली राम मंदिर वही सब है फिर भी मै द्वारका आने-जाने का टीकीट लिया ही। वृन्दावन के लिये बोलना था किन्तु अंतर का भाव में संकोच,टीकीट तो दिल्लीमेल की रिजर्व हो गई है अभी बेचरदास ने पैसा दिया है बाद में दे दिया जायेगा । ११-३-६५ गुरुवार को ७-४५ पौने आठ बजे **Seven forty five** पर दिल्लीमेल उपड़ती है और उसी से जाने वाला हूँ तुम लिखते हो १० बजे आऊँगा तो मुलाकात कैसे होगी। समय मिले तो आना नही तो सिर्फ टीकीट भाड़ा देने के लिये आने की जरुरत नही। अभी व्यवस्था हो गई है बाद में वृदावन पत्र लिखने पर भेज देना। उनके लोगों को आते वक्त काम आ जायेगा। विशेष श्री प्रभु कृपा। मात्रे साहब बाल गोपाल, इन्दिरा देवी, प्रेमजीभाई, कमलादेवी सभी प्रेमियो को मेरा जय श्रीराम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल ! महुवा

आशीर्वाद ! दिनांक ११-२-७०

श्री प्रभु कृपा से आनन्द है। तुम्हारा दो पत्र मिला।एक बम्बई से, दूसरा कल्ह कलकत्ता से लिखा हुआ। आज सवेरे विनु भाई ने कौल का भी समाचार दिया। श्री प्रभु की क्या लीला है? समझ नहीं पड़ती। बम्बई से जिस प्लेन में भावनगर आया उसमें भयंकर Accideant होते होते बच गया। उसी दिन से इधर भयंकर ठंडी पड़ने लगी। जिससे उसी दिन शाम को महुवा पहुँच गया। दूसरे दिन ब्लड प्रेशर माप कराया तो नोर्मल था किन्तु यहाँ के रिटार्यड सिविल सर्जन सीदी साहेब ने कहा की आप को मपाने की जरुरत नही-यह तो स्वभाव में ही होगा। आप पहले जैसे आनन्द में रहो, खाओ, पीओ, भजन करो । दूसरे दिन यहाँ आने पर इतनी कमजोरी महसूस होने लगी कि बात मत पूछो । माथा और आँख बिल्कुल भारी-भारी । हलने-चलने की बिल्कुल इच्छा नहीं। उसी समय एक सामान्य किन्तु परम भक्त नाम निष्ठ वैघ आये जिनका नाम विष्णुभाई,उन्होने कहा कि बापूजी मेरी दवा से तीन दिन में ही सब उपाधियाँ मीट जायेगी। सचमुच श्री प्रभुकृपा वैध की एक सामान्य काष्ठ औषधि ने रामबाण का काम किया। माथा का चक्कर, भारीपन थकान का न आना सभी दूर हो गया।अभी दवा लेते कुल १३ दिवस हुआ है कि न्तु काफी स्वास्थ्य सुधर गया है। एक एेसी दवा देते हैं जिससे Heart बिल्कुल मजबूत रहता है गति सामान रहती है। उनका कहना है कि Heart की गति में विषमता का होना यानि सामान रुप से काम न करने का नाम ही है ब्लड-प्रेशर का घटना और बढ़ना। अगर Heart सशक्त रहे और उसकी गति में कोई अड़चन फर्क न पड़े तो ब्लडप्रेशर का कोइ असर नही होता,उसके बाद यहाँ के मेडिकल औफिसर खमार साहेब M.D. जिन्होने पहले पहल अति हाई ब्लड-प्रेशर लिया था-उन्हे भी बम्बई का सभी रिपोर्ट दिखलाया

तो देखकर चकित हो गये और कहने लगे कि इतना गढ़े में आपको बेकार उतार दिया,इतनी उपाधि करने की कोई जरुरत नहीं थी। आपको इतना ब्लड-प्रेशर स्वाभाविक ही रहता होगा न मालूम कब से होगा ? यह तो माप ने पर पता चला। मैने कहा आपने ही तो पहले पहल इसकी बात की थी तो उन्होने कहा कि मुझसे भूल हो गई। मुझे आप जैसे व्यक्ति से यह बात नहीं कहनी चाहिए। अब तो कोई चिन्ता न कीजिए अपने पुर्ववत् जीवनक्रम चलाइये। उस दिन से माप लेना बंद कर दिया। वैध की दवा चालू है और उससे १३ दिवस में ही काफी फायदा है। सिर्फ कमजोरी है। अंग्रेजी दवा सब जहर खाने का परिणाम बीमारी से बद्तर निकली। आगे श्री प्रभु कृपा। यह विगतवार समाचार तुझे लिख रहा हू। वहाँ अपने डाक्टर या हेनलेकर साहेब को मेरा राम राम कहना और उन लोगोकी सहानभूति,सद्भावना के लिये खूब-खूब उपकार और धन्यबाद कहना। मेहता साहेब को उनकी सहानभूति तथा त्याग के लिये उपकार तथा धन्यवाद कहना। इसमें किसी का कुछ नही-एकमात्र सर्वाधार, सर्वज्ञ, सर्वेश्वर, परम दयालु, अतिकृपालु श्री प्रभु की कृपा प्रेरणा ही है। अभी तो वैध की छूट होने पर भी नमक बहुत कम लेता हू। रोटी, दाल, बाफेला शाकभाजी खाता हूँ। थोड़ी घी की मात्रा वैध ने बढ़ाया है, क्योंकि शक्ती के लिये भस्म देता है जिससे थोड़ा बाफेला शाक में तथा रोटी में घी लेना पड़ता है। शुक्ल साहेब को समाचार दिया था,तो वे और जोशी १४ या १५ तारीख के बाद महुवा आने की इच्छा प्रकट की है । सभी प्रेमियों को कुशल समाचार देना। तुम्हारा, मात्रे तथा वहाँ के सभी प्रेमियों की सद्भावना, सेवा, तत्परता के लिये कुछ लिख सकू असी मेरी ताकात नहीं। कल अेक दिवस का अखंड था रोज ९ बजे सुबह तक भजन होता है । यहाँ वालें सभी बाहर जानें नही देतें हैं । जब तक अन्नजल तब तक रहना ही पड़ेगा। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू मात्रे तथा बाल गोपाल ! पालेज

आशीर्वाद ! C/o. प्रविण टी डीपो,

जि.भरुच

दिनांक २४-११-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । धांगधां में इस बार खूब आनन्द हुआ। वहाँ के मान्यगण व्यक्तियों ने १ मास के लिये याचना की कि इस बार अब आप यहाँ के लिए अेक मास का समय देना। यहाँ सोमवार २५-११-६८ को पूर्णाहुति है और उसके बाद दो तीन आस-पास के गाँवो में जाना है। शायद यहाँ से २९-११-६८ शुक्रवार अहमदाबाद जाना होगा वहाँ से अगर समय मिलेगा और अनुकूलता होगी तो चार पाँच दिवस के लिये आने के लिए प्रयत्न करुँगा, नहीं तो गरमी के दिनों में आनेका विचार है । बाबूभाई जानी का भी दो-तीन पत्र था कि दो चार दीनों के लिए भी जरुर आओ लेकिन दो चार दिनों के लिये आने जाने में इतना पैंसा खर्च करना ठीक नहीं लगता । दस- पन्द्रह दिवस का समय होवे तो सभी जगह आना-जाना भी हो सके। कुछ समय जामसेत,आशागढ़, बाबूभाई की वाड़ी का भी आनन्द लिया जा सके। अेक यह भी असमंजस है कि द्वारका श्री संकीर्तन मंदिर का उद्घाटन के बाद वहाँ वालों का अति आग्रह है कि कम से कम **१३ मास** तक द्वारका में रहना कही बाहर नहीं जाना। बिहार वालों का भी आग्रह है कि उद्घाटन के बाद बिहार का प्रोग्राम जरुर रखा जाए किन्तु बिहार में जो अखंड चल रहा था उसकी तो पूर्णाहुति थोड़े दिन पहले हो गई है और अेसे भी बिहार जाने की तो इच्छा है नही आगे श्री प्रभु इच्छा । अहमदाबाद के बाद जैसी प्रभु इच्छा होगी वैसा होगा । सभी प्रेमीयों को मेरा यथायोग्य सह् जय श्री राम। श्री मोहनलाल सेठ तथा उनके सम्बन्धी धांगधा वाले भी मीले तो मेरा श्री राम जयराम जयजय राम कहना । श्री प्रभु

नाम ही कलिकाल के त्रास से बचने तथा लोक-परलोक सुधारनेका अेकमात्र साधन है। इस समय अेक तो योग,तप,यज्ञ,तीर्थ,व्रत,दान कोई भी साधन सफल नही हो सकते और,दूसरी- बात यह है कि ईन सभी शुभ कर्मो का फल अेक जपयज्ञ-नाम स्मरण द्वारा ही प्राप्त हो जाता है, फिर भी न मालूम यह जड़ जीव क्यों इतने सरल,सुगम,सुबोध,अमोघ, साधन को छोड़कर मारा-मारा फिर रहा है ? जो भी हो श्री नाम में स्नेह होना बड़ा कठिन है । जब जीव के अनेक जन्मों के पुण्यपुंज का उदय होता है तभी श्रीनाम स्मरण में प्रीति प्रतीति होती है अन्यथा नाम स्मरण सर्वथा असंभव सा ही है । खास करके चार प्रकार के व्यक्तियों के लिये नाम रटन करना तो असंभव सा ही है । जैसा कि कुन्ती जी भागवत १-८-२६ अपनी स्तुति में कहती हैं,– "जन्म याने जिसे जाति जन्म का, वैभव सत्ता का, ज्ञान विद्वता का तथा लक्ष्मी का मद है अेसे व्यक्तियों के मुख से कभी भी भगवान्नाम का स्मरण नहीं हो सकता! बस! जो संस्कारी पुण्यशाली आत्मा है वही श्री भगवान्नाम रटन कर-करा सकता है। हर प्रकार आनन्द भी उपलब्ध कर सकता है। श्री राम नाम के प्रभाव, प्रताप का वर्णन:-

सोच संकटनि, सोच संकट परत,
जर जरत प्रभाव नाम ललित ललाम को ॥
बूड़ियों तरति,बिगड़ियो सुधरति बात,
देखि होति दाहिनों स्वभाव विधि वाम को ॥
भागत अभाग अनुरागत विराग,
भाग जागत तुलसीहुँ से आलसी निकाम को ॥
धाई धारिकै,फिरिकै गोहारि हितकारी होत,
आई मृत्यु मिटत जपत रामनाम को ॥

आई हुई मृत्यु जब रामनाम से टल जाती है तो और बातो की तो कहना ही क्या? बहुतों ने इस श्री संतन कथन का यथार्थ अनुभव किया भी है कर

भी रहे है और श्रद्धा,निष्ठा,भक्तिभाव,शुद्ध निष्कपट,निश्चल भाव वाले लोग सदा करते भी रहेंगे और इसी प्रत्यक्ष अनुभव के आधार रुपी जहाज द्वारा भयंकर भवसागर अनायस ही पार कर जायेंगें। जिसने सच्चे हृदय से, अडिग श्रद्धा से, अटूट-अखूट विश्वास से श्री रामनाम महाराज का अेकबार दृढ़ आश्रय ले लिया,वह सदा के लिये निर्भय निश्चिंत हो गया। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकु, मात्रे तथा बाल गोपाल !

बीजापुर

आशीर्वाद! दिनांक ५-६-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। बम्बई से सुख पुर्वक अहमदाबाद होकर धोलका पहुँच गया। गर्मी सख्त थी फिर भी भजन का आनन्द तो अभूतपूर्व ही हुआ। पूर्णाहुति में भाविक भक्तो नें लाचारी जोशी को बुलाया था। नगर किर्तन का दो सौ फीट फिल्म भी लिया गया। बड़ा आनन्द हुआ। वहाँ से सोमवार को १०-बजे जोशी के साथ-साथ यहाँ बीजापुर आया यहा भी गर्मी असह्य पड़ती है किन्तु बारोट जयंतीभाई का मकान भी बड़ा सुन्दर है और व्यवस्था भी अेसी रखी है कि खास कोई तकलीफ नहीं है। यहाँ अभी तो ३ दिवस का अखंड जयंतीभाई के घर पर ही रखा है जिसकी पूर्णाहुति कल्ह रात्रि १० बजे होगीं। अगर कोई दूसरी जगह में अेक दो- रोज के लिये और अधिक अखंड हुआ तो हुआ नहीं तो सीधे यहाँ से महेसाना होकर जामनगर जाने का विचार है श्री प्रभु की करुणा विलक्षण है, कर्म की गति विचित्र है। यह तो न मालूम सब का काल ही आया था किन्तु दयालु प्रभु,समर्थ श्री गुरुदेव ने सबको बाल बाल बचा लिया इसमें अपना क्या? उसी की महानता,भक्तवत्सलता, शरणागतरक्षता का विरद प्रगट होता

है। अगर अेसे समय में भी अपनी सर्वसमर्थता,भक्तवत्सलता का परिचय न दे तो उसमें उसको मंगलमय नाम में निष्ठा भी किसप्रकार रह सके?

सोच संकटनी, सोच संकट परत,
जर जरत प्रभाव नाम ललित ललाम को ॥
बूड़ियों तरति,बिगड़ियो सुधरति बात,
देखि होति दाहिनों स्वभाव विधि वाम को ॥
भागत अभाग अनुरागत विराग,
भाग जागत तुलसीहुँ से आलसी निकाम को ॥
धाई धारि, फिरिकै गोहारि हितकारी होत,
आई मृत्यु मिटत जपत रामनाम को ॥

प्रविण २८-५-६२ को धोलका से सोमनाथ मेल में पोरबंदर गया और वहाँ से ३०-५-६८ को अेसा मर्मस्पर्शी पत्र लिखा कि पढ़कर हृदय द्रवीभूत हो जाता है और अेसा प्रतीत होता है कि अगर उसकी वृत्ति अेसी बनी रही तो जीवन में अवश्य ही अग्रसर हो सकेगा। जामनगर द्वारका होकर पोरबंदर जाने का विचार है जिससे कुछ दिन वहाँ रहा जा सके। जोशी कहता था कि श्री गुरुपूर्णिमा पर जब सब लोग आयेगें,उसी समय श्री गुरु तिथि का निश्चय कर लेगें अगर बाहर का प्रोग्राम न हुआ तो द्वारका में ही रखेगें। चलते समय बच्चे कोई भी न मिल सके तो उन्हे मेरा प्यार तथा आशिर्वाद कहना । जयंतीभाई का क्या समाचार है? मोहनलाल शेठ को भी मेरा राम-राम कहना । कभी कभी अेसे अनिष्ट ग्रह का परिणाम परिपक्क हो जाता है कि अपनी धारी हुई कोई भी बाते हो नहीं पाती तो श्री प्रभु तथा उनके सर्वसमर्थ दिव्य मंगलमय नामका दृढ़ आश्रय करके सदा सर्वदा प्रसन्नचित्त रहना चाहिये। सुखी में,सम्पति में तो सभी सुखी सानन्द होते है। दुखमें,विपत्तिमें,उपाधि में भी जो प्रसन्न रहता है, वही सच्चा भक्त है,वही ज्ञानी है,वही तत्वदर्शी है। बस! खूब भजन करना,सुखी रहना। सभी प्रेमीयों को मेरा श्रीराम जयराम जयजयराम। वैद्यराज,बाबूभाई जानी,बाबूभाई रंगरेज,उसके बाल

गोपाल तथा प्रेमीभाई परिवार,भरतभाई मास्टर हरिकिशन,भगवानजीभाई लल्लू गोपाल सबको। जयंति भाई द्वारका वाला का भाई गोविन्द और जो-जो याद करे सभी को मेरा जयश्रीराम। लाभशंकर मास्टर,रसिकभाई उनकी बहन पंकज तथा मास्टर के परिवार तथा अध्यापकों को मेरा श्रीराम जयराम जयजय राम। तुम बार बार लिखते हो क्षमा करना,तुमने कौनसी गलती की है। जिसे क्षमा करू। अगर कुछ हुआ भी हो तो क्या अपने ही अंगो से होने वाले अपराधों के लिये ही क्या अपने ही अंगो को कष्ट दिया जाताहै। विशेष श्री प्रभुकृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू मात्रे तथा बाल गोपाल !

जामनगर

आशीर्वाद ! दिनांक ६-८-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनंद है। इसबार गुरुपूर्णिमा के बाद से श्री प्रभुकी कृपा विलक्षण ही होती जा रही है। पूर्णाहुति के बाद जामजोधपुर के पास पाटन गाँव में अखंड था । वहाँ भी लीला तो अभूतपूर्व ही थी। गाँव के चारों तरफ डुंगर है,जंगल है। कुदरती दृश्य भी बड़ा ही विलक्षण है। अखंड प्रारंभ होते ही न जाने श्री प्रभु की क्या? कृपा प्रेरणा हो गई कि अचानक ही ऐसा मन में भाव आ गया कि अभी तक नगरों,शहरो,गाँवो में जनसमुदाय में,मानव समाज में तो खूब प्रचार-प्रसार किया,किन्तु इसबार डुंगर, पर्वत, झाड़, पेड़, पौधा,कीड़े-मकोड़े को ही प्रभातफेरी, नगरकीर्तन के रुप में श्री भगवन्नाम उन्हीं जीवों को सुनाया जाए। इसी प्रेरणानुसार प्रात:काल प्रभातफेरी के रुप श्री प्रभुनाम की तूमुल ध्वनि करते वन-वन,पर्वत-पर्वत १० दिवसों तक फिरता रहा,साथ ही साथ प्रतिदिन नित्य नूतन लीला, कभी श्री शंकर भगवान का तांडव नृत्य का

स्वरुप,कभी ग्वालबाल,गौवें के साथ श्री कृष्ण भगवान की नित्य नवीन लीला,श्रृगांरा जंगल के पत्र पुष्पो का श्रृगांर। श्री विरपुङ्गव श्री हनुमन्तलालजी की विजय पताका आगे-आगे और तुमुल ध्वनि करते करते कोल किरात भील्ल के समान गाँव के छोटे छोटे बालक पुरुष, युवान, वृध्ध ! पूर्णिमा के वक्त जोशीका जामनगर से आना और वहाँ उन दिव्य लीला स्थलों, पर्वत शृखंलाओं, हरेभरे जंगलो का हरित श्याम शोभायुक्त वनस्पतियों का फिल्म तथा फोटो क़ा लेना।बिलकुल छोटा गाँव है किन्तु लोगों की लगन भी बहुत बड़ी थी। वहाँ से आकर ९ दिवस का अखंड शुरु हुआ, इसी बीच दो दिवस के लिये सोढ़ाणा नाथा भगत के गाँव! कल्ह आया और आज फिर भी जाना है? परसो रतनपुर की पूर्णाहुति कर, शुक्रवार को ३ बजे कीर्ति मेल मे साबरमती ४० दिवस के अखंड के लिये जाना है। इधर श्री प्रभुकृपा से पोरबंदर तथा उसके आजूबाजू के गाँवो में अखंड खूब चल रहा है। लोगों में लागणी खूब बढ़ती जा रही है। महुवा में श्री महाराज की तिथि का उत्सव इसबार ७ के बदले ९ दिवस का रखने का वहाँ वालों का अति आग्रह है। अपना समाचार लिखना केश का क्या हुआ या कब फैसला होगा ? सभी प्रेमीयों को मेरा श्रीराम जयराम जयजय राम। पत्र साबरमती के पते से देना C/o. कमलाशंकर मिश्र,फीटर,रेल्वे लोकोशेड साबरमती,अहमदाबाद-१९। विशेष श्री प्रभुकृपा पाटण में तुम्हारा पत्र मिला था।

श्रीराम जयराम जयजय राम

श्रीराम जयराम जयजय राम

श्रीराम जयराम जयजय राम

श्रीराम जयराम जयजय राम

श्रीराम जयराम जयजय राम

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

|| श्री राम ||

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू, मात्रे,प्रेमजीभाई तथा बाल गोपाल !

परमहंसआश्रम, वृन्दावन मथुरा

जय श्रीराम दिनांक २९-३-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। श्री प्रभुदत्तजी के यहाँ दो दिवस रह कर यहीं आ गया हूँ । वहाँ बिलकुल मन नहीं लगता था । अभी तीन चार दिनों से श्री हरिबावाजी आये हैं, और श्री श्री उड़िया बाबा के आश्रम में भजन,कीर्तन,कथा तथा रासलीला भी होती हैं। श्री हरिबावा से द्वारका में मुलाकात हुई थी किन्तु उस समय के अखंड से ही उन पर काफी प्रभाव पड़ा था उसी कारण आज यहाँ मिलने पर बड़ा प्रेम किया और रात्रि को अपने कीर्तन सत्संग के बाद मुझे भी धुन बुलाने का थोड़ा समय देते हैं कारण उनका सब काम बिलकुल नियमित ९ बजे तो ९ अेक मिनट अधिक नहीं यहाँ से १-४-६५ को वे जोधपुर जानेवाले हैं,मुझे भी कहलवाया है कि अगर कही का प्रोग्राम न हो तो मेरे साथ चलें । देखें क्या होता है अगर बहुत आग्रह होगा तो जाऊँगा । अेक नूतन अनुभव प्राप्त होता है । कमलादेवी सबके सब कुशलपूर्वक हैं और बड़ी सेवा करती है । बेचरदास तो चला गया। बिमार हो गया था । अेक बोझ हल्का हुआ। तुम्हारा अभी तक कोई पत्र का जवाब ही नहीं आया । अगर जोधपुर जाऊँगा तो शायद श्री रामनवमी के बाद लौटूगा। अगर नहीं गया तो चार पाँच दिवस बाद बर्षाने जाऊँगा। वहाँ से गिरिराज,नन्दगाँव होकर वृन्दावन और फिर मथुरा में दो चार दिन रहकर बम्बई आनेका विचार है,वहाँ से सिधे पोरबंदर जाऊँगा । अेसा रामजीके आग्रह के कारण विचार है। अभी जामनगर वालों का पत्र आया है कि श्री रामनवमी उत्सव जामनगर करो और आज्ञा करो तो हम लोग बुलाने को आवे। दूसरी बात कामेश्वर मुझे वगैर कुछ कहे सुने सीधे बाबूभाई रंगरेज जामनगर वाले का भाई गुलाब के पास कलकत्ते चला गया और द्वारका जामपुरा हवेली में पत्र

लिखा कि मुझे पैसे कि जरुरत है घर बनाने के लिये। गुलाब ने बाबूभाई तथा जोशी को लिखा बाबूभाई ने मुझे पूछा तो मैने स्पष्ट कह दिया कि अगर तुम लोग अगर ऐसा कुछ करोगे, तो मेरे प्रेमी, हितैषी न रहकर मेरे लिये शत्रु का काम करोगे तुम लोग और मेरी जीवन की पूजीं तप,त्याग को सदा के लिये कलंकित कराने वाले बनोगे । गाँव के सभी यही कहेंगे कि बाबाजी की सम्मति बगैर कोई पैसा दे सकता है ? फिर मैं कितना बड़ा अपराधी ईश्वर और समाज के सामने बनू । अगर उसे करना है तो क्या ? हजार दो हजार रुपये वहाँ नहीं मिल सकते? अपनी जमीन बेच ले, वही किसी से उधार ले ले या जैसे हो अपना वह जाने से । संसारिक व्यवहार से अपना क्या सम्बन्ध ? काम करना नहीं, पुरुषार्थ करना नहीं और दूसरे के परिचय के बल पर मजा करना यह कहा की बात ? तो इस विषय में सावधान रहना। अभी तो कुछ जरुरत नहीं-यहाँ भी तो भिक्षा मिल जाती है । गिरधारी बनाता खाता है । प्रेमजीभाई, मात्रे, सब बाल गोपाल को जय श्रीराम । अगर मथुरा धर्मशाला की चिठ्ठी मिल जाये तो जरुर भेजना जिसके विषय में तुमने कहा था । विशेष श्री प्रभु कृपा और सब आनन्द है ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल ! श्री द्वारकाधाम महाजन वाड़ी

आशीर्वाद ! दिनांक १५-६-६४

तुम्हारा ११-६-६४ का लिखा हुआ पत्र आज मिला। समाचार मालूम हुआ । सेठ जयश्री आ नही सकेगा एेसी प्रतीति तो मुझे पहले से ही थी किन्तु उसके कहने के मुताबिक कि आऊँगा रामजी भाई ने लम्बी चोड़ी व्यवस्था की । धुन भी लम्बा समय तक के लिये रखा और अभी भी रामजी की इच्छा

२०-६-६४ के बदले २७-२८ को पूर्णाहुति करने की है। इससे भी अधिक समय तक अखंड बढ़ाने कि इच्छा प्रकट करता था किन्तु कल्ह मैने कहा कि २७-२८ तारीख तक सेठ आवे या नहीं अपनी अखंड को पूर्णाहुति २७-२८ तारीख को कर लेना है फिर भी सेठ को सूचित कर देना कि २०-२१ के बदले २७-२८ को पूर्णाहुति रखी है । अगर अवकाश मिले तो लाभ-लेवे। नहीं तो जैसी प्रभु इच्छा। मेरा या यहाँ भजन करने वाले भाईयों का सेठ को आने के लिये आग्रह करने का कोई दूसरा उद्देश्य नहीं है । सिर्फ लोगो की इतनी भावना है कि जिस उदारता तथा सद्भावनापूर्वक सेठ ने जगह दी उसी महती सद्भावना तथा उदारता महानता पूर्वक उसके दत्त स्थान का सदुपयोग हो रहा है या नहीं यह अपनी आखों से देख ले तो उसे पूर्ण संतोष होवे, यो तो चित्रों द्वारा और अपने प्रतिधिनियों द्वारा सब कुछ देख सुन लिया ही है कि स्थान कितना दिव्य बन गया है और स्थान का कितना सद्उपयोग हो रहा है, शायद इनके पूर्वजों के समय में भी अेसा इस स्थान में कभी नहीं हुआ होगा । श्री द्वारिकाधाम में अखंड की पूर्णाहुति आनन्द पूर्वक कल हो गई। खंम्भालिया में भी ९ दिवस अखंड का अभूतपूर्व प्रभाव पड़ा । साथ ही साथ गुजरात में भी श्री प्रभु नाम की छाप विलक्षण पड़ी है यदपि इस बार ही सर्वप्रथम गुजरात प्रांत में अखंड निमित्त जानेका प्रसंग आया । धोलका से डाकोरजी,सारसा और बाद में अहमदाबाद में भी जुदा जुदा महल्ला में भी पाँच दिवस का अखंड हुआ और प्रभाव भी अच्छा पड़ा । मुझे तो अेसा विश्वास भी नहीं था कि उन लोगों पर इतना प्रभाव पड़ेगा किन्तु न मालूम श्री गुरुदेव की क्या ईच्छा ? और श्री नाम महाराज की कैसी विलक्षण शक्ति ? ८-६-६४ की **"जनसत्ता"** में धर्ममंगल प्रसंग में जो मेंरे विषय में जाहिरात किया है उससे सद्विचार समिति के कार्यकर्ताओ का भाव, लगन, स्वतः व्यक्त होता है । अगर जनसत्ता ८मी तारीख की मिले तो जरुर वाँचना । अभी भी उन लोगों कि इच्छा पूरा श्रावण मास अहमदाबाद में अखंड रखने की है अेसा उन लोगों के पत्र द्वारा पता लगता है । **यह सब श्री नाम महाराज की ही विलक्षणता**

है। रामेश्वर मारवाड़ी के यहाँ श्री १०८ श्री प्रभुदत्तजी की पेटी(बाजा) पड़ी है। आज उनका हरिदास के उपर पत्र आया है कि पत्र लिखकर जल्दी से जल्दी पेटी भेजवा दे तो रामेश्वर को कहना कि **"संकीर्तन भवन"** वंशीवट,वृन्दावन जिला मथुरा के पते पर जल्दी से जल्दी भेज देवे। श्री मात्रे,प्रेमजीभाई,बाबूभाई दहीसर तथा अन्य सभी प्रेमियों को जयश्री राम, अपने बहनोई राजकोट वाले शेठ को भी मेरा जय श्रीराम। विशेष श्री प्रभु कृपा । आम की पेटी पोरबंदर होकर खंम्भालिया और वहाँ से द्वारका तक आई। तुम्हारे सद्भावना का फल तीन जगहों मे फला-सुदामापुरी,खम्भालिया और अंत में द्वारका पुरी में भी आम का भगवान को भोग लगा। मैं यहाँ से १९-६-६४ को मेल में पोरबंदर जाऊँगा उसके बाद का प्रोग्राम मिलने पर। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू मात्रे तथा बाल गोपाल!

श्री द्वारकाधाम

आशीर्वाद! दिनांक १६-११-६५

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । परसों तुम्हारा टेलीफोन आया था। किन्तु प्रेमांकूर भाई ने उस समय मुझसे कुछ कहा नहीं। दूसरे दिन बात की और कहा कि आज ९ बजे रात को काकू भाई का कौल आयेगा किन्तु ९ बजे रात को नरसी कह गया कि कौल नही आया खैर ! कोल की आवश्यकता तो थी नही । मेरा स्वास्थ्य बिलकुल ठीक है। अेक दिन के लिए द्वारका आया था किन्तु लोगों में खूब उत्साह और लगन देखकर यहाँ रुकना पड़ा । इतनी छोटी जगह में अेक साथ, तीन-तीन जगहों में अखंड चल रहा है । भाग्यशाली प्राणी भाग लेते हैं। अभागी अपने किस्मत पर रो रहे हैं। नहीं तो द्वारका के लिये इससे

बढ़कर प्रत्यक्ष प्रमाण और क्या हो सकता है कि किसी प्रकार का प्रतिकार या सुरक्षा कि व्यवस्था न होने पर भी १७ बम्बवर्षा के बाद भी यहाँ अेक प्राणी का बाल भी वांका नहीं हुआ। यहाँ तक कि अखंड धून के मंडप के बाजू में भी बम्बवर्षा के बावजूद भी यहा अेक प्राणी का भी बाल वांका नही हुआ । यहां तक कि अखंड धून के मंडप के बाजू में भी बम्ब पड़ा किन्तु किसी भी धून करनेवाले को कोई ईजा नहीं हुई और पूर्ण उत्साह,धैर्य एवं निर्भयतापूर्वक अखंड में मौंजूद अबाल वृद्ध नर-नारी अखंड चलता ही रहे । यही हाल जामनगर का भी है सारे शहर में नाश भाग-भगदड़ मच जाने पर भी अखंड प्रेमिजन निर्भयता एवं निश्चिन्तता पूर्वक अखंड चलाते ही रहे और अभी चल ही रहे है। मुजफ्फरपुर में १ मास तक अखंड ११-११-६५ से चालु हुआ है उसका तार आया है किन्तु मेरा उधर जाने का विचार नहीं हैं । यहाँ से अमावश्या का ग्रहण का स्नान करके पोरबंदर जाने का विचार है वहाँ भी वैशाख अक्षय तृतीया से अखंड चालू है। छतौनी के अेक व्यक्ति जिनका नाम रामपुकार सिंह है वहाँ जाने वाले हैं उनको प्रेमजी भाई का पता लिख दिया है । शायद तुम्हारे पास भी जायें उनको सीर्फ बम्बई देखने की लालसा है अेक जरुरी काम यह है कि जब मै वरसाने (वृन्दावन) गया था तो उस समय अेक अति दरिद्र ब्राह्मण मिला था उसकी लड़की बड़ी हो गई थी और उसका विवाह करना था उसने अति आग्रह किया तो मैने वचन दिया था कि जब शादी की बात ठीक हो जाए तो लिखना जो बन सकेगा भेंजवा दूंगाँ । कल्ह उसका पत्र आया है और आज मैने- जयन्तिलाल नथुभाई भातेलिया से १०१ रुपैया मनी आर्डर करा दिया है उसमे जयन्ति ५० रुपैया दिया है बाकी ५० रुपैया जयन्ति को भेजा देना। जयन्ति का पता है जयन्तिभाई नथुभाई भातेलिया नीलकंठ चौक द्वारका । और सब देश,काल परिस्थिति प्रमाणे श्री प्रभु कृपा से ठीक ठीक चल रहा है । वहाँ के सभी प्रेमीयों को मेरा जयश्री राम। भौतिकता एवं भोगवासना की प्रबलता दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है अध्यात्मिकता एवम् आस्तिकता का प्रभाव क्षीण होता जा रहा है

जब कि इस भारत-पाकिस्तान युद्ध दरमियान प्रत्यक्ष लोगों का अनुभव हो गया है कि भगवान की कृपा से भगवान की प्रिय भूमि भारत की रक्षा हुई है एवं इसका गौरव विश्वविख्यात हो गया है । फिर भी आपत्ति का समय दूर होते ही लोगों में वही भोग, वासना, विलासिता दासिता चालू हो गई है जिसके परिणाम स्वरुप यह युद्ध प्रारंभ हुआ था। सारे विश्व में भौतिकता एवं संग्रह संचय का प्रबल वायु मंडल बनता जा रहा है,जिससे लोगों में नैतिकता, अध्यात्मिकता, आस्तिकता, का भाव विलीन सा होता जा रहा है और जिसके फलस्वरुप संसार में रोग, भय, शोक, चिन्ता, व्यग्रता, व्याकुलता, अशांति ही बढ़ती जा रही है। अेसे समय में जो जीव भगवत् परायण एवं आस्तिक बना रहा वही धन्य, श्री प्रभु का कृपा पात्र है। इससे बचने और प्रभुपरायण बने रहने का अेक ही अमोघ उपाय,साधन है-श्री **प्रभु नाम** का अनन्य आश्रय । इसी में लोक-परलोक,मानव जीवन जन्म को सफल सार्थक बनाने की अटूट अमोघ शक्ति निहित है। बस! श्री प्रभु नाम का दृढ़ आश्रय लेकर सुखी बनो,बनाओ,जीव-जन्म का अमूल्य लाभ उठाओ यही हार्दिक कामना सह श्री प्रभु प्रार्थना। विशेष श्री प्रभु कृपा। मात्रे,प्रेमजी,बाबूभाई जानी,बाबूभाई रंगरेज सबको मेरा यथायोग्य सह जय श्रीराम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

वृन्दावन परमहंसाश्रम

श्री विहारीजी के बगीचा के सामने

आशीर्वाद !

दिनांक : १६-३-६५

श्री प्रभु कृपा से मैं सकुशल वृन्दावन पहुँच गया। साथ में आने वाले दोनों ही ऐसे ही नीकले जैसे तुम्हारा कथन था। उनका सम्भाल मुझे ही करना पड़ता है। बेचरदास लगता था, कुछ काम आयेगा किन्तु बिलकुल बेकाम। अपनी समझ

से कोई काम नहीं कर सकता। प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी का भी यही हाल है। बाहर तो विज्ञापन (Adevertisement) खूब कर रखा है। किन्तु यहाँ कुछ भी नहीं। इतनी श्री प्रभु की कृपा कि दिल्ली स्टेशन पर ही मेरा अेक पुराना स्नेही संत जिसका नाम "मस्तरामजी" है। अचानक मिल गये और मैं इन लोगों को तो सीधे वृन्दावन उनके आश्रम में भेज दिया और मैं उनके साथ नन्दगाँव की होली देखने के लिये बीच में ही कोशी स्टेशन पर उतर गया। अगर सीधे प्रभुदत्तजी के आश्रम में गये होते तो हैरान हो जाता। वंसीवट पर उनका स्थायी आश्रम है, वहाँ जाने पर तो कोई जवाब भी नहीं देता है। दूसरे दिन बेचरदास को यज्ञ स्थान में भेजा तौ भी कोई पता नहीं लगा सिर्फ उनके व्यवस्थापक ने कहा हां!.. हा!.. आ जाओ ब्रह्मचारीजी इतंजार कर रहे हैं । किन्तु दूसरे दिन मैं खुद गया तो ब्रह्मचारीजी उपर से तो खूब भाव दिखलाया किन्तु ३ घंटे रहने के बाद अेसा अनुभव हुआ कि भीतर कुछ नही है । अेक छोटी सी झोंपड़ी दिखला दी जिसमें न बन्द करने का दरवाजा है, न उसका सतह ही बराबर है जिस पर सोंया जा सके, दूसरे-दूसरे जिनसे उनका कुछ स्वार्थ सधता है, उसके लिये सुंदर कुटिया बनी है पाट है। सब व्यवस्था है मैंने तो सर्वत्र यही अनुभव किया कि सभी जगह पैसा और पैसावाले सेठियों का ही मान है । महात्मा कहलाने वाले भी देव की तरह उनकी पूजा प्रतिष्ठा करते हैं। त्याग की किंमत करने वाला श्रीप्रभु के सिवाय जगत में इस समय विरला ही भाग्यशाली प्राणी निकलेगा । फिर भी मेरा विचार है कि कुछ दीन रहकर और भी देखू। अखंड में भी कुछ खास बात नहीं। उसका स्थान तो गौण ही सा है। नौ झौंपड़ीयाँ बनी हैं उसी में कुछ लोग रहते हैं और दोदो-तीनतीन आदमी "हरेराम हरेराम रामराम हरेहरे... हरेकृष्ण हरेकृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे..." करते रहते हैं । अभी सभी कुंज में अखंड भी चालू नहीं हुआ है। वृन्दावन में होली के कारण बहुत भीड़भाड़ है। सभी आश्रमों में कुछ न कुछ समारोह चल रहा है किन्तु उनका उद्देश तो पैसे का संग्रह संचय ही है अेसा देखने में आता है । जो कुछ भी हो किन्तु श्री वृन्दावन भूमि की महिमा तो अलौकिक

ही है। रामनवमी तक अगर मन लगेगा तो रहूँगा नहीं तो कुछ समय वर्षाना,कुछ गिरिराज, नन्दगाँव में फिरकर बिताऊँगा और भगवत् की इच्छा हुई तो इन दोनो आदमीयों को यही से रवाना करके श्री अवध जाऊँगा और वहाँ होकर फिर पोरबंदर आऊँगा। सब से भला अकेला ही ठीक है। साल में मास दो मास तो स्वतंत्र रुप से वृन्दावन में रहने का विचार जरुर होता है। आगे श्री प्रभु इच्छा। विशेष श्री प्रभु कृपा और सब आनन्द है। सभी प्रेमीयों को मेरा जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम् ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

धोलका

आशीर्वाद! दिनांक : १९-२-६५

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द-मंगल है । तुम लोग भी सकुशल हो तथा पैसे की प्रवृत्ति में तल्लीन हो रहे हो, यह भी श्री प्रभु की कृपा ही है। मनुष्य स्वयं अपने आप ही फांस में अपनी गला फँसा लेता है और पीछे से पछताता है । इतनी भी प्रवृत्ति कि खाने सोने की भी फुरसत नहीं तो भला ऐसे इस प्रवृत्ति से ऐसे वैभव से ही लाभ क्या? जीवन मिला है जन्म सुधारने के लिए, इतर योनियो में प्राप्त हुई अशान्ति भी प्रवृत्तियों को शान्तिमयी बनाने के लिए ! खैर ! भक्तो को भगवान जिस स्वरुप में रखे, उसी रुप में रहकर, उस प्रवृत्ति को ही श्री प्रभु की दया प्रेरणा एवं सेवा समझकर किसी भी प्रवृत्ति में भी तल्लीन रहे तौ भी कोई वाधा नहीं । सब कुछ श्री प्रभु कृपा का तथा श्री प्रभु को अपना समझकर कोई भी प्रवृत्ति करनें में किसी प्रकार की कोई हानि

नहीं किन्तु सब कुछ अपना और श्री प्रभु को गौण समझ अपने को कर्ता मान बैठना तो भारी भूल है, महान अज्ञान है जीवन का महान अभिशाप है। अतः प्रवृत्ति करने वालो को हंमेशा जागरुक सचेत रहकर ही प्रवृत्ति करना चाहिए अगर ऐसी प्रवृत्ति की जाती है तो वह प्रवृत्ति भी निवृत्ति का ही फल देती है। तुझे क्या कहना? तुम स्वयं समझदार हो। बुद्धिमान के लिये ईशारा ही काफी है। अभी १०-२-६५ अहमदाबाद में प्रोग्राम हैं। यहाँ २५-२-६५ को पूरा हो जाएगा १०-३-६५ के बाद द्वारका जाने का प्रोग्राम था। किन्तु श्री १०८ श्रद्धेय श्री प्रभुदत्तजी का पत्र आया है कि जहाँ भी हो १९-३-६५ के पहले वृन्दावन जल्दी से जल्दी आ जाओं, उनका एक वर्ष का गौव्रत पूरा होता है और उसी उपलक्ष्य में १४-३-६५ से १४-४-६५ तक बहुत लम्बा चौड़ा प्रोग्राम है। उस अनेक प्रोग्रामों में एक मास का अखंड भी है। जिसके लिये उन्होने लिखा है कि १०० कीर्तन करने वाले लेकर आओं। मैंने स्पष्ट लिख दिया है कि जब मैं अपने आने जानें की व्यवस्था नही कर सकता तो इतने व्यक्तियों की कैसे और कहाँ से कर सकता हूँ। अगर मेरे स्वयं अकेला आने की ही बात है तो मैं द्वारका होकर होली के बाद आऊ। अगर आप अति आग्रह होवे तो द्वारका न जाकर सीधे वृन्दावन आ जाऊँगा। अब उनके पत्र की इन्तजारी है जैसा जवाब आयेगा वैसा करूँगा। वृन्दावन जाकर एक मास रहने की मेरी भी इच्छा है किन्तु मेरी इच्छा ही किस काम की जैसी श्री प्रभु की इच्छा होगी वैसा ही होगा। अगरबत्ती हरिदास ने दिया और पेन की दो स्याही भी। उसने तुम्हारी अस्तव्यस्त प्रवृत्ति का भी हाल सुनाया। अगरबत्ती तो पंडरपुर वाली पतली छोटी ठीक थी। म्हात्रे, प्रेमजी सभी को मेरा जय श्री राम। विशेष श्री प्रभु कृपा। अवकाश मिले तो उत्तर देना विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

पमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम ज़य जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल!

श्री रामजी मंदिर
हाजा पटेल की पोल
आशीर्वाद ! अहमदाबाद
दिनांक : १-१-६५

तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ। इतनी प्रबल प्रवृत्ति के बावजूद भी तुम्हारी तबियत अच्छी है- यह श्री प्रभु की कृपा का ही फल है। जब तक शरीर स्वस्थ नहीं तब तक कोई भी पुरुषार्थ प्रयत्न शक्य नही हैं। अतः किसी महापुरुष ने तो असा लिखा है कि बिमार होना भी महा पाप है कारण कि बिमारी यानी शरीर की अस्वस्थता आते ही सभी शरीर से सम्पन्न होनेवाली क्रियायें प्रायः बंद पड जाती है । अतः **अस्वस्थता जैसे अभिशाप है वेसै स्वस्थता वरदान है** किन्तु यह स्वस्थता दोनो प्रकार की अन्तर और बाह्य मानसिक और शारीरिक। कारण कि **शारीरिक अस्वस्थता मानसिक अस्वस्थता का ही परिणाम है** चाहे इस जन्म का हो या पूर्व जन्मका। मानसिक अस्वस्थता कामना तथा वासना तृष्णा के कारण ही होती है । जितनी भौतिकता की वासना प्रबल होती है उतनी ही मानसिक अस्वस्थता बढ़ती है यह मानसिक अस्वस्थता ही दुख, सुख, जन्म-मरण, हर्ष, विषाद का हेतु बनता है अन्यथा आत्मा तो सदा ही स्वस्थ, निर्विकार, निरंजन है और वही मेरा स्वरुप भी है । यद्यपि आत्मा की अनश्वरता, नित्यता, निर्मलता सहज स्वरुप ही है फिर भी न जाने क्यो यह जीव अपने सहज आनन्द रुपस्वरुप को भूलकर, व्यर्थ संसारचक्र में भटक रहा है । जो भी हो कोई इसे माया,कोई अविद्या कोई अज्ञान कह के पूकारते हैं और जो विवेक विचार आने पर मिथ्या सी जान पड़ती है । किन्तु अभी तक किसी तत्ववेत्ता ने असा निश्चयपूर्वक नहीं कहा कि माया मिथ्या ही है जिसने इसके स्वरुप का जैसा भी अनुभव किया हो। किन्तु सभी ने अेक स्वर से अंगीकार (स्वीकार) किया है कि **माया का स्वरुप**

अनिर्वचनीय है । अत: इसे पार पाने का, मुक्त होने का अेक ही रास्ता सभी को अपनाया कि उस अनिवर्चनीय माया का जो नियामक है उसी की अनन्य चरण-शरण ग्रहण करने चाहिए जिससे उसकी अहैतुकी, अनुकंम्पा से उसकी विलक्षण अघटन, घटना परियसी माया के स्वरुप का बोध प्राप्त कर सके। और उस जगन्नियता, जगदाधार, जगदिश्वर, मायापति की कृपा दया प्राप्त करने का भी अेक ही अमोघ साधन है **मन, वचन, कर्म से चतुराई छोड** उसका सतत भजन करना। भजन का स्वरुप है दीनभाव, आर्तनाद और करुण स्वर से उस घट-घट वासी,परम अविनाशी, परमानन्द, आनंन्दकंद की पुकार करना। "पुकार करने" बुलाने का अेक ही साधन है **उसके "दिव्य", चिन्मय, मंगलमय, आनन्दमय नाम का आश्रय लेना !"** बस ! नाम रटो-रटाओं जपो-जपाओं । न रटा सको न जपा सको तो स्वयं जरुर रटो, जपो अगर वाणी से नहीं रट जप सकते तो मन से रटो, जपो अगर यह भी न कर सको तो कम से कम अन्तर से अनुसन्धान करते रहो कि नाम भूल तो नहीं गया। विशेष श्री प्रभु कृपा । यहाँ के अखंड में जैसी सफलता मिली वैसी स्वप्न में भी आशा नहीं थी। नगर किर्तन भी भव्य निकला । देशकाल के अनुकूल अभी ९ दिवस के लिये अखंड बढ़ा दिया गया है सद्विचार समिति के तरफ से। वही श्री रामजी के मंदिर में अखंड चालू है। अभी तो नव दिवस की बात है किन्तु विचार १४-१-६५ तक का है । आगे श्री प्रभु कृपा । प्रचार सुन्दर हो रहा है पेन्सिल की लीड खतम हो गई है बने तो भेजना । बाबू भाई दहीसर वाले का पत्र आया है और प्रेमजी भाई का भी कि बम्बई जरुर आओं तो उन लोगो से मेरा जय श्री राम कह देना कि जैसी प्रभु कृपा इच्छा होगी वैसा होगा। अभी तक अखंड चालू है और पता नही कब तक चालू रहेगा । विशेष श्री प्रभु कृपा।मात्रे तथा बाल गोपाल को मेरा आशिर्वाद तथा समाचार कहना है और सब आनन्द मंगल है जब तक श्री प्रभु की कृपा है ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल!

जामनगर जयहिन्द वाड़ी

दिनांक २-११-६४

शुभाशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से तुम रोग मुक्त हो गये और मेरी वाणी का मान रख लगभग डेढ़ मास विश्राम ले पुनः विजयादशमी से अपने कर्तव्यपालन,अर्थ संचय संग्रह में संलग्न हो गये,ये सभी समाचार तुम्हारे पत्र द्वारा जानकर प्रसन्नता हुई साथ ही तुम्हारी महत्वाकांक्षा की बात जानकर अह्लाद हुआ किन्तु इसमें मेरा या तुम्हारा बस ही क्या है ? हमलोंग तो इस ससांररुपी नाट्यशाला के अेक पार्ट करने वाले पात्र मात्र हैं । नाटक की सारी लीला अभिनय का उत्तरदायित्व न तो नाट्यशाला के नियामक संस्थापक,व्यवस्थापक श्री प्रभु तथा उनके अंगभूत शक्तियाँ ब्रह्मा, विष्णु, महेश, उमा, रमा, ब्रह्माणी, दुर्गा, काली, शारदा, गणपति ,कार्तिकेय आदि शूत्रधारको के उपर ही नृत्यु करनेवाले बुद्धिजीवों का सारा दारोमदार (जिम्मेदारी) है। जैसे कि कठपुतली को नचाने वाला जैसा नचाता है। वैसा ही परवश होकर उसे नाचना ही पड़ता है। इस नृत्य करने वाले, नचाने वाले में जड़, चेतन सभी प्राणी मात्र है। जड़ की तो कोइ बात नहीं, चेतन भी जो स्वरुपतः तो चेतन का अंस होने से चेतन ही है किन्तु अविद्यावसात् जड़ प्रकृति के संग होने से वर्तमान में अपने चेतन स्वरुप को भूल कर जड़वत् बना हुआ, है अेसा सजीव चेतन प्राणी भी तत्वतः जड़ तत्वों की तरह नचाया जा रहा है, और परवश होकर नाच ही रहा है । ये नाचने वाले सभी प्राणी अगर उस नचाने वाले नियामक सूत्रधार के इशारे को भली भाति समझ ले और अपने कर्तव्य पालन रुप नृत्य द्वारा उस नचाने वाले नाट्यशाला के नियंता प्रभु की प्रसन्नता प्राप्तकर ले तो यह चौरासी लक्ष योनियों में अनादिकाल से नाचने वाला भटकने

वाला जीव उस प्रभु जगन्नियता, जगदाधार, जगदीश्वर, चराचराधिपति परमेश्वर की मर्जी, कृपा, करुणा, दया, प्रसन्नता से सहज ही मुक्त हो सकता है। अन्यथा इस नृत्य से भवटावी से, जन्म-मरणसे, सुख दुख, हानि लाभ संयोग वियोग रुप अनादि नृत्य नाच मुक्त होने का कोई अन्य साधन नहीं उपाय नहीं। जैसा कि श्री गोस्वामी जी ने लिखा है :- **"उमा दारु पोषित की नाई, सब ही नचावत राम गुसाई।" "नट मर्कट ईव सबही नचावत, राम खगेश वेद अस गावत"** गीता में स्वयं श्री भगवान कहते हैं - ईश्वरः सर्व भूतानां हृदयेशे अर्जुन तिष्ठति, भ्राम्यन् सर्व भूतानि यन्यारुढ़ानि मायया । तमेव शरणं गच्छ सर्व भावेन भारत ! तत्प्रसातृत् परां शान्तिं स्थानं प्राप्यससि शाश्वतं ।। बस सभी कर्म भगवदर्पण बुद्धि से अपने को श्री प्रभु का दास,बालक समझते करते रहो इसी में अपने जीवन जन्म का साफल्य एवं मानव जीवन का सच्चा रहस्य छिपा है। अभी तो जामनगर में जयहिंन्द वाड़ी में हूँ । यह बाड़ी रमेशभाई की है और जामनगर से राजकोट मार्ग के चौथे मील पर है और सभी आनन्द मंगल है । दीपावली तथा नूतन वर्ष तुम लोंगो का मंगलमय होवे एेसी श्री प्रभु से हार्दिक अभ्यर्थना। पंडरपुर वाली अगरबत्ती मिले तो भेजना । विषेश श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

।। श्री राम ।।

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल! श्री सुदामापुरी

आशीर्वाद ! दिनांक १३-७-६४

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है और आशा है तुम लोग भी श्री प्रभु कृपा से सकुशल होगे। तुमने दो बार लिखा अेक पत्र भेजूँगा जो आप स्वयं वाचना किन्तु पत्र अभी तक आया नहीं। इस बार संकीर्तन भवन का वार्षिकोत्सव भी अभूतपूर्व ही हुआ किन्तु सेठ जय श्री लखूभाई तथा तुम्हारे दर्शन के लिए

यहाँ के अकिंचन नाम प्रेमी चातक की तरह वाट जोते रहे। अन्त में सभीको निराशा ही हाथ लगी। बात भी सही है श्री प्रभु कृपा तथा पूर्व के संचित पुरायराशि के बिना कोई भी जीव ऐसे महान् यज्ञ में, परम पवित्र सत्कर्म में सम्मिलित नही हो सकता है। श्री प्रभु की माया विलक्षण है वह मिथ्या भोगो और प्रलोभनों में फँसाकर जीव को इसी प्रकार अनेक जन्मों से भटका रही है। जन्म मरण के दुःसह्य, दुर्जय भयंकर चक्र में फिरा रही है और न जाने इन नश्वर भोगों के प्रलोभनों में कब तक भटकाती रहेगी ? जीव प्रभु भजन को हंमेशा टालता ही जाता है और विषय वृत्ति को ही दिन प्रतिदिन बढ़ाता जाता है। यद्यपि यह सभी जान रहे है कि जीवन क्षणभंगुर है। यहाँ के सभी के पदार्थ विकारी विनाशी हैं फिर भी चेतना नहीं - यह कैसी विलक्षण विडंबना है ! खैर ! जो भी हो सेठ भाग्यशाली अवश्य है जो उसकी इन्तजारी में भी दर वर्ष ऐक महान यज्ञ हो ही जाता है। इस बार यज्ञ भी विलक्षण हुआ और सेठ के होस्टेल के लड़को की करतूत भी विलक्षण ही हुई। यहाँ के व्यवस्थापक रतिभाई डाक्टर की अनुमति लेकर जहाँ मैंने पहले अनुष्ठान किया था,उसी में आज कल होस्टल कौलेज के लड़को का चल रहा है। पीछले नीचे के खाली जगह में अन्नकूट की सामग्री बनाई जा रही थी उसमें लड़को नें काफी उत्पात मचाई फिर भी मौन धारण कर सामग्री तैयार करके बंन्द करदी गई और उसके अलावा नगर किर्तन में फिरनेवाली छोटी वालिकाओं के लिये पौंने मन दूध गरम करके रखा था, वह दूध लड़को ने ताला तोड़कर पी लिया जब नगर कीर्तन लौटकर आया और दूध लाने को गये तो ताला टूटा पड़ा है और दूध गायब है। भला! सेठ जैसा धार्मिक वृत्ति वाले के लिये क्या यह शोभा देता है । जो अपने पूर्वजों की पवित्र किर्ति में कलंक लगाने वाले ऐसे नास्तिक, उदण्ड, अधार्मिक, चरित्रहीन, लड़को को होस्टेल चलावे। खैर ! प्रभु इच्छा । आवश्यक काम यह है कि मुजफ्फरपुरवाला मारवाड़ी रामेश्वर,गिरिधारी जिसके घर पर हम लोंग भोजन करने गये थे । उसके यहाँ श्री प्रभुदत्तजी की हारमोनियम (पेटी बाजा) पड़ी हुई है । ज़ो उसने ट्रेन मेंसे ले आई थी उसे

ब्रह्मचारी जी के पास भेज दे। वे बारबार पत्र लिखते है। इसके लिए अेक बार और मैने पत्र लिखा था तो यह भूलना नहीं उसको जरुर कह देना जल्दी उनका पेटीः- नीचे पते पर भेज दे- श्री १००८ प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी,संकीर्तन भवन,वंसीवट,वृन्दावन जि० मथुरा। सभी प्रेमियों को जय श्री राम। गुरुपूर्णिमा जामनगर में होगी। आगामी रविवार को जामनगर जाने वाला हूँ अभी रतनपुर ग्राम में दो मास का अखंड चल रहा है। विशेष श्री प्रभु कृपा। तुम्हारी भेजी हुई पवित्र माला आ गई थी।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

नरवारा

शुभाशीर्वाद ! दिनांक २७-१-६४

तुम्हारा २१-१-६४ का लिखा हुआ पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ जनवरी के प्रारंभ में ही श्री द्वारकाधाम चले जाने का था जैसा कि पहले छगनलाल (माताजी) द्वारका वाले के साथ निश्चय हो चुका था किन्तु छतौनी का प्रोग्राम बढ़ जाने के कारण वैसा नहीं हो सका। छतौनी में श्री अखंड महायज्ञ की पूर्णाहुति अभूतपूर्वही हुई किन्तु जिस विशेष कार्य (मंदिर जिर्णोद्धार) के निमित्त इतने दिनों तक अेक स्थान में ही रुकना पड़ा। वह श्री प्रभु की प्रेरणा या काल के प्रभाव कारण रक्म एकत्रित हो जाने पर भी आपस के रागद्वेष तथा अहंता के कारण बना बनाया काम अस्तव्यस्त जैसा हो गया । मेरी प्रवृत्ति दुःखरुप ही है, तथा कलिकाल का प्रभाव भी दिनप्रतिदिन इतना प्रबल होता जा रहा है कि जो कोई कुछ भी सत्कर्म करता है या करवाता है उसको भी अपनी मान बड़ाई, महत्ता, अहंमता का ही भूत सवार रहता है और आसुरी सम्पति सन्तत

वाला व्यक्ति जैसे अपने को ही दूसरा ईश्वर-कर्ता, भर्ता मानने लगता है। दूसरो से कहता फिरता मेरे जैसे धनवान कौन ? मेरे जैसे गुणवान कौन ? मेरे जैसे बुद्धिमान कौन ? मैं जो चाहू वही कर सकता हूँ । मैं दान दे सकता हूँ यज्ञ कर सकता हूँ हर प्रकार का आनन्द मंगल कर करा सकता हूँ । संक्षेप में मेरे जैसा दूसरा है ही कौन ? इस प्रकार का अज्ञान से मोहित, अविद्या से अच्छादित जीव अनेक प्रकार के प्रलाप करता रहता है । और अहंता ममता के कारण बने बनाये काम को बिगाड़ देता है । छतौनी मंदिर जीर्णोद्धार के काम में भी यही परिस्थिति रही । मैने तो पीछे उसकी चर्चा ही बंद कर दी किन्तु आजू-बाजू के गाँव के लोग मधुमक्खी जैसे पीछे पड़े हुए है आज मेरे ग्राम में अखंड हो जाए, कल्ह मेरे ग्राम में हो जाए । इस प्रकार गामो गाम फिर ही रहा हूँ । इस बार यहाँ ठंडी भी भयंकर दुसह्य पड़ रही है । यहाँ तक कि बर्फ के पाले भी पड़ रहे हैं। हाईड्रोसील की बिमारी में भी कुछ अन्तर नहीं पड़ा है। गत वर्ष में जैसा था वैसा का वैसा ही है। कभी ठंडी से थोड़ी सूजन भी हो जाती है और कुछ दर्द भी बढ़ जाता है। सभी यही कहते है ओपरेशन करा दीजिये। वैकुन्ठ बाबू ग्रामपंचायत के मुखिया के लिये खड़े हो गये आपस के Contest में काफी संघर्ष हुआ और अभी भी मुकगमा वगैरेह चल ही रहा है जिससे उनकी अभी प्रवृत्ति इस भगवत कार्य-श्री भगवन्नाम के प्रचार की तरफ से बिल्कुल ही हट गई है। अभी तत्काल उनकी ओर से किसी प्रकार का भी सहयोग प्राप्त नहीं है। यहाँ तक कि दरश-परश भी बहुत दिनों से बंन्द है । यमुना बाबू माधोपुर तो पहले से ही इधर के सहयोग से हट चुके थे। इधर "अलसर" के भयंकर प्रकोप के कारण मृत्यु के मुख से ही निकले हैं । अतः इस समय इन बड़ें लोगों से तो किसी भी प्रकार का प्रचार कार्य में सहयोग, सम्बन्ध प्राप्त नहीं है फिर भी श्री प्रभु कृपा से स्वाभाविक अखंड महायज्ञ गामो गाम चालू ही है एसा प्रतित होता है कि इन लोगों की भक्ति प्रवृत्ति को देखकर शायद अपनी आशा भरोशा एसी हो गई थी कि इन्ही लोगो के सहयोग से यहाँ अखंड का विशेष प्रचार हो रहा है। या

उन लोगों को ओसा अन्तर ही अन्तर अभिमान हो गया था कि हम लोग सत्संग कर रहे है या बाबाजी के वजह से ही हम लोगों का इतना कार्य हो गया लेकिन भक्तवत्सल तथा गर्वहारी श्री प्रभु ने इसी कारण दोनों को चेतावनी भी होगी। कल्ह पुनः छतौनी दूसरे गाँव में ११ दिवस का अखंड है बाद में पचड़ा, पकड़ीनी, सीतामढ़ी होते मुजफ्फरपुर हो कर मार्च तक श्री द्वारका पहुँचने का विचार है आगे श्री प्रभु इच्छा। ६-७ तक छतौनी या पचड़ा रहूँगा। विशेष श्री प्रभु कृपा। सभी प्रेमियों को म्हात्रे, वगैरह को मेरा जय श्री राम। छतौनी पूर्णाहुति के समय जरी का हार और फल अगरबत्ती भी यथा समय प्राप्त हो गया था मुरारी प्रह्लाद और पत्र भेजने को ही कहा था विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल ! सराठ

शुभाशीर्वाद ! दिनांक ६-९-६३

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है। श्रीप्रभु कृपा तथा श्री गुरुमहाराज की दिव्य प्रेरणा से इसबार श्री गुरुमहाराज की तिथि का महोत्सव कुछ विलक्षण ही हुआ। न जाने श्री प्रभु कब क्या करना कराना चाहते हैं? यह अेक बहुत बड़ी समस्या है जिसका निर्णय होना उनकी कृपा सिवाय कठिन नहीं वरन् सर्वथा असम्भव ही है। गत वर्ष से अेसा विचार कर रहा था कि श्री महाराज की तिथि तथा गुरुपूर्णिमा का उत्सव दोनों काम लगभग अेक साथ ही होने से लोगों को बहुत कष्ट और धन का व्यय भी आने जाने में होता है तथा अमुक व्यक्ति को ही अधिक से अधिक भार उठाना पड़ता है इसलिए अच्छा होता कि श्री गुरु महाराज की तिथि पर पाँच दिवस के बदले कुछ कम ही समय अखंड के लिए रखा जाए तो ठीक रहेगा किन्तु न जानें श्री गुरु महाराज का कैसा विलक्षण ऐश्वर्य

है कितनी बड़ी दया इन त्रिविध ताप से संतप्त प्राणियों के उपर है कि अन्तरिक्ष में व्यापक बन,भजन, तथा भोजन समारोह की भी अवधि अपनी अहैतुकी अनुकंम्पा से बढ़ाते ही जाते हैं और दिन प्रतिदिन नये नये और अधिक से अधिक लोगों की प्रवृत्ति भजन में,श्री नाम रट में बढ़ती ही जा रही है। देवकुली तलाव के जिर्णोद्धार जैसा काम क्या मेरे जैसे प्राणी का पुरुषार्थ या प्रयत्न का फल है?कदापि नहीं। यह तो सर्व समर्थ शिवस्वरुप श्री गुरुमहाराज की असीम अहैतुकी अनुकम्पा का ही फल है? इसमें जरा भी शक नहीं संशय नहीं। श्रम यज्ञ (तालाबखुदाई) अखंड यज्ञ तथा श्री गुरुपूर्णिमा महोत्सव का समारोह क्या था? मानो गंगा-यमुना, सरस्वती का संगम यानी कर्म, उपासना, ज्ञान का प्रगट प्रदर्शन, शरीर, मन, वाणी बुद्धि का तप-शरीर द्वारा श्रम सेवा मन द्वारा सत्य का मनन बुद्धि द्वारा सत्य का निश्चय,चित्त द्वारा सत्य का चिन्तन, वाणी द्वारा सत्य नाम का उच्चार। इस प्रकार अेक साथ ही उच्चार, विचार तथा आचार का प्रत्यक्ष प्रदर्शन जिसके द्वारा अपने नीज स्वरुप “सच्चिदानन्द” सत्य शिवम् सुन्दरं की अनुभूति का अनुकूल अवसर की श्री प्रभु कृपा द्वारा अनयास उपलब्धि । तदनन्तर श्री गुरु महाराज की तिथि का महोत्सव तो मानो सच्चिदानन्द स्वरुप की अनुभूति रुप दिव्य मंदिर का सर्वोपरि शिखर पर कलश चढ़ाने जैसा काम। इस बार मानो श्री गुरु महाराज अभी तक अपने निर्वाण तिथि दिवस पर पाँच दिवस का अखंड आयोजन करा कर हम लोगों को पंच विषयो (शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गंध) (जो जीवो को इस भयंकर भवाटवी मे भटकाने का मूल कारण है) को जितने के लिए ही पाठ पढ़ा रहे हो। किन्तु इस बार तो श्री राधिका माताजी के प्राकट्य के दिवस से ही श्री अखंड महायज्ञ का प्रारम्भ करा तथा पाँच से सात दिवस की अवधि बढ़ा कर संकेत से मानो यही कह रहे हो कि जल्दी से जल्दी माया के सप्तावरण का भेदन कर श्री भगवत प्राप्ति रुप जीवन्मुक्ति का अनुभव करो । जिस प्रकार श्री परीक्षितजी, श्री शुकदेवजी महाराज के सात दिवस के सत्संग से श्रीमद् भागवत सप्ताह कथा से जीवन्मुक्त हो गये थे उस वक्त

तो अन्न जल निद्रा का त्याग कर सात दिवस अखंड भागवत् कथा भगवत्च्चिरित सुनने मनन करके निदिध्यासन करने पर किन्तु इस भयंकर कलिकाल में तो समस्त कथाओं,चरित्रों,लीलाओं तथा समस्त वेदों के सार स्वरुप श्रीमद्‌भागवत का सारतत्व श्री प्रभुनाम रटन, चिन्तन,स्मरण द्वारा जीव तो अनायास ही भव पार हो सकता है। अत: श्री राधा माता तथा श्री गुरुदेव के प्रेरणा द्वारा पाँच दिवस से बढ़ाई हुई सात दिवस कि अवधि सारगर्भित ही है। सभी प्रेमीयों को मेरा यथा योग्य कहना । श्री गुरुमहाराज की तिथि इस बार अभूतपूर्व हुई १६-९-६३ से मुजफ्फरपुर में अेकमास का अखंड है। मुरारी तुम्हारी सेवा भेट लेकर आया था किन्तु चन्द्रेश्वरबाबू ने अस्वीकार किया इसलिये वह रकम वालू घाट कुटिया पर होनेवाला अखंड में या वहाँ के संकिर्तन मंदिर में लगा दिया जायेगा वल्लभ, जोशी, बाबू हरिदास भी मेरे भाई हैं । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

पताही

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

शुभाशीर्वाद! दिनांक : १६-८-६३

श्री प्रभु कृपा ही जीव मात्र के कल्याण का अेकमात्र साधन है। उसका स्वरुप यही है कि श्री प्रभु जिस रुप में,जिस स्थिति में रखे, उसी में आनन्द मानकर धैर्य तथा उत्साहपूर्वक जीवन पावन करना चाहिए कारण कि जीवन तो अेक यात्रा है-जिसमें हर तरह की सुविधाओं का मिलना सर्वथा असम्भव है। चाहे मनुष्य कैसा भी सम्पन्न क्यों न हो ? अगर वह जिस समय घर को छोड़कर बाहर निकलता हैं, उस समय कई तरह की असुविधाओं का सामना करना ही पड़ता है। किन्तु यात्रा करने वाला व्यक्ति हर प्रकार की असुविधाओं को सहन करते हुए अपनी यात्रा पूरी करके जब अपने घर पर लौटता है । तब उसे कैसा आनन्द

प्राप्त होता है? यह तो उसे ही अनुभव होता है ? अतः यह मानव जीवन भी तो एक प्रकार की यात्रा ही है इस यात्रा में पद-पद पर कठिनाइयों का, विघ्न बाधाओंका, उलझनों का, उपद्रवों का, विपत्तिताओं का आना स्वाभाविक ही है। अगर इनसे मनुष्य धबड़ा जाये तो वह अपनी यात्रा भी पूरी नहीं कर सकता तो अपने निज घर को पहुँच ही किस प्रकार सकता है ? अतः श्री प्रभु के हर विधान में सुख मानकर,धैर्य तथा शान्ति पूर्वक कर्तव्य परायण बना रहना चाहिए । **कर से कर्म करहुँ विधि नाना,मन राखहुँ जहाँ कृपा निधाना ।। और मन जहँ तहँ रघुवर वैदेही, विनु मन, तन, दुख, सुख सुधि के ही ।। राम दरस लालसा उछाउँ, पथ श्रम लेश कलेश न काहुँ ।।** इस प्रकार मन श्री प्रभु में रखकर कर्म करते रहना चाहिए। यही जीवन है और इसी में जन्म का फल निहित है विशेष श्री प्रभु कृपा । देवफुली का श्रम यज्ञ, जपयज्ञ, गुरुपूर्णिमा, वगैरेह का महोत्सव बड़े विलक्षण ढंग से परिपूर्ण हो गया यह सब तुम्हारे जैसे प्रेमियों का सद्भाव तथा गुरु महाराज एवं श्री प्रभु की परम अहैतुकी कृपा का ही फल है। श्री गुरुमहाराज की तिथि सराठा में मनाई जायेगी। इसबार से पाँच दिवस के बदले छ-सात दिवस का अखन्ड होगा । एकादशी के बदले श्री राधाष्टमी के दिवस से ही प्रारंम्भ होगा। २७-८-६३ से प्रारंम्भ होकर ३-९-६३ को पूर्णाहुति होगी। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर पवित्रा माला वगैरेह मिल गई थी। सद्भावना व्यर्थ नहीं होती और सब आनन्द मंगल है। जन्माष्टमी का महोत्सव पताही में हुआ है। आगामी १९-८-६३ को सराठा के लिए प्रस्थान किया जाएगा । उसके बाद जैसा प्रोग्राम होगा पुनः सूचित करुँगा । शशिकान्त और अवधूत भी पहुँच गये हैं । देकुली का तालाब जल से परिपूर्ण हो गया अभी अनुपम शोभा बन गइ। सभी प्रेमियों को मेरा जयश्री राम कहना मैने स्वयं देवकुली से दो-तीन पत्र लिखे थे और मुरारी को भी कहा था कि काकू को सभी सूचना कर देना लेकिन नजाने क्यों उसनें नहीं लिखा। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

श्रीद्वारका धाम

आशीर्वाद ! दिनांक २५-६-६२

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है तुम्हारा भाव,भक्ति,प्रेम निष्ठा, श्रद्धापूर्ण पत्र मिला पढ़कर अति हर्ष हुआ । वास्तव में तो सत्य बात यही है कि जैसी जिसकी श्रद्धा होती है वैसे उसको सिद्धि प्राप्त होती है श्री भगवान ने तो गीताजी में स्पष्ट कह दिया कि श्रद्धावान को ही ज्ञान प्राप्त होता है और ज्ञान प्राप्त होने पर आविलम्ब ही जीव को परम शान्ति प्राप्त हो जाती हैं जिसके लिये यह जीव अनादिकाल से भटक रहा है । वास्तव में जगत का पदार्थ तो व्यवहार चलाने मात्र के ही हैं और शुद्ध पवित्र व्यवहार या स्वार्थ ही सच्चा परमार्थ हैं। अेक दूसरे के साथ जो पारस्परिक सम्बन्ध है उसका अगर मूलस्वरुप या तत्व समझ में आ जाये तो सब कुछ हो गया अेसा समझ लेना चाहिए। सजातीय-सजातीय तत्व में आकर्षक होता है । शरीर और आत्मा भिन्न तत्व होने के कारण अेक दूसरे के साथ वास्तविक आकर्षण नही है। अगर आकर्षण प्रतित होता है तो अज्ञान के कारण ही। अतः माता-पिता, भाई, बन्धु, पुत्र परिवार जितने के साथ अपना ममत्व या आकर्षण है वह उसके शरीर, सत्ता, सम्पत्ति, संतति के कारण नहीं बल्कि उसके अन्दर विहार करने वाला अेक मात्र चेतन के कारण ही है। अतः जिसे जिससे और जहाँ जहाँ भी आकर्षण होवे, वहाँ वहाँ यही निश्चय द्दढ़ करना चाहिए कि यह अेक मात्र चेतन आत्मा, परमात्मा,भगवान राम के कारण ही है। यह द्दढ़ निश्चय हो जाने पर सबके रुप में अेक श्री राम प्रभु की झाकी होने लगती है और उस स्थिति में अपना समस्तकर्म ही सेवा या भक्ति बन जाती है। श्री प्रभु मंगलमय, आनन्दमय, ज्ञानमय होने से उनका प्रत्येक विधान भी मंगलमय ही होता है। विचार करने से परम अमंगल रुप भासनेवाली मृत्यु भी परम

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

मंगलमयी प्रतित होने लगती है तो अन्य दूसरे विषयो का तो कहना ही क्या? श्री जामनगर होकर द्वारका आया हूँ और रथ यात्रा करके पोरबंदर जाऊँगा। श्री गुरुपूर्णिमा तथा वार्षिकोत्सव भी वही अेक साथ ही है। श्री जय सिह सेठ भी दो दिनों के लिये आने की अपनी स्वीकृति भेजी है। कल्ह जामनगर, पोरबंदर द्वारका वालें सबने मिलकर श्री संकिर्तन भवन का ट्रस्टी नियुक्त किया और कल्ह रजिस्टर्ड भी करा लिया। तुम्हारा भी नाम ट्रस्टीयों में रक्खा है। पोरबंदर आओगे तो लोग Trust Deed में सही लेंगे। काम चल रहा है। ५-६-६८ की तारीख पड़ी है इसकी भी खबर पड़ी जो श्री प्रभु करेंगे सब अपने हीत का ही करेगें। फिल्म साथ में लेते आना या आना किसी सबल कारण से न हो सके तो यथासमय भेज देना। जोशी, रामजी ने पत्र लिखा होगा। शनिवार को पोरबंदर जाने का है। सभी प्रेमियों को जय श्री राम। मात्रे,बाबूभाई,रंगरेज,वैघराज, माधवभाई, बाबूभाई जानी, हरिकृष्णा, भगवान,मास्टर,जयन्ती सब लोगो को मेरा यथायोग्य जय श्री राम। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू मात्रे तथा प्रेमजीभाई ! श्रीद्वारका धाम

आशीर्वाद ! दिनांक : ३०-५-५७

श्री प्रभु की महिमा अनन्त है उनकी कृपा अपार है सीर्फ अपने लिए इतनी ही आवश्यकता है कि हम उस महिमा का महत्व समझाने का प्रयास मात्र करो। समझ में आना या उसे समझा देना तो सीर्फ उस महा महिम के हाथ में ही है। किन्त हाँ! इतना अवश्य है कि जिस तरह नन्हा बच्चा अपने घुटने बल चलते-चलते, जब पग के उपर खड़ा होने का प्रयास करने लगता है, उस समय वत्सल्यमयी, आनन्दमयी,करुणामयी माँ को अत्यन्त प्रसन्नता होती है और वह

स्वयं ही दौड़कर उस बच्चे को अपनी भुजाओं के सहारे सुस्थिर खड़ा करने तथा उसे आगे चलने के अभ्यास में पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करती है, जब बच्चा कुछ-कुछ चलने लगता है तब उससे कुछ दूर बैठ कर उसकी शक्ति,गति,मति की निरीक्षण करती हुई वात्सल्यमयी माता तत्काल सहायता के लिये पहुँच जाती है जब लड़खड़ा कर पड़ने लगता है उस समय तत्काल अपनी भुजाओं का सहारा देकर गिरने से बचा लेती है। इस प्रकार पुत्र तथा माता के परस्पर स्नेह तथा शक्ति के आदान प्रदान के दृढ़ अभ्यास के बाद बच्चा स्वयं शक्ति सम्पन्न हो हर प्रकार की क्रियाओं में प्रगतिशील होने लगता है। अगर वह असावधान,बेपरवाह न होवे तो उसे चलते हुए पुनः गिरने का कदापि भय नही रहता है। ठीक इसी प्रकार अगर हम भी उस अपार करुणामयी,जगजननी की गोद में बालक बन कर अर्थात अपनी महिमा, अपनी शक्ति, अपनी मति की विलास का सर्वथा त्याग कर अबोध, अनजान,असहाय बालक की तरह रहे, वैसी ही अपनी भावनायें बनावे। माता की गोद के लिए किन्चित भी प्रयास करे - जैसा कि हम लोग थोड़ा बहुत कर रहे है तो निःसन्देह वह वात्सल्यमयी, करुणामयी जननी जिसके वात्सल्यरस, करुणारस के अेक बिन्दु मात्र से समस्त नारि जाति मे वात्सल्य रस के, करुणारस का संचार होता है, हमें अपनाएँ बगैर रह नही सकती, जीवन संग्राम के विकट पंथ पर चलने के प्रयास करने वाले पद-पद पर गिरने वाले हम लोगों को अपनी अभय कर कमल की सहायता प्रदान कर, बचाने मे माँ! कभी संकोच नही कर सकती, बल्कि अविलम्ब अपने कर कमलों की सहायता देकर बचा लेगी क्योंकि यह उसका सहज स्वभाव है किन्तु शर्त इतनी ही है कि हम सचमुच अपने को शिशु,अबोध बालक के रुप में ही माँ को स्वीकार करे, तो ही माँ, माँ का पार्ट अदा कर सकेगी ! अपनी स्वरुप भूत शक्ति मेरे लिए प्रदान कर सकेगी बश अपने लिए तो इतना ही पर्याप्त है कि माँ-माँ करके दीनभाव, आर्तनाद, करुणस्वर से यथास्थिति उसे पूकारते रहे। कारण बालक को माता की प्रसन्नता तथा शक्ति प्राप्ति के लिए

अेक ही साधन होता है।- बालानां रोदनं बलं । इस प्रकार जगत के समस्त व्यवहार को ही हम पूरा-पूरा समझकर करें तो यही परमार्थका पथ प्रशस्त कर देगा। प्रभुनाम लेते अपने को प्रभुरुप माँ की गोद में अभय, निर्भय समझते निश्चिंत रह अपनी जीवन यात्रा चलाने का प्रयास करते रहना चाहिए । केरी की पेटी सुरक्षित आ गई यथायोग्य उपयोग भी हो गया है और होगा भी। श्री अखंड महायज्ञ श्री प्रभु द्वारकाधीश की कृपा तथा श्री हनुमन्तलालजी की सहायता एवं छत्र छाया में सानन्द सुचारु से चल रहा है । जहाँ कमल खिलता है वहाँ भ्रमरगण आप ही मंडराने लगते हैं ठीक इसी प्रकार अखंड का प्रारंम्भ होते ही अच्छे-अच्छे सन्तों का समागम तथा अन्य धार्मिक समारोहों का भी प्रारंम्भ होने वाला है श्री १०८ जगद्गुरु शंकराचार्य, श्री वंदनीय प्रकाशानन्दजी,श्री राम राम महाराज, श्री वृन्दावन धाम के सुविख्यात नामानुरागी तथा प्रचारक श्री हरिबाबा आज काल यही बिराजमान हैं सेठ हरिदास के नामनिष्ठा तथा प्रभुकृपा ने तो डाक्टरों को भी चकित कर दिया है भयंकर आपरेशन और माँ अभी दो तीन दिन में द्वारका आजाएगा वहां सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम। सब लोग आनन्द में होगें। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

सुदामापुरी

आशीर्वाद !

दिनांक ७-३-६२

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है । तुम्हारा फोन आया था बातचीत हो गई थी इसी बीच काशी से "श्री चैतन्य नाम संकीर्तन मंडल" आग्रहपूर्ण निमंत्रण फाल्गुन सुद पूनम श्री चैतन्य महाप्रभुजीके आविर्भाव दिवस के सुअवसर पर होने वाला समारोह में सम्मिलित होने के लिये आया था किन्तु कोई सुविधा

न देखकर आज मैने अपनी लाचारी की सूचना भेज दी। अपना उस मंडल के सदस्यों से कोई निजी परिचय नहीं है उसके सेक्रेटरी के पत्रों से एेसा मालूम पड़ता है कि बिहार की कोई मंडली काशी श्री संकटमोचन हनुमानजी में अखंड के लिए आई थी उन लोगों का धुन भजन लगन देखकर मंडल के सेक्रेटरी हनुमान प्रसाद को आनन्द आया और उन्ही लोगों के द्वारा (अपना,मेरा) परिचय प्राप्त कर मुझे पत्र लिखा था। किन्तु मेरे पूर्व परिचित लोगों का भी जो हाल है वह तुमसे क्या छिपा है। जहाँ कही भी आना जाना हो सिर्फ पत्र लिख दिया आ जाओं और अगर सवारी वगैरह की व्यवस्था करके ले तो भी गया और काम पूरा हो गया तो फिर पीछे लौटने की परवाह भी नहीं। मन हो भी तो भी क्या कर सकता हूँ कोई अपने पास Cash (पैसा) जमा नहीं है कि जभी जहाँ की इच्छा होवे या किसी का आग्रह होवे तो वही चल पडू । समय विवेकशून्य लोगों का हो गया है फिर भी श्री प्रभु तो सर्व समर्थ हैं उनकी असीम दया एेसे कराल कलिकाल में भी उनके आश्रित जनों के लियें कोई कमी नहीं,अभाव नहीं। अपने आप सभी सुविधायें प्राप्त होती ही रहीं हैं, हो रही है। जिन्हे श्रद्धा विश्वास हैं- उनके लिए विषम से विषम परिस्थिति में भी होती ही रहेगी। "रामधनी की कौन कमी" श्री श्री १०८ श्री पूज्यपाद श्री प्रकाशशानन्द जी के अवसान की सूचना उनके द्वारकावाला भक्त ने दिया किन्तु जाने की व्यवस्था क्या? यहाँ से मान-मान टेक्सी ९५ रूपये देकर गया किन्तु वहाँ कोई भाव ही नही? खैर! जैसी प्रभु इच्छा। यहाँ संकिर्तन भवन का काम चालू है। तुम्हारे मारकेट में ही ५५-५६ नम्बर की दुकानवाले लखुभाई के पूर्ण प्रेम सहानुभूति तथा प्रयास से यह स्थान यहाँ के रामधुन मंडल को प्राप्त हुआ है। पीछे से मालूम हुआ कि लखु भाई का काकू भाई के साथ तो बहुत अच्छा सम्बन्ध है। लखु तथा यहाँ के डाक्टर रतिभाई भी एेक दिवस दो अढ़ाई घन्टे तक सत्संग सुनकर गये हैं। छाया मे ४० दिवस अखंड की पूर्णाहुति हो गई, पोरबंदर, रतनपुर, द्वारका चालू है। आगामी रविवार ११-३-६२ को द्वारका जानेवाला हूँ अब जैसा विचार हो वैसा लिखना। हरिद्वार जाने

के लिए यहाँ से कब बम्बई आऊँ और वहाँ से कब प्रस्थान किया जाय? दो-चार दिवस वहाँ ठहरने की व्यवस्था होगी या सीर्फ आने जाने का? अपनी सुविधा सहुलियत प्रमाणो काम करना कारण कि कुम्भ में न तो बहुत जाने का ही आग्रह है और न नहीं जाने का ही। जैसी प्रभु ईच्छा होगी वैसा ही होगा। और सब आनन्द है। तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक होगा। युक्त, आहार, विहार, कर्म ही जीव के लिये यहाँ वहाँ दोनों जगह सुखावह, सुखदायक, शान्तिदायक, मोक्षदायक है । सीर्फ सम्पति, सन्तति के पीछेही पागल बनना मानव धर्म नहीं, बल्कि अपने इस लोक के साथ साथ परलोक की भी चिन्ता रखनी ही चाहिए। श्री प्रभु को, श्री राम भगवान को हमेशा आगे रखकर काम करते रहोगे तो काम भी राममय हो जाएगा। किसी भी प्रकार से बन्धन कारक दुखदायक न होगा। सुख,दुख, हानि लाभ, यश अपयश,जन्ममरण, समान बन जायेगा। मानव जीवन का सच्चा लक्ष्य तथा फल तो श्री प्रभु भजन तथा उनकी भक्ति है। भक्ति प्राप्त होने पर श्री भगवान वश्य होते हैं और श्री भगवान के अनुकूल होने पर उनकी सभी विभूतियाँ अपनी आप ही हो जाती हैं । मात्रे कोभी मेरा आशिर्वाद तथा बाल गोपाल सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल ! श्री द्वारकाजी

शुभाशीर्वाद ! दिनांक १४-१-६०

आज पोरबंदर से द्वारका आने पर तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे हृदयगत भावो को जाना। अभी मुजफ्फरपुर से गिरधारी का अेक पत्र आया है जिसमें उसने लिखा है कि माताजी का स्वास्थ्य बहुत खराब है और उनकी मिलने की बहुत इच्छा है यद्यपि इसका संकेत मुझे अनुष्ठान के दरम्यान हो चुका है तो न जाने प्रभु की क्या इच्छा है । अपनी भी प्रबल इच्छा है कि अन्तिम समय में उनका पावन

दर्शन करुं तो उन्हे भी संतोष और मुझे परम लाभ। इसलिए सूचना करता हूँ कि गिरधारी का पत्र आया तो तत्काल ही जाना पड़ेगा। मंत्र मंदिर के उद्घाटन का निश्चय करने के लिए एक दो दिन में मै और हरिदास बेट जाने वाले हूँ। निश्चय हो जाने पर फिर पत्र लिखूँगा। पेन का ट्यूब खतम हो गया है जो तुम देकर गये थे तो जल्दी भेज देना। शायद बिहार तत्काल जाना पड़े तो बम्बई होकर ही जाऊँ गा। विशेष श्री प्रभु कृपा। सभी प्रेमीयों को मेरा जय श्री राम। अभी यह सूचना किसी को नही देना ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

नोट - Founten pen का व्युब नही, सफेद पेन्सिल जैसा लिखे जान वाले pen का स्याही से भरी हुई ट्यूब ।

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल ! जामनगर

आशीर्वाद ! दिनांक १६-११-६६

विधि का विधान विचित्र है, कर्म की गति गहन है किन्तु श्री प्रभु की कृपा करुणा भी कुछ कम विलक्षण नहीं,प्रत्युत अतिविलक्षण है जो मानवजीवन के प्रत्येक पल में धैर्य, उत्साह, साहस, सन्तोष, साहस, सांत्वना,शक्ति,संजीवन एवं नवजीवन का संचार करती रहती है और इसी आधार आश्रय पर यह क्षण भंगुर असार दुखालयरुप संसार भी तथा संसार का यत्किंचित, सुखस्वरुप आनन्दस्वरुप भासता है अन्यथा यह दुखरुप नरकरुप तो है ही। इस संसार का संजोग बियोग बी इसी आधार पर आधारित एवं अवलम्बित है। अतः इसके लिये शोक करना,चिन्ता करना, दुखी होना, अशान्त बनना व्यर्थ है। जो जन्मा है वही मरेगा ही, जो आया है वह जायेगा ही, जो फरा है झरेगा ही, जो मिला है बिछुड़ेगा

ही (शरीर से) किन्तु आत्मा तो अमर है, अविनाशी है, नित्यमुक्त, निरंजन, निर्विकारी है। अतः उसके लिये मरण,वियोग,विकार शब्द का प्रयोग ही असंम्भव है। वास्तव में जगत का जितना नाता रिश्ता है, सगा सम्बन्ध है वह सब राम के नाते ही, आत्मा के नाते ही है किन्तु अज्ञानता,जड़ता, अविद्या के कारण इस सत्यतत्व को न समझकर,जड़,असत्य,शरीर के सम्बन्ध को सत्य मान लेता है और उसी के संयोग वियोग के कारण सुखी-दुखी हुआ करता है अगर शरीर सत्य होता, नित्य होता तो उसका संयोग भी नित्य ही रहता है अेकसा रहता किन्तु हम लोग देखते हैं कि शरीर कितना भी सुन्दर क्यो न हो,उसमें से सत्य का, आत्मा का, चेतन का,राम का वियोग होते ही सबके लिये वह त्याज्य बन जाता है अतः इसके लिये किसी प्रकार की शोक चिन्ता व्यर्थ है। माता-पिता, भाईबन्धु, गुरु सुहृदय,स्त्री,पुत्र,परिवार सबका सम्बन्ध अेसा ही है राम के नाते सत्य अन्यथा असत्य। इसी तत्व को समझने के लिये गोस्वामी तुलसीदासजी ने लिखा है कि:-

जन्म मरण सब सुख दुख भोगा । हानि लाभ प्रिय मिलन वियोग,
काल कर्म वश होहि गुसांई, बरबस रात दिवस की नाई ।
सुख हर्षहि जड़ दुख विलखाही, दोउ सन धीर धरहि मन माही ।
धीरज धरउ विवेक विचारी, छाड़िये सोउ सकल हितकारी ॥

बसा जो कुछ लौकिक, वैदिक व्यवहार करना हो करो यही समाज संसार की दृष्टि से उचित ही हैं किन्तु सच्ची शान्ति तो तुम्हारे पिता को तुम्हारी सेवा भक्ति से ही मिलने वाली है जो तुमने यथाशक्ति की ही है जो मैने भी प्रत्यक्ष देखा है और तुम्हारे पिता की आत्मा मेरे सामने ही पुकार उठती थी:- काकूं बहुत सेवा करता है,भगवान इसी को सुखी रखे। यही आवाज सच्ची सेवा का फल था और यही सबके लिये ग्रहण करने योग्य है कि हम अपने से सम्बन्धित जीवों के साथ अेसा व्यवहार, आचारण, सेवा की वृत्ति रखे कि उसकी आत्मा जीवन काल में संतोष, सुख का अनुभव करे और वारसा के रुप में अपने लिये

अपना अन्तरात्मा की आशीवाद छोड़ता जाए। बस! खूब नाम स्मरण,सत्कर्म करो, कराओं यही शुभेच्छा। तुम्हारे पिता को तो जीवनकाल में ही तुझसे जितना संतोष, सुख शान्ति थी तो बाद में तो होगी ही विशेष श्री प्रभु कृपा। तुझे और तुझे पिता को भी शान्ति मिले आनन्द मिले, ऐसी श्री प्रभु प्रार्थना विशेष श्री प्रभु कृपा।दो-तीन दिन बाद शायद भरुच तरफ जाना पड़े। सभी कुटुम्बियों प्रेमियों को मेरा जय श्री राम।

नोट : परसो मुझे द्वारका में तुम्हारा पत्र मिला खबर पोरबंदर में दो-तीन पहले मिल गई थी।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू माश्रे तथा बाल गोपाल! पोरबंदर

अखंड रामधुन

शुभाशीर्वाद ! दिनांक : १९-९-६१

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है तीन-चार दिवस पहले मैंने ओक पत्र भेजा है, शायद मिल गया होगा। यहाँ रामजी भाई की प्रबल इच्छा थी कि सुकाला ओक स्मारक रुप कमरा बन जावे । उसके लिये मूरू भाई पटेल ने श्री रामधुन मंडल के लिये जमीन दे दिया है और जामनगर नरसी,रमेश भाई ब्राह्मण ने कमरा बनाने का सारा खर्च दे दिया है अभी लोग वहीं से आ रहे हैं। आकर बैठते ही (२०१) दो सो एक रुपये का आर्डर अभी मिला है। रामजी भाई ने नाम पर मेरे सामने ही हस्ताक्षर करके ले लिया है। यह किस काम के लिए तार किसने भेजा है, यह खुलासा लिखना। वल्लभ भाई का आफ्रिका से प्रतिवर्ष के नियमानुसार श्री पुज्यगुरुदेव की तिथि निमित्त १००) रुपैया आनेवाला है,ओसा जोशी के उपर

पत्र आया है यहाँ का अखंड कार्तिक पूर्णिमा तक बढ़ गया है। बिहार से दो आदमी आयें हैं और आश्विन मास में यमुना बाबू वगैरह आने वाले हैं ऐसा ये लोग कहते हैं। समय आनेवाला बहुत भयंकर लगता है। अतः कुछ न कुछ समय भजन की मात्रा बढ़ानी चाहिए अपने लिये भी और दूसरो के निमित्त भी। अभी तो देश में यत्र,तत्र यज्ञ होने जा रहा है किन्तु नजाने श्री प्रभु की क्या ईच्छा है कि इतने बड़े-बड़े विद्धानों को, महात्माओं को शास्त्र तथा संतो का,वैदिक त्रिकालदर्शी महर्षियों के मार्ग दर्शन की ओर, कलिकाल के भयंकर काल से बचने का **"अेक मात्र साधन श्री प्रभुनाम संकिर्तन"** की ओर ध्यान क्यों नहीं जाता। यज्ञ,दान,तप, तीर्थ,व्रत वगैरह शुभ कर्म तो अमुक व्यक्ति विशेष ही कर करा सकता है किन्तु **श्री प्रभु नाम स्मरण रुपी जपयज्ञ में तो अबालवृद्ध नरनारी सभी नाम लेकर कृतार्थ हो सकते हैं** । सारे विश्व के उपर संकट है तो विश्व का सभी प्राणी संकट के भय से भी अगर सब मिलकर अेक स्वर से, अेक नाद से, दीनभाव,आर्तनाद तथा करुणास्वर से श्री प्रभु को पुकारने लग जावे, तो सत्पुरुषो का, भक्तों का संकट अवश्य ही टल जावे, जगत का भी परम मंगलमय होवे । इसके लिए श्री प्रभुनाम कितना सरल, सुगम, सुबोध तथा अमोघ साधन है किन्तु न जाने श्री प्रभु की इच्छा क्या है ? कभी इच्छा होती है कि कहीं अनुष्ठान में बैठ जाऊँ, कभी विचार आता है कि मौन होकर अेक स्थान में बैठ जाने से तो जगह-जगह फिरते रहना और जितने भी भावुक भक्तजन होवें उनके द्धारा श्री प्रभु नाम रटन स्मरण करना कराना ही उत्तम है जैसी श्री गुरुदेव की, श्री प्रभु की इच्छा, प्रेरणाः- **अपने तो राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रजा है** । सभी प्रेमियों को जय श्रीराम विशेष श्री प्रभु कृपा। मात्रे प्रेमजी भाई तथा कान्दिवल्ली के अन्य प्रेमीगण को भी जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू,रामजीभाई, धनजीभाई, प्रेमजीभाई, मोहनभाई तथा अन्य सभी प्रेमीगण ।

श्री द्वारकाधाम
दिनांक २०-९-५६

जय श्री राम !

आज तुम्हारा तार मिला । कोई खास समाचार नहीं। स्पेशल ट्रेन की समस्या सी उपास्थिति हो गई है, प्रभु की जो इच्छा होगी वही होगा यह तो निश्चित है फिर भी अपने से जो बने वह करना अपना परम धर्म है। इसमें किसी प्रकार की धंधाधारी प्रयोग नहीं- यह तो सीर्फ भगवन्नाम प्रचारार्थ ही यह आयोजन है । अगर मेरा संकल्प होता तो मै तो श्री प्रभु के अतिरिक्त किसी को भी कहने सुनने वाला नहीं था किन्तु यह संकल्प तो किसी अन्य भावुक व्यक्ति का है और उन लोगों का आग्रह होने पर भगवत् प्रेरणा समझ मैंने भी स्वीकृति दी। यह प्रभु कार्य है इसीलिए तो लोगों को इतना संशय संदेह होता है कि पैसा बहुत है तो व्यवस्था टीक नहीं है। लेकिन जो लोग अपनी इच्छा से जगह-जगह धक्का खाते हैं और अेक की जगह चार पैसा बिगाड़ते हैं उस समय उन्हें कोई विचार नहीं आता। टीक अब तो जो बन सके, उतना कर सको तो करो । कितनी टीकट हुई की नहीं इसकी भी तो कुछ सूचना देनी चाहिए, तो तुम लोगों की ओर से इस विषय की कुछ चर्चा ही नहीं । अभी यहाँ अखंड गुरुजी की तिथि निमित्त १८ दिवस तक चलेगी, जिसकी पूर्णाहुति भाद्र वद १३ तेरस को होगी कारण उसके बाद नवरात्रि शुरु हो जाती है। वल्लभ का अफ्रिका से १५०) पहले और फिर १००) सीलीग तिथि निमित्त आया है। पोरबंदर में अेक मास के अखंड की पूर्णाहुति काफी धुम धाम से हुई। वहाँ जागृति भी अच्छी हुई है। आशा है सौ सवासो टीकट वहाँ से हो जाएगी । जामनगर वाले सभी ओडीट निकालने में लगे हैं वहाँ से अभी अेक भी टीकट नहीं हुई है गोधुभाई को सुचना कर देना चाहिए। विशेष

श्री प्रभु कृपा। सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम। नोट– टीकट की कम से कम सूचना तो देना कि कुछ टीकट यहाँ से होगी या नहीं, प्रभु भजन करना चाहिए। मात्रे कांदिवल्ली है कि बाहर गया। जेठाभाई का तो विचार ही बिलकुल बदल गया।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल!

शुभाशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से यहाँ सब आनन्द मंगल है, आशा करता हूँ तुम भी सपरिवार सकुशल सानन्द होंगे। बहुत दिनों से तुम्हारा कोई पत्र या समाचार नहीं आया है, न मालूम कारण क्या ? कुछ रुष्ट हो गये हो ? या पत्र लिखते लिखते थक गये हो? कुछ भी अपना समाचार लिखना। तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है ? सिर्फ इतनी जानने की ईच्छा है ? श्री परम पूज्य गुरुदेव की तिथि पोरबंदर में मनाई जा रही है और आश थी कि भाद्र पूर्णिमा को यहाँ की अखंड धुन की पूर्णाहुति भी हो जायेगी, किन्तु द्वारकाजी से यहाँ आने पर पता चला कि यहा के प्रेमियों की इच्छा अभी पूर्णाहुति करने की नही है। कार्तिक पूर्णिमा को पूर्णाहुति करेगें। अतः इस बार जहाँ जो होवे वहीं श्री यथाशक्ति श्री गुरुदेवकी तिथि मना लेवे, कीसी को आनेजाने का कष्ट देना ठीक नहीं लगता कारण कि निमंत्रण पत्रिका भेजने पर बहुत पत्रोत्तर देने में भी कष्ट का अनुभव करते हैं तो क्या आवश्यकता व्यर्थ परिश्रम उठाने की। श्री द्वारका धाम में पाँच दिवस का अखंड तिथि पर होगी और वही के पूर्ण कर लेंगे। यहाँ तो अखंड चालू ही है, उसी में तिथि का उत्सव भी मना लिया जाएगा। मंत्र मंदिर की हालत

बिल्कुल बिगड़ गई है। मंदिर का सारा छत खराब है चारो ओर से पानी पड़ता है मंदिर के उपर तालपत्री रख दिया है। कम्पाउन्ड में घास ही घास उग गई हैं सरकार की ओर से बिल्कुल लापरवाही हैं। मंदिर का पाटवाल सुबह शाम धूप दीप कर आता है दो चार पुड़िया भोग रख आता है बेटवाले किसी को भी उसका कुछ दरकार ही नहीं लगता। हरिदास कहता है कि नई समिति बनने वाली है उसमें मेरा आ जाएगा तो बनेगा उतनी व्यवस्था कराने की कोशिश करुंगा। प्रेम कुटीर ठीक है। ओखा वाली गुफा के लिए गौरीबेन तथा अन्य किसी ने कोई कोशिश नहीं की किन्तु श्री प्रभु ईच्छा से अेसा लगता है कि बगैर परिश्रम के वह जगह मिल जायेगी । कारण कि सौराष्ट्र पोर्ट Exicutive Engeneer दवे साहब को अब बड़ी लगन लगी है और अभी जब मैं ओखा गया था वे पोर्ट आफिसर के साथ खुद आये थे। कहते थे कि जैसा भी हो सकेगा सरकार से लेकर स्वामीजी का स्थायी निवास स्थान बना दूँगा । रामजी भाई सुकाला में पटेल की वाड़ी में स्मृतिरुप कुटिया बनाने वाला है। प्रचार भी ईधर अच्छा हुआ है । कई नये गामों के अलावा खंभालिया में बहुत अच्छा प्रचार हुआ है। विशेष श्री प्रभु कृपा । सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

शुभाशीर्वाद !

तुम्हारा अेक पत्र मिला, जिससे पता चला कि तुम्हारा आपरेशन सफल हो गया और श्री प्रभु कृपा से तुम बहुत जल्द ही Hospital से घर आ गये। यह जानकर बहुत खुशी हुई श्री प्रभु की तो पूर्ण कृपा है फिर भी तो तुम अपने उपर अपनी कृपा से उदासीन सा हो, यह ठीक नही। जब श्री प्रभु ने सब कुछ दे रखा

है तो इतनी व्यग्रता,व्याकुलता क्यों होनी चाहिए। पैसाही जीवन का सर्वस्व नहीं हाँ ! व्यवहार के लिए अेक नितान्त आवश्यक तत्व है फिर भी वही जीवन का लक्ष्य नहीं। जीवन का सच्चा लक्ष्य तो शास्वत सुख शान्ति ही है, और भगवद् की इतनी कृपा होने के बावजूद भी अगर जीव उस लक्ष्य की ओर विशेष ध्यान न देकर इन्ही मिथ्या पदार्थो के संग्रह, संचय से अस्त-व्यस्त रहें जीवन में सुख शान्ति का अनुभव न कर पाये तो अेसी सम्पति, संतति और सत्ता समृद्धि से क्या लाभ? तुम समझदार हो विशेष क्या लिखू ? समझदारी को बेदरकारी में नही बदलना। श्री प्रभुकृपा से श्री गुरुमहाराज की तिथि श्री रणछोड़ राय की अहैतुक अनुकम्पा,प्रेरणा से विलक्षण रुप से सम्पन्न हुआ । जैसी ही शुरु में निराशा सी हुई थी वैसे अन्त में आशातीत सफलता प्राप्त हुई। सारा डाकोर धाम श्री भगवन्नाम के नाद से निनादित हो उठा। विजय मंत्र अकिंत ध्वजोन्तरण समय तो कुछ विलक्षण आनन्द और समा बन गई तुम्हारा अभाव, सभी अपने प्रेमियों को खटक रहा था किन्तु किया क्या जाए ? **राजी हैं हम उसी में, जिसमे तेरी रजा है। या यूँ भी वाह-वाह है, अपना तो यही मत हैं।** मूलजीभाई गोटावाला भी पहले तो थोड़ा ढ़ीला लगता है। किन्तु अन्त में पागल ही बन गया। श्री रसिक महाराज ने भी अपनी भक्ति भाव खूब दिखाया । आठ नव दिवस तक उसकी मंडली भी रही ओर ५०१ रुपैया भी महोत्सव में दिया और सब आनन्द मंगल है। बिहार के यमुना बाबू और विजलीबाबू आये हुए हैं साथ ही में है। कल्ह गिरनार चढ़ते वक्त भी अतीत काल की स्मृति खूब हुई। जब हम लोग पहले पहल यात्रा करने आये थे और रात्रि को हनुमान् धारापर १२ कलाक अखंड किया था। कल्ह पोरबंदर जाऊँगा। रतनपुर मे आगामी रविवार को ढाई मास की पुर्णाहुति विशेष श्री प्रभु कृपा । दो-चार रोज पोरबंदर रहकर द्वारिका बेट जाऊग । प्रेम कुटीर का रीपेर करा दिया है शायद यमुनाबाबू सभी प्रेमियों को मेरा जय श्रराम

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल ! पालेज

आशीर्वाद ! दिनांक : २२-१२-६६

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है। तुम्हारा पत्र आज मिला समाचार मालूम हुआ। सात आठ दिवस से मेरा अेसा मन होता था कि बम्बई जाऊँ और २४ कलाक काकू के घर अखंड करा दूं जो कि तुम्हारे पिता के स्वर्गवास की खबर मिलते ही अपने नियमानुसार रामजीने पोरबंदर में अखंड कर दिया होगा। मेरे भीतर भी अेसी प्रेरणा हुई कि इसी कारण तुझे पत्र लिखाथा। आज लगभग अेक मास से गाँवो-गाँवो नर्मदाजी के किनारे वाले गाँवों में तथा भरुच जिल्ला के वालिया,झगड़िया,राजपीपला तालुकाओं के अन्तर्गत आदिवासी भिल्लो के गाँवो में जंगल- जंगल पहाड़-पहाड़ फिरता रहा। प्रतिदिन अेक गाँव से अखंड पूरा करके दूसरे गाँव में जाना। बैल गाड़ी की सवारी जूआर की टीकड़ और लाल चावल का भात बस! नया रोज नया पानी जहाँ जहाँ आवदाना वहाँ वहाँ जाना। परसो नेत्रंग से भरुच आया। श्री नर्मदाजी में स्नान किया रात्रि में भजन किया। कल्ह वहाँ से निकलकर बड़ौदा जा रहा था रास्ते में पालेज स्टेशन आया। वहाँ के प्रेमियों ने चलती गाड़ी में से जबरदस्ती उतार लिया। रात्रि को भजन सत्संग हूआ। आज भी यही भजन है । कल्ह यहाँ से बड़ौदा जाऊँगा। वहाँ से गोदरा लाइन में मेहलोल गाँव मे दो-तीन दिन का अखंड है । उसके बाद बम्बई का विचार है। भरतभाई के उपर प्रेमजीभाई का भी पत्र है कि मेरा यहाँ दो ब्लोक खाली है तो बापूजी को लेकर आप जल्दी आओ किन्तु मेरा मन वहाँ ठहरने का नहीं होता है। बाबूभाई जानी का कोई पत्र नही है । प्रेमजीभाई ने लिखा है कि बाबूभाई को पूछा तो उन्होंने कहा है कि भले आवें अपने यहाँ जगह तो है ही । तुम्हारे सप्ताह भागवत् के बीच में ही २२-१-६७ से डभोई के पास अेक गाँव में श्री रणछोड़जी के पूराने मंदिर का जिर्णोद्धार होनेवाला है उसी के

उपलक्ष्य में वहाँ एक बृहद् समारोह है। जिसमें तीन दिवस का अखंड है और वहाँ का मुख्य कार्यकर्ता जोशी भाई डभोई वाला मेरे हाथ से ही उसका खातमुहुर्त करवाना चाहता है इसी कारण से मैं चाहता हूँ कि इतना समय बम्बई तरफ वीताकर और डभोई का प्रोग्राम पूरा करके ही सौराष्ट्र तरफ जाऊँ तुम्हारा अखंड सप्ताह का संकल्प है तो जहाँ कहोगे वहाँ हो जाएगा। पोरबन्दर के उत्सव के समय एक पंथ दो काज गाँव के हाईस्कूल में। सभी प्रेमियो को म्हात्रे बाबूभाई, प्रेमजीभाई, हरि किशन वगैरह को यथायोग्य जयश्री राम। विशेष श्री प्रभुकृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल! श्री द्वारका धाम

आर्शीवाद ! दिनांक २७-४-६७

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है पत्र मिला समाचार मालूम हुआ। मात्रे और हरिकिशन आये थे फूलडोल का खूब आनन्द लेकर कल्ह यहाँ से जामनगर गये और वहाँ से बम्बई के लिये ही कल्ह रवाना हो जायेंगे। श्री अयोध्याजी के लिये राम चरणदास ने निमंत्रण दिया था किन्तु जाने के बाद अभी तक तो उसका एक भी पत्र नहीं आया है। इसके अलावा श्री रामनवमी के अवसर पर नव दिवस का अखंड महुवा बंदर में पहले से निश्चिंत हो चुका है तो अभी अयोध्या जाने का तो कोई प्रोग्राम किस प्रकार हो सकता है ? बाद में पोरबंदर का अक्षय तीज को वार्षिकोत्सव आता है इतने थोड़े समय के लिये अयोध्या जाने आने में कोई तथ्य नहीं है। इस बार फूलडोल का उत्सव अपने यहाँ अखंड में महाजन वाड़ी में बड़ा ही विलक्षण हुआ। सपाट (चंपल कंतानका) मिल गया है अभी द्वारका में आगामी रविवार सोमवार तक हूँ। बाद में पोरबंदर जाने का विचार है और वहाँ से आठ या नव तारीख को महुवा के लिये रवाना होना है

वे लोग मोटर लेकर आयेगे अेसा उनका पत्र आया है । स्वास्थ्य ठीक है । महुवा में १०-४-६७ से १९-४-६७ तक श्री रामनवमी तक प्रोग्राम है। वहाँ पत्रोत्तर भेजना हो तो C/o. मैनेजर देना बैंक, महुवा बंदर सौराष्ट्र पर भेजना । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल!

शुभाशिर्वाद !

श्री प्रभु की कृपा विलक्षण है और उसकी प्राप्ति तथा अनुभूति के लिए जीव के पास अेक ही साधन है, पवित्र, विशुद्ध,निष्कपट,निर्मलभाव। चाहे जीव कैसा भी मलिन क्यों न हो जिस समय वह सच्चे हृदय से निष्कपट याने जैसा है वैसा का वैसा अपने को श्री प्रभु के चरणों में समर्पण कर देता है, उस समय दयालु, कृपालु, मायालु प्रभु अवश्य ही उसे अपना लेते हैं। अपना बना लेते हैं। पाप पंक से निकालकर दिव्यगुण रुपी महोदधि में निमग्न कर देते हैं। पत्र,पुष्प,फल,जल जो कुछ भी श्री प्रभु को सद्भावना पूर्वक,भक्तिभाव पूर्वक अर्पण किया जाता है उसे श्री प्रभु अश्वमेय ग्रहण कर देंते हैं। अेसी उनकी गीताजी में प्रतिज्ञा है। श्री गुरुपूर्णिमा का उत्सव,पूजन बहुत ही सुन्दर ढंग से सम्पन्न हुआ। बाहर से भी लगभग १५० प्रेमी आये थे गाँव के लोग भी काफी तायदात में थें। प्रातः काल ७ बजे से ४ बजे तक पूजन उद्धबोधन वगैरह चला । पीछे ६ से ९ तक शहर के इने गिने विद्वान,पंडितो का सामायिक भाषण, प्रवचन हुआ । सबके सब प्रेमी कह ही रह थे कि काकूभाई का कोई संदेश नहीं आया कि इतने मे ठीक मौके वस्त्र तथा मेवा का प्रसाद आ गया। सभी लोग कहने लगे कि देखो

काकूभाई का कैसा प्रेम है सभी जगह ठीक मौके पर ही हर चीजें हाजिर हो जाती हैं जनता जनार्दन का रुप है। वही तन, मन, धन, जन धन्य है जो प्रभु सेवा में लगे। श्री प्रभु कृपा करके तुम्हारी इस सद्भावना सेवा को सुद्रीण भाव यही शुभकामना । पंच परमेश्वर रुप है इसकी सद्भावना भी श्री प्रभु कृपा का ही प्रतीक है। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल ! जामनगर

शुभाशीर्वाद ! दिनांक ४-६-६१

तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ। ज्ञान तो ग्रहण करना ही पड़ेगा चाहे आज करो या कल्ह। मानव जीवन की निधि, सम्पति, विभूति तो ज्ञान ही है। और ज्ञान बिना सच्ची सुख शान्ति भी नही । हाँ! इतना अवश्य है कि समय की भी प्रतिक्षा होती है। अभ्यास करते-करते जड़ जीव भी चतुर बन जाता है तो चतुर जीव की तो बात ही क्या है कामेश्वर के साथ बहुत व्यवहार नहीं रखना, नहीं तो वह बनने के बजाय बिगड़ता ही जाएगा। अभी उसकी समझ बहुत कम है अपने हिताहित का भी ज्ञान नहीं किन्तु अपनी बुध्दि, समझ तथा चतुराई का अभिमान बहुत है जो हित चाहता है उसी को वैरी(शत्रु) समझता है और अहित करता आया है और कर रहा है उसी को अपना मित्र समझता है विशेष क्या लिखूँ तुम स्वयं समझदार हो। आम की पेटी पोरबंदर गई है। भगवत सेवा में उपयोग हो जाएगा। द्वारका आते वक्त रामजी ने एक पेटी आमका दिया था उसके बदले पेटी वहाँ पहुँच गई। प्रेमजीभाई का पत्र था वहाँ आने के लिये क्योंकि उनके यहाँ एक मास का अखंड चल रहा है किन्तु पुरुषोत्तम मास में असंभव लगता है। साथ ही बिहार से यमुना बाबू तथा गिरिधारीका पत्र और तार है कि

किसी तरह २०-६-६१ तक बिहार आ जाइये कारण २१-६-६१ को यमुना बाबू के लड़के का विवाह है किन्तु यह सम्भव किस प्रकार हो सकता है। जामनगर, द्वारका, पोरबंदर,कांदीवल्ली सब जगह पूर्णाहुति। विशेष श्री प्रभु कृपा। सभी प्रेमियों को जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकु मात्रे तथा बाल गोपाल! पोरबंदर

लोहाणा बोर्डिंग

शुभाशीर्वाद ! दिनांक २९-६-५९

श्री प्रभु कृपा की क्या लीला है! यह तो वे स्यंव ही जानते हैं- जीव के लिए तो इतना ही पर्याप्त है वह उनका लीलापात्र बन कर ही संसाररुपी सराय का जीवन व्यतीत करे इसी में उसका कल्याण याने आत्मिक सुख, मानसिक शान्ति,चिन्ता शून्य जीवन का सच्चा सार निहित है याने अपने पूरा प्रयास करने पर भी अगर अभिष्ट-अपनी इच्छित वस्तु की उपलब्धि न हो तो उसके लिए हर्ष विषाद युक्त न होकर, उसमें श्री प्रभु का लीला, विधान समझना तथा जिस भी स्थिति में रहना पड़े उसी को अपने लिए प्रभु की सेवा, आदेश या विधान समझ सतत आनन्द मग्न रहने का प्रयास करना । जिस भाटिया की जगह में अेक मास तक अखंड चला और जिसकी Permission के लिए यहाँ के भावुक भक्तो ने तुम्हे कष्ट दिया उससे भी अति सुन्दर जगह मिल गई है- यह वही स्थान जहाँ तीन वर्ष पहले अेक मास अखंड हुआ था। नई लोहाणा महाजन वाड़ी अेक मास के लिए मिली है- पीछे प्रभु इच्छा होगी तो गीता मंदिर में भी होवे। विशेष श्री प्रभु कृपा। सभी प्रेमियों को यथा योग्य ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू, प्रेमीजन तथा बालगोपाल । राणीप साबरमती, अहमदाबाद

आशीर्वाद ! दिनांक ३०-१२-६७

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। आज बहुत दिनों के बाद तुम्हारा पत्र और श्री ठाकुरजी का वस्त्र मिला। मैं यहाँ १० दिवस रहकर अेक दिवस के लिये गत सोमवार को जामनगर गया था, वहाँ से श्री द्वारकाजी गया था और कल्ह रात्रि को मेल में यहाँ आया। आज सवेरे अनसूइया बेन श्री ठाकुरजी का वस्त्र देने आई थी। यहाँ अखंड बहुत अच्छी तरह चल रहा है। कारण भइया लोगों का खूब सहयोग है । उनका मंडल भी यहाँ बहुत है जिससे २४ घन्टे धुन गूंजती ही रहती है । माइक भी २४ घंन्टे चलता है गाँव होने से और शहर से दूर होने के कारण आम पब्लिक बहुत भाग नहीं लेती किन्तु तीन-चार मील तक तो चारों बाजू विजयमंत्र से वातावरण गुंजित ही रहता है। पालेज वाले का आग्रह है कि इसी ४० दिवस के अन्दर ही वहाँ सात दिवस का अखंड रख्रा जाए किन्तु यहाँ वाले ना पाड़ते हैं, अगर हाँ ! करेंगे तो वहाँ का प्रोग्राम तत्काल ही रख्रा जाएगा नहीं तो यहाँ की पूर्णाहुति के बाद में । राम भगत का भी बड़ौदा के लिए महासुद १ से सात दिवस के लिये अति आग्रह है बाद में जैसा निश्चय होगा, वैसा लिखूँगा। मैं तो कई रोज से विचार कर रहा था कि पत्र लिखूँ या फोन करूँ किन्तु दौड़ धाम में मौका नहीं मिला । सुना है कि धरतीकम्प के कारण बम्बई में बहुत आतंक फैल गया है और रोजगार धंधा भी मंद पड़ गया है तो क्या बात है लिखना। सभी प्रेमियों को म्हात्रे, बाबूभाई रंगरेज,बाबूभाई जानी, प्रेमजी भाई वगैरह को मेरा श्री राम जय राम जय जय राम। खूब भजन करो श्री प्रभु का दृढ़ विश्वास रखो। प्रभु भजन का कभी आमंत्रण नही होता। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

सराठा

शुभाशिर्वाद ! दिनांक २-१०-६०

नूतन वर्ष का मंगलमय सुप्रभात जीवन में मंगलमय प्रभात लावे, मानव जीवन सफल बनावे। जीवन में मंगलमय, कल्याणमय,आनन्दमय श्री प्रभु नामामृत,दिव्य रस का सरस संचारण लावे,नूतन शक्ति शील सौंदर्य का परिवर्धन करे,ध्यान धारणा की भाव भक्ति की नूतन संजिवनी संचार करे। यही हार्दिक मंगल कामना। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल!

जामनगर

आर्शीवाद ! दिनांक १४-३-६९

श्री प्रभु का कृपा से सब आनन्द है। तुम्हारा पत्र मिला था समाचार मालूम हुआ था किन्तु पत्रोत्तर देने में कुछ विलम्ब हो गया है। सर्दी के कारण काकड़ा की तकलीफ बढ़ जाने से चार दिनों से जामनगर आया हूँ। यहाँ शुक्लजी आयुर्वेद कालेज के डाईरेक्टर की दवा लेता हूँ। चार दिवस में बहुत ही आराम हो गया है। चार दिवस और कहेकर रूकना पड़ेगा। श्री रामनवमी का प्रोग्राम महुवा था किन्तु आठ दिवस पहले राजकोट वाले आये और कहने लगे कि मेरे यहाँ गीता मंदिर बना है उसी में रामनवमी का ९ दिवस का अखंड और उद्घाटन का प्रोग्राम रखना है। नई जगह होने से और अति आग्रह के कारण महुवा का प्रोग्राम बंद कर दिया गया तो परसों राजकोटवाले आये थे कि रामनवमी का प्रोग्राम बंद रखा जाए। अतः अब बाहर का सभी प्रोग्राम तत्कालित बंद रहने के कारण

श्री द्वारकाधीशजी की प्रेरणा समझ, अब श्री रामनवमी का उत्सव श्री द्वारका संकीर्तन मंदिर में रखा जाएगा । उसके बाद जो प्रभु इच्छा। रामजी का पोरबंदर वाली जगह का लखान अभी तक आया नही है। जय श्री सेठ तो मैं आया था तभी कहता था कि आठ दिवस में सही करके भेज दूंगा। द्वारका का मंदिर तो आदर्श बन गया । अपना एक गौरव हो गया । फूल डोल पर जितने यात्री आये थे उनमें शायद ही कोई एक भाग्यहीन होगा जिसने संकिर्तन मंदिर का दर्शन न किया हो। हजारों यात्रीगण लाभ लेते हैं। गाँव वालों का सहयोग भी खूब है । पंढ़रपुर वाली अष्टगंध मिले तो भेजना। सभी प्रेमियों को म्हात्रे सपरिवार,बाबूभाई जानी सपरिवार, काकूभाई रंगरेज सपरिवार, प्रेमजी भाई, श्री मोहनलाल सेठ सपरिवार, जयन्तिलाल वगैरह को जय श्री राम । मंगलवार को द्वारका जाऊँगा । लाभ शंकर मास्टर, हरकिशन वगैरह सबों को यथा योग्य। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

श्री नर्मदातट भालोद

आशीर्वाद ! दिनांक ११-१२-६६

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। तुम्हारे पिता के वैकुन्ठवास का समाचार मिलने पर अेक पत्र मैने भेजा था, मिला होगा। व्यवहारिक रश्म रिवाज भी आनन्द से पूर्ण हो गया होगा। मैं तो अभी भरुच जिल्ला के राजपीपला तथा झगड़िया तालुका के गाँवों में भटक रहा हूँ। नर्मदाजी के आजू-बाजू में फिर रहा हूँ, अब लगभग अेक सप्ताह के बाद मिया गाँव कर्जन जंक्शन (रेल्वे) पर प्रोग्राम है उसके बाद बड़ौदा होकर गोदरा लाइन पर अेक जगह प्रोग्राम है,उसके बाद का अभी कोई प्रोग्राम निश्चित नही है तो जामनगर जाने का विचार तो

है ही किन्तु अेसा भी विचार आता है कि इतना नजदीक आ गया हूँ तो बम्बई भी होकर फिर सौराष्ट्र तरफ जाऊँ। बाद में मिया गाँव से पत्र भेजूँगा। मियागाँव कर्जन का पता C/O भाईलालभाई नागजीभाई चौक्सी, ठे. हनुमान फालिया जूना बाजार या C/O रणछोडभाई, प्रविण टी डिपो पालेज रेलवे स्टेशन जि.भरुच गुजरात। सभी प्रेमियों को यथायोग्य जय श्री राम। पत्रोत्तर भेजना हो तो उपर के किसी पते पर भेजना या भरतभाई जगन्नाथ पंडित भूतड़ी झाँपा वडौदा के पते पर पत्रोत्तर देना। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

आशीर्वाद !

तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । बम्बई होकर जाने का समय अब नही है कारण १०-३-६५ से वहाँ प्रोग्राम चालु है और १४-३-६५ पर प्रोग्राम है बड़ी मुश्किली से ११ या १२ को निकल पाऊँ गा । इसलिए विचार किया है कि यही से जाना टीक होगा। बम्बई अेक दिवस के लिए जाना,इतना पैसा बिगाड़ना और फिर इसी तरफ हो के जाना पड़ेगा । उतने खर्च में तो यहाँ से वृन्दावन पहुँच जाऊँगा बाद में बम्बई आने का रखूँगा । हरिदास, वाघोरिया मिल के गया और ७-३-६५ को वापिस आनेवाला है । जोशी का विचार भी था कि अगर कोई साथ में न हो तो मैं छोड़कर आऊँ किन्तु मैने उसको ना बोल दिया है कारण वह अब अकेला है और यह उसके कमाने का सीजन है। पैसा कितना भी खरचता है तीन वक्त तो यहाँ आ गया। बेचरदास साथ है और वह आने को भी तैयार है इसके अलावा अेक मनसुख और दूसरा गिरधारी द्वारका ब्राह्मण है जो साथ ही द्वारका से आया है और साथ ही है वे अगर साथ जाने आग्रह रखेगे

तो उनके टीकट का प्रबंध करना पड़ेगा। मेरा तो हो जाएगा । सभी प्रेमियों को जय श्री राम। तमको जैसा ठीक लगे वैसा करना बम्बई तो अभी आना नहीं हो सकता। नन्दकुमार के विषय में मुझे कुछ मालूम नहीं जैसा समझो वैसा करना। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल ! द्वारकाधाम

शुभाशीर्वाद ! दिनांक ४-१२-६४

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है । तुम्हारी प्रसन्नता तथा स्वास्थ्य जानकर विशेष खुशी। तुम्हारा १९-११-६४ का लिखा हुआ पत्र पोरबंदर होकर कल्ह यहाँ मिला। लगभग ३२ दिवस जामनगर रहकर यहाँ अखंड प्रारम्भ करने के लिए आया हूँ। राजा घोड़ागाड़ी वाले के यहाँ १३ दिवस का अखंड है। आगामी बुधवार को पूर्णाहुति भी होगी और पुनः दूसरे दिन गुरुवार से छगन लाल (माताजी) के यहाँ गतवर्ष जैसा छ मास का अखंड प्रारम्भ होगा। इसके बाद २१-१२-६४ से ३०-१२-६४ तक अहमदाबाद श्रीरामचंन्द्रजी के मंदिर में, हाजा पटेल की पोल रीलीफ रोड अहमदाबाद में है स्वास्थ्य में तो कोई खास गड़बड़ी नहीं है। हाईड्रोसील में भी कोई वृध्दि नही पहले जैसा ज्यों का त्यों है। किन्तु बहुत दिनों से ठीक हो जाने पर इस बार शरदपुर्णिमा के दिन से फाईलेरिया की शिकायत अेक दो बार हो गई है जो होमियोपैथिक दवा से लगभग मिट सी गई थी । एकादशी या कभी अमावश्या को कुछ थोड़ी बुखार आ जाता। इसके लिए जामनगर में अग्रेजी दवा ली थी किन्तु बिल्कुल मिटा नहीं तो बिहार वाले जनता कालेज के प्रिन्सीपल श्री संतजी की होमियोपैथ दवा मंगाई और आज से प्रारम्भ

भी किया है एकादशी,अमावश्या,पूर्णिमा को जब ज्वर आता है तो हाइड्रोसील में कुछ चिकना और दर्दसा तो हो ही जाता है इससे ऐसा प्रतीत होता है कि उसके साथ ज्वर का सम्बन्ध तो कुछ जरूर है। शरीर का भोग भोगना ही चाहिए इससे भी कुछ अधिक प्रभु को भोगाना होगा तो आपरेशन कराया जाएगा। जब जैसी उसकी मर्जी। यों कोई खास परेशानी तकलीफ नहीं इसलिए कोई चिन्ता नहीं करना। विशेष श्री प्रभु कृपा। म्हात्रे, प्रेमजीभाई वगैर सभी प्रेमियों को जय श्री राम। पेन का लीड खतम है ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय फाफू तथा बाल गोपाल ! श्री द्वारकाधाम

आशीर्वाद ! दिनांक १७-८-६६

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। पुरुषोत्तम मास का समय बड़े विलक्षण रूप से व्यतीत हुआ। यहाँ यात्रियों का आगमन खूब ही हुआ। पाँच वर्षों के भीतर इतने यात्री नहीं आये थे, ऐसा यहाँ के लोग कहते है। साथ ही पोरबंदर, खंभालिया तथा जामनगर वालों को भी लाभ खूब मिला । श्री नाम महाराज का प्रभाव, प्रताप तो कुछ विलक्षण ही है । तुम्हारा पत्र मिला है, समाचार मालूम हुआ, वास्तव में तुम्हारे उपर श्री प्रभु की अपूर्व कृपा है, नहीं तो मनुष्य ऐसी परिस्थिति में घबड़ाकर पागल हो जावे। और दुनिया भी तो इसी का नाम है जिसमे द्वन्द चलता ही रहता है इसमें तो संसार के मूलभूत शक्ति के जो आश्रय रहता है वही बच सकता है अन्यथा इस संसार चक्र से बचना बड़ा ही दुष्कर है । कल्ह अखंड मे श्री हनुमानजी का तथा अन्नकूट का दर्शन था । कल्ह मैं पोरबंदर होकर वेरावल और सोमनाथ जानेवाला हूँ वहाँ पर श्री सोमनाथजी के नूतन मंदिर मे ही दो दिवस का अखंड है और दो दिवस वेरावल में है उसके

बाद २५-८-६६ को पोरबन्दर से कपडवंज और वही से जन्माष्ठमी उपर वड़ौदा जाने का है। म्हात्रे, प्रेमजी भाई, बाबू भाई रंगरेज, बाबू भाई जानी, वैद्यराज, लाभशंकर मास्टर, हरकिशन वगैरह को मेरा यथायोग्य सह जय श्री राम। विशेष श्री प्रभु कृपा। अन्य सभी प्रेमियों को जय श्री राम ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । जोशी के नाम तुम्हारा पत्र आया था उस समय मैं वहीं जामनगर उसी दिन अेक दिवस के लिये गया था । जोशी ने बाद में क्या किया ? मुझे पता नहीं है। पोरबंदर के बाद द्वारका में पूर्णाहुति हुई और पुनः १०८ दिवस के लिये ब्रह्मपुरी में ४-६-६६ गत शनिवार से अखन्ड प्रारम्भ हुआ जिसकी पूर्णाहुति श्री पूज्य गुरुदेव की तिथि के उपर होगी अेसा निश्चय लोगों ने किया है, तब तक तो यही ठहरने का विचार भी है और यहाँ के प्रमियों का अति आग्रह भी है सीर्फ जन्माष्ठमी के अवसर पर शायद बड़ौदा जाने पड़ेगा कारण राम भगत अति आग्रह पूर्वक अहमदाबाद में आमंत्रण दे गया है किन्तु अेसा सुना है कि राम भगत आफ्रिक्र जानेवाला है अगर अफ्रिका चला गया तो प्रोग्राम बंद ही रहेगा। तुम्हारी प्रवृत्ति तो इतनी प्रबल हो गई है कि लोग कहते हैं कि दम मारने की फुरसत काकू को नहीं मिलती, जैसी प्रभु इच्छा । म्हात्रे, इन्दीरा देवी तथा समस्त बाल गोपाल को जय श्री राम। विशेष श्री प्रभु इच्छा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !   भरुच

आशीर्वाद !   दिनांक १४-७-६६

श्री प्रभु कृपा से आनन्दपूर्वक कल्ह यहाँ पहुँच गया । कल्ह रात्रि को यहाँ अखंड का प्रारम्भ हुआ । उस समय मंगल प्रवचन में भगवन्नाम की महिमा वर्णन करते हुए यह भी श्री गुरुदेव ने प्रेरणा करके कहलवाया कि वर्षा के अभाव के कारण किस प्रकार समस्त महाराष्ट्र गुजरात तथा काठियावाड़ परेशान हो रहा है सभी जगह कुछ भावुक लोंग अपनी-अपनी भावना के अनुसार भगवत प्रार्थना भी कर रहे हैं। किन्तु वह भी व्यवस्थित नहीं है अतः इस समय तो सीर्फ इतनी आवश्यकता है कि सब लोग अेक मन, अेक मत होकर अेक संकल्प से आर्तनाद से प्रभु को पुकारे तो अपना तथा देश का संकट दूर हो जायेगा इस भृगुक्षेत्र में नर्मदा मइया की गोद में आज हम लोंग एक स्वर से विजयमंत्र का नारा लगावें । अेसा कहकर अखंड प्रारम्भ हुआ और प्रातः काल होते ही पुष्कल वृष्टि हुई आज दोपहर को पर्याप्त पानी पड़ा है कल्ह और आज भी नर्मदाजी स्नान करते वक्त तुमलोगों को और खास कर बापा को याद किया ऐसा बापा को कह देना। शनिवार रात्रि को सौरास्ट्र मेल में निकलूँगा । विशेष श्री प्रभु कृपा । सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारकाधाम

प्रिय काकू !

शुभाशिर्वाद   ! दिनांक ९-१२-५७

तुम्हारा पत्र पढ़कर, तुम्हारा मनोगत भाव जाना, साथ ही तुम्हारे गोधु मामा का भी विचार से अवगत हुआ। हम लोग क्या करे ? संसारियो के साथ सम्वन्ध

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

भरुच

आशीर्वाद ! दिनांक १४-७-६६

श्री प्रभु कृपा से आनन्दपूर्वक कल्ह यहाँ पहुँच गया । कल्ह रात्रि को यहाँ अखंड का प्रारम्भ हुआ । उस समय मंगल प्रवचन में भगवन्नाम की महिमा वर्णन करते हुए यह भी श्री गुरुदेव ने प्रेरणा करके कहलवाया कि वर्षा के अभाव के कारण किस प्रकार समस्त महाराष्ट्र गुजरात तथा काठियावाड़ परेशान हो रहा है सभी जगह कुछ भावुक लोंग अपनी-अपनी भावना के अनुसार भगवत प्रार्थना भी कर रहे हैं। किन्तु वह भी व्यवस्थित नहीं है अत: इस समय तो सीर्फ इतनी आवश्यकता है कि सब लोग एक मन, एक मत होकर एक संकल्प से आर्तनाद से प्रभु को पुकारे तो अपना तथा देश का संकट दूर हो जायेगा इस भृगुक्षेत्र में नर्मदा मइया की गोद में आज हम लोंग एक स्वर से विजयमंत्र का नारा लगावें । असा कहकर अखंड प्रारम्भ हुआ और प्रात: काल होते ही पुष्कल वृष्टि हुई आज दोपहर को पर्याप्त पानी पड़ा है कल्ह और आज भी नर्मदाजी स्नान करते वक्त तुमलोगों को और खास कर बापा को याद किया ऐसा बापा को कह देना। शनिवार रात्रि को सौरास्ट्र मेल में निकलूँगा । विशेष श्री प्रभु कृपा । सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारकाधाम

प्रिय काकू !

शुभाशिर्वाद ! दिनांक ९-१२-५७

तुम्हारा पत्र पढ़कर, तुम्हारा मनोगत भाव जाना, साथ ही तुम्हारे गोधु मामा का भी विचार से अवगत हुआ। हम लोग क्या करे ? संसारियो के साथ सम्बन्ध

ही त्यागियों के लिए अपने पूर्व संचित कर्म परिपाक का ही परिणाम समझता हूँ। श्री प्रभु की माया भी विलक्षण ही, जो न जाने पल-पल में क्या-क्या रचनाये रचा करती हैं? आज गोधु भाई को मंत्र की पूजा, सेवा की चिन्ता बहुत है किन्तु जिस समय मंत्र लिखा भी नहीं गया था उस समय सर्व प्रथम गोधु भाई ने कहा था वेट जगह मिल जावे तो मंत्र मंदिर मैं बना दूँगा। सभी मंत्र यही रहे जिसका मैने विरोध किया था जब प्रभु कृपा से द्वारकाधीश की कृपा उनके निज मंदिर का निश्चय हुआ तो पूजा सेवा के बहाने गोधुभाई ने विरोध किया। अब द्वारका में या कही भी प्राईवेट रखने का विचार नहीं तो क्या द्वारकाधीश मंदिर मेरे या गोधुभाई के हाथ में है। जब मन हुआ तब वहाँ रख दे। अपने जरा भी कोई जवाबदारी लेने को तैयार नही। ठीक जो प्रभु इच्छा। १३ मास का संकल्प पूर्ण होने पर जो प्रभु प्रेरणा करेगे वैसा हो जाएगा। विशेष श्री प्रभु इच्छा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल! अशोक आश्रम, भरुच

आशीर्वाद ! दिनांक १५-९-६६

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । समयाभाव के कारण पत्र नहीं भेज सका हूँ । श्री पुरुषोत्तम मास में श्री द्वारकाधाम में बड़े आनन्द के साथ अखंड चला। बाद में वेरावल, सोमनाथ, प्राची वगैरह में बड़े समारोह के साथ श्री अखंड का आयोजन हुआ। श्री सोमनाथजी के मंदिर में श्रवण मास के प्रथम सोमवार को ही अखंड था। जामनगर, द्वारका, पोरबदर, सोढ़ाणा, टुड़आना वगैरह नगरों से बाहर से लगभग पौने दो सौ व्यक्ति आये थे । वेरावल वाले बड़ी सुन्दर रहने-खाने सबकी व्यवस्था की थी। श्री महादेवजी की कृपा से यद्यपि श्री सोमनाथजी

में वहाँ के नियुक्त पुजारी के अतिरिक्त किसी को अन्दर पूजा करने की मनाई है। फिर भी शंकर भगवान आसुतोष की कृपा से मुझे अन्दर जाकर श्री सोमनाथ भगवान का षोड्सोपच्चार पूजन का भी लाभ प्राप्त हुआ था। बाद में कपड़वंज,श्री डाकोरजी,अहमदाबाद,बड़ौदा,शाहपुर और अमावश्या के दिन श्री नर्मदा स्नान तथा तीन दिवस श्री अखंड महायज्ञ का लाभ प्राप्त हुआ। बम्बई से आकर जिस जगह पर भरुच में अखंड हुआ था इसबार भी उसी स्थान में- अशोक आश्रम में अखंड चल रहा है। आज रात्रि को ११ बजे पूर्णाहुति है कल्ह यहाँ से "कबीर वट" जाने का विचार है। वहाँ से लौटकर रात्रि में २।। बजे सौराष्ट्र मेल में सीधे द्वारका जाने का है। टीकट भी आ गई है। शायद अेक दिवस जामनगर में उतरना पड़ेगा। श्री गुरुमहाराज की तिथि का समय अति निकट आ गया है। सभी प्रेमियों को मेरा जय श्रीराम। जिसने श्री राम नाम महाराज का दृढ़ आश्रय लिया उसका सब तरह से बन गया। म्हात्रे तथा परिवार को मेरा आशिर्वाद। बाबू भाई रंगरेज को जय श्री राम ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारकाजी

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

दिनांक ९-७-५७

आशीर्वाद

श्री करुणावरुणालय, दीनजनशरणालय, राज राजेन्द्र राजीव लोचन श्री राघवेन्द्र प्रभु की असीम अनुकम्पा से श्री गुरुपूर्णिमा का परम पावन दिवस बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। श्री प्रभु एवं श्री गुरुदेव का पूजन आनन्द से किया तथा अंत:प्रेरणा द्वारा जो सन्देश प्राप्त हुआ और जो होता आ रहा है वह यही दिव्य मंत्र-

श्री गुरु चरणं, श्री हरि शरणं

रे मन ! अहर्निश भज श्री गुरुचरणं श्री हरि शरणं

श्री प्रभु नाम लेते लेते,विजय मंत्र जपते-जपते जीवन संग्राम में विजयी वन, जन्म जन्मान्तर के माया-पास छिन्न-भिन्न कर नित्य मुक्त वन अपना तथा श्री गुरुदेव का गौरव महिमा समुन्नत करो यही संदेश। फल का पार्सल आ गया। सभी प्रेमियों को जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारकाजी

प्रिय काकू !

आशीर्वाद ! दिनांक १८-१०-५७

श्री प्रभु कृपा ही जीवमात्र के सुखशान्ति का अेक मात्र आधार है,वह कृपा इतनी विलक्षण होते हुए है भी इतनी सुलभ कि बात न पूछो किन्तु जब तक पुरायपुन्ज का उदय नहीं होता तब तक उसकी प्राप्ति अति दुर्लभ ही है । तुम्हारा तो पूर्व का और इस जन्म का भी कोई महान् सुकृत याने पुराय ही है जिससे इतनी छोटी अवस्था तथा विषम परिस्थिति में भी प्रभु की ओर प्रवृत्ति और अभिरुचि है और प्रतिदिन बढ़ ही रही है । विशेषकर इस शरीर के प्रति जो तुम्हारा इतना अनुराग है यह तो तुम्हारी उदार वृत्ति का ही फल है अन्यथा मैं तो अेक सामान्य प्राणी हूँ मेरे जैसे तो अन्तत जीव प्रभु की रचना में, सृष्टि में भरे पड़े है बस ! जीव को तो अन्य सभी का राग त्याग कर अेक प्रभु के चरणारविन्दो में ही राग करना चाहिए या अन्य किसी के प्रति अनुराग हो भी तो उसे प्रभु नाते ही समझना चाहिए। विशेष श्री प्रभु कृपा और सब श्री प्रभु कृपा से आनन्द ही है विशेष में श्री प्रभु धाम में भजन चल रहा है यह अनुपम आनन्द श्री प्रभु का जो वस्त्र भेजे वे सभी लगभग अेक-अेक इंच लम्बाई-चौड़ाई

में बड़े हैं । इसके पहले जब दो वक्त वस्त्र भेजे ये ठीक उसी माप का है इससे मालूम पड़ता है। वाघेरिया सेठ के साथ जो माप भेजा था उसका दर्जी ने उपयोग नही किया । दर्जी के पास पहले से बड़ा माप होगा उसी से बना दिया। काम चलेगा अभी दूसरा नही बनाना। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

।। श्री राम ।।

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू मात्रे तथा अन्य प्रेमीजन ! श्री द्वारकाजी

आशीर्वाद ! दिनांक २५-११-५७

तुम्हारा पत्र मिला था किन्तु समयाभाव वश पत्रोत्तर नहीं दे सका । श्री प्रभु की इच्छा होती है वह कौन जान सके– मंत्र मंदिर के विषय शुरु शुरु में जहाँ द्वारकाधीश के मंदिर में रखने का निश्चय हो गया था वहाँ डांडी हनुमानजी से आकार मंदिर में सबने हाथ उठाया था कि मंदिर में ही रखा जाए किन्तु गोधुभाई ने विरोध किया था और उसी कारण से मंदिर के बाहर लक्ष्मी ब्रह्मचारी के तरफ से जुदा स्वतंत्र मंदिर बनाने का आग्रह हुआ। वह आधा मंदिर बन कर बंद हो गया। अब गोधु के पत्र से कि मंदिर में रखा जाए हरिदास, वाघेरिया वेट व्यवस्थापक समिति के मेम्बर होने से कोशिश किया किन्तु वहाँ भी विरोध ही हुआ। अतः अब बेट में मंत्र रहे यह भी ठीक नहीं वहाँ अेक भी आदमी का भावप्रेम दीखता नहीं। या तो द्वारका में रखा जाए या जितने अपने प्रेमी हैं उन सबो को उनकी स्थिति अनुसार दस, लाख पाँच लाख करोड़ मंत्र दे दिया जाए वे अपने घर पर रखे और अेक-अेक अर्धो कलाक धून करे । विशेष श्री प्रभु कृपा। वाघेरिया सेठ के साथ भेजना । अपना तो सब ठीक है ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारकाजी

प्रिय काकु तथा मात्रे !

आशीर्वाद!

तुम्हारा कई अेक पत्र आया, अगरबत्ती वगैरह आई किन्तु पत्रोत्तर नही लिखा गया, इसका कारण मेरा प्रमाद ही है न मालूम क्यों दिन प्रतिदिन लिखने, पढ़ने, समझाने की वृत्ति शिथिल पड़ती जा रही है। बहुत लिखा गया, पढ़ा गया, सुना गया, सुनाया गया किन्तु परिणाम तो शून्य ही प्रतीत होता है कलिकाल की भयंकरता प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है न मालूम मेरे किस जन्म का अेसा कोई महान् पुण्य हैं जिससे श्री गुरुदेव की अभिय द्दष्टि एवं श्री प्रभु की करुणामयी द्दष्टि इस शरीर पर बनी हुई है जिसके फल स्वरुप कुछ प्रभुनाम लिया जा रहा है अन्यथा यह कराल कलिकाल न जाने किस समय महान् पतन के गर्त में डाल दे। इस तेरह मास के भीतर अनेकों विषम परिस्थितियाँ उपस्थिति की जा चुकी किन्तु प्रभु कृपा से, श्री हनुमन्तलालजी की दया से, श्री गुरुदेव के संरक्षण से, श्री विजयमंत्र महाराज के प्रतापसे सभी अमंगल एवं विघ्न काल बाल-बाल टलते जा रहे हैं और अपने को पूर्ण भरोसा कि श्री नाम महाराज के प्रताप से सभी विघ्न एवं अमंगल दूर हो कर अन्त में नित्य मंगलमय स्वरुप प्राप्त होगा ही, अत: श्री नाम महाराज को ही अपना जीवन आत्मा बना लेना चाहिए । मंत्र मंन्दिर का प्रयास चालू है । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू!

श्री द्वारकाजी

आशीर्वाद!

श्री करुणावरुणालय, दीनजनशरणालय श्री प्रभु की दया की महिमा का वर्णन अेक पत्र में तुमने खूब लिखा था तो इसमें कोई नई बात नही। हाँ! इतनी नवीनता अवश्य! कि हमें उसकी दया की, करुणा की महती महिमा की अब अनुभूति होने लगी है। वस्तुतः प्रभु की कृपा दृष्टि एवं कृपावृष्टि तो सर्वत्र,समस्त प्राणी उपर सदा से समान ही है किन्तु जब जीव का जन्म जन्मान्तर का पुण्यपुंज का उदय होता है तब उसे उस कृपा की अनुभूति होने लगती है कारण कि पुरापुंज का उदय याने सत्वगुण की वृध्दि काल में जीव का मिथ्या मोहांधकार तथा अभिमान का ह्रास होने लगता है और अहंकार याने विद्या,बल,वैभव,ज्ञान,पुरुषार्थ का अभिमान ज्यों-ज्यों गलित होने लगता है त्यों-त्यों जीव का अन्तःकरण,मन हृदय पवित्र होने लगता है,निर्मल बनने लगता है और ज्यों-ज्यों मनकी, हृदय की,अन्तःकरण की निर्मलता बढ़ने लगती है त्यों-त्यों श्री प्रभु की अनन्त अनुकम्पा की,अपार करुणा की, महती महिमा की प्रत्यक्ष अनुभूति होने लगती है और ज्यों-ज्यों इस अनुभति की वृध्दि होती जाती है त्यों-त्यों जीव की प्रभु के साथ अखंड मैत्री याने पुर्णश्रध्दा विश्वास याने परिपक्क निष्ठा की मात्रा बढ़ने लगती है और यही निष्ठा अेक समय जीव याने अनन्तकाल से अविद्याग्रस्त माया मोहित सच्चिदानन्द स्वरुप परमात्मा को चिदंश को शिवस्वरुप याने माया मोह से सर्वथा रहित शुध्ध सच्चिदानन्द स्वरुप बना देती है इस निष्ठा को परिपक्क बनाने के लिए सतत प्रभु नाम स्मरण करते रहना चाहिए। श्री गुरुपूर्णिमा का उत्सव बहुत ही विलक्षण हुआ गत वर्ष से इस वर्ष का आनन्द,शोभा कुछ अद्‌भुत ही था। अगरबत्ती व आमकी पेटी सब यथा समय आ गया। स्वास्थ्य अच्छा है। अखंड आनन्दपूर्वक चल रहा है सभी प्रेमियों तथा बालगोपाल को जय श्री राम। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू !

जामनगर

शुभाशिर्वाद ! दिनांक २२-२-५७

तुम्हारा पत्र मिला समाचार मालूम हुआ। जामनगर में लगभग तीन मास का अखंड होने वाला है। शायद श्री द्वारकाधीश प्रभु की कृपा हुई तो फूल डोल पर(होली पर) चार पाँच दिवस के लिए जाऊँगा। यहाँ अखंड चालू रहेगा। यहाँ की पूर्णाहुति के बाद श्री द्वाराकाधाम में बेट के अनुष्ठान जैसा १३ मास का अखंड करने की जनता तथा जनार्दन दोनों की प्रेरणा है। वाघेरिया सेठ हरिदास द्वारका वाला भी हर तरह तैयार हैं। विशेष श्री प्रभु कृपा। तुम लोग तो अब भूल से ही गये हो । मात्रे का पत्र छ मास पर आया है । बिहार वाला गिरधारी ने १५०) भाड़ा भेजा था किन्तु अपने से अखंड चलता हो तो अपने से बाहर निकलाए कैसे ! जब हम कान्दिवल्ली आये थे तब जाड़िया हरकिशन ने अगरबत्ती का डब्बा दिया था अगर वह मिले तो वह या दूसरा कोई अच्छी अगरबत्ती भेजना । विशेष श्री प्रभु कृपा। भजन करना नाम जैसे बने वैसे चलते फिरते जब अवकाश होवे तो लेते रहना विशेष नाम स्मरण की कोशिश करना जीवन का सच्चा वैभव यही है । कान्दीवल्ली के सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू !

श्री द्वारकाधाम

शुभाशिर्वाद ! दिनांक : ७-९-५७

तुम्हारा Fruits का बाक्स श्री गुरुदेव की तिथि के बाद स्टेशन से आया। यद्यपि पार्सल अेक दिन पहले पहुँच गया था, उस समय अेसा लगा

कि इस वक्त अेसा क्यों हुआ किन्तु प्रभु तथा गुरुदेव की करुणा का तो कोई अन्त ही नहीं,कुछ विलक्षणता होगी ही उनके विधान में और हुआ भी अेसा दूसरे दो पहर को "वामन द्वादशी थी" वामन भगवान का जन्मोत्सव मनाया जाता था और साथ ही उसी ब्रह्मपुरी में हजारों ब्राह्मणों का भोजन परोसा जा रहा था अेक तरफ रामनाम मोदक और दूसरी तरफ ब्राह्मणों को बुदिया का मोदक और तीसरी ओर भगवान वामनजी का बलि के उपर अनहद कृपावृष्टि के लिए आर्विभाव होना, अेसे शुभ अवसर पर तुम्हारा फल भगवान को भोग लगा और वहाँ एकत्रित अेक-अेक अबालवृद्ध ब्राह्मणों के मुख में फल का प्रसाद गया। यह तुम्हारा अहोभाग्य और भगवान गुरुदेव की परम कृपा तथा तुम्हारा प्रेमभाव। साथ आठ वर्षो से ब्राह्मण भोजन हरिजन प्रवेश के कारण बंद हो गया था और अब अखंड यज्ञ के प्रताप से चालू हो गया है। अेक महीने में पाँच छ बार जिमनवार हो गया। अब कोई विशेष दिक्कत भी नही। श्री द्वारकाधीश को झन्डा चढ़ा देना और ब्राह्मणों को जिवा देना। वल्लभ १५०) सोलींग, गोधूभाई १००) रुपया जोशी का ५१ गुरुदेव की तिथि निमित्त) आया था सबके सब धुन में लगा दिया गया। उनके साथ जरुरत होगी तो माप भेजूँगा। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारकाजी

प्रिय काकू!

शुभाशिर्वाद ! दिनांक : २२-१२-५६

तुम्हारा पत्र मिला, समाचार अवगत हुआ। श्री प्रभु कृपा से अभी अखंड चालू है और लगभग संक्रान्ति तक रहेगा। आगे श्री प्रभु इच्छा, जामनगर जाने

के लिए लिखा सो मुझे कोई इन्कार नहीं है किन्तु अपनी ओर से खाना-पीना,सोना आराम हराम समझकर दूसरों की प्रसन्नता के लिए इतना करने पर भी १०० में पाँच भी ओसे देखने में आते हैं कि मौके पर वे सच्चे निकले- जब तक अपना स्वार्थ,अपनी मान, बड़ाई तब तक प्रेम-भक्ति, बाकी सभी पोल ही पोल। इससे मेरा चित्त इस लोक संग्रहवाली प्रवृत्ति से भी हट रही है। मुझे क्या किससे लेना है और क्या करना है। मेरा शरीर स्वास्थ्य बिलकुल अच्छा है लिखकर जो लिटा लगाया था वह शरीर के बारे में नहीं था बल्कि शाल के विषय में लिखा था कि शाल अच्छी है किन्तु शरीर में शायद नूतन होने से खुँचता है ओसा लिखा था फिर मुझे हुआ कि तुम्हे चिन्ता होगी। इसलिए काट दिया और सब आनन्द मंगल है गोपाल उसकी माता रमीला सबको यथायोग्य। भजन ही मानव जीवन का लक्ष्य है शास्वत सुख शान्ति का भन्डार है। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

जामनगर

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है, बहुत इन्तजार के बाद कल्ह तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । इन्तजार ही इन्तजार में मैंने भी पत्र नहीं लिखा। जामनगर आने के बाद स्वास्थ्य बिलकुल अच्छा है। गत बुधवार को ब्लडप्रेसर का माप उपर का १४० और नीचे का ९० था । उसके बाद शुक्ल साहेब ने रतिभाई डाक्टर की चालू दवा बंद करा दी और उनकी ओेक क्वाथ और गोली सुबह शाम चालू है। नमक खाने की भी छूट दी है किन्तु नमक तो नाम ही मात्र लेता हूँ । बाबू भाई रंगरेज आज बम्बई जा रहे हैं उनसे भी सब समाचार मिल

जाएगा । भजन जैसा होना चाहिए वैसा नहीं हो पाता है कारण अभी कमजोरी है वह भी धीरे-धीरे दूर हो रहा है २४० ब्लड प्रेशर से घबड़ा गये थे किन्तु विनोद जब आया तो कहा कि ज्येष्ठ मास में जब महुवा था । उस समय २६० था और उसी में अभी तक फिरता ही रहा हूँ । रक्षक, पालक श्री प्रभु ही हैं दवा डाक्टर अेक लिखी है । विनोद, मात्रे, प्रेमजी भाई वगैरह को मेरा जय श्री राम । बाबूभाई जानी, वैद्यराज, हरिकिशन सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू, मात्रे,वल्लभदास ! जामनगर

शुभाशिर्वाद ! दिनांक : १-१०-५२

पत्र मिला, गोवर्धनदास से भी तुम लोगों का समाचार मिला, लेकिन मै तो बराबर से कहता ही आया और अभी कहता हूँ कि प्रेम कायम रखने के लिये इस कलिकाल में अपने प्रेमी से सुदूर रहना ही अति श्रेयस्कर है । नजदीक होने पर संसारिक जीव की दृष्टि में भेद बुद्धि उत्पन्न हो जाती है और संत गुरु या महापुरुष में भेद,संशय या अश्रद्धा उत्पन्न हुआ कि उसका सर्वनाश हुआ । अतः दूर रहो और जो करना है वही करो तभी सच्ची सुख शान्ति प्राप्त होगी। शरीर नाशवान है और उसका संयोग भी मिथ्या है इसलिये शरीर से एक रहने की चेष्ठा न करके आत्मा से एक होने की चेष्ठा करो जो कि सदा से सदैव एक होते हुए भी विषयासक्ति तथा देहाभिमान के कारण दूर और जुदा प्रतीत होता है । सभी प्रेमियों माताओं,बहनों,भाईयोंको मेरा जय श्री राम। विभु,चिन्द्रा,राधा सबको जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जय जय श्री श्री रघुवीर समर्थ की जय

प्रिय काकू !

जामनगर

आशीर्वाद ! दिनांक : ९-१२-५१

श्री प्रभु कृपा ही आधार है, उनका नाम ही संजीवनी भूरि है तथा उनकी करुणा ही जीवन की एक मात्र सहायिका है।जब तक जीव में अपना पुरुषार्थ का बल शेष है तब तक करुणा की किरण भी अत्यन्त दूर है, जब दैन्य एवं निराशा प्रबल है तभी करुणा सजीव एवं सबल है। अतः श्री प्रभु नाम में अटूट श्रद्धा एवं उनकी करुणा में अटल विश्वास ही लोक परलोक दोनों में एक मात्र सहायक तथा उपकारक हैं। संसार के सभी नाते गन्दे,झूँठे तथा मोह की दुर्गन्ध से दूषित हैं। विशेष श्री प्रभु कृपा। ७ दिवस के अखंड निमित्त पोरबंदर कल्ह जानेवाला हूँ। सबको मेरा जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

"श्री रामः शरणंमम"

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू !

शुभाशिर्वाद!

श्री प्रभु करुणामय हैं। अतः उनकी सभी क्रियाओं में करुणा ही छिपी है– हम अज्ञानी,अल्पज्ञ,मूढ़ जीव समझ नहीं पाते, साथ ही वे मंगलमय आनन्दरुप हैं अतः उनका प्रत्येक विधान मंगल एवं आनन्द का ही परिचायक है लेकिन हम जगत के मिथ्या भोगों के उपयोग में ही स्वजीव उसे जो हमारे मन के प्रतिकूल क्रिया के विपरीत प्रतीत होने पर भी जो सदा आत्मा के अनुकूल ही होता है।

प्रभु के मंगल विधान को अमंगल रुप मान लेते हैं और यही हमारी निजी कल्पित मान्यता ही सब दु:खों का कारण बनती है जन्म,मरण के अनादि चक्र को सदा चालू रखती है । अत: अपना सर्वस्व श्री प्रभु चरणों में अर्पण कर दृढ़ विश्वास पूर्वक उनका बन जाना चाहिए और यह सम्भव हो जाने पर अपनी कोई इच्छा शेष ही नहीं रहती हैं। सभी प्रभु इच्छा में विलीन हो जाती है। अन्य सभी ठीक है और रहेगा भी क्योकि प्रभु मंगलमय है "पहले राम पीछे काम" सभी कर्मो के पहले प्रभु भावना। सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । इस बार कभी कल्पना नहीं किसी की हुई थी अेसा पोरबंदर का वार्षिकोत्सव तथा जामनगर का श्री गुरुपुर्णिमा उत्सव सम्पन्न हुआ और दोनों में तुम्हारी शारीरिक गेरहाजरी रही । कुछ दुख जरुर हुआ कारण अेसा अवसर जीवन में आता ही नहीं है । जब पुर्व जन्म के पुण्यपुंज का उदय होता है तभी अेसा सम्भव है । कोई चिन्ता नहीं तुम्हारी शरीर से हाजिरी नहीं थी तो मानसिक तो थी ही और हम लोगों को भी तुम्हारा स्मरण खूब-खूब होता था सभी पूछते थे, काकू भाई इसबार एक भी उत्सव में नहीं आये सबको प्रेम है तभी तो सभी याद करते हैं । श्री द्वारकासंकीर्तन मंदिर का नकशा वगैरह लिया जा रहा है विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

पचड़ा

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

शुभाशीर्वाद ! दिनांक : २७-३-६२

तुम्हारा पत्र मिला, समाचार से अवगत हुआ। श्री प्रभु की अघटित घटना घटनीय, परीयसी योग माया की कुछ अेसी ही विलक्षण क्रिया कलाप है कि श्री प्रभु की सर्वव्यापकता तथा समता सर्वत्र प्रकाश विकास होते हुए भी अज्ञानी अल्पज्ञ, जड़, जीव को सर्वत्र विलक्षणता के वजाय विषमता ही दृष्टि गोचर होती है और इसी विषमता के वशीभूत हो जीव सदैव जन्म-मरण, सुख, दुख, हानि-लाभ, जय-पराजय, संयोग-वियोग की विषम ज्वाल माला से विदग्ध हो रहा है। और इसके परिणाम स्वरुप शोक-मोह अनादि संसार चक्र चालू है और चलता रहेगा ही जब तक। जब तक हम उस करुणावरुणालय, दीनजनशरणालय, घटघट वासी, परम अविनाशी, परमानन्द, आनन्दकंद की अनन्य शरण ग्रहण नहीं कर लेते। अतः सर्वोतोभावेन जब तक उस सर्वात्मा की अनन्य शरण ग्रहण नही किया तभी तक दूरस्थ निकटस्थ एवं संयोग वियोग भावना भावित हो रही हैं अतः अपना पुराण महामंत्र संयोग में वियोग तथा वियोग में संयोग अनुभूति ही नित्यमिलन का पावन पथ प्रशस्त करती है। यहाँ का प्रोग्राम श्री प्रभु के हाथ में है। कामेश्वर सपरिवार कुशल पुर्वक है पत्र उसको दे दिया है। अखंड चालू है विशेष श्री प्रभु इच्छा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल! श्री रामेश्वरम्

शुभाशीर्वाद !

श्री प्रभु की कृपा की विलक्षणता की क्या बात करुं? सोचा जाता है कुछ और,और होता है कुछ और ही । कहाँ श्री द्वारका पहुँचने की जल्दी

थी और कहाँ पहुँच गया, रामेश्वरम् और पुरी। अब यहाँ से श्रीरंगजी दर्शन करके विचार है कि बंगलोर मैसूर होते हुए पंढ़रपुर और पूना होके बम्बई आ जाऊँ। पूना पहुँचने पर Teligram या Teliphone करूँगा कारण कि तुम्हारे मकान का भी पूरा पता याद नहीं है। वैकुन्ठ बाबू,राजदेव,बिजली सिंह,रघुनाथ सिंह, सीताराम पाँच आदमी और साथ में हैं। ये लोग मुझे मुज्जफरपुर स्टेशन पर छोड़ने आये थे अेकाक साथ चल पड़े। यात्रा का अनुभव न होने से और जगन्नाथपुरी से ही लौट जाने का विचार होने से सामान साथ में उन लोगों ने बहुत ले लिया है जिससे जगह-जगह सामान उतारने चढ़ाने में ही काफी खर्च पड़ता है और असुविधा सी प्रतीत होती है किन्तु यात्रा सुख-पूर्वक हो रही है प्रभुनाम भजन का नाम निशान नहीं। सभी प्रेमियों को यथायोग्य। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू ,बाल गोपाल तथा समस्त प्रेमीजन!

आशीर्वाद!

श्री प्रभु कृपा से आनन्द है । कानपुर से तुम्हारा पत्र अभी मिला हैं। मैं १३-३-७० को महुवा से निकल कर १४-३-७० को यहाँ आया। श्री ठाकुरजी का सिंहासन परिवर्तन उसी दिन अेक बजे दिन में कर दिया गया। तबियत और शरीर भी ठीक है किन्तु अंग्रेजी गोलियों के भरमार के कारण अभी कमजोरी बहुत है। शरीर के सभी अवयव एवं ज्ञानतन्तु बिल्कुल ढ़ीले पड़ गये थे। श्री प्रभु कृपा एवं नाम निष्ठभक्त वैध श्री विष्णु भाई की दवा से अल्प काल में काफी सुधार हुआ हैं। बीच-बीच में वहाँ के डाक्टरों ने मेरी इच्छा न होने पर भी माप लिया था तो भी बिल्कुल नार्मल ही था। उन लोगो का तो कहना कि इतना तो Nature में ही है। कुछ भी हो वैद्यजी की दवा से काफी लाभ हुआ। दवा अभी भी चालू

हैं। खाने में रोटी,दाल,साग खाखरा वगैरह नमक भी लेता हूँ वैद्यजी ने कहा कि घी,दूध,छास,दही जो अनुकूल आवे लीजिये। आहार संयम पूर्वक ही चल रहा है अभी महुवा अेक मास और अधिक रहने की आवश्यकता थी किन्तु रामजी के उतावल के कारण आना पड़ा। श्री हेनलेकर साहब,मेहता साहब,उन्डकर साहेब को भी मेरा प्रेमपूर्वक जय श्री राम सह आभार। सभी प्रेमियों को जय श्री राम। श्री मोहनलाल सेठ तथा जय श्री सेठ को मेरा रामराम। प्रविण परीक्षा की तैयारी कर रहा है। नये मंदिर का नक्शा भी उसी ने तैयार दिया है । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू !

आशीर्वाद !

पत्र मिला समाचार मालूम हुआ। ओखा पोर्ट में छ मास अखंड की पूर्णाहुति हो गई किन्तु लोगों के प्रेम की पूर्णाहुति नहीं हुई बल्कि उसकी उतरोत्तर अभिवृद्धि हो रही है और अेसे लोगों में हो रही है कि इन लोगो के सहयोग से अेक महान् कर्म हो सकता है। यहाँ के धनी मानी एवं बड़े-बड़े औफिसरों में भी काफी सदभावना तथा नाम निष्ठा द्दष्टिगोचर होती है। इसी के फल स्वरुप अभी भी यत्र तत्र श्री अखंड यज्ञ का समारोह एवं भिक्षा का दुराग्रह पर्याप्त बना हुआ है। जामनगर का प्रोग्राम अभी बंद है अक्षय तृतीया को अखंड है और श्री द्वारकाधीस का महोत्सव है। श्रीजानकीनवमी के शुभ अवसर पर **बेट की कुटिया** का उद्‌घाटन करने का विचार है श्री बद्रीनाथजी का विचार तो विशेष नहीं है किन्तु गंगोत्री, यमुनोत्री की यात्रा रह गई है और साथ भी अच्छा है और बहुत समय अेक स्थान पर हो जाने से थोड़े समय के लिए बाहर जाना भी ठीक लगता है । अतः श्री

बद्रीनाथजी की कृपा हुई तो जा आने का विचार है श्री जानकी नवमी के बाद पूर्ण निश्चय भेजूँगा । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल ! पोरबंदर

शुभाशिर्वाद ! दिनांद : १-६-५९

आज पत्र लिखने के बाद तुरंत ही अगरबत्ती का पार्सल आ गया इसलिए यह दूसरा पत्र लिखना पड़ा कि कहीं फिर अगरबत्ती न भेज दो। यह अगरबत्ती बहुत महंगी मालूम पड़ती है। आज अगरबत्ती के पार्सल के साथ ही हरिदास वाघेरिया का पत्र भी आया है कि अेक दिवस के लिए द्वारका आओ—वहाँ पर महाजन वाड़ी में अक्षय तृतीया से अखंड भी चल रहा है और वही नीचे श्रीमद् भादवत १०८ सप्राह परायण भी हो रहा है उसकी पूर्णाहुति अमावश्या को है, तो शायद अेक दिवस के लिए जाना पड़ेगा। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल!

आशीर्वाद!

तुम्हारा पत्र मिला समाचार मालूम हुआ। तुम्हारी माताजी तो यहाँ बहुत शान्तिपूर्वक रह रही हैं, मेरे साथ किसी प्रकार भी अविवेक, हठ, दुराग्रह का बर्तन नहीं करती- सुबह,शाम,दोपहर लगभग अधिकांश समय धुन में ही व्यतीत करती हैं। सुबह शाम मिलने पर पूछता हूँ तो उत्तर भी बड़ी शान्ति तथा विवेक के साथ देती हैं और कहती हैं कि मुझे बड़ा आनन्द है अभी तो खास विकृति जैसी कुछ

नही लगती है आगे की तो श्री प्रभु जानें। अगरबत्ती पहले वाली कुछ ठीक ही थी, उसमें कुछ खास सुवास नही था और अभीवाली तो बिल्कुल ऐसन्स दी हुई जो कुछ काम की नही हैं। पंढ़रपुर से ऐक अगरबत्ती आती है उसका नमूना वल्लभ के साथ भेजूँगा अगर ठीक लगे तो मंगाना। अभी अगरबत्ती बहुत है हाल कोई जरुरत नही है। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल!

आशीर्वाद !

तुम्हारा भाव भक्ति से ओतप्रोत पत्र मिला । तुमने हृदयगत भावों को प्रगट करने का प्रयास किया यह अच्छी बात है किन्तु मैं हृदयगत भावों को बहुत पहले से पूर्णरुपेण जानता हूँ मनुष्य के प्रत्यक्ष व्यवहार आचरण ही उसके अंतरंग भावों का प्रतिबिम्ब है जिस आत्मनिवेदन पूर्वक श्री प्रभु इच्छा समपर्णपूर्वक तुम अपना जीवन यात्रा चला रहे हो, यह तुम्हारे परम पुण्य एवं श्री प्रभु का असीम अनुकम्पा का ही परिणाम है । वस्तुत: जीव में कोई शक्ति ही नहीं कि किसी भी प्रकार श्री प्रभु को अपना सके, यह तो तभी सम्भव होता है जब प्रभु स्वयं कृपा करके अपनाना चाहते हैं, अपना बना लेना चाहते हैं अपने लिए तो इतना ही बस है कि सभी परिस्थितियों में उनकी अनुकम्पा की ही अनुभूति करें और सदा सर्वदा उनका ही बने रहे। तुम्हारी माँ मुझे कुछ भी हैरान नहीं करती- मेरे पास तो कभी-कभी आती भी है तो प्रणाम करके चल देती। हरकत जैसा कुछ नही है । विशेष श्री प्रभु कृपा २५।४।५९ को पूर्णाहुति है ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल ! पोरबंदर

आशीर्वाद ! दिनांक : १-६-५७

बहुत दिनों से मैंने पत्रोत्तर नहीं दिया, इसका कारण यही था कि अपना कोई प्रोग्राम निश्चित नहीं था । बेट की कुटिया बहुत सुन्दर बन गई उसका उद्घाटन भी बहुत सुन्दर ढंग से हुआ उस स्थान की महिमा तो इसी से समझ लो कि जिस दिन कुटिया का उद्घाटन हुआ ठीक उसके दूसरे दिन से ही बम्बई कालेज के संस्कृत प्रोफेसर जो जामपुरा हवेली, द्वारका वाले के सम्बन्धी है, बड़ी ख़ुशी के साथ गुफा में सप्ताह भागवत परायण प्रारंम्भ कर दिया । कुटिया का और समाचार वाघेरिया सेठ ने भेजा ही होगा। जामनगर होते हुए यहाँ आया हूँ अेक मास का अखंड है किन्तु यहाँ कोई खास व्यवस्था नही है फिर भी चल रहा है। आज सच्चाई और त्याग की कीमत श्री प्रभु के तथा थोड़े सच्चे लोगो के अतिरिक्त किसी को है नहीं फिर भी श्री प्रभु कृपा से चल रहा है। अगरबत्ती का पार्सल आया नहीं पंढरपूर की अगरबत्ती न हो तो हरकिशन ने जो नमूना भेजा था वह भी अच्छा था-उसका नाम था-राज-राणी उसकी १ और २ नम्बर की सुन्दर थी। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

ओखापोर्ट

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

दिनांक : २७-१-५९

आशीर्वाद !

इस भयंकर कराल कलिकाल में श्री प्रभुनाम ही जीवन के सच्चे सुख शान्ति प्राप्ति का अमोघ साधन कारण मनुष्य की आयु अल्प किन्तु वासना तृष्णा विशाल

भला! इन वासनाओं की पुर्ति कब ? और किस प्रकार सम्भव है ? फिर मनुष्य अपनी अज्ञानता, जड़ता, अल्पज्ञता के कारण उस सत्य की ओर नित्य की ओर,परमानन्द की ओर ध्यान न देकर अहनिश इसी अनित्य दुखरुप, विकारी, विनाशी, देह, गेह, तन, धन, मान बड़ाई मे निर्मग्न हो, मनुष्य जीवन जैसा अमूल्य जीवन, अमूल्य लाभ गवाँ रहा है अपनी आयु व्यर्थ खो रहा है। इस क्षय होती हुई आयु को ही अपना जीवन मान रहा है। **"गया समय फिर हाथ आता नही अतःकर लिया सो काम.भज लिया सो राम नही तो सब कुछ रहेगा ठामो ही ठाम।"** तुम्हारे माता पिता आ गये हैं, अभी ओखा में ही तुम्हारी माता रहना चाहती है। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कब क्या कराना चाहते हैं, और वस्तुतः किस रुप में, किस वस्तु का महत्व छिपा है यह भानपूर्वक समझ लेना **मानवी बुद्धि के परे की बात** है। आज हम अपनी बुद्धि से,विचार से जिस विषय को ठीक समझतें हैं, लाभकारी समझते है और उसी के लिये पूरा प्रयत्न भी करते हैं किन्तु दूसरे ही क्षण हमें भास होने लगता है कि हम तो बहुत बड़ी भूल कर रहे थे जो हम करना चाहते थे वह तो हमारे लिए पूर्ण अनिष्टकारी ही था। कहने का आशय हम अपनी अल्पबुद्धि से, मलिन मन से, मोह ममता वश, व्याकुल बन, अधीर होकर इष्ट समझते वही हमारे लिए अनिष्ट सिद्ध होता है और अनिष्ट समझते थे वही हमारे लिए इष्ट सिद्ध होने लगता है। यही जगत के मानव प्राणी की स्थिति है इसी कारण सभी सद्शास्त्रों तथा सन्तों का अेक ही मत है कि ईश्वरेच्छा बलेयसी "अतः अपने को श्री प्रभु इच्छा पर ही धैर्यपूर्वक सर्व समर्पण कर देना चाहिए। इसी आधार बेट तथा द्वारका सभी

लीलायें चल रही हैं । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

।। श्री राम ।।

"श्री राम जय राम जय जय राम"

पोरबंदर

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

आशीर्वाद ! दिनांक १२-७-६७

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। तुम्हारा पत्र मिला, समाचार मालूम हुआ । संसारकी तूफान इसी तरह चला ही करती है इसके लिये चिन्ता करना व्यर्थ ही है । अगर चिन्ता करनी ही हो तो चारु चिन्तामणि श्री प्रभु नाम की ही चिन्ता करो, जिससे अनायास ही सभी चिन्ताओं का उन्मूलन हो जाता है । संसार का घटमाल तो सदा से इसी तरह चलता आया है और इसी तरह चलता ही रहेगा । इस संसार शरीर में आकर जो मूलाधार का आश्रय, सहारा ले लेता है, वही बच पाता है अन्यथा **राजा दुखी, प्रजा दुखी, योगी के दुख दूना ।** कहे **"कबीर हम घर घर देखा अेको घर न सूना"** रामजी,हरिदास वाघेरिया तथा मोहन भाई के कहने पर जब पत्र लिखा था तभी मैने उसे मना किया था अेसा मत लिखो, मोहन भाई को भी कहा था कि इस प्रकार किसी को पायबंदी में डालना ठीक नहीं है । उसकी स्थिति अनुसार जो श्रद्धा निष्ठा होगी वैसा स्वयं करेगा ही फिर भी किसी ने नहीं माना । खैर ! रामजीने तो थोड़े समय के लिये उधार जैसा माँगा था, उसकी भी अब आवश्यकता नहीं है तो उसके लिये कोई चिन्ता या असंमजस नही रखना । जैसी तुम्हारी इच्छा स्थिति वैसा करना। श्री गुरुपुर्णिमा का प्रोग्राम जामनगर में है और गुरु तिथि का उत्सव वेरावल में होनेवाला है किन्तु अभी तक पक्का निश्चय नही हो पाया है। विशेष श्री प्रभु कृपा। सभी प्रेमियों को जय श्री राम ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

बालुघाट आश्रम

शुभाशीर्वाद !

मुजफ्फरपुर

दिनांक : १९-१०-६३

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्दमंगल है। तुम्हारा अेक पत्र और आज नूतन वर्ष का अेक तार मिला। समाचार मालूम हुआ। जीवन में तो इस प्रकार बराबर उत्थान, पतन, हर्ष, विषाद, हानिलाभ,जय पराजय का अवसर आया ही करता है इसी में जो धीर, विवेकी पुरुष हैं वह उस परम सत्य का आश्रय लेकर सदैव प्रसन्न रहता है हर स्थिति को अपने मंगलमय श्री प्रभु का मंगलमय विधान ही समझता है। अज्ञानी, अधीर, अविवेकी प्राणी इस संसार तथा संसार के पदार्थो को जो तत्वत: क्षण भंगुर एवं स्थायी है किन्तु भगवत् के नाते भी यद्यपि भगवान् का,अपने रचयिता का भान कराने के लिए ही वर्तमान है और सभी विवेकी प्राणियों को अपने अस्थाई स्थिति द्वारा यह ज्ञान कराना चाहते हैं मेरी क्षणभंगुर तथा आपात रमणीयता को समझकर नित्य, शुद्ध, बुद्ध, अखंड, अेकरस सर्वाधार, सर्वेश्वर को ही अपना समझो, उन्ही के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ो क्योकि तू उन्ही के अंस हो, हमारे स्वामी लाडिले लाल हो बस ! इसी भक्तभाव ज्ञान, निष्ठा को परिपक्व करने का प्रयास करो और अनुभव करो श्री प्रभु मेरे हैं और श्री प्रभु का इस मायामय संसार से मेरा मौलिक ही सम्बन्ध है नूतन वर्ष का ही संदेशा। प्रभु मेरे मै प्रभु का।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

खैरवादर्प

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

आशीर्वाद ! दिनांक : १४-३-६३

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है। मुजफ्फरपुर कुटिया के अखंड के बाद अेक पत्र लिखा था,मिला होगा। अभी प्रोग्राम तो अखंड का बहुत है किन्तु अब मन विशेष इधर लगता नही है। जैसी श्री प्रभु इच्छा। श्री द्वारका,पोरबंदर तथा ओखा से पाँच प्रेमी आये हुए हैं उनमें से द्वारका तथा पोरबंदर वाले कल्ह जा रहे हैं । **पोरबंदर के पास वछौड़ा गाम का रहने वाला** मालदेवभाई जा रहा है वह **बिलकुल अनपढ़** और वहाँ के लिए अनजान आदमी है । बड़ा ही प्रेमी तथा नाम निष्ठ है उसका कितना हार्दिक प्रेम होगा जो अनपढ़, अनजान होकर भी सौराष्ट्र से अकेले बिहार चला आया । उसकी इच्छा बम्बई देखने की है तो दो-तीन दिन अपने घर पर ही ठहरा देना और किसी आदमी को भेजकर मुख्य दर्शनीय स्थान दिखलवा देना और जब जाना चाहे तो स्टेशन सौराष्ट्र मेल में पहुँचवा देना। १६।३।६३ को मुजफ्फरपुर से निकल कर १८।३।६३ को काशी एक्सप्रेस से बम्बई पहुँचेगा । छगनभाई,मालदेव के घर पर या दूकान पर पहुँचा देना विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

रतनपुर

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल ! दिनांक : ५-१-६२

शुभाशीर्वाद !

बहुत दिनों से तुम लोगों का कोई समाचार नही है । आशा है श्री प्रभु कृपा से श्री प्रभु परायणतापूर्वक जीवन यापन करते होगे। मानव जीवन का अेक ही सार है तत्व है-श्री प्रभु परायणता तदनुसार व्यवहार में सरलता तथा निराभिमानता।

इन व्यवहारिक सद्गुणों के लिए तुम्हे प्रेरित करने के लिए मुझें आवश्यकता प्रतीत नही होती किन्तु श्री प्रभुपरायणता के लिए यदा कदा श्री प्रभु प्रेरणानुसार प्रेरित करना पड़ता हैं जो मेरा कर्तव्य है, धर्म है । इसका पालन करना अमल में लाना तुम्हारे धर्म, पर, कर्तव्य पर अवलम्बित है। अभी तो रतनपुरग्राम में अेक मास का अखंड चल रहा है और यही मेरा निवास भी हो रहा हैं। यहाँ के कतिपय भावुक भक्तों की भक्ति के फल स्वरुप समस्त ग्राम पावन हो रहा है। तथा अपनी प्रभु नाम निष्ठा तथा प्रभु नामोच्चारण द्वारा समस्त विश्व को पावन बनाने का श्रेय प्राप्त कर रहा है तीन सप्ताह पूरा हो चुका है चौथा चल रहा है। पोरबंदर, द्वारका में भी अखंड चालू है । सभी प्रेमियों को जय श्री राम । भजन की ओर ध्यान बढ़ाने का जरुर प्रयास करो । समय का तकाजा है। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल ! पचड़ागाम

आशीर्वाद ! दिनांक : २४।४।६०

तुम्हारा पत्र मिला समाचार मालूम हुआ । न मालूम तुम लोगों की हौंस्पीटल हाजिरी क्यो चालू है? अभी तो यहाँ सर्वत्र अखंड प्रवाह चालू है सीर्फ दो गामों से ही अभी फुरसत नहीं हुई है अभी मुजफ्फरपुर भी पहुँच नही पाया हूँ । देखे श्री प्रभु कब कृपा करते हैं आम की पेटी आ गई थी। कामेश्वर किसी के बारात में चला गया था इस लिए पत्रोत्तर नही दे सका और सब समाचार अच्छा है । विशेष श्री प्रभु कृपा। सभी प्रेमियों तथा अपने पिताजी को मेरा जय श्री राम कहना ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल ! वैकुण्ठपुरी मठ पो. कमलौली

आशीर्वाद ! जि. मुजफ्फरपुर

श्री प्रभु कृपा से मैं सानन्द पहुँच गया। निश्चित समय पर तालाब का काम प्रारम्भ हो गया। शुरु में तो असम्भव सा प्रतीत होता था किन्तु श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द ही होता जा रहा है हफ्ता दो हफ्ता में काम पूरा हो जाएगा ऐसा प्रतीत होता है। इस काम को तो श्रीहनुमन्त- लालजी ने पुष्प की तरह उठा लिया है। तालाब की खुदाई भी हो रही है और साथ ही साथ अखंड भी चल रहा है। श्री वैकुण्ठ बाबू ही महाभारत के निमित्त है और श्री प्रभु ने उन्हे ही विग्रह के नाम प्रचार तथा श्री भागीरथ कर्म के लिये भी निमित्त बनाया है। गाँव-गाँव से हजारो की तायदाद में धनी,गरीब नर-नारी अबालवृद्ध आते हैं, और तालाब की खुदाई करते है, और कृत-कृत्य मानते हैं। सरकारी अधिकारीयो का काफी सहयोग है। कुछ धनी मानी लोग जो स्वयं परिश्रम नही कर सकते वे मजदूरो की रोजाना मजदूरी देते है, और उनके द्वारा काम करवाते है। श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द ही आनन्द हो जाएगा नही तो हम लोग तो बिलकुल निराश ही हो गये थे। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

सीतामढ़ी

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल ! दिनांक : ११-१०-६०

शुभाशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा ही जीव मात्र के कल्याण का अेक मात्र साधन है। किन्तु उसकृपा की अनुभूति के लिये मन, वचन की सरलता, हृदय की निर्मलता एवं

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

भाव की विशुद्धता की नितान्त अवशयकता है । इस कराल कलि काल में सीर्फ श्री प्रभु का नाम ही अेसा समर्थ एवं विलक्षण औषधि है जिसके निरन्तर सेवन करते रहने से जीव सर्वप्रकार के रोगो से विमुक्त हो सकता है। आधि, व्याधि, उपाधि से छूटकारा पा सकता है । इस दिव्य, चिन्मय, विलक्षण नाम महाराज की शरण तो तुम लोग ले ही चुके हो । आवश्यकता है सीर्फ दढ़ता की, परिपक्वता की । बहुत दिनो से तुम्हारा कोई पत्र नहीं है । श्री भगवन्नाम का प्रचार खूब हो रहा है । हरिदास द्वारकाजी से आया था । यहाँ के लोगों के अति आग्रह के कारण December तक रूकना पड़ रहा है । अगरबत्ती मिली श्री जानकीमाताजी की सेवा में जनकपुर में लगाई गई । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल! श्री द्वारकाधाम, महाजन वाड़ी

आशीर्वाद ! दिनांक १४।७।६५

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । वहाँ से निकलकर सुखपूर्वक पोरबंदर पहुँच गया । अेरोड्रम पर सैकड़ो की तायदाद प्रेमियों की भीड़ लगी थी और सारा वायु मंडल श्री विजय मंत्र की तुमुल ध्वनि से गूंज रही थी प्लेन के उतरते तो मानो प्रेम पयोधि में तरंगो की बाढ़ आ गई । सच्चा स्नेह से विहबल जनता किसी तरह अपना स्नेह व्यक्त करे इसके लिये कोई चरणस्पर्श करने लगा तो कोई गले से मिलने लगा, जिसे नजदीक पहुँचने का अवकाश न मिल रहा था वह अपने नेत्रो में आँसू भरे अेकटक देखते-देखते ही अपनी प्रेम पिपासा शान्त कर रहे थे । अेक दिवस निवास कर जामनगर गया। वहाँ का प्रेम तो पहले से ही विलक्षण है । इस बार यकायक पहुँचने से नाम प्रेमियों में अेसा संजीवन आ गया मानो मृतक शरीर फिरसे प्राणशक्ति संचरित हो उठी। वहाँ का आनन्द ले

देकर श्री प्रभु द्वारकाधीश की चरणारविन्द के दर्शनार्थ पहुँचा । इसबार तो यहाँ भी लोगो में कल्पना अतीत उत्साह उमंड देखा। श्री द्वारकापुरी का रेल्वे स्टेशन श्री भगवन्नाम से गूंज रहा था । श्री गुरुपूर्णिमा का उत्सव भी विलक्षण ही हुआ । गत वर्ष जामनगर का जो दृश्य था, वही श्री द्वारकापुरी की ब्रह्मपुरी का था । १० बजे से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ और सवा छ बजे पूर्ण हुआ सिर्फ बम्बई की कमी दिख रही थी। पाँव का सूजन कम हो रहा है पोरबंदर के इलाज से अभी बिल्कुल ठीक नही है हो जाएगा। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल ! महुवा C/o. विनोदभाई

आशीर्वाद ! प्राणजीवनभाई महेता

Esso Agent

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ। बम्बई आने का विचार तो है किन्तु समयाभाव के कारण विचार होता है कि क्या करुँ ? रामजी पोरबंदर में वार्षिकोत्सव का प्रोग्राम पहली दूसरी जून को रखा है । द्वारका संकीर्तन भवन के विषय में हरिदास का कोई समाचार नही है । पहले तो श्री गुरुपुर्णिमा तथा गुरुतिथि का प्रोग्राम वही (द्वारकामें ही) रखने वाला था। किन्तु फुलडोल के उपर जब मुलाकात हुई तो कार्तिक मार्गशीर्ष के लिए कहा जैसा कि मैने तुझे सूचित किया था। मुजफ्फरपुर से द्वारका प्रसाद तथा वही के अन्य प्रेमियों का पत्र आया है कि दोनों उत्सव इसबार मुजफ्फरपुर में रखा जाए । अभी जामनगर या अन्य किसी स्थान का अभी तक कोई समाचार नही है । यहाँ की पूर्णाहुति २७।४।६८ रविवार को होगी । शायद दो-चार दिन और दूसरा भी लग जाए। रामजीका तो अति आग्रह है कि यहाँ से सीधे पोरबंदर ही

आवे । मेहसाना वालाका अभी तक कोई पत्र आया नही हैं। रामजी की तबियत खराब हो गई थी तो शायद बम्बई न आवे। अगर आना होगा तो तीनचार आदमी आयेगें। अगर तत्कालिक आने का हो गया तो यहाँ विनोदभाई से किराये का पैसा ले लूँगा और बाद में भेज दिया जाएगा । जैसी प्रभु की इच्छा होगी वैसा ही होगा। यहाँ अखंड बहुत ही सुन्दर चल रहा है। सभी प्रेमियो को जय श्री राम। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम ज़य जय राम"

प्रिय काकू म्हात्रे तथा बाल गोपाल !

जैतपुर श्री चिदानन्द आश्रम

आशीर्वाद !

दिनांक : २१-९-६५

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है। तुम्हारा १४।९।६५ लिखा हुआ पत्र आज यहाँ मिला। समाचार मालूम हुआ। श्री प्रभु का इस समय काल चक्र फिर रहा है न जाने कौन जाएगा कौन रहेगा सिर्फ इतना ही कहा जा सकता है कि यहि **काल से उवरै सोई जापर कृपा राम की होई ॥** यो तो शरीर नाशवान है ही आज या कल्ह यह तो काल कवलित होने वाला ही है । हाँ ! इतना अवश्य है कि जिसने इस साधन का सदुउपयोग कर लिया उसके लिए कोई चिन्ता नहीं है भय नहीं। जो इससे वंचित रह गये हैं और अभी तक विचार ही कर रहे थे कि भजन करुँगा, सेवा करुँगा उनके लिए तो चिन्ता,भय,निराशा अवश्य है। जो कुछ होना है, वह तो होकर ही रहेगा । लड़ाई नहीं थी तो भी तो जानेवाला जाता ही था बिना लड़ाई के शिकार बने भी जा ही रहे हैं । श्री गुरुमहाराज की तिथि के दिवस ही जामनगर में भयंकर बम वर्षा हुई, उस समय अेसा लगता था के तिथि पूर्ण हो सकेगी कि नही किन्तु श्री प्रभु कृपा एवं श्री गुरुदेव के प्रताप तो सात दिवस तक कोई दूसरा बनाव नहीं बना और शान्तिपूर्वक आनन्दपूर्वक

जब पूर्णाहुति हो गई आनेवाले सबके सब शान्तिसुखपूर्वक चले गये तो पुनः दो दिन बाद पहले से भी भयंकर बम वर्षा हुई जिसमें हवाई अड्डे को भी काफी नुकशान पहुँचा। जामनगर लगभग खाली हो गया है किन्तु श्री राम भरोसे श्री नाम जापक जन बड़े साहस, धैर्य, श्रध्धा विश्वासपूर्वक अखंड चला रहे हैं। पूर्णाहुति के बाद ही मैं पोरबंदर जानेवाला था किन्तु यह बनाव बन जाने से जामनगर छोड़ना मुश्किल हो गया अगर चला जाऊँ तो लोग कहेगे कि बाबाजी भी डर कर भाग गये। सारी रात धुन में बैठता था यहाँ का प्रोग्राम सब पहले से ही बना हुआ था। इसलिये यहाँ आना पड़ा। द्वारका में ६० बम्ब पड़ा किन्तु कोई नुकशान नहीं हुआ। अखंड धुन में भी अेक बम्ब पडा कुछ भी नहीं हुआ इसलिए लोगो में नामनिष्ठा खूब हो गई है। शरीर ठीक है पाँव भी ठीक हो गया। खूब भजन करना सुख में रहना। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जगन्नाथपुरी

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

शुभाशीर्वाद ! दिनांक : ६-३-६४

तुम्हारा समाचार बहुत दिनों से नहीं मिला है। मुरारी से यह पता चला कि तुम बाहर गये थे। अेक पत्र भी तुम्हारा मुरारी ने दिया। मैं तो होली के बाद बगैर किसी को सूचित किये ही अेका अेक मुजफ्फरपुर चला आया और वहाँ से सीधे बाम्बे जाने के लिए तैयार हुआ किन्तु गुलाब भाई के अत्याग्रह के कारण कलकत्ता आया उसने प्लेन का टीकट भी रिजर्व करा रखा था। मैने मुजफ्फरपुर वालों को मना किया था कि रिजर्व कराने की बात नही करना। वहाँ जाने पर जैसा होगा देखा जाएगा किन्तु अपनी जिम्मेदारी तथा खर्च बचाने के लिये लोगों ने टेलीफोन कर दिया कि प्लेन का टीकट रिजर्व करा लेना दूसरे

दिन मुरारी से भी कहाँ कि भाई! फोन कर दो कि प्लेन की टीकट रिजर्व न करावे और अगर करा लिया हो ता Cancel करा देवे किन्तु मै तो कलकत्ते पहुँच गया किन्तु मुजफ्फरपुर का फोन न पहुँचा। अेका अेक कुछ भगवत प्रेरणा हो गई और वैकुन्ठ बाबू, राजदेव सिंह, बिजली सिंह, रघुनाथ बाबू सबके सब बिना विचार किए ही साथ में चल पड़े। वे मुझे समस्तीपुर तक छोड़ने आये थे। किन्तु न जाने श्री प्रभु की क्या कृपा हुई कि वे लोग अपना जरुरी काम धंधा छोड़कर यात्रा के लिए चल पड़े। कल्ह पुरी की गाड़ी में भीड़ देखकर सब लौटने का विचार कर रहेथे। किन्तु यहाँ आने पर फिर विचार बदल गया। अब हम लोग रामेश्वरम् कन्या कुमारी की यात्रा करते हुए बम्बई पहुँचु अेसा विचार है आगे श्री प्रभु की इच्छा कृपा। सभी प्रेमियों को जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

श्री कन्याकुमारी

शुभाशीर्वाद ! दिनांक : १९।३।६४

श्री प्रभु कृपा से सकुशल हम लोग कन्याकुमारी पहुँच गये हैं । यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य विलक्षण ही है । श्री भगवान भास्कर का उदय और अस्त तो असाधारण ही लीला है । हजारों व्यक्ति इसी अनुपम, अलौकिक, प्राकृतिक दर्शन के लिए नित्य आतें हैं । श्री भगवती कुमारी कन्या का दर्शन भी अपूर्व ही है। चित्त तो करता है कि कुछ समय यही पर व्यतीत करुँ किन्तु निवास स्थान की कठिनाई और भिक्षा वगैरह की दीक्कत........ यहीं पर परमपूज्य श्री १००८ स्वामी विवेकानन्दजी का Rock भी है जहाँ पर तीन दिवस निवास कर, श्री भगवती माताकुमारी कन्या का दिव्य प्रसाद प्राप्तकर विश्वधर्म परिषद् अमेरिका में पधारे, जहाँ पर आपने विश्वभूषण की उपाधि प्राप्त कर, गुलाम भारत का मुखोउज्ज्वलकर,

ओसी अमर कीर्ति प्राप्त की कि जिसकी अमर गाथा, महोदधि बीच स्थित शिला भी गा रही है । महोदधि अपनी भीम गर्जना द्वारा अमर बनने के इच्छुक पावन अत्माओं को आह्वान कर रही है......... विवेक में ही सच्चा आनन्द है, इसी में जीवन का अमरत्व है। मानव जीवन जन्म का साफल्य है, सार्थक्य है । अत: विवेकी पशु न बन कर सच्चा मानव बनो । विषय की विषम वासना का त्याग कर, आत्मा का अमरत्व ग्रहण करो । विवेकानन्द बनो । हम लोग ओक सप्ताह में पंढ़रपुर पहुँच जायेगें । वहाँ से पूना, बम्बई होकर द्वारका । म्हात्रे को भी पत्र लिखा है फिर भी खबर कर देनाजी ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल ! श्री सुदामापुरी

शुभाशीर्वाद ! दिनांक : ७-७-६१

श्री प्रभु कृपा से आनन्दपूर्वक यथासमय पहुँच गया हूँ। पोरबंदर के भावुक प्रेमीजन स्वागत के लिए पहले से ही उपस्थित थे। रामजी भाई, पुरुषोत्तम भाई वगैरह सब आनन्द में हैं । आने से विशेष आनन्द में आ गये । वहाँ कुछ स्वास्थ्य ठीक नहीं लगता था किन्तु यहाँ आने पर अभी कुछ नहीं बिलकुल अच्छा है । चश्मा तो मेरा यहाँ था ही नं. २ है Near Vision के लिए फिर भी तुम्हारे अति आग्रह से इतनी किमती चश्मा ले लिया किन्तु यहाँ आने पर व्यर्थ सा लगता है । अगर दूकानदार लौटावे तो भेज दूँ। चश्मा देकर पैसा वापिस ले लेना । मुझे तो बराबर प्लेन में आना जाना भी बहुत खटकता है। हंमेशा अेक आदमी के उपर इतना बोझ डालना अच्छा नहीं लगता कारण कि आवश्यकता की तो सभी पूर्तिया तो तुम्हारे पैसौं से होती है तो हंमेशा किसी वस्तु का दुरुपयोग अच्छा नही, "जरुरत नागे हानि में जंजीर खीचो" रेलवे का लिखान कितना अच्छा

है। प्लेन से आया वह भी अच्छा ही हुआ नहीं तो रेलवे बंद है, रास्ते में कई जगहो पर गाड़ी पट्टे के नीचे उतरी पड़ी है और सब समाचार अच्छा है यहाँ अभी खास वारिस नहीं है। सुर्यभी दिखता कभी-कभी छाँटा आ जाता है । अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखना और डाक्टर के कथनानुसार डेढ़ दो मास आराम लेना। काम तो जीवन पर्यन्त होने वाला है ही इसी में सब कुछ करना है। स्वारथ भी और परमार्थ भी विशेष श्री प्रभु कृपा। सभी प्रेमियों को जय श्री राम।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल ! जूनागढ़

आशीर्वाद ! दिनांक : ५।१०।६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । परसों यहाँ से जामनगर का अेक भाई पत्र लेकर गया है, शायद वह अभी तुझे मिला न होगा दि. ३।१०।६८ का लिखा हुआ पत्र आज यहाँ मिला है । समाचार भी मिल गया कि ९।१०।६८ की तारीख पड़ी है । कल यहाँ पूर्णाहुति होगी और परसों यहाँ से जामनगर या पोरबंदर जाऊँगा। अगर ९।१०।६८ को केश निश्चित रुप से खूल जानेवाला हो और मुझे आना ही पड़े तो कम से कम अेक दिवस पहले तो अवश्य सूचित करना जिससे समय पर आया जा सके । पोरबंदर या जामनगर कही से भी प्लेन से तत्कालिक आया जा सकेगा अन्यथा दूसरी जगह से तो बम्बई पहुँचना भी मुश्किल ही है। द्वारका जाने पर तो आने पर और भी कठिनाई है। देवदत्त भी अभी साथ ही है वह भी पोरबंदर या जामनगर रहेगा । समन्स की बात तो लिखी थी तो इतना कम समय में समन्स कैसे स्वीकार करना और किस प्रकार हाजिर होना गवर्नमेन्ट की ओर से समन्स आयेगा तब हाजिर होना पड़ेगा ? या वगैर समन्स ही केश खुलने पर अपनी ओर से हाजिर होना पड़ेगा ? यह खुलासा लिखना। विशेष क्या

निश्चू । श्री प्रभु कृपा से नाम यज्ञ चालू ही है। साबरमती में आनन्द खूब रहा। गत वर्ष जूनागढ़ में विलक्षण आनन्द रहा किन्तु इस बार अखंड यज्ञ छोटा था से तथा नवरात्रि होने के कारण विशेष आनन्द नहीं रहा। पूर्णाहुति में देखें क्या होता है? रामजी यहीं है। पूर्णाहुति के बाद साथ ही हम लोग यहीं से निकलेंगे अगर पोरबंदर जाना होगा तो वहाँ पहुँचकर ११०।६८ के पहले फोन करूँगा। विशेष श्री प्रभु कृपा। सभी प्रेमियों को जय श्री राम ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

शोपींग सेन्टर, न्यु रेलवे कोलोनी,
साबरमती अहमदाबाद-११

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । श्री गुरुपूर्णिमा के बाद अेक पत्र तुम्हारा आया था । उसके बाद मैने अेक पत्र भेजा किन्तु आज तक कोई जवाब नही आया न मालूम पत्र मिला की नही ? १०।८।६८ से यहाँ रेलवे कोलोनी में आया में ही ४० दिवस का अखंड प्रारंम्भ हो गया है । राणिप में ४० दिवस का अखंड मध्यम वर्ग के मजदूरों द्वारा आयोजित था । इसबार औफिसरों की ओर से आयोजन है तभी तो यहाँ चल भी रहा है । नही तो यहाँ की प्रजा पचरंगी है हिन्दु, मुसलमान, जैन, पारसी, ईसाई ये लोग क्या रामधुन होने देवे और माईक बजने देवे किन्तु सर्व समर्थ राघवेन्द्र प्रभु एवं उनकी परम लाडिले लाल श्री वीरपुङ्गव श्री हनुमन्तलालजी की जब अखंड सहायता है तो कीसकी हिम्मत है की कोई आँखे ऊंची कर सके। १७।८।६८ से २०।८।६८ तक पालेज भी हो आया । भरुच भी दो घन्टे के लिए गया था । अब यहाँ से २१।८।६८ को महुवा भी जाना है । वहाँ ३१।८।६८ से ८।९।६८ तक गुरुदेव महाराज की तिथि के निमित्त जाना है । वहाँ २१।९।६८ को पूर्णाहुति है तो शायद लौटकर का प्रोग्राम है । और यहाँ साबरमती २१।९।६८ को पूर्णाहुति है तो शायद लौटकर

यहाँ आना ही पड़ेगा । उसके बाद जहाँ भी श्री प्रभु प्रेरणा इच्छा होगी । वहाँ तब जाना ही पड़ेगा । श्री गुरुपूर्णिमा के बाद जामजोधपुर और उसके पास ही ओक गाँव पाटन में ९ दिवस का अखंड हुआ वहाँ की विलक्षणता क्या लिखू जब फिल्म देखोगे तो पता लगेगा । वहाँ चारो ओर डुंगर और हराभरा जंगल है और बीच मे छोटा सा गाँव है वहाँ इस बार अेसी प्रेरणा हुई कि मानव समाज में तो अखंड नाम संकीर्तन, प्रभातफेरी वगैरह खूब हुआ इसबार लता-पता. झाड़-पेड़ पौधे जड़ पत्थरों और उनमें रहनेवाले असंख्य जीवजंतुओ को रामनाम सुनाया जाए और उसी प्रेरणानुसार नित्य प्रभातफेरी जंगल-जंगल पहाड़-पहाड़ में फिरा गया । नित्य कोई नवीन भाव आ जाता था और सबके सब पर्वत के शिखर पर पागल होकर नाचने लगते थे । श्री वीर पुंङ्गव श्री हनुमन्तलालजी की विजय पताका उस शिखर पर फहराती रहती थी और उसके नीचे सब लोग पागल बनकर नाचते रहते थे जिसकी तुमुलनाद से सारा पर्वत जंगल गुंजता रहता था मिलो तक नाद सुनाई पड़ता। केश का क्या हुआ । श्री रसिक भगत अहमदाबाद वाले श्री रामशरण पहुँच गये । म्हात्रे, बाबूभाई, रंगरेज, बाबूभाई जानी वैद्यराज प्रेमजीभाई सबको जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

आशीर्वाद!

आज अेक तुम्हारा पत्र मिला और केरीं की रसीद मिली। कुछ दिन पहले मैने अेक पत्र लिख था जिसमें श्री जानकी नवमी के उत्सव का भी वर्णन किया था इसके पहले भी केरी की अेक पेटी आ गई थी । श्री अखंड यज्ञ की पूर्णाहुति भाद्रपूर्णिमा श्री पुज्य गुरुदेव की पावन तिथिं पर होगी तेरह मास का अखंड ज्येष्ठ

शुक्ल दशम् (गंगा दसहरा) बुधवार को पूर्ण होगा उस दिन के उपलक्ष्य उत्सव मनाया जाएगा। किन्तु अखंड चालू रहेगा । जेठा भाई की तबियत सुधार पर होवे और आग्रह होवे तो मेरा वहाँ आने के बदले अगर ऐसे समय वही यहाँ आवे तो अति उत्तम कारण प्रभुधाम तथा प्रभुनाम अेक साथ इस कलिकाल में कहाँ सम्भव है ? यह तो श्री प्रभु कृपा से चल रहा है । यहाँ से अेक ब्राह्मण का लड़का अरविन्द नाम का जो अपना अति प्रिय एवं कृपापात्र है बोरीवली रहने को गया है मिले तो प्रेम भाव रखना । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारकाधाम

प्रिय काकू !

दिनांक : १७।१२।५६

शुभाशीर्वाद !

तुम्हारा पहले वाला पत्र मिला और बम्बई के पते से मेवा तथा शाल की पहुँच की सूचना भी भेज दिया, उसमें यह भी लिख दिया कि काकू जहाँ होवे वहाँ भेज देना। छाया में अनुष्ठान का जो स्थल पसंद था वह मिल नहीं सका, इसलिए अनुष्ठान का कार्य अभी बंद हो गया, अभी इच्छा भी नहीं और प्रभु प्रेरणा भी नहीं है । गत सुर्यग्रहण के अेक दिवस पहले श्री द्वारका आगया था कारण कि वाघेरिया सेठ हरिदास पहले कई आदमियों को भेजा पीछे वहाँ स्वयं लेने को आया था । उसका प्रेम, भगवन्नाम निष्ठा श्लाघनीय है । लगभग ग्रहण के दिवस से अखंड चालू है जिसकी पूर्णाहुति आज रात्रि में होगी । श्री द्वारकाधाम में प्रभुनाम प्रचार तथा प्रभाव अभी अभिछिन्न बना हुआ है अपने लिए तो बहुत ही अच्छा है । प्रभुधाम, प्रभुनाम, प्रभुप्रसाद सब सुपास है, आनन्द है मंगल है। जामनगर वाले बुलाने के लिए आये थे लेकिन बहाना करके टाल दिया, तुम किस

लिये पुना में रह रहे हो ? स्वास्थ्य तो अच्छा है न ? अभी कोई खास प्रोग्राम नहीं। मात्रे को भी पत्र लिखा था कोइ जवाब नहीं है । मेवा छाया में मिला था, शाल द्वारका आने पर मिला । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू !

छाया

आशीर्वाद ! दिनांक : १४-११-५६

आज पत्र मिला है । ९।११।५६ का लिखा हुआ। न जाने श्री प्रभु की क्या-क्या लीलायें होती है दिखाना कुछ और सुनना कुछ और, करना कुछ और ही किन्तु वस्तुतः उनका विधान परम कल्याणमय,मंगलमय तथा जीव के लिए परम श्रेयस्कर होने के कारण सर्वथा हृदय ग्राह्य ही है। जबसे कच्छ से यहाँ आया हूँ तभी से ऐसी दिल में बेचैनी सी होने लगी कि स्पेश्यल ट्रेन में अपना काम नहीं कारण कि जिस उद्देश्य से इतना बोझ उटाने का मैनें तथा मेरे प्रेमियों ने साहस किया उसकी पुर्ति अल्पांश में होती नहीं दिखाई देती कारण कि टीकट लेनेवालो की मनोवृत्ति तथा विचार लगभग विपरित ही प्रतित होता है । साथ ही अभी तक जितनी टिकटे खरीदी गई हैं उसमें ७५ फिसदी मातायें ही है। अतः इतनी बड़ी स्त्री समाज लेकर समस्त भारतवर्ष में फिरना साधु भेष के लिए अेक उपहासजनक विषय है । अतः मेरा निश्चय तो लगभग हो चुका था कि ट्रेन में नहीं ही जाऊगा । आज वाघेरिया का तार आया कि रेलवे निश्चित तिथि पर ट्रेन नहीं देती है, इसलिए ट्रेन Cancell केन्सल करा दिया। यहाँ गाँव से बाहर अेक मकान में पड़ा हूँ अगर मिल गया तो अनुष्ठान करने का विचार है अन्य कीसी वस्तु की जरुरत नही। शाल कि अब जरुरत नही रही अगर लेना हो तो Grey कलर

ठीक है अेक सप्ताह इधर रहूँगा । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू !

छाया

आशीर्वाद ! दिनांक : ५-११-५६

नूतन वर्ष मंगलमय,कल्याणमय बने यही मंगल कामना,वस्तुतः इस कल्याण, मंगल, आनन्द का मूल श्रोत अखंड निर्झर,निर्भयकर, अविरल, उद्भव अेक मात्र **श्री प्रभु नाम ही है,** जिससे हृदयंगम कर लेने के बाद जीव के लिए कोई कर्तव्य ही शेष नहीं रह जाता । वश ! प्रतिवर्ष नूतन श्रद्धा, उत्साह,उमंग से श्री प्रभुनाम स्मरण करते रहो यही सच्ची नूतनता है, यही जीवन का सच्चा वैभव है,यही मानवता की सच्ची पूंजी है, यही जीवन का परम लाभ है । वश ! विशेष श्री प्रभु कृपा। यह समय मेरे तथा मेरे संगीयों के लिए भी अेक अग्निपरिक्षा का समय है, जिसमें प्रायः विरले ही उतीर्ण हो सके। मात्रे के पास तुम्हारा ही प्रदान किया हुआ कुछ पैसा पड़ा हुआ है तो उसका उपयोग कर लेना चाहिए । अेक अच्छा गरम शाल काश्मीरी पसमीना मिले तो सौ रुपये तक लेना कारण कि शाल तो गरम कई पड़े है लोकल काम के नहीं वजन बहुत, उपयोग कम तो यात्रा के लिए उपयोगी होवे । अेसा विचार कर पैसे का उपयोग करना । विशेष श्री प्रभु इच्छा ।

"राम नाम कलिकाम तरु, सकल सुमंगल कंद ।
तुलसी करतल सिध्धि सब,पग-पग परमानंद ॥"

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू !   श्री सुदामापुरी

शुभाशिर्वाद !   दिनांक १०।९।५६

तुम्हारा पत्र मिला । यह जानकर मुझे आश्चर्य लगा कि मेरा लिखा हुआ पत्र तुम्हें प्राप्त नहीं हुआ । बम्बई से आते ही मैने पत्र लिखा था। यहाँ अेक मास अखंड की पूर्णाहुति कल्ह ९।९।५६ के दिवस हो गई। पूर्णाहुति अभूतपूर्व हुई लगभग पचीस तीस हजार मानस होगा । यहाँ लागणी भी विचित्र रुप में अभी जाग्रत हुई है । अब अेक ही बात है कि किसी तरह स्पेशल ट्रेन निकलें, यहाँ पर प्रचार काम चालू है और आशा है कि पोरबंदर में सौ सवासौ टीकट हो जाएगी जामनगर से आशा थी कि सौ डेढ़ सौ टीकट होगी लेकिन वहाँ से अभी अेक भी टीकट की नोंध नहीं हुई है कारण कि वहाँ काम करनेवाला कोई उत्साही और प्रभवाशाली व्यक्ति नही। गौरी बेन के भाई के अेक बहुत सुन्दर बालक का देहावसान हो गया है जिस कारण ये लोग बहुत उदास हैं कुछ विशेष करते नहीं है । गोधुभाई बम्बई हैं । इसलिए तुम लोंग इस ओर विशेष प्रयास करो तो कम से कम तीन सौ टीकट हो जाए और ट्रेन निकल जावे । इसके लिए अगर पेपर में जाहिरात देना हो तो भी दो, जिससे टीकट हो जावे । १३।९।५६ श्री सुदामापुरी पैदल चलकर श्री गुरुदेव की तिथि अेकादशी १५-९-५६ श्री द्वारका पहुँचने का है आगे श्री प्रभु कृपा ३०।९।५६ को टीकीट की संख्या की खबर होनी चाहिए । विशेष श्री प्रभु कृपा । सभी प्रेमियों को यथायोग्य ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री [illegible]

प्रिय [illegible]!

आशिर्वाद ! दिनांक [illegible]

तुम्हारा पत्र मिला, किन्तु समयाभाव से उत्तर नहीं दे सका । [illegible] दूसरा स्थान मिल गया होगा, अगर न मिला हो तो [illegible] के लिए दुराग्रह नही करना । जहाँ अनुकूल पड़े वहाँ [illegible] की पूर्णाहुति ऋषि पंचमी ९।९।५६ रोज रविवार को होगी । उसके बाद [illegible] गुरुदेव की तिथि के लिए श्री द्वारकापुरी ही जाना पड़ेगा । [illegible] कृपा से तिथि वही मनाई जाएगी तो सभी प्रेमी माताओ, बहनों तथा भाईयों को सूचनाकर देना । तिथि के बाद श्री रामचरणदासजी [illegible] उनके काम-काज का विशेष ध्यान रखना । जेठाभाई को भी सूचना करना, [illegible] नाम भी पत्र भेजा है स्पेश्यल ट्रेन २४।११।५६ कार्तिक वद [illegible] को नीकलेगी । उसका डीपोजीट ३०।९।५६ तक १००) और बाकि रकम [illegible] तक भर देना होगा, तो जितना टीकट तैयारहो उसकी सूचना करना । [illegible] मिलकर कोशिश करना कि टीकट पूरी हो जावे । एक महान् काम है । [illegible] श्री प्रभु कृपा । नई छपी चौपड़ी भेजी जायेगी । सब बच्चों को आशिर्वाद।

[illegible]

[illegible]

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

अहमदाबाद

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

श्री रामजी मंदिर

दिनांक [illegible]

शुभाशिर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से आनन्द मंगल है । डभोई से आकर अेक पत्र मैंने लिखा था, वहाँ का प्रोग्राम पूरा करके २८-१-६७ को अहमदाबाद आया और दूसरे दिन

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम

द्वारका जाने का विचार था किन्तु यहाँ और उस तरफ ठंडक की ओर होने से बिहार से आये हुए पंडितजी का प्रोग्राम बंद रहा। ३०-१-६७ को उनका टीकीट रिजर्व था, वे उसी दिन मुजफ्फरपुर के लिये चल पड़े। यहाँ के लोगों के आग्रह से रोज अेक-अेक दिवस का अखंड बढ़ता जा रहा है इस कारण से यहाँ से निकलना नहीं हो रहा है अभी भी कम से कम अेक सप्ताह तो लग ही जाएगा। मेरा तो अेसा ख्याल है कि पोरबंदर में उत्सव के समय ही तुम्हारा प्रोग्राम अखंड का वहीं रख दिया जाए। द्वारका के लिये अगर तुम्हारी इच्छा हो तो वहाँ जाने पर पूरा तपास करके लिखूगाँ। और सब समाचार अच्छा है। तुम्हारा भगवत सप्ताह सानन्द सम्पन्न हो गया, इसकी सूचना भी तुम्हारे पत्र द्वारा प्रप्त हुई। सभी प्रेमियों को मेरा यथायोग्य सह श्री राम जय राम जय जय राम। श्री मोहनलाल सेठ को भी राम राम कहना। विशेष श्री प्रभु कृपा, श्री मात्रे, बाबूभाई जानी, वैधराज, स्टाप सहित मास्टर, हरिकृष्ण, बाबूभाई रंगरेज, सुरेश, नटु हरीश वगैरह बाबूभाई रंगरेज को तथा दत्ता, चन्द्रा, अरुणा, शोभना, ईन्दिरादेवी मात्रे के समस्त परिवार को, प्रेमजी भाई, कमला देवी को यथायोग्य सह जय श्री राम।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल! शोपिंग सेन्टर, न्यु रेलवे कोलोनी,

शुभाशिर्वाद ! साबरमती, अहमदाबाद १८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। श्री पुज्यपाद गुरुमहाराज की तिथि का उत्सव बड़ा ही विलक्षण हुआ। महुवा वालों का भावनिष्ठा तथा प्रेम भी खूब ही है चलते समय नेत्रों से गंगा यमुना बह रही थी। साथ ही साथ इस जनता के अग्रण्य लोगों की मनोवृत्ति देखकर भी बड़ा क्षोभ सा हुआ। जिस स्थान पर नव दिवस तक २४ घन्टे हजारो आदमी अेक ताल स्वर से जिस विजयमंत्र का

अखंड उच्चारण तथा स्मरण कर वहाँ का तथा समस्त ग्राम का वातावरण परम पवित्र एवं भगवन्नाम बन रहा था । गलियों तथा शेरियों में बच्चे-बच्चे अेक रंग में रंगे हुए, ठीक दूसरे दिन वहाँ के कार्यकर्ताओं ने राम भगत रखा, जहाँ सिवाय हँसने हँसाने फिल्मी तर्ज पर अपना ही बनाया हुआ भजन गाना और वह भी सिर्फ दो घन्टे के लिये, जिसके द्वारा बनी हुई सात्विक वातावरण को पुनः कामुख वातावरण में फेर देने के सिवाय कुछ नही था । जहाँ इतना अथक परिश्रम करके जिस वातावरण को तैयार करना कराना, उसी को अपनी ही द्वारा विध्वंस कर करा देना कितनी दयनीय दशा है । जो भी हो श्री प्रभु इच्छा । कल्ह रात्रिको १२।। बजे मैं यहाँ आ गया। २१-८-६८ को पूर्णाहुति है और २२-८-६८ को नगर किर्तन है । उसके बाद सुरेन्द्रनगर का प्रोग्राम था किन्तु अभी तत्कालिक बंद रहा। अब २८-८-६८ से सात दिवस का प्रोग्राम जूनागढ में रखने के लिये ये लोग बोल रहे हैं। तुम्हारे केश का तारीख २०-८-६८ को सुना है रसिकभाई महुवा वाले ने कहा और यह भी कहा था कि आप को जाना है तो बात क्या है ? पहले से कुछ लिखना तो चाहिए । यहाँ से अेक पत्र लिखा था उसका भी जवाब नहीं आया। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

।। श्री राम ।।

"श्री राम जय राम जय जय राम"

बड़ौदा

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

दिनांक २८-१-६७

शुभाशिर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । जिस उद्देश्य से आया था वह काम भी श्री रणछोड़रायजी की अहेतुकी अनुकम्पा से सुन्दर रीति से सम्पन्न हो गया । श्री रणछोड़रायजी की मूर्ति विशाल और भव्य है । दृश्य भी अति रमणीय है । चारो तरफ जंगल पहाड़ और श्री नर्मदाजी जैसा सुन्दर अेक पहाड़ी नदी का तट,

लगभग ३१००० रुपैया खर्च करके मंदिर बांधने का लोगों ने निश्चय किया है जिसमें लगभग चालीस पचास हजार तो जमा हो गया है । सीर्फ तीन दिन के समारोह में ही वहीं का वही लगभग अठारह हजार रुपैया जमा हो गया था । लोगों का श्रध्धा उमंग ठीक लगता था किन्तु यथार्कता तो बहुत कम ही है। राम भगत श्याम भगत भी थे । उन लोगों ने अपना ही वर्चस्व जमाने की चेष्टा की । श्री प्रभु नाम का प्रचार विस्तार होवे इसकी दृष्टि बहुत कम । भगतों के भजन की ही गुजरात की अनपढ़ जनता में प्रभाव है और वे लोग अपना ही प्रभुता जमाने के लिये सतत प्रयत्न भी करते हैं यह तो श्री प्रभु एवं श्री गुरुदेव की प्रेरणा तथा वीरपुङ्गव श्री हनुमन्तलालजी की कृपा सहायता का फल जो अेसे अवसर पर लोग लाचार होकर मुझे बुलाते हैं । यो साधारणतः श्री प्रभु नाम का प्रचार प्रसार भी हुआ और आगे भी होगा, अेसी कुछ लोगों का संस्कार दिखता था। उन लोगों ने तो मुझे बोलने का बिलकुल मौका ही नही दिया । पैसा अेकत्रित करने का ही अेकमात्र प्रयास ! वहाँ का काम पूरा करके डभोई लौटते वक्त अचानक चांदोद, कर्णाली, बद्रिकाश्रम, श्री शुभदेव, श्री व्यास, श्री अनसूया वगैरह श्री नर्मदातट स्थित पवित्र प्राचीन स्थलों का दर्शन, स्पर्सन, निमज्जन वगैरह किया। सर्वत्र तुम लोगों का स्मरण किया । श्री नर्मदाजी में स्नान करते कभी नाम प्रेमियों के नाम की डूबकी लगाया । तीन दिन वहाँ बड़ा आनन्द आया । आज दोपहर अहमदाबाद जा रहा हूँ । आशा श्री भागवत् सप्ताह आनन्दपूर्वक परिपूर्ण हो गया होगा। बिहार से अहमदाबाद आयुर्वेदिक सम्मेलन में अेक पंडित जी आये थे जो मेरे विद्यागुरु हैं उन्हे द्वारका जाना है । अतः ३० या ३१को जामनगर जाऊँगा । विशेष श्री प्रभु कृपा । म्हात्रें तथा उसके परिवार को अन्य सभी प्रेमियों, हरकिशन मास्टर, बाबू भाई, प्रेमजीभाई सबको मेरा श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

पोरबंदर

शुभाशिर्वाद ! दिनांक १८-६-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा दो तीन पत्र मिला किन्तु अस्तव्यस्त स्थिति होने से यथा समय पत्रोत्तर नहीं दिया जा सका । बीच में बम्बई आने का विचार था किन्तु तुझे फोन करने पर पता लगा कि तुम बिहार की तरफ गये हो । बाबू भाई जानी का कई पत्र आये किन्तु तुम्हारी गैरहाजिरी होने से आने का विचार न हुआ स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा नहीं था । कुछ ग्रह का योग ही अेसा चल रहा है । चि. सुधिर तथा ज्योति का काम निर्विघ्न पूर्ण हो गया, यह भी श्री प्रभु कृपा। मुझे सूचना होती तो मैं भी आता । मैने प्रविण द्वारा पत्र लिखवाया था उसमें सारा प्रोग्राम तो लिख दिया था। महुवा में भी बड़ा आनन्द रहा। कल्ह यहाँ आ गया हूँ । दो चार दिन ठहर कर जामनगर होते हुए या सीधे द्वारका जाने का निश्चय है । रामजी का काम ठीक-ठीक चल रहा है अभी रसोड़ा का ही काम शुरु किया है । श्री गुरु तिथि का उत्सव यहाँ करने के लिए कहता था जो कि सबका विचार द्वारका में ही रखने का है अब जैसा निश्चय होगा वैसा लिखूगाँ । मात्रे, बाबूभाई दोनो, प्रेमजी भाई वगैरह सभी प्रेमियों को जय श्री राम। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकु तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सव आनन्द हैं। पालेज वालों का प्रेम, भावना, सेवा,

[illegible] [illegible] तन्मयता, तत्परता, उत्साह का जितना भी वर्णन करें उतना ही कम ही है। सीर्फ जन्माष्टमी के दिन १५०, रुपये का पुष्प बड़ौदा से लाकर हिन्डोला बनाया था। अहमदाबाद, बड़ौदा, भरूच और आजू-बाजू से काफी लोग आ गये थे, इसकी सूचना तो मात्रे से मिली ही होगी। गुजरात में तो अपना एक स्वतंत्र मंडल जैसा अभी हो गया हैं। आगे की भगवान जाने गुजरात है। स्टेशन पर आतेजाते वक्त विलक्षणास्वागत, सत्कार। सैकड़ों नरनारियों, बालकों की भीड़ "श्री राम जय राम जय जय राम" की गर्जना कर रही थी, वहाँ से आते समय तो बहुत से नव जवान प्रेम विहबल होकर गाड़ी चलने पर गाड़ी में चढ़ गये, बहुत समझाने पर कोई दो स्टेशन कोई चार स्टेशन और चार आदमी तो ठेठ विरमगाम तक छोड़ने आए। वहाँ से बिछुडते समय भी करुणाक्रंदन करते हुए विदाय हुए। कल्ह यहाँ १० वजे आया। एक दो रोज वाद द्वारका पोरबंदर होकर वेरावल जाने का विचार था किन्तु हरिदास का शाम को फोन आया कि परसों रात को महाजन वाड़ी द्वारका में से तुम्हारा हनुमान डान्डी वाला सोना, चांदीवाला मंत्र तथा चांदी का क्रेम सहित ठाकुरजी और जो कुछ भी अन्य मेरा तथा ठाकूर जी की जो भी सामग्री थी, वह सब कोई ताला तोड़कर ले गया। अच्छा ही हुआ। मूर्ख बाबूने व्यर्थ का बवंडर बढ़ा कर यह सब कराया श्री प्रभु की जो इच्छा। उस दिन वाघेरिया ने तुम्हारे पास बम्बई पत्र लिखा था कि संकीर्तन भवन के लिए ६०,००० लगेगा। मेरे को पालेज में लिखा कम से कम अेक लाख लगेगा, इस पर रंज होकर मैंने पत्र लिखा, तुम्हारी क्या नियत हैं ? जो इस प्रकार का पत्र लिखा करते हो, उसमें दामोदर सेठ जो तुम्हारे घर बोलता था उसका भी जिक्रकिया था और लिखा था अेसे धन के मद में मत वाले और भगवन नाम विमुख लोगों का पैसा लेना हो तो संकीर्तन भवन बनाने की कोई जरुरत नहीं कल्ह दूसरा ही समाचार आया, अभी तक द्वारका से कोई आदमी नहीं भेजता हैं कि सच्ची वात क्या हैं ठाकुरजी भी ले गया है या सीर्फ क्रेम, वस्त्र, वासन वगैरे ही

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

। देवघर में १०-९-७५ से १५-९-७५ तक प्रोग्राम है विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

शुभाशीर्वाद !

तुम्हारा पत्र मिला समाचार मालूम हुआ । श्री प्रभु की कृपा से सब आनन्द मंगल है । पूज्यनीया मातु श्री की भी तबियत ठीक है इधर बाढ़ तथा भीषण वर्षा के कारण अखंड का प्रचार भी लगभग स्थगित सा ही है । इस बार श्री पुज्य गुरुदेव की तिथि का समारोह कही भी मनाने की इच्छा नहीं थी किन्तु उन्ही की प्रेरणा तथा श्री वैकुन्ठ बाबू की सदभावना के कारण उन्ही के निजस्थान **पताही ग्राम** में समारोह मनाने का निश्चिय हुआ है आने वाले के लिए पहले मुजफ्फरपुर राधे बाबू के यहाँ उतर कर वहाँ से बस द्वारा बेलसन आये और वहाँ से दो मील पर ही सडक के बिलकुल किनारे पताही ग्राम है पहले से खबर होने पर बेलसन में सवारी की भी इन्तजाम रहेगी । हरिदास को भी सूचित कर देना । विशेष श्री प्रभुकृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बालगोपाल ! खंभालिया स्टेशन

आशीर्वाद ! दिनांक : २७-५-६१

श्री प्रभूकृपा ही जीव मात्र के कल्याण का अेक मात्र साधन है वही जीव मात्र का आधारभूत तत्व है फिर भी अज्ञानी जीव तो अंधकार में पड़ा पड़ा अनेक प्रकार का स्वप्न ही देख रहा हैं और इसी तरह देखता ही रहेगा

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

उस समय तक जब तक उसे ज्ञान का आलोक (प्रकाश) न मिल जाए। ज्ञान क्या हैं ? अज्ञान क्या हैं ? सत्या-सत्य का निश्चय ही ज्ञान और इसका अनिश्चय ही अज्ञान है या दूसरे शब्दो में कहें तो "ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या" परमात्मा ही सत्य है, आनन्दरुप हैं इसके अतिरिक्त अनेक रुपवाला दृश्यमान जगत, सर्वथा विकारी, विनाशी हैं अतः विवेकी मानव को चाहिए धीरे धीरे विचार द्वारा विषय प्रवृत्ति, जगत वृति कम करे और जो कुछ भी प्रवृति करे उसे भगवदबुद्धि या प्रारब्ध भोग की दृष्टि से करे किन्तु अन्दर अन्दर तो हमेशा इसकी अनित्यता तथा आत्मा परमात्मा की नित्यता पर ही विचार तथा राग करता रहे जिससे अन्त समय श्री प्रभु स्मरण होवे। मंत्र मंदिर का उत्सव तो सुन्दर हो गया किन्तु आगे की व्यवस्था का कुछ अभी तक ठिकाना नहीं। मैंने हरिदास वाघेरिया से बार बार पूछा था किन्तु अपनी महानता के अभिमान हंमेशा कहता रहा सब कुछ समिति में पास हो गया है और जो बाकी हैं वह मैं करा लूंगा। किन्तु २१-५-६१ को समिति की बैठक में भी शामिल नहीं हुआ। अभी तक सरकारी व्यवस्थापक ने कब्जा ही लिया हैं और न कोई व्यवस्था ही की हैं अभी भी जयन्ती कर रहा है, अभी द्वारका जा रहा हूँ १-६-६१ को ९ दिवस के लिए जामनगर जाना पड़ेगा। उसके बाद जैसा होगा लिखूंगा। सभी प्रेमियो को मेरा जय श्री राम।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

श्री द्वारका धाम

आशीर्वाद !

दिनांक : २२-७-६५

श्री प्रभुकृपा से आनन्द है। यहाँ से निवासी जल के लिए तडफ रहे थे, यहाँ आने पर जितने गरीब लोग थे सब अेक स्वर से कहने लगे कि महाराज श्री आ गया अब पानी जरुर पड़ेगा, श्री प्रभु की करुणा बिलक्षण हैं न जाने

किस गुण पर रीझकर श्री प्रभु अपनी अहैतुकी अनुकम्पा से मान प्रतिष्ठा, तथा लोगों की श्रद्धा निष्ठा बढ़ा रहे हैं ? जो भी हो, जो भी हुआ, जो भी हो रहा हैं या हो- यह सब सीर्फ नाम महाराज का प्रताप तथा परम दयालु, कृपामूर्ति श्री गुरुदेव की करुणा का ही फल है मेरी शक्ति तपस्या कुछ भी नहीं है । मैं तो उसके हाथ का यंत्र हूँ, जैसे वह यंत्री चलाता है वैसे ही उसके इसारे पर फिरते रहना ही अपना जीवन है । जब तक उसकी इच्छा होवे इस यंत्र का उपयोग करे । मर्जी पड़े तभी बंद कर दे अपना न तो कुछ सामर्थ है न शक्ति, न ज्ञान हैं न भक्ति, है अेक मात्र उसके नाम की टेक और चरणों की आसक्ति पाँव था सूजन पोरबंदर के इलाज से बिल्कुल कम है अब नाम मात्र ही रह गया हैं किन्तु गुरुपूर्णिमा के दो दिन बाद बुखार आ गया था जिससे थोडी सुस्ती थी अब ठीक हैं यहाँ रहने वगैरह की व्यवस्था का पूर्ण अभाव सा ही है । कारण हरिदास का प्रेम जरुर है किन्तु व्यवहारिक ज्ञान का अभाव सा हैं । प्रवृति भी खूब हैं दूसरी तरफ, इस कारण से अपनी तरफ से स्वाभाविक निवृत्ति ही जैसी है, बेचारे गरीब लड़के बाबू, मनसूख, चंन्दू वगैरह रात दिन लगे रहते हैं । हरिदास तथा उसके कुटुम्बी या माताजी छगनलाल हम लोगों की ओर से सीर्फ इतना है कि केम छे ? बस इसके अतिरिक्त श्री गोपाल ! अखंड में माताजी को अफ्रीका से पैसा काफी आ गया हैं इस कारण उसका भी मगज फिर गया हैं । "श्री मद व्रक न कीन्हि के हि, प्रभुता वधिर न काहि Hydrocil में कोई तकलीफ नहीं, पानी निकल जाने पर गोला छोटा होजाना चाहिए उससे अभी पूरा कम नहीं हुआ है । धीरे धीरे शायद कम होवे । श्रावण सुद यहाँ बरसात साडे छ इंच तक पड़ गई है अमन हो गया है दशम के दिन जामनगर में मूर्तिप्रतिष्ठा है शायद उसके पहले पोरबंदर जाना पडे । सभी प्रेमियो को मेरा जय श्री राम । श्री १०८ श्री मस्तरामजी का क्या ? आगे श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

श्री डाकोरजी
आशीर्वाद ! C/o. मलूजी गोटावाला
दिनांक : ६-९-६४

तुम्हारा पत्र कल्ह मिला । समाचार मालूम हुआ । इसके पहले बड़ौदा में प्रेमजी भाई का चि. विनोद द्वारा मालूम हुआ कि ३-९-६४ को ऑपरेशन कराने वाले हो तो श्री प्रभु की कृपा से ऑपरेशन सुख पूर्वक हो गया होगा और तुम आनन्द पूर्ण होगे। इस बार ध्यान रखना । थोड़ी जल्दी के कारण कितना दुवारा कष्ट उठाना पड़ा । यहां गुजरात में भगवन्न नाम प्रचार श्री प्रभु कृपा से बहुत सफल हो रहा है बड़ौदा में तो सात दिवस का अखंड और जन्माष्टमी का महोत्सव अभूतपूर्व हुआ । मानसिक पत्र तो जबसे सुना आपरेशन की बात, तभी से लिख रहा हूँ आज प्रत्यक्ष लिख रहा हूँ । श्री गुरुतिथि का निश्चय श्री डाकोर जी में, श्री रणछोड़रायंजी के सानिध्य में करने का हुआ हैं । आज आमंत्रण पत्रिका छपने गई हैं विशेष श्री प्रभु कृपा । मात्रे को मेरा आशीर्वाद ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू मात्रे तथा बालगोपाल ! बालूघाट आश्रम

शुभाशीर्वाद ! दिनांक : २०-१०-६३

श्री प्रभुकृपा से सब आनन्द मंगल है । कल्ह मैने नूतनवर्ष का आशीर्वाद एक पत्र द्वारा भेजा है । लेकिन एक बात भूल गई थी उसके लिए पुनः आज पत्र लिख रहा हूं पहली बात यह कि ड्राय फ्रुट भेजा हुआ मुझे मिल गया

है दूसरी बात यह हैं कि बहुत दिनों से अगरबत्ती नहीं आ रही है इससे मालूम होता है कि मेरी भोजन की खाने की शायद बासना बहुत बढ़ गई है और सुवास याने भगवत् की भक्ति भावना रुपी सुवास-सौरभ,सुगंध की वासना कम हो गई है । जिस कारण खाने को सामग्री फल मेवा तो खूब भेजते हो किन्तु अन्तर सद्वासना की वृध्धि निकास की ओर प्रेरित करनेवाली बाह्य सुवास प्रतीक रुप अगरबत्ती का अभाव सा हो रहा है । कार्य के द्वारा ही कारण का अनुमान किया जा सकता है । दृश्य को देख कर ही दृष्टा की अनूभूति की जाती है । जगत को देखकर ही जगत्पति का तथा शरीर को देखकर, समझकर शरीर-आत्मा, शरीर का ज्ञान होने पर शरीर का आत्मा का, संसार का ज्ञान होने पर ही परमात्मा का ज्ञान होगा । सपरिवार मात्रे तथा प्रेमजीभाई को नूतनवर्ष का आशीर्वाद । विशष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

द्वारका

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

दिनांक : २१-८-५८

आशीर्वाद

तुम्हारा पत्र मिला । अगरबत्ती तथा मेवा का पार्सल भी यथासमय आ गया । पत्र न लिखने का कारण सीर्फ मेरी आलसी प्रवृत्ति ही है । श्री प्रभु कृपास से श्री अखंड यज्ञ अेक की जगह सवाई हो गया । (तेरह के बदले संत्रह मास) उन्ही की कृपा से सांगोपण परिपूर्ण हो ही जायेगा । श्री प्रभु की करुणा का कोई पार नहीं, उनकी महिमा का अन्त नहीं फिरभी हम कमनसीब जीवों को उनके उपर आशा भरोसा नहीं होता । तुम्हारा पत्र के अनुसार लगभग १०० रुपिया का उपयोग यहाँ से गुजराती निशांख कन्याशाला तथा छोटे बालको में प्रसाद बाट दिया गया । लड़के धुन में कलाक अर्धो कलाक रोज आते

है । विशेष श्री प्रभु कृपा । सभी प्रेमियो को जय श्री राम । पूर्णाहुति पर आने का विचार जरुर करना ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद

श्री प्रभु कृपा से सब आनंद हैं । कल्ह यहाँ अेक मास अखंड की पूर्णाहुति अभूतपर्व उत्साह-उमंग के साथ हो गई । कल्ह श्री मन्नारायण गर्वनर यहाँ ४बजे आये थे, फिरभी नगर कीर्तन में अपार मानव मेदिनी थी । मातायें, बहनें भी प्रेमोत्सक हो नृत्य करती गलियों फिर रही थीं । श्री भगवन्नाम की तुमुल ध्वनि से सारा शहर गुँज रहा था । मुजफ्फरपुर वाले का आग्रह बहुत है । किन्तु द्वारका का काम बिल्कुल अधूरा होने से थोड़ा समय के लिए मेरी हाजिरी अति आवश्यक है । बिहार जाकर थोड़े समय में पीछे आना बड़ा ही कठिन है । पोरबंदर का वार्षिकोत्सव तथा गुरुपूर्णिमा का दोनों एक ही साथ श्री गुरुपूर्णिमां के अवसर पर पोरबंदर में ही रखने का निश्चय हो गया है, श्री पूज्य गुरुदेव महाराज की तिथि के लिये विचार चल रहा है कुछ लोगो का कथन है कि गुरुपूर्णिमा तो इसबार वृन्दावन में मनाने का निश्चय कर रहे है । यहाँ से शायद गुरुवार को मोटर से अहमदाबाद तक फिर वहाँ से गाड़ी से । आदमी बहुत थे इससे थोड़ा विचार करना पड़ा । आज तो सबके सब अपने से निश्चय करके तो चले गये । सीर्फ हम तीन आदमी हैं जिसमें एक देवदत्त, दूसरा अपना कृपा पात्र एक विद्यार्थी प्रविणकुमार । प्रेमजीभाई का आज पत्र आया

हैं कि ठहरने का मेरे घर पर रखना । बाबू भाई जानी का पत्र आया मेरी जगह पर रखना।

हितेच्छु
प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद !

श्री द्वारकाधाम
दिनांक २४-६-५६

श्री प्रभु का नाम ही अेक मात्र भवसागर में डूबने वालो का सहारा हैं, इस घोर कलिकाल में जब कि समस्त सद्गुण तथा शुभ कर्म भयंकर कलिरुपी दावानल से दंग्ध हो रहे हैं-जल रहे हैं अेसे कराल काल में तो श्री राम, घनश्याम रुपी जल राशि काले बादल का नाम ही उन्हे त्राण तथा संजीवन दान करने का तंभ है । समस्त अमंगलों को ध्वस्त कर, परम मंगल करने वाला तो सदा से श्री मंगलमय **श्री प्रभु परम मधुर नाम ही है** । अतः श्री द्वारकाधीश प्रभु की असीम अहैंतु की अनुकम्पा श्री वीरपुंगव हनुमन्त लाल जी की अविरल छत्र छाया तथा श्री गुरुदेव की दिव्य प्रेरणा से आज लगभग दो बर्षो से श्री बेट तथा श्री द्वारका धाम में जो अद्भुत कर्म बन रहा हैं, यह बात किसी से छिपी नहीं है । इसी भगवत संकेत के आधार पर भारत वर्ष के समस्त पवित्र स्थलों को, तीर्थ स्थानों को जो समय के, काल के युग के प्रभाव से मलिन बन गये हैं, उन्हें परम पावन, अखिल पापपुंजनाशवान, कलिमलहारी, मोद मंगलकारी श्री प्रभु नाम प्रचार, विस्तार द्वारा पावन बनाने के निमित्त ही **श्री द्वारकाधीश स्पेशल ट्रेन निकालने** का संकल्प **प्रेमियों** को हुआ । अतः जितना बन सके उतना अपने सगा-सम्बन्धी मित्र, दोस्तों को तैयार करो और स्वयं सपरिवार इसको सफल बनाने के निमित्त प्रयास करना चाहिए,

ऐसा अवसर फिर हाथ नहीं आएगा । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू ! श्री द्वारकाधाम

आशीर्वाद ! दि. १९-५-५६

तुम्हारा पत्र मिला, इस समय तुमने झंझट बहुत मोल ले लिया हैं जिस कारण तुझे पत्र लिखने का भी अवकाश नहीं मिलता यह तुम्हारे पत्र के लिखान से पता चलता है । इतनी व्यग्रता तथा व्याकुलता पूर्वक काम मनुष्य कब तक कर सकता है ? अगर करेगा भी तो उसके चित पर स्वास्थ्य पर कैसा असर होगा ? ठीक ! संसारी के लिए संसार ही रोचक होता है केरी की सारी पेटी खराब हो गई कारण कि रसीद आने के तीन दिन बाद पेटी आई । १५-२० आम ठीक था जिसमें से कुछ बेट श्री राधा माता तथा लक्ष्मी माता के पास भेज दिया । आशा है तरला का आशीर्वाद पत्र पहुँच गया होगा । श्री प्रभु कृपा से सब मंगल हैं स्पेशल ट्रेन का निश्चय हो गया । प्रोग्राम प्रेमजी भाई के साथ वहाँ के लिए भेजा जाएगा । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू ! श्री बेट शंखोद्धार रमणदीप

आशीर्वाद ! दिनांक : ६-४-५४

तुम्हारा पत्र मिला समाचार मालूम हुआ । तुमने अपनी बेवसी तथा व्याकुलता का प्रदर्शन किया वह तो संसार के लिए स्वाभाविक ही है । व्यवहार

ी बेबसी, लाचारी तथा बंधन और प्रेम में व्याकुलता, स्वतंत्रता तथा मुक्ति भाव
चिन्ता, शोक, विषाद रहित जीवन स्वाभाविक है । अत तुम्हें भी दोनों
अवस्थाओं में रहने के कारण दोनों प्रकार की अनुभूतियों का होना अनिवार्य
है फिर भी पासपोर्ट के लिए इतने अधीर और व्यग्र होने की कोई आवश्यकता
नहीं, जो श्री प्रभु की इच्छा होगी वही होगा इस पर पुर्ण विश्वास रखना चाहिए
यही धारणा मानवजीवन को प्रत्येक क्षेत्र में समस्त परिस्थितियों तथा अवस्थाओं
में परम सहायक होती हैं । "दोइहैं सोई जो राम रचि शख्रा को करि तर्क
बढावै शाखा" यह संसार तो भयंकर सर्प रुप हैं जो कभी धर्मतो, कभी कर्म,
कभी ज्ञान तो कभी अज्ञान, कभी हर्ष, तो कभी विषाद, कभी मोह, तो
कभी प्रेम अनेकों निमित्तों द्वारा दंश (काटना) लगाया ही करता हैं और मानव
उसके विषय रुपी विषम विष क्रिया की ज्वाला से संतप्त, संदग्ध विदग्ध हुआ
ही करता है उससे बचाने का अेक ही उपाय संत तथा शास्त्र बतलाते हैं
उसे हमें यथा साध्य उपयोग करना ही चाहिए । "संसार सर्प दष्टानाम् एक
मेव सुभेषजम, सर्वदा सर्व कालेषु सर्वदा हरि चिन्तनम्" चिन्ताहारी, चिन्तामणी
राम एक श्री प्रभु का एक मात्र नाम ही चिन्तनीय हैं । अन्य सभी चिन्तायें
सदा दुखद एवं दाहक ही होती हैं बस ! श्री प्रभुनाम स्मरणा करो, सुखी
बनो, जीवन जन्म सफल सार्थक बनाओ । कल्ह जब मैं श्री बेटधाम के लिए
तैयार हो रहा था, उसी समय आम के पार्सल का रसीद मिला, मन में हुआ
अगर आज आ जाता तो श्री द्वारकाधीश को भोग लग जाता और द्वारकावासियों
को प्रसाद मिलजाता- तुम्हारा प्रेमपूर्वक भेजा हुआ आम का पार्सल उसी ट्रेन
में आया और मेरे साथ ही बेट आ गया । आज श्री द्वारकाधीश के भोग में
गया और दिवस के श्री अखंड में समस्त भक्तों को प्रसाद दिया जाएगा और
तुम्हारे महान भाग्य तथा तुम्हारे सच्चे प्रेम का ही फल है यहाँ शायद ७-८
दिवस तक अखंड चलेगा । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

|| श्री राम ||

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बेबी तरला !

द्वारका धाम

आशीर्वाद ! दिनांक : ११-५-५६

तुम्हारा पत्र मिला समाचार मालूम हुआ । तुम इस समय कामकाज में बहुत अस्त व्यस्त हो और चित्त तुम्हारा अशान्त है, यह जान कर कुछ दुःख तो जरुर होता है कि मनुष्य ज्ञान रखते हुए भी, सब कुछ सोचते समझते हुए भी, किसी तरह अपने आप को मुसीबत में, चिन्ता में डाल लेता है तथा सुखमय, आनन्दमय जीवन को भी दुखमय बना लेता है । किन्तु किया क्या जाए ? यही तो भगवान की विलक्षण माया है, विलक्षण लीला है जो अरमणीय तथा असार होते हुए भी, रमणीयता धारणकर जीव के सामने उपस्थित होती है तथा जीव जिसकी अपातरमणीयता पर आशक्त हो, अपना सत्स्वरुप भूल कर चौरासी के चक्र में भटकता रहता हैं । इस माया से मायापति की दया वगैर कोई भी जीव पार नहीं पा सकता, उसकी दया प्राप्ति तथा माया के चक्र से छूटने का एकही उपाय है कि **उस मायापति का अखंड स्मरण, चिन्तन, नाम रटन किया जाए** । बस ! जितना बने उतना प्रभु नाम रटन करने की विशेष चेष्टा करते रहना । बच्ची तरता । जैसे स्वभाव से सरल है वैसे भगवान उसको भावी जीवन को सरल, सादा, भव्यभावो एंव उच्च विचारों से परिपूर्ण बनावें । अपने पियूष तुल्य परममधुर नाम में तथा अपने परम मृदुल, मंजुल चरण कमलों में मति, रति, गति प्रदान करे जिससे जीव माया में रह कर जल कमलवत, निर्लिप्त जीवन व्यतीत कर जीव प्रभु के अभय, निर्भय, अमृतमय पद प्राप्त कर कृत कृत्य हो जाता हैं बस ! मेरी हार्दिक आशीर्वाद यही हैं कि तरला का भावी जीवन, सुखमय मंमलमय तथा प्रभुमय बने । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जामनगर

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद ! दिनांक : ९-४-७५

तुम्हारा दो पत्र मिला, समाचार भी मिला । कल मैं ९ दिवस के अखंड
के लिए छाया से जामनगर आया, भगवानजी तथा उसकी परिवार की जितनी
भी बड़ाई कीजाए उतना कम ही है उसके माता पिता और परिवार ने तो
सत्ययुग का आदर्श भगवन्नाम के लिए उपस्थिति कर दिया । भगवानजी के
शरीर त्याग के ९ दिवस से अपने घर में पांच दिवस का अखंड तथा बाजा-
गाजा सहित उसके वहाँ शोक चिन्ता का नाम नहीं - माता भी अपने को
धन्य धन्य मानती है कि मेरा पुत्र श्री प्रभु नाम स्मरण करता शरीर त्याग
किया । आज तक ऐसी घटना सुनी भी कम गई है कि २० वर्ष के नव जवान
पुत्र के मरने पर ९ दिवस से माता पिता अखंड नाम जप अपने घर में करें
। यह सब **नाम महाराज का प्रताप तथा श्री गुरुदेव की कृपा** का ही फल
हैं । भगवान जी सचमुच भगवान बन गया, ऐसी गति योगियों को भी दुर्लभ
होती हैं । अभी पासपोर्ट का तो बहुत बखेड़ा बढ़ गया- पता नहीं हो भी
सकेगा या नहीं कारणकि कोई मुस्तद आदमी काम करने वाला रहा नहीं ।
वल्लभ चला गया, तुम चले गये । मात्रे सीर्फ फोन से काम चलाता होगा
तो कहाँ से हो सकेगा । पोरबंदर से बड़ी आसानी से हो जाती । हमारे पीछे
पासपोर्ट का काम ॐकारदासजी का काम शरु हुआ, वह पूरा हो गया देखो
जैसे श्री प्रभु इच्छा । टिकट के प्रबन्ध के बारे में मात्रे भी कुछ लिखा नहीं
है । पैसा ४००/- दे गया । यहाँ सब ठीक हैं मेरा जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू !

श्री बेट

आशीर्वाद ! दिनांक १८-५-५४

तुम्हारा पत्र मिला समाचार मालूम हुआ किन्तु श्री प्रभु की लीला कुछ अनोखी ही होती है, जिसको कोई जीव अपनी बुध्धि द्वारा जान ही नहीं सकता । दिव्य प्रकाश का पत्र आया अभी दिपावली तक अफ्रिका यात्रा बंद रखे और टीकट का जो पैसा जमा है उसे लौटा देवे । उसका पत्र आने के ४ दिवस पहले श्री हनुमान जी की आज्ञा अनुष्ठान के लिए हो गई थी । अतः आगामी जेष्ठ सुद दशम गुरुवार ता. १०-६-५४ से श्री हनुमान डांडी में जहाँ कि परसाल दो मास अनुष्ठान हुआ था, वहीं १३ मास का काष्ठ मौन पूर्वक अनुष्ठान प्रारभं श्री प्रभु की कृपा से होगा तो पासपोर्ट के लिए परेशानी तुम लोगो को उठाने की जरुरत नहीं । इस १३ मास तक तुम लोगों को स्वंय नियमपूर्वक अधिक से अधिक मंत्र लिखना होगा और सगे सम्बन्धी मित्रों से लिखाना होगा अगर प्रभु और हमसे प्रेम हो तो । बस ! विशेष श्री प्रभु कृपा । कान्दीवल्ली से सामान भेज देना । मात्रे को भी पत्र लिखा है । काष्ठ मौन में लिखना पढ़ना, मिलना बिल्कुल सब मना है । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

"श्री राम शरणं मम"

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू !

श्री बेट, शंखोद्धार

आशीर्वाद ! दिनांक : ३-८-५५

श्री परमकृपालु प्रभु की कृपा का पार नहीं, महिमाका अन्त नहीं, लीला की हद नहीं, करुणा की माप नहीं फिरभी हम अज्ञानी अल्पज्ञ, जड़, जीव उस महा महिम की महती महिमा को न समझने के कारण सदैव आकुल,

व्याकुल परेशान बने रहते ह । उस मंगलमय,कल्याणमय, आनन्दमय प्रभु का सारा विधान तो कल्याणमय, मंगलमय ही हैं तथा हमारे जीवन को सर्वथा समुन्नत बनाने के लिए ही होता है फिर भी हमारी जन्मजन्मान्तर की संचित वासनायें हमें उस कृपा से हमेंशा दूर ही हटाती रहती हैं । जब उस प्रभु की कृपा होती हैं तभी हम उसकी ओर प्रवृत्त हो सकते है । अन्यथा आंख होते हुए अन्धे, कान रहते हुए बहरे वाणी होते हुए मूक बने रहते हैं प्रत्येक प्राणी अपने अन्तःकरण की भावना के अनुसार ही दृश्य देखा करता है क्योंकि ही बाह्य दश्यो को प्रतिबिम्बित करने के लिए दर्पण का काम करता हैं अतः तुमने जो दश्य देखा, जो कुछ अनुभव किया वह तुम्हारी पवित्र भावना, अटूट श्रद्धा, तथा दढ विश्वास का ही फल हैं यो जो तो श्री प्रभु की कृपा वृष्टि निरंतर हो ही रही हैं जहाँ गधा होता हैं । वहाँ जल रुक जाता है । अन्यथा पर्वत शिखर पर जल पड़कर भी जहाँ से उत्पन्न हुआ उसी परिधि का आश्रय लेता हैं । अतः हमारा परम धर्म, परम कर्तव्य यही हैं कि अपने अन्तः करण को, हृदय को भगवन्मय बनावे - उसके लिए हमे निरंतर प्रभुनाम स्मरण, चिन्तन करते रहना ही चाहिए कारण कि नाम स्मरण से अंतःकरण की शुद्धि, विषयोसे वैराग्य तथा प्रभु में अनुराग स्वभाव से ही अपने आप ही होने लगता हैं और अन्त में एक दिन नाम वाला प्रभु भी स्वंय हृदय में प्रकट होकर जीव को कृतार्थ कर देते हैं । श्री प्रभुनामस्मरण जैसा सुगम, सरल, सुखद अन्य कोई भी साधन नहीं हैं इससे भोग तथा मोक्ष दोनोकी प्राप्ति अनायास ही हो जाती हैं अतः अधिक से अधिक नाम स्मरण करो, सुखी आनन्द बनो तथा दूसरोको सुखी सानन्द बनाओ यही आशीश, आदेश तथा उपदेश । अपने माता पिता तथा बच्चोको मेरा यथायोग्य कहना ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

|| श्री राम ||

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय कापू !

द्वारकाधाम

आशीर्वाद !   दिनांक : २१-११-५५

तुम्हारा पत्र मिला समाचार मालूम हुआ । मनुष्य अल्पबुद्धि से सोचता कुछ और है, किन्तु दयालु प्रभु करते कुछ और ही हैं कारण कि अबोध बालक अपने अल्पबुद्धि के कारण अपने हित अनहित का पूरा पूरा निश्चिय नहीं कर सकता । अतः कभी कभी हित को अनहित और अनहित को हित मान बैठता है जैसे अग्नि की लपट, सर्प का फण देखकर उसे रमत की कोई सुन्दर वस्तु समझकर उसे पकड़ना चाहता है किन्तु यही नहीं समझता की वह मेरा जीवन का भी नाश करने वाला है किन्तु सुतवत्सलता करुणामयी माता को तो ज्ञान है और वह उसी ज्ञान तथा स्नेह के आधार पर सतत उस अवोध बालक के लिए हित में ही निरत रहती हैं - इसी प्रकार जब हम अपने को एक अबोध, अल्पज्ञ, दीन अनाथ, असहाय, बलहीन समझकर अनन्य भाव से जब उस जगत जननी रुप परमात्मा की अनन्य शरण ग्रहण कर लेते हैं उस समय परम कृपालु, अतिशय दयालु, करुणानिधान प्रभु हमारे हित का, रक्षण का समस्त भार अपने उपर ले लेते हैं सदैव दया ही, रक्षा अनिष्टो से करते रहते हैं ऐसी अवस्था में हम जिस वस्तु की प्राप्ति की प्रबल इच्छा रखते हैं अगर मेरे लिए वह श्रेयस्कर नहीं तो प्रभु मिलने नहीं देते हैं इसी आधार पर पड़ा हूँ बिहार जाना नहीं हैं १२-१२-५५ को नारायण सरोवर जाना हैं विशेष श्री प्रभु इच्छा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

श्री राम

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू !

द्वारकाधाम

आशीर्वाद ! दिनांक : १३-११-'५१

श्री प्रभु कृपा से नूतन वर्ष का नूतन नित्य संदेशा भेजते हुए अपार हर्ष होता हैं। कि हम लोग आज लगभग पाँच छ वर्षो से जिस नूतन-दिव्य तत्व को हृदय में स्थान दिया है, वह श्री प्रभु कृपा से अमिट, अमर बने । उसी की परीक्षार्थ कि हम कहीँ तक आगे बढ़े प्रतिवर्ष नूतन वर्ष मनाया जाता हैं जिसके जीवन में बह नित्य नूतन दिव्य तत्वरुपी श्री प्रभुनाम हृदय में उतर गया हैं उसे चाहिए कि नये उत्साह, अदम्य उद्योग, अडिग विश्वास एवं अटूट श्रद्धा पूर्वक नूतन वर्ष में उसकी अभिवृद्धि के लिए यथार्थ रुप में प्रयास करे । वश ! श्री विजय मंत्र का सुदृढ़ आश्रय ग्रहणकर जीवन संग्राम में विजयी बने- भवसागर से जन्म, मरणरुपी भयंकर चक्कर से सदा के लिए मुक्त बन जाओं । यही शुभ कामना ।

"राम नाम कलिकामतरु, सकत सुमंगल कंद ।

तुलसी करतल सिद्धिसब, पग पग परमानन्द ॥"

विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारकाधाम

प्रिय काकू !

दिनांक : ६-६-५९

आशीर्वाद !

पत्र मिला समाचार मालूम हुआ । आम की पेटी एक आई आम सब ठीक ठीक है, इसके पहले एक पेटी आई थी उसका करीब १५ आम ठीक-

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

ठीक निकला बाकी सभी सड़ गया था, तरला का विवाह मंगलपूर्वक हो गया यह श्री प्रभु की कृपा । स्पेशल ट्रेन के प्रोग्राम की चोपडी प्रेमजीभाई से मिली होगी । अच्छा आदमी मिले और यात्रा में भाग लेवे इसके लिए यत्न करना चाहिए कारण कि इस ट्रेन का एक मात्र उद्देश्य समस्त भारत वर्ष के मुख्य-मुख्य स्थानो में श्री प्रभु नाम प्रचार, विस्तार करना ही हैं कम से कम ४०० पैसेन्जर चाहिए, तो ट्रेन मिले कारण की यात्रा की (Mileage) माइलेज बहुत हो गई हैं और टीकट दर कम छप गया है अब फेरफार करना ठीक नहीं लेकिन पैसेन्जर पूरा हो जाए तो काम- चल जायेगा । कम से कम खर्च और अधिक से अधिक सुविधा का प्रयास है आगे श्री प्रभु इच्छा । मात्रे रामजीभाई, मोहनभाई तीनो जेठाभाई, प्रेमजीभाई तथा अन्य सभी प्रेमीभाई बहनों को मेरा जय श्री राम साथ सूचना- गुरुपूर्णिमा को अखंड की पूर्णाहुति होगी आगे प्रभु इच्छा । नाम ही महान औषधि हैं भजन ही जीवन सार हैं । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारकाधाम

श्रीराम धर्मशाला

प्रिय काकू !

आशीर्वाद !

तुम्हारा पत्र मिला है । समाचार मालूम हुआ । श्री नारायण सरोवर तथा हरसिद्धिमाता की यात्रा बडे समारोह तथा आनन्दपूर्वक पूर्ण करके द्वारका वासियों के अति स्नेह तथा आग्रह वश पुनः द्वारका आना पड़ा यहाँ के लोगो की भावना, श्रद्धा तथा प्रेम अवर्णनीय हैं । बच्चा-बच्चा प्रेम में विभोर बन श्री प्रभु नाम स्मरण करते तथा नाचते हैं । श्री द्वारकापुरी के कोने-कोने से विजय मंत्र की ध्वनि अहिर्निश निकलती ही रहती हैं । मध्य भाग में ब्रह्मपुरी

में अखंड गत शनिवार से चालू है, प्रभु जाने कब तक चलेगा, कोई कहता है एक मास चलेगा, कोई कहता हैं दो मास चलेगा आगे श्री प्रभु इच्छा, तब तक अखंड चालू है, तब तक किस तरह बाहर जाया जाय, यह समझमें नही आती । पोरबंदर, छाया, जामनगर, कान्दीवली सभी जगह एक बार अपनी भी इच्छा जाने की तो बहुत है किन्तु जो प्रभु करें वही सत्य और शुभ है - इसी मे अपने को राजी रहना है अपने सत्संगीओं को बम्बई के हुल्लड का कुछ असर नहीं हुआ होगा ऐसी आशा हैं विशेष श्री प्रभु कृपा ।

सभी प्रेमियो, रामजीभाई, जेठाभाई, प्रेमजीभाई, मोहनभाई धनजीभाई सभी को जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जामनगर

प्रिय काकू !

आशीर्वाद ! दिनांक : २२-११-५३

तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मिला । तुमने जो कुछ लिखा वह सभी सूर्य, भगवान तथा संत के लिए अक्षरशः सत्य हैं किन्तु मैं तो न सूर्य ही हूँ और न संत ही, न भगवन्त ही । यह समदृष्टि और समवृति तो समर्थ में ही होती हैं । मैं तो एक साधारण पामर प्राणी श्री प्रभु प्रेम की भीख मागनेवाला हूँ फिर मुझ से ऐसी आशा किस प्रकार रख सकते हो मुझे, मात्र या अन्य किसी से कोई द्वेष या रोष नहीं वरन् मैं तो स्वार्थी हूँ अतः अपने स्वार्थ में अन्तर पड़ते देखकर वहाँ से हटना चाहता हूँ "स्वारथ सांच जीव कहँ ओहा, मन, करम, वचन, "रामपद नेहा" ।" अतः जिस व्यक्ति, जिस वस्तु या जिस स्थान से अपने स्वार्थ में अन्तर पडे छति होवे उसका त्याग करने की बात नहीं वरन् त्याग स्वाभाविक ही हो जाता है, यों तो श्री राम नाम के नाते

मेरे लिए सभी मान्य, पूज्य कारण कि गोस्वामीजी ने लिखा हैं तुलसी जाके मुखनते धोखे हूँ निकले राम । ताके पग को पगतरी मेरे तनको चाम । एलाहाबाद वाला हरिप्रसाद ओडीटर ने कुम्भ में ठहरने का सब बन्दोबस्त किया हैं और कई पत्र तथा तार भी भेजा हैं कि आप जब लिखे तो लेने को आऊँ या टीकिट का पैसा भेजू । अतः १४-१-५४ के दिन कम से कम दो दिन पहले पहुँचना चाहिए । अतः टाइम टेबल से देखकर सूचना करना कि इधर से सीधे जाने में ठीक होगा कि बम्बई अल्हाबाद एक्सप्रेस ठीक पड़ेगा । दायाँ पाँव में ब्लड सरक्लुलेशन बंद होने से सूजन तथा दर्द हो गया हैं इसीलिए बुखार भी आया था अब ठीक हैं कमजोरी है विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू मात्रे तथा बालगोपाल !

लोहाणा विद्यार्थी भुवन, पोरबंदर,

आशीर्वाद !

दिनांक : १७-८-५९

श्री प्रभु की लीला क्या होती हैं ? यह कौन जाने ? कभी न होने वाली घटना भी पल भर में संघटित हो आती है और कभी पूर्ण निश्चित भी अनिश्चित, असंभव बन जाती हैं? यही तो श्री प्रभु की विशेषता है यह उसकी भगवत कृपा के अनुसार जो अपना जीवन क्रम बनाता है उसका जीवन धन्य बनजाता है । उसी परम प्रभु की परम कृपा के फल स्वरुप श्री प्रभु की परम प्रेरणा आज से तीन दिवस के पहले पोरबंदर से पांच मील दूर अेक स्थल में जहाँ म्युनिसिपेल्टी का बड़ा तालाब भी हैं जिसका नाम "सुकालातालाब" के बाजू में कोई गांव बस्ती नही अेक विस्तृत मैदान पड़ा हुआ हैं वही पर श्री जन्माष्टमी के तीन-चार दिन बाद एकादशी या द्वादशी से एक झोंपडी

आदि कर १००८ दिवस अनुष्ठान में बैठ जाते श्री श्री प्रभु प्रेरणा है आगे श्री प्रभु कृपा । इसलिए अगरबत्ती मोटी जिसका नाम पंढरपुर [illegible] है और हरि ओपनादास दामोदरदास अगरबत्तीवाला भागवतवाला बम्बई-२ के यहाँ मिलती है वहीं से मंगवा कर यथा समय भेजने का प्रयास करना, साथ ही कपूर की मोटी टिकिया आती है, पहले हनुमान वाडी में भेजा था वह भी हो सके तो भेजना । मग खाने का है कोई विशेष इंपोर्टेंट नहीं है । विशेष श्री प्रभु कृपा । यहाँ अखंड चल रहा है और प्रेमियों का ऐसा ख्याल है अनुष्ठान की पूर्णाहुति तक चालू रखेंगे । श्री द्वारका धाम में अक्षय तृतीया से अखंड चल रहा है । मात्रे यहाँ से गया तो पहुँच कर भी उत्तर नहीं लिखा - ऐसी उदासीनता संसारी के लिए ठीक नहीं, मुझे तो कुछ नहीं, यहाँवाले कहते है । कि देखो ! मात्रे साहब ने ओक पत्र भी नहीं लिखा । भगवत् के नाते सब अपने है और भगवत् प्रेमियों से अपना सम्बन्ध प्रेम बनाये रखना उचित है । सभी प्रेमियोको मेरा जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

सुदामापुरी

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद ! दिनांक : २२-२-६२

श्री प्रभु कृपा से जीवोंके भयंकर संकट का आतंक दूर हो गया है किन्तु भविष्य के लिए तो महान संकट का क्षेत्र तैयार हो रहा है कारण कि ज्योतिषियोंकी भविष्यवाणी (अष्टग्रहपति का अनिष्ट परिणाम) उनके कथनानुसार प्रगट न होने से लोगो में शास्त्र, ब्राह्मण, संतो तथा ईश्वर के प्रति एक अविश्वास, अश्रद्धा सी हो गई हैं जो भौतिकवादी लोग हैं वे तो यहाँ तक कहने लग गये हैं कि देश के लिए एक बहुत बड़ी उपाहास की स्थिति आस्तिको

द्वारा उपस्थित की गई है इतने-इतने यज्ञ करके घी अन्न की बर्बादी की गई जो शास्त्र तथा संत मतानुसार बहुत अंशमें सत्य प्रतीत होता है कारण कि कलिकाल में "जप यज्ञ" यानि प्रभु नाम स्मरण के अलावा जीव मात्र के कल्याण का कोई दूसरा साधन ही नहीं, फिर भी शास्त्र के जाननेवाले पंडित, ब्राह्मण, सन्यासी, साधु नाम का इतना महत्त्व वाणी द्वारा, प्रवचन द्वारा तो बतलाते हैं किन्तु अमल में लाते नहीं, जिससे आम जन समाज की प्रवृत्ति उधर होती नहीं, सीर्फ अपने स्वार्थ पोषण के लिए ही यज्ञ या कथावार्ता आदि का विशेष आयोजन करते हैं जिससे जनता के जीवन में किसी प्रकार का अभ्यास या निष्ठा बन नहीं पाती। स्वामी रामतीर्थ ने बहुत पहले इस प्रकार अग्नि में घी वगैरेह डालकर यज्ञ करने का विरोध किया हैं किन्तु बम्बई, अहमदाबाद, कलकत्ता जैसे बड़े-बड़े नगरो के घनी -मानी लोगो को तो अपने धन के बल पर ही ईश्वरीय विधानों को पलट देने का विश्वास है और इसी मिथ्या विश्वास, धारणा के आधार पर प्रभु भजन का विशेष आयोजन न करके सर्वत्र यज्ञ ही यज्ञ का आयोजन किया गया, उसका परिणाम दोनो प्रकार से घातक ही सिद्ध हुआ। अगर ग्रहो का अनिष्ट परिणाम आ जाता तो भी भौतिकवादी, अविश्वासी, अश्रद्धालु लोग कहते कि यज्ञ वगैरेह से क्या हुआ ? जो होना था वह तो हुआ ही और अभी जब कुछ भयंकर परिणाम नहीं आया तौ भी लोग कहने लग गये हैं कि यह तो एक पंडितों की, ज्योतिषियो की एक धन कमाने की युक्ति थी होने जानेवाला कुछ नहीं था। कहने का आशय यह हैं कि इस अष्ट ग्रह योग का प्रत्यक्ष अनिष्ट परिणाम भले ही अभी न हुआ हो और उसका कारण चाहे जो भी हो किन्तु इतना तो अवश्य दीखता हैं कि इस अष्ट ग्रह योग से परोक्ष रुप में लोगो में जनता में ईश्वर धर्म अश्रद्धा, अविश्वास बढ़ेगा ही और अनीति अत्याचार, दुराचार का प्रचार होगा जो भी हो जो सच्चे भाव से विवेक पूर्वक, समझपूर्वक धर्म तथा ईश्वर में भावना आस्था रखने वाले हैं उनकी निष्ठा तो किसी भी परिस्थिति में टूटने वाली नहीं कारण कि भक्त तो

हर हालत को अपनी प्रत्येक जीवन परिस्थिति को श्री प्रभु का मंगलमय विधान
ही मानता हैं इसी आधार पर इस आतंक काल में प्रभुनाम स्मरण खूब हुआ
और अभी चालू ही है । श्री बेटधाम से लेकर श्री सुदामापूरी तक अखंड यज्ञ
चालू था और अभी भी रतनपुर, छाया, पोरबंदर श्री द्वारकाजी चालू ही है
। श्री सुदामापुरी के आजु बाजू के गाँवो में काफी सुन्दर प्रचार हुआ हैं मैं
तो गाँवो में ही फिरता रहता हूँ इधर उधर से आते जाते वक्त पोरबंदर अखंड
दर्शन कर जाता हूँ कुंभ का मेला हैं । शान्ति प्रसादजी महाराज, श्री
आनन्दाबाबा, संस्था के महंत का कुछ दिनो से अपने साथ प्रेम बहुत दिखलाते
हैं जामनगर अभी दो वक्त उन्ही के यहाँ गोपाल भुवन में उतारा भी था किन्तु
कितना भी कुछ करे रागी कभी भी विरागी का महत्त्व समझ नहीं सकता,
ऐसे लोग तो कंचन के दास होते हैं और पैसा वालो के ही सेवक होते हैं
- साधु महात्माओकी सेवा तो क्या बन सकती है इसका नमूना उनके आश्रम
मैंही देख लिया उनका पत्र बहुत आग्रह पूर्वक है कुम्भ में आने के लिए और
साथ ही रहने के लिए किन्तु वे रहेंगे नानजी कालीदास शेठ के स्थान जिससे
अपना कोई सम्बन्ध नहीं अतः तुम्हारा कोई हरद्वार में परिचित स्थान होवे और
रहने का स्वतंत्ररुप में मिले तो जावें और नहीं तो अवकाश होवे तो जैसे कईक
कुम्भ का दर्शन साथ रहके कराये वैसी कुछ व्यवस्था हो सके तो जाकर दर्शन
कर लिया जाए और लौट आया जाए जैसा नासिक, उज्जैन में किया था जैसा
होवे वैसा लिखना । कुम्भ में जाने का कोई विशेष आग्रह नहीं है जैसी प्रभु
इच्छा । अगर वहाँ स्वतंत्र जगह मिले तो कुछ दिन ठहरें नहीं तो तुम्हे अवकाश
होवे तो जैसा नासिक उज्जैन का कुम्भ किया था साथ में जावे दरस परस
करके लौट आवें । लीडवाली पेन एक अच्छा भेज ना । लिखने में दिक्कत
होती हैं । सभी प्रेमियो को जयश्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

श्री द्वारकाधाम

आशीर्वाद !

दिनांक : १७-३-६२

तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । उत्तर में कल्ह बाबूने एक पत्र भी लिखा है । अब मेरा विचार श्री प्रभु प्रेरणा से कुम्भ जाने का नहीं है । जगह के लिए ही जब इतनी परेशानी है तो वहाँ रहकर क्या विशेष लाभ होगा ? और किसीका असाधारण एहसान लेने की क्या आवश्यकता हैं ? अब स्थान के लिए किसी को आग्रह नहीं करना और कुम्भ में जाने का भी आग्रह नहीं रखना । में यहाँ कुछ दिन रह कर पोरबंदर जाऊँगा । वहाँ संकीर्तन भवन का उद्घाटन अक्षय तृतीया को होनेवाला है, उसके बाद ही श्री द्वारकाधाम के अखंड धून की पूर्णाहुति होगी । विशेष श्री प्रभु कृपा । सभी प्रेमियो को जयश्री राम कहना । रतनपूर में होली बाद पूर्णाहुति होने वाली है इसी से पोरबंदर जल्दी जाना पड़ेगा । मात्रे, प्रेमजीभाई, कान्दीवल्लीवालों को जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू, मात्रे, वल्लभदास, हरिकिशन !

जामनगर, सौराष्ट्र

आशीर्वाद !

पत्र मिला, पढ़कर प्रसन्नता अत्यन्त हुई । तुम्हारा हृदय कोमल है, बालवत् हैं इसलिए सदैव उसमें बाल भाव या बाल हठ ही उठता है और उठना स्वाभाविक भी हैं लेकिन क्या करूँ, अनेक प्रयास तथा प्रार्थना करने पर भी

मेरा हृदय वैसा बन नहीं पाता है । अगर श्री प्रभु कृपा से बन जाये तो जीवन
भी सफल बन जाय लेकिन यह तो किसी और के हाथ की बात है बनना,
बिगड़ना भी उसके चरणों के आश्रित है यही कारण है कि हमेशा तुम्हारे कोमल
हृदय को दुखाने का अपराध मुझे करना पड़ता है सदा शरीर द्वारा मिलते रहने
की भावना तो खोटी हैं, मिथ्या है तथा प्रकृत्ति विरुद्ध हैं क्योंकि शरीर अनित्य
और क्षण भंगुर है तो इसका नित्य सम्बन्ध किस प्रकार सम्भव हो सकता है
अतः उसी नित्य शुद्ध, वुद्ध अखंड सत्य से जुटे रहो तो हमे तुम्हें नहीं प्रत्युत
अनन्त जीवों को नित्य जोड़े हुए है तथा जिस शरीर संसार के संयोग तथा
सम्बन्ध से ही जो बिछुड़ा हुआ दिखता हैं अतः इस व्यवधानरुप एवं शरीर
संसार को हटाकर देखोतो उस अखंड अविनाशी, नित्यशुद्ध, बुद्ध चेतन के
आश्रय हम नित्य मिले ही हुए है और मिले ही रहेगें । अगर हमारा खोटा
कर्म विपाक तथा हमारी खोटी धारणा संयोग वियोग करा रही है तो कराती
रहे हमतो नित्य मिले हुए है और नित्य रहेगे - इसी बीच अगर प्रभु कृपा
मिला तो भी हमे कोई बाधा नहीं- न मिलावे तो भी हमे कोई चिन्ता नहीं
अतः किसी भी परिस्थिति में उस नित्य मिलन के स्तम्भ को न छोड़ो, उस
आधार से मुँह न मोड़ो तथा उस एक मात्र अवलम्ब को न तोड़ो बस सब
बना बनाया ही है । विशेष श्री प्रभु कृपा । लेख छपवाने की बात हमें अभी
जचंती नहीं है पीछे देखा जाएगा - हो सका तो तीसरा लेख भेजूँगा अपने
परिवार तथा समस्त प्रेमी मंडल को यथायोग्य आशीर्वाद तथा जय श्री राम
यह संदेशा सबके लिए लागू है ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा प्रेमीजन !

श्री हरिद्वार

आशीर्वाद ! दिनांक :१८-६-६१

श्री प्रभु कृपा से आनन्द हैं इसके पहले मैने दो पत्र दिये हैं । आज दिल्ली से टीकट रीजर्व होकर आ गई । सोमवार तदनुसार २१-६-६१ शाम को ७ बजे पालम (दिल्ली) से प्लेन छूटती हैं फ्लाईट नंबर १८२ उसी में आ रहा हूँ । मेरे साथ श्री मस्तरामजी महात्मा भी हैं । वे ही टीकीट रीजर्व करा कर लाये हैं । मैंने तो ट्रेन के लिए कहा था और ट्रेन की टीकिट मिल भी रही थी फिर भी प्लेन की ही टीकट ले आये जैसी श्री प्रभु इच्छा । एक टीकीट २३२ रुपये की है आशा है पत्र भी मिल ही जायेगा । बाद में टेलीग्राम भी दे दूँगा । मात्रे , प्रेमजीभाई, बाबूभाई जानी दहिसरवाले को भी सूचना कर देना । विशेष मिलने पर । श्री प्रभु कृपा । आज ही टेलीग्राम भी भेज रहा हूँ ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बालगोपाल ! रेलवे न्यु कोलोनी,

साबरमती, अहमदाबाद -१८

आशीर्वाद ! दिनांक १४-९-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनंद हैं । महुवा से मैं १०-९-६८ को रात्रि १ बजे आ गया हूँ यहाँ आते ही तुझे पत्र दिया था । १३-९-६८ का लिखा हुआ पत्र आज अभी मिला हैं । देवदत्त मेरे साथ ही है फिर जामनगर पत्र लिख रहा हूँ कि समन्स आवे तो देवदत्त को यहाँ सूचित करे । अगर तुझे

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

२०-९-६८ को केस खुलने का पक्का निश्चिय हो जाए और हम लोगो को आना ही पड़े ऐसा हो तो यहीं नीचे पते पर तार करना - बी.के. मकवाना, न्यू रेल्वे कोलोनी, साबरमती, अहमदाबाद -१९, या सेन्ट्रल जेल साबरमती उदयमान पांडे फोन न. ६०३२ फोन करना । अेक ही दिवस में केस का फैसला हो जायेगा ? या अधिक समय लगेगा ? अगर दूसरी तारीख पड़े तो पहेले से सूचना कर देना जिससे कहीं प्रोग्राम नहीं रखा जाएगा । इसके बाद शायद २८-९-६८ से ७ दिवस का प्रोग्राम जूनागढ़ का होनेवाला हैं अगर उस बीच केस की तारीख पडे तो प्रोग्राम बंद रखा जाएगा । विशेष श्री प्रभु कृपा सर्भी प्रेमियों को जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

पालडी, अहमदाबाद

श्री पुष्पनाथ महादेव

दिनांक २७-९-६८

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द हैं । रेल्वे न्यू कोलोनी के ४० दिवस अखंड की पूर्णाहुति नगर कीर्तन बडे धूमधाम के साथ हो गई राणीप के ४० दिवस के अखंड के नगर कीर्तन से भी यहाँ का नगर कीर्तन विलक्षण ही हुआ । कोलोनी के पूर्णाहुति के बाद यहाँ पालड़ी (म्यूजीयम के पास) श्री पुष्पनाथ महादेव में अखंड हो रहा है इसकी पूर्णाहुति आज रात्रि को दश बजे होगी और कल २८-९-६८ को सोमनाथ मेल में जूनागढ़ जाऊँगा वहाँ परसों रविवार २९-९-६८ से आगामी रविवार ६-१०-६८ तक सात दिवस का अखंड है और उसी दिन पूर्णाहुति भी है नगर कीर्तन भी होगा । गत वर्ष वेरावल श्री गुरु महाराज की तिथि के बाद जूनागढ़ में अखंड बड़ा ही जोरदार हुआ था और

नगर कीर्तन भी बड़ा ही भव्य निकला था किन्तु उस समय फिल्म नहीं लिया जा सका । शायद इस बार उसका भी आयोजन हो ऐसा लगता हैं तो पहेले से निश्चित करके खबर कर देना जिससे पूर्णाहुति में वापिस आ सकू । अगर बन सके तो इन्सपेक्टर से मिल के ऐसा कहना कि स्वामीजी का कोई निश्चित तो रहता ही नहीं हैं कि कब कहाँ जाए, द्वारका तो कहने के लिए एक स्थान हैं । वो तो बराबर फिरते ही रहते हैं । अगर मान जाए और मुझे छुटकारा कर दे तो अच्छा, नहीं तो आने के लिए तो तैयार ही हूँ । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बालगोपाल ! महुवा

आशीर्वाद ! दिनांक ३-४-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनंद मंगल है । श्री नाम महाराज के प्रताप से ही दिन प्रतिदिन उनका संस्कारी पुण्यशाली आत्माओं के कित्यार्थ प्रचार प्रसार विलक्षण रुप से होता जा रहा हैं अब तो जब जहाँ अखंड होता हैं वहाँ तो अभूतपर्व कल्पनातीत आनन्द मंगल होता हैं सात दिवस धोलका अखंड का प्रभाव वहाँ कुछ विलक्षण ही हुआ । यहाँ भी बड़े उत्साह, उमंग, उल्लास के साथ अखंड चल रहा हैं यद्यपि यहाँ विद्यार्थीयों के परीक्षा का समय है फिर भी २ बजे रात्रि पर्याप्त मानव मेदिनी रहती हैं जय श्री भाई की माताजी पोरबंदर से आई थी और वहाँ का वातावरण देखकर बहुत प्रशन्न हुई एसा रामजी भाई कहता था उस समय लखुभाई भी वही थे । श्री द्वारका संकीर्तन मंदिर का उद्घाटन श्री गुरुपूर्णिमा या गुरुतिथि पर करने का विचार सबका था हरिदास काभी विचार था कि संकीर्तन मंदिर तैयार हो जावे तो श्री

गुरुपूर्णिमा पर उसका उद्‌घाटन कर देंगे और बाद उसका काम होता रहेगा किन्तु मुझे अच्छा नहीं लगा कारण मंदिर में जो चित्रकारी पेटिंग वगैरह काम रह जायेगा तो इसकी क्या शोभा होगी ? श्रावण भादोमें नई मकान का शायद उद्‌घाटन भी नहीं होता हैं । अतः शान्ति से सब काम हो जावे तो उद्‌घाटन का उत्सव कार्तिक या मार्गशीर्ष में रखा जाए ऐसा सबका विचार हैं। यहाँ के बाद सात दिवस महेसाना का प्रोग्राम हैं उसके बाद बम्बई आने का विचार है अगर जमात साथ में रहा तो नहीं आना होगा । रामजी भी आने को लिखा हैं देवदत्त हैं एक दूसरा लड़का प्रवीण है, उस समय जैसा होगा देखा जाएगा । सभी प्रेमियोको जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री नरसिंह धाम हरिद्वार

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद !

दिनांक ९-६-६५

श्री प्रभु कृपा ही जीव के कल्याण का अेकमात्र आधार हैं । उसीके आश्रय प्राणी मात्र का जीवन संचालन हो रहा है तुम्हारा पत्र मिला था किन्तु कई कारणो से पत्रोत्तर देने में विलम्ब हुआ । हरिद्वार से पत्र काश्मीर लिखने का था किन्तु यहाँ आकर तो मैं बिलकुल लाचार ही बन गया । इसी कारण मैने सोचा तुम थोडे दिनों के लिये यात्रा का आनन्द लेने गये हो तो अपने दुख की कहानी कहके तुम्हारे आनन्द में विघ्न क्यों डालू । आशा है जैसा कि प्रेमजीभाई ने लिखा है कि तुम लोग ६-६-६५ तक बम्बई पहुँच जाओगे इससे तुम अवश्य ही सुखपूर्वक पहूँच गये होगे अभी मेरा बिलकुल ठीक नहीं हुआ है लगभग घाव भर चुका हैं दो-तीन दिन और समय है श्री प्रभु कृपा से ठीक हो ही जायेगा । टीकट मिलने के अनुसार चाहे १३-६-६५ को या १५-६-६५

को यहाँ से बम्बई रवाना होने को विचार है । पूर्ण निश्चय होने पर टेलिग्राम
करुँगा इसके अलावा मद्रास का अपना एक प्रेमी १२-६-६५ को बम्बई आ
रहा है और वहाँ से उदयपुर जाएगा । उसको मैने लिखा था कि १५-६-६५
को बम्बई में मिलूँगा किन्तु उस समय तक तो मेरा पहूँचना हो नहीं
सकता । तुम्हारा टेलीफोन का घर का नंबर दिया हुआ है अगर फोन करे तो
मेरा समाचार तथा अपना पूरा पता दे देना । उसका नाम एस.वी. सुब्रमनीयम
ओफ गोपालम विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

रतनपुर

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

दिनांक १-१-६५

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है । तुम लोगों का समाचार मिला
श्री प्रभु की जब जैसी इच्छा होती हैं वही होता है । भगवान का विधान श्री
विलक्षण ही है । तुम्हारा दो पत्र मिला किन्तु यथा समय पत्रोत्तर नहीं भेज
सका, इसका कारण यह था कि अभी ग्रामो ग्रामो में फिरना पड़ रहा है ज्यों-
ज्यों निवृत्ति होने की इच्छा करता हूँ त्यों त्यों प्रवृत्ति श्री प्रभु कृपा, प्रेरणा से
बढ़ती ही जा रही है । काल का प्रभाव प्रतिदिन भयंकर होता जा रहा है ।
अब ऐसा प्रतीत होने लग गया हैं कि किस प्रकार कलिकाल अपने प्रभाव से
मनुष्य का मनुष्यत्व हरण करता जा रहा है । पोरबंदर में वैशाख मास से चालू
अखंड की पूर्णाहुति पन्द्रह सोलह तारीख को है उसके बाद अहमदाबाद में
लगभग २६-१-६६ के बाद श्री राम मंदिर में ९ दिवस का प्रोग्राम है साथ
ही प्रयाग राज से श्री १०८ स्वामी गोलमोल और शशीकान्त सच्चिदानन्द का
भी प्रयाग कुम्भ में आने का अति आग्रहपूर्ण पत्र आया हैं जामनगर में अखंड

चालू है। द्वारका में एक वर्ष से चालू अखंड के अलावा अभी गल्ली-गल्ली में जुदा-जुदा डेढ़ मास तक अखंड चला और १०८ दिवस का अखंड का निश्चिय हो गया है कल्ह यहाँ पूर्णाहुति है फिर कुतियाना, पाटन रतनपुर गीतामंदिर पोरबंदर में प्रोग्राम हैं । बाद में अपने सत्संग मंडल में अखंड की पूर्णाहुति है । सभी प्रेमियो को जय श्री राम। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

सुदामापुरी

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

लोहाणा बोर्डिंग, पोरबन्दर

दिनांक ७-५-६१

आशीर्वाद !

श्री प्रभु-कृपा से सब आनंद मंगल हैं श्री बेट मंत्र मंदिर का समारोह खर्च की ब्योरा हरिदास सेठ ने भेजा होगा या वहाँ रुबरु कहेगा मेरा ऐसा अन्दाज हैं । जैसी बाते जयन्ती, हरिदास वगैरह करते थे इससे अनुमान होता हैं कि आय व्यय बराबर हो जाएगा जैसा कि पहले बात-चीत हुई थी उसके मुताबिक जयन्ती का काम उस फंड में से नहीं हो सकेगा तत्कालिक तुम्हारा प्लेन फेर का पैसै जो छगन पटेल के पास बचा था उसमें से १०० दिलवा दिया है आगे के लिए तुम और जोशी विचारकर लेना। हरिदास वाघेरिया भी आजकल बम्बई में है और शायद दस-पन्द्रह दिवस वही रहेनेवाला हैं जो मिल जावे तो सभी बात-चीत कर लेना । चि. कामेश्वर इधर तीन व्यक्तियो के साथ ६-५-६१ को कान्दीवल्ली पहुँच गया हैं शायद तुम्हारे बम्बई पहुँचने तक वही ठहरेगा फिर तुम से मिलकर दिल्ली होकर लौट जायेगा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

अहमदाबाद

दिनांक १८-४-६६

आर्शीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। श्री प्रभुनाम का प्रचार प्रसार भी कल्पनातीत चल रहा हैं। श्री डाकोरजी की भी पैदल यात्रा बडे ही आनन्दपूर्वक हुई। बीच में भरुच से ९ दिवस के अखंड के लिए समाचार आया था किन्तु अभी तक पुनः कोई निश्चित समाचार न आने के कारण ही अभी तक तुम्हे कोई समाचार नहीं दिया था। ऐसा विचार था कि अगर भरुच जाना होगा तो वहाँ से बम्बई अवश्य ही जाऊँगा क्योकि वहाँ से नजदीक है। किन्तु उसका पीछे से कुछ समाचार न आने से और यहाँ पर अखंड चालू होने से पत्रोंत्तर न दिया जा सका। परसो द्वारकावाला गिरधारी तुम्हारा पत्र लेकर आया था। आज तुम्हारा पत्र पोरबंदर से रीडायरेक्ट होकर आया है और हरिदास भी आज बम्बई से आया है और अभी द्वारका जा रहा है। मैं तो लगन प्रसंग में कहीं जाता ही नहीं हूँ यह तो तुम्हे अच्छी तरह मालूम है फिर आग्रह करने की क्या आवश्यकता है ? अगर शायद उस समय तक बम्बई आ भी जाऊ तो भी लगन प्रसंग में तो आना ही नहीं होगा, अभी बाबूभाई रंगरेज के लडके का विवाह था तो भी नहीं गया। द्वारका में हाजिर होने पर हरिदास की लडकी के लगन प्रसंग में नहीं गया। जोशी की लड़कियों के लगन प्रसंग में जामनगर था तो भी नहीं गया। तो इसबार मोहनलाल की लड़की के लगन प्रसंग इरादा पूर्वक जाना किस प्रकार हो सकता है आशीर्वाद तो हृदय का उद्‌गार है शरीर का नहीं। २४-४-६६ तक यहाँ प्रोग्राम है। मेरे साथ दो थे उसमें से एक चला गया एक है जैसा होगा वैसा लिखूँगा। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

पोरबंदर

आशीर्वाद ! दिनांक ८-१२-६५

श्री प्रभुकृपा से सब आनन्द हैं। श्री द्वारका धाम में देढ़ मास तक गल्ली-गल्ली में एक दिवस में तीन-तीन चार-चार जगहों पर अखंड चलता रहा। सबसे अन्तिम दिन श्री द्वारकाधीश प्रभुकी कृपा प्रेरणा से उनके सानिध्य मे २४ घन्टे का अखंड यज्ञ पूर्ण करके गत रविवार ता. ५-१२-६५ को श्रीभक्तराज सुदामाजी के दर्शनार्थ श्री सुदामापुरी में आ गया हूँ। यहाँ कुछ समय तक रहने का विचार है, आगे श्री प्रभु इच्छा। श्री द्वारकाजी से एक पत्र लिखा था किन्तु अभी तक उसका कोई जवाब नहीं आया- पता नहीं तुझे पत्र मिला या नहीं ? ऐसा अनुमान होता हैं कि इस समय तुम्हारी पहले की अपेक्षा प्रवृत्ति बहुत ज्यादा बढ़ गई है। जिस कारण से एक पत्र लिखने का भी अवकाश नहीं मिलता। खैर ! कोई बात नहीं जब जैसी प्रभु की इच्छा। शाह डॉक्टर के इलाज से तो अभी तक अच्छा था किन्तु द्वारका में अत्याधिक ठंडी लगजाने से कुछ विकृति और वृध्दि सी हो गई थी। साथ दूसरी तरफ दर्द होता था किन्तु सर्दी कम हो जाने पर अपने आप अभी ठीक है किन्तु ऐसा मालूम पड़ता है कि समय पाकर फिर पानी भर जाएगा। अगर शाह डॉक्टर मिले तो मेरा जय श्री राम सह समाचार उनसे कहना। विशेष श्री प्रभु कृपा। सभी प्रेमियो को जय श्री राम।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

श्री नृसिंह धाम,
श्रवणनाथ नगर, हरिद्वार

आशीर्वाद !

दिनांक १०-६-६५

श्री प्रभुकृपा से सब आनन्द है । तुम आनन्द पूर्वक यात्रा करके आ गये यह भी विशेष खुशी की बात है । कल्ह तुम्हारी खूब राह देखने के बाद एक पत्र भेजा और यहाँ सबों से कहा भी कि आज पत्र भेज रहा हूँ उधर से भी काकू का पत्र या खबर आज आ ही जायेगी और ठीक वैसा ही हुआ कल्ह रात को मैं मंदिर में पाठ कर रहा था कि तुम्हारा तार आया। यह सब सच्ची लगन, पवित्र प्रेम तथा अन्तःकरण की निर्मलता का ही परिणाम है । अब घाव बिल्कुल भर चुका है । दो तीन दिन की कसर हैं नस पर आपरेशन होने से जब तक पूरा जख्म ठीक न हो जाएगा तब तक चलना-फिरना ठीक नहीं ऐसा डॉक्टर कह रहा है उसकी राय हैं कि २०-६-६५ को जावे । अतः तीन चार दिन यहाँ रहकर जभी डॉक्टर कहेगा तभी १३ या १५ या १८ को यहाँ से दिल्ली जाने का विचार है और वहाँ जब जिस गाड़ी का रिजर्वेशन मिल जायेगा उसमें २०-७-६५ के लगभग वहाँ आ जाऊँगा । अगर प्लेन की टीकट मिल जायेगी तो प्लेन में आ जाऊगा रामेश्वर से वैकुन्ठबाबू के साथ जो राजदेव बाबू खैरवा वाले आये थे वही आज लगभग दो मास से साथ है । श्री वृन्दावन में ही रामनवमी के दो तीन दिन पहले आ गया था । सब सामान, चावल, घी वगैरेह ले आया था यहाँ तो इसने जो तन, मन, धन से सेवा की है उसका वखान करने में लेखनी रुक जाती है । उसका भतीजा बिजली बाबू जो उनके साथ ही था उसने भी लिखा है कि जब तक महाराजजी को बिल्कुल अच्छा न हो जाये तब तक आप साथ ही रहना टीकट का पैसा भी लगभग २०० रुपया

है एक महात्माजी जिनके यहाँ वृन्दावन में ठहरा था, श्री मस्त रामजी भी बम्बई साथ आने वाले हैं उन्हों ने कहाँ पैसे की जरुरत नहीं सब हो जाऐगा । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू

आशीर्वाद !

आज तुम्हारा पत्र मिला। कल्ह ही मैने राह देख-देखकर पत्र लिखा । अभी मैं परमहंस आश्रम में ही हूँ । बहुत आनन्द है वृजभूमि तो वृज भूमि ही हैं । अभी यहाँ का बाहरी प्राकृतिक दश्य श्री प्रभु की स्मृति कराकर उनकी कि विस्मृति को सतेज बनाकर प्रेम विभोर बना देती है जहाँ जंगल में जाकर बैठो वही नेत्रो झड़ी लग जाती है । ऐसा प्रतीत होता है । श्री प्रभु गौओ के पीछे दौड़े जा रहे हैं । अब तो श्री वृन्दावन विहारी लालजी की मर्जी । कब तक अपनी शरण में रखेगे । कल्ह से नवरात्रि शुरु होती हैं अतः कल से नौ दिवस के लिये नियम में बैठ जाउँगा । बाद में श्री वरसाने की यात्रा करने का विचार है देखे श्री राधामइया कब कृपा करती है । श्री प्रभुदत्तजी के यहाँ न जाने का कुछ क्षोभ नहीं हैं । यहाँ सब आनन्द है अभी तो किसी चीज की आवश्यकता नहीं कारण दिन में भिक्षा करता हूँ साम को कमलादेवी भेज देती है । गीरधारी दिन में एक वक्त बना लेता हैं । दूसरा कोई खर्च है नहीं । बेचरदास बिमार होकर चला गया द्वारका । विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद !

श्री प्रभुकृपा से सब आनन्द हैं । तुम्हारा मुजफ्फरपुर से लिखा हुआ तीन पत्र एक ही साथ पोरबंदर में मिला । समाचार मालूम हुआ उसके अलावा तुम्हारे सभी पत्र पहले वाले कलकत्ते से लेकर कानपुर, फरुखाबाद, काठमांडू, सभी पत्र मिले जिसका जिक्र मैने मुजफ्फरपुर वाले पत्र में कर दिया था । जब मुजफ्फरपुर से तुम्हारा पत्र आया कि मुझे एक भी पत्र का उत्तर क्यों नहीं मिला तो मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ और बड़ी उत्सुकता भी हुई कि पत्र क्यों नहीं मिला ? अन्त में पत्र मिलने पर आनन्द हुआ । पोरबंदर संकीर्तन मंदिर की भोजनशाला बहुत ही सुन्दर वन गई है । उसका गृहप्रवेश मुहूर्त भी हो गया । महाराज श्री की तिथि महोत्सवतिथि वही रखने का निश्चय था किन्तु रामजी के उपर अधिक बोझ हो जाने के कारण वहाँ का प्रोग्राम रद् करके एक पहाड़ी इलाके के छोटा सा गाँव में रखा गया है । जामनगर जिला के जामजोधपुर तालुका रेल्वे स्टेशन से यह गाँव ६ मील दूर है, बड़ा ही रमणीय स्थल है । गतवर्ष पोरबंदर श्री गुरुपूर्णिमा के बाद ९ दिवस का अखंड रखा गया था । रामजीभाई के पास था वह पैसा वह पूजनीया माताजी की सौराष्ट्र यात्रा में तुम्हे सूचना दिये बगैर रामजीभाईने अधिकांश खर्चकर डाला । यह सूचित करते अति हर्ष होता हैं कि उस पैसे का सच्चा सदुपयोग हुआ । स्वास्थ्य अब ठीक है फिर भी थोड़ी कमजोरी सी है । श्री प्रभु इच्छा । रातदिवस पहले से भी अधिक यात्रा में दौड़धान तो चालू ही है । ता. ३१-८-६९ रविवार को १२॥ बजे सौराष्ट्र एक्सप्रेस से पालेज के लिये रवाना होना है वहाँ १-९-६९ से जन्माष्टमी तक अखंड हैं नवम को सबेरे अहमदाबाद जाना हैं वहाँ रसिक भगत की वार्षिक तिथि निमित्त नवम् से एकम् तक अखंड हैं उसके बाद बीज

या तीज को तिथि निमित्त फिर पोरबंदर जाना है तिथि के बाद बड़ौदा का प्रोग्राम होने वाला है और उसकेबाद शरदपूर्णिमा से या उसके चार दिनबाद से महुवा से २४ मील पर एक पहाड़ी में अनुष्ठान के लिए बैठने का विचार चल रहा हैं लेकिन अभी तक पूर्ण निश्चिय नहीं है । सभी प्रेमियों को जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा । प्रवीण ने पोरबंदर से पत्र लिखा होगा । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद !

अभी तुम्हारा पत्र मिला समाचार मालूम हुआ । कलह तक तुम्हारे पत्र का इन्तजार किया। आज मेरे साथ आनेवाले महात्मा दिल्ली गये है । वहाँ जैसा होगा कर कराके शुक्रवार तक पुनः यहाँ आयेगे । लगभग २० या २१-६-६५ तक की रिजर्वेशन के लिए गये हैं । जब प्लेन का किराया इतना ज्यादा है तो सम्भवतः वे प्लेन का रिजर्वेशन नहीं करायेगे । किसी भी ट्रेन की ही टीकट लेगे ऐसा मैं समझता हूँ कारण कि चलते वक्त उन्होंने मुझसे पूछा अगर प्लेन का किराया २०० तक होगा तो क्या रिजर्वेशन करा लूगाँ ? मैंने कहा अगर दो सौ तक हो या ट्रेन से सौ-पचास ज्यादा लगता हो तो करा लेना नहीं तो ट्रेन का ही कराना । इतना अधिक पैसे व्यर्थ खर्चकरने की कोई आवश्यकता नहीं । मेरा पाव अब ठीक हो गया है और स्वास्थ्य में तो न कोई गड़बड़ी थी और न है ही । इस घाव(गुमडा) की भी विचित्र कहानी है । श्री प्रभुकी लीला श्री प्रभु ही जाने, जैसे उनकी लीला, चरित्र का रहस्य, भेद समझना कठिन है वैसे ही उनकी न्याय स्वरुप कर्म की गति को भी

समझना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव सा ही है । इसी कारण श्री भगवान ने गीता में भी मुख से कहा है कि "कर्म की गति बड़ी गहन है" इसमें बड़े-बड़े बुद्धिमान, विद्वान पंडित भी मोहित हो जाते हैं कुछ क्रियायें तो ऐसी होती है कि समझ में नहीं आता कि यह श्री प्रभु की लीला है या अपने प्रारब्ध का भोग है । ऐसे समय में ही जीव मोहित, भ्रमित हो जाता है वह विचारने लगता है अगर श्री प्रभु कृपा से भी अगर प्रारब्ध धर्म ही प्रबल है तो प्रभु भजन या चिन्तन का अर्थही क्या? और अगर भजन का फल है तो अकारणा इतना दुख, व्यथा क्यों ? इस दुविधा में, भक्ति में पड़कर जीव अपना धैर्य, अपनी श्रद्धा अपनी निष्ठा खो बैठता है और पहले से भी अधिक दुख की चिन्ता की गहरी खाई में पड़ जाता हैं अतः भगवत आश्रित जीवों के लिए तो एक ही सबसे प्रशस्त राम मार्ग हैं । अगर सदा प्रसन्न रहने की शक्ति न हो तो उनसे इस प्रकार की शक्ति प्रदान करने के लिए हार्दिक याचना करे । यही जीवन है । श्री प्रभु मंगलमय है अतः उन्का प्रत्येक विधान जीव मात्र के मंगल के लिए ही है । ऐसा दृढ़ निश्चय करके प्रत्येक अवस्था में प्रसन्नतापूर्वक रहे इसी में जीवन का सच्चा सुख है बस खुश रहो आनन्द करो । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री जड़ेश्वर

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

शुभाशीर्वाद ! दिनांक २१-१०-६१

श्री प्रभुकृपा ही जीव मात्र के कल्याण का एक मात्र साधन हैं और उस कृपा प्राप्ति का अेक मात्र साधन इस कराल कलिकाल में श्री प्रभु नाम स्मरण ही हैं, यह परम सत्य सिद्धांत श्री द्वारका तथा जामनगर के लिए तो

अक्षरशः चरितार्थ हो गया हैं । नहीं तो जैसा अन्य जगहों में असुरों का अमानुषिक कृत्य चल रहा हैं वैसा यहाँ भी हो सकता था और उसका प्रतिकार भी कुछ नहीं था किन्तु श्री नाम महाराज की कृपा से सब मंगल हो हुआ और जो भी उनका आश्रय लिये रहेगा उसके लिये मंगल ही हैं- "रहना नहीं देशा विराना हैं" बस । श्री प्रभु कृपा से नूतन वर्ष मंगलमय होवे देश, राष्ट्र, विश्व का कल्याण होवे, प्राणीमात्र सुखी सानन्द बने,ओही श्री प्रभु प्रार्थना । श्री मात्रे तथा उसके बाल गोपाल सबको मेरा आशीर्वाद सह मंगल कामना । अन्य सभी प्रेमियो को भी यही संदेशा । प्रेमजीभाई, बाबूभाई दहिसर, मास्टर विल्ले पारला, हरिकिशन जाड़िया, बाबूभाई रंगरेज, जामनगरवाला, बोरीवल्ली तथा अन्य सभी प्रेमियो को यथायोग्य । अभी तक मोरबी के इलाके मे था अब पोरबंदर जाने का हैं पत्रोत्तर वही भेजना । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जामनगर

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

दिनांक ९-८-६८

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द हैं । श्री गुरुपूर्णिमा का महोत्सव बडा ही दिव्य हुआ । उत्सव के पूर्व ही तुम्हारा भागलपुर से भेजा हुआ वस्त्र प्राप्त हो गया था, ठीक गुरुपुजन के अवसर पर तुम्हारा तार भी प्राप्त हो गया था । परम पुज्य श्री गुरुदेव महाराज के पूजन में सर्व प्रथम तुम्हारा ही वस्त्र अंगीकार कराया गया । इस अवसर पर भाई राननेत, कामेश्वर, मेरे सबसे छोटेचाचा तथा पूजनीया माताजी भी अचानक ही आ पहुँची, जिससे लोगो के अन्दर सहस्त्रो गुणाधिक उत्साह बढ गया । पूज्य माताजी के शुभागमन से लोगों को अपार आनन्द आया । इस वार पालेज, महुवा, बगैरह स्थलों से बहुत अधिक संख्या

में प्रेमी गण आये थे। तुम्हारा हृदय द्रावक, अश्रुप्रवाह पत्र जो भी पढ़ता था उसकी थोड़े देर के लिए मति, गति छीनसी जाती थी लोगों के पढ़ने से सुनने वालों के आँखो में श्रावण की झड़ी लग जाती थी-सहसा बोल उठते थे कि काकूभाई का भाव प्रेम धन्य हैं तुमने लिखा कि इस बार मुझे इस दिव्य आनन्द से वंचित क्यो रखा गया ? वास्तव में तुम्हे वंचित नहीं रखा गया बल्कि यह दिव्य अनुभव कराया गया कि खुली आँखे समाधि कैसे लगती हैं, कब लगती है और उसका आनन्द कैसा विलक्षण होता हैं । संयोग में वियोग और वियोग में ही सच्चा संयोग का दिव्यानन्द अनुभव करने का श्री पूज्यवाद श्री गुरुदेव की ओर से एक अलौकिक अवसर प्रदान किया गया । पूज्यमाताजी के सौराष्ट्र के सभी तीर्थस्थानो का दर्शन कराया गया विशेष श्री प्रभु कृपा । माताजी यहाँ से ११-९-६८ को मुझफ्फरपुर जायेगी ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू !

श्री द्वारकाजी

आशीर्वाद !

दिनांक १५-६-५७

श्री प्रभु की लीला विचित्र है । कर्म की गति गहन हैं कुछ समझ नहीं पडता कि किस कर्म फलोदय के कारण जीव को कब क्या दुख सुख भोगना पड़ता हैं ? कब कैसा समय विताना पड़ता हैं ? और खास करके अब तो दिन प्रतिदिन कराल कलिकाल का भीषण तांडव नित्य प्रसरित होता जा रहा हैं, जहाँ देखो वही दुख, अशान्ति, आधि, व्याधि, उपाधि, रोग महामारी का भयंकर प्रकोप, फिरभी जीव अपनी कालकलुषित मनोवृत्ति को बदलता नहीं चाहता- मरणासन्न होते हुए भी औषध सेवन नहीं करना चाहता तो किया क्या जाए ? इस कलिकाल रुप महारोग से बचने का एक ही औषध हैं श्री

भगवन्नाम बस ! अन्य चिन्ता न करना विशेष श्री प्रभुनाम ही चिन्तन करना चाहिए और ऐसा समझना चाहिए कि रात दिवस मिथ्या विषयों, सुखों तथा पदार्थों के उपार्जन में अस्त व्यस्त होने से प्रभु भजन का अवकाश न मिलने का बहाना ढूढ़ने से, प्रभु ने बिमारी के निमित्त कुछ भजन करने का अवसर प्रदान किया है । हरिदास वाघेरिया सेठ तो बहुत थोड़े समय में प्रभु कृपा से स्वास्थ होकर आ गये हैं अखंड श्री प्रभु कृपा से सानन्द निर्विघ्न चल रहा है अन्य धार्मिक समारोह भी जगतगुरु शंकराचार्य जी के आश्रय चल रहा है मनुष्यो के बाहरी आवाग मन से यहाँ भी कुछ infelenja का प्रकोप हो रहा है आगे श्री प्रभु इच्छा । सुख शान्ति प्राप्त करो मानव जीवन सफल, सार्थक बनाओ भजन करो यही शुभ कामना । मात्रे प्रेमजीभाई, जेठाभाई सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

अहमदाबाद

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

दिनांक २८-२-६७

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । एक दिवस के लिये आया था किन्तु आज एक मास हो गया । जामनगर से शान्तिलाल और बच्चु भाई पटेल मोटर लेकर आज यहाँ लेने आये है । कल्ह या परसो यहाँ से जामनगर जानेवाला हूँ । शिवरात्रि तक वही रह कर, फोलडोल (होली) श्री द्वारकाजी करने का विचार हैं । उसके बाद अगर महुवा बंदर का प्रोग्राम, जैसा कि पहले से श्री रामनवमी के अवसर पर ९ दिवस अखंड महायज्ञ निश्चित है न हो सका तो श्री अयोध्याजी जाने का विचार हो रहा हैं । महुवा का प्रोग्राम की सम्भावना

नहीं जैसी है कारण कि रामभगत की मंडली उधर है और वे रामभगत को भी बुलाना चाहते हैं किन्तु रामभगत और अन्य डाकोर वाला मूलजी वगैरह श्री पुनित महाराज के भगत लोग इस समय पुनित स्मारक बनाने के लिये बीस लाख रुपया इक्ठा करने में लग रहे है । सबके सब गुजरात में कोई लाख तो कोई करोड़ के चक्कर में ही चक्कर काट रहा है । धर्म और अध्यात्मिकता की ओट में भोग और भौतिकता का ही प्रचार प्रसार चालू है । श्री प्रभुजी की जैसी इच्छा प्रेरणा । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र और आम का पार्सल ठीक समय पर आ गया था । आम का उपयोग भी अक्षय तृतीया के दिन भक्तराज श्री सुदामाजी महाराज तथा संकीर्तन मंदिर में विराजमान श्री प्रभु की सेवा महोत्सव में लगा दिया गया । लगन प्रसंग बहुत ज्यादा होने से यहाँ की महाजन वाड़ी या अन्य कोई विशाल स्थल न मिलने के कारण यहाँ का वार्षिकोत्सव का समय अक्षय तृतीया न रखकर जेष्ठ सुद बीज तीज तद्नुसार १०-११ जून को रखने का रामजी का विचार है । अखंड तो चैत्र सुद १ से ही चालू है । मैं यहाँ के अखंड का प्रारम्भ करके महुवा गया था इस बार चैत्र नवरात्रि में ९ दिवस का अखंड वही रहा जिसकी पूर्णाहुति श्री रामनवमी के दिवस बड़े धूम-धाम समारोह के साथ हूई । महुवा प्रचार प्रभाव थोड़े समय में बहुत सुन्दर हुआ है । अति वृद्धि लोग की यह कहते थे कि ऐसा भजन, नगरकिर्तन का आनन्द महुवा में आजतक कभी न हुआ वे लोग इतने प्रभावित

हुए कि उसी दिन आगामी आसू नवरात्रि से १५ पूर्णिमा तक अखंड उसी समय निश्चय करके जनता में जाहिर भी कर दिया। वहाँ भी पूर्णाहुति के बाद तलाजा के पास एक सांगना गाँव में अखंड हुआ और भावनगर होकर चैत्र पुनम श्री हनुमान जयन्ती के उत्सव पर जामनगर पहुँच गया। वहाँ के उत्सव के बाद श्री भगवत की ही कृपा प्रेरणा से यहाँ इतने दिनों में अभी तक कभी अखंड नहीं हो पाया था उस राजकोट में भी श्री पंचनाथ मंदिर में एक दिवस का अखंड हो गया। वहाँ से जामनगर द्वारका हो कर यहाँ आ गया हूँ अभी पूर्णाहुति तक यहीं ठहरने का विचार है आगे श्री प्रभु इच्छा। मात्रे का भी समाचार मिला हैं, उसमें अपना क्या वश है ? समय के मुताबिक ही सब कुछ होता है उसके पत्र से उसकी बहुत व्यग्रता प्रगट होती थी किन्तु किया क्या जाए ? जब जैसा समय आता है वैसा सबको करना ही पड़ता है फिर भगवत् पर श्रद्धा विश्वास रखने वाले को कभी चिन्ता करनी ही नहीं चाहिए। श्री प्रभु भक्त वत्सल है जब सबको ख्याल रखते है ? तो अपने भजने वाले को कैसे भूल सकते है। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारकाधाम

दिनांक :१०-१०-५७

प्रिय काकू !

आशीर्वाद !

तुम्हारा पत्र आज मिला हैं, समाचार मालूम हुआ हैं बार-बार मेरे स्वास्थ्य के लिए चिन्ता करते हो और अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान नहीं देते हो यह ठीक नहीं - पहले अपना सुधार कर पीछे दूसरे को सुधारने का यन्त करना चाहिए कारण अपने लेकर ही सारा जगत है - कहावत है "आप भला तो जग भला" मानव शरीर ही भगवत् प्राप्ति का एकमात्र साधन हैं। अतः इसे

स्वस्थ और सुव्यवस्थित रखना अपना कर्तव्य हैं कारण कि "तनु विनु भजन वेद नहीं वरना" और "भजन विना सुख भवने काजा" याने शरीर स्वस्थ न रहने पर भजन नहीं होगा और भजन नहीं होवे तो शरीर तथा संसार - "लोक परलोक" दोनो सभी सुख मिथ्या - निःसार ही हैं । अतः शरीर को स्वस्थ भी बनाये रखना चाहिए और साथ ही उसे विशेष प्रभु भजन में ही लगाना चाहिए कारण कि **मानवजीवन का चरमलक्ष्य प्रभु प्राप्ति ही है** । विशेष श्री प्रभु कृपा । सभी प्रेमियों को जय श्री राम । बाल गोपाल को आशीर्वाद । यहाँ सब आनन्द मंगल हैं ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !　　　　श्री द्वारकाधाम

आशीर्वाद !　　　　दिनांक :७-८-५६

आज तुम्हारा पत्र मिला । प्रभु कृपा से सानन्द पहुँच गये हो यह ज्ञात हुआ । कल्ह यहाँ से जामनगर होते हुए ९-८-५६ को पोरबंदर ५ दिवस के अखंड तथा नया रामधून मडंल के उद्घाटन के लिए जाना पड़ रहा है । अभी चर्तुमास भर यहाँ से जाने का विचार नहीं था - कारण कि अखंड अभी घर-घर एक रोज, दो रोज, चार रोज का चल ही रहा है और जब तक रहूँगा तब तक चलता ही रहेगा - ऐसा लगता हैं लेकिन जो प्रभु इच्छा "राजी हैं हम उसी में, जिसमें तेरी रजा हैं ।" साथ ही हरिदास शेठ (वाघेरिया) तथा यहाँ के प्रेमियो का खास आग्रह है कि कही भी जावो, किन्तु गुरुजी की तिथि यही करना है इसलिए वापस लौट कर आना ही पड़ेगा । इस आग्रह के अनुसार जन्माष्टमी के एक दिवस पहले किसी तरह आना ही चाहिए । इस हिसाब से द्वारका से बाहर रहने का सीर्फ २०-२२ दिवस मिलता हैं जिसमें ८-१० दिवस

तो पोरबंदर में ही चला जायेगा इसलिए हरिदास सेठ कहते है कि पोरबंदर, जामनगर होकर ही आजावे । कान्दीवल्ली पीछे जाना किन्तु पीछे शायद अहमदावाद का प्रोग्राम बने ऐसा रसिक महाराज अहमदाबाद वाले के पत्र से लगता है इसलिए मेरा विचार तो अेसा होता है कि पोरबंदर से अगर व्यवस्था हो जावे तो Plane से कान्दीवल्ली भी चार पाँच दिवस के लिए आ जावे- वहाँ तुम लोग विशेष हठ न करो, तो ही यह विचार सफल होवे । साथ ही रामचरणदास साथ में है उनके वजह से आने-जाने में भी बहुत कठिनाई मालूम पड़ती है उनका विचार कान्दीवल्ली जाने का हैं अयोध्या में जो मकान लिया है उसका पाँच हजार दे चुके है कहते हैं कि १००० Oct. में देना हैं तो कुछ व्यवस्था हो जावे तो ठीक-रामजी भाई सब लोग मिलकर अगर उनका कुछ रकमकर देवे तो अच्छा कारणकि दूसरे दूसरे कितने-कितने लोग कथावाचक महात्मा आते हैं और पैसा बटोर कर चले जाते है तो इनका बेचारे का भी कुछ काम हो जावे तो ठीक । विशेष श्री प्रभु कृपा । कान्दीवल्ली वाले सभी- प्रेमियों को मेरा जय श्री राम । नवी लोहाणा महाजनवाडी भद्रकाली रोड, पोरबंदर ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जामनगर

प्रिय काकू !

दिनांक : ७-११-५१

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से हम लोग सानन्द यहाँ पहुँच गये, यद्यपि तुम लोगों का वियोग अत्यन्त ही दुखद एवं हृदय भेदी प्रतीत होता है किन्तु विधि का विधान तथा कर्म की गति कुछ ऐसा विचित्र है कि जीव का कुछ वश नहीं चलता और उसे परवश होकर उस विधान का अनुकरण करना ही पड़ता है जो उसे

कर्म की गति या विधि का विधान न मानकर श्री प्रभु की कृपा समझकर धैर्य एवं उत्साह पूर्वक उसका अनुशरण करता है वह जीव कर्म के बंधन सदा निर्मुक्त हो, परमानन्द की उपलब्धि करता है, ईसी प्रभु की कृपा के आधार पर ही हम सब जीवन यात्रा के यात्री कभी मिलते कभी बिछुड़ते रहते है तथा यह क्रम उस समय तक जारी रहने वाला है जब तक हम अपने निर्दिष्ट स्थान अपने मंजिल destination को प्राप्त न कर ले यानि हमारी यात्रा पूरी न हो जाये अतः विचार पूर्वक जीवन यात्रा चलाने पर संयोग में न हमें हर्ष विशेष होना चाहिए और न वियोग में विषाद क्योकि प्रेम का, प्रभु भक्ति का क्षेत्र इन दोनो से अत्यन्त परे एवं विलक्षण है । यहाँ की स्थिति पहले से बिलकुल बदल गई है यद्यपि घर-घर में धुन होता हैं और स्टेशन पर उतरने पर जो लोगो ने मान तथा लगन प्रदर्शन किया उससे तो लोगो के भाव में तो पूर्ण प्रकाश प्रतीत होता है, गाँव में बच्चे-बच्चे में उत्साह सा आगया है लेकिन सामूहिक कीर्तन प्रायः बन्द सा हो गया है इससे मद्रासीबाबा का इधर आना कुछ टीक नहीं मालूम पडता क्योकिं यमुनादास भाई का भाव भी उनके प्रति कोई विशेष नहीं प्रतीत होता जैसे उन्होने सुनते कहा “अनधिकारी को विशेष मान देते हो” यही उनके शब्द थे यहाँ आने पर उनका जो सिल सिला है शायद उनका निर्वाह न हो सकेगा, और इधर उधर जाने में भी पैसे अधिक लगेंगें । फिर में यहाँ क्या व्यवस्था कर सकूगा इसलिए हो सके तो किसी तरह अगर वे दूसरी ओर जाने की ईच्छा प्रगट करे तो उधर ही भेजने की चेष्टा करना, अगर यहाँ आने को बिलकल उतारु हो तो भगवत् ईच्छा स्टेशन पर कुसुम, मनहरलाल, उसका बड़ा भाई, बहन सभी आये थे मनहर तो प्रभु की ओर अपनी लगन तथा हम लोगों के प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव दिखलाया- सारा काम अपने हाथ से किया , Ice-cream सबो को अपने हाथ से दिया और

कहने लगा मैने अपने घर में २४ घन्टे भजन कराया था, प्रतिदिन गाते वक्त
प्रार्थना करता हूँ हम लोगो को गाड़ी से उतरते पर फोटो लिया- कुसुम भी
बहुत प्रसन्न है - उसकी माँ को कह देना झोला बहुत बड़ा लिया २३ इंच
का- हो सके तो इसे लौटा कर २० या २१ इंच का लेना यह झोला
(Hindustan Tiles) वाले किसी के साथ भेज दूँगा वहाँ से ले लेना- सभी
प्रेमी, माताओं, बहनों तथा भाईयो को मेरा जय श्री राम तथा बच्चे-बच्चियों
को आशीर्वाद, भजन का क्रम प्रेम, श्रद्धा एवं लगन पूर्वक चालू रखना, आप
स्मरण करना और दूसरे से कराना यही जीवन का सार तत्व है । औषध सेवन
करना, संयम रखना, समाचार लिखना, शायद यहाँ अधिक नहीं रह सकूँगा
तो किषिकिन्धा की और जाऊँगा विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

यह पत्र विशेषकर मद्रासी बाबा के और से ही लिखता हूँ कि शायद
यहाँ भी अगर वैसा ही बने तो अच्छा नहीं, सो प्रेमपूर्वक, विचारपूर्वक उनकी
रुख देखकर काम करना । इसबार श्रीराम चरणदासजी को भी तुम लोगो ने
कोई विवाई, उपहार का सिल सिला नहीं रखा-सबको एक सा ही नहीं समझना
चाहिए- यथायोग्य सबका मानतो होना ही चाहिए क्योकि साधुओ को भी
आवश्यक वस्तु तो चाहिए ही। श्री राम चरणदासजी कुछ क्षुब्ध से होकर कहे
थे कि इस बार तो किसी ने कुछ दिया नहीं झोला की लम्बाई कम हो लेकिन
उचाई, चौडाई अधिक हो तो अच्छा-अगर मद्रासी बाबा न माने तो २० या
२१ इंच का झोला भेजना पीछे यह (Hindustan Tiles) वाले के साथ चला
जायेगा । मद्रासी बाबा की बात अन्य किसी को मालूम न हो ऐसा ख्याल
रखना, विवेक से काम लेना । भजन सार हैं खूब नाम रटो ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

"श्री राममः शरणं मम"

प्रिय मात्रे, वल्लभ, हरु, तथा विमू !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब ठीक है अन्य समाचार काकू के पत्र में समझना भजन का क्रम दृढतापूर्वक चालू रखना । विशेष श्री प्रभु कपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

संकीर्तन मंदिर,

पोरबंदर.

आशीर्वाद दिनांक : १६-२-६६

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द ही आनन्द हैं । आनन्द क्यो न हो? जब "राजी हम उसीमें, जिसमे तेरी रजा है ।" फिर सोचना, समझना, या कान धरने की बात ही कहा रह जाती है ? परसो द्वारका में श्री बाबू भाई संगरा (गोकुलदास) तथा मात्रे का चि. अरुण के समक्ष ही तुम्हारा पत्र पढ़ा समझा प्रसन्नता हुई । कल्ह बाबूभाई और अरुण मेरे साथ ही द्वारका से कानालूस तक आये वहाँ से वे जामनगर गये और मैं शाम को यहाँ पहुँचा । २०-२-६६ से अहमदाबाद श्री रामजी के मंदिर में जहाँ पर गतवर्ष अखंड हुआ था वही ९ दिवस का प्रोग्राम था किन्तु द्वारका में खबर पड़ी कि वही मंदिर का एक जवान व्यक्ति गुजर गया हैं जिसको श्राद्ध क्रिया भी अभी पूर्ण नहीं हुई हैं तो वहाँ पर पहले से निश्चित तिथि पर अखंड किस प्रकार हो सकेगा ? इसकी सूचना के लिए कल्ह रात्रि को तार किया है किन्तु अभी तक कोई जवाब नहीं आया हैं । यहाँ पर गत वैशाष मास से चालू अखंड की पूर्णाहुति इसी मास में होनेवाली थी किन्तु श्री भक्त और भगवान की कृपा प्रेरणा से ऐसा

विचार आया कि १३ मास का अखंड क्यों न पूर्ण कर लिया जाये ? और दोनो वर्षो का उत्सव एक ही साथ जेठसुद तीज से किया जाए । इसी कारण यहाँ का प्रोग्राम तो अभी स्थगित रखा गया हैं यहाँ की पूर्णाहुति के बाद जेठ दसम (गंगा दशहरा) जिस दिन में १३ मास के काष्ठ मौन में श्री डांडी हनुमान जी में बैठा था । उसी दिन से १०८ दिवस के लिए पुनः गुगली ब्रह्मपुरी में अखंड यज्ञ रखने का हरिदास तथा अन्य द्वारकावासी प्रेमियो ने निश्चय किया है और ब्रह्मपुरी की मंजुरी भी मिल गई है । उस अरसे में गुरुपूर्णिमां से लेकर महाराज के तिथि तक के सभी उत्सवो का समावेश हो जाएगा । इसी में पुरुषोत्तम मास भी आ जाएगा जिससे प्रचार कार्यभी ठीक-ठीक हो सकेगा कारण उस समय बाहर से यात्री भी काफी आयेगें । उन लोगो का विचार हैं कि एक बार फिर पहले जैसा द्वारका में अखंड यज्ञ महामहोत्सव किया जाए । आगे तो श्रीप्रभु की मर्जी । उतने दिनों तक सभी का आग्रह हैं कि सदा मेरी भी हाजिरी रहे और उतने दिनों के लिए बाहर सभी प्रोग्राम बंद कर दे । प्रभु इच्छा । जयन्ती बेटवाला मेरे कहने से तुम्हारे पास गया था उसकी स्थिति बीच में बहुत ही बिगड़ गई थी- यहाँ तक कि बालबच्चो के भोजन में भी आपत्ति थी किन्तु वैसे भयंकर समय में भी मेरे बार-बार पूछने पर भी कभी पैसे की इच्छा प्रगट नहीं और न मैने या अपने किसी प्रेमीने ही उसकी कुछ सहायता की किन्तु प्रभु ने ही सहायता प्रेरणा की और यात्री का धंधा करने लगा और उसी सें उसका निर्वाह हो रहा हैं । उसके लडके को पेशाब की बहुत तकलीफ थी यहाँ के सभी डॉक्टरो ने इन्कार कर दिया कि अच्छा नहीं होगा तब उससे पूछा और मैंने कहा बम्बई ले जाओ, प्रभु की कृपा होगी तो अच्छा हो जाएगा । उसके पहले धंधा बन्द होने से प्रेम कुटीर में गायत्री पुरश्चरण करता था और सागभाजी खाता था । मुसीबत के समय में संसारी का मगज ठीकाने नहीं रहता उसे धर्म, कर्म कुछ भी सूझता नहीं किन्तु जयन्ती के जीवन में तो कुछ विलक्षणता ही हुई मेरे प्रति तथा श्रीप्रभु के प्रति उसकी

श्रद्धा निष्ठा पहले से अधिक बढ़ गई जब भी वहाँ जाना हूँ तो उसके सिवाय दूसरा कोई बात करनेवाला भी नहीं । तन से, धन से, मन से जितना बनता है बेचारा सेवा भी करता है और कभी अपने से लालच या स्वार्थ की भावना भी नहीं रखता । बम्बई जाते समय मुझे सोये हुए में मिला और मैंने पूछा कुछ जरुरत होतो बोलो तो उसने कहा अभी कुछ जरुरत नहीं है अगर शायद बम्बई का खर्च कुछ अचानक वो भी आ जाए तो लिखूँगा । मैंने उस समय कहा अच्छा । काकू को मिल लेना । आगे पीछे व्यवस्था हो जायेगी फिर तुम से मिल कर पत्र भेजा था जिसमें लिखा था अभी तक तो काम चल रहा है जब न चलेगा तो काकूभाई के पास जाऊँगा । आकर मुझे हर बात कहा कि काकूभाई ने कहा कि १०० रुपैया देता हूँ बाकी ३०० भेज देना तुम्हारा अेक दो पत्र मिला था किन्तु लिखावट देखने से अेसा प्रतीत होता था कि काकू बहुत परेशानी में है जिससे पत्रोत्तर लिखने का भी अवकाश नहीं मिलता तो फिर अपने पत्र लिख कर पढ़ने और लिखने की परेशानी में क्यों डालू ? यह सोचकर ही शायद एक पत्र का उत्तर दिया और फिर लिखना बंद कर दिया । एक दिन रामजीने कहा काकूभाई का पहले बहुत पार्सल आता था अब तो पत्र भी नहीं आता है तो मैंने कहा कि काकू का तो जंजाल बहुत बढ़ गया है उसे धंधे से ही फुरसत नहीं मिलती तो हम लोगो को पत्र कैसे लिखे ? दर कुम्भ के वक्त एक मास पहले से पूछता था कुम्भ में जाना है कि नहीं ? किन्तु इस बार तो वह भी भूल गया और मेरा कुम्भ भी रह गया और दूसरा तो कोई पूछता भी नहीं था और कुछ करता भी नहीं था । काकू ही को श्री प्रभु कृपा प्रेरणा पात्र बनाये हुए थे तो वह भी भूल गया तो उसमें उसका कुछ दोष नहीं श्री प्रभु की कृपाप्रेरणा समझ बाद में, रामजी, जोशी, छगन वगैरेह के आग्रह करने पर भी प्रोग्राम बंद रख दिया । कुछभी करो । धंधा करो, व्यवहार करो । श्री प्रभु को न भूलो बस ! विशेष श्री प्रभु कृपा । अहमदाबाद का प्रोग्राम होगा तो लिखूँगा नहीं तो इसी तरफ पड़ा हूँ

गामडाओ में प्रचार होता है । बिहार से राजदेव बुलाने आया था । ४-३-५६ को उसके लड़के का यज्ञोपवित्र है बहुत समझा-बुझाकर वापिस भेजा । इस समय कलिकाल प्रभाव तिव्रतम् होता जा रहा है । सर्वत्र, काम भोगवासना, स्वार्थपरता, अनीती अनाचार, व्यभिचार का ही वातावरण । ऐसा विरला ही कोई कोई श्री प्रभु का परमकृपा पात्र है जो उनके नाम का आश्रय लेकर इस कराल कलिकाल के भंयकर चोटको सहन कर रहा है और अपने पथ पर आरुढ है । सभी प्रेमियो को जय श्रीराम । जयन्ती को जितना देना हो उतना देना बाकी धीरे धीरे भेज देगा या और कोई व्यवस्था हो जाएगी । विशेष श्रीप्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारका धाम

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद ! दिनांक २१-२-५६

तुम्हारा पत्र मिला । स्वास्थ्य थोड़ा ठीक न रहने तथा अखंड चालू होने के कारण पत्रोत्तर दे नहीं सका । तुम्हारे पिताजी की तबियत अच्छी हो गई होगी । बच्चे सभी आनन्द में होगे । तुम्हारा भी स्वास्थ्य अच्छा होगा ऐसी आशा करता हूँ विशेष आशा तो यही रखता हूँ कि तुम अधिक से अधिक नाम रटन, चिन्तन करने का यथा साध्य प्रर्यन्त करते होगे । संसार का व्यवहार, परिवार का झंझट, कर्म का जंजाल तो जीवन प्रर्यन्त समाप्त होने वाला है क्या ? अपने को तो इनके बीच में रहते हुए ही अपना काम बनना है और शीघ्र से शीघ्र कारण कि युवा अवस्था ही स्वार्थ परमार्थ साधने का पथेष्ट काल है पीछे तो भजन होना कठिन ही नहीं वल्कि असम्भव सा है । अतः सभी शास्त्र तथा सन्त का एक ही मत हैं कि जब तक शरीर स्वस्थ्य है, इन्द्रियाँ

अवसर है तभी तक बुढ़ापा आया नहीं तभी तक प्रभु प्रेम, नाम धन का खजाना भर लेवें जो अेक मात्र लोक परलोक का सच्चा साथी, हितैषी है। मानवजीवन दुर्लभ है, अमूल्य है किन्तु है क्षण भंगुर। अतः भजन करने के लिए काल तथा वृद्धावस्था की प्रतीक्षा न करके धैर्य, उत्साह तथा हिम्मत के साथ भजन में लग जाना चाहिए-जो लग गए है उन्हें भजन की मात्रा बढ़ानी चाहिए जो भजन खूब करते है उन्हें भजन की मृदुलता करनी चाहिए। श्री प्रभु के साथ अपनत्व का अनुभव करना चाहिए। प्रभु प्रसाद, प्रभु कृपा की अनुभूति करते करते जीवन साफल्य तथा कृत्य कृत्यता का आनन्द लेना चाहिए। यहाँ अभी अखंड चालू है। २२ दिवस से और आशा हैं कि १०८ दिवस तक चालू रहेगा। प्रति दिन का खर्च सीर्फ ११ ग्यारह रुपैया लिया जाता है जिससे गरीब से गरीब आदमी भी धुन करा सके। दो-चार रुपैया जो अधिक खर्च लगाता है उसकी व्यवस्था हरिदास वाघेरिया कापड़वाला करता है जब से उसने श्री गुरुदेव की तिथि कराई तब से श्री गुरुदेव की कृपा उस पर पूर्ण हो गई है। जिसके फल स्वरुप अखंड प्रचार विस्तार के लिये पूर्ण उत्साह तथा मनोयोगपूर्वक भाग लेते हैं। अभी तक पूर्ण निश्चय नहीं था किन्तु आज उसने कहा कि सभी को लिख दिजिऐ की १०८ दिवस अखंड चालू रहेगा जिससे फिर कोई आने जाने के लिए न बोले। जैसी प्रभु की इच्छा। बेट में मंत्र मंदिर का काम भी आज से चालू होने वाला है। माता, पिता, गोपाल की माँ, तरला, तथा बाल गोपाल सबको यथायोग्य विशेष श्री प्रभु कृपा। वाघेरिया सेट लगन प्रसंग से अेक मास पीछे सपरिवार कान्दीवल्ली जाने वाला है। आठ दिवस वहाँ ठहरेगा।

जेठाभाई को तथा रामदास को मेरा खास तौर से जय श्री राम कहना। मार्टुंगा वाली माँ को (जेठाभाई की बहन) भी मेरा जय श्री राम तथा यहाँ सब समाचार देना। अन्य बम्बई में तथा कान्दीवल्ली के सभी प्रेमियों माताओं, बहनों तथा भाईयों को मेरा सप्रेम जय श्री राम। प्रभु नाम स्मरण करना कराना

यही एक मात्र कलिकाल से बचने तथा भवसागर से तरने, जन्म मरण रूपी भयंकर भय से छूटने का सबसे सरल, सुगम, सुलभ तथा अमोघ उपाय साधन है । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बालगोपाल ! श्री संकीर्तन मंदिर, पोरबंदर

आशीर्वाद ! दिनांक ७-४-७०

श्री प्रभुकृपा से सब आनन्द है । महुवा में शरीर की स्थिति ठीक थी, धीरे धीरे सुधारा हो रहा था, कुछ अधिक समय तक वहाँ रहने की आवश्यकता थी किन्तु जब तक शरीर का भोग अवशेष है तब तक लाखों उपाय करने पर भी कुछ होने का नहीं । महुवा से आने के बाद यहाँ की आबोहवा के कारण थोड़ी विकृति हो गई थी-वह भी साधारण वायु विकार किन्तु एक दो दिन में ठीक हो गया तुम्हारा तो कोई पत्र या समाचार ही नहीं - सीर्फ कानपुर से एक पत्र था, उसके बाद मोहनभाई के उपर एक दिन कौल था । तुम्हारी इस लाचार दशा में पत्र लिख लिख कर क्यों विशेष लाचार बनाऊ । ठीक ही है - श्री प्रभु की कृपा हैं जो अस्वस्थता द्वारा श्री प्रभु अनुभव कराते हैं निश्चय कराते हैं कि

यह बिनती रघुवीर गुसाई,
"और आस विश्वास भरोसो, हरहु जीव जड़ताई ॥"

श्री विष्णुभाई नाम निष्ठ भक्त वैघ की दवा से हर प्रकार आनन्द है । बम्बई के इलाज एवं दवाओं के कारण अति कमजोरी एवं विकृति होजाने से पूर्ण स्वस्थ होने में समय लगेगा । ब्लड प्रेसर का माप लेना बन्द कर देने पर भी महुवा के M.D. एवं अेक सर्जनने दो बार माप लिया किन्तु कोई विकृति

नहीं पाया । २९-३-७० को जोशी शुक्ल साहेब को लेकर और विष्णुभाई वैध महुवा से आये थे दोनों का मिलाप हुआ, बात-चीत हुई। शुक्ल साहेब ने कहा दवाये जो दी जा रही हैं बिल्कुल ठीक हैं किन्तु कमजोरी दूर करने के लिए मैं एक दो दूसरी औषधिया भी दुँगा और उसके लिये जामनगर आने के लिये अति आग्रह कर गये । श्री रामनवमी के एक दो दिवस पहले जामनगर जाने का विचार है आगे श्री प्रभु इच्छा कृपा । सभी प्रेमियो को मेरा श्री राम जय राम जय जय राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जामनगर

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद ! दिनांक २१-८-६५

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । पावं भी लगभग ठीक ही है । शरीर का भोग भोगना ही पडता हैं ।

देह घरे को दराड है, सब काहु को होए ।
ज्ञानी भुगतै ज्ञान ते, मुरख भुगतै रोए ॥

सुजन तो कम हो गया किन्तु डाक्टरों की कृपा से पेट बिल्कुल बिगड़ गया था, कमजोरी भी काफी हो गई दवाओ के Reaction से । मैं तो इसी कारण डॉक्टरों की दवा से पनाह मागता हूँ, अेक बार जो आजकल के डाक्टर के पंजे में फँसा उसे उससे मुक्त होना असम्भव सा ही है । धर्मशीभाई जा रहे हैं अपने लड़के का कान का आपरेशन कराने के लिए किन्तु मैने राय दी हैं कि किसी अच्छे होमियोपैथ से दिखलाना तो अगर तुम्हारी जानकारी में कोई ऐसा डाक्टर हो तो उसे दिखला देना या कमलादेवी को किसी बहुत अच्छे होमियोपेथ से परिचय है तो उसे पता करके धर्मशीभाई को मिला देना ।

श्री महाराजजी की तिथि का जामनगर में ही निश्चय किया हैं तो तब तक यही रहने का विचार है और सब समाचार अच्छा है । श्री प्रेमजीभाई, कमलादेवी, मात्रे तथा बाबूभाई जानी को भी फोन से सब समाचार कह देना । तुम्हारी नई मोटर आ गई आनन्द की बात है । जहाँ तक श्री प्रभु कृपा करे मोटरे बढ़ाते जाओ किन्तु रहने की कोई जगह न बनाओ उस खोली को क्यो छोड़ना ? विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

श्री राममंदिर, हाजा पटेल की पोल, अहमदाबाद

आशीर्वाद

दिनांक २७-१-६५

तुम्हारा पत्र मिला । पत्र से पता चल गया कि तुम्हारी प्रवृत्ति बहुत ही बढ़ गई है जिसमें पत्र भी व्यवस्थित ढ़ग से लिखने का अवकाश नहीं मिलता और Inland Paper का चौथा किंमत भी वसूल नहीं होता किन्तु मै तो पत्र लिखता हूँ तो इसकी किंमत से भी ज्यादा वसूल कर लेता हूँ किन्तु विचार आया कि काकू को इतना लम्बा पत्र लिखकर उसकी प्रवृति में पत्र पढ़ने का भी विघ्न उपस्थित करता हूँ । अतः सूचित करने का कि श्री प्रभु कृपा प्रेरणा से दिन प्रतिदिन लोगों का उत्साह और लगन अखंड के लिए बढ़ता ही जा रहा हैं । जहाँ एक जगह पूर्ण होता है कि कोई न कोई झट तैयार हो जाता हैं जिस दिन से आया हूँ अखंड चालू ही है और कल्ह से फिर १६ दिवस का अखंड चालू होने का तो निश्चित है, हो सकता हैं इसके बाद फिर कही बढ़ जाये । ३१-१-६५ को एक सप्ताह के लिए द्वारका जाना था किन्तु वहाँ

भी जाने से लोगोने रोक दिया है । बस ! विशेष श्री प्रभु कृपा । सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

बम्बई

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद ! दिनांक १४-१२-५०

विधि का विधान कुछ विचित्र हैं, कर्म की गति गहन है तथा प्रेम का पंथ अति कठिन है । इन तीनो वस्तुओ का कुछ भी ज्ञान तथा इनका भान एक मात्र श्री करुणा समुन्द्र श्री प्रभु की कृपा से ही हो सकता है । किसी प्रकार के पुरुषार्थ या साधन से उनकी झलक भी नहीं प्राप्त कर सकता । कुछ समझ में नहीं आता कि क्यो ? साकेत तथा गोलोक से मर्त्यलोक में आकर श्री दशरथ कौशल्या तथा श्री नन्द-यशोदा को त्याग कर वन-वन भटकता - आप रोता तथा उन्हें भी रूलाता, यह वे रोनोवाले तथा वह सूलानेवाला ही जानता है या उसके कुछ कृपा पात्र ही जन जानते है । जिन्होने जीवन में कब, क्यों, और कैसे रोना सिखा है अन्य अनभिज्ञ जन तों उस मधुरिमा का रुप परिचय का तथा उस महिमा का अनुमान भी नहीं लगा पाया है कारण कि जल तो हमारे मल को धोकर शरीर को पवित्र कर सकता है किन्तु प्रेमाश्रुजल जन्म-जन्म के अन्तःकरण में बैठे हुए मल को धोकर याने हृदयरुपी दिव्य नेत्र पर बैठे काई को धोकर, बाहरी चर्म चक्षु को भी निर्मल करता हुआ उनमें वह नूतन दिव्य ज्योति प्रदान करता है जिससे सर्वत्र बाहर भीतर आभा, प्रतिभा तथा प्रेमास्पदं की प्रतिमा ही प्रतिमा दीख पड़ती है । यही हालत न - 'कबीरजी' की हो गई थी कि **"कबीरा प्याला प्रेम का अन्तर लिया लगाय, रोम रोम में रमि रहा और अमल का खाय" ॥ सोओ तो सपने मिले जागो**

तो मन माहिं, लोचन राता सुधी हँसी कवँहु विसरत नाहि अब तू तू कहता तू भया, मुझमें रही न हूँ, वारी तेरे नाम पर जित देखै तित तू" जित देखो तित श्याममयी हैं किन्तु यह परमनिधि तो उसी अकारण कृपालु श्री प्रभु की कृपा से ही प्राप्त हो सकता हैं और जब हम लोगो को उसके तथा उसके सम्बन्धियों के नाम पर रोना आगया हैं तो कपा की किरण अब छिटक रही है ऐसा समझना तथा मानना चाहिए । इति शुभम्

तुम्हारा सरल, शुकोमल तथा दर्द एवं भावना भरा हृदय देखकर और उद्गार भरे मनोरम अन्तः स्थल को देखकर हृदय गद्गद हो गया, मन नाच उठा, शरीर पुलकित हो उठा, भुजाये वाह-वाह की ध्वनी करती उपर उठी, पाव गतिमान होने लगे तथा नेत्र अपने शीतल बुन्दो से सबको शान्त तथा शीतल करने लगे । यह सब प्रेम तथा प्रेम स्वरुप श्री गुरुदेव की महिमा हैं । मै तो एक पामर जीव, परम निर्धन, जन्म-जन्म का भिक्षु हूँ जिसे तुम कान्दवल्ली के उदार जनो के भिक्षा दान से कुछ राह खर्च मिला, जिसके बल पर प्रेम के निधि, करुणा एवं ऐश्वर्य के आधार पर तथा ज्ञान, वैराग्य के भंडार, श्री दीन उद्धारण राघवेन्द्र तथा उनके अनन्य प्रेमी भक्त श्री हनुमन्तलाल जी की जन्म स्थली एवं क्रीड़ा स्थली किष्किन्धांपुरी का परम पावन दर्शन करने चला- भाई मुझमें कहा समर्थ और शक्ति थी कि ऐसी पावनपुरी में प्रवेश कर सकूँ यह तो आप सब प्रेमियों के प्रेम भिक्षा दान की ही महिमा है यह तो कोई नई बात नहीं । मां अपने बच्चे को आँसू भर के खोजे या हँसी भरके खोजे यह तो उसका स्वभाव ही है । सभी सत्संगी प्रेमीमाताओं, भाईयों तथा बहनों को मेरा सविनय सप्रेम सादर श्रीराम स्मरणम् । भाई भागूजी को मेरा हार्दिक नमन तथा प्रेमाभिवादन कहना । मालूम पड़ता है मान्नेसाहब वल्लभदास, हरुभाई, तथा रामजीभाई हम से शायद दिल से रंज है नहीं तो हाँ बात भी सच है । इन लोगों को यज्ञ में परेशानी बहुत हुई, कुछ आराम तो लेना ही चाहिए भला पत्रोत्तर देने में इतना खर्च और परिश्रम बार-बार कौन उठावे ?

ख़ैर! कोई बात नहीं जो अपना हो चुका वह अपना ही हैं चाहे पत्र लिखे न लिखे उनके हम भले न हो लेकिन हम उनके हैं ऐसी मेरी धारणा हैं। विशेष श्री हरि कृपा । छोटो को आशीर्वाद बड़ो को जय सीता राम ।

तुम्हारा हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

"श्री रामः शरणं मम"

"श्री राम जय राम जय जय राम"

पहले राम पीछे काम

प्रिय मात्रे, हरु, वल्लभ और काकू ! जामनगर

आशीर्वाद ! दिनांक २७-१-५५

श्री प्रभु कृपा का पार नहीं, महिमा का अन्त नहीं किन्तु उसके विधान का पता नहीं कि कब क्या करे और कब क्या किस प्रकार हो लेकिन साधारण बुद्धि से यही दिखता हैं और निश्चय होता हैं कि मंगल विधान का सार विधान मंगलमय है और जीव को इसी विचारधारा के अनुसार अपनी जीवन यात्रा चलानी चाहिए तभी हमे उस सत्य का रहस्य अनुभव में आ सकेगा और अपना जीवन जन्म सफल तथा सार्थक बन सकेगा इन्ही विचारों तथा प्रेरणाओं से प्रेरित होकर अनिच्छा पूर्वकभी आज पोरबंदर से जामनगर आना पड़ा क्योंकि अपने लक्ष्य की बात तथा जीवन का ध्येय को त्यागकर, विभिन्न लक्ष्य की ओर जाने से अपने लिए भय का संचार होता हैं फिरभी सिद्धांत के अनुसार - "राजी हैं हम उसी में, जिसमे तेरी रजा हैं, या यों भी वाह-वाह हैं या त्यो भी वाह-वाह है ।" जहाँ रखो, जहाँ ले जाओ, जो कराओ सब तुम्हारी मर्जी, मै तो तुम्हारे हाथ का यंत्र हूँ। मन चाहे वैसा नचाओं आखिर किसी न किसी दिन तुम दया निधान को तो दया आयेगी ही और इसका निरंतर का नाचना तुम्हे बन्द करना ही पड़ेगा । अतः अपनी समस्त इच्छाओं, वासनाओं तथा कामनाओं को श्री प्रभु की ही इच्छा में विलीन करते रहने की आदत

इतनी चाहिए तन तक जब तक, यह पूर्ण रुप से उसमें विलीन न हो जाय क्यों कि जब तक यह पूर्ण नहीं होता हैं तब तक अधूरा है जभी पूर्ण हुआ तभी यही साध्य बन जायेगा - अतः अपने को श्रीराम का मानना और इसी मान्यता को जानने की सतत चेष्टा करना यही हमारा तुम्हारा परम पुरुषार्थ है, क्योंकि असमर्थ, अल्यज़ जीव सर्व समर्थ सर्वज्ञ प्रभु के लिये कर ही क्या सकता है, सिवाय इसके कि अपने कठोर कलुषित, कर्कश मन रुपी लोखंड को मृदुल, मंजुल, मनभावन, दिव्यमनवाला प्रभु रुप चुम्बक के आकर्षण के दायरे में पहुँचावे, बाकी तो एक पल की भी देर नहीं उसमें जुटजाने में, मिल जाने में - विशेष श्री प्रभु कृपा, यह जो बहन जा रही है उनकी भक्ति, प्रेम निष्ठा का वर्णन तुम से मै क्या करु जो तुम्हारे लिये प्रभुप्रसाद, सच्चा उपहार लिये जा रही हैं यही उनके हृदयगत भावो का सच्चा परिचायक हैं अपने समस्तप्रेमी मंडल जिसकी रुचि हो और जो नित्य पाठ कर सके उसीको देना क्योंकि इसमें महाराज श्री का चित्र है उसका अपमान न हो सके - अन्य भी कोई प्रेमी, संस्कारी जीव चाहे तो उन्हे दे सकते हो नानूभाई का पत्र आया था, उन्हे भी यही पत्र बचा देना पत्रोत्तर के रुप में काकू भावूक बहुत हैं किन्तु मेरी समझ में विवेक शून्य भावना उतना लाभदायक नहीं बल्कि हानिकारक हैं-उसने इतना खर्च करके, परिश्रम करके भगवान के लिये वस्त्र बनाया किन्तु उसकी माप ठीक न होने से बहुत बड़ा हो गया और अब काम का भी नहीं हैं कोई काम विचार से करना चाहिए पहले माप न था तो मंगालेना था- समय का तथा वस्तु का सदुपयोग सिखना चाहिए क्योंकि यह जगत तथा जगत की समस्त वस्तुऐ जगत्पति की हैं और जब हम उसके हैं तो उसका दुरुपयोग या अनुपयोग नहीं करना चाहिए अभी पता नहीं कितने दिन यहाँ रुकना पड़े प्रभु जाने सब लोग अच्छी तरह से भजन करना-कराना यही प्रेम का तथा मेरे साथ सम्बन्ध का सच्चा फल है । दूसरा मैं भिक्षु दे ही क्या सकता हूँ और कर ही क्या सकता हूँ । समस्त प्रेमी माताओं, बहनों,

भाईयों तथा बच्चे बच्चिओं को यथायोग्य जय श्री राम तथा आर्शीर्वाद । पूज्य श्री रामचरणदासजी अभी यही है और स्वस्थ तथा आनन्द में है विशेष श्री प्रभु स्मरणम् ।

विपदो नैव विपंद सम्पदो नैव सम्पदं ।
विपदो विस्मरणं विष्णों सम्पद नारायणस्मृति ॥

विपत्ति विपत्ति नहीं सम्पति सम्पति नहीं श्री प्रभु का विस्मरण ही महान् विपत्ति है और उनका स्मरण ही सच्ची सम्पति है ।

श्री राम जय जय रघुवीर समर्थ की जय

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बालगोपाल ! सराटा-चम्पारण

शुभाशीर्वाद ! दिनांक १९-११-६२

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल हैं । श्री प्रभुनाम का प्रचार भी गावों गावों में बड़े प्रेम तथा उत्साह के साथ हो रहा हैं । श्री वैकुन्ठ बाबू का त्याग, तप सराहनीय है । हंमेशा साथ ही रहते हैं । सभी प्रकार से सेवा परायण है । तुम लोग छतौनी नहीं जा सके उसके लिए वहाँ के निवासियों को कुछ कष्ट अवश्य हुआ किन्तु अपनी दीनता, दरिद्रता राह की असुविधा का विचार कर अपने भाग्य पर संतोष कर लिया। रस्ते-रस्ते लोगों ने तुम लोगो के स्वागत के लिए सप्ताहो से तैयारीयाँ की थी । ख़ैर ? जो श्री प्रभु की इच्छा होती है, वही होता हैं और उसीमें जीव का परम कल्याण भी निहित रहता है यद्यपि अज्ञानता के कारण अपने मनोनीत वस्तु की उपलब्धि न होने पर तत्कालिक कुछ क्षोभ सा होता है जो जीव के लिए स्वभाविक है और वही जीवत्व का स्वरुप भी है । "**हर्ष, विषाद, ज्ञान, अज्ञाना, जीव धर्म अहमितिभिमाना** ।

ज्ञान अखंड एक सीतावर पोषण जीव चराचर। जो सबके रह ज्ञान एक रस, तो ईश्वर जीव ही भेद कहहु कस श्री नूतन वर्ष के शुभ अवसर पर समयाभाव के कारण पत्रोत्तर द्वारा मंगल कामना नहीं भेज सका किन्तु मानसिक हार्दिक मंगल कामना तो नित्य ही करता हूँ और इस अवसर पर भी किया ही। तुम्हारा पत्र और तार भी मिला था। मात्रे की कोई खबर नहीं। क्या मुझसे बहुत ज्यादा रंज हैं ? अगर ऐसी बात हो तो मेरी ओर से क्षमा माग लेना और मेरा आशीर्वाद उसके समस्त कुटुम्ब को कह देना। प्रेमजीभाई, कमलादेवी, राधारानी वगैरह को भी नूतनवर्ष की मंगल कामना कहना। समय न मिलने के कारण ही पत्र नहीं लिख पाता हूँ। यो तो मानसिक दर्शन यथायोग्य सबका होता ही रहता हैं कारण कि अपना नाता रिस्ता जो बडा जबरजस्त है-श्री प्रभु नाम का, भक्ति भावका, निष्काम प्रेमभाव का जिसके निभाने तथा बनाये रखने में ही जीव का परम कल्याण हैं। जीव की अवधि अल्प हैं, जीव क्षण भंगुर हैं, तन, धन, मन सब माया का विलास हैं- चार दिन की चांदनी हैं। अल्प काल का संगी हैं। नित्य संगी तो जीव का मायापति ही हैं, परमात्मा ही हैं, आत्मा ही हैं जिसके बगैर एक पल लिए भी जीवन का अस्तित्व नहीं ? अतः सब करते हुए अपने प्रारब्ध भोग भोगते हुए भी नित्य श्री प्रभु परायण बनने का ही प्रबल प्रयास करते रहना चाहिए। यहाँ की वस्तुअें यही रहेगी, इन वस्तुओं, सम्बन्धीओं के सदुपयोग, दुरुपयोग, उपयोग का संस्कार ही अपने साथ जायेगा। अतः श्री जगनियन्ता द्वारा प्रदत्तज्ञान, गौरव, वैभव का सदा सदुपयोग करने की ही चेष्टा करनी चाहिए, उपभोग की नहीं, बस ! अब श्री प्रभु भजो, सुखी बनो। अभी-अभी श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी का पत्र और तार आया हैं जो मुंडोर के तरफ से परसो लौटने पर मुजफ्फरपुर में मिली। पहले तो उनका आग्रह श्री पुनीत महाराज निधन निमित्र आयोजित श्रीमद् भागवत् सप्ताह समारोह में अहमदाबाद १८-११-६२ को आने के लिये था। किन्तु फिर तार आ गया कि वह समारोह किसी कारण वशात् स्थगित हो गया। अब उनका दूसरा प्रोग्राम आन्ध्र का हैं- जहाँ पर १०८ श्रीमद् भागवत्

रामायण, भगवत चरित्र सप्ताह, रुद्रयज्ञ, विष्णुयज्ञ, कोटि विल्वार्चना, रासलीला प्रदर्शन, अखंड भगवन्नाम संकीर्तन वगैरह का आयोजन हैं जहाँ १०,००० दस हजार व्यक्तियों का प्रतिदिन भोजन का प्रबंध हो रहा हैं सप्ताह पाठ करनेवाले, कीर्तन करनेवाले, रासमंडली वाले वे सब यही वृन्दावन से ले जा रहे हैं और कई तीर्थ स्थानो की यात्रा करते जायेंगे, जैसे वृन्दावन से चलकर अयोध्या प्रयाग, काशी, वैजनाथ गया कलकत्ता पुरी होते हुए गोदावरी समुन्द्र के संगम पर पहुँचेंगे जहाँ सब समारोह होने जा रहा हैं उसके बाद रामेश्वरम् की यात्रा करते लौटेंगे । वल्लभ का पत्र आया हैं सपरिवार दिसम्बर के अन्त में आयेगा और जनवरी-फरवरी में लिखता है कि दर्शन करुँगा । पत्रोत्तर दिया हैं, जवाब आने पर विचार करुँगा, किन्तु यहाँ वाले जाने नहीं देना चाहते हैं कहते है प्रचार का प्रवाह बंद हो जाएगा जैसी प्रभु इच्छा । और सब समाचार अच्छा हैं । सभी प्रेमीयों को नूतन वर्ष की मंगल कामना सह जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू तथा बालगोपाल ! पोरबंदर

आशीर्वाद ! दिनांक ४-११-६७

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द हैं कल्ह द्वराक से जामनगर होते शाम को ६ बजे पोरबंदर आया । एक दिवस तीन जगह नूतनवर्ष का आनन्द सभी प्रेमियो को प्राप्त हुआ । आज कौल से तुम लोगों का भी दरस परस हो गया । अति आनन्द । सुधीर दुकान में बैठने लग गया यह श्री प्रभु कृपा । अेक को तो अपना स्वभाविक आजीविका संभालना ही चाहिए । श्री द्वारका की चोरी में विलक्षणता हुई । श्री ठाकुरजी ने ऐसा चमत्कार दिखलाया कि वेकाम वस्तुअे ले गया और चान्दी के प्रेम सहित श्री ठाकुरजी को छोड़कर चोर चला

पंच धातुओं के यंत्र में से सीर्फ एक सोना वाला यंत्र ले गया और गया । ठकुरजी की मोती जरी वगैरह की हार तथा सब था ही छोड़कर चला गया । यह श्री ठाकुरजी को प्रिय नहीं लगा होगा । अब नया वस्त्र सब ले गया है तो सात दिवस के लिये सात रंग का वस्त्र तो ठाकुरजी को पास ही रखना है और अभी तत्काल गरम वस्त्र एक दो रंग का भेजना नये फ्रेम के वस्त्र का माप हो तो उसके मुताबिक, नहीं तो रामजी अपने पत्र माप का नमूना भेज रहा है । आगामी शनिवार को शायद राजकोट अेक दिवस का अखंड होवे । उसके बाद तीन दिवस के लिये धांग्रध्रावाले का आग्रह है उसकेबाद गीता जयन्ती के एक दिवस पहले मार्ग शीर्ष शुक्ल दशमी ११-१२-६७ को श्री संकीर्तन मंदिर का द्वारका में सिलान्यास होनेवाला है शायद उसके बाद पालेज ९ दिवस के लिये जाना पड़े । श्री प्रभु कृपा तथा श्री गुरुदेव की प्रेरणा एवं श्री वीरपुंगव श्री हनुमन्तलालजी की अखंड सहायता, संरक्षण द्वारा श्री अखंड महायज्ञ का प्रचार प्रसार होता ही जा रहा हैं आनन्द ही आनन्द । "मंगलभवन अमंगल हारी, जिन्ह कर नाम लेत जगमाहि, सफल अमंगल मूल नसाहि । करतल हो हि पदारथ चारि, सोई श्री राम कहेउ कामारि ॥" अखंड पोरबंदर में भी चालू हैं । सभी प्रेमियो को मेरा जय श्री राम और नूतन वर्ष का आनन्द मंगल । मोहन लाल शेठ को मेरा नूतन वर्ष का अभिनन्दन सह श्री राम जय राम जय जय राम विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

पताही

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

दिनांक २९-९-६३

शुभाशीर्वाद !

तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ। ठीक ही हैं "श्री प्रभु कृपा

ही केवलम्" जिसका आश्रय बन चुका है उसके लिए किसी प्रकार की भी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं । वे दयालु प्रभु सुतवत्सलता माता की तरह अपने अबोध शरणागत भक्त की अबुद्ध, अनजान, अज्ञान, असमर्थ बालक की तरह स्वयं ही अहिर्निश रक्षा करते हैं । **उसका योग क्षेम वे स्वयं ही वहन करते हैं, किन्तु आवश्यकता हैं अपनी अडिग श्रद्धा की, अटूट निष्ठा की, अखुट धैर्य की, अटल विश्वास की, अदम्य उत्साह की ।** श्री प्रभुनाम का दृढ आश्रय लिये रहने पर ये आवश्यक तत्त्व श्री प्रभुकृपा से आप ही आप जीव में आ जाते है जो प्रभु मारना जानता है वह जिलाना भी जानता है । बिगड़ता तो जीव के दुष्कर्म, दुसंग, दुसंस्कार से किन्तु बनता तो है कृपा निधान की अहैतुकी अनुकम्पा से ही ।

मोरि सुधारिहिं सो सब भाति, जासु कृपा नहि कृपा अधाति ॥

कृपा निधि की अनन्त कृपा भक्तों पर अनवरत कृपा वृष्टि करती ही रहती हैं और कृपा करते कभी भी तृप्त नहीं होती । बस ! श्री प्रभु नाम का दृढ आश्रय लेकर उस कृपा की वाट जोहते रहना चाहिए । **"नाथ ! कृपा ही को पंथ चितवत हैं दिन राति"** मेरा स्वास्थ्य कुछ बिगड़ गया था। श्री गुरु महाराज की तिथि की पूर्णाहुति के दो तीन दिन बाद मेरे दाहिने हाथ की तर्जनी अंगूली में एक साधारण फोड़ा से भयंकर घाव (जखम) हो गया था किन्तु श्री प्रभु कृपा से अभ घाव भर गया है उसी के कारण बुरवार हो गया था । वह भी ठीक हो गया । अब में बिल्कुल स्वस्थ्य हूँ और ५-१०-६३ को मुजफ्फापुर जाने का विचार है विशेष श्री प्रभु कृपा । सभी प्रेमियो मात्रं, प्रेमजीभाई वगैरह को मेरा यथा योग्य कहना ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय काकू !

जामनगर

शुभाशीर्वाद ! दिनांक १५-३-५७

तुम्हारा पत्र मिला । उसके पहले श्री पुज्य गुरुदेव का तीन फोटो भी मिला। यहाँ उसी फोटो का मूल Original नानी कौपी जोशी के पास थी । उससे बड़ा बनाने का विचार कर रहा है । उसने जो प्रयास किया है, उसमें सफलता सी दिखती है सीर्फ नेत्र पूरा साफ नहीं दिखता । उसके लिए कहता है कि Enlarge करने पर ठीक हो जायेगा । अेक छोटी कापी भेजता हूँ । पीछे Enlarge करके जोशी अेक कौपी भेजेगा अगर जँचे तो वहाँ का प्रयास छोड़ देना और जोशीवाला फोटो मंगवाना हो तो मंगवाना । मैं तो फोटो लेकर कहाँ रखू ? स्मृति तथा मानसिक पूजन में श्री गुरुदेव का फोटो तो है ही, बाहर दर्शन के लिए एक रख लिया है । मैने जो लिखा कि भूल से गये हो इसका कारण वास्तविक तुम लोगों का भूल जाना नहीं था, बल्कि तुम्हारे अन्तः स्थित, हृदय निहित विशिद भावो तथा पवित्र नित्य स्मृति को अत्यधिक, प्रबल तथा प्रगाढ बनाने के लिए ही था । कारण कि विशुद्ध प्रेम भाव में प्रतिकूलता, विपरीतता का एक शब्द भी प्रेमी के अन्तर्गत शिथिल भावो को तत्काल प्रज्वलित, प्रचंड बना देता है । साथ ही यहभी चरम सत्य है कि श्री गुरुचरण के आश्रय का एक मात्र फल **श्री प्रभु शरण की प्राप्ति ही है** और जिसे प्राप्तकर अन्य सभी को भूल ही जाता हैं या उसमें या उसे श्री प्रभु के रुपमें एक ही रुप में बदल लेना है बस! तुम लोगों का भाव, प्रेम, सेवा निष्ठा मुझसे कुछ छिपी हुई नहीं है । तुम्हारे अर्न्तगत भावो को खूब अच्छी तरह समझता हूँ, हृदय को परखता हूँ फिर भी जब जैसी श्री गुरुदेव की प्रेरणा होती हैं वैसा ही लिखता पढ़ता रहता हूँ और उसमें भी कुछ न कुछ तथ्य सार तो अवश्य ही रहता हैं । वहाँ ! **जैसे बने वैसे अपने चित्रवृतियो को प्रभु में जोड़ते रहने**

का जागरुक यत्न करते रहना चाहिए यो तो हम सब उन्ही के हैं और उन्हीं के रहेगे चाहे भला हैं या बुरा और उस करुणावरुणालय को अपनी पतित पावनता, दीनवत्सलता रुपी विरद को प्रमाणित करने के लिये हमे अपनाना ही पडेगा चाहे वे हमे न भी अपनावे जो की उनके लिए सर्वथा असम्भव है फिर भी हमने तो उन्हें अपनाया-उन्हे अपना माना है और मानेगें ही चाहे वे जो कुछ करे जैसा भी करे जिस किसी भी स्थिति में भी रखेगे -

जैसे राखौ वैसे ही रहौ ।
तुम जानत सब अर्न्तयामी, मुख ते कहाँ कहौं ॥
कवहुंक भोजन लहौ कृपानिधि, कवहुँकभूख सहौं ॥
कवहुंक चढ़ौ तुरंग महागज, कवहुंक नार वहौं ॥
कमल नयन घनश्याम मनोहर अनुचर भयो रहौं ॥
सुरदास प्रभु भक्त कृपा निधि तुम्हारे चरण गहौं ।

बस ! प्रभु नाम लेते, उनके साथ इतना भी सम्बन्ध हुआ कि अपना बन गया और प्रभु तो दयालु हैं बिगड़ो का बनाना ही उनका स्वभाव हैं विरद हैं वे मेरी बिगड़ी बनाने को भी सदैव तैयार हैं किन्तु उनके पास जाने की कोशीश कब करते हैं जिसमें जो कुछ भी प्रयास किया - क्या उसका प्रयास कभी विफल गया हैं ? यहाँ अखंड चैत्र पूर्णिमा श्री हनुमान जयन्ती तक हैं । उसके बाद वैशाख सुद ९ श्री जानकी नवमी से श्री द्वारकाधाम में १३ मास का प्रारम्भ करने की श्री प्रभु प्रेरणा है आगे प्रभु मर्जी। उसके पहले यहाँ पूरा करके कांदीवल्ली आने का विचार है । आगे जैसे प्रभु इच्छा कृपा । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

नाम स्मरण खूब करना चाहिए चाहे बोलकर चाहे मन ही मन ।

भजन बिना मनुष्य जीवन निस्सार हैं, निरर्थक हैं श्री प्रभु दया बिना माया का ध्वंस होना असम्भव है दया प्राप्ति के लिए विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं दया को उलट कर पढ़ो याद उसी में उसकी प्राप्ति छीपी हैं ।

रामनाम कलि काम तरु, सकल सुमंगलकंद ।
तुलसीकरतल सिद्धिसब, पग पग परमानन्द ॥
बिगडी जन्म अनेक की सुधरे अबही आज ।
द्धोहि रामको नाम, जपु तुलसी तजि कुसमाज ॥

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्धारकाधाम
दिनांक ३-४-५०

प्रिय काकू तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा ही अेक मात्र कुशलता का महामंत्र है, जिसकी प्राप्ति मनुष्य अपने मन, वचन, कर्म की चतुराई याने किसी प्रकार का भी कर्त्तापन का अभिमान याने अहंमता ममता के त्याग करने पर ही कर सकता है और वह इतना कर पाया तो सचमुच मानवजीवन का फल प्राप्त किया। इस प्रकार जो कुछ भी कर्म किया जाए, वह प्रभु कृपा समझ कर - अपने को निमित्त मानकर किया जाए तथा हर समय प्रभु से यह याचना की जाय कि प्रभु मुझे अेसी सद्‌बुद्धि दो कि मुझे किसी प्रकार का अभिमान, अहंकार न सतावें - अपना शिकार न बनावे । बस! इस प्रकार विवेक सहित कर्म किया जाए तो कोई कर्म किया जाए, उससे बन्धन या दुख होने वाला नहीं, प्रत्युत सच्चा सुखशान्ति संतोष मिलने वाला है । यही भजन का सच्चा स्वरुप है, हम जितना प्रभु नाम रटते जाए उतने ही हमें अपने को प्रभुके समीप, निकटस्थ समझते रहने चाहिए । अपनी समस्त इच्छाओ वासनाओं कामनाओं को श्री प्रभु इच्छा में बिलिन करने का अभ्यास बढ़ाते रहना चाहिए । यहाँ का कार्यक्रम शुरु होनेवाला है ही किन्तु कतिपय असंस्कारिक जीवों का थोड़ा बहुत असंतोष भी प्रकट होता है । यह तो कलि के जीवों का स्वभाव है और अेसा होना भी

चाहिए । यहाँ की प्रजा का पूर्ण सहयोग तथा श्रद्धा प्रेम है । बाघेरिया शेठ की भगवन्नाम निष्ठा श्लाघनीय है, हर प्रकार से सेवा करने को पूर्ण उत्साह प्रेम तथा निष्ठा के साथ तत्पर है । अक्षय तृतिया से ही ब्रह्मपुरी में आनंद-मंगल शुरु हो गया है । ब्राह्मणो का भोजन जो बन्द था आज से ही चालू हो गया । एक भक्त ने श्री द्वारकाधीश की ध्वजा चढ़ाई और समस्त ब्राह्मण ज्ञाति को लाडू जीमाया सब लोगों ने मुझे आने का आग्रह किया और कहने लगे कि आज से ही आनंद मंगल शुरु हो गया । यहाँ के निवासियों के प्रेम का क्या वर्णन करु ? विनय पत्रिका की संख्या नं. ९२, ९३, १०१, १२५, १३८, १४२, १४३, १४९, १५८, २१७, २१८, २२६, २४२, २६१, २६२, २७१, २७२, इनमें से कमसे कम १०१ और १३८, १२५, २१४ जरुर याद करना और विनय पढ़ते समय ऐसा मन से विचार करते रहना कि श्री प्रभु का जुगल चरणारबिन्द हमारी हृदय कमल पर बिराजमान है और हम अपना मस्तक उनके दिव्य चरणकमलों पर रखे हैं उन्हें अेक दिनहीन असहाय कि तरह दृढ़ रुप से पकड़े हैं और दिनबन्धु, करुणासिन्धु, भक्तवत्सल, पतितपावन, अधमउधारण प्रभु, त्रिबिध पाप ताप संतापहारी अपना अभय वरद्हस्त मेरे मस्तक पर रख कर मेरा समस्त जन्मजमान्तर का संचित पाप, ताप, माया का अपरहण कर, मुझे परम पावन तथा सुखी शांत बनाते हुए अभय प्रदान कर रहे हैं । बस ! भजन मुख से होवे न होवे सतत इस ध्यान का अभ्यास करना और यह विनय प्रभु को सुनाते रहना, कुछ समय बाद श्री प्रभु तथा श्री गुरुदेव की कृपा से स्वयं अनुभव होने लगेगा कि **प्रभु मेरे हैं और मैं प्रभु का** हूँ और सतत उनकी सहायता मुझे प्राप्त हो रही है । इन संख्याओं का पाठ अपने समयानुसार करना और उसका भाव भी समझने की कोशिष करना । वस्त्र ! ठाकुरजी का अभी छगनभाई को कहकर यही से तैयार करा लिया है । यहाँ प्रतिदिन अखण्ड का (खर्च १५ रुपये) रखा गया है । सिर्फ यहाँ की प्रजा के लिए ११। रुपया कारण की यहाँ कि प्रजा बहुत गरीब है । १५ रुपये में

प्रभु धाम में २४ घंटे अखंड नाम यहाँ के निवासी करें, ऐसा किसी के भाग्य में बदा ही कहाँ है ? अगर पुण्य कमाई होगी तभी लग सकेंगा अन्यथा प्रपंचियों ढोंगियों के हाथ में जाएगा । विशेष श्री प्रभु कृपा । मैं आनंद पूर्वक वगर किसी प्रकार के तकलीफ के बिना यहाँ सानन्द में पहुँच गया हूँ । सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम कहना ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

आशीर्वाद !

पत्र की नकल साथ में है ।

श्री परमकृपालु, अनंत दयालु, प्रभु की लीला का पार पाना कठिन ही नहीं बल्कि अल्पज्ञ जड़ मानव प्राणि के लिए सर्वथा असम्भव ही है । स्वयं कृपानाथ ही अगर अपनी ओर से कृपा करें तो ही जीव को कुछ समझ पड़े ? नही तो अपनी तुच्छ बुद्धि तथा अल्प ज्ञान के आधार पर तो हमें उसकी सर्वत्र समता होते भी विषमता ही प्रतीत होती है । आनन्द के लिए निर्माण की हुई सृष्टि निरानन्द एवं दुःखरूप ही प्रतीत होती है, वियोग के बहाने जहाँ नित्य निरंतर संजोग का विधान है, वहाँ हमें विषय वियोगव्यथा का अनुभव करना पड़ता है, जहाँ दैन्य दुर्बलता के बहाने सर्वस्व त्यागपूर्वक श्री प्रभु के अभय निर्भय शरणरूप सच्चे धन-ज्ञान गौरव एवं अमित अनन्त बल का विधान है, स्वयं हमें अपनी दरिद्रता, दीनता, हीनता, निर्धनता पर हमें अनुभव होता है, जहाँ अनित्य असुख दुःखरूप संसार सम्बन्ध के वियोग, अभाव तथा तिरस्कार के बहाने नित्य अविनाशी, शाश्वत सुखस्वरुप प्रभु प्राप्ति, प्रभु-मिलन, सत्यदर्शन, आत्मानुभव परमानन्द की प्राप्ति का विधान है, वहाँ हमें अनित्य सगा-सम्बन्धियों का वियोग अभाव दुखी ही बनता रहता है तथा उनका संयोग

अनादि संसार चक्र को ही सुदृढ करता रहता है । इस तरह अविवेक दृष्टि होने कारण हम अल्पज्ञ, अज्ञानी जड़ जीवों को प्रभु का मंगलमय, कल्याणमय, आनन्दमय विधान अमंगल रुप ही प्रतीत होता है - किन्तु नहीं । श्री कृपानाथ अनन्त गुरुदेव की चरण-शरण की ओट लेने के बाद हमें सुखी, स्वस्थ, सानन्द बनने की चेष्टा करनी चाहिए । संसार की विभूतियों भोगों की प्राप्ति अप्राप्ति दोनों परिस्थितियों में श्री गुरुदेव की परमकृपा, अकारण कृपालुता की ही अनुभूति करने का अभ्यास डालना चाहिए - इसी में अपना सच्चा कल्याण तथा मानव जीवन की सार्थकता हैं । श्री परमवंदनीय, नित्यअर्चनीय, परमकृपालु, अनन्तविभूति विभूषित श्री गुरुदेव के चरणशरण एक साथ ही ग्रहशा करने का हमें गौरव है, स्वाभिमान है, परमाश्रय है, जिसने अपने बीच रह कर थोड़े काल के लिए जिस दिव्यनामामृत का पान कराया, अजन्मा होते हुए भी हम लोगो जैसे महान नारकी अधम, पामर प्राणियों के उद्धार के हेत् जन्म धारण किया, जन्म देने वाला माता-पिता से भी अनन्त कोटि गुण लार प्यार किया, गुरु होकर भी जिसने शिष्य का सच्चा पाठ पढ़ाया, असंग होते हुए भी जिसने हम लोगो का संग किया, ज्ञानमूर्ति होकर भी जिसने अज्ञ, अल्पज्ञ, जड़ निर्दोष बालक जैसा बालकेलि की क्रीड़ा किया, धनवान होते हुए भी जिसने निरानिर्धन का सा जीवन बिताया, विद्धान होते हुए भी अज्ञ, अल्पज्ञ जड़ बुद्धि जैसा आचरण किया - नहीं तो कहाँ अनन्त ज्ञान अतुल ऐश्वर्य, असाधारण प्रतिभा, कन्दर्प कमनीय सौदर्य, कृष्ण कमनीय धंधुरारी अलकावली,रुचिर, रक्ताम्भोज कल्प, मृदु,मंजुल-मुग्धकारी मृदुल मंद हास और कहाँ हम लोगों जैसे सर्वसाधन हीन, सर्व शक्ति विहीन सेवा भाव-भक्ति शून्य निरस शुष्क, विषयी, समस्त कर्म धर्म, आचार विचारहीन पामर प्राणीयों का संग ? भूतल के स्वर्ग काश्मीर के भव्य भवन के निवासीका उज्जड़ शुष्क, मरुभूमि, बालूकामयी बालूघाट के पूर्णकुटि का निवास । कहाँ अमृतमय षटरस भोजन का भोगी और कहाँ चीऊरा दही मीर्ची का निरस कटु पदार्थो का भोजन ? विचारो तो जरा श्री गुरुदेव

की अहैतुकी अनुकम्पा का स्वरुप ! महती दया की महिमा ? अप्रमेय कृपा का दान! फिर भी अगर हम उसके निर्दिष्ट मार्गग्रहण न कर सके, उसके सिद्धातों को न अपना सके, अपना जीवन सर्वस्व, समस्त ज्ञान ध्यान, अभिमान अर्पण न कर सके, अपना जीवन भगवन्मय भगवन्नामय न बना सके तो अपना कितना दुर्भाग्य? कितना दुदैन्य, कितनी विडम्बना ? संसार सराय है यहाँ का आना जाना तथा यहाँ के भोगों का भोग चंद रोजा है- चार दिन का हैं - अपात रमणियता है वस्तुतः तो सार शून्य ही है । अतः उसकी ओर ध्यान न देकर जिस भी स्थिति में और जहाँ कही भी प्रभु रखे, उसी मे प्रभु कृपा एवं सुख संतोष समृध्दि मान कर, सराय जीवन का समय व्यतीत करते अपने नित्य घर के लिए पूरी पूरी तैयारी करनी चाहिए । जिसने प्रत्यक्ष हम लोगो के बीच प्रकट होकर सरायरुप संसार की सभी लीलायें दिखलाकर, समझाकर, अल्पकाल, अल्पायु में ही अर्न्तध्यान हो, व्यापक बन, विस्तृत अन्तरिक्ष में खड़ा होकर हम लोगों के जीवनचर्या का निरीक्षण करते हुए अपने बोये हुए बीजों को अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित तथा फलान्वित होने की प्रतीक्षा कर रहा है उसे हमें भूलना न चाहिए बल्कि अपने प्राणों की बाजी लगाकर, अखूट धैर्य रख कर उनकी अनन्त कृपा, का अटूट आश्रय लेकर दैन्य, दुर्वलता, निर्धनता, विषमता, विपरिततारुपी दूर्जय दुराने को दमन करना चाहिए और हमें भय ही क्या है ? जबकि श्री अनन्तकृपालु गुरुदेव के प्रदंत्त अभेदय, दुर्भेघ, अमोघ अस्त्र शस्त्ररुपी विजय मंत्र **'श्री राम जय राम जय जय राम'** अपने पास है बीर पुंगव । मंगलमूर्ति बलवीर्य शोर्य तेज पुंज मंगल मूर्ति श्री हनुमन्तलालजी का ध्यान करते हैं, उनके विजय मंत्र का घोष करते मोहरुपी रावण तथा काम क्रोध, लोभ मत्सिर्य रुपी उनके समस्त परिवार सहित प्रवृत्तिरुप स्वर्णमयी लंका के दुर्जय दुर्ग को ध्वंश कर, जीवन संग्राम में विजयी बन, विजयपताका फहराते, आनन्द मंगल मनाते श्री गुरुदेव के दिव्य चरणकमलों में पहुँचना है अगर हम सावधान होकर **प्रभुनाम का जय घोष करते रहेगें** तो मेरे सामने कोई विघ्न

माया ठीक नहीं सकती रुकावट रोक नहीं सकती उलझाने उलझा नहीं सकती । संसारी की गति विचित्र है । जिस तन धन, मन सगे सम्बन्धी पर इतना भरोसा आशा रखता है, उसे खबर नहीं कि उसका स्वयं ही क्या हाल ! क्या गति है ? जहाँ का समस्त सम्बन्ध सीर्फ स्वार्थ, वासना, लालसा, ममता लेकर ही है तथा जरा भी स्वार्थ में, मतलब में अन्तर पड़ने पर या मन के प्रतिकूल होने पर, चिर संघटित सम्बन्ध को भी तोड़ने में जरा संकोच नहीं होता जो कीसी प्रकार से भी सुखी सनतुष्ट बनाने में सर्वथा असमर्थ है । ऐसे संसारी सगा सम्बन्धीयों तथा पदार्थों में कितनी आशा भरोसा रखते है ? किन्तु जो प्रभु नित्य संगी, सच्चा सम्बन्धी, अहैतुकी हीतैषी हैं उसे हम भूल जाते हैं संसार के समस्त सगा सम्बन्धीओं के होते हुए भी जीव दुःख के उपर दुःख भोगा ही करता हैं तथा जीवन काल में थोड़ी प्रतिकूलता होने पर भी आत्मघात जैसा महान पाप कर बैठता है कितने असहाय नरनारी, बालवृध्द, सर्व प्रकार आश्रय हीन होने पर श्री प्रभु कृपा से उनकी रक्षण में सुखी सानन्द जीवन व्यतीत करते है । कहने का आशय कि हमारे पास संसार की मिथ्या पदार्थों एवं सगा सम्बन्धीओं का सघटन प्रचुर रुप में प्राप्त हो या अल्परुप में, विचार बिना, विवेक बिना, भजन बिना, प्रभु के पूर्ण आश्रय बिना प्रभु नाम रुप अमोघ अस्त्र को धारण किये बिना कर्णाधाररुप श्री गुरुदेव की दिव्य वाणिरुप वाण में पूर्ण श्रद्धा विश्वास रखे बिना संसार रुपी भयंकर सागर से पार होना कठिन ही नहीं बल्कि सर्वथा असम्भव है "गुरु बिनु भव निधि तँरै न कोई" जो विरंचि शंकर सम होई "गुरु का स्थूल शरीर ही पूजा का पात्र नहीं बल्कि गुरु की दिव्य वाणि रुप नित्य अविनाशी शरीर ही पूजा अर्चन का सच्चा तत्व हैं जो स्थूल शरीर तथा संयोग का विनास हो जाने पर नित्य अविनाशी अमर बना रहता हैं । मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्षमूलं गुरोःकृपा, वश ! गुरुदेव की अमर वाणी, अमर अमिट उपदेश, आदेश रुप विजयमंत्र को प्राणपन से हृदयंगम कर जीवन संग्राम में विजयी बनों, सच्चा, सुख प्राप्त

करो, यही श्री गुरुदेव की सच्ची पूजा हैं सच्ची भक्ति है सच्ची आराधना है, अपना जीवन सर्वस्व है, हम सभी श्री गुरुदेव के आश्रय है उनके वालक हैं वे स्वंयभी हमारा मान सभार कर रहे हैं करते रहेगें ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

।। श्री राम ।।

"श्री राम जय राम जय जय राम"

पोरबंदर

प्रिय काकू तथा बाल गोपाल !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से यात्रा आनन्द पूर्वक हो गई, यात्रा हो क्या गई जब कि सारा जीवन ही यात्रा है । जिस दिन से घर बार कुटुम्ब परिवार का श्री प्रभु ने अपनी परम अहैतुकी अनुकम्पा से त्याग कराया, उस दिन से आज तक और अभी तक तो यात्रा ही हो रही है । हाँ ! इतनी श्री प्रभु से विनीत विनय अवश्य ही है कि यात्रा हारिद्धार ही तक पहुँचकर न रह जाए, उस प्रभु की अभय निर्मय चरणारबिन्द तक पहुँच जाए । उस नटवर नागर की लीला बड़ी विचित्र है । उसका समझना या समझने की चेष्ठा भी करना उसे बौने (Dwark) मनुष्य की तरह है जो अपने हाथों से आकाश छू चेने लालसा करता है । हाँ ! इतना ही जीव के लिए परम साध्य है, कि वे जब, जिस स्थिति में रखे, उसी में रहकर, उन्हीं की प्रेरणा और अपना ही पूर्वकर्म विषाक समझ सुख शान्तिपूर्वक विघ्न बाधाओ से बार-बार बाधित होने पर भी अबाधित वृत्ति रख अपनी जीवन यात्रा में चलते रहना चाहिए, जिसका मंजिल तो बहुत दूर है और समय साधन बहुत अल्प है । अतः अेसा न हो कि रास्ते की अपात रमणीयता याने तुच्छ सामान्य साधारण सुख सौन्दर्य को अवलोकन करने में ही समय बीत जाए और यात्रा के उस मंजिले मकसुद के दिव्य, चिन्मय

अलौकिक सुधा सौन्दर्य के रसास्वादन से हम वंचित ही रह जाए। जिसकी उपलब्धि के लिए ही यात्रा करते करते अनन्त काल बीत गये है और इस बार भी अगर असावधानी हुई, लापरवाही हुई, अलस्य प्रमाद हुआ बीच-बीच में ही रुकने का प्रलोभन हुआ तो न जाने आगे क्या होगा ? होगा तो वही जो होता आया है ? चोरासी का चक्कर ? किन्तु हम लोगों को कोई तो चिन्ता नहीं क्योंकि श्री गुरुदेव रूप कर्णधार के दिये हुए श्री प्रभु के चरण कमलरूपी जहाज को तथा उससे भी विलक्षण श्री प्रभु के दिव्य नामरूपी मुष्टि को अेकमात्र बीज शक्ति, अलौकिक अधिष्ठान का आश्रय जो ले रखा है। जहाज याने इतर साधन सामग्री से तो सागर - संसार सागर पार करना पड़ता है और पार हो जाने में भय और शंका भी बनी रहती है किन्तु श्री प्रभु नाम रूपी अनुपम, अप्रमेय शक्ति साधन का सहारा लेने पर तो समुन्द्र - भवसागर ही सुख ही जाता है उसका अस्तित्व ही मिट जाता है जैसा कि श्री गोस्वामी जी ने लिखा है "नाम लेते भवव सिन्धु सुखाही करहुँ विचार सुजन मन माही ?" भवसागर का अर्थ अज्ञान सागर मिथ्या संसार। जब तक अज्ञान है अविद्या है तभी तभी तक यह संसार तथा इससे सम्बन्ध रखनेवाले पदार्थ सुखकर तथा रमणीय लगते है यद्यपि ये अनित्य तथा क्षणभंगुर होने के कारण मूल में तथा परिणाम में दोनों दुख रूप ही हैं सुख की तो अेक परिछाया मात्र दिखती है जैसे अज्ञानी प्यासे मृग को सुर्य की प्रचन्ड किरणों में धधकती ज्वाला में पानी का अमास मात्र होता है और उसी पानी की मिथ्या प्रतीति के पीछे दौड़ते-दौड़ते अपनी जीवन की रक्षा के बदले अपने जीवन से ही हाथ धो बैठता है। यह स्थिति संसार चक्र में पड़े हुए अज्ञान मनुष्यों की है तो इस मिथ्या जगत के दुखरूप, नाशवान, क्षणभंगुर पदार्थों में सुख प्राप्ति की आशा आभिलाषा की भ्रान्ति में सुख के नाम पर दुख ही दुख भोगते जा रहे है फिर स्वयं समझकर या दूसरे के समझाने पर भी उससे निवृत्ति होना नहीं चाहते और हाय हाय। करते करते अपने प्रिय लगने वाले पदार्थो को यो ही

जहाँ के तहाँ छोड़कर लोक परलोक दोनों से हाथ धो बैठते हैं अतः बुद्धिमानी तो इसी में है कि राह में ही न अटक कर यात्रा की अंतिम मंजील भी श्री प्रभु के पादपदमो तक तथा नित्यधाम तक पहुँचने का प्रयास करें। इसी आधार पर राह की कोई सुन्दरता सजावट में समय न गवाकर बहुत अल्प समय में और बहुत तीव्रगति से श्री हरि के द्वारा में पहुँचा जहाँ पतित पावनी अधम उधारिणी श्री प्रभु पादपदम सलिला भगवती भागीरथी के तट पर असंख्य सन्तों तथा भक्तों की यमघट लगी थी। उनके दिव्य दर्शन, स्पर्शन तथा माँ भागीरिथी के दर्शन स्पर्शन एवं निमज्जन से पावन बना, श्री गुरुदेव की दिव्य तपोभूमि का दर्शन श्री प्रभु की परम प्यारी भूमि व्रजभूमि गोलोक धाम में पहुँचा जहाँ श्री राधिका माता का दिव्य दर्शन तथा संकटविहारीजी का अलौकिक संकेत या श्री नाम जी श्री गिरिराज श्री।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी ! कांदीवल्ली

आशीर्वाद ! दिनांक १५-११-५०

तुम्हारा कई पत्र मिला किन्तु उत्तर नही दे सका, इसका कारण मेरा आलस्य ही कहा जा सकता है। प्रभु की बड़ी कृपा हुई जो तुम्हारे भाई लोग अनुकूल हो गये है और यह होना भी यथार्थ ही है क्योंकि "**गरल सुधा रिपु करै भिताई गोपद सिन्धु अनल सितलाई**। चारु बाबू भोलाजी, सूर्य जगन्नाथ का क्या हाल है और प्रेमियो का भी समाचार की आशा है अच्छी ही होगी अभी यहाँ से दो चार रोज में चला जाने का विचार है किन्तु प्रभु की मर्जी जैसी होगी वैसा ही होगा जब जब चलने की तैयारी होती है घर घर लोग बच्चे रोने लगते है और विवश होकर ही और रुक जाता पड़ता ह। बैजनाथ भी तंग कर

रहा है । कि कम से कम पुष महीने तक तो अवश्य रहिये क्योंकि द्वारिका का विवाह उसी माह में होने वाला है । आगे सब प्रेमी भाई-भाई तुम्हारी बड़ी प्रशंसा करते है। और बराबर याद भी करते हैं । धुन भी चलाता है किन्तु बहुत आग्रह से पंडितजी की कथा शुरु कराई गई है । इस वजह से धुन बंद करना पड़ता है। भजन खूब करना समय भयंकर है । विशेष श्री हरि कृपा ।

तुम्हारा हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

पोरबंदर, गीतामंदिर

प्रिय गिरधारी !

आशीर्वाद ! दिनांक २२-३-५२

तुम्हारा पत्र मिला पढ़कर प्रसन्नता हुई । अभी जामनगर से ५६ दिवस का अखंड यज्ञ शहर के मध्यभाग में हुआ उसमें जनता की लगन प्रेम आगाध थी जिस प्रकार पर साल अनुष्ठान की पूर्णाहुति के अवसर पर हुआ था उसी प्रकार अन्य अन्य भावुकों भक्तों ने मिलकर किया । वहां भी रामधुन मंडल की स्थापना भी बकायदे हो गई है । मंडल ने लगभग ७०० सौ रुपये खर्च करके सभी धुन की आवश्यक वस्तुएँ नवीन खरीदी है। और उनका उदेश्य है कि गांव के अन्दर कोई भी व्यक्ति जो धुन कराना चाहिए वह रामधुन मंडल के सेक्रेटरी को सूचना मात्र कर दे, वे लोग सभी चीजे अपनी मोटर में लेकर जाएगे, मंडप तैयार करेगे धुन करेगें जिसके पास पैसा नही है उसे पैसा भी मदद करेगें । अभी अभी लगभग एक मास का अखंड होने वाला था लेकिन पोरबंदर की जनता ने बहुत हठ करके मुझे यहां ले आई अभी पोरबंदर गीता मंदिर में १५ दिन का अखंड प्रतिपदा से पूर्णिमा तक शुरु होगा, अभी छाया गांव में ७ दिन से अखंड चल रहा है जो अमवश्या को पूर्णाहुति होगी यहां

के राजा के महल मे भी धुन होने वाला है। पीछे पता नही कबतक चलेगा
नन्दकुमार बाबू को मेरा पता दे देना। सभी प्रेमियो को मेरा जय श्री राम।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी, राम शरण, सूरज, कपिलदेव, भोलाजी, चारुबाबु।
छाया पोरबंदर
कुंजी तथा अन्य सभी प्रेमीगण। !
दिनांक २४-३-'१४
जय श्री रामजी की !

तुम्हारा पत्र मिला। मेरे प्यारे चेला भगवानजी के लिये आप लोगों ने
जो अखंड यज्ञ समारोह किया उसके लिये कोटिशः धन्यवाद है। भगवानजी
बालक एक योग भ्रष्ट जीव था, उसकी आत्मा महान थी, वह अमर जीव था
और अमर बन गया। उसकी बिमारी तथा शरीर त्याग की एक विचित्र कहानी
है। जो लिखने पर एक मोटी पुस्तक बन सकती है। बड़े बड़े योगी, ज्ञानी ध्यानी,
को जो गति प्राप्त होती है वही गति उस बालक को प्राप्त हुई है। मौत का
भय नहीं- महान रोग होने पर भी जरा भी दुख दर्द चिन्ता नही हँसते हँसते
मुझे तथा प्रभु नाम स्मरण करते उसी प्रकार शरीर त्यागा जैसे "सुमन माल
जिमि, कंठ ते गिरत न नाग। **राम चरण दृढ़ प्रीतिकरि बालि किन्हु तनु**
त्याग।" उनकी माता, पिता, परिवार तथा यहां के मंडल की क्या महिमा वर्णन
करे जो ९ दिवस भी अवसान का पूरा नहीं हुआ तभी से सबने मिलकर उसके
घर मेंही ५ दिवस का अखंड रखा। माता कहती है मेरा अहो भाग्य कि मेरा
पुत्र प्रभु स्मरण करता परम धाम पधारा। मैने उसके शरीर छोड़ने के दिन ही
दो घंटे पहले बम्बई में उसके नाम पर अखंड कराकर जामनगर गया।
बम्बईवालों को बोलकर आया था भगवान जी अब नही मिलेगा वह अमर बन
कर गया तब भी अन्त तक स्मरण करता था और शरीर छोड़ने के पहले तीन

बार दृष्टांत करके शरीर छोड़ अमर बन गया। अभी................' के लिए जो किया वह तुम्हारा भाग्य था। जगह-जगह धून चल रही है।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी !

गीता मंदिर, पोरबंदर
दिनांक ६-४-५२

आशीर्वाद !

प्रभु की कृपा विलक्षण है पता नहीं वे कब क्या करते कराते हैं अभी रामनवमी के एक दिन पहले आदेश हुआ पर साल की तरह ८४००००० विजय मंत्र मणीमाला तैयार कर श्री जानकी नवमी के अवसर पर अपर्ण करो उसी आदेशानुसार पत्र लिख रहा हूं, तुम्हारे यहाँ आने का विचार था लेकिन प्रभु की इच्छा ही कुछ और थी जो तुमने मंत्र लिखा है उसे अपने यहां जानकी नवमी पर अपर्ण करना, शारीरिक नही लेकिन मानसिक उपस्थिति मेरी रहेगी ही। पत्र मिलने से जो मंत्र लिखना लिखाना उसे नीचे पते पर उक्त तिथि के पूर्व भेजना-अन्य सभी प्रेमी भाई बहनों को जिसने पर साल मंत्र लिखा था यों जो नये हैं उन्हे सूचित करना मंत्र की संख्या टोटल साफ साफ और नाम लिखना चाहिए पर साल विहार का मंत्र बहुत थोड़ा था लेकिन परिश्रम बहुत हुआ उसे ठीक तैयार करने में १०००० से कम मंत्र वाले का नाम नही सीर्फ संख्या टोटल करके लिखना अभी गीता मंदिर में १५ दिन का अखंड चल रहा है। चैत्र पुनम को पूर्ण होगा। पीछे यहां के महाराज के राज महल में ३ दिन का अखंड चालू होगा। अभी यहां पर वाह चल रहा है । उधर आने जाने के श्रोत बंद हो जाएगा । कही भजन करना चाहिए । चीरंजी द्वारका.... यगल अन्य सभी प्रेमियों को सूचना दे देना । नन्द कुमार बाबू अगर उस मौके पर आवे तो अच्छा। मंत्र भेजने का पता। गोरधन दास का माधवजी, पोस्ट वाक्स

नं. २३ जामनगर, सौराष्ट्र ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

गीता मंदिर, पोरबंदर

प्रिय गिरधारी !

आशीर्वाद ! दिनांक २१-४-५२

पत्र मिला प्रभु की इच्छा के अनुसार ही वर्तन करना अपना धर्म तथा परम कर्तव्य इसी में परम कल्याण है। श्री जानकी नवमी पर यह स्थूल शरीर पास उपस्थित नही हो सकेगा वहा अगर मंत्र का विधान करना हो तो पर साल जैसा करना पहले वाला मंत्र का और अनुष्ठान वाला मंत्र १-५-५२ तक नीचे पते पर गोरधन दास या माधोजी ग्रेन मार्केट C/o. २३, जामनगर अन्य सभी प्रेमियों को भोलाजी वगैरह को पते की सूचना कष्ट न हो तो दे देना कारण कि इस समय मुझे अधिक पत्र लिखने में तकलीफ पड़ती है समय नहीं मिलता लगभग १ मास से अखंड चालू है। विशेष श्री प्रभु कृपा। हितेच्छु प्रेमभिक्षु गीता मंदिर पोरबंदर १-५-५२ तक यही पता पत्र भेजते रहना. जिस सच्चे प्रेमियों को आना हो तो आ सकते है।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी !

आशीर्वाद !

विदित करते हुए परम हर्ष होता है कि मंत्र यज्ञ श्री जानकी नवमी, शुक्र वार तारीख २२-५-५३ को जामनगर में ही पुनः होगा। अतः तुमने स्वंय या

[illegible]

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जामनगर

प्रिय गिरधारी !

आशीर्वाद ! दिनांक [illegible]

पत्र मिला भेजा हुआ मंत्र मिला, समयपर अर्पण हुआ तुम्हारे यहां की मंत्र संख्या बिलकुल ना बराबर ही थी प्रभु कृपा से अनुष्ठान बड़े ही समारोह और उत्साव के साथ सम्पन्न, अपार जनता की भीड़ थी- लगभग ३ करोड़ मंत्र अर्पण हुआ जिसमें जामनगर का केवल लगभग दो करोड़ मंत्र था, पीछे छप्पन लाख पोरबंदर का बिहार का छ लाख कुल जब कि तुम लोगों को इतना प्रेम है। और बार बार बुलाते हो, अपने तो जहां अधिक भजन हो वहा अपने लिये श्रेयस्कर है। भोलाजी नन्दकुमारजी, राधेबाबू, शंकर वस्त्रालय वाले तथा बांके बाबू तथा अन्य सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम तथा अनुष्ठान की अभूतपूर्व सफलता की सूचना देना। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

मदनलाल, नारायण टीकमानी भगवती चरण बालू घाट सभी को मेरा

जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी !

श्री बेट कन्हैया भुवन

आशीर्वाद !

दिनांक २०-५-५४

श्री नन्दकुमारजी के पत्र द्वारा तुम सभी लोगों को समाचार भेजा था । शायद मालूम हुआ होगा। पत्तोत्रर नही आने से पुनः पत्र लिखता हूँ, श्री द्वारकाधीश के आदेश से १३ मास का काष्टमौन सहित अनुष्ठान श्री बेट धाम से तीन मील पर जंगल में स्थित श्री हनुमानजी के मंदिर में श्रेष्ठ सुद दशमी ता. १०-६-५४ से प्रारंभ होगा। इस तेरह मास तक मिलना जुलना, लिखना पढ़ना, बिलकुल बंद रहेगा अतः तुम लोग तेरह मास प्रतिदिन नियमपूर्वक अधिक से अधिक मंत्र स्वंय लिखो और दूसरो से लिखवाने की कोशिश करना। वहां के सभी प्रेमियों को राधेबाबू, भोलाजी, चारुबाबु, ईश्वरबाबू, रामशरण, बंशी सुखदेव, कपिलदेव उसके भाई सूर्यदेव, श्री देनकीनाथ तथा अन्य सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम । सूचना कर देना। विशेष कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी!

श्री बेट

आशीर्वाद !

दिनांक १४-६-५४

तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । श्री परम पूज्य पाद १०८

श्री गोल मोल बाबा तथा परमपूज्य श्री १०८ श्री गद्दारीबाबा के परम पावन पाद पदमों में मेरा सादर सप्रेम साष्टांग दन्डवत कहना तथआ अन्य सभी प्रेमियो को जय श्रीराम । मंत्र पहले काभी शामिल हो जाएगा किन्तु अभी तो १३ मास तक मंत्र लिखना लिखाना है। १३ करोड़ मंत्र होना है तो इसी में तुम लोगों के प्रेम भक्तिका परीक्षण है । यहां तथा अन्य सभी जगहों में लिखना उत्साहपूर्वक चालू अनुष्ठान पूर्ण होने के समय सीर्फ वहां की संख्या द्वारा भेजना होगा पीछे यज्ञ का निश्चय होने पर मंत्र मंगवाया जाएगा। अभी मंत्र वही किसी एक स्थान पर सुरक्षित रखना चाहिए। विशेष श्री प्रभु कृपा, बहन का जीवन सुख मय आनन्द मय कल्याण मय होवे इस के लिए आशीर्वाद तथा प्रभु प्रार्थना करता हूँ । तब तक मंत्र लिखो लिखाओ यही आग्रह।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम ज़य जय राम"

प्रिय गिरधारी !

आशीर्वाद !

पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ । गोधुभाई का भी पत्र आया। दिनंगत आत्मा के लिये तुम लोगो को अखंड अवश्य करना चाहिए । इधर भी नवरात्रि के बाद जगह २ अखंड का आयोजन हो जाएगा । अभी तो शरद पूर्णिमा .... कर देना । श्री प्रभु कृपासे मैं भी आगे पीछे शामील हो जाऊँगा । विशेष श्री प्रभु कृपा । **जब अपना सिद्धांत सर्वे भवन्तु सुखीनः का है** तो अपने समाज यानी प्रेमी वर्ग जब किसी का और जब कभी किसी का देहान्त होवे तो उसके कल्याणर्थ भगवन्नाम स्मरण यथा साध्य करना ही चाहिए। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी !

द्वारका

आशीर्वाद !

दिनांक १३-६-५६

तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ। स्पेशल ट्रेन का समय एक मास बढ़ा दिया गया है। अभी विजय दशमी के वजाय दीपावली के बाद नवेम्बर के आखिरी सप्ताह में ट्रेन निकलेगी इसका कारण यह है कि दीपावली यात्रा के बीच आ जाने से व्यापारी वर्ग को कुछ अड़चन होती थी इसलिये समय बढ़ा दिया गया है। जहौरीमल शेठ तथा बैजनाथ कहनानी का पत्र उनका रिजर्वसीट Cancel कराने के लिये आया है तो उनका सीट Cancel होजाएगा और पैसा भी वापिस भेज दिया जाएगा । अगर नये समय के अनुसार भी उन्हे यात्रामें आने की सुविधा न हो तो पत्र लिखना उनका पैसा वापिस भेज दिया जाएगा। अभी समय बहुत है इस लिए प्रचार भी करना। एक मास पहले प्रबल कारण कि सूचना मिलने पर रीजर्वेश का १०० लौटा दिया जाएगा अगर यूं मन होने तो रीजर्वेसन कराने, मन होवे तो पैसा लौटा लेवें अेसा नहीं होगा। विशेष बाते राधे बाबू से मिलाकर समझ लेना। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी तथा अन्य समस्त प्रेमी मंडल !

द्वारका

आशीर्वाद !

दिनांक १३-१-५७

सादर सप्रेम श्री हरि स्मरण ।

श्री प्रभु द्वारकाधीश की असिम अहेतुकी अनुकम्पा से लगभग बारह मास से अखंड चालू ही है और श्री प्रभु कृपा होवे तो चालू ही रहे। हृदय से अपने

जीवन का अंतिम भाग श्री द्वारकाधीश की शरण में व्यतित करने का है किन्तु यह तो पूर्व का कोई महान पुण्य, श्री गुरुदेव की दया तथा प्रभु की अनुकम्पा होवे तो बन सके। अभी जामनगर में वसंतपंचमी के बाद से अखंड शरु होने वाला है। तुम्हारा १५० रुपैया तार मनि औंर्डर से आया जो हमारे सेठ हरिदास वाघेरिया कापड़ वालाने सही करके ले लिया है, अभी तक तुम्हारे पत्र का इन्तजार करता था, जिससे पत्तोतर नही दिया था, अभी उस ओर आना नहीं बन सकेगा रुपैया बोलो तो भेज दूं या यहाँ अखंड में लगा दिया जावे। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी अन्य समस्त प्रेमी मंडल ! जामनगर

आशीर्वाद ! दिनांक १४-२-५६

तुम्हारा ८-२-५७ का द्वारका के पत्ते से लिखा हुआ पत्र आज जामनगर में मिला। वसंतपंचमी के अेक दो रोज पूर्व तुम्हे पत्र लिखा था, शायद मिला होगा। इसके मिलने के पहले ही तुमने यह पत्र लिखा होगा । १५० का तार मनिओर्डर सेठ हरिदास वाघेरिया के हस्ताक्षर से प्राप्ति सूचक पत्र मिला होगा। अभी जामनगर में एक मास का अखंड चालू है- श्री द्वारकाधाम यहाँ आने के पहले तक अखंड चालू था और चालू रहने वाला था। किन्तु जामनगर वालों के अति आग्रह के कारण वहां अखंड बंद करके आना पडा है। तुम्हारे तार मे अखंड २, फेब्रुआरी ऐसा लिखा था, उस तिथि पर किसी प्रकार अपने से पहुंचाये ऐसा संभव नही था, कारण कि चालू संकल्प का अखंड छोड़कर किस प्रकार बाहर जाया जाए। पीछे जामनगर का शुरुआत हो गया । यहां की पूर्णाहुति के बाद श्री द्वारकाधाम में बेट में जैसे १३ मास का अनुष्ठान था,

[illegible] यहाँ १३ मास का अखंड की श्री प्रभु प्रेरणा है और वहां सभी लोग तैयार था कि लगभग १२ मास से अखंड चला भी रहा है, पहले पत्र में मैने लिखा है कि रुपये का क्या करु वापस भेज दुं या १३ मास के अखंड के लिए प्रभु श्री आने के लिए शेठ से पास रहे सो उत्तर देना । प्रभुनाम रटन करो कराओ जब अन्नजल होगा तो आया जाएगा। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

द्वारका

प्रिय गिरधारी !

आशीर्वाद ! दिनांक ३-६-५७

श्री प्रभु कृपा ही जीव मात्र के कल्याण का अेक मात्र साधन है और उस कृपा की उपलब्धि का उपाय भी इस कलिकाल में एक ही है और वह है श्री भगवन्नाम। जितने श्री नाम महाराज का आश्रय ले लिया उसके लिये सर्वत्र मंगल ही मंगल है । "रामनाम कलि काम तरु, सकल सुमंगल कंद, तुसली कर तल सिद्धि सब, पग पग परमान्द", बहुत दिनों के बाद तुम्हारे पत्र का उत्तर आया, यह तुम्हारे मुजफ्फरपुर वालों की विशेषता है। तुम्हारे कथनानुसार दो चार दिन बाद कीर्तन शुरु कर दिया जाएगा । गत वर्ष जो ६ मास का अखंड हुआथा उसमें रोज का खर्च १५ रु. लगता था किन्तु द्वारिका की प्रजा बहुत गरीब होने के कारण हमारे धार्मिक नाम निष्ठ सेठ हरिदास भाई अपनी ओर से रोज का ४ देते थे और ११ रुपये खर्च रखा गया था। उस समय सबो के लिए एक सा ही नियम था किन्तु मात्र ट्रेन के प्रचार तथा लम्बा समय का खर्च विचार कर अभी बाहर गाँववालों के लिए पूरा खर्च १५रु लेने का तथा द्वारका वासियों के लिए ११रु शेष ४ सेठ की ओर

से । इस व्यवस्था के अनुसार तुम्हारा दस दिन का अखंड होगा। विशेष श्री प्रभु कृपा। सभी प्रेमियों को जय श्री राम।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम शरणां मम् ॥

श्री राम

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी ! जामनगर

आशीर्वाद !

तुम्हारा पत्र मिला । अभी नवरात्रि में १५ दिवस का अखंड चालू है जिसकी पूर्णाहुति कार्तिक वदी, द्वितीया, रविवार को ६ बजे शाम को होगी, तुमलोगो के जाने के बाद श्री द्वारकापुरी ७ दिवस अखंड महायज्ञ हुआ था, जिसकी पूर्णाहुति में यह शरीर शामिल हुआ था, वहाँ की जनता में एक अपूर्व लगन और भावना देखने में श्री द्वारिकाधीश की कृपा से बहुत आनन्द तथा सम्मान प्राप्त हुआ था, यधपि अपने किसी प्रकार योग्यता नहीं फिर भी श्री नाम महाराज की महिमा तथा श्री गुरुदेव की अहैतुकी कृपा वहां तक पहुंचा देती है। जिसके लिए मुझे अनेक जन्म तप करने की आवश्यकता है ठीक गोस्वामीजी ने लिखा है- **"हौं तो सदा खर के असवार, तिहारो हि, नाम गयंद चढ़ायो ।"** अतः ऐसे दिव्य महिमा सम्पन्न श्री राम नाम महाराज की अनन्य शरण ग्रहण करना ही इस कराल कालिकाल से बचने का एक मात्र अमोघ साधन है तथा जो भोग और मोक्ष दोनो प्रदान करने वाला है । अभी पोरबंदर से आदमी बुलाने को आया है तो शायद पोरबंदर होकर, बेट द्वारिका होते कच्छ जाऊं, और उसके पीछे बम्बई का विचार है- आगे श्री प्रभु की मर्जी । सभी प्रेमियो को मेरा जय श्री राम । तुम लोगों के आने से यहां की

...जनता को काफी संतोष हुआ, कलि में संघशक्ति ही बल है इसको कभी भूलना नहीं, ऐसा विचार जहां तक बन सके एक ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी !

आशीर्वाद !

पत्र मिला । समाचार मिला। कलिकाल का प्रभाव दिन प्रति दिन प्रबल होता जा रहा है, इस से स्वाभाविक ही है कि भजन करने वाले सहयोगी थोड़े रह गये है और जो है उनमें से भी इने गिने ही अन्ततक रह सकेंगे। किन्तु इससे निराश होने की आवश्यकता नहीं कारण कि एक भी प्रभु का सच्चा भक्त होवे, प्रहलादजी जैसा नाम निष्ठ वाला होवे तो हिरण्य कशिपु जैसे प्रतापी राक्षसों की किला को धराशायी कर सकता है। वैसे नाम निष्ठ भक्त पर कष्ट आने पर स्वंय प्रभु अवतरित होकर दुष्ट का संहार करते है । इसी तरह जो भक्त प्रहलादजी जैसी निष्ठा से रामनाम में लगे रहेगे उनका कलिकाल कुछ बिगाड़ नहीं सकता और कलिकाल अगर विशेष जोर किया तो नामरुपी नरसिंह कलिकाल रुपी हिरण्यकशियपु का कलेजा बिदिर्ण कर डालेगें । गोस्वामीजी ने नाम वंदना के अंतिम दोहा में लिखा है ।

"राम नाम नर कसरी, कनक कसिपु कालिकाल ।
जापक जन प्रहलाद जिमि पालहि दलि सुरसाल ॥"

सब ग्रहों का अधिपति सूर्य उस सूर्य को अवतार लेते ही श्री हनुमानजी निगल गये थे, उस हनुमान का प्राणजीवन, सम्पूर्णशक्ति क्या है ? सीर्फ एक रामनाम सुमिरि पवन सूत पावन नामू, अपने बस करि राखेहु रामू । अतः ऐसे अमित, अनन्त महिमावाला नाम यज्ञ को छोड कर नवग्रह, यज्ञ और दूसरे

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

देवी देवताओं का यज्ञ करना, जिसमें आजकल के बड़े बड़े पापियों के ही धन लगते है। मेरी दृष्टि में कोई किमंत नही रखता, और न शास्त्र ही मानता है। यज्ञ में जप यज्ञ साक्षात प्रभु का स्वरुप है । अतः नाम प्रेमी को सब के चक्कर में पड़ना नहीं चाहिए । आज कल रोजमारियो का जोर बढ़ रहा है क्या संन्यासी क्या ब्रह्मचारी क्या पंडित सब दुसरो को उपदेश देने और धर्म का आश्रय लेकर सीर्फ पैसा बनाने वाले है । जो सामान जो पर धन । अतः सब झंझट छोड़कर प्रभु नाम निष्ठ होना चाहिए । माताजी के तुम...

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी !

आशीर्वाद !

तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ। तुम बार बार लिखते हो यहां के प्रेमियों के दर्शन की बड़ी लालसा है, किन्तु मुझे तो ऐसी किसी प्रेमी की लालसा प्रतीत नहीं होती, किसी का भी इतना आग्रह प्रेम, दिखता नहीं, साथ ही यहां तो अपना जीवन लक्ष्य चल ही रहा है तो क्यों कर आग्रहपूर्वक वहां आया जा सके। भजन करनेवाला ही भजन कर सकता है क्या सभी भजन कर सकते है । कदापि नहीं। अखंड महायज्ञ की पूर्णाहुति भाद्रपूर्णिमां श्री पुज्य गुरुदेव की तिथि पर होगी । सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम । भजन करना चाहिए। नाम रटना चाहिए यही जीवन का एक मात्र फल है। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी !

पोरबंदर, विद्यार्थीभवन

आशीर्वाद !

दिनांक ५-८-५४

पत्र मिला समाचार मालूम हुआ । ओखा अखंड पूर्णाहुति के बाद कैलाश यात्रा का विचार था किन्तु दूसरे व्यक्ति के आग्रह के कारण था अपनी खास इच्छा नहीं थी अब बहुत कही जाने की इच्छा भी नहीं होती है। श्री गुरुदेव जिधर लेजाना चाहेंगे वहां तो जाना ही पड़ेगा । कारण कि यह शरीर तो यंत्र है, इसका चलाने वाला तो श्री गुरुदेव ही हैं । कार्त्रिक मास की कठिनाई की बात लिखी सो तो ठीक ही है। अब तुम लोगो को जैसी अनुकुलता, सुविधानुसार समय परिवर्तन कर लो उसमें कोई दोष नहीं अगर अगहन मास अनुकुल पड़े तो उसमें करो या चैत्र मास में करो कारण कि इन दोनों मानों में न ज्यादा सर्दी होती है और न ज्यादा गर्मी । पोरबंदर में १ वर्ष का नहीं एक मास का अखंड था, जेष्ठ तृतीया को शुरु हुआ था, अभी तक चला रहा है, देखे कब तक चलता है । कलिकाल का प्रभाव बढ़ता ही जा रहा है । स्थान के अभाव के कारण ही अखंड बंद करना पड़ेगा, ऐसा लगता है अब तो वे ही लोग नाम जापक रह गये हैं । जिनको सच्चा रंग लग गया है या जिन पर प्रभु की परम कृपा है। उधर एक बार आने का विचार तो जरुर है लेकिन श्री प्रभु कब कृपा करेंगे । सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी तथा राम नाम प्रेमीजन !

जय श्री राम !

श्री प्रभु प्रेरणा से अगामी शनिवार ता. २९-८-५९ को यहां के तीन मास से चालू अखंड यज्ञ की पूर्णाहुति करके, दूसरे दिन रविवार ता. ३०-८-५९ को पोरबंदर से पांच मील दूर जंगल में कोला तलाब पर १०८ दिवस काष्ठ मौन के लिए चला जाऊँगा और मंगलवार तेरस ता. १-९-५९ से १०८ दिवस का अनुष्ठान प्रारंभ करुँगा जिसकी पूर्णाहुति ता. १८-१२-५९ दिसम्बर को होगी। इतने दिनों तक सभी प्रेमियों माताओं बहनों भाईयों को अधिक से अधिक विजय मंत्र जपना चाहिए। कम से कम प्रतिदिनि १३००० प्रति दिन नियमित संख्या न बन सके तो १०८ दिवस में किसी भी नियम से किसी भी समय में १३००० जपना चाहिए। और जितना बन सके प्रचार करके दूसरो से जपान चाहिए और जप संख्या पूर्णाहुति पर भेजना चाहिए। विशेष श्री प्रभु कृपा। १०८ दिवस तक चिट्ठी पत्री नहीं।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारकाधाम

प्रिय गिरधारी !

आशीर्वाद ! दिनांक १३-६-६१

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। तुम्हारा ८-६-६१ का जोशी के पते से लिखा हुआ पत्र आज द्वारका में मिला। समाचार मालूम हुआ। जामनगर की पूर्णाहुति हो गई। कल्ह यहाँ द्वारका भी पूर्णाहुति हो जाएगी इसकेबाद पोरबंदर होता बम्बई जाने का है। उसके बाद पोरंबदर की पूर्णाहुति होगी।

[illegible] पूर्णिमा तक धून चलनेवाली है। अगर वहाँ के लोगों का बहुत
आग्रह होवे तो बम्बई से यहां जाने की कोशिश करू और पुन: यहा की पूर्णाहुति
के बाद पोरबंदर आकर यहां की पूर्णाहुति कर दूँ । पीछे जैसी भगवत
इच्छा । काकूभाई तो १५-६-६१ को हरनिया का ओपरेशन कराने वाला है ।
तो बम्बई से वहाँ आने जाने की व्यवस्था क्या होगी और कौन करेगा ? अभी
तो दस दिवस समय है। तीन चार दिवस में मैं बम्बई पहुँच जाऊँगा। और
वहां से चार पांच दिवस में पूर्णिया पहुँचा जा सकता है– किन्तु बम्बई से
किस रास्ते और कहां से होगे वहां जाना पड़ेगा । इसकी पूरी सूचना और
व्यवस्था होवे तो आ सकूँ । इसका समाचार कांदीवल्ली, प्रेमजीलालजी–
श्यामकुंज मथुरादास रोड, कांदीवल्ली से भेजो या आओ । विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी !

देकुलीमठ

आशीर्वाद !

दिनांक ३०-११-६३

श्री प्रभु कृपा से ढांगर का अखंड पूर्ण कर के आज यहां देकुली श्री महादेवजी, की प्रेरणा से आगया और तालाब में फैली हुई घास की दो-तीन घंटे तक सफाई करके, प्रसाद पाकर श्री देवाधिदेव महादेवजी के सानिध्य श्री भगवन्नाम धुन हो रहा है। कल्ह शिवहर होते छतौनी जाऊँगा अगर वहां अेक मासका अखंड होगा तो आठ-दस दिन रहकर पूर्णिमा, साहेबगंज वगैरह का प्रोग्राम पूरा करके पूर्णाहुति के सप्ताह पहले छतौनी जाकर पूर्णाहुति सम्पन्न कर फिर सीतामढ़ी श्री जानकी मंदिर में अखंड करके द्वारका तरफ जाने का विचार है। अगर छतौनीवाले नवाह के लिए ही तैयार हो गये तब तो पूर्णाहुति करके ही मुझफ्फापुर आजाऊँगा वही से सब प्रोग्रांम तै होगी । विशेष बात मेरी दवा

के विषय में है । शुरु में १५ दिवस तक बहुत कुछ फायदा मालूम हुआ किन्तु पीछली एकादशी के दिन से फिर पहले जैसा सूजन हो गया और इसबार गप्ने जांघ के नशमें दर्द होने लगा । रात्रि को कड़वा तेल गर्म करके मलने से ठीक हो गया । इस बीच में एक रात को केले और कुछ मिठाईयां खाली शायद इस कुपथ्य से ऐसा न हुआ । अभी दो पन्द्रहीया की दवा है । अेक तो शुरु हो गया है । परसो से और दूसरा । (अन्तिम सुराक १५ दिवस बाद शुरु करुंगा । श्री संत जी से मिलकर सब समाचार कहकर अगर कोई दूसरी दवा दे तो या नहीं खाने को कहे तौ भी पत्र द्वारा सूचित करना । उनसे परहेज और दवाखाने की तरकीब भी जरुर पूछकर लिखना, अभी छतौनी ही आठ दस रोज रहूंगा। विशेष श्री प्रभु कृपा । सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम । श्री स्वामी सच्चिदानंदजी को भी जय श्री राम। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी !

छतौनी

आशीर्वाद !

दिनांक ८-१२-६३

दवा मिल गई। परहेज पथ्य के बारे में लिखा सो ठीक है। इसका पालन अवश्य किया जाएगा। सिर्फ यह जानना चाहता हूं कि भात और दहीं खाया जाएगा बिलकुल ही छोड़ दिया जाए। इसके अतिरिक्त पूर्णिमां के प्रोग्राम के विषय में तो मैने संकेत मात्र ही किया था फिर बगैर पूछे १५-१५ का निश्चित प्रोग्राम की सूचना कैसे देदी ? विशेष परिस्थिति वसात एक मास अखंड पूर्ण हुए बगैर छतौनी से कही भी बाहर जाना नहीं हो सकता । अतः पूर्णिमा का प्रोग्राम तो स्थगित ही रहेगा। यहां की पूर्णाहुति के बाद जनवरी में देखा

जाएगा । विशेष श्री प्रभु कृपा । प्रतिदिन भोजन में दिन में तो भात ही खाता हूं। सो खाया जाए या नहीं । सीर्फ खट्टा दही नही खाया जाए या दही खाया ही नही जाए।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी! छतौनी

आशीर्वाद ! दिनांक १८-१२-६३

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है । अखंड भी गांव के सहयोग से ही काफी सुन्दर ढंग से चल रहा है । यहां के मंदिर के जीर्णोद्धार के लिए गांव के लोग तैयार हैं और लगभग ३००० रुपैये का चन्दा भी लोगों ने आपस में कर लिया है और २२-१२-६३ को पोस्टल सेविंग बैंक में जमा करा देगें । वसंतपंचमी से ईटा बनाना लोग शुरु करेगें। अखंड की पूर्णाहुति ३-४ जनवरी तक होगी अखंड के लिये तो आजू बाजू के लोग भी हैरान कर रहे है। पहले साल नवाह होता था अब तो लोग एक मास सवा मास से कम का नाम ही नहीं लेते कल्ह पचड़ा के लोग आये थे और बहुत आग्रह करते थे. कम से कम अेक मास का वाघमति के किनारे अखंड हो जाए इसके अलावा दूसरा. छतौनी वृन्दावन, पचड़ा माधोपुर, नरवारा के लोग अलग तैयारी कार रहे है। कैसे क्या किया जाए ? द्वारका तथा पूर्णिमा के लिए भी जवान दे चुका हूँ। अभी जैसी भगवत इच्छा । अब कुछ व्यवहार की बाते– अठारह दिवस के लिए जो दवाई आयी थी उसको लिया गया और कुछ फायदा भी हुआ किन्तु मूल दवा जो १५ दिवस पर लेने का था, वह भी तीसरी सुराक १५ तारीख को लिया। अब दवा समाप्त हो गई किन्तु बीमारी में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ है । सूजन में कोई कमी नहीं है । किन्तु मुझे थोड़ा लाभ यह मालूम

होता है कि उपर के भागमें नस में एक बड़ी गाठ होगई थी यह कुछ गुलझी हुई सी मालूम पड़ती है। पता नहीं ज्यादा समय हो जाने से शायद दवा भी फायदा पहुँचाने । पथ्य भी पालता हूँ। यह सब समाचार श्री संतजी को कहना और अगर दवा दे वे तो किसी से भेज देना। तीन खुराक दवा जो पन्द्रह-पन्द्रह दीवस पर खाने लिए परमेश्वर लाये उसकी आन्तिम खुराक इसी १५-१२-६३ को ले ली गई । दवा खतम है तो जैसा श्री संतजी कहे वैसा समाचार देना या दवा दे तो दवा भेज देना । विशेष श्री प्रभु कृपा । किसी भी हालत में पूर्णिमा का प्रोग्राम बनाया जाएगा । प्रेमियो को मेरा जय श्रीराम।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी तथा बालगोपाल !

हाजापटेल की पोल,
श्रीरामजी मंदिर, अहमदाबाद,

आशीर्वाद ! दिनांक २-१-६४

तुम्हारा दो-तीन पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ । दवा भी दो शीशी मिली जिसमें एक नम्बर की दवा अेक-अेक मास पर खाना है और २ न. की दवा हफ्ते में दो दिनों तक लगातार खाने का अेसा लिखा हुआ था उसमें २न. की दवा तो लगभग समाप्त हो चुकी है न.१की दवा अभी काफी – लेने के बाद से अभी एकादशी, अमावश्या पूर्णिमा को कोई तकलीफ नहीं हुआ । दर्द भी अभी बिल्कुल नहीं है अेसा श्री सन्तजी को कहना और यह कहना की मैं बारबार कष्ट देता हूँ इसके लिए क्षमा चाहता हूँ। शरीर का भोग है भोगना ही पड़ता है परंतु जिसका जिसका सहयोग लेना होगा उतना लेना ही पड़ता है। नहीं तो रोग तो मामूली है किन्तु बहुत उपचार करते बीत गये निर्मल होता ही नही तो भोग नही तो और क्या ? समाचार सब अच्छा

है । अभी अहमदाबाद में भी जैसी स्वप्न में भी ऐसी बात सोचा नहीं था, ऐसी सफलता अखंड में मिली। नगर कीर्तन भी भव्य निकला, एक नवाह पूर्ण हुआ और उसी में दूसरा प्रारंभ हो गया । जिसकी पूर्णाहूति अगामी रविवार ता. १०-१-६५ को होगी। भोला आखंड़ कीर्तन के पहले ही चला गया। शशिकान्त भी यही है। उनका अपना भजन का प्रोग्राम चलता है अखंड में बहुत कम भ़ाग लेते है । कई दिनों से ठंडी लगने से उसे बुखार भी आ गया था। सुरत में अखंड में फिर गये है । और मुझे भी वहां चलने के लिए आग्रह करता था । किन्तु मेरा तो कई स्थान का प्रोग्राम बढ गया और उमीद है कि इस पूर्णाहुति के बाद भी अहमदाबाद में दूसरी जगह प्रोग्राम होवें । श्री प्रभु की जैसी इच्छा । द्वारका के सब समाचार कहना । और सभी प्रेमियो को जय श्री राम कहना। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारकाधाम.

प्रिय गिरधारी तथा बालगोपाल !

दिनांक —६६

आशीर्वाद !

बहुत दिनों से तुम लोगों का समाचार नही है। अखंड प्रारंभ करने के पहले ऐक पत्र आया था, उसका जवाब यथा समय भेज़ दिया था। बाद में तार अखंड़ बढ़ाने के विषय में किन्तु तार से पूरी खबर मालूम नहीं पडती थी और उसमें किसीका पता भी नही था, इसी कारण पत्रोत्तर नही भेजा। शशिकान्त (सच्चिकानन्द) का पत्र आया था वहां से फिर प्रयाग से आया था कि आप पत्र देखते यहां प्रयाण में आ जावे हम लोग श्री १०८ गोलमोल बाबाजी तथा सच्चिदनन्दजी मुजफ्फापुर से आ गये हैं किन्तु इस बार कुम्भ में जाने के लिए किसी ने नहीं पूछा । काकू का हर वक्त पत्र आता था कुम्भ

आना हो तो व्यवस्था करे किन्तु इस बार उनकी ओर से कुछ पहल नही हुई । इससे समझा कि श्री प्रभु की इच्छा नही है यो तो कई एक व्यक्ति ऐसी बाते करते थे कच्छ में चलना हो तो व्यवस्था करे किन्तु किसी का भी हार्दिक तत्परता न प्रतीत हुई इस कारण से श्री सच्चिदानंदजी को पत्र लिख दिया मेरा आना जाना तो श्री प्रभु कृपा प्रेरणा पर ही निर्भर करता है। अभी जामनगर, पोरबंदर द्वारका, सभी जगहो में लम्बे समय से अखंड चालू है। बीच बीच में भिन्न भिन्न स्थलो में भी अखंड चल रहा है । इस कारण गाम गाम में जाना पडता है। और सब आनन्द मंगल है। मुझे जो हाईड्रोशील की तकलीफ थी वह बम्बई में पानी निकाल देने के बाद बिल्कुल ठीक हो गया था । किन्तु द्वारिका पोरबंदर के जलवायु के कारण या स्वभाव से ही थोड़ी थोड़ी विकृति फिर शुरु हो गई है । खास सूजन या, वृध्दि नही है। किन्तु कभी कभी चिकनापन आ जाता है और थोडा दर्द साभी मालूम पडता। है यह तकलीफ दाहिने कोष में थी जिसमें से भरा हुआ पानी निकला था । बाये कोष में सुजन या वृध्दि तो नही है किन्तु उसकी नसे मोटी हो गई है । और एक बार बिहार में बैकुंठबाबू के यहां एक अच्छे डाक्टर से दिखलाने पर डाक्टर ने कहा था कि दाहिने कोषों में तो पानी भर गया है और बाये में शुरुआत हो रहा है। किन्तु बाये भाग में कोई खास सूचन या वृध्दि नही हूई है। सीर्फ नशे मोटी हो गई है । फूल गई है और कभी कभी दर्द भी हो जाता है । इसके अलावा शायद इसी के कारण दोनों कोषों के सामने कमर के उपरी भाग में बहुत चलने या खडा रहने से दर्द होने लगता है। फिर थोडी देर में बन्द पड जाता है। किन्तु मीठा मीठा दर्द तो चालू जैसा रहता है। यो तो कोई खास तकलीफ नही है अगर संतजी हो तो मेरा राम राम कहना औऱ कहना कि ऐसी कोई दवा देवे जिससे आगे इशमें वृध्दि होना, बढना बन्द हो जावे और दर्द भी मिटे इसके लिए सुक्रिया । ओपरेशन के चक्र में पडना नही चाहता नही तो कोई झंझट ही नही है, और अभी पहले जैसा कोई खास तकलीफ

भी नही है। किन्तु रात दिन का चलना फिरना नई नई जगहो का जलवायु का सेवन तो करना ही पडता है । तो पहले से सावधानी रखे तो आगे कोई कठिनाई उपस्थित न होवे । सभी प्रेमियो को मेरा यथायोग्य सह श्री राम जय राम जय जय राम। विशेष श्री प्रभु कृपा । हितेच्छु प्रेमभिक्षु। द्वारका का पत्र मिला था । अस्त व्यस्त प्रोग्राम होने स जवाब न दे सका उसके मेरा आशीर्वाद सह जय श्री राम कहना । और कहना कि घबराये नही प्रारब्ध भोग सबको भोगना ही पडता है । दवा भेजना होतो पोरबंदर के पते से भेजना । एक दो दिन में पोरबंदर जाने वाला हूं. २०२-६६ से अहमदाबाद में ९ दिवस का अखंड का प्रोग्राम है उसके बाद जैसी प्रभु इच्छा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी तथा बालगोपाल ! पोरबंदर

आशीर्वाद ! दिनांक २६-२-६६

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। श्री अखंड महायज्ञ का प्रवाह भी अस्वखलित रूप से प्रवाहित हो रहा है तुम्हारा भेजा हुआ औषध का पार्सल मिला, उसमें चार प्रकार की दवा है जिसमें १ नं. और २न. तो एक जैसा ही लगता है क्योकि संत जी ने लिखा है कि १ नं. समाप्त हो जाने पर २नं. की दवा १न. की तरह ही रोज लेना चाहिए बाकी दो दवाएं नं.३ और न.४ क्रमशः एक सप्ताह में दो बार और एक महीना में दो बार होने को लिखा है तो यह खबर नही पडती है। की तीनो दवाए एक साथ ही चालू रखना चाहिए या नं.१ और नं. २ समाप्त हो जाने पर नं. ३ सप्ताह मैं दो बार और उसके बाद नं.४ महीना में दो बार लेने चाहिए या एक साथ ही तीनों दवाए चालू रखनी चाहिए इसका स्पष्टी करण श्रीसंतजी द्वारा कराके सूचित करना

। श्री संत जी को मेरा हृदयपूर्वक जय श्रीराम कहना। अन्य स्मरण करने वाले सबी प्रेमियो को मेरा यथायोग्य । अहमदाबाद में २०-२-६६ से प्रोग्राम था किन्तु एक व्यक्ति की मृत्यु हो जाने से अभी बंद रहा । अगामी १३-३-६६ से रख्खा गया है उसी बीच होली के पहले श्री नाथ द्वारा जाना पड़ेगा ऐसा लगता है । कारण अहमदाबाद से १३७ व्यक्तियों का संघ श्री राम जय राम जय जय राम का अखंड करते हुए पैदल श्रीनाथजी गया है। ५-३-६६ को संघ वहां पहुचेगा तो उन लोगो का अति आग्रह वहां आने के लिए है प्रचार भी ठीक होगा इससे स्वीकृति देदी है। जैसे श्री प्रभु इच्छा। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

दहिसर, बम्बई-६८

प्रिय गिरधारी तथा बाल गोपाल !

आशीर्वाद !

दिनांक २०-१-६७

श्रीप्रभु कृपा से सब आनन्द है । अभी आज ही तुम्हारा पत्र मिला है । समाचार मलूम हुआ। द्वारका प्रसाद तथा राम शरण, रामसागर हरिहर शुक्ल तथा उनके घर वाले सबके सब यहां आ गये है सभी आनन्द में हैं । आज रात्रि की गाडी में मैं बडौदा जाऊँगा और वहां से २३-१-६७ से डबोई के तरफ तीन दिन का प्रोग्राम निश्चित है। अगर आगे का कोई प्रोग्राम नही बना तो संभव है १८-१-६७ के पहले या उस समय तक अहमदाबाद पहुँच जाऊँ। अगर आगे का प्रोग्राम बंनेगा तो भी बन्द करके अहमदाबाद श्री गुरुजी की सेवा में हाजिर होने का प्रयास करुंगा औ साथ ही साथ जामनगर द्वारका जाऊँगा । अहमदाबाद में श्री पंडितजी जिस मीटींग में जानेवाले है वह मिटिंग कहां होगी जहां मिटिंग होने वाली है, वहां का अहमदाबाद का पता निकाल

कर एक्सप्रेस डिलीवरी या तार नीचे पते पर भेजना । प्रेम भिक्षु C/o. भरतभाई, जगन्नाथ पंडित, भूतरी बंगला, बडोदा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी तथा बालगोपाल ! अहमदाबाद

आशीर्वाद ! दिनांक १९-२-६७

श्री प्रभु कृपा से सब आनंद है, स्वास्थय भी बिलकुल ठीक है। लगभग ठंडी का सारा समय इसबार जंगल पहाडो में भटकने में ही बिता है। श्री पंडितजी आये थे ठंडी अत्यंत अधिक होने के कारण द्वारकाजी का प्रोग्राम स्थगित रखा गया। श्री रामशरण द्वारका वगैरेह श्री द्वारका गये थे तो कहते थे कि द्वारका की ओर सौराष्ट्र में इसबार ठंडी भयंकर थी लगभग ५० वर्षो के भीतर द्वारका में ऐसी ठंडी कभी नहीं पड़ी । ऐसा द्वारकावाले कहते थे। जिस दिन हम लोगो को उधर जना था उस दिन यहां भी ठंडी काफी थी । मैं तो श्री पंडितजी से मिलकर दूसरे दिन सबरे ही जामनगर की तरफ जानेवाला था किन्तु पंडितजी का उधर का प्रोग्राम बंद होने से और यहां के नाम प्रेमियो के आग्रह के कारण अभी तक यहां ही रुका हूँ । अखंड जगह जगह चल रहा है। अभी भी एक सप्ताह का प्रोग्राम यहां है। हाईड्रोशील का पानी निकालने के बाद उसमें कुछ वृद्धि तो नही हुई है और न कोई तकलीफ ही है। संतजी की दवा भी ली थी। जिससे अेक डेढ वर्ष से कोई तकलीफ नही है, बम्बई का जिस डाक्टर ने पानी निकाला था उसका देहान्त हो गया, अब कभी कभी दाहिने तरफ का नश मोटा हो जाता है । जिससे शंका होती है कि शायद फिर कही पानी न भर जाए तो संतजी पछकर ऐसी कोई दवा हो जो आगे उसमें वृद्धि न होवे पानी फिर न भर सके तो लेकर भेजना। अभी तो कोई खास तकलीफ नही है पहले से सचेत रहना उत्तम है, जामनगर के

पते पर भेजना हो तो भेजना। सभी प्रेमियो को जय श्री राम। द्वारका का पत्र मिला। रामनवमी पर वहा आना सभंव नही है। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी !

जामनगर

आशीर्वाद ! दिनांक १४-३-६७

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। कल्ह दवा की पार्सल मिली, जिसमें १ नं. की दवा तो बिलकुल पिघल कर अेक हो गई है, उसमें एक भी गोली रही नही। दूसरी नं. वाली ठीक है कल्ह तो बिगडो गोलियों को लकड़ी से निकाल कर १५ दिवस में एक बार वाली एक खुराक ले ली । दूसरी दवा फिर लूंगा। अभी तात्कालिक मुझे कोई तकलीफ नही है । तो संतजी से मेरा श्री राम जय राम जय जय राम । कहना । कि दवा तो ठीक इसी के निमित श्री संतजी के शान्त सरल विनम्र मूर्ति का दर्शन मिलन हुआ करता है । बार बार कष्ट देता हूँ इस के लिए क्षमा करेंगे। अगर १ न. की दवा जो बिगड़ गई है, वे कहे तो पुनः जल्दी भेजना। अगर जरुरत नही हो तो कोई आवश्यकता नही, चेत्र अमावश्या के पहले पहल दवा भेजनी हो तो पोरबंदर के पते पर भेजना कारण परिवा से लेकर श्री रामनवमी तक महुवा का प्रोग्राम है । चैत्र शुक्ल १ से ९ नवमी तक महुवा में प्रोग्राम है तो तीन दिन पहले वहाँ जाना पड़ेगा तब तक पोरबंदर में रहुगा । दवा भेजनी होतो इसी हिसाब से भेजना। श्री स्वामी सच्चिदानन्दजी का पत्र आया था जवाब लिखा है। द्वारका के यहां अखंड चलता होगा । द्वारका तथा अन्य सभी प्रेमियो को जय श्री राम। होली भी द्वारका धाम में होगी। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी तथा बालगोपाल ! श्री संकीर्तन मंदिर, पोरबंदर

आशीर्वाद ! दिनांक १४-५-६७

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है.। तुम्हारी भेजी हुई दवा तो ठीक समय पर आगई थी किन्तु रामजीभाई को याद न रहने के कारण हम लोग सीधे महुवा चले गये। इस बार श्री रामनवमी का महोत्सव महुवा में बडे ही धुम धाम एवं समारोह के साथ हुआ। नव दिवस का था, जिसकी पूर्णाहुति श्री रामनवमी के दिवस ही हुई। वहां थोड में प्रचार का प्रभाव बहुत सुन्दर हुआ। स्थान भी अति भव्य एवं रमणीय है। चारों ओर नारियल सुपारी का बगीचा ही बगीचा है मुझे अभी कोई खास तकलीफ नही है। जिस समय तुझे दवा के लिए लिखा था उस समय अहमदाबाद में कुछ तकलीफ सी थी, इसलिए लिखा था कि पहले से सावधान रहना ठीक है। द्वारका के यहां अखंड चलता है यह भी मुझे खबर है, क्योंकि उसका पत्र हंमेशा आता रहता है। सहयोग की बात तो कलिकाल के कारण सर्वत्र एक सा ही दिख रहा है। जो कुछ सच्चे सदाचारी, पुण्यात्मा, श्री प्रभु कृपा से उनके दिव्य नाम का आश्रय ले चुके हैं । वे भी टीके हुए है। अन्यथा सब के सब बरसाती नदी नाला की तरह थोडे दिन के लिए उमडा कर ठीक जरुरत के समय ही सुख गये। फिर भी इतना तो कहना ही पड़ता है कि ऐसे भंयकर काल में भी श्रीगुरुदेव एवं श्री प्रभु की कृपा से प्रेरणा से यह शरीर जिधर जाता है उधर नई-नई जगहो में भी पूर्ववत आनन्दमंगल चालू हो ही जाता है ऐसे समय में जब कि मानव मानवता को बिल्कुल ही भूलता जा रहा है। और दानवता का सर्वत्र स्वाभाविक तथा सत्ता के द्वारा भी प्रचार प्रसार का प्रयास बढता जा रहा है । फिर भी श्रीनाम महाराज के परम प्रचंड प्रकाश प्रभाव के समक्ष किसी का भी दाल नहीं गल पाती है । बस ! उन्ही का सच्चे हृदय से निष्कपट भाव से अडिग

श्रद्धा एवं दृंढ विश्वास से सुदृढ आश्रय ग्रहण किये रहो इसी में अपना तथा सबका भला है । ऐसा सभी सत्शास्त्र एंव संत का मत है कि कलिकाल के प्रभाव से बचने का एक ही अमोघ उपाय **"हरिनाम"** सभी प्रेमियों को श्री संतजी को गुप्ता, द्धारका कहनानीजी वगैरह याद करने वाले भजन में भाग लेने वालो मंडलवाले रामशरण वगैरह सभी को जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी तथा बालगोपाल　　　　　　　　महुवा (सौराष्ट्र)

एवं अन्य प्रेमीजन !

आशीर्वाद !　　　　　　दिनांक २०-१०-६७

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। इसबार श्री गुरु महाराज की तिथि का महोत्सव अति विलक्षण हुआ। हर जगह के पुराने प्रेमी भी इकट्ठे हो गये थे। वेरावल के बाद सोमनाथ, प्राची का प्रोग्राम भी अति सुन्दर रहा उसके बाद जूनागढ्ढ भक्तराज श्रीनरसीं महेताजी की जन्मभूमि, सिद्धो की सिद्धभूमि, गिरनार के तलेटी में तो अभूतपूर्व आनन्द हुआ। यहां विद्धत समाज के उपर काफी प्रभाव पड़ा फिल्म प्रदर्शन में लगभग दस पन्द्रह हजार की मेदिनी थी। नगरकीर्तन भी बड़ा भव्य निकला। जूनागढ में ऐसा आनन्द शायद ही कभी हुआ हो ऐसा वहां के लोग कहते थे वहां के बाद १५ दिवस का प्रोग्राम महुवा में था जिसकी पूर्णाहूति कल्हरात्रि को दो बजे हुई। यहां के लोगों की नाम निष्ठा कुछ अद्‌भूत ही हो गई है। एक वर्ष पहले यहां ३ दिवस का प्रथम अखंड हुआ था। उसके बाद गत श्रीरामनवमी पर ९ दिवस का विलक्षणां

महोत्सव सह अखंड परिपूर्ण हुआ था और उसीके फल स्वरुप इस बार आश्विन नवरात्रिमें १५ दिवस का प्रोग्राम रखा गया था, तथा इस बार के परिणाम स्वरुप अगामी श्री रामनवमी के उपर एक मास का अखंड अभी से भावुक जनता ने निश्चय कराली है। अभी द्वारका में संकीर्तन मंदिर के लिए जगह तो लोगों ने लेली है। किन्तु द्वारका में कोई ऐसा जिम्मेदार व्यक्ति नहीं लगता कि जिसके उपर किसी प्रकार विश्वास किया जाए। वहां का जो पुराना आदमी था, वह सब बदल गया, न मालूम कलिकाल का कैसा प्रभाव है? कुछ भी हो श्री प्रभु एवं गुरुदेव की तो पूर्ण कृपा है । श्री वीर पुङ्गव हनुमंतलालजी की पूर्ण सहायता है जिसके फल स्वरुप ऐसे भयंकर कलिकाल में भी विलक्षणरुप से श्री अखंड महायज्ञ का प्रचार प्रसार अस्वखलित रुपसे चलता ही जा रहा है। और आशा भरोशा तथा पूर्ण विश्वास है कि जब तक शरीर रहेगा, तब तक श्री प्रभु कृपा से चलता ही रहेगा। दुनिया कुछ भी करे, कुछभी सोचे, अपने लिये तो यह कलिकाल बडा ही उत्तम है। जिससे इतना नाम स्मरण हो रहा है और असंख्य संस्कारी प्राणी स्मरण कर रहे हैं । तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ। अति उत्तम संकल्प है। श्री प्रभु की पूर्णकृपा है नही तो ऐसी बुद्धि ही कहां से आवे ? तुम्हारा पत्र १८-१०-६७ को मिला। उसके पहले तुम्हारा अखंड यज्ञ १७-१०-६७ को प्रारंभ हो ही गया होगा। ऐसा समझकर और यहां के अखंड की पूर्णाहुति के कारण प्रोग्राम अस्तव्यस्त होने से आज शान्तिपूर्वक पत्रोत्तर लिख रहा हूँ। तुम्हारी पुत्री के सम्बन्ध की बात लिखी, उसके लिए तो सोच विचार कर लड़के का कुल, शील, स्वभाव, सौजन्य, देखकर निशिचत कर लेना । मैं व्यवहारिक विषय में अपना कोई निश्चित निर्णय नही दे सकता कारण ऐसा करने से मुझे सदा के लिए एक बन्धन हो जाएगा, जो कोई भी पूछेगा उसको अपना निर्णय देना पडेगा, जो साधु के नाते एक महान दोष है। श्री प्रभु का स्मरण करके, अपने दो चार समझदार, अनुभवी प्रेमियों की

सलाह लेकर जोकुछ निर्णय करना होगा, कर लेना । यो तो उसका निर्णय हुआ ही है। अपने को एक निमित ही बनना है। यहां से मैं २५ या २६ ता. को द्वारका जाने वाला हूँ। दो चार दिनो के लिए। दहिसर पत्र लिखा था। उन्हे दवा मिल गई थी और प्रयोग भी चालू कर दिया था किन्तु परिणाण क्या आया, इस के बारे में मेरे पास कोई सूचना नही आई है। मुझे अभी कोई खास तकलीफ नही है। फिरभी श्री संतजी की दवा का १५ दिवस पहले से प्रयोग शुरु कर दिया है । एक बार पहले दवा ली है और कल्ह या परसों दूसरी बार फिर लूंगा। जब तक दवा रहेगी तब तक क्रम चालू रखूंगा। श्री प्रभु कृपासे तुम्हारा संकल्प सफल होवे ऐसी हार्दिक शुभकामना सह श्री प्रभु प्रार्थना। सभी प्रेमियो को मेरा यथा योग्य सह श्री राम जय राम जय जय राम कहना और कहना कि अगर सचमुच मेरे साथ कुछ भी प्रेम हो तो श्री प्रभु नाम का रटन स्मरण करके स्वयं कृतार्थ होवे, सुखी बने, औरो को सुखी बनावे अन्यथा मेरे साथ प्रेम या मैत्री का कोई अर्थ नही सब व्यर्थ ही है । कारण मैने तो अपने जीवन जन्म के साफल्य का एक मात्र उपाय-साधन श्री नाम महाराज का दृढ़ आश्रय ही माना है, मानता हूँ और जीवन प्रयन्त मानता ही रहूँगा। इस कराल कलिकाल के प्रभाव से बचने का, इसके त्रास से छुटने का और संसार चक्र से जन्म मरण के अनादि चक्र से भी छुटने का संत तथा शास्त्रों ने भी यही एक मात्र अमोघ साधन निश्चय किया है। अतः श्रद्धा विश्वास पूर्वक नाम रटन करना कराना चाहिए। इसी में अपना तथा जगत का सच्चा हित, सच्चा कल्याण है । विशेष श्री प्रभु कृपा। श्री सच्चिदानन्दजी यही हैं । शरीर स्वस्थ है आनन्द पूर्वक है। सभी प्रेमियो को श्री राम जय राम जय जय राम कहला रहे है ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी, सत्संग मंडल राजकोट
तथा बालगोपाल ! आशीर्वाद ! दिनांक १३-११-६७

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। आज जोशी द्वारा तुम्हारा पत्र मिला।
समाचार मालूम हुआ। श्री हनुमन्तलालजी की कृपा से पुनः अखंड प्रारंभ हुआ
यह अति आनन्द की बात है। श्री प्रभु की परम कृपा का ही फल है जो एकबार
अमुक समय अखंड चल कर बन्द हुआ और पुनः दूसरी जगह शुरु हुआ ।
शायद प्रभु की इच्छा होगी कि शेठ साहूकारों की कलुषित भूमि में श्री
भगवन्नाम का प्रचार प्रसार न होकर, सच्चे प्रेमियों गरीबों सामान्य कोटि के
जनसमुह के बीच ही अखंड होवे कारण किसी प्रकार का अभिमान रखनेवाला
जीव भगवन्नाम न ले ही सकता है और न सुनही सकता है । पाप का मूल
अभिमान ह और पापी का सहन स्वभाव ही होता है कि उसे भजन अच्छा
लगता ही नही जैसा कि गोस्वामीजी लिखते है– पापवतकर सहज सुभाउ,
भजन मोर तेहि, भाव न काउ । श्रीमद् भगवत में श्री कुन्तीमाता ने भगवान
की स्तुती की है- 'उसने कहा कि हे प्रभु जब कि तुम्हारा नाम इतना सरल
है सुगम है तथा भोग मोक्ष दोनों ही देनेवाला है, लोक परलोक दोनों ही
सुधारने वाला है ऐसा सभी शास्त्र और संत कहते है। फिर भी यह जीव आप
का नाम क्यो नहीं लेता? इसके उत्तर स्वयं कुन्ती माता कहती है कि - चार
प्रकार का व्यक्ति कभी भगवान का नाम उच्चार नही कर सकता :-

(१) जिसे कुल और जाति का अभिमान है।

(२) ऐश्वर्य वैभव और सत्ता का अभिमान।

(३) जिसे विद्या और ज्ञान का अभिमान है।

(४) जिसे लक्ष्मी धन का अभिमान है। ऐसे चार प्रकार के अभिमानी
जीव से भगवन्नाम का उच्चार ही नही हो सकता तो भला सरैया गंज जहां
ऐसे ही लोगों का भरमार है किस प्रकार अखंड चल सके ? श्री प्रभु इच्छा

। अपने को किसी अखंड के निमित्त बसात भी भजन करना है। जो प्रेमी है निरभिमानी निष्कपट वही यह अलभ्य लाभ ले सकेगा। सभी प्रेमियो को मेरा यथायोग्य सह जयश्रीराम। सबसे पीछे जो एक शीशी में दवा भेजी थी जो १५ दिवस पर लेने का था, उसका प्रयोग किया तो ठीक जान पड़ा। अन्नकुट के दिवस पहले द्वारका से चलकर क्षेत्रपाल के मंदिर में गया, जो लगभग चारमील दूर है। वहां स्नान वगैरह किया, भजन कर के शाम को लौटकर द्वारका आया तो अचानक अंडकोष में दोनों बाजू सूजन हो गया और बहुत दर्द होने लगा, पहले दाहिने तरह तो था किन्तु पानी निकालने के बाद कभी कभी कुछ तकलीफ होती थी, कुछ खास तकलीफ नही थी किन्तु उस दिन उसमें दर्द होने लगा और बाया तरफ सूजन भी हो गया दर्द बहुत ज्यादा होने लगा फिर मैनें एक खुराक दवा ली तो धीरे धीरे दर्द और सूजन भी कम हो गया किन्तु एकादशी अमावश्या के समय कुछ साधारण दर्द हो जाता है । तो श्री संतजी से पूछकर जो दवा भेजी थी वही या बायी और के लिए कोई दूसरी दवा कहे तो भेजना। अभी दवा है । दवाखाने के लिए नियमित नहीं रहती है । यह बात सच्ची है और सब आनन्द है। कोई खास तकलीफ नहीं ही । यहां दो दिन का अखंड था कल्ह जामनगर अन्नकुट है वहां जाना है। एक दिन रुक कर फिर सुरेन्द्रनगर के पास तीन दिन के लिए ध्रांगध्रा जाना है अभी उधर आना संभव नहीं ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जोशी आर्ट स्टुडीयों
सोनी बजार, जामनगर

प्रिय गिरधारी तथा बालगोपाल
एवं अन्य प्रेमीजन ! आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । श्री अखंड हरिनाम महायज्ञ का प्रचार प्रसार भी श्री प्रभु कृपा प्रेरणा से दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है ।

११-१२-६७ को श्री द्वारिका धाम में श्री संकीर्तन मंदिर का शिलान्यास है। और उसके दूसरे दिन श्री गीता जयन्ती के दिवस से जब तक संकीर्तन मंदिर का निर्माण कामचालू रहेगा तब तक बाजू की ब्रह्मपुरी में अखंड भी चालू रखने का निश्चय द्वारका वालों ने किया है। मुझे भी तब तक वही रुकने के लिये अति आग्रह करते हैं । किन्तु मेरा तो पहले से ही अहमदाबाद साबरमती में ४० दिवस का अखंड निश्चय हो गया है। अतः मुझे तो जाना ही पडेगा। इसबार के अखंड की व्यवस्था रेलवे वर्कशोप में काम करने वालों यू.पी के भाईयों ने किया है। उसके बाद पालेज का प्रोग्राम है और श्रीरामनवमी के अवसर पर १५ दिवस चैत्र और १५ दिवस वैशाख इस प्रकार एक मास का प्रोग्राम महुवा जि. भावनगर में है उसके बाद द्वारका सिवाय कही अन्य जगह प्रोग्राम नहीं रखने का है । दवा आज मिली है। कल्ह से शुरु करुंगा योतो जो बीच में तकलीफ बढ़ गई थी अब अपने आप शान्त हो गई है। श्रीसंतजी को मेरा जय श्री राम कहना और कहना कि बार बार उन्हे कष्ट देता हू । तो क्षमा करेंगे। होस्पीटल में जाना नही चाहता इसी कारण से बार बार दवा मांगवानी पड़ती हैं नहीं तो ओपरेशन कराने पर तो कोई दिक्कत ही नही । मुझे कोई खास तकलीफ कभी नहीं है। किन्तु रोग शेष नहीं रखना चाहिए । विशेष श्रीप्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम ज़य जय राम"

प्रिय गिरधारी तथा बालगोपाल

एवं अन्य प्रेमीजन ! आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । जामनगर से अेक पत्र भेजा है। दवा मिल गई है । दो प्रकार की दवा है। एक नबंर, दो नबंर, उसकी शीशी पर

लिखा है १५ दिनो पर एक नं. की दवा एक बार रात में और दो न. की दवा पन्द्रह दिनो पर सुबह में इससे समझ में नही आ रहाहै कि साथ ही १५ दिवस पर रात में और सुबह में लेने कि एक नं. आज रातमें एक बार लेना और दूसरी दवा दो न. फिर पन्द्रह दिवस पर लेना । श्री संतजी से पूछकर स्पष्ट लिखना कि किस प्रकार दवा लेनी चाहिए एक दिवस रात और दिन में दोनो दवा लेकर फिर पन्द्रह दिवस के बाद एक साथ दोनो दवा लेना कि दोनो युदा युदा लेना। जैसा कि एक आज तो दूसरी पन्द्रह दिवस बाद- इसका खुलासा करके जल्द जवाब देना जिससे १७-१२-६८ के पहले मुझे जामनगर खबर मिल जाए नही तो उसके बाद मैं अहमदाबाद चला जाउँगा। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी तथा बालगोपाल

एवं अन्य प्रेमीजन ! आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । श्री गुरुपूर्णिमा के दूसरे दिन श्री प्रभु प्रेरणा से अचानक जाना पड़ा । तुम से तथा तुम्हारे साथ आये हुए व्यक्तियो से कुछ बातचीत करने काभी अवकाश नहीं मिला, इसके लिए मुझे दिल में बहुत अफसोस हुआ किन्तु कर ही क्या सकता **"परवस जीव, स्ववस भगवंता, उर प्रेरक रघुवंश मणि"** की प्रेरणानुसार चलना ही पड़ता है। उस यात्रा में कई विलक्षण घटना घटी, शायद यह भी कारण हो सकता है। वहां से आने के बाद श्री द्वारकाधाम में १०८ दिवस का अखंड चालू हुआ । पुरुषोत्तम मास पूरा करके कई अेक नई जगहो जहां पर आज तक कभी अखंड नही हुआ वहां वहां बड़े समारोह के साथ

अखंड यज्ञ सम्पन्न हुआ जैसे वेरावल, सोमनाथजी, का नीजमंदिर, प्राची बड़ौदा, कपडवंज भरुच वगैरह। अभी कल्ह भरुच नर्मदा तट से श्री महाराजजी के तिथि निमित यहां आया हूँ पूर्णिमाको तिथि पूर्ण होने के बाद पुनः तृतीया को भावनगर जाना है। पंचमी से एकादशी तक वहां पर पहले पहले अखंड होने वाला है। श्री प्रभु एवं श्री गुरुदेव की कृपा से गुजरात में भी प्रचार लगभग चालू हो गया है। बालुघाट के आश्रम निर्माण की भी बात सुनी, राज नारायण ने टांकी का क्या किया? उसने पत्र के उत्तर भी नही दिया। वैधनाथ बाबू, रामशरण, सूरज, चारुबाबु, वगैरह सब को मेरा जय श्री राम अन्य सभी प्रेमियो को यथायोग्य सह मेरा जय श्रीराम। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

संकीर्तनमंदिर,

श्री द्वारकाधाम

दिनांक २७-७-६९

प्रिय गिरधारी तथा बालगोपाल

एवं अन्य प्रेमीजन !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ, प्रभु जो जब करना चाहते हैं वही होता है। मनुष्य का संकल्प विचार कुछ काम नहीं करता, समय आने पर सब काम आप ही आप हो जाता है। शादी विवाह, दुख, सुख, हानि लाभ संयोग वियोग ये सब पूर्व प्रारब्धाधोन है जब उपर्युक्त समय आता है तो ये सब अनायास ही घटित हुआ करते हैं इसके लिए चिन्ता करने, घवड़ाने की आवश्यकता नहीं, हाँ ! श्री प्रभु समर्थ हैं वे स्वयं मंगलमय हैं वे जब जो भी करेंगे जीव के मंगल के लिए ही करेंगे। अतः भक्तों को सब कुछ उन्ही के विधान पर छोड़कर, अपना कर्तव्य अवश्य

करते रहना चाहिए । अर्जी हमारी किन्तु मर्जी तो उन्हीं की । अतः सुलोचना के लिए बहुत चिन्ता मत करो, प्रभु जो करेंगे, सब भले के लिए ही करते होंगे । संतजी की पहले की भेजी हुई दवा, तो सेवन ही नहीं करपाया, किन्तु अभी तक ठीक ही था, न कोई तकलीफ थी न वृध्दि किन्तु अब थोड़ा-सा परिवर्तन याने वृध्दि जैसा लगता है। इस समय शरीर की स्थिति कुछ दिनों से ओसी बिगड़ गई है कि न सर्दी सहन होती है न गर्मी, गले की तकलीफ इस बार बहुत दिनों तक रही, अब लगभग ठीक हो चला है । आराम मिलता नहीं तो औषध भी क्या काम करे ? गुरुपूर्णिमा द्वारका में ही है। महाराजजी की तिथि पोरबंदर में होगी, उसके बाद अहमदाबाद, बडोदा, महुवा, कच्छ वगैर का प्रोग्राम है शायद ये सब प्रोग्राम बंद करके कुछ दिनों अनुष्ठान में बैठना है । सभी प्रेमियों को जय श्री राम विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी ! पोरबंदर, गीतामंदिर

आशीर्वाद ! दिनांक २-१-५२

श्री प्रभु कृपा ही अेकमात्र कुशल मंगल का मूल है लेकिन उस कृपा की प्राप्ति अपने अपनत्व याने कर्म, मन, वाणि, समस्त का अभिमान त्यागे बगैर होता नहीं और जिसनें अपने अभिमान का त्याग कर दिया उसके भीतर, अपनी ओर से कोई इच्छा उत्पन्न होती ही नही और होती है तो उसकी शरणागति में कमी है। इस लिए भगत अपनी, समस्त इच्छाओं को श्री प्रभु की इच्छा में विलिन कर, इच्छाओं, वासनाओं कामनाओं से उत्पन्न होनेवाला बन्धन से निमक्त हो प्रभु के साथ एक रूप बन जाता ह याने अपने लक्ष्य

श्री प्राप्ति अत्यान्तिक दुःख की निवृत्ति तथा परमानन्द की प्राप्ति करके कृत्य की प्राप्ति हो जाता है । इसी आधार पर लिखता हूँ कि मेरा आना जाना भी उनकी कृत्य हो जाता है । इसी आधार पर लिखता हूँ कि मेरा आना जाना भी उनकी इच्छा या प्रेरणा पर ही निर्भर करता है और तुम्हारी भीतर जो प्रेरणा मंत्र अर्पणा करने की हुई है वह बहुत ही उत्तम तथा श्रेमस्कर और उसके लिए जितना प्रयत्न हो सके करना चाहिए और समस्त प्रेमियों को बाहर-बाहर भी सूचना करनी चाहिए उस विजय मंत्र अपर्ण का समय भी श्री जानकी नवमी वैशाख सुद ही अति उत्तम होगा। अतः उस समय अगर प्रभु की इच्छा हुई तो मैं भी तुम्हारे मनोरथ का सुन्दर लाभ उठा सकूँगा । अभी पोरबंदर में पन्द्रह दिवस का बड़े समारोह तथा उत्साह के साथ हुआ है और चल रहा है पता नही यहां कब तक रहना पडे क्योकिं यहां के आदमी जैसा भावुक प्रेमी सौराष्ट्र में कही देखा नही अगर प्रभु इच्छा हो गई तो शायद आफ्रिका भी जाना पड़े । विशेष श्री प्रभु कृपा। मद्रासीबाबा तो कांदीवल्ली से जो कुछ करना धरना था सब करके चले गये जामनगर आये ही नहीं । रामचरणदासजी अभी हैं और अब तो जगह जगह के प्रेमियों को इकट्ठा करना, बुलाना, समारोह करना चाहता भी नही क्योकि जिस आनन्द, शान्ति तथा प्रेम प्रसार के लिए यह आयोजन होता है और उसमें जो पधारते हैं उनका व्यवहार कुछ और ही बनता है। जिससे आनन्द शान्ति के बजाए दुख अशान्ति ही बढ़ती है तथा आपस में राग द्वेष, पैदा होता है। क्योकि उपर से प्रेम दिखलाने वाले भीतर से स्वार्थ के गुलाम होने से सब प्रकार अनर्थ ही कर डालते हैं । राधेबाबू, जगन्नाथ मदनलाल, नारायण, भोलाजी, चारु, भुवनेश्वर, प्रोफेसर उपाध्यायजी नन्दकुमार, तथा अन्य सभी प्रेमियो को मेरा जय श्रीराम। भजन करना, नाम रटना रटाना ही कालिकाल एकमात्र साधन तथा जीवन का सार है। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु,

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी !

रतनगढ़
दिनांक १-२-'६१

आशीर्वाद !

तुम्हारा प्रेम तथा भावना एवं श्रद्धा से पूरित पत्र प्राप्त हुआ, पढ़कर प्रसन्नता प्राप्त हुई आशा का भी संचार हुआ कि अगर ऐसी लगन तुम्हारी बनी रही तो अवश्य ही अपने जीवन कालमें ही आत्म कल्याण कर लोगे किन्तु हमारी सेवा लगन आन्तरिक होनी चाहिए चाहे दुनिया को इससे प्रसन्नता भले न हो किन्तु प्रभु की प्रसन्नता होनी चाहिए। प्रभु की पूर्ण प्रसन्नता तो आत्म समर्पण के बगैर नहीं होती, और जब आत्म समर्पण होता है उस समय सीर्फ प्रभु की स्मृति के अतिरिक्त सभी स्मृतियाँ जो अनेक जन्मों से हमारी स्मृति पर अंकित है आप ही आप ही मिट जाती है। उस समय हम प्रभु के साथ अपने एकत्व अभिनत्व का अनुभव करने लगते हैं और सारा विश्व चेतनात्मक सृष्टि राममय ही दीखने लगती है। उस समय मिलन वियोग का प्रश्न ही नहीं उठता चाहे वह मिलन श्री प्रभु से हो चाहे उनके प्रेमियो, भक्तो या संतो का हो और शरीर का मिलना जुलना तो प्रारब्ध के अधिन है। और अनित्य है किन्तु नित्य मिलन तो आत्मरुप से ही होता है जो सदा अपने पास ही है। जो प्रेमी है उसके लिए उसका अपना प्रेमास्पद कभी भी दूर नही होता वह तो अपने ही भीतर झांकता और अपने प्रेमास्पद की मूर्ति साक्षात अपने भीतर पाता है फिर भी जो जीव के भीतर उसके मिलन की लगन होती वह उसके भीतर विरह की अग्नि सुलगाती है जो कुछ छिपी हुई अन्तर मलिनता को जलाकर भस्म कर डालती है । और प्रेमाश्रु द्वारा उस भस्म को भी बहा कर अन्तःकरण अत्यन्त ही निर्मल बना देती है । जिसमें श्री प्रभु की बांकी झंकी स्पष्ट एवं प्रत्यक्ष दीखने लगती है। गोपियाँ अगर भगवान कृष्ण के लिए रोती थी, और भगवान गोपियों के लिए रोते तो इस लिए

नही कि वे दोनों सदैव एक दूसरे से शरीर द्वारा मिले रहे बल्कि इस लिये कि वियोग समीर द्वारा विरह अग्नि को प्रज्वलित कर तथा सम्पूर्ण वासनाओं एवं कामनाओं की आहूति दे, दोनों एक अभिन्नरुप बन जाएँ जो केवल आत्मरुप से ही हो सकता है शरीर रुप से नही। अतः चाहे दूर रहो चाहे पास, किन्तु चिन्तन द्वारा एक प्रभु के साथ बने रहो। गुरु एवं संत के शरीर का महत्व नहीं किन्तु उनकी वाणि की महिमा होती है। जिसको एक बार धारण कर लेने पर वह वैसी जीव को प्रगति की ओर बढ़ाती रहती है और प्रगति भी अपने संस्कार एवं श्रद्धा के अनुसार ही होती है। अतः वियोग में ही मिलन एवं मिलन में ही वियोग की अनुभूति का अभ्यास करो यही नित्य मिलन का अमोघ मंत्र एवं सर्व श्रेष्ठतंत्र है। जिस दिन हमें इस प्रकार की अनुभूतियां होने लगेगी उस दिन हमारा जीवन जन्म सफल एवं सार्थक हो जाएगा। भगवान का वारम्वार स्मरण चिन्तन एवं रटन इस लिए किया जाता है कि हमारा मन जो बाह्य विषयो में लगा है उसका त्यागकर अन्तर्मुख हो जाए और जब मन अन्तर्मुख होने लगता है उस समय हमें अपनी त्रुटियो का ज्ञान होने लगता है और ज्यों ज्यों त्रुटियो का ज्ञान होने लगता है त्यों त्यों हमारा मन निर्मल होने लगता है और जैसे हमारा मन निर्मलता को प्राप्त होने लगता है त्यों त्यों प्रभु का दर्शन सरल तथा सुगम होने लगता है। जिस दिन पूर्ण निर्मलता प्राप्त होती है उस दिन हमारा प्रभु के साथ पूर्ण मिलन हो जाता है। याने हम प्रभु के सामने और प्रभु हमारे सामने सदैव बने रहते है । क्योकिं प्रभु ने अपने मिलन का यह उपाय बतलाया है । विभीषणजी को "निर्मल मन जन सो मोहि पावा" और यह निर्मलता श्री प्रभु के नाम रटन, चिन्तन एवं स्मरण से अपने आप ही प्राप्त हो जाती है अगर नाम स्मरण करते हुए भी निर्मलता न प्राप्त होती हो तो माँ के युगलचरणों को पकड़, सच्चे हृदय से रोना चाहिए "जनक सुता जग जननी जानकी, अतिसय प्रिय करुणा निधान की, ताके युग पदकमल मनाउ जासु कृपा निर्मलमति पाउँ ।" सभी प्रेमियो को मेर जय श्रीराम कहना, तथा पत्र

सुनाना, जो जचे उसका अभ्यास करना। श्री अखंड यज्ञ के लिये जो आयोजन तुम लोगोने किया है उसके लिये तुम लोगों को धन्यवाद है । और श्री प्रभु एवं श्री गुरुदेव से प्रार्थना है कि तुम्हे इतना बल शक्ति प्रदान करे जिससे यह घर घर के कोने से निरंतर ध्वनि गुंजती रहे। विशेष श्री राम शरणंमम। पत्रोत्तर रामजी रणछोड़, कांदीवल्ली के पते पर भेजना ।

तुम्हारा हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गिरधारी मोलाजी,

मदनजी तथा टिकमानी ! आशीर्वाद !

पत्र मिला प्रभु स्मरण कर करा रहे हो यह बड़े सौभाग्य की बात है- यही जीवन है और तो मरण तुल्य ही है । संसार में न कोई रहा न रहेगा, अगर रहेगा तो ना ही यानी उज्जवल यश ही, अतः चित्त से चिन्तन, मन से मनन तथा तन से जतन की सेवा यही सार है- तप से तेज, त्याग से गौरव, सेवा से शक्ति तथा भक्ति से शान्ति, यही जीवन का सच्चा धन है। जब तक शान्ति नही तबतक सुख नही जब सुख नही तो जीवन नरक तुल्य है। किन्तु सुख का अर्थ विषम सुख नहीं, विषय त्याग तथा सत्य राग । श्री गुरुदेव की तिथि का अभी निश्चय नहीं कहां होगा। विशेष श्री प्रभु कृपा । यहां घर घर प्रेमियों के कीर्तन पारिवारिक होता है और अखंड भी चल रहा है। राधाकृष्ण सेठ के पास उनके मंगवाने पर जोशी फोटोग्राफर आज या कल्ह फोटो का आलबम जिसमें ६० या ६५ चित्र है भेजेगा आप लोग देखना और अगर उसमें कोई चित्र लेने का हो तो जोशी आर्ट स्टूडियो, सोनी बाजार जामनगर को लिखना। बहुत प्रेमी तथा भावुक है। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका !

आशीर्वाद !

तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ। श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। इस समय मैं उधर आ सकू, ऐसी संभावना नही लगती है, कारण तीन-तीन जगहों में अखंड चल रहा है । उसकी पूर्णाहुति का समय है । अभी तो पोरबंदर जानेवाला हूँ । विशेष श्री प्रभु कृपा । अखंड कराना हो तो जरुर करना । आने जाने की संभावना श्री प्रभु कृपा उपर है । श्री १०८ गोल मोलजी महाराज को मेरा साष्टांग दण्डवत प्रणाम कहना । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका !

आशीर्वाद !

तुम्हारा पत्र आज मिला । इसके पहले तुम्हारा तार भजन आश्रम वाले पर आया था उन्होने मुझे जगह दिखाई । उसमें अभी रहने लायक तो कोई स्थान नहीं है । कम्पाउन्ड हॉल भी कहीं कहीं टूट गया है । पानी की भी अभी कोई व्यवस्था नहीं है । अब तो उसमें रहने लाएक कोई व्यवस्था होगी तौ ही रहा जा सकता है एक प्रेमी की इच्छा थी कि कुछ यहाँ श्री वृन्दावन में कभी कभी आने जाने के लिए कोई स्वतंत्र स्थान होवे तो ठीक, इसीलिये मैने लिखा था। उनको जगह दिख लाऊंगा फिर उनकी इच्छा। रामनवमी पर तो मेरा विचार श्री अयोध्याजी जाने का है किन्तु जामनगर से अभी अभी जोशी का पत्र आया है कि जामनगर में आठ मास से अखंड चल रहा है तो

श्री रामनवमी का दिव्य उत्सव जामनगर में ही करे और स्वकृति देवे तो मै लेने के लिए आऊँ किन्तु उसको अभी ना लिख दिया है । अभी तो मेरा विचार कुछ दिन बृज में ही रहने का है । यहाँ से गिरिराज श्री नन्दगाँव, श्री बर्पाने जाऊंगा। बिहार में तो अभी मेरा आने का बिलकुल विचार ही नहीं है । श्री प्रभु की जो इच्छा। सभी प्रेमियो को मेरा सप्रेम जय श्री राम कहना और रामनवमी को भजन जरुर करना। मै होउ या नही भजन तो करना ही चाहिए। मेरा स्वास्थ्य ठीक है । गिरधारी को मेरा जय श्री राम कहना और कहना कि जोशी के पास भेजी हुई दवा मिल गई थी ठीक है दर्द अभी नहीं है और न पोते में घट बढ़ ही है । जैसा था वैसा ही है एकादशी वगैरह को बुखार आ जाता था वह बंद हो गया ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल ! मोरबी, जैतपुर

आशीर्वाद ! दिनांक २९-९-६५

तुम्हारा १८-९-६५ का लिखा हुआ पत्र आज मिला । समाचार मालूम हुआ । तुम सुख पूर्वक पहुँच गये यह जानकर विशेष खुशी हुई तुम्हारे जाने के बाद मैं जैतपुर मोरबी सात दिवस अखंड के लिये जामनगर से चला आया था। अभी भी यही पर हूँ । नवरात्रि के बाद यहाँ के आजूबाजू के गावो में प्रोग्राम है । उसके बाद पोरबंदर जाने का विचार है । जामनगर, द्वारका, बेट, ओखा, पोरबंदर सब जगहों में अमन चैन है । तुम लोगों के सामने जो जामनगर में वोम्बार्डमेन्ट हुआ था । उसके बाद कुछ भी हरकत नहीं हुई है अब तो युद्ध विराम भी नाम का हो ही गया । अन्य क्षेत्रों में पाकिस्तानियों की हरकत तो चालू ही है किन्तु इस विभाग में अभी कुछ नहीं है गिरधारी और यमुनाबाबू भी पहुँच गये होगें । श्री १०८ गोल मोल बाबाजी होवे तो

मेरा दंडवत प्रणाम कहना । सभी प्रेमियो को जय श्री राम के साथ साथ यह भी कहना अपने देश तथा विश्वशान्ति के लिये भजन खूब करेगें । इसी में अपना तथा सबका कल्याण है मौत तो जब समय आयेगा तो ही आयेगी इस लिए निर्भय होकर भजन करना जाहिए । आपका रागद्वेष भूलकर प्रेम से मिलकर श्री प्रभु की पुकार करें । जामनगर अखंड सुन्दर ढग से चला रहा है । जोषी तथा मंडल वाले आनंदपूर्वक है । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल!

आशीर्वाद ! दिनांक ७-५-६१

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । दिनांक २९-८-६७ का लिखा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । अब तो अखंड को पूर्णाहुति हो ही गई होगी ऐसा तुम्हारे पत्र से अनुमान होता है । ठीक है जैसी प्रभु की इच्छा मर्जी। अपनी क्या हस्ती है, जो हम लोग अेसे भयंकर कलिकाल में अखंड चला सके । हाँ ! इतना अवश्य है कि श्री प्रभु की अपने लोगों के उपर अत्यन्त कृपा है कि अपने लोगों को निमित्त बनाकर ऐसा महान, सत्कर्म, पुरुषार्थ करा लेते है । बस! अपने लोगो के लिये तो इतनी ही प्रबल धारणा होनी चाहिए कि ।

"राजी हैं हम उसी में, जिसमें तेरी रजा है ।
या यू भी वाह-वाह है या त्यूं भी वाह वाह है ।"

इसके लिए चिन्ता दुख की कोई आवश्यकता नहीं । "राम कीन्ह चाहै सोई होई, करें अन्यथा अस नहीं कोई ।" गिरिधारी की भेजी हुई पार्सल मिल

गई है। और मेरे पत्रानुसार दहीसर भी बाबूभाई को दवा भेज दी है। उसके लिए श्री संतजी तथा गिरिधारी दोनों व्यक्तियों को मेरा हार्दिक धन्यवाद तथा श्री राम जय राम जय जय राम। सभी प्रेमियो को जय श्री राम। विशेष श्री प्रभु कृपा। १०-९-६७ से १७-९-६७ वेरावल में श्री गुरुमहाराज की तिथि निमित्त अखंड महायज्ञ है विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जामनगर

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद ! दिनांक १०-८-६५

तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मूलम हुआ। मार्गशीर्ष में अेक मास के अखंड कीर्तन के लिये लिखा है, बहुत ही आनन्द की बात है। श्री जगदीशजी कौन हैं, उन्हें मैं जानता नही हूँ कारण न कभी मैने उनका नाम ही सुना था और न कभी दरस परस ही हुआ। उनका परम सौभाग्य है कि पुरायपुन्ज का उदय है, श्री प्रभु की परम कृपा है कि उनके हृदय में ऐसे महान सत्कर्म-**"श्री अखंड हरिनाम महा यज्ञ"** का संकल्प पैदा हुआ है। इस कराल कलिकाल में जबकि सर्वत्र व्यभिचार, दुराचार का ही प्रचार विस्तार हो रहा है, जीव आधि, व्याधि, उपाधि से ग्रस्त होता ही जा रहा है। मानवता, दानवता में परिवर्तित होती जा रही है। अेसे विकराल काल में सन्त तथा सत्शास्त्रों का मानव समाज के लिये ही नही वरन प्राणीमात्र के कल्याण तथा त्राणा का अेक ही अभोध साधन है। **"श्री भगवन्नाम का प्रचार विस्तार"** इसी के द्वारा जीव अपना लोक परलोक दोनों साध सकता है। ऐसे सत्कर्म में अनन्त जीवों का कल्याण निहित है इसमें जो भी विवेकी भाग्यशाली प्राणी जिस प्रकार भी

सहायक बनता है वह श्री प्रभु का कृपा पात्र है, साथ ही धन्यवाद पात्र भी है । परम श्रद्धेय श्री १०८ श्री गोलमोल बाबाजी के चरणाकमलों में साष्टांग दंडवत प्रणाम सह जय श्री राम । अगर आप कुम्भ में पहले पहुँच जाए तो कृपा पत्र देने की कृपा अवश्य करेगें । कह देना और १०८ श्री राम सिहंजी वहाँ आये हो तो उनसे भी मेरा दंडवत् प्रणाम करना । संत भगवान की कृपा होगी तो कुम्भ में दर्शन करने का प्रयास अवश्य करूँगा । स्वास्थ्य अभी ठीक हो गया है । बीच में बहुत खराब हो गया था । शेष श्री प्रभु कृपा । श्री वैधनाथ, गिरिधारी, रामधुन मंडल के सभ्यगण तथा अन्य सभी प्रेमियो को यथा योग्य सह जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री रामजीमंदिर,

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल !

हाजा पटेल की पोल, अहमदाबाद

आशीर्वाद !

दिनांक २७-१-६५

तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । श्री प्रभु सर्वसमर्थ हैं वे राई को पर्वत और पर्वत को राई पल भर में कर सकते हैं । रंक को राजा और राजा को रंक, मुर्ख को पंडित और पंडित को मूर्ख ! यह सब उनकी लीला मात्र है । यों तो सुख दुख हानि लाभ, जन्म मरण जीव पूर्व कर्मो फलानुसार मिला ही करता है । मनुष्य जीवन पाकर तो किसी प्रकार भी श्री प्रभु की अनन्य शरण ग्रहण करना यही जीवन का परमफल है बाकी तो भोग सभी योनियो में स्वभाव से ही प्राप्त होते रहते हैं, हो रहे हैं और जब तक श्री प्रभु कृपा न होवे तब तक तो यह चक्र चलता ही रहेगा । जिस किसी अवस्था में रह कर श्री प्रभु नाम रटन करते रहना चाहिए यही लोक परलोक दोनों

सुधारनेवाला है । यो तो तुमने अपने हितैषी कहलाने वालो को तो देख ही लिया है । अतः हारे को हरिनाम अभी एक मास से अधिक हो गया जगह-जगह अखंड अहमदाबाद खूब उत्साहपूर्वक चल रहा है और अभी महिनो तक प्रोग्राम है । आगे भगवत् इच्छा। सभी प्रेमियो को जय श्री राम । श्री प्रभुबाबू वकील को मेरा जय श्री राम कहना विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद !

पत्र मिलास समाचार मालूम हुआ। तुम्हारा संकल्प पवित्र है। देश, काल परिस्थिति समझ कर, सबका सहयोग लेकर करना हो तो अवश्य करना । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

कल्ह मैं पंडरपुर से यहाँ आया हूँ तो तुम्हारा पत्र मिला ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल ! महुवा

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । अब एक ही बात की रोना रोने से कोई लाभ नहीं । जो प्रारब्ध में बदा होता है उसे भोगना ही पड़ता है । हाँ ! इतना अवश्य है कि प्रभु भजन प्रवल होवे तो प्रारब्ध भी मिट सकता है नहीं तो क्षीण तो अवश्य ही हो जाता

है। इस संसार में प्रभु के सिवाय कोई अपना नहीं है । न कोई माता पिता है न भाई बन्धु है सबके सब पूर्व ऋणानुबरत के कारण ही अेक दूसरे से मिल गये है अपना अपना ऋण पूरा होने पर अेक दूसरे से बिछुड़ जाते है । यहाँ के न मिलन में कुछ तथ्य है, और न बिछुड़न में । अतः व्यर्थ की चिन्ता न करके श्री प्रभु का चिन्तन ही विशेष करने का प्रयास करना, जिससे सभी चिन्तायें अनायास ही दूर हो जाएगी । अगर वैजनाथ वास्तव में पिता होता तो क्या कभी ऐसा वर्तन कर सकता है ? उसका तुमसे लेना है तुम कितना भी करोगे वह तुम्हारे अनुकूल न हो सका । बस! श्री प्रभु कृपा प्राप्त करने का प्रयास करते रहो और पूर्ण भरोसा रखो कि :-

सुनी री मैंने निर्बल के बलराम ।
अपबल, तपबल और बाहुबल चौथा है बल दाम ।
'सूर' किशोर कृपा ते सब बल हारे को हरिनाम ॥

बस! हरिनाम का दृढ़ आश्रय ले निश्चित रहो । प्रभु जो करेगे सभी भले के लिए ही करेगें । अखंड चलाने वाले प्रेमियों को मेरा खूब खबू आशीर्वाद सह श्री राम जय राम जय जय राम ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री रामं ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से आनन्द है । पत्र मिला समाचार मालूम हुआ। गिरिधारी का भी पत्र आया है । **श्री गुरुपूर्णिमा** का उत्सव द्वारका में तथा गुरुतिथि का उत्सव **पोरबंदर में निश्चित रखा गया है** । बिहार की ओर आने की अभी संभावना नहीं लगती है । जब प्रभु की प्रेरणा इच्छा होगी तब तैसा किया

को मेरा जय श्री राम । अखंड जब तक श्री प्रभु कृपा प्रेरणा से चल रहा है तब तक ठीक है । चलने दो बाकी तो अपने लिये जाएगा । सभी नाम प्रेमियो तो यही कथन ठीक है :-

राजी हैं हम उसीमें, जिसमें तेरी रजा है ।

या यूँ भी वाह-वाह है या त्यूं भी वाह-वाह है ॥

जो कुछ हो रहा है और होगा सब उन्ही की कृपा, प्रेरणा, सहायता से हो रहा है ऐसा समझ कर हर हालत में, हर विषय में उनका मंगल मय विधान समझ कर प्रसन्न रहना चाहिए । अकारण मन उदास करने और दूसरों के प्रति दोषाशेपण करने से क्या लाभ ? जो भी करेगा अपने लिये ही करेगा । अपना फर्ज है । प्रेम से कहना समझना । अगर न समझते न करे तो अपने को क्यों दुखी बनना चाहिए । जहाँ रहो वही राम राम करते रहो । अखंड न हो तो काम करते करते समयानुसार स्वयं अखंड करते रहो विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । वहाँ, यहाँ सभी जगहों पर अखंड जपयज्ञ या नाम स्मरण श्री प्रभु एवं श्री गुरुदेव की कृपा प्रेरणा के बल से चल रहा है । हम लोग तो सीर्फ अेक निमित्त मात्र हैं । हम लोगो के द्वारा ऐसे महान कार्य कराने के लिये निमित्त बनाया ही, यही उनकी असीम कृपा समझनी चाहिए और अपने कर्तव्य पथ लगे रहना चाहिए, अगर दूसरे लोग नहीं करेगे तो हम लोग तो करेगे ही

न? तो बस! अगर समूह में अखंड न होगा, तो व्यक्तिगत तो कोई बंद करनेवाला नही है जब तक उसकी कृपा दया है। बस ! १-६-६९ से १५-६-६९ तक महुवा रहेनेवाला हूँ। वहाँ १५ दिवस का अखंड है स्वास्थ्य ठीक है अवस्था भी अपनी असर कुछ-कुछ दिखा रही है। सभी नाम प्रेमियो को मेरा श्री राम जय राम जय जय राम। सूरज को विशेष कारण श्री अखंड यज्ञ में वह मूलभूत बन रहा है। भोला तो जाने के बाद अेक पत्र भी नहीं लिखा। कहाँ तो बहुत बड़ी-बड़ी बाते करता था गिरिधारी आवे तो मेरा राम-राम कहना। बैजनाथ गुप्ता को भी मेरा समाचार तथा सद्भाव कहना। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ विपति के समय में घबडाने से कोई लाभ नहीं होता बल्कि अशान्ति व्यग्रता और भी बढ़ जाती है। ऐसे समय में अटूट धीरज और पूर्ण विश्वास रखकर श्री प्रभुका ही स्मरण करना चाहिए। वे सर्वज्ञ हैं सर्व समर्थ हैं, परम दयालु हैं - वे जो कुछ भी करेगें अपने हित के लिये ही करेगे। वे मंगलमय हैं। अतः उनका प्रत्येक विधान भी मंगलमय है हम अपनी जड़ता, अल्पज्ञता के कारण समझ नही पाते कि वे किस रुप से क्या करना चाहते हैं।

अपबल, तपबल और बाहुबल, चौथा है बल दाम।
सूरकिशोर कृपासे सब बल हारे को हरिनाम ॥

सब प्रकार से हारे हुए के लिये तो एक श्री हरिनाम का ही सहारा आश्रय

है । बस! खूब नाम रटते रहो जो कुछ बने करते रहो ।

अस विचार मति धरि, तजि कुतर्क संशय सकल ।
भजहुँ राम रण धीर, करुणाकर सुन्दर सुखद ।।

अखंड तो श्री प्रभु की कृपाबल एवं श्री हनुमन्त लालजी की अखंड सहायता से चलता है दूसरा कोई भी ऐसा समर्थ नहीं कि कलिकाल से अखंड का रक्षण कर सके । उन्ही की कृपा प्रेरणा से सर्वत्र चल रहा है और जब तक उनकी इच्छा प्रेरणा होगी तब तक चलेगा । अपने से जितना लाभ लिया जाए उतना अधिक से अधिक लाभ उठाने का यथा शक्ति प्रयत्न करना चाहिए । श्री गुरुपूर्णिमा का उत्सव इसबार श्री द्वारका नूतन संकीर्तन मंदिर में ही मनाया जायेगा । सभी प्रेमियों को पहले से सूचना दे देना । बाद में निमंत्रण पत्र भेजा जाएगा । सभी प्रेमियों को जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ। चलता अखंड की पूर्णाहूति हो गई उसका समाचार और गिरिधारी का भेजा हुआ प्रसाद भी मुझे ध्रांगध्रा में मिला । अभी तो गुजरात सौराष्ट्र में ही फिर रहा हूँ । दिपावली के उपर जामनगर, पोरबंदर तीनों जगहों में गया था फिर जामनगर से अन्नकूट करके सुरेन्द्रनगर आ गया वहाँ २१ दिवस का अखंड थ। । उसके बाद ध्रांगध्रा गया वहाँ से पालेज और वहाँ के आसपास के गाँवो में गया। सात दिवस से यहां आया हूँ १२-१२-६८ तक अखंड है उसके

बाद सात दिवस भरुच । उसके बाद बम्बई होकर या सीधे जामनगर या पोरबंदर होते हुए, द्वारका जाने का विचार है । संकीर्तन मंदिर का द्वारका में वसंत पंचमी पर उद्घाटन का विचार है । पूर्ण निश्चय हो जाने पर आमंत्रण पत्रिका या पत्र जाएगा । अेक मास पहले वहाँ पहुँचना जिससे इधर का प्रोग्राम अब बंद रखा जाएगा । सूरज के घर पर अखंड शुरु हुआ यह भी हर्ष की बात है जो कुछ भी प्रभु करते हैं सब भले के लिये ही करते है । उनकी जो मर्जी होगी वही होगा, होगा भी न्यायपूर्ण ही क्योकि वे सर्वज्ञ सर्वश्वर हैं, उनका विधान कभी अन्याय पूर्ण होगा। वाकी तो अपने कीये कर्मो का फल सभीको भोगना ही पड़ता है । श्री प्रभु न्यायी होते हुए भी दयालु हैं । वे शरणागत आर्त प्राणियों पर तो दया करते ही हैं यह उनका स्वभाव ही हैं । विशेष श्री प्रभु कृपा । सभी प्रेमियों को श्री राम जय राम जय जय राम श्री १००८ गोलमोल बाबाजी होतो मेरा सादर सप्रेम माथा टेकना कहना।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल !

संकीर्तन मंदिर,

पोरबंदर

आशीर्वाद !

दिनांक २१-५-६४

पत्र मिला समाचार मालूम हुआ। श्री प्रभु की कृपा का आधार ही जीव के कल्याण का अेक मात्र साधन । जो जीव अपने को सर्वथा असमर्थ दीन, हीन समझकर अपने जीवन रथ का बागडोर श्री प्रभु के करकमलों में समर्पित कर देता है, उसकी गाड़ी कभी गढ़े में गिरती नहीं - गिरते गिरते भी वे सर्वज्ञ सर्वाधार, सर्वेश्वर, दीनबन्धु, दयालु प्रभु अपनी अहेतुकी कृपा से ही बचा लेते हैं । जीव तो अल्पज्ञ होने के कारण जो कुछ भी सोचता या करता है उसमें भूल की सम्भावना तो रहती ही है किन्तु सर्वज्ञ प्रभु तो जीव मात्र के लिये

जोभी विधान करता है वह स्वारथपरता से रहित पूर्णज्ञानपूर्वक ही करता है । अतः जो कुछ भी हो रहा है । वह सब प्रभु की प्रेरणा से ही हो रहा है । और सब मेरे भले के लिए ही हो रहा है । ऐसा समझकर भक्त हमेशा अपने कर्तव्य का पालन करते हुए श्री प्रभु के भरोसे सदा निर्भय, निश्चिन्त ही रहता है । नहीं तो पितापुत्र का ऐसा सम्बन्ध, व्यवहार क्या सम्भव है ? यह तो पूर्व का ऋणानुबन्ध ही है जो एक दूसरे के प्रति इस प्रकार का व्यवहार कराता है । अगर पिता का ऋण पुत्र के उपर है तो उसे झक मार के भरना पड़ता है । और पुत्र का ऋण पिता के उपर है तो उसे रो रोकर भरना पड़ता है । जहाँ एक दुसरे का लेन देन पूरा हुआ कि सम्बन्ध छूटा, विषमता, व्यग्रता, व्याकुलता गई। अतः इसके लिए चिन्तित होने की आवश्यकताा नहीं । अगर चिन्ता करनी ही है तो श्री प्रभु नाम की ही चिन्ता करो - जो दिव्य चिन्तामणि है और सभी चिन्ताओं को अपहरण करने वाला है । यो तो यह शरीर संसार कारागृह है इसमें सुख, शान्ति, अनुकुलता कैसी ? यहाँ तो सर्वत्र दुख ही दुख भरा है फिर भी जो अपराधी जीव (अपने कर्मानुसार करागृह में आने वाला) अगर उस करागृह के निरीक्षक के नियमानुसार अपना जीवन बना ले तो उस करागृह के भीतर भी उसकी कृपा से दुख में भी सुख का कुछ आभास, जीवन में आराम मिल ही जाता है । अतः श्री प्रभु का ही दृढ़ आश्रय ग्रहण कर **उन्ही का नाम रटन** करते रहो । श्री प्रभु मंगल ही करेगे । क्योकि वे स्वयं मंगलस्वरुप हैं । विशेष श्री प्रभु कृपा । दक्षिण से आकर गया, द्वारका गया वहाँ से सर्व प्रथम पन्द्रह दिवस के लिए गुजरात में गया वहाँ से आकर १४-५-६४ से पोरबंदर में सवामास का अखंड प्रारम्भ हुआ। अभी २८-५६४ से खम्भालिया में अखंड प्रारम्भ होगा । द्वारका में १२-६-६४ को पोरबंदर में २१-६-६४ को, खम्भालिया में ७-६-६४ को पूर्णाहूति है। सभी प्रेमियो को जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जुनागढ

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद ! दिनांक : ७-१०-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । साबरमती रेलवे कोलोनी का ४० दिवस का अखंड आनन्दपूर्वक पूर्ण हो गया । उसके बाद पालडी अहमदाबाद में ३ दिवस का अखंड पूर्ण करके २८-९-६८ को अहमदाबाद से सोमनाथ मेल में निकल कर दूसरे दिन २९-९-६८ को जुनागढ पहुचा, यहा उसी दिन रात्रि १२ बजे से अखंड प्रारम्भ हुआ जिसकी पूर्णाहुति कल्ह रात्रि को २ बजे बड़े आनन्द से हो गई । आज मैं यहां से जामनगर या पोरबंदर होकर, द्वारका जाऊँगा । दीपावली तक वही रहना पड़ेगा अेसा लगता है । वहाँ जाने पर वहाँ का सब समाचार मालूम होगा । श्री १०८ गोलमोल बाबाजी जामनगर रहकर पाँचसात दिवस से पोरबंदर गये हुए हैं । जामनगर जाने पर वे पुनः जामनगर आयेगे ? और वहाँ से मेरे साथ ही साथ द्वारका जायेगें ऐसा उनका विचार है । ऐसा जोशी कहता था और सब आनन्द है । गिरधारी का भी पहुँच तथा कुशल समाचार का पत्र आ गया है । तुम्हारा इसके पहले भी एक पत्र मिला था। हर काम समय आने पर श्री प्रभु कृपा से अपने आप ही हो जाता है । उसके लिए किसी को भी विशेष आग्रह करने की जरुरत नही होती गिरिधारी को कहना कि श्री संतजी से दवा लेकर भेज देवे । हाईड्रोसील में कोई खास तकलीफ या सूजन बढ़ता नही किन्तु कभी कभी एकादशी के अेकाद दिवस पहले दोनों तरफ नसों में जरा सूजन बढ़ जाता है । दर्द भी होने लगता है और फिर अपने आप एक दो रोज में पहले वाली स्थिति में आ जाता हैं । इसबार बहुत दिनो के बाद विजयीदशमी को सूजन भी बढ़ गया था और उस दिन बुरवारभी बहुत जोरदार आ गया था । दूसरे दिन अपने आप ठीक हो गया । बुरबार भी खतम हो गया तो गिरिधारी को मिलकर कहना

कि वह श्री संतजी मिले और उनसे कहे कि ऐसी दवा देवे कि जिससे हाईड्रोसिल जितना अभी है उससे अधिक बढे नही और बुखार का भी उपद्रव न होवे। पहलेवाली दवा से बहुत दिनों तक ठीक-ठीक लाभ था । अब ऐसी कोई दवा होवे जिससे सदा के लिए यह तकलीफ निर्मूल हो जावे । सभी प्रेमियो को जयश्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल ! दहिसर अनुज
प्लास्टीक इन्डस्ट्रीज,
आशीर्वाद ! बम्बई-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ। बैजनाथजी यहाँ मिले थे। तुम्हारा काम काज सुलझ रहा है, यह भी तुम्हारे अपने प्रारब्ध तथा विशेष श्री प्रभु कृपा का ही फल है । भजन करना चाहिए, भोजन की व्यवस्था तो श्री प्रभु ने मां के गर्भ से कर रखा है। जैसा जिसका कर्म वैसा उसका फल । **बोवे बबूल तो आम कहाँ से खाये** । अनीति की कमाई से कोई भले ही चारदिन मौज मजा कर लेवे किन्तु स्थायी, सुखदायी तो सत्कर्म का ही फल रहता है और रहेगा। इस कलिकाल में सबसे महान **सत्कर्म श्री प्रभुनामस्मरण ही है** । उसके द्वारा ही अन्य सत्कर्मो की भी शुद्धि होती है, ऐसा सभी शास्त्र तथा संतो का मत है । **और श्री प्रभु नाम महाराज की कृपासे लोक, परलोक दोनों ही बन जाते है** । तुम्हारी श्री प्रभु नाम में निष्ठा है यह तुम्हारे महान पुण्यो तथा श्री प्रभु की अहैतुकी अनुकम्पा का ही फल है । अन्यथा नाम निष्ठा कठिन ही नहीं वरन् इस समय असम्भव सा

हो रहा है । सभी कर्मो में यज्ञ, दान, तप, व्रत, तीर्थ आदि निष्ठा तो हो सकती है और वहुतों को है भी किन्तु श्री प्रभु नाम निष्ठा तो अति दुर्लभ है । यह तो विरले भाग्यशाली को उन्ही की असीम कृपा से ही होती है । बस! खूब नाम रटन करते रहो । श्री नाम महाराज सर्व समर्थ है । सभी प्रेमियों को जय श्री राम । वकील साहेब श्री प्रभु बाबू का अेक पत्र इसी में है दे देना ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल ! जामनगर

आशीर्वाद ! दिनांक २९-४-६७

श्री प्रभु की कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा दो पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । चैत्र मास में प्रतिपदा से लेकर श्री रामनवमी तक श्री अखंड महायज्ञ महुवा बंदर में था । बड़ा ही आनन्द हुआ। रामचरणदास श्री अयोध्याजी से महाराजजी की तिथिपर आयेथे और अति आग्रह करके गये थे कि श्री रामनवमी पर श्री अयोध्या में अखंड रखेगे और आप जरुर पधारना । अगर आप नहीं आयेगे तो में चैत्र मास के पहले ही आप को लिवाजाने के लिये आ जाऊँगा किन्तु यहाँ से जाने के बाद अभी तक एक पत्र भी नहीं आया है। और न कोई समाचार ही मिला है। बिहार में दुष्काल की भंयकरता की बातें समाचार पत्रों में खूब आती हैं । किन्तु तुम लोगो के पत्र में उसके विषय में कोई जिक्र भी नहीं आती है तो सच मुच बात क्या है? उत्तर बिहार में दुष्काल है कि दक्षिण बिहार में? कि समस्त बिहार प्रान्त में ? इधर चैत्र पूर्णिमा को श्री हनुमानजी का जन्म तिथि मनाते है उसी दिन के लिये यहाँ आया

था । आज राजकोट जा रहा हूँ और वहाँ से पोरबंदर में वार्षिकोत्सव के लिए जाने वाला हूँ । गिरिधारी गुप्ता, रामशरण वगैरह सभी प्रेमियो को जय श्री राम। श्री अखंड यज्ञ चल रहा है । यह भाग्य की बात है। श्री प्रभु कृपा वगैर समाज का कल्याण होना कठिन ही नही बल्कि असम्भव ही है । इस यज्ञ के संचालक भी हनुमानजी ही हैं उन्ही की कृपा प्रेरणा से सब होता है । उन्ही का आशा भरोसा रखना चाहिए । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

संकिर्तनमंदिर, पोरबंदर

प्रिय द्वारका बालगोपाल तथा

समस्तनाम प्रेमीजन!

आशीर्वद !

दिनांक २८-४-६९

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । यहाँ के तीनों स्थलों में स्थायी अखंड बहुत ही सुन्दर ढंग से चल रहा है । श्री द्वारका धाम का संकीर्तन मंदिर तो अत्यन्त ही भव्य बन गया है । प्रचार भी बड़े सुचारु रूप से हो रहा है । तुम्हारे यहाँ भी चालू अखंड की बातजान कर भी अति प्रसन्नता हुई। मेरा स्वास्थ्य बिलकुल ठीक है । वैशाख शुक्ल सप्तमी को पोरबंदर का पुराना संकीर्तन मंदिर तोडकर नया बनाने के लिये तथा पीछे के भाग में भोजन शाला बनाने के लिये शिलान्यास किया गया है । यह उत्सव भी बड़ा विलक्षण रहा । कुछ समय यहाँ रहने के बाद बम्बई थोड़े दिन के लिये जाने का विचार है । काकूभाई दामोदर बम्बई वाला के हाथ से पोरबंदर नूतन मंदिर का शिलान्यास हुआ । भोला यहाँ से लम्बी-लम्बी बाते करके गया,किन्तु उसका

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम

कोई अभी तक जवाब नहीं आया है श्री प्रभु इच्छा। गर्मी प्रेमियों को जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा। गिरिधारी के वापिस आने पर राम-राम कहना।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल !

जामनगर

आशीर्वाद !

दिनांक ७-४-६१

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । स्वास्थ्य ठीक है । वैशाख्र मास में पोरबंदर का वार्षिकोत्सव है तथा पुराना संकीर्तन मंदिर हटा कर नया बनाने के लिए वैशाख्र शुक्ल सप्तमी को शिलान्यास करने का है ऐसा रामजी भाई का पत्र आया है । अतः आठ दस दिवस बाद पोरबंदर जाना पड़ेगा । श्री द्वारका धाम का मंदिर बड़ा ही भव्य एवं रमणीय बन गया है । द्वारका यात्रा में आनेवाले लगभग सभी यात्री श्री संकिर्तन मंदिर का दर्शन करने तो आते ही हैं और पैसा नही लिया जाता है । अेसा जानकर अत्यन्त प्रभावित होकर जाते हैं । श्री प्रभु द्वारकाधीश की कृपा से समस्त देश के कोने कोने में श्री भगवन्नाम का प्रचार अनायास ही प्रारंभ हो गया है क्योंकि श्री द्वारका चार धामों में अेक धाम है और सप्त पुरियों में अेक पुरी है । अतः इसका महत्त्व सबसे अधिक है । जामनगर, पोरबंदर, श्री द्वारका सभी जगहों खूब आनन्द से स्थायीरूप से श्री अखंड यज्ञ चल रहा है । यह सब (श्री गुरुदेव की प्रेरणा एवं श्री प्रभु कृपा का ही अेकमात्र फल है । गिरधारी, गुप्ता, वगैरह सभी नाम) (प्रेमियों को जय श्री राम) जान कर अत्यन्त प्रभावित होकर जाते है। श्री प्रभु द्वारकाधीश की कृपासे समस्त देश के कोने-कोने में श्री भगवन्नामका प्रचार अनायास ही प्रारम्भ हो गया है क्योकि श्री द्वारका चारधामो में एक धाम है

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

और सप्त पुरियों मे एक पुरी है । अतः इसका महत्व सबसे अधिक है जामनगर, पोरबंदर श्री द्वारका सभी जगहो खूब आनन्द स्थायी से श्री अखंड यज्ञ चल रहा है । यह सब सीर्फ गुरुदेव की प्रेरणा एवं श्री प्रभु की कृपा का ही अेकमात्र फल है । गिरधारी गुप्ता, सूरज वगैरह को जय श्रीराम । विशेष श्री प्रभु इच्छा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय बजनाथ द्वारका तथा बालगोपाल !   श्री द्वारकाधाम

जय श्रीराम !   दिनांक २७-७-६५

तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ । गुरुपूर्णिमा के अवसर पर ५१ रुपैया आया ऐसा श्री हरिदास शेठने कहा है । पाँव मेरा ठीक हो गया है किन्तु अभी बहुत चलना फिरना नहीं हो रहा है । जन्माष्टमी के अवसर पर आठ दिन का प्रोग्राम बड़ौदा में है । किन्तु अभी अस्वस्थता के कारण जाने का कोई निश्चिय नहीं हुआ है । अभी जामनगर, पोरबंदर, द्वारका सभी जगहों में अखंड चालू है इसके अलावा जामजोधपुर, खमालिया, गुजरात का भी आमंत्रण है किन्तु करु क्या ? शरीर ही सभी पुरुषार्थो का साधन है । तनु विनु भजन वेद नही वरना । बम्बई में वैजंनाथजी के जाने के वाद वृज मोहन सेठ दो दिन दहिसर आये थे और अति आग्रह करके बंगले ले गये थे और सब आनन्द है । अगर १०८ श्री श्रद्धेय गोलमोल बाबाजी वहाँ हो तो मेरा सादर सविनय दराडवत प्रणाम कहना। सभी प्रेमियों को जय श्री राम, वकील श्री प्रभुबाबू का अभी तक कोई पत्र आया नही है। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका, तथा बालगोपाल ! श्री द्वारकाधाम

आशीर्वाद ! दिनांक २८-९-६४

पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ किन्तु क्या करु । मनुष्य के प्रारब्ध योग भी विलक्षण और श्री प्रभु कृपा योग भी विलक्षण। कुछ समझ में नही आता है कि कब किसकी प्रवलता क्यो और कैसे होती है? किन्तु हाँ ! इतना अवश्य मेंव सत्य है कि मनुष्य का प्रारब्ध कैसी भी बूरा क्यो न हो अगर श्री प्रभु कृपा ही लगतार बना रह सकता है अतः अपने को दृढतापूर्वक श्री प्रभु नाम का ही आश्रयलिये रहना चाहिए कारण कि अपवल, तपबल, बाहुबल चौथा है वलदान, सूरकिशोर कृपा तो सब बल हारे को हरिनाम । दुख में घबड़ाना नहीं, सुख में इतराना नहीं यही तो प्रभु भक्ति का स्वरुप है । और जैसे राखहूँ बैसे ही रहौ । यही उसका फल है । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका, वैधनाथ तथा बालगोपाल ! गुन्दी पोल, रीलीफ रोड, अहमदाबाद

आशीर्वाद ! दिनांक २८-२-६७

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ किन्तु ऐसा कुछ निश्चित नहीं जान पड़ा कि कब तक अखंड है । जब तक भी हो श्री अखंड महायज्ञ से संरक्षक प्रचारक तो स्वंय श्री वीरपुंङ्गव श्री हनुमन्तलालजी ही हैं । जब तक उनकी कृपा प्रेरणा होगी तब तक चलायेगें ही । कल्ह या परसों यहाँ से जामनगर जाने वाला हूँ । महुवा बंदर का प्रोग्राम

श्री रामनवमी के लिये पहले से निश्चित है किन्तु अभी तक उन लोगों का पुनः कोई सूचना नहीं आई है, शायद जामनगर में आवे । अगर किसी कारण बस उनका प्रोग्राम बंद रहा और यहाँ अन्यत्र कही प्रोग्राम न हुआ तो श्री अवध जाने का विचार है । आगे श्री प्रभु की मर्जी । सभी प्रेमियों को जय श्री राम । श्री रामशरण, श्री रामसागर सुखपूर्वक पहुँच गये होगें । इसबार मैं कुछ ऐसी दौड़धाम में था कि उन लोगों का सन्मान सत्कार मुझसे कुछ भी नही बन पाया । यहाँ तक कि चलते समय कुछ बात चीत करने की थी वह भी नही हो सकी तो वे लोग मिले तो कहना कि मेरे दिल में उन लोगों के प्रति कुछ भी दूसरा भाव नहीं है । पहले से तुम लोगों के आने की सूचना न होने से और दूसरा प्रोग्राम पहले से तैयार हो जाने के कारण ही सब अस्त व्यस्त स्थिति हो गई । फिर भी मेरे दिल में कुछ दुख तो है ही कि वे इतने दूर से मुझसे मिलने आये और मै शान्ति से, प्रेम से उन लोगों से कुछ बातचीत भी नहीं कर सका । गुजराती भाई हरिहर शुक्ल भी पीछे बड़ौदा आये, इसकी भी मुझे कुछ खबर नहीं थी । उन्होंने मिलने पर कहा कि मैंने उन लोगों के सीट की व्यवस्था करा दी थी । वे भी अब वहाँ पहुच गये होगें । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल ! पोरबंदर

आशीर्वाद ! दिनांक २३-२-६६

तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । बैजनाथजी तुम्हारे पिता का भी पत्र साथ ही साथ मिला उसमें श्री स्वामी १०८ श्री भजनानन्दजी महाराज

द्वारा आयोजित किसी साधु सम्मेलन का जिक्र किया है तो उनसे कह देना कि इस समय मेरा उस तरफ आना शक्य नहीं है कारण कई जगहों में अखंड का निर्णय पहले से ही चुका है। अपना तो साधु सम्मेलन हो कि कोई भी सम्मेलन हो एक ही दृढ़ निश्चय हो चुका है कि जो कुछ अभी तक मेरे जीवन में हुआ है या आगे जो कुछ होगा, वह सब सीर्फ श्री नाम महाराज के प्रताप से ही हुआ है या आगे होगा भी **"लोक परलोक रघुनाथ ही के हाथ सब भारी है भरोसो तुलसी को एक नाम को ।"** अब तो जीवन की घड़िया भी पल-पल में क्षीड़ ही होती जा रही है बने उतना रामनाम लेना है, सम्मेलन से अपना क्या होने वाला है । मैं तो जहाँ भी देखता हूँ वहाँ अेक ही अनुभव होता है । **कहता तो बहुत मिला गहता मिला न कोय, सो कहता वहि जान दो जो नही गहता होए"** गिरिधारी को मेरा समाचार देना और कहना कि उसकी भेजी हुई पार्सल मिल गई और सब आनन्द है । अखंड का प्रवाह भी अस्खलित चल रहा है । सभी प्रेमियों को मेरा यथायोग्य कहना । अभी तो ऐसा ही हो रहा है कि रात्रि को गाँवो से आता हूँ और फिर सुबह को जाता हूँ जितना कम करना चाहता हूँ उतनी ही प्रवृत्ति बढ़ती ही जा रही है । श्री पूज्य गुरुदेव एवं श्री प्रभु की महती कृपा है, नहीं तो मेरे जैसा पामर प्राणी ऐसे कराल कलिकाल में कहाँ से श्री प्रभु नाम ले सके ? बस ! खूबनाम रटन, चिन्तन, स्मरण करो सुखी बनों बनाओं । **कर लिया सो काम भज लिया सो राम नही तो सब रहेगा ठाम ठाम ।** दि. २०-२-६६ से अहमदाबाद में प्रोग्राम था किन्तु वहाँ के मंदिर में एक व्यक्ति ही मृत्यु होजाने से तत्कालिक बंद रहा १३-३-६६ से प्रोग्राम गया है । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका, तथा अन्य प्रेमीजन !

महुवा

आशीर्वाद ! दिनांक २४-४-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । एक पत्र मैने पहले महुवा से भेजा था जिसमें सभी जिक्र कर दिया था कि इस बार श्री गुरुपूर्णिमा तथा श्री गुरु महाराज की तिथि का उत्सव वहाँ होना सम्भव नहीं है । कारण कि बिहार की ओर आने पर समय बहुत लग जाएगा और द्वारका श्री संकीर्तन मंदिर का काम सब बिखर जाएगा । यद्यपि मैं कुछ करता नही हूँ फिर भी हाजिरी की नितान्त आवश्यकता है । दो तीन महीनें जब द्वारका में मेरी हाजिरी होगी, तभी कार्तिक तक काम पूरा होगा। अतः इसबार तो दोनों उत्सवों का आग्रह बिलकुल छोड ही दो, नहीं तो न इधर का काम होगा न उधर का । बिहार में आने पर थोड़ा ही ऐसा होगा कि मुजफ्फारपुर से उत्सव पूरा करके आ जाऊगा । इधर आने पर तो गाँवो गाँवो में भी जाना पड़ेगा । साथ ही साथ यह भी है कि तुरत ही आना और फिर ज़ाना भी नहीं हो सकता । विनोद के नाम से मनीओर्डर व्यर्थ ही भेजा है अभी तो कोई निश्चय तो था नहीं फिर इतनी जल्दी पैसा भेजने की क्या जरुरत थी । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल !

पोरबंदर

आशीर्वाद ! दिनांक २-७-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

हुआ शरीर का भोग सबको भोगना ही पड़ता है बड़े बड़े भक्तो संतो को भी कभी कभी ऐसा भंयकर दुःसाध्य रोग दीखने में आता है कि बुद्धि भ्रमित हो जाती है। किन्तु शास्त्र संत इसका भी यहीं समाधान करते है कि दुख सुख अपने पूर्व कृत कर्मो का ही परिपाक होता है । सबको स्वयं ही भोग कर पार उतरना होता है । हाँ ! इतना अवश्य है कि भगवान की भक्ति, उनके चिन्तन, स्मरण, नाम रटन से दुख की भंयकरता एवं अवधि जरुर कम हो जाती है । असह्य दुख होने परभी श्री प्रभु भजन से, उनकी कृपा से सहन करने की शक्ति प्राप्त हो जाती है । बस ! अपने पास तो एक ही अमोघ औषधि है श्री भगवन्नाम जो जन्म मृत्यु दोनों को सुधारती है। बस ! आत्म कल्याण कांक्षी को उन्ही का दृढ़ आश्रय हर हालत में लिये ही रहना चाहिए । श्री गुरुपूर्णिमा तथा संकीर्तन भवन छठा वार्षिकोत्सव इस बार पोरबंदर में ही रखा गया है । पुज्यपाद श्री गुरुदेव महाराज की तिथि का उत्सव अभी तक वृंदावन करने का था किन्तु श्री द्वारका धाम के संकीर्तन मंदिर का काम अभी अधूरा होने से और पुनः उसके उद्‌घाटन के समय भी खर्च की आवश्यकता होने के कारण इसबार वहाँ का प्रोग्राम बंद रख गया । अभी तक तो महुवा वालो का अति आग्रह है और चैत्र मास के एकमास अखंड की पूर्णाहुति के समय उनलोगो ने जाहिर भी कर दिया था कि महाराज की तिथि का उत्सव यही रखा जाएगा । अभी भी वे लोग तो बिलकुल तैयार ही हैं किन्तु सबका विचार हुआ कि श्री गुरुपूर्णिमा के अवसर पर जब सभी लोग अेकत्रित होगें उसी समय निश्चय किया जाएगा । सबी प्रेमियो को जयश्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद सह श्री राम जय राम जय जय राम !

महुवा

दिनांक २९-३-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ। द्वारका संकीर्तन मंदिर का गुरुपूर्णिमा या श्री गुरुतिथि तक पूरा होने की संभावना नहीं लगती है। काम चालू है । अतः इन दोनों उत्सवों की संभावना तो द्वारका में नहीं है। अन्य कहाँ होवे, उसकी अभी तक निश्चय नहीं हैं । और सब आनन्द है । गिरिधारी का भेजा अखंड का प्रसाद मिल गया था । यहाँ एक मास का अखंड है । आधा वैशाष तक। सभी प्रेमियो को मेरा श्री राम जय राम जय जय राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल !

जामनगर

आशीर्वाद !

दिनांक १२-११-६४

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । आशा है तुम लोग भी आनन्द प्रसन्न होगे। बहुत दिनों से पत्र लिखने का अवकाश नहीं मिला, कारण रोज रोज नई नई जगहों में आना जाना होता था । अभी लगभग देढ़ मास से थोड़ी स्थिरता है, नवरात्रि में १५दिवस बेटद्वारका प्रेम कुटीर में अनुष्ठान किया, बाद में द्वारका होकर जामनगर आ गया हूँ । यहाँ लगभग १०३ दिवस से अखंड

चल रहा है । योही भागवत् कृपा से चल रहा है । पहले जैसा उत्साह उमंग नहीं है फिर भी चल रहा है । तालाब के किनारे एक श्री हनुमानजी का नया मंदिर बना है उसी में कुछ बाहर के नये लोगों के सहयोग और अपने मंडल के प्रेमियों के सहयोग से अखंड चल रहा है । हाईड्रोशील तो ज्यों का त्यों है उसमें कुछ घट बढ़ नहीं है । किन्तु एकादशी के पहले जो बुरबार आ जाता था वह श्री संतजी की दवा से छुट सा गया था । किन्तु शरदपूर्णिमा से फिर वही शिकायत हो गई है । बाजा में उस दिन कुछ चिकनापन सा आ जाता है और फिर सुस्ती, बुरबार, सिरमें दर्द हो जाता है और २४ घन्टे पीछे फिर ठीक हो जाता है । अभी तो गुजरात में भी प्रचार शुरु हो गया है । श्री गुरुदेव की तिथि डाकोर में बड़े बड़े धूमधाम से हुई । दिसम्बर में फिर अहमदाबाद में ९ दिवस का प्रोग्राम है । श्री रामचन्द्रजी के मंदिर में हाजा पटेल की पोल, रीलीफ रोड़ उपर । विशेष श्री प्रभु कृपा । सभी प्रेमियो को मेरा जयश्री राम । पत्रोत्तर जोशी आर्ट स्टूडियो के पते पर भेजना ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

द्वारकाधाम

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल!

जय श्री राम !

दिनांक २८-१०-६६

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ। अभी तो मैं भावनगर, महुवा, तलाजा तरफ था। कल्ह यहाँ दर्शन के लिये आया था। आज फिर सोमनाथ, प्रभास, वेरावल जा रहा हूँ । दीपावली पीछे फिर बड़ौदा, भरुच तरफ प्रोग्राम है । अभी तो न मालूम श्री गुरुमहाराज की कृपा है कि ज्यों ज्यों समय बिगड़ता जा रहा है त्यों त्यों श्री नाम प्रचार

भी बढ़ता ही जा रहा है और वह भी वगैर प्रयास ही। शुक्ल को महुवा से तार भेजा था। इसबार श्री गुरुमहाराज की तिथि पर विलक्षण आनन्द हुआ। आशा है तुम लोग आनन्द पूर्वक होगे। सभी प्रेमियों को गिरिधारी, रामशरण गुप्ता, पोस्ट आफिस के सभी प्रेमियों तथा अन्य सभी प्रेमीजनों को मेरा यथायोग्य सह जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा । स्वास्थ्य मेरा बिलकुल ठीक है ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल ! राणीप, साबरमती,

अहमदाबाद

आशीर्वाद ! दिनांक १७-१-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। तुम्हारा पत्र मिला समाचार मालूम हुआ। मुजफ्फारपुर में अखंड की पूर्णाहुति की तिथि बढ़ा दी गई । यह श्री प्रभु की परमकृपा तथा तुम लोगों के सच्ची भावना निष्ठा का ही फल है। यहाँ यू.पी. के भइया लोगो की ओर से अखंड बहुत ही सुन्दर ढंग से चल रहा है। अन्य स्थलों में भी श्री नाम महाराज के प्रताप प्रभाव से प्रचार प्रसार बढ़ता ही जा रहा है । दो स्थलो में पोरबंदर तथा जामनगर में तो अखंड स्थायीरुप से चल रहा है । श्री द्वारकाधाम में अभी तो जब तक श्री संकीर्तन मंदिर तैयार न हो जाए तब तक के लिए अखंड प्रारम्भ हुआ है, बाद मंदिर तैयार हो जाने पर स्थायीरुप से यहाँ भी श्री प्रभु कृपा होगी तो अखंड हो जाएगा । कल्ह भोला माणिकराम शेठ अहमदाबाद बाला के साथ आया था। मेरा स्वास्थ्य ठीक है। हाईड्रोशील की भी कोई तकलीफ नहीं है। कभी कभी अति ठंडक की वजह

निश्चय नहीं, कारण उसी समय में गुजरात में कई जगह प्रोग्राम है। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। तुम्हारा दि. २७-२-६८ का पत्र आज द्वारका आने पर मिला। समाचार मालूम हुआ। श्री अखंड का चलाना मेरे हाथ की बात नहीं है यह तो एक मात्र श्री प्रभु की कृपा प्रेरणा एवं श्री हनुमंतलालजी के अखंड सहायता पर ही निर्भर है । अगर तुम लोगों की सच्ची निष्ठा श्रद्धा लगन है तो भगवान क्यों नहीं सहायता करेगें ? अपनी श्रद्धा, निष्ठा परिपक्व होनी चाहिए । यहाँ संकीर्तन मंदिर बन रहा है, जो लगभग श्री गुरुपूर्णिमा तक तैयार हो जाएगा, ऐसी अभी तक आशा है आगे श्री प्रभु इच्छा। अतः इसबार श्री गुरुपूर्णिमा तथा श्री गुरुतिथि दोनों का महोत्सव यही करने का सभी लोगो का विचार है और उचित भी है । अतः इसबार तो इन उत्सवों की वहाँ होने की सम्भावना नही है। मै तो अभी यंत्र तंत्र गुजरात में ही फिर रहा हूँ दो दिनो के लिए यहाँ आया हूँ। फिर होली के बाद धोलका, महुवा, महेसाना अहमदाबाद वगैरह कई जगहो का प्रोग्राम है। सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम कहना । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

से थोड़ी तकलीफ बढ़ जाती है। और एक दो दिन में आपही आप ठीक हो जाता है। अब यहाँ से बड़ौदा, पालेज, धोलका वगैरह का प्रोग्राम है । अर्धाचैत्र और आधावैशाख १ मास का अखंड महुवा में है सभी प्रेमियों को मेरा यथायोग्य सह श्री राम जय राम जय जय राम। शशीकान्त आया था फिर खट पट करके चला गया उसको अहंभाव बहुत है जिस कारण से कही भी टीक नहीं सकता। मान बड़ाई की भूख खूब है विशेष श्री प्रभु कृपा ।

नोट : २८-१-६८ को यहाँ नगर कीर्तन है और २९-१-६८ को ४० दिवस के अखंड की पूर्णाहूति है।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल ! द्वारका

आशीर्वाद ! दिनांक २७-११-६४

पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । श्री प्रभु की लीला विचित्र है, वे जब जैसा चाहते हैं वैसा ही होता है और होता भी है मनुष्य के अपने पूर्व कर्मो के फलानुसार ही है । इसी का नाम दुनिया भी है जो हंमेसा दो रंग में ही रहती है । कभी हर्ष कभी विषाद, कभी हानि कभी लाभ, कभी जन्म कभी भरण यही चक्र सदा चलता रहता है । इस चक्र की धूरी के कील के सहारे जो जीव रहता है वह स्थिर रहता है. अन्यथा उपर नीचे तो जाना आना ही पड़ता है । बस ! श्री प्रभु का दृढ आश्रय बनाये रखो ? सभी प्रेमियो को जय श्री राम । गिरिधारी को मेरा जय श्री राम कहना और कहना कि उसकी भेजी हुई दवा और छठका प्रसाद यथासमय आ गया है । अभी मेरी

तबियत ठीक है । विशेष जरुरत समझी जायेगी तो तुम्हारी सम्मति को मान दियाजाएगा । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा जगदीश बाबू !

जय श्रीराम !

आपका पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । कार्तिक मास में गतवर्ष जैसा अेक मास का अखंड "जपयज्ञ" करने का जो पवित्र संकल्प है वह अति उत्तम है । इस कराल कलिकाल में जीव मात्र के कल्याणा का सुख शान्ति का कोई भी साधन या उपाय है तो वह अेकमात्र **श्री प्रभु का नाम ही ह** ऐसा सभी सत्शास्त्र एवं संत कहते है किन्तु इस नाम का स्मरण करने कराने वाले बहुत थोड़े ही हैं । जो हैं उन्हें भी इसमें पूर्ण श्रद्धा निष्ठा नहीं है । थोड़े बहुत हैं ऐसे जो किसी कामना, बासना से प्रेरित होकर ही अेसा करते हैं फिर भी कोई हरक्कत नहीं । अधिकांश अेसे हैं जो न तो स्वंय नाम की महिमा गौरव समझते हैं न करते हैं या लेते हैं और न दूसरो को ही लेने देते ह । धनीमानी लोग तो दिखावा वाला यज्ञ, लेक्चर, प्रवचन वगैरह को ही महत्व देते हैं उनकी दृष्टि में तो नाम का कोई महत्व ही नहीं है किन्तु याद रखना अन्तिम समय जीवनभर का रटन, स्मरण, चिन्तन किया हुआ नाम ही काम आयेगा । अतः नामस्मरणरुपी जपयज्ञ तो सभी यज्ञों, सत्कर्मो में सर्व श्रेष्ठ है प्राणीमात्र के लिए कल्याणकारी साधन है और यही साध्य भी है। मेरी उपस्थिति का कोई

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल ! बम्बई

आशीर्वाद ! दिनांक २-८-६७

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ। गिरिधारी अब शायद वहाँ पहुँच गया होगा । उसके द्वारा वहाँ के अखंड की कठिनाईओ के विषय में सुना कि लोगों की संख्या बहुत कम रहती है यह तो समय का प्रभाव है । भजन सभी को भार लगता है । जैसा समय वैसा काम करना चाहिए। जगदीशबाबू आटा मैदावाला मिला था, तुम लोग उसकी जितनी प्रशंसा लिखते थे वैसा तो मुझे कुछ लगा नहीं फिर भी मैने उसका बड़ा सत्कार किया किन्तु उसने यहाँ से जाने के बाद अेक पत्र भी नहीं भेजा। जब तक प्रेमपूर्वक अखंड चले तब तक चलना । पच पचकर परिश्रम करने की कोई आवश्यकता नहीं । अपने कल्याण के लिए अपना भजन करना चाहिए। मेरा अभी उस ओर तत्कालिक आना सम्भव नहीं है क्योकि द्वारका में संकीर्तन भवन की तैयारी लोग कर रहे हैं । श्री गुरुदेव की तिथि का निश्चय हो चुका है। अतः उसका अब स्थनान्तर सम्भव नहीं है । **इस बार श्री महाराज जी की तिथि का उत्सव वेरावल(सोमनाथ) में है ।** इधर वृष्टि खूब हुई है। विशेष श्री प्रभु कृपा । सभी प्रेमियों को जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा बालगोपाल ! जोशी आर्ट,

आशीर्वाद ! जामनगरे

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ। जो कुछ होता है, वह सब प्रभु प्रेरणा कृपा द्वारा ही होता है और उसी में

सुख संतोष मानने में ही सच्चा सुख है। अभी कुछ दिनों से स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं है । चार पांच मास तक लगातार ठंडी में फिरने और गमन दौड़ाधाम करने से खाँसी की शिकायत हो गई है । अब लगभग ठीक हो गया है । श्री रामनवमी पर कई जगहों का प्रोग्राम था किन्तु सब बंद करके श्री रामनवमी का प्रोग्राम द्वारका में ही रखा है। सभी प्रेमियो को जय श्री राम। श्री द्वारकाधाम संकीर्तन मंदिर बड़ा ही भव्य एवं आकर्षक बन गया है अखंड भी खूब जोश से चल रहा है। अनायास ही प्रचार भी खूब हो रहा है। कारण कि जो भी द्वारका में दर्शनार्थ आता है वह अपने मंदिर आये बिना रहता नही विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका अन्य प्रेमी
टीक्कर

तथा बालगोपाल ! आशीर्वाद ! दिनांक २४-११-६७

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । श्री अखंड महायज्ञ का प्रवाह भी विभिन्न नई नई जगहों चालू ही है । इसी कारण रोज-रोज नई जगहो में कभी शहरों में तो कभी गावों में जाना पड़ता है। श्री पूज्यपाद गुरुदेव महाराज एवं श्री प्रभु की परम कृपा का ही फल है अन्यथा ऐसे भयंकर आसुरी वातावरण में कौन भगवन्नाम ले सकता है ? **श्री नाम महाराज सर्वसमर्थ हैं** उनके समाने कलि महाराज का कोई भी प्रभाव प्रताप नहीं चल सकता । जिसने **श्री रामनाम** महाराज का हृदयपूर्वक पूर्ण आश्रय ले लिया है, उसके लिए कही और कभी भी कोई चिन्ता की बात नहीं । अगर अचानक कोई चिन्ता का अवसर उपस्थित भी हो जावे तो व्यर्थ की चिन्ता न करके श्री प्रभु नाम का ही निरंतर चिन्तन करते रहना चाहिए। उनकी अहैतुकी अनुकम्पा से सब मंगल ही होता है ।

वास्तव में हम लोगों के लिये जब, जो कुछ भी होता है, वह सब हमारे कल्याण के लिये ही होता है । कारण कि श्री प्रभु सर्वज्ञ है और मंगलमय परम दयालु हैं । अतः उनका प्रत्येक विधान जीव के कल्याण के लिये ही होता है। यह बात दूसरी है कि जीव अपनी अल्पज्ञता जड़ता के कारण इस रहस्य को न समझ पावें और व्यर्थ की चिन्ता करके अकारण ही दुखी होता रहे। जब अपने करने से कुछ होनेवाला ही नहीं तो व्यर्थ क्यों चिन्ता करनी चाहिए. श्री प्रभु की आशा भरोसा रखते उनका सतत चिन्तन, स्मरण करते सदा सर्वदा, निर्भय निश्चित रहना चाहिए। प्रारब्ध का भोग भी सभी को भोगना ही पड़ता है। हाय हाय करके भोगने से भोग भयंकर बन जाता है हरि हरि करते वही भोग भोगने से कुछ दुख अनुभव नहीं होता बल्कि प्रभु के आश्रय भरोसे अनायास समय व्यतित हो जाता है। बस ! **श्री प्रभु नाम का रटन करते** अपना व्यवहार करते रहना। श्री प्रभु सर्व मंगल ही करते है । गिरिधारी का प्रयास और गोला पर के अखंड की बात सुनकर, जानकर अति आनन्द हुआ । कम से कम संस्कारी अधिकारी जीव तो श्री प्रभु नाम लेकर कृतार्थ होगे । दूसरे अभागे जीव लेवे या न लेवे। गिरिधारी, गुप्ता, रामशरण वगैरह सभी प्रेमियो को मेरा जयश्री राम। विशेष श्री प्रभु कृपा। ११-१२-६७ को श्री द्वारका धाम में श्री संकीर्तन मंदिर का शिलान्यास होने वाला है उसके बाद अहमदाबाद में साबरमती में १९-१२-६७ से ४० दिवस का अखंड है । संकीर्तन मंदिर का शुरु होने के पहले श्री द्वारका ब्रह्मपुरी में जब तक मंदिर तैयार हो तब तक के लिये पुनः अखंड प्रारम्भ होने वाला है और तैयार होने पर १३ मास का कम से कम अखंड रखने का लोगो का विचार है । और सब आनन्द है । मैने तो उससे कहा जब तक जहाँ तुम्हारी इच्छा हो खुशी से रहो, भजन करो । जवाब द्वारका या जामनगर भेजना ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय द्वारका तथा गिरधारी !

श्रीसुदामापुरी

आशीर्वाद !

दिनांक २-७-६४

तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ। इसबार यहाँ की पूर्णाहुति अभूतपूर्व हुई। तीन-दिन पहले से वर्षा की आगाही थी और आकाश में बादल और बिजली भी खूब हो रही थी, जिससे सभी प्रेमी निराश होने लगे थे कि इसबार अखंड की पूर्णाहुति में आनन्द नहीं रहेगा। वर्षा हो जाने पर बाहर का मंडप वगैरह बिगड़ जाएगा । किन्तु **श्री नाम महाराज** की महिमा तो कुछ विलक्षण ही है और इस कराल कलिकाल में भी श्रद्धावानो तथा निष्ठावान भक्तो के लिये प्रत्यक्ष ही है। अेक ओर उत्सव की सभी तैयारीयाँ, दूसरी और खेडुतो (किसानों का वर्षा के लिये हाहाकार किन्तु श्री प्रभु की अहैतु अनुकम्पा ने दोनों का समाधान विलक्षणरुप से कर दिया। अपना सर्व कार्यक्रम पूरा हुआ और आकाश से मानो वर्षा टूट पड़ी । प्रातःकाल होते, संकीर्तनभवन के सामने जहाँ बहुत बड़ा पंडाल लगा था घुटने-घुटने से भी अधिक जल का प्रवाह चलने लगा । गावो से आये हुए किसान लोग आनन्द विभोर होकर नाचने लगे और नागरिकों तथा ग्रामीणों के मुख से सर्वत्र यही निकलने लगा कि सीर्फ अखंड की पूर्णाहुति की ही वर्षा इन्तजार कर रही थी। सालभर से जो यहाँ के निवासी पानी के लिए तड़फ रहे थे वे इस समय निहाल बन गये हैं । इस **नाम महाराज** की कृपा से गावों के लोगों में नाम निष्ठा खूब ही बढ़ गई है। इसके फलस्वरुप रतनपुर ग्राम में आगामी शनिवार ४-७-६४ से दो मास का अखंड प्रारम्भ होने जा रहा है। गुरुपूर्णिमा कहाँ होगी इसका अभी पूरा निर्णय नहीं हुआ है । द्वारका में होनेवाली थी किन्तु उम्मीद है कि द्वारका में न होकर जामनगर में होगी । इन्ही किन्ही दो जगहों में से अेक जगह में होगी। संतजी की अवशेष दवा पुनः ले रहा हूँ किन्तु अंडकोष के बढ़े हुए भाग में कभी कभी अभी भी

दर्द होता रहता है। पहले सीर्फ दाहिने भाग में था अब बाये भाग में भी सूजन तो ज्यादा नही है किन्तु नशे मोटी हो गई हैं और दर्द हो जाया करता है । मेरा ऐसा अंदाजा है कि जब कुछ कब जियात या वायु का विकार बढ़ जाता है उस समय में ही यह दर्द शुरु होता है और फिर घट जाता है । बैकुन्ठ बिहारी के घर पर यहां आने के समय एक लहरिया सराय के अच्छे डाक्टर ने देखा था उसने कहा था हाईड्रोशील है - दाहिने भाग में असर था ही, उसने कहा था कि बाये भाग में भी शुरु हो रहा है उस समय तो कुछ पता नहीं चला किन्तु अब बाये भाग की नशो को देखने से ऐसा अन्दाज होता है कि उसमें भी कुछ विकार हो रहा है बीच में काफी अच्छा हो गया था किन्तु बिते हुए ग्रहण के दिन से कुछ विकृति फिर हो गई है। यह सब समाचार संतजी को कहना और यह भी कहना कि फाइलेरिया का जो दर्द था और हर एकादशी को जो हमला होता था वह उनकी दवा से मिट गई। अब सीर्फ यही हाईड्रोसील की तकलीफ है । बढ़ा तो नही है । किन्तु जितना बढ़ गया है उससे कम नहीं होता है और कभी कभी दर्द भी मामूली होता है । इसके अलावा बायें भाग में अभी सूजन तो नहीं हुआ है किन्तु दर्द होता है और सब अच्छा है मुझे रोग से कोई खास परेशानी नहीं है । लेकिन रोग का शरुआत में ही उपचार करना अधिक श्रेयस्कर है इस विचार से और संतजी ऐसे भावुक भक्त, सेवानिष्ठ अनुभवसिद्ध परम प्रेमी चिकित्सक मिल गये है । इसी कारण तुझे और उन्हे भी कष्ट दिया करता हूँ। रोग तो भोग पूरा होने पर स्वंय भी निवृत्त हो जाएगा । या जैसा होना होगा वैसा होगा किन्तु इसी नाते श्री संतजी का तथा तुम लोगों का भी स्मरण विशेष हुआ करता है न जाने श्री प्रभु किससे किस निमित्त से एक दूसरे का सम्बन्ध कराते है। सभी प्रेमियो को जय श्री राम विशेष श्री प्रभु कृपा। श्रावण मास में शायद अहमदाबाद में अेक मास का अखंड होवे। होना तो निश्चित ही था किन्तु वहाँ के परम भावुक भक्त श्री रसिक महाराज जो हमारे बड़े प्रेमी और भगवन्नाम

प्रचारक थे अचानक दैवयोग से २४-६-६४ को लकवा रोग के शिकार बन गये है. जिस कारण यहाँ के आनेवाले अमुक भक्त अपने उत्सव में पोरबंदर भी नही जा सके और यहाँ के प्रोग्राम में भी कुछ शीथिलता सी आ गई है। देवकुली का जैसा प्रोग्राम पूर्णाहुति के समय हुआ। ठीक वैसे ही यहांभी प्रकृति माता ने पूर्ण साथ तथा अनुकुलता प्रदान कर यहाँ के अखंड यज्ञ को सम्पन्न तथा सुशोभित बनाया एवं श्री प्रभु नाम का प्रताप प्रभाव का भी लोगों को प्रत्यक्ष अनुभव कराया । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय विनोद तथा बालगोपाल ! नूतननगर, सौराष्ट्र महुवा

आशीर्वाद ! दिनांक २-२-६९

श्री प्रभु कृपासे सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । श्री संकीर्तन मंदिर के उद्‌घाटन में अपूर्व आनन्द आया । मंदिर भी बड़ा भव्य बन गया है जो द्वारकाधाम के बिलकुल अनुरुप हैं । मेरा स्वास्थ्य अहमदाबाद जैसा खराब तो नहीं है किन्तु बिलकुल स्वस्थ भी नहीं है । खासी तो बिल्कुल मिट गई हैं किन्तु संध्या समय तथा अर्धरात्रि के समय ठंडी बढ़ने पर थोड़ी सूखी खासी आती है क्योंकि कांकड़ों का सूजन अभी बिलकुल मिटा नहीं है । डॉक्टर का कहना हैं कि गले में अति ठंडी लग गई है । काम तो सब चालू ही है । यह तो शरीर का धर्म ही हैं बनना-बिगड़ना । इसके लिए क्या चिन्ता । अवधि पूरी होगी आप ही आप मिट जाएगा । इसके लिये किसी प्रकार कीचिन्ता न करना । होलीतक यही हूँ अगर इस बीच में मौका मिले तो एक बार श्री संकीर्तन मंदिर का तथा द्वारकाधीश का दर्शन कर जाना । तुम्हारा तो एक पंथ दो काज । ओखा का भी काम होगा और भगवान का

दर्शन, गोमती समुन्द्र स्थान । अभी साबरमती राणीप श्री हनुमानजी के मंदिर में कमलाशंकर मिश्र तथा उनके साथी लोग, जिन लोगो ने ४० दिवस अखंड किया था वही पर चैत्र नवरात्रि में अनिश्चित समय के लिये अखंड प्रारम्भ करने वाले है । अतः वहाँ प्रारम्भ कराने के लिये जाना एसा उन लोगो का अति आग्रह है उनके यहाँ अखंड चैत्र शुक्ल ४ दिवस शनिवार ता २२-३-६९ रात्रि ८ बजे से प्रारम्भ होगा, ऐसी उन लोगों की सूचना आई हैं । साथ ही श्री अयोध्या जी से मेरे मित्र साधु का अति आग्रहपूर्ण पत्र आया हैं कि श्री रामनवमी को इस बार अवश्यमेव श्री अयोध्याजी आवे, कारण वहाँ गये वर्षो हो गया हैं । अब जैसी श्री प्रभु की इच्छा । अभी तो समय हैं समय आने पर देख जाएगा । रसिकभाई, मधानी साहेब (बटु) भगवान भाई, प्रविण, रमेशभाई चारों बालको अपने माता पिता परिवार के तथा अन्य सभी प्रेमीजनों को मेरा श्री राम जय राम जय जय राम । विशेष श्री प्रभु कृपा । भजन खुब करना यहीं लोक परलोक का सच्चा साथी है हितेच्छी है जगत संबन्ध तो स्वार्थ में और चंदरोजा है न किसी के साथ कुछ आया है और न कुछ जाएगा मुठ्ठी बांध कर आया है हाथ पसात कर जाएगा । अेक मात्र अपना लिया हुआ नाम और किया हुआ सत्कर्म ही साथ जाएगा **“अमंगल हारी, उमा सहित जेहि जपत** पुरारी ।”

हितेच्छु

प्रेमभिक्ष

॥ श्री राम ॥

“श्री राम जय राम जय जय राम”

महुवा

प्रिय विनोद तथा बालगोपाल !

दिनांक ९-२-६९

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द हैं । यहाँ मेरी हाजिरी होने से अखंड भी खूब उत्साह पूर्वक चल रहा है । काकड़ा अभी थोडा ही रह गया है यो तो

ठीक ही चला है तुम्हारी दया आने पर इसका भी उपयोग करेंगा । इसके लिये कोई चिन्ता नहीं करना शरीर तो रोग का घर ही है । जब तक स्वास्थ्य ठीक रहता है वही सीर्फ श्री प्रभु की कृपा ही समझनी चाहिए । इसी कारण तो संत तथा सत्शास्त्र सदा जीवों (मनुष्योंको) को सावधान किया करते है कि यह मानव शरीर यों तो बड़ा दुर्लभ है और अपने लक्ष्य-भगवत् प्राप्ति, मुक्ति को दिलाने वाला हैं किन्तु हैं क्षणभंगुर और नाशवान नहीं मालूम कब क्या हो जावे। अतः आलस्य, प्रमाद त्याग कर तथा उम्र की चिन्ता न कर, जबसे समझ आवे तभी से भगवत् भजन में लग जाना चाहिए और अपना जीवन जन्म सफल बना लेना चाहिए । भगवत् भजन, स्मरण के सिवाय इस जगत का अेक तिनका भी साथ जाने वाला नहीं है कारण कि-

राम नाम कलिकामतरु, सफल सुमंगल कंद ।
'तुलसी' करतल सिद्धि सब, पग पग परमान्द ॥
नाम लिया जिन सब लिया, सब शास्त्रन को भेद ।
नाम विना नरके गये, पढि सुनि चारो वेंद ॥
'कबीरा' सब जग निर्धना, धनवन्ता नहि कोए ।
धनवन्ता तेंहि जानिये, जाहि नाम धन होए ॥
धन यौवन यो जायगो, जा विधि उड़त कपूर ।
'नारायण' गोपाल भज, क्यों चाटत जग धूर ॥
'कबीरा' निर्भय राम जप, जब लगि दिये वाति ।
तेल घटा बाति बूझि, तो सोवेगा दिन राति ॥
सभी रसायन हम करि, नहि नाम सम कोए ।
रंचक घट में संचर, तो सब तन कंचन होए ॥

श्री चैत्र सुद १ से १५ के लिये आमंत्रण पत्र भी मीला हैं किन्तु अभी इसका निश्चय किस प्रकार करु जबकि राणीप में चैत्र सुद ४ रोज शनिवार

ता.२२-३-६९ से अनिश्चित समय तक के लिये कमला शंकर और उनके साथी अखंड प्रारम्भ करने वाले हैं और उसके लिये उनका पत्र तो पहले आ ही गया है । अब आमंत्रण पत्रिका भी आने ही वाली है । इसके अलावा द्धारका वाले यहाँ से बाहर जाने नहीं देना चाहते हैं। होली के बाद जैसी प्रभु इच्छा होगी वैसा होगा । उस समय भी ऐसा करना 'पड़ेगा कि तुम्हारे यहाँ चैत्र सुद १ से प्रारम्भ करके तीज को राणीप आउँ और वहाँ से रामनवमी के दिवस महुवा या उसके बाद पूर्णहुति तक महुवा रह कर फिर राणीप आऊँ एक सात दो-दो जगहो में एक उत्सहव किस प्रकार किया जाय। मघानी साहेब, रसिकभाई, भगवानभाई, प्रविण, भरत, जलाराम तथा सभी महुवा वासी प्रेमी जनों को मेरा सादर सस्नेह श्री राम जय राम जय जय राम । शेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय विनोद तथा बालगोपाल ! महुवा

आशीर्वाद ! दिनांक १२-७-६९

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द हैं, तुम्हारा पत्र मिला और अनुष्ठान रुम का नकशा भी मिला । गुरुपूर्णिमा के बाद अनुष्ठान का पूर्ण निश्चय होगा ।श्री द्धारका धीश हवेली तथा श्री पुरुषोत्तम भगवान के अन्नकट का प्रसाद श्री जयन्तीभाई के चीरंजीवी के साथ भेज रहा हूँ । अपने माता-पिता, सुरेश, हंसमुख, राजू तथा अन्य सबो को मेरा यथायोग्य सह श्री राम जय राम जय जय राम । १९-७-६९ से २७-७-६९ तक गांधीधाम में प्रोग्राम था किन्तु अभी बंद रखा है वहाँ से लेने आये थे फिरभी इन्कार कर दिया। गर्मी सख्त पडती हैं । रसिकभाई, घनश्याम, प्रविण, भगवान भाइ तथा अन्य सभीभक्त प्रेमियो को मेरा जय श्री राम। श्री महेता साहेब को भी मेरा यादी देना। सुरेन्द्र, भरत, जलाराम, शास्त्री रामा कोभी मेरा आशीर्वाद सह श्री राम जय राम जय जय

राम और प्रसाद देना । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय विनोद तथा बालगोपाल !

श्री द्वारका धाम,
श्री संकीर्तनमंदिर द्वारका
दिनांक २६-१०-६८

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द हैं । श्री द्वारका संकीर्तनमंदिर का उद्घाटन उत्सव बड़ा ही विलक्षण हुआ, अभूतपूर्व हुआ। बम्बई से तुम्हारा पत्र आया था, अति काम काज होने के कारण पत्रोत्तर नहीं दे सका । मै तो मानता हूं कि तुम्हारा आलस्य प्रमाद ही इस अलभ्य लाभ से तुझे वंचित रखा । शादी विवाह जन्म मरण तो नित्य होता ही रहता है और इसी प्रकार होता ही रहेगा लेकिन भगवत् भजन तथा सत्संग का लाभ तो अतिदूर्लभ है । किसी भाग्यशाली प्राणी को ही मिलता है विवाह में तो तुम्हारे परिवार के, घर के सभी लोग थे, क्या तुम्हारे उपस्थिति न रहने से विवाह नहीं हो सकता था ? यह सब भाग्यकी बात है । खैर ! जो भी हो श्री प्रभु इच्छा । मघानीसाहेब के साथ तुम्हारे लिये अन्नकुट तथा महोत्सव का भी प्रसाद भेजा है । सभी प्रेमियो को जयश्री राम। विशेष श्री प्रभु कृपा । होली तक तत्काल अभी यही ठहरने का विचार हैं ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

दहिसर बम्बई
दिनांक २०-५-६८

प्रिय विनोद प्रेमीजन तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्ह हैं । तुम्हारा सभी पत्र मिला । समाचार

मालूम हुआ । मैने टीकट विषय मे लिखा था, उसका खुलासा लिखा नहीं इतना अधिक पैसा तुम लोगों को क्यों खर्च करना चाहिए ? तुम्हारा पैसा जो प्रविण के पास था उसे कैसे वापिस भेजू ? वृन्दावन श्री गुरुतिथि के लिये सबका विचार हो रहा है किन्तु मेरा विचार नहीं होता कारण वहाँ पैसे का खर्च बहुत होगा और नाम प्रचार तो कुछ होनेवाला है नहीं । साथ ही द्रामका का संकीर्तन भवन अभी अधूरा ही पड़ा है । पूरा हो जाएगा तो फिर उसके उद्‌घाटन में खर्च होगा, तो इस समय बाहर जाकर बहुत खर्च करना उचित नहीं जचता । महुवा वालों की मनोवृत्ति लागणी देख कर लिखना कि क्या करना चाहिए । धोलका २५-५-६८ से ९-६-६८ तक प्रोग्राम है उसी के लिये २४-५-६८ को गुजरात मेल में अहमदाबाद जा रहा हूँ और वहाँ से सात दिवस धोलका । जाने का बिल्कुल विचार नहीं था किन्तु रसिकभगतजी का अति आग्रह के कारण जाना पड़ रहा हैं । विशेष श्री प्रभु कृपा । रसिकभाई, रमेशभाई, मघानीभाई, भगवानभाई, प्रविणभाई अपने मातापित वाल गोपाल सबको यथायोग्य ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय विनोद तथा बालगोपाल ! वीजापुर, जेठाभाई
अमथालाल बारोट, कचेरी के पीछे,
आशीर्वाद ! दिनांक ८-६-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा ३१-५-६८ का लिखा हुआ पत्र यहाँ वीजापुर में मिला । समाचार मालूम हुआ। प्रतापभाई का निधन(मृत्यु) का समाचार भी मिला । इसी का नाम जीवन है, उसके मन मे कितना-कितना अरमान भरा होगा- यह करना है वह करना है ऐसा करूँगा, वैसा करूँगा किन्तु सबके सब मन मे रह गया इसलिये तो शास्त्र और संत पहले से सचेत करते

रहते हैं कि भाई "कर लिया सो काम, भज लिया सो राम, नतो सब रहेगा ठामे ठाम याने सब कुछ यही की यही पड़ी रहेगी । खैर! कुछ दिनो से प्रतापभाई का मन रामभजन तरफ लग गया था यही उनके लिये सौभाग्य की बात हुई । काकूभाई ने २०० रुपैया तुम्हारे पास भेज दिया होगा । बिहारवाला पैसा आया हो तो अपने पास ही रखना, अगर वहाँ से कोई श्री गुरुपूर्णिमा पर आयेगा तो उसके द्वारा भेज दिया जाएगा या ड्राफ्ट द्वारा लिखने पर भेज देना । यहाँ शायद चार-पाँच दिवस और लग जाएगा । यहाँ से जामनगर द्वारका होकर पोरबंदर जाने का है । सभी प्रेमियों को, अपने मातापिता, बालकों को मेरा जय श्री राम। माला तथा उसके परिवार को मेरा यथायोग्य सह जय श्री राम, प्रतापभाई के बाल गोपाल दड़ी को मेरा आशीर्वाद तथा आदेश कहना कि खूब नाम स्मरण करे करावे जिससे प्रतापभाई के आत्मा को शान्ति मिले । देवदत्त है प्रविण २८-५-६८ को धोलकासे चला गया । आनन्द में हैं । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय विनोद तथा बालगोपाल ! पालेज प्रविण टी डीपो

आशीर्वाद ! दिनांक २४-११-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र मिला समाचार मालूम हुआ । तुम्हारा श्री भगवन्नाम में द्दढ़ विश्वास, पूर्ण निश्चय की बात पढ़कर अति प्रसन्नता हुई कि जिसके लिये मेरे हृदय में इतना स्नेह है वह कम से कम एक व्यक्ति तो ऐसा द्दढनाम निष्ठ निकला, और भी होगे ही लेकिन एक भी अनेकों में से निकला तो भी अपना परिश्रम और गली गलियों का भटकना सार्थक समझता हूँ जब कि शास्त्र संत सभी एक स्वर से पुकार-पुकार के कह

रहे हैं कि कलिकाल में एक हरिनाम-जय यज्ञ के सिवाय अन्य कोई, भी साधन सफल नहीं हो सकता और सीर्फ एक नाम रटन द्वारा ही यज्ञ, दान, तप, तीर्थ, व्रत, योग सबका फल प्राप्त हो जाता है तो न जाने यह अज्ञानी जड़ जीव ऐसे सुलभ, सरल, अमोघ साधन को छोडकर क्यो व्यर्थ ही जगह-जगह मारा-मारा फिर रहा है ? जिस पैसे के लिए रात दिन अनिति, अनाचार करता है हाय हाय करके इक्ठा करता है उसे न मालूम दंभियो के फंद में पड़कर क्यो पानी जैसे बहा देता है और उसी में अपनी कृतार्थता मानता है अपने को धन्य समझता है । उन्हें इस बात का बिल्कुल ख्याल ही नहीं है कि भगवान पैसे से नहीं खरीदा जा सकता, वह तो एक मात्र भजन और भजन के द्वारा प्राप्त शुद्ध अन्तःकरण की पुकार से ही प्राप्त होता है । बस ! खूब नाम जपो, सुखी सानन्द रहो । सभी प्रेमियों एवं चारों बालको को मेरा स्नेहपूर्वक श्री राम जय राम जय जय राम । सुरेन्द्र को पत्र लिखा हैं । मघानी, भगवान भाई, प्रविण, अरुण, रसिकभाई, रमेशभाई, अपने भाई बन्धु मातापिता, बालगोपाल सबको जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा । २९-११-६८ को तारकस भुवन अहमदाबाद रीलीफरोड जाऊँगा । विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय विनोद तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ। स्वास्थ्य तो बिलकुल ठीक तो नहीं है । दौडधाम करने तथा अति परिश्रम के कारण तीन-चार बार बुखार आ गया, जिससे कमजोरी बहुत मालूम पड़ती हैं

गले में उपर का लाडू अभी सूजा हुआ है किन्तु खांसी बिल्कुल मिट गई है। अभी तो दवा भी सभी छोड़ दी है श्री प्रभु कृपा से यह भी ठीक हो जाएगा। कहीं स्थिरता पूर्वक रहा जाए तो ही थोड़ा आराम मिले किन्तु जगह-जगह लोग प्रोग्राम बनाते ही रहते है यह भी श्री प्रभु कृपा ही है कि अस्वस्थ होने पर भी श्री प्रभु भजन कराना ही चाहते हैं नहीं तो सर्वज्ञ, सर्वसमर्थ होने से उसे सब कुछ मालूम ही है और सब कुछ करने में समर्थ भी हैं ही, फिरभी उसकी इच्छा हैं कि अस्वस्थ रहू तो – राजी हैं हम उसीमें, जिसमें तेरी रजा हैं।

या यूं भी वाह वाह हैं या त्यूं भी वाह-वाह हैं ॥

जिस भी हालत में रखे, भजन कराते रहे, नाम रटन चालू रखावे यही हार्दिक कामना, प्रार्थना, अभ्यर्थना। अपने माता-पिता, बालगोपाल तथा अन्य प्रेमीजनो को मेरा प्रेमपूर्वक श्री राम जय राम जय जय राम। माला तथा उसके घर वालों को कहना कि खूब भजन करेगें जिससे उन लोगों को तथा दिवंगत आत्मा को शान्ति मिले। इस संसार का यही नियम ही है कि जो आया है वह जाएगा अवश्य ही। जब तक अपना ऋणानुवन्ध एक दूसरे के साथ रहता है तभी तक सम्बन्ध, पूरा होते ही सब एक दूसरे से जुदा पड़ जाते है इसमें किसी का कोई बल पौरुष काम नहीं करता है, आगे पीछे सभी को जाना ही है अतः बहुत चिन्ता न करे। इसके बदले प्रभु चिन्तन करे जिससे शान्ति मिलेगी विशेष श्री प्रभु कृपा। वीज को यहाँ से सोमनाथ मेल से पोरबंदर जाने का विचार है जामजोध पुर तालुका रेल्वे स्टेशन से ६ मील पर पाटन गाँव है जहाँ पर श्री महाराज की पुरायतिथि का उत्सव रखा गया हैं स्टेशन पर वाहन की व्यवस्था रहेगी और स्वंयसेवक भी रहेगें। स्थान भी रमणीय हैं। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

|| श्री राम ||

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय विनोद तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। तुम्हारा पत्र जामनगर मिला था। मघानी साहेब के कथनानुसार कि विनोदभाई पत्र लिखेगा, अभी तक तुम्हारे पत्र का इन्तजार किया किन्तु तुम्हारा बाद कोई पत्र आया नहीं। तुम्हारे पू. पिता श्री रथयात्रा के एक दिन पूर्व मुझे द्वारका में मिले थे और प्रसाद लेकर ओखा गये और मेरे कहने पर पुनः रथयात्रोत्सव के दिन द्वारका आये और रथयात्रा के दिन उत्सव, भगवत् प्रसाद वगैरह का खूब लाभ लिया। दूसरे दिन वे ओखा गये और मैं पोरबन्दर आया। मैने कहा बार-बार खुद ही आते हो विनोद को क्यों नहीं आने देते ? जिस प्रकार तुम मुझे सदा याद करते हो उससे अधिक मै भी तुझे याद करता ही रहता हूँ। कारण प्रेम का स्वरुप ही यही हैं कि ज्यों-ज्यों हम एक दूसरे से दूर होते रहते हैं, त्यों-त्यों एक दूसरे का गुण क्रियाओं को याद कर स्मृति अधिक अधिक हुआ करती है। परमपूज्य श्री गुरुदेव महाराजकी तिथि उत्सव का पक्का निश्चय श्री गुरुपूर्णिमा पर करने का सबने नक्की किया है तो वहाँ का समाचार पूरा लिखना और गुरुपूर्णिमा पर जरुर आना। मघाणीसाहेब, रमेशभाई, रसिकभाई, भगवानभाई, प्रविणभाई, जयन्तीभाई, बाड़ीवाला, महेतासाहेब तथा अन्य सभी प्रेमीयों को मेरा जय श्री राम कहना। नाम रटो, रटाओ, सुखी बनो, सुखी बनाओ। श्री द्वारका संकीर्तन मंदिर लगभग तैयार होने को आ गया है। मागसर में उसका उद्घाटन होगा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय विनोद तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र आज मिला । सिहोर का भी कुछ समाचार मालूम हुआ । तुमने लिखा था कि वहाँ तो गाडरिआ प्रवाह जैसा था उन गाड़रो में तुम लोग भीतो शामिल हो नहीं तो वहाँ जाने की ही क्या आवश्यकता थी ? सच्चीबात तो यह है कि जब तक मनुष्य का कोई अेक निश्चय पक्का नहीं हो जाता है तब तक उसी तरह यहां वहाँ भटकते ही उसका अमूल्य जीवन यो ही नष्ट हो जाता है । न लोक बनता है न परलोक ही । दंभ, पारखंड, विज्ञापन, प्रोपगंडा का ही यह युग है नहीं तो एक तरफ गुजरात, सौराष्ट्र, कच्छ, राजस्थान वगैरह स्थलों में दुष्काल का भयंकर प्रकोप हो रहा हैं । गोधन की भी बुरी नसीहत हो रही है । हजारों-हजारों मूक प्राणियों को घास और पानी के लिये हिजरत कराया जा रहा है । (एक जगह से दूसरी जगह प्राण बचाने के लिये भेजा जा रहा है ।) अेसे समय में किस विवेकी मानव को इस तरह की अन्न धन की बरबादी पसंद होगी ? किन्तु किया क्या जाए ? धर्म के नाम पर ही सव धतिंग हो रहा हैं और तुम लोगो जैसे पठित मूर्ख आँखवाले अंधे विवेक हीन व्यक्तिभी ऐसे कर्मो में समझ बूझकर भी तन, धन, अन्न की आहुति दे रहे हैं तो भले दे-परिणाम तो समझते ही हैं - प्रत्यक्ष ही है । अगर इतने व्यक्ति एक साथ मिलकर भगवान का नाम लेते- जपयज्ञ करते जो सभी प्रकार के यज्ञो से सर्वश्रेष्ठ माना गया है तो प्रत्यक्ष में भी कितना प्रभाव होता किन्तु युगधर्म से बचाना बड़ा कठिन है अगर सबके सब नाम परायण हो जावे और कलियुग में सत्यवादी, नीतिवादी, संयमी, सदाचारी, सत्कर्मी हो जावे तो कलियुग का धर्म व्यापेगा किसे ? और कैसे दुखी, दरिद्र, दीन बनेगा ? मैने तो श्री गुरुमहाराज के तिथि के अवसर पर ही तुम लोगो का सब संस्कार विचार देख लिया कि रात दिवस जिस जप यज्ञ द्वारा वहाँ

का वातावरण इतना विशुद्ध, पावन बनाया गया कि धनी मानी मुर्ख पंडित, बालवृद्ध नरनारी सब मान शान भूलकर श्री भगवन्ना के प्रभाव प्रताप से प्रभावित हो गलियो में पागल की तरह नाचने लगे और ठीक दूसरे ही दिन से उसी हास्यरस की बातो तालियाँ बजा बजा कर सारी पवित्रता गंभिरता, विशुद्धता को ध्वंस करने में ही आनन्द मनाने लगे और मस्त बन गये। कभी कीचड़ से कीचड़ धूल सकता है ? (गारा से गारा साफ हो सकता हैं) जो स्वयं बंधा हुआ है - वह क्या कभी किसी को मुक्त कर सकता है ? बात तो सच्ची यही है कि सभी को मान, बड़ाई, कीर्ति की भूख लगी हैं लेकिन याद रखना कि इस संसार की झूठी मान बड़ाई से कभी भी अपना या संसार का कुछ भला होने वाला नहीं हैं। जो कुछ भी करना हो उसका अेक वक्त निश्चय करके उसी में द्दढता से लग जाओ और लगे रहो।

एक ही साधे सब सधे, सब साधे सब जाए ।
जो तूँ सीचे भूल को, तो फूले फलै अघाए ॥
एक ही साधन सब रिद्धि-सिद्धि साध रे ।
ग्रसे कलि रोग जोग संयम समाधि रे ॥
भलो जो है पोच जो है, दाहिनो जो वाम रे ।
अन्त रामनामहि सो सबहीं को काम रे ॥
रामनाम कलि काम तरु, सफल सुमंगल कंद ।
'तुलसी' कर तल सिद्धि सब, पग-पग परमान्द ॥

१७-११-६८ को यहाँ पूर्णाहुति करके उसी दिन सौराष्ट्र एक्सप्रेस से पालेज जाऊँगा। लगभग १० दिवस का प्रोग्राम है उसके बाद अहमदाबाद में दस पन्द्रह दिवस का अभी नक्की प्रोग्राम है। जलाराम का पत्र आया है सभी चारो बालको को मेरी यादी और श्री राम जय राम जय जय राम। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय विनोद तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द हैं । २५-८-६८ का लिखा हुआ तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ । जन्माष्मी श्री द्वारकाधाम में ही करने का था किन्तु पालेज वालें के अति आग्रह के कारण प्रोग्राम बदलना पड़ा, जैसी प्रभु मर्जी। ब्लड प्रेसर अब नहीं हैं ऐसा २० दिवस पहले शुक्ल साहब वैध जिनकी दवा लेता था उन्होने तपास कर कहा और उसी दिन से दवा भी बंद कर दी । कोई दूसरी तकलीफ नहीं है सीर्फ कमजोरी थोड़ी मालूम पड़ती है वह श्री प्रभु कृपा से दूर हो जाएगी । प्रोग्राम तो चालू ही है आज जामनगर कल्ह पोरबंदर, परसो द्वारका तो कहाँ से कमजोर दूर होवे? हर हप्ते आव-हवा बदलती रहती है । पोरबंदर में श्री गुरुतिथि का निश्चिय था किन्तु भोजनशाला मे अधिक खर्च लगजाने से और भोजा भगत के अति आग्रह के कारण इस बार तिथि का महोत्सव भोजा भगत के गाँव ढाक- पाटन में रखा गया है । वहाँ का द्दश्य नांगला से लाख गुणा सुन्दर है चारो और पहाड़ी श्रृंखला है और बीच में छोटा सा गाव है गत वर्ष वहाँ ९ दिवस का अखंड था उसी समय मन में संकल्प था कि एकबार श्री गुरु महाराज की तिथि गामड़े और जंगल में भी मनाया जाए तो बहुत अच्छा । वही हुआ। यह गांव जामजोधपुर तालुका रेलवे स्टेशन से ६मील दूर है ? आनेजाने का हर समय सुविधा है कारण वहाँ पत्थर का बड़ा खाम है जिससे खटारा रात दिन रेलवे स्टेशन सें चलता ही रहता है । इसके अलावा उत्सव के समय विशेष प्रबंध रखा जाएगा स्टेशन बैगन, कार जीव सबकी व्यवस्था रहेगी । ३१-८-६९ रविवार को १२॥ बजे की गाड़ी में पालेज के लिये खाना होकर १-९-६९ को १२॥ बजे पहुँचुंगा । वहाँ शाम से अखंड शुरु होगा । नवम को सबेरे पूर्णाहुति होगी

और उसी समय अहमदाबाद के लिये खाना होना पड़ेगा । क्योकि उसी दिन से वहाँ अखंड का प्रारम्भ है । अेकम को पूर्णाहुति होगी । बीज या तीज को पुनः पोरबंदर के लिये खाना होना पडेगा । उसके बाद शाहसाहेब बडोदा के लिये आग्रह कर रहे हैं किन्तु अभी तक तो पूर्ण निश्चय नहीं हुआ हैं । व उनके प्रोग्राम के बीच में नवरात्रि आ जाती हैं और नवरात्रि में नई जगह अखँड रखने का विचार नहीं होता है । अहमदाबाद वाले कोई प्रोग्राम अभी तक नहीं भेजा हैं कि **कहाँ अखंड रखेगा और कहाँ मेरा निवास रखेगा** । अगर तुम वहाँ आओ तो अनसूयाबेन के यहाँ रीलीफ रोड उपर या श्री रामजीमंदिर हाजा पटेल की पोल में तपास करना । वहाँ से पक्का पता मिल जाएगा । **श्री गुरुतिथि पर अनुष्ठान के लिये निर्णय करुँगा** । देवदत्त तो मेरे पास से भग गया देवा भगत साथ में है विशेष श्री प्रभु कृपा । सभी प्रमियो व चारो-पांचो बालको को मेरा जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय विनोद तथा बालगोपाल ! जामनगर

आशीर्वाद ! दिनांक १५-८-६९

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । माउन्ट आबू का लिखा पत्र मिला था और आज महुवा का भी पत्र मिला है । समाचार मालूम हुआ आनन्दपूर्वक यात्रा कर आये यह प्रभु की परम कृपा । पूजनीया माताजी पोरबंदर, सोमनाथ, वेरावल, प्राची, जूनागढ़, दामोदर कुंड भी यात्रा कर ११-८-६९ को घर के लिये प्रस्थान कर गई । मैं और रामजी, जयन्ती, मनसुख सभी जगहों में साथ ही साथ रहा । जामनगर से दिल्ली का रीजर्वेशन मिल गया था, बड़े आनन्द से सब लोग गये । शुक्ल साहेब वैध जो मेरा इलाज करते थे जामनगर आने

पर कहा कि आप को अब कोई बिमारी नही है । उन्होने अभी तक छिपाया था किन्तु जब ठीक हो गया तो कहा कि Blood Presser का ही भयंकर असर था । खमार डोक्टर साहेब का निदान बिलकुल सच्चा था । अभी स्वास्थ्य ठीक हैं फिरभी अभी १५ दिवस तक दवा चालू रखने के लिये शुक्ल वैध कहते हैं । खमार साहेब के निदान वाला कागज देवदत्त के साथ चला गया । यहाँ के राम धुन मंडल वाले तुम लोगो की खूब याद करते हैं । जगुभाई यहाँ आया था । यहाँ से रविवार या सोमवार को पोरबंदर जाऊँगा, क्योकि रामजी के भोजनवाला का वास्तु मुहूर्त गुरुवार (गृह प्रवेश मुहूर्त) ता.२१-८-६९ को है उसके बाद जन्माष्टमी तक द्वारका रहने का विचार है नवम से अहमदाबाद का प्रोग्राम है किन्तु अभी तक पुनः कोई समाचार नहीं आया है और सब आनन्द है । अपने माता पिता, भाईयों एवं बाल गोपाल सभी को मेरायथा योग्य । अपने सभी प्रेमियो तथा सुरेन्द्र, भरत, शास्त्री, जलाराम सबको यथायोग्य सह आशीर्वाद । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय विनोद विष्णुभाई तथा — श्री संकीर्तन मंदिर, पोरबंदर
समस्त भगवनन्नामानुरागी प्रेमीजन ! — दिनांक १४-३-७०

आशीर्वाद ! सह जय श्री राम

श्री प्रभु कृपासे सब आनन्द है । तुम लोगो से विदा लेकर सुख पूर्वक यहाँ पहुँच गया हूँ । १२॥ बजे श्री ठाकुरजी का सिहांसन का भी स्थानन्तर महोत्सव बड़े आनन्द के साथ सपन्न हो गया । तुम लोगो की भक्ति भाव, श्रद्धा निष्ठा, सेवापरायणता की जभी स्मृति होती हैं तभी हृदय में एक विलक्षणा आन्दोलन पैदा हो जाता हैं जिसका वाणी द्वारा वर्णन करना बिलकुल अशक्य सा प्रतीत होता हैं । महुवा से बिदाई लेते समय का कारुणिक दृश्य तो नेत्रो

के समक्ष फिर ही रहा हैं । अबालवृद्ध नरनारियों का विशुद्ध निर्मल भगवत् प्रेम तथा उन्ही के नाते इस शरीर के साथ विलक्षण प्रेम, स्नेह के प्रतीक रुप उनके नेत्रों के निर्मल अश्रुधारा हृदय को वरवस उद्वेलित कर देती हैं। वाणी को मूक बना देती हैं। इसका बदला क्या दिया जा सकता हैं ? उसकी कुछ समझ नहीं पडती । यो तो तुम लोग श्री प्रभु के नाते आत्मीय ही हो, अपना ही स्वरुप हो फिरभी व्यवहार के नाते तो कुछ करना ही पडता हैं जैसा कि वीरपुङ्गव श्री हनुमन्त लालजी की विलक्षणा सेवा से प्रसन्न होकर श्री राघवेन्द्र ने कहा था :-

सुनु कपि तोहि समान उपकारी, नहि कोई सुर नर मुनि तनुधारी ।
प्रति उपकार करौ का तोरा, सन्मुख होई न सकहि मन मोरा ॥
सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाही, कर विचार देखा मन माहि ।

बस ! इतना ही प्रर्याप्त है अधिक क्या लिखू ? लिखना चाहता तो हुँ किन्तु कलम चलती नहीं - वहाँ से तत्काल ही भागने का कोई दूसरा कारण नहीं था सिर्फ इसके कि तुम लोगों को निष्काम सेवा साथ ही नित्य श्री भगवन्नाम का नित्य स्मरण का ऋण इतना बढ गया था कि उसे सहन करने की, अदा करने की शक्ति न रही । जैसा कि भगवान् श्री आनन्दकंद, व्रजचन्द, मदनमोहन, नन्दनन्दन, श्यामसुंदर ने कहा था कि वृन्दावन के बाल गोपाल, पौढ नवजवान, वयोवृद्ध एवं कुमारी, विद्यावृद्ध, ज्ञानवृद्ध श्री भगवन्नाम में पागल बने प्रेमी जन को मेरा वारम्वार श्री राम जय राम जयजय राम सह हार्दिक सद्कामना तथा श्री प्रभु आप लोगों के इस भगवन्नाम निष्ठा को सुदृढ, बनाते रहे तथा अपने अभय चरणकमलो का नित्य आश्रय प्रदान करे । स्वास्थ्य इतना श्रम उठाने पर बहुत ही अच्छा है । विशेष श्री प्रभु कृपा । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय विनोद, बालगोपाल
तथा प्रेमीजन !

श्री द्वारका धाम,
संकीर्तन मंदिर,
दिनांक ८-३-६९

आशीर्वाद सह श्री राम जय राम जय जय राम

श्री प्रभु कृपासे सब आनन्द है । कल्ह तुम्हारा भेजा हुआ रामफल और दवा मिल गई हैं । तुम्हारी दवा न मिलने के कारण अभी तक एक वैध की दवा लेता था खांसी वगैरह तो मिट गई थी किन्तु काकड़ा का सोजा अभी बिलकुल मिटा नहीं है जिससे अधिक बोलाभी नहीं जाता और सुस्ती सी बनी रहती है फिर भी खाना पीना और भजन तो चालू ही है । कल्ह से वैध की दवा बन्द करके तुम्हारी दवा शुरु की है । होमियोपेथिक दवा है इससे आशा है कि जल्दी ही ठीक हो जायेगा आगे तो श्री प्रभु की मर्जी । "राजी हैं **हम उसी में जिसमें तेरी रजा है, या यूं भी वाह वाह हैं या त्यूं भी वाह वाह हैं ।"** रामनवमी का उत्सव इसबार महुवा नहीं हो पायेगा ऐसी धारणा लगती हैं। कल्ह तक महुवा का लगभग निश्चय ही था किन्तु राजकोट से पुनित सेवा मंडल सदस्यगण कल्ह यहाँ आये और कहने लगे कि उन लोगों ने श्री पुनित महाराज के स्मारक के रुप गीता मंदिर बनाया है । जिसका उद्‌घाटन श्री रामनवमी के दिवस मेरे हाथों से ही रखने का द्दढ़ निश्चय कर लिया है और उसके बाद ९ दिवस का वही अखंड रखेगे ऐसा निश्चय करके आये थे। मैने तो बिलकुल इन्कार कर दिया किन्तु हरिदास वाघेरिया और दूसरे लोग भी कहने लगे कि महुवा तो कई बार हो गया है । राजकोट में अभी तक अखंड का अपना प्रचार नहीं हुआ हैं और सामने से वे लोग इतना आग्रह कर रहे हैं तो नई जगह को ही प्रोत्साहन देना चाहिए । राजकोट वाले श्री रामनवमी के दिवस हौल का उद्‌घाटन के बाद उसी में ९ दिवस का अखंड

करना चाहते थे किन्तु मैने कहा कि १ को ही उद्घाटन और अखंड उसी दिन से प्रारम्भ करो तो श्री रामनवमी के दिवस अखंड पूर्ण हो जाएगा और ये लोग अपनी प्रणालिका के मुताबिक ४ बजे के बाद श्री रामभगवान की सवारी नगर में निकालेगे तो तुम लोग मन में कुछ विचार नहीं लाना । **श्री रामनवमी के बाद जभी भी रखना हो रखना या वैशाषसुद में श्री जानकीनवमी** - श्री जानकी माताजी के प्राक्ट्य के अवसर पर रखना जैसी तुम लोगो की रुचि अनुकुलता । अगर साबरमती जाना ही होगा तो राजकोट से एक दो दिवस के लिये जाऊँगा अेसा उन लोगो से निश्चय कर लिया है । यहाँ फूल डोल और होली का उत्सव भी बड़ा ही विलक्षणा हुआ । श्री संकीर्तन मंदिर में दर्शनार्थियों की भीड़ उसी तरह लगी रहती थी जैसे द्वारकाधीश के मंदिर । द्वारका में प्रवेश करनेवाला सायद ही कोई ऐसा यात्री होगा जो मंत्र मंदिर और संकीर्तिन मंदिर में न आया हो । इस बार यहाँ से प्रचार और प्रभाव भी खूब हुआ । तुम्हारी भेजी हुई दवा कल्ह से शुरु की हैं । कब तक लेना पड़ेगा ?

सभी प्रेमियो को जय श्रीराम। यहाँ अभी झाकड बहुत पड़ती हैं हवा भी बहुत ठंडी चलती है दिवस में अति गर्म और शाम से रातभर ठंडी जिससे स्वास्थ्य बिलकुल सुधर नहीं पाता । अब सुखी हवा में जाने पर ही ठीक होगा ऐसा लगता है राणीपवालों और कमला शंकर में कुछ मतभेद हो गया है । ऐसा लगता है विशेष श्री प्रभु कृपा । कल रविवार को जामनगर वैध को दिखलाने के लिये जाने का विचार था किन्तु तुम्हारी दवा जब आगई तो कल्हसे शुरु कर दिया है । अगर विशेष लाभ हुआ तो यही चालू रखूँगा । बहुत दिन हो जाने से ऐसा लगता है कि शायद सेपटीक हो गया है नहीं तो कभी इतने दिनों तक तकलीफ रहती नहीं थी।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय विनोद तथा बालगोपाल

श्री संकीर्तन मंदिर,
श्री द्वारका धाम

आशीर्वाद ! दिनांक २२-७-६९

श्री प्रभु कृपासे सब आनन्द है । तुम्हारा १९-७-६९ का लिखा हुआ पत्र मिला, समाचार मालूम हुआ। जोशी ने पत्र लिखा होगा । ता. १३-७-६९ रविवार को मैं जामनगर गया था उसी दिन श्री बालाहनुमानजी में तीन चार हजार गरीबों को लापसी और चना खिलाया गया । शाम को अन्नकूट भरा गया और कृत्रिम (बनावटी) वादल गर्जना, वर्षा का स्वांग, बिजली की कड़क वगैरह का स्वरुप बनाया था । चारों ओर वर्षा के लिये हाहाकार मचा हुआ था किन्तु श्री रामनाम महाराज का प्रताप तथा श्री हनुमानजी की महिमा का विलक्षण परिणाम यह हुआ कि आरती करके ज्यों ही में बैठा और उन लोगो ने नकली वर्षा बरसाने का, बादल गर्जने का, बिजली कड़कने का काम शुरुकिया कि पांच मिनिट के अन्दर ही अन्दर बाहर असली बरसात, मेघ गर्जना, बिजली चमकना एक साथ शुरु हो गया । यह चमत्कार देख कर सबके सब दंग हो गये और जो लोग श्री रामनाम के और श्री बालाहनुमानजी के विरोधी थे वे भी आ कर लम्बा पड़ने लगे । सबेरे में उसी दिन कुछ गुन्डे लोग ऐसा बोलते थे कि यहाँ अखंड चल रहा है । इसी से बरसात नहीं होती है किन्तु उसी न उसी दिन श्री हनुमानजी के प्रताप से सबके मुख में कालिमा लग गई । यह देखने के लये मानवमेदनी उमड़ पड़ी। जब तक दर्शनार्थीयों की भीड़ लगी रही तब तक बरसात भीतर बाहर चालू ही रही लगभग ११ बजे बंद हुई और उसी दिन भोर में ४ से ६।। तक मूसलधार बरसात पड़ी । मैने सुबह में जोशी से पूछा आज किसका धून था तो उसने कहा कि विनोदभाई का । मैने कहा विनोद बड़ा भाग्यशाली है, श्री हनुमान जी का कृपा पात्र है जो उसके अखंड में ऐसी विलक्षण लीला हो गई । दो दिनों

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

से यहाँभी बरसात अच्छी हो गई है । श्री गुरुपूर्णीमा का महोत्सव श्री द्वारका धाम मे ही हैं । अगामी मंगलवार ता. २९-७-६९ को आमंत्रण पत्रिका जामनगर से भेज दी गई होगी अेसा कल्ह हरिदास कहता था । श्री गुरुतिथि का उत्सव पोरबंदर में हैं ता. १९-९-६९ भादरवा सुद ८ शुक्रवार से २५-९-६९ गुरुवार तक । श्री गुरुपूर्णिमा के बाद गांधीधाम कांडला का ९ दिवस का प्रोग्राम है श्रावणवद ५-९-६९ शुक्रवार से ११-९-६९ तक अहमदाबाद में । श्री गुरुतिथि पूरी करके २७-९-६९ से १५ दिवस का अखंड शाह साहेब बड़ौदा में रखने वाले हैं । उसे बाद तुम्हारे यहाँ का प्रोग्राम हो सकेगा । यहाँ आने पर रुबरु सब बाते करेगें । अभी स्वास्थ्य ठीक है शुक्लजी वैधकी दवा भी चालू है । वहाँ से आने के बाद दवा में हेर-फेर किया है । गत १४ अमावश्या को द्वारका में अन्नकूट था उसी दिन देवदत्त भागकर कुतिआना चला गया । जामनगर उसे नहीं ले गया इसी रोष में । दुष्ट से पिन्ड छूटा । संस्कार हीन जीव कही भी जाए उसे कुछ भी होने का नहीं, न उसमें विवेक, न विचार, न सेवा न पूजा, खाना पीना जलसा करना, सोना । यहाँ तो धुन में भी नहीं बैठता था । मैने कहा तुझे रहना हो तो साधु तरीके रहो नहीं तो जहाँ इच्छा होवे बस ! अपना सामान उठाया और चल पड़ा । श्री जयन्तीभाई वाड़ीवाले का चि. सुरेशभाई भी पहुँच का पत्र मिल गया है अेसा बोल देना। सुरेश, भरत, जलाराम शास्त्री, मनसुख, भगवानभाई, प्रवीणभाई, रसिकभाई, घनश्याम, रमेश, सुरेश, हँसमुख, राजू अपने मातापित तथा बाल गोपाल सबको मेरा आशीर्वाद सह श्री राम जय राम जय जय राम । महेता साहेब सपरिवार, जगुभाई प्रेस वाला तथा अन्य सभी प्रेमियों को मेरा श्री राम जय रराम जय जय राम । विशेष श्री प्रभु कृपा। यहाँ अखंड बडे सुन्दर ठंग से चल रहा हैं लाखो यात्री लाभ लेते हैं।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय विनोद प्रेमीजन तथा बालगोपाल

दहिसर

आशीर्वाद ! दिनांक २१-१२-६९

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ। यहाँ के बाद महुवा आने का ही विचार है। आज पालेज वाला चन्द्रकान्त आया था तो सारींग पालेज के पास एक गाँव है, वहाँ तीन-चार दिवस के लिये आग्रह किया है। यह के बाद शायद चार-पांच दिवस के लिये पूना भी जाना पड़े। काकूभाई की लड़की लड़का का लग्न निर्विध्न श्री प्रभु कृपा से पूर्ण हो गया। रामजी भी मेरे साथ आया है। जोशी भी लगन प्रसंग में आया था। कल्ह जामनगर वापिस गया क्योकि प्लेन का रिटर्न टीकीट लिया था प्रफुल्ल कल्ह फोन किया था। बटुक-मघाणी साहेब भी मिला था और आज दोपहर बाद दहिसर आने के लिए फोन किया था। पत्र तो काकूभाई के पते से ही लिखना कारण यहाँ-दहिसर का प्रोग्राम नक्की नहीं है कि कब तक रहूँगा। दो चार दिन बाद शायद काकू के यहाँ भी जाना पड़े। लगभग १ मास लग जायेगा अेसा लगता है। सभी प्रेमियो को जय श्री राम विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय विनोद तथा बालगोपाल !

वेरावल, लोहाणा

महाजन बाडी बाहर कोट,

आशीर्वाद ! दिनांक १३-९-६७

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मालूम

हुआ । तुम्हारे पत्र से अेसा मालूम पडता है कि तुझे यहाँ (वेरावल) का आमंत्रण पत्रिका मिली नही है । शायद जोशी भेजना भूल गया होगा । यहाँ गत रविवार ता. १०-९-६७ से अखंड प्रारम्भ हुआ है और आने वाला (आगामी) रविवार ता. १७-९-६७ को रात्रि ९ बजे पूर्णाहुति होगी । साँम को ५ बजे नगर कीर्तन निकलेगा और वहाँ से वापिस लौट कर पूर्णाहुति होगी । उसके दूसरे दिन सोमवार पुनम ता. ८-९-६७ को श्री सोमनाथ महादेवजी के मंदिर २४ घटे का अखंड है । उसके बाद मंगलवार सोम से ता. १९-९-६७ से प्राची में २४ घंटे का अखंड है । बाद में २४-९-६७ से ९-१०-६७ तक जूनागढ अनन्त धर्मालय में ७ दिवस का अखंड हैं । १०-९-६७ से १७-९-६७ वेरावल । १८-९-६७ से १९-९-६७ सोमनाथ । १९-९-६७ से २०-९-६७ प्राची । २४-९-६७ से १-१०-६७ जूनागढ़ । अगर तुम लोगों का प्रोग्राम नक्की हो तो जूनागढ़, वेरावल, सोमनाथ मेही सूचना करना, जिससे यही से तुम्हारे यहाँ जाने में सुविधा होगी नहीं तो पोरबंदर, जामनगर चले जाने पर डबल धक्का खाना पड़ेगा। यहां अखंड में अपूर्व मानव मेदिनी और आनन्द आ रहा है । अवकाश मिले तो कम से कम पूर्णाहुति पर भी जरूर आ जाना । सभी जगह के प्रेमी अेकत्रित होगे । सभी प्रेमियो को मेरा जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय विनोद प्रेमीजन तथा बालगोपाल

श्री संकीर्तन मंदिर,
पोरबंदर

आशीर्वाद !

दिनांक १८-७-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम लोग कुशलपूर्वक पहुँच गये यह जान कर आनन्द हुआ । प्रविण और भगवानभाई भी द्वारका, बेट, ओखा हो

के सकुशल पहुँच गये यह समाचार प्रविण के पत्र द्वारा प्राप्त हुआ किन्तु उसका पता याद न होने से पत्रोत्तर नहीं दे सका । तुम ही उसे सब समाचार दे देना । इस समय अखंड के लिए इतना आमंत्रण आ रहा है कि किधर जाना और किधर नहीं जाना ? यह अेक समस्या बन गई है । ता. १०-८-६८ से साबरमती रेलवे कोलोनी का निश्चय हो गया है जिससे किसी भी हालत में ९-८-६८ को तो यहाँ से निकलना ही पड़ेगा । इसके अलावा नव-नव दिवस के लिये तीन जगहो में - जामजोधपुर, पाटन भोजा भगत के यहाँ और रतनपुर का आमंत्रण है । उसके अलावा वावडी उपलेटा का भी आग्रह है । इन जगहों जैसा तैसा पूरा करके ८-८-६७ तक पोरबंदर वापिस आ जाऊँगा और फिर वहाँ से साबरमती के लिये रवाना होऊँगा । तुम्हारे यहाँ के प्रोग्राम की बात साबरमती वाले को कर दिया है और उन लोगो ने स्वीकार भी कर लिया है कि आठ, दस दिवस के लिये आप भले जाँए । विशेष हरिदास वाघेरिया को मोटर Acciedent में बाया हाथ पाव में फेक्चर हो गया हैं प्लास्टर लगा है तीन महीनें तक रहेगा । द्वारका मंदिर का काम कुछ शीथिल पड़ जायेगा । जो प्रभु इच्छा । सभी प्रेमियो को मेरा जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

छाविला हनुमानजी,
स्टेशन के पश्चिम,
सुरेन्द्रनगर.
दिनांक १९-१०-६८

प्रिय विनोद, मघाणी साहेब, रसिकभाई,
भगवानभाई, प्रविणभाई, रमेशभाई,
घनश्यामभाई तथा समस्त प्रेमीजन

सप्रेम जय श्री राम ।

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र कल्ह द्वारका से लौटने

पर मिला और समाचार मालूम हुआ । आज सुरेन्द्रनगर जाना था किन्तु वहाँ से अभी तक कोई आदमी आया नहीं है, इससे लगता है कि वहाँ का प्रोग्राम शायद बंद रहा । **नूतन वर्ष-अन्नकूट द्वारका में करने का निश्चय है ।** दीपावली जामनगर करके दूसरे दिन नूतनवर्ष करके यहाँ से पोरबंदर और **पोरबंदर से संध्या तक द्वारका पहुँच जाने का है ।** गाड़ी खूलते खूलते सुरेन्द्रनगर से आदमी आ गया ओर कल्ह शाम को जामनगर से मैं यहाँ आ गया हूँ । २१ दिवस का अखंड भी कल्ह रात्रिसे यहाँ प्रारम्भ हो गया है । सोमवार को यहाँ से जामनगर जाऊँगा । दूसरे दिन पोरबंदर होकर शाम तक अन्नकूट-नूतनवर्ष के दिन द्वारका पहुँचुगा । वहाँ पाँच-छ दिवस रहकर जामनगर बालाहनुमान में शायद २६-१०-६८ को अन्नकूट रखा हैं। वहाँ का अन्नकूट करके फिर सुरेन्द्रनगर आउँगा । द्वारका का संकीर्तन मंदिर लगभग पूरा होने को आ गया है । बड़ा भव्य बना हैं। हरिदास के बीमारी के कारण काम थोडा मंद पड गया है । अखंड सुन्दर चल रहा है । संकीर्तन मंदिर का उद्‌घाटन वसंत पंचमी पर रखने का है । ऐसा हरिदास कहता था । चारो लडको का तुम्हारा फोटो बहुत अच्छा आया है । जोशी भेजने वाला है । सुरेन्द्रनगर स्टेशन के पश्चिम तरफ छबिला हनुमान में अखंड़ है सभी प्रेमियो को अपने परिवार को जय श्रीराम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

।। श्री राम ।।

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय विनोद समस्त प्रेमीजन

तथा बालगोपाल । आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपासे सब आनन्द है । अभी अहमदाबाद, साबरमती स्टेशन के पास राणिप गाँव में ४० दिवस का अखंड चल रहा है । यु.पी. के भइया

लोगों के तरफ से । २९-१-६८ सोमवार साझ (शाम) ७।। बजे पूर्णाहुति का समय है । रहने, घूमने, फिरने की खूली जगह है, जिससे खूब आनन्द आता है । मंडलियाँ भी खूब धुन में आती है । इसके बाद माघ सुद १ से सात दिवस बड़ौदा के लिये रामभगत क पत्र है उसके बाद धोलका और पालेज का प्रोग्राम है । इधर गुजरात का प्रोग्राम जल्दी जल्गी समाप्त करके द्वारका जाने का है कारण वहाँ जो संकीर्तन मंदिर बन रहा है वह जब तक पूर्ण न होवे तब तक के लिऐ बाजू की ब्रह्मपुरी में अखंड रखा गया है और सबका आग्रह हैं कि अगर मेरी हाजिरी इस दरम्यान होवे तो अखंड में और निर्माण काम में भी लोगो की बहुत दिलचस्पी रहेगी। फूलडोल होली का विचार श्रीद्वारकाधाम में करने का है । विशेष श्री प्रभु कृपा । अपने पिताजी, परिवार के सभी लोगों को, मधानीसाहेब, रसिकभाई, प्रतापभाई, भगवानभाई, प्रवीण, माला सुरेश वगैरह सभी प्रेमियों को मेरा श्री राम जय राम जय जय राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय विनोद तथा बालगोपाल ।

रेलवे न्यु कोलोनी,
साबरमती, अहमदाबाद -१९

आशीर्वाद !

दिनांक २४-९-६८

श्री प्रभु कृपासे सब आनन्द है । यहाँ की पूर्णाहुति बड़े आनन्द से हो गई । नगर कीर्तन तो अति विलक्षणा निकाला, जिसकी कोई कल्पना भी नहीं थी । दो चार घन्टे के भीतर ही सब कुछ हो गया । हाथी, घोड़ा ऊँट, चार-चार घोड़े का रथ, बैन्डवाजा, हजारों की तायदाद में तुमुल नाम ध्वनि करती भजन मंडलियाँ । आज से फिर तीन दिन के लिये पुष्पनाथ महादेव में अखंड हैं । शनिवार २८-९-६८ को सोमनाथ मेल में जूनागढ़ जाऊँगा । वहाँ दूसरे

दिन रविवार ता. २९-९-६८ से दूसरे रविवार ६-१०-६८ तक सात दिवस का अखंड है और सब आनन्द है। बम्बई का डेट बढ़ गया जिससे जाना न पड़ा। यहाँभी १९-९-६८ से रेलवे हड़ताल होने वाला हैं जिससे बहुत बड़ी गड़बडी होने की सम्भावना थी किन्तु **श्रीनाम महाराज** की कृपा से कुछ भी हुआ नहीं और नहीं तो ४० दिवस का अखंड भी बदनाम हो जाता कारण कि अपना मुख्य कार्यकर्ता सक्सेना साहेब ही पकडे जाते, जेल जाते तो सबों को जो विरोधी थे उनको कहने का हो जाता कि भजन का फल देखा। किन्तु श्री प्रभु का नाम तो मंगलमय है – कभी अमंगल हो ही नहीं सकता। सभी प्रेमियो को, अपने माता पिता, बालगोपाल सबको मेरा यथायोग्य सह श्री राम जय राम जय जय राम। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय विनोद तथा बालगोपाल ! शोपिंग सेन्टर, रेलवे न्यू कोलोनी,

साबरमती, अहमदाबाद - १९

आशीर्वाद ! दिनांक २२-८-६८

श्री प्रभु कृपासे सब आनन्द हैं कल्ह पालेज से वापिस आने पर तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ। श्री रसिक भगत का देहन्त हो गया १७-८-६८ को ऐसा मैने कल्ह पालेज में सुना। यहाँ से २९-८-६८ को निकालने का विचार है और ठीकभी है कारण अेक दिवस पहले तो पहुँचना ही चाहिए। यहाँ अखंड खूब सुन्दर ढंग से चल रहा है। पालेज में भी बड़ा आनन्द हुआ। वहाँ लोगों में संस्कार भी बहुत अच्छा पडा है। यहाँ की पूर्णाहुति के बाद वे लोग (पालेज वाले) फिर ९ दिवस के अखंड के लिये अति आग्रह किया है। मघाणीसाहेब, भगवानभाई, रसिकभाई, रमेशभाई, घनश्याम भाई, प्रवीणभाई

"कबीरा" सब जग निर्धना, धनवंता नहि कोए ।
धनवन्ता तेहि जानिए, जाहि नाम धन होए ॥
धन यौवन यो जायेगो, जाहि विधि उड़तकपूर ।
"नारायण" गोपाल मज, क्यों चाटत जग धूर ॥
राम ना कलि कामतरू, सकल सुमंगल कंद
तुलसी करतल सिद्धि सब पग-पग परमानन्द ॥
नाम लिया जिन सब लिया, सब शास्त्रन को भेद ।
नाम विनान नरके गये, पढ़ि सुनि चारो वेद ॥
कबीरा निर्मय नाम जप, जब लोग दिये वाति ।
तेल घटा वाति बूझि, तब तो सोवेगा दिनराति ॥

अतः जब तक शरीर स्वस्थ, इन्द्रिय बल, मनोबल, बुद्धिबल प्रबल है तभी तक में खूब भजन, स्मरण, रटन, चिन्तन कर लेना चाहिए नहिं तो वृद्धावस्था आने पर या शरीर निर्बल कमजोर हो जाने पर कुछ भी नहीं हो सकेगा । परमार्थ जीवन का भाथुजी तो जवानी में ही भर लिया जाता है, जो अेसा कर पाता है वह जीवन सदा के लिये सुखी सानन्द निर्भय निश्चिन्त हो जाता है अन्यथा सुन्दर समय निकल जाने पर पछतावा ही पछतावा रह जाता है । **किया हुआ सत्कर्म, भजा हुआ श्रीरामनाम ही साथ आयेगा** । और तो सब का सब यही पड़ा रहेगा । जब यह देह भी साथ नहीं जानेवाला है और क्या जाएगा ? बस ! खूब भजन करना, चलते फिरते, उठते बैठते, सोते जागते अेक श्री हरिनाम की डोरी पकड़ लो, इससे इस भयंकर संसार सागा से अनायस ही बेड़ापार हो जाएगा, जन्म मरण भयंकर चक्र छूट जाएगा, सदा के लिये आनन्द ही आनन्द हो जाएगा ।

जागत सोवत हरि भजो, हरि हरि दे न विसार ।
डोरी गहि हरि नाम की, 'दया' न टूटे तार ॥

मेरी खाँसी उस दवा से बंद हो गई, काकड़ा भी कम होता जा रहा

है ठीक है कोई तकलीफ नहीं है कुछ चिन्ता नही करना । चिन्ता अपने लिये तथा मेरे लिये करनी हो ही तो श्री हरिनाम की ही करना जो सभी चिन्ताओं को निर्मूल कर देती है । कल्ह पूर्शाहुति है परसों पाँच दिवस का अेक जगह और है । उसके वाद शायद सात दिवस के लिये भरूच जाना पड़ेगा, उसके वाद बम्बई होकर या सीधे द्वारका जाने का विचार है आगे श्री प्रभु कृपा । अपने माता-पिता तथा बालकों को यथा-योग्य सह श्री राम जय राम जय जय राम कहना । आज सवेरे रामजीभाई आया और आते ही बिमार हो गया है । भगवानजीभाई अब ठीक हो गया होगा मघाणी साहेब, प्रवीण, रसिकभाई, रमेश, नटू चारो बालकों तथा अन्य सभी प्रेमी जनों को मेरा श्री राम जय राम जय जय राम । विशेषश्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेम भिक्षु

श्री राम

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चन्द्रेश्वर बाबू, बालगोपाल — श्री द्वारका
तथा रामधुनमंडल ! — महाजनवाड़ी

सप्रेम जय श्री राम ! — दिनांक ५-६-६६

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । **श्री नाम महाराज** का प्रभाव, प्रताप कराल कालिकाल में भी प्रत्यक्ष ही है, किन्तु इसकी अनुभूति कतिपय पुरायशाली प्राणी को ही होती है, हुआी है, हो रही है, और होती भी रहेगी। अन्य अभागी, अश्रद्धालु, नास्तिक भौतिक वादियों के लिये तो यह अनुभव वैसा ही है जैसा कि परमप्रकाशपुन्ज भगवान भुवन भास्कर के प्रत्यक्ष होने परभी उल्लू के लिए अस्तित्वविहीन ही होता है किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि उल्लू को दृष्टि दोष के कारण सूर्य न दिखने के कारण सूर्य का अस्तित्व ही नहीं है । सूर्य तो प्रत्यक्ष ही है इसी प्रकार अपना अस्तित्व ही परमात्मा

के अस्तित्व का सच्चा परिचायक होने पर भी अश्रद्धालु, संशयशील, बुद्धिवादी, विवेकहीन प्राणी को परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास नहीं होता और ऐसा ही व्यक्ति जीवन के विलक्षणा अनुभूतियों, परमात्मा की विलक्षणा कृपा करुणा के परिणामों को भाग्य या दैवयोग Luck या Chanec accident कह के पुकारता है किन्तु जब ऐसे व्यक्ति के उपर भी जब कभी ऐसी मुसीबत या दुख का प्रतिकूलता का पहाड़ टूट पड़ता है, उस समय अनायास ही उसके मुख से भी हे ! भगवान हे राम ! हे प्रभु ! ऐसी आहे निकल पड़ती हैं । यह बात किसी सामान्य व्यक्ति की नहीं है, बड़े बड़े नास्तिकों, बिद्धानों, बुद्धिमानों के मुख से भी मृत्यु की दुःसह वेदना से व्यथित अन्तः करण से यह शब्द अनायास ही निकल पड़ते हैं । भगवान सर्व व्यापक है, जैसे दूध में, दही में मख्खन ओत प्रोत है, काष्ठ में अग्नि सर्वत्र व्याप्त है, तिल में तेल है आकाश में वायु है, शरीर में प्राण है, समस्त जीवं धारियों में आत्मा है, किन्तु वगैर साधन किये, मन्थन किये न दूध से दही, दही से मख्खन जुदा होकर प्रगट हो सकता है और न काष्ठ से अग्नि ही प्रगट हो सकती, न तिल से तेल निकल सकता है, ठीक उसी प्रकार वगैर साधन वगैर विवेक विचार हृदय मंथन के सर्वत्र व्यापक आत्मा, परमात्मा का प्रत्यक्ष होना अशक्य ही नहीं बल्कि असंभव है और ज्यों-ज्यों हम विवेक विचार द्वारा अपने अन्दर प्रवेश करते जाते है त्यों-त्यों यह अशक्य और असम्भव सा कर्म भी शक्य और संभव बनता जाता है और इस प्रकार सतत अभ्यास तथा मन्थन चालू रखने पर अेक अेसा समय आता है जबकि उसका साक्षात्कार भी हो ही जाता है किन्तु आवश्यकता है अदम्य उद्योग की, अटूट श्रद्धा की, दृढ विश्वास की,सतत प्रयास की । यही जीवन की कसौटी है। मानवता की पूंजी है और जीवन जन्म की सफलता एवं सार्थकता है आज तक दुनिया में खासकर भारत भूमि में जितने भी संत, भक्त, आस्तिक महानुभाव हो गये है उन सबो की एक ही अनुभूति है जिसकी मित्ति आधार भूमि श्रद्धा और विश्वास ही है । परमाचार्य, परमपूज्य, प्रातःस्मणनीय,

परमवंदनीय श्रीमद् गोस्वामी तुलसीदासजी महाराज जिनका अवतार श्री कलि के कुटिल जीवो के उद्धारार्थ हुआ है, श्री रामचरित्रमानस जैसे अपने अमर काव्य, जिसमें मानवता को संजीवन तथा अनुप्राणित करने का समस्त साधन भरा पड़ा है । प्रथम सोपान के सर्वप्रथम मंगलाचरण में लिखते है। "भवानी शंकरो वन्दे श्रद्धा विश्वास रुपिनौ, याम्याम् बिना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वास्तस्थभीश्वरम्" और अंत में लिखते है कि "कवनउ सिद्धि कि बिनु विश्वासा बिनु हरि भजन न भवमय नाशा । असि विचारी मतिधीर, तजि कुतर्कसंशय सकल, भजहु राम रघुवीर करुणाकर सुन्दर सुखद ॥" बस अपने लिये तो इतना ही पर्याप्त है कि श्रद्धा विश्वास पूर्वक श्री प्रभु राम रटन करते चले, श्री प्रभु तथा उनके नाम के प्रताप प्रभाव से यथासमय सब कुछ अनुभव होता जाएगा। आपने श्री अखंड महायज्ञ के प्रभाव की बाते लिखी वे अक्षरशः सत्य है किन्तु इतनी ही नहीं इनसे भी विलक्षण अनुभूतिया हमे प्राप्त होगी जब हम उनकी ओर सच्चे दिल से लगे रहेगें तो श्री प्रभुको सीर्फ कपट प्रिय नहीं है अन्यथा और सभी दोष उनके यहाँ क्षम्य है । अतः हमें चाहिए कि हम निष्कपट बनकर ही नाम रटन, स्मरण, चिन्तन करे । आज आप को ऐसा प्रतीत हुआ कि अखंड नामस्मरण के प्रभाव से मेरा गाँव ध्वंश के मुख में पड़कर भी सुरक्षित रह गया और वर्ष दो वर्ष पहले की भी घटना आपने देखी और सुनी कि जहाँ हजारो व्यक्ति अखंड यज्ञ में भाग ले रहे थे और जहाँ वर्षो से अखंड चल रहा था वहाँ के अखंड यज्ञ का भव्य भवन ही पल भर में भस्मीभूत हो गया किन्तु आज इतने वर्षो से चालू अखंड में अद्भूत घटनाओ के धटित होने पर भी कोई अशुभ या अनिष्ट नहीं हुआ । श्री रमाशंकर बाबू मुखियाजी बड़े भाग्यशाली हैं अनेक जन्मों के परम पुण्यशाली है जिसके फल स्वरुप आज उनकी नाम निष्ठा इतने अल्प काल में इतनी प्रबल बन गई है इसमें कोई आश्चर्य की बात नही अनेक जन्म संसिद्धः ततो याति परांगति । यह तो अनेक जन्मों का फल है । नाम निष्ठा बहुत कठिन है, जबतक अनेक जन्मों के पुरायपुंज का उदय न हो तब तक नाम में निष्ठा बहुत कठिन है

जैसा कि गोस्वामीजी महाराज ने लिखा है, ''वेह पुराण, संतमत अेहू, सकल सुकृतफल राम (नाम) सनेहू'' समस्त सत्कर्मो एवं पुरायो का फल ही है श्री नाम महाराज में श्रद्धा, विश्वास प्रेम, भाव, निष्ठा का होना और अेसी निष्ठा हो जाने पर कुछभी अशक्य या अलभ्य नहीं रह जाता जैसा कि गोस्वामीजी अपना निजी अनुभव लिखते है ''सब अंगहीन, सब साधन विहीन, मन वचन मलीन, हीन कुल करतूती हैं । बुद्धि बल हीन, भाव भक्ति विहीन राम नाम जाहि जपि जीह रामहु को बैठो धूति हौं । प्रीति रामनाम सो, प्रतित रामनाम की हीन गुण ज्ञान हीन भावहुँ विभूतियों तुलसी गरीब की गई बहौर रामनाम जाय जपे जीह राखवों बैठ भूतियों प्रसाद रामनाम के पसारे पांव सूति हौं बस ! खूब नाम रटिये, रटाईये सुखी बनिये बनाईये यह जीवन का सार है । नाम ही कलि में भवतरण का एक मात्र आधार है । यही समसत् संत, शास्त्र तथा वेदो का सार है अभी पोरबंदर में १३मास का अखंड पूर्ण हुआ। बाद में १८मास का चालू अखंड पूर्ण हुआ और पुनः द्वारकाधाम में १०८ दिवस का अखंड श्री गुरुदेव की तिथि पर्यन्त के लिये कल्ह से प्रारम्भ हुआ । जामनगर में दो वर्षो से अखंड चालू ही है । गुजरात में प्रचार प्रारम्भ हो गया है । सभी प्रेमियो को मेरा जय श्री राम आपके दो पत्र मिले है। जिसमें १४-५-६६ का पत्र कल्ह ही मिला और आज पत्रोत्तर दे रहा हूँ अभी तक मै द्वारका में ही हूँ। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

''श्री राम जय राम जय जय राम''

श्री डाकोरजी

Co. मूलजी गोटावाला

दिनांक ६-९-६४

प्रिय चन्द्रेश्वर बाबू, बालगोपाल !

जय श्री राम !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है । आशा है आप लोग भी सपरिवार

सकुशल है। आपका दोनों ही पत्र कल्ह यहाँ प्राप्त हुआ। पत्रोत्तर में क्या लिखू, जो समझदार व्यक्ति है उसके लिए इशारा ही पर्याप्त है। दारोगा जी के स्वामीजी के विषय में जो कुछ लिखा, वह कलिकाल के लिये बिलकुल ठीक ही है। ऐसे दंभी, पाखंडी लोग साधु सन्यासियों का वेष बनाकर कलिधर्म के प्रचार के लिये साक्षात् कलि के दूत ही है। नहीं तो किसी भी सत्पुरुष के मुख से श्री राम, श्री कृष्ण की निन्दा बन सकती है ? अगर वह अभिमान करता है कि मै महर्षियों के परम्परा को मानता हूँ तो क्या श्री व्यासजी महर्षी नही थे ? जिन्होने जनकल्याणर्थ वेद का न्यास किया, पंचनवेदरुप महाभारत की रचना की, वेदों का रहस्य पूर्ण तत्व सुंगम सुबोध बनाने के लिए पुराणों की रचना की, जिसमें रुपकों द्वारा कठिनसे कठिन दुरुह तत्वों को सुलभ बनाया। जिसने ब्रह्म सूत्र की रचना और श्रीमद् भागवत् संहिता की रचना की जिसमें श्री कृष्णा भगवान तथा परमब्रह्म परमात्मा को अभिन्न सिद्ध किया श्री वाल्मीकि जी ने गायत्री के २४ अक्षरों पर २४००० श्लोक वाली रामायण की रचना की, जिसमें श्री रामजी को परमब्रह्म परमात्मा ही बतलाया। समस्त उपनिषदों के साररुप गीता का गायन स्वंय भगवान श्री कृष्णा ने अपने मुखार बिन्द से किया, जिसकी महत्ता और उपादेयता की प्रशंसा आज सारा विश्व के भिन्न धर्माबलम्वी भी मुक्त कंठ से कर रहे हैं। श्रीमद् गोस्वामी तुलसीदासजी का अमर काव्य श्री राम चरितमानस जिसे अपनी लोक प्रियता, नीतिमता धर्म प्रियता, आदर्श चरित्र एंव मानवता की सजीव मूर्तिमता का सजीव सचित्र आदर्श के लिए सर्वत्र भुवन भास्कर के समान प्रदीप्त हो रहा है। आज वर्तमान भारत का कोई भी ऐसा साधु सन्यासी नहीं जो रामचरित मानस की चौपाई बोले वगैर रह सके। बड़े बड़े धुरन्धर वक्ता, विद्वान, शास्त्री पंडित भी सभी शास्त्रों पुराणों की व्यारव्या करने के बाद श्री गोस्वामीजी की चौपाइयों तथा दोहों से सम्पुट करते हैं। रशिया जैसा देश में श्रीराम चरित्रमानस का प्रचार वहाँ की सरकार कर करा रही है और गोस्वामीजी की जयन्ती मनाई जाती

है। ऐसे लोकोत्तर युगावतारी सन्त शिरोमणि भक्ताग्रगराय श्रीमद् गोस्वामीजी को गड़बड़ मचाने बाला, जनता को गुमराह कराने वाला, कहने की हिम्मत रखने वाला प्राणी कितना पामर होगा इसकी कल्पना कोई भी व्यक्ति कर सकता है । इसके अलावा अपने लिए विचारणिय विषय तो इतना ही है कि क्या अधपर्यन्त जितने सन्त, महन्त, ज्ञानी, विद्वान, पंडित, शास्त्री हो गये और है क्या वे सबके सब विचार हीन और बुद्धिहीन ही थे जो अपने काव्यों में मुक्त कंठ से भगवन्नाम की, श्री रामनाम की महिमा का गायन किया हैं और परम अकिंचन रह कर तथा अपने इष्टदेव एवं गुरुदेव आचार्य की सुगंध सपथ खाकर श्री रामनाम रटन, स्मरण, चिन्तन द्वारा ही अपनी कृत्य कृत्यता तथा भगवत दर्शन का साक्षात्कार का उल्लेख किया है । आज भी ऐसे सन्त मौजूद है जिन्हे श्री रामनाम से भगवान साक्षात् दर्शन हुआ है । और भूत काल में तो अनेको ऐसे हो गये है । तुलसी नरसी, मीरा, रैदास, कबीर, नानक, दादू, दरिया, दुलन, पलटू, संततुकाराम, ज्ञानदेव, नामदेव, एकनाथजी, चैतन्य महाप्रभु, अभी मै जहाँजा रहा हूँ नर्मदा तट चांदोद कर्णली जहाँ पर आज ही २०-२५ वर्ष पहले नारायण स्वामी को साक्षात् दर्शन हुआ था, जिसका उल्लेख गीता प्रेस से निकली पुस्तिका ''ऐक सन्तका अनुभव" में पूरा वर्णन है । वे हमेशा मौन रहते थे, सीर्फ मुख से नारायण नारायण का रट किया करते थे । स्वयं बद्रीनाथजी ने उन्हे स्वप्न में नारायण नाम की दीक्षा दी थी । गायत्री का जप अपवित्र अवस्था में यत्र तत्र करने का कही भी विधान नही है उसे कुर्तकियो में कुतर्क से अपनी श्रद्धा, निष्ठा, बिगाड़नी नहीं चाहिए । दारोगा कहता है कि मुझे तत्वज्ञान का फल है हो गया तो चोरी घुसखोरी तो उसका चालू ही है क्या यही तत्वज्ञान का फल मिलने पर या दूसरे पत्र में विशेष बाते । गुरु महाराज की तिथि यही डाकोरजी में होगी । डाकोर आने का रास्ता वहाँ से अहमदाबाद और अहमदाबाद से आनन्द जंक्शन और गाड़ी बदल कर

डाकोरजी ।

हितेच्छु
प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चन्द्रेश्वर बाबू, बालगोपाल
तथा समस्त प्रेमीजन !

श्री बरसाना
दिनांक २६-४-६५

जय श्री राम

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। मैंने अहमदाबाद से वृन्दावन आते समय आप को अेक पत्र लिखा था जिसमें **श्री नाम सम्बन्धी** सभी बातें तथा होनेवाली धार्मिक बिडम्बनाओं के विषय में भी उल्लेख किया था । शात्रों तथा सन्तो ने तो कलिकाल की कालिमाओं से बचने का तो एक ही उपाय बतलाया है – **"श्री नाम संकीर्तन"** जिसमें अन्य किसी उपचार की आवश्यकता नहीं । **जब सर्वदा सर्वकालेषु सर्वत्र हरि चिन्तनम् का वर्णन** है तो खड़े खड़े या बैठे बैठे का प्रश्न ही कहा रह जाता है ? श्री प्रभु नाम लेने से जिस प्रकार भी अेकाग्रता बढ़े, वृति अर्न्तमुखी होवे, अधिक समय तक सुखपूर्वक, आनन्दपूर्वक नाम लिया जा सके - वही साधन, वही उपाय, वही विधान है, । भगवान्नाम लेने, उच्चार करने के सिवाय दूसरा कोई विधान नहीं, कलश, हवन, वगैरह यह लोगों के अपना नीजी विधान हैं । शास्त्र का कोई विधान नहीं है कारण कि आकाश सबसे अति सूक्ष्म तत्व है उसकी शुद्धि शब्द सिवाय अन्य किसी भी भौतिक पदार्थ से नहीं हो सकती है । उदाहरणार्थ अगर किसी दो दल में विवाद होता हो और कर्कश शब्दों के आघात प्रत्याघातों के फलस्वरूप अगर आपस में संघर्ष उप्तन्न हो जावे तो क्या ? उस समय धूप जलाने या दीप दिखलाने से शान्ति हो सकती है ? उस समय तो सुमधुर, हितकारी न्याय युक्त, निस्वार्थ, समन्वयकारी शब्दों द्वारा ही उस संघर्ष का शमन

किया जा सकता है। जिन लोगों को भगवन्नाम का सच्चा महत्व मालूम नहीं है या जिन्हे श्री भगवन्नाम की ओट में अपना स्वार्थ साधन करना है वे ही इस प्रकार के सरल, सुगम, सुबोध मार्ग को भी अनेक प्रकार के विधि विधानो का षडयंत्र रचकर इसे लोगों के लिए दुर्गम और दुर्वोध और दुष्कर बना देते हैं । नहीं तो श्री रामायणजी, श्रीमद भागवत्, श्रीमद भगवदगीता इत्यादि किसी भी शात्र में नाम लेने के सिवाय उसमें दूसरा कोई भी विधान नही हैं । **मंगलभवन अमंगल हारी, उमा सहित जेहि जपत पुरारी । जेहि विधि कपट करुंग संग धाई चले श्री राम, सो छबि सीता राखि उर रटति रहित हरिनाम । बैठे देखि कुशासन जटा मकुट कृश गात, राम राम रधुपति जपत श्रवत नयन जलजाता ।** श्री भरतलालजी १८ वर्षो तक यही अखंड जप किया । **सुमिरि पवन सुत पावन नामू, अपने वश करि राखेउ रामू । तुम पुनि रामनाम दिन राति, सादर जपहु अनंग अराति ।** इस प्रकार नाम यज्ञ में कोई दूसरा विधि विधान है नही । पहले जीभ से नाम जपे, फिर ज्यों ज्यों जप दृढ़ होता जायेगा त्यों त्यों अन्तर से आप ही आप जप होने लगेगा । और इस प्रकार जब नाम मन में, बुध्दि में, प्राण में हृदय में रम जायेगा तो बाहर से अपने लिए उच्चार करने की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। मै तो लगभग देढ़ मास से श्री वृन्दावन में ही हूँ । आज श्री बरसाने से पत्र लिख रहा हूँ **जहाँ पर श्री राधिकाजी** का प्राकट्य हुआ था। यह बड़ी दिव्य भूमि है। यहाँ का आनन्द और शान्ति भी अलौकिक है, उनकी कृपा, करुणा भी विलक्षण है। यहाँ से श्री गिरिराज जी होते हुए १-५-६५ तक श्री वृन्दावन जाऊँगा। वहाँ ४-५-६५ को श्री वाके बिहारीजी का चरणदर्शन कर श्री हरिद्वार की ओर जाने का विचार है । फिर वहाँ से बम्बई होते पोरबंदर चला जाऊँगा । श्री राजदेव तथा मुझफ्फरपुर के श्री प्रभु बाबू वकील श्री राम नवमी के चार-पांच दिवस पहले ही वृन्दावन आगये थे और अभी साथ में ही हैं और हरिद्वार तक साथ रहने का विचार रखते हैं । समय बड़ा भयावह है । दिन प्रतिदिन कलि का कुचाल

कुचक्र बढ़ता ही जा रहा है। बस! दृढ़तापूर्वक **श्री नाम महाराज** का आश्रय लिये रहिये इसी में सबका कल्याण है । यो तो दुनियाँ दुरंगी है इसके चक्र में पड़ने की आवश्यकता नहीं । अपने विचार अनुभव से जो ठीक लगे और जो शास्त्र संत सम्मत भी हो उसी में दृढतापूर्वक निष्ठा लगन से लगे रहना चाहिये। सभी प्रेमियो को जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा । द्वारका जामनगर दोनों जगह अखंड चालू है पोरबंदर में ४-५-६५ से चालू होगा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

।। श्री राम् ।।

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चन्द्रेश्वर बाबू तथा बालगोपाल !

रामजी मंदिर हाजा

पटेल की पोल, अहमदाबाद

आशीर्वाद !

दिनांक ७-२-६५

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है । श्री अखंड महायज्ञ का अस्खलित प्रवाह चालू है । जहाँ पर एक नवाह की भी आशा नहीं थी वहां श्री प्रभु की कृपा प्रेरणा से लगभग देढ़ मास से अहमदाबाद में श्री अखंड चालू है और लगभग होली तक चालू ही रहेगा । उसके बाद होली के अवसर श्रीद्वारका जाना है क्योकि वहाँ भी छ मास का अखंड प्रारम्भ करके ही चला आया हूँ । इसके अलावा जामनगर में भी छ मास से अखंड चल ही रहा है । यह सब श्री नाम महाराज का प्रताप तथा श्री गुरुदेव की दिव्य प्रेरणा का ही परिणाम । अहमदाबाद में दो वक्तनगर कीर्तन भी इतना भव्य निकला कि यहाँ वाले कहते थे कि तीस वर्ष के अन्दर ऐसा धार्मिक समारोह का नगर कीर्तन नही निकला । आप की श्रद्धा, निष्ठा तथा श्री नामपरायणता, दृढ़ता देखकर मुझे अत्यन्त ही हर्ष होता है कि संसार में रहकर अेसे अेसे सन्त साधु के नाम पर असन्त असाधुओं की स्वार्थ परायणता, विषय लोलुपता के परिणाम स्वरुप

शास्त्र संतो की अमर वाणि में भी कुर्तक द्वारा श्रद्धालु प्रेमी भक्ति परायण भावुकों की वुद्धि में भी भेद भाव, भ्रम डालकर अपना उल्लू सिद्ध करनेवालो के घात प्रत्याघात के बावजूद भी आप की नाम निष्ठा अटल अडीग है। यह पुरायपुन्ज एवं श्री प्रभु की परम कृपा का ही फल है । अगर श्री प्रभु की अहैतुकी कृपा न हो तो जमी भी आप के लिए कोई विपरीत परिस्थिति उपस्थित होती है, तभी कही न कही से आप की निष्ठा पुष्टि के लिये तथा संशय निवृत्ति के लिये किसी न किसी महापुरुष का लेख या दिव्य वाणी प्राप्त हो ही जाती है । जिसे आप मेरे पास भी बार बार प्रेषित करते रहते है । यही आप की सच्ची निष्ठा का परिचायक है। मुझे तो हर्ष तथा गौरव भी होता है कि जैसे बिहार यात्रा में अखंड नाम की बरसाती बाढ आई और गई बडे-बडे आये और वह चले, समय आने पर बरसाती नदिया जल रिक्त ही हो गई किन्तु नहीं नहीं सच्चाईपूर्वक किया हुआ कोई भी कर्म व्यर्थ नहीं जाता । सभी नदियाँ भले ही सूख गई किन्तु एक स्थायी पुराय सलिला गंगा अवशेष है तो भी कोई वाधा नही, वही अनेको कलि कलुषित काया को पावन बना देगी। समया भाव के कारण पत्रोत्तर में विलम्ब हो जाया करता है तो मन में कुछ और नहीं समझना । सभी नाम प्रेमीयो को मेरा सादर सप्रेम श्री राम जय राम जय जय राम। गुजरात से होली के उपर लगभग हजार आदमी का स्पेशल ट्रेन द्वारका जाने वाला है उसमें यहाँ से बहुत से भक्त प्रेमी जा रहे है तो उन लोगों का भी अति आग्रह है कि असे अवसर पर हाजिरी श्री द्वारकाधाम में होवे इसी कारण द्वारका जाना है नही तो यहाँ के बाद बम्बई जाने का था । जैसी भगवत् ईच्छा है । राजदेवसिंह खैरवा वाले के यहाँ नव दिन का अखंड था, उसमें किसी कारण वशात् आप नहीं जा सके ऐसा उसने लिखा है । श्री वैकुन्ठ बिहारीजी गये थे किन्तु पूर्णाहुति के बाद पहुँचे । विशेष श्रीप्रभु कृपा । श्री नाम महिमा अंक तथा प्रार्थना अंक में श्री राम जय राम जय जय राम

निकाला है किन्तु कोई खास तात्विक विवेचन नहीं है ।

हितेच्छु
प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चन्द्रेश्वर बाबू तथा बालगोपाल !

श्री द्वारका धाम,
महाजन वाडी
दिनांक २९-७-६४

शुभाशीर्वाद !

आपका पत्र तथा वस्त्र वगैरह परसों जामनगर में जोशी के घर पर प्राप्त हुआ, अङ्गीकार किया । आशा थी कि आप लोग यथा समय पहुंच जाएँगे या पत्र भी आ जाएगा लेकिन न मालूम क्यों बिलम्ब हुआ? भगवत् इच्छा। वैकुन्ठ बिहारी तो बिहारी ही ठहरे सन्मुख की गति और पीछे की गति और । बम्बई से जाने के बाद भी बहुत दिनों के बाद उनका पत्र भी नहीं आया । यहाँ पोरबंदर, खम्मालिया, द्वारका और अन्त में गुरुपूर्णिमा का महोत्सव जामनगर में बिलक्षण ही हुआ। जब कभी अेक उत्सव सम्पन्न हो जाता है तो ऐसा लगता है कि अब इति हो गई, पराकाष्ठा हो गई। अब कुछ विशेष नहीं हो सकेगा किन्तु श्री प्रभु एवं गुरदेव की कृपा करुणा अनोखी ही है । दिन प्रतिदिन विलक्षणता ही आती जाती है । प्रचार का क्षेत्र भी विस्तीर्ण होता जा रहा है । मैं गुजरात प्रदेश में कभी गया नहीं था। किन्तु बिहार से आने के बाद तत्काल ही गुजरात में जाना पड़ा और अेक मास के अन्दर प्रचार प्रभाव भी विलक्षणा हुआ वगैर पैसे और मनुष्य के यह जो कुछ हो रहा है, सब अेक मात्र **श्री नाम महाराज** का प्रताप, श्री प्रभु की अहैतुकी अनुकम्पा एवं श्री पूज्य पाद सद्‌गुरुदेव की महिती दया एवं प्रेरणा का ही फल है । आप लोगों का भी संग संयोग उन्ही की कृपा प्रेरणा से हुई ऐसा मै मानता हूँ । सभी प्रेमियो को ग्रामवासियों, अपने माता पिता जी को, मुन्ना को सबको

मेरा यथायोग्य सह जय श्री राम । कल्ह द्वारका आया दो दिन बाद बेट द्वारका जाऊँगा. वहाँ से फिर पोरबन्दर होकर अेक ग्राम में दो मास का अखंड चल रहा है । वहाँ जाउँगा। राजदेव सिंह खैरवावाला गुरुपूर्णिमा के दिन ही जामनगर पहुँच गया । मेरे साथ है और कहता है अभी कुछ दिनों तक रहूंगा। महाराजजी की तिथि के लिए श्री वैकुन्ठ बिहारी बहुत जोर लगाये हुए थे कि श्री जगन्नाथ धाम में करुँगा किन्तु अब इतने दिनों बाद उनका पत्र आया है कि लोगों को सूचना की है और प्रयास कर रहा हुँ । अधिक संभावना श्री द्वारकाधाम में या इसी के पास किसी स्थान में होने को लगता है । निश्चय होने पर तो सूचना तो मिलेगी ही । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चन्द्रेश्वर बाबू तथा बालगोपाल जुनागढ

आशीर्वाद ! दिनांक २८-९-६४

श्री प्रभु कृपा ही जीव मात्र के कल्याण का अेक मात्र साधन होते हुए भी जीव अपनी अल्पज्ञता, जड़ता, अज्ञानता के कारण उस महामहिमामयी कृपा से वंचित रह सदा इस भयंकर भवाटवी में अनन्त काल से भटक रहा है और उस समय तक भटकता ही रहेगा जब तक वह पूर्णरुपेण अभिमान शून्य होकर श्री भगवत् शरणागत नहीं हो जाए । अभिमान ही जीव और शिव के बीच अेक भयंकर आवरण है और इस अनादि मिथ्या आवरण भंग के लिये ही भिन्न-भिन्न रूचि एवं संस्कार बाले जीवों के लिए विभिन्न समस्त साधनायें में हैं । नहीं तो सत्य-परमात्मा-आत्मा तो एक ही है और समस्त प्राचीन तथा अर्वाचीन शास्त्र एवं सन्त भी इस परम सत्य को अेक स्वर से अंगीकार भी करते हैं ।फर भी देश काल परिस्थिति के अनुसार उस सत्य की उपलब्धि की साधनाओं में मेद करना पड़ता है और इसी भेद या परिवर्तन का ज्ञान कराने

के लिए समय समय पर भक्तों एवं सन्तो का अवतार होता है जो अपने अनुभव रुपी प्रयोगशाला में तत्कालीन साधनाओं का विश्लेषण, विवेचन, संशोधन, अनुसंधान एवं अनुभूति कर जगत के समक्ष प्रस्तुत करते हैं और जिज्ञासु, मुमुक्ष संस्कारी जीव उन साधनाओं का आश्रय ग्रहण कर श्रद्धा, विश्वासपूर्वक, श्रवण, मनन, निदिध्यासन द्वारा अपने जीवन को कृत्य-कृत्य बना लेते हैं । सदा के लिए कृतार्थ हो जाते हैं । जन्मवन्धन, जरा व्याधि, उपाधि से सर्वथा निर्मुक्त हो जाते हैं उनकी द्दष्टि में न कोई अपना होता है और न पराया । अगर वह भक्त है तो उसकी द्दष्टि में भगवान के, अपने इष्ट के सिवाय कोई अन्य नही, सर्वत्र भगवान ही भगवान अगर वह ज्ञानी है, ब्रह्मवादी है, तो उसकी दृष्टि में ब्रह्म के सिवाय आत्मा के सिवाय किसी अन्य का अस्तित्व ही नहीं । फिर भेद और विरोध हो कैसे सकता है ? और खास करके उस सन्त भक्त और आचार्य के प्रति जिसकी महत्ता, विद्धता, शीलता, नीतिमता, सर्वांगपूर्ण उपादेयता की प्रशंसा नास्तिक, अधर्मी, अन्यधर्मी भी मुक्तकंठ से करते है । अगर एेसा कोई व्यक्ति है, तो वह न तो भक्ति मार्गी हैं, न ज्ञानमार्गी हैं, न कर्ममार्गी है वह केवल निरा भ्रममार्गी हैं । स्वयं भ्रम में पड़ा हुआ है दूसरे अज्ञानी अभिमानी, विषयी प्राणियों को भ्रम में डालकर उसके लिए नरक का मार्ग ही प्रशस्त करा रहा है । जबकि सबसे बड़ा ब्रह्मवादी आदि शंकराचार्यजी महाराज ने षटपटी एवं चरपटपंजरी की रचना कर अन्तमें डंके की चोट पर यह घोषणा की कि दिना मयि रजनी सायं प्रातः शिशु वसंतः पुनरायतः कालः क्रीडति गच्छति आयुः तदपि न मुञ्चति आशा वायुः। प्राप्ते सिन्निहिते मरणो नहि नहि रक्षति डुज्ञकिच करण । भज गोविन्दम्, भज गोविन्दं गोविंदम् भज मूढ़मते । पुनरपि जननं पुनरपि मरण पुनरपि जननी जठरे शयनं । इह संसारे खलु दुस्तारे कृपया पारे पाहि मुरारे । भज गोविन्दं भज गोविन्दं गोविन्द्र भज मुढ़मते । पातंजलि योगासूत्र में भी तस्यवाचकः पणवः उस अव्यक्त व्यापक परमात्मा का बोध कराने वाला उसका नाम है और जब संज्ञा किसी वस्तु

के नाम को कहते है तो किसी अव्यक्त व्यापक, अपरिचित अनजान पदार्थ या तत्व का बोध उसके नाम द्वारा ही होता है अन्तर में किसी व्यक्ति, पदार्थ या तत्व का रुप विराजमान होने पर भी जब तक नाम का ज्ञान नही होता तब तक उसकी पूरी पूरी परख था पहचान नही होती । तो परमात्मा जो सर्वव्यापक, अव्यक्त आगोचर, अविनाशी उसकी प्राप्ति, उसका बोध, उसका ज्ञान, उसके नाम वगैर कैसे हो सकता है ? जैसे 'अ' मूल अक्षर समस्त वर्णो में व्याप्त हैं फिर उसका भी नाम 'अ' रखा ही गया है अगर यह 'अ' नाम न हो तो सभी वर्शी अक्षरों में व्याप्ति 'अ' का भी बोध पहचान किस प्रकार हो सकता है ? अतः ऐसे भ्रमवादियों, उद्धभ्रान्त लोगों के विवाद में न पड़कर शास्त्र, सन्त सम्मत सिद्धात में अपने विचार और बुध्दि के द्वारा निश्चय करके अपनी श्रद्धा निष्ठा को अविछिन्न बनाये रखे । जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि, "जिसकी दृष्टि में श्री गोस्वामीजी जैसे संतभी उद्‌भ्रान्त थे वह स्वंय कितना उद्‌भान्त होगा? श्री गुरु महाराजकी तिथि डाकोर जी में बड़े समारोह के साथ मनाई गई। कोई आशा नहीं थी किन्तु आशातीत सफलता मिली। वासुदेवशय श्री द्वारकाजी होकर यथासमय पहुंच गये थे और पूरा पूरा लाभ उठाये। गुजरात का प्रचार भी विलक्षण ही है । **यह सब श्री नाम महाराज का प्रताप श्री गुरुदेव का संकल्प, श्री हनुमन्तलालजी की सहायता एवं श्री प्रभु की अहैतुकी अनुकम्पा, प्रेरणा का ही फल है नहीं तो मेरे जैसे अकिंञ्चन, अल्पज्ञ, शक्तिहीन जीव से हो ही क्या सकता है** सभी प्रेमियो को जय श्री राम ।"

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चन्द्रेश्वर बाबू, प्रेमीजन तथा बाल गोपाल ! टीक्कर

आशीर्वाद ! दिनांक २४-११-६७

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । आप लोगों का बहुत दिनों से कोई

समाचार प्राप्त नही है। श्री गुरुपूर्णिमा के अवसर पर आप की भेजी हुई सभी वस्तुओ प्राप्त हो गई थी। श्री पूज्यपाद गुरुदेव की तिथि के महोत्सव के बाद शायद मैने ओक पत्र आप को भेजा था, असा मुझे भान सा होता है। किन्तु कोई प्रत्युत्तर न मिलने से ऐसा प्रतीत हुआ कि शायद मैने पत्र आपको लिखा ही नहीं, कुछ भी हो, श्री प्रभु इच्छा। शशीकान्त (सच्चिदान्द स्वामी) वहां से नुजफ्फरपुर वेरावल श्री महाराजकी तिथि पर आये थे, अभी यही हैं । आपका बहुत वखान करते थे और कहते थे कि वे मुझे अपने घर पर ले जाना चाहते थे। किन्तु अभी नये भवन का निर्माण करा रहे हैं, इसी कारण मेरा प्रोग्राम बन्द रखा। जब इधर उधर भटक कर थक जाता है तब बालूघाट आश्रम का आश्रय लेता है या मेरे पास पत्र लिखता हैं मेरे पास आ जाते है मेरे यहाँ तो आने वाले को ना नही । जानेवाले को हाँ नही आग्रह नही। कितनी बार आया गया किन्तु मैने तो कभी कुछ कहाँ नहीं । जब तक इच्छा हो रहो, किन्तु उसकी झूठी अहम् और आत्मश्लाधा तथा मान प्रतिष्ठा की वृत्ति जाती ही नहीं है । मेरे सामने कुछ बोलेगा तो दूसरे के सामने कुछ बोलेगा मेर सामने होगा तो मेरी जैसी बात करेगा और रोयेगा दूसरे के सामने स्वामीजी तो मेरा मित्र है । अभी जामनगर तक साथ थे, वहाँ पोरबंदर संकीर्तन भवन अभी है । श्री गुरुदेव एवं श्री प्रभु कृपा से अखंड का प्रवाह नई नई जगहो में सुचारु रुप से चालू ही है । कभी शहरो में कभी गांवो में जाना आना पड़ता है । जिससे स्थिति व्यवस्थित नहीं रहती और उसी कारण पत्र व्यवहार भी यथासमय नही हो पाता। जामनगर में अखंड का लगभग ४ वर्ष १२ दिवस आज हुआ। पोरबंदर में भी अखंड चालू ही है । द्वारका में भी अखंड चालू ही रखा है । किन्तु छगनलाल (माताजी) खिचड़ी सदाव्रत वाला उसने अखंड को अपनी आजीविका बना लिया था । जिससे वहाँ अखंड बंद करना

पड़ा । किसके उपर ऐसे समय श्रद्धा विश्वास किया जाए ? समझ में नहीं आता । **श्रीद्वारका धाम श्री संकीर्तन मंदिर का शिलान्यास ११-१२-६७** मार्गशीर्ष शुक्ल दशमी रोज सोमवार को होनेवाला है । उसके पहले वहाँ के प्रेमियों का ऐसा विचार है कि संकीर्तन मंदिर का निर्माण काम जब से प्रारम्भ हो और जब तक चालू रहे तब तक उसके पास के ब्रह्मपुरी में जहाँ वर्षोतक अखंड हुआ है, अखंड चालू रखा जाये। जिससे काम करने वालों के कानो में नाम ध्वनि पड़ती रहे । अतः शायद १०-१२-६७ के पहले वहाँ भी अखंड का प्रारम्भ हो जाएगा । उसके बाद १९-१२-६७ से **अहमदाबाद-साबरमती में ४० दिवस का अखंड प्रारम्भ होने वाला है** । तदुपरान्त पालेज में अखंड है इस तरह कभी भी अवकाश मिल नहीं पाता है । यत्र तत्र प्रवृत्ति चालू ही रहती है। यह सब श्री पूज्यपाद गुरुदेव की अेक मात्र अहैतुकी कृपा का ही फल है। बिहार के प्रेमियो में से आप जैसे दो चार है बाकी तो सब के सब बरसाती नदी की तरह उमड़कर ग्रीष्म ऋतु में बिलकुल सूख ही गये। भगवान! सबका भला करे, सबको सद्बुद्धि, सदविचार प्रदान करे यही हार्दिक कामना सह श्री प्रभु प्रार्थना । राजदेव, बिजली, श्री रमाशंकर बाबू मुखिया खैरवा वाले, यमुना बाबू शिवहर वाले, श्री योगिन्द्र बाबू प्रधानाध्यापक श्री शिवहर हाई स्कूल वाले, इन लोगो का विलक्षण प्रेम भाव, श्रद्धा निष्ठा है । श्री प्रभु नाम का आश्रय लेने वाला का सदा मंगल ही मंगल है । वहाँ के सभी प्रेमियो को, अपने ग्रामवासी प्रेमीजनों को अपने पिताजी को, मुन्नाजी को घर के सभी लोगों को मेरा यथायोग्य सह श्री राम जय राम जय जय राम । विशेष श्री प्रभु कृपा । पत्रोत्तर जामनगर, द्वारका या पोरबंदर के पते पर भेजियेगा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चन्द्रेश्वर बाबू, बालगोपाल तथा
समस्त नाम प्रेमीजन !

श्री राममंदिर,
हाजा पटेल की पोल,
अहमदाबाद

सप्रेम जय श्री राम दिनांक २७-२-६७

श्री प्रभु कृपा विलक्षणा है किन्तु उनकी लीला विचित्र है। समझ में ही नही आता कि वे कब क्या करना कराना चाहते हैं और किसी के द्वारा कराना चाहते हैं । यों तो यश, अपयश, हानिलाभ, दुख सुख, मान अपमान जीव के अपने कृतकर्मो का ही परिपाक होता हैं किन्तु परमात्मा सबके नियन्ता होने के कारण उसके कर्मो के फल का विधाता मान लिया जाता है । वास्तव में समझ जाय तो भगवत् सम्बन्धी कर्म याने भगवत् साधन अराधन का तो सच्चा फल अन्तः करण की निर्मलता ही है जिसकी प्राप्ति हो जाने पर श्री प्रभु का, आत्मा का, सत्यका, चेतन का प्रकाश स्वयं ही अन्तः करण पर पड़ने लगता है ? पड़ने क्या लगता है? प्रकाश पड़ता तो सदा से ही था किन्तु माया के विषय के सतत चिन्तन से चैतन्य आत्मा के प्रकाश ग्रहण करने की शक्ति चित्त में से क्षीण हो जाने के कारण माया के आवरण द्वारा अच्छादित हो जाने के कारण प्रकाश या आनन्द अनुभव में ही नहीं आता था। जब अन्तःकरण में से मनीलता निकल गई तो बिना प्रयास ही उस चैतन्य आत्मा की, परमात्मा, श्री प्रभु राम की महती महिमा अनुभूत होने लगी । इसके लिए दृढ़ निश्चयपूर्वक अेक मात्र नाम साधना की ही आवश्यकता है । वह नाम भी अखंड, अजश्र, तैलधारावत् होवे तो तत्काल अनुभवम होवे, कारण कि पहले धनीभूत हुई आसुरी वातावरण को बदलने के लिये सतत और जबरजस्त ध्वनि की आवश्यकता है किन्तु हम लोगों से अेसी साधना नहीं हो पाती । अतः विशेष अनुभव नहीं होता । अब रही बात (बगही) रीगा वाले अखंड की, इस घटना

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

का समाचार जानकर हर्ष, विषाद और क्षोभ अेक साथ ही उत्पन्न होता है। हर्ष इस कारण कि इतनी जोरदार ध्वनि द्वारा बहुत बड़ा कल्याण होता। बहुत अंस में आसुरी वातावरण क्षीण होता। विषाद इसलिये कि इस दुर्घटना से नास्तिक, बुद्धिवादी, जड़वादी समाज को अध्यात्मिक शक्ति में, श्री भगवन्नाम महिमा में, साधु सन्तो के पवित्र संकल्प मे अविश्वास, अश्रद्धा तथा संशय उत्पन्न होगा जिससे समाज में बची खुची जो आस्तिकता है उसमें, आघात पहुँचेगा। क्षोम इसलिण कि जिन लोगों को सच्ची नाम निष्ठा नहीं है वे भी नाम की दोहाई देकर विश्वकल्याण की हामी भरते हैं । जिसका परिणाम ऐसा भंयकर होता है अगर नाम में सच्ची निष्कपट, श्रद्धा निष्ठा होवे और समझता होवे कि नाम रटन जपयज्ञ ही सर्वोपरि साधन है तो दूसरे यज्ञ यज्ञादि का आडम्बर क्यों करे ? नाम जप में दस अपराध माना गया है उसमें यह भी अेक महान अपराध है कि जो नाम के साथ किसी भी अन्य साधन, सहाय की तुलना करना,। जब "जप यज्ञ" भगवान का साक्षात् स्वरुप ही है जैसा कि विभूति योग गीता १०। २५ श्लोक में भगवान ने स्वंयं कहा है तो फिर इतर यज्ञ यज्ञादि की आवश्यकता ही क्या? जब सीर्फ नाम के द्वारा भोग मोक्ष तथा विश्वकल्याण सम्भव है जैसा कि सभी सन्त तथा सत्शास्त्र कलिकाल के लिए कहते है फिर किसी अन्य साधन की आवश्यकता ही क्या? जब सन्त शास्त्र यह दिव्य तुमुल उद्घोष है। **हर्रेनाम, हर्रेनाम, हर्रेनाम केवल, कलौ नास्त्येव, नास्त्येत, नास्त्येन गित रन्यथा** । तो दूसरे साधन का नामाराधन में साथ आयोजन करना ही क्यों ? इसके अन्दर अपनी स्वार्थपरता, संर्कीणता नाम महिना की अनभिज्ञता ही है, नहीं तो नामयज्ञ में अभी तक कही भी अनिष्ट सुना और न देखा गया है । मेरा तो निजी अनुभव है कि नाम यज्ञ में भयंकर अनिष्ट भी इष्ट बन गया है । इस कारण समाज सुधारकों, धर्म प्रचारकों के लिए शास्त्र की आज्ञा है कि ऐसे लोग खूब समझदारी पूर्वक् काम करे । पूज्य महात्मा गांधीजी जिन्हे राम नाम की सच्ची निष्ठा थी क्या कभी भी यज्ञ यज्ञादि इतर साधन

का सहारा लिया ? नामाराधन द्वारा स्वतंत्रता की प्राप्ति तथा हँसते हँसते राम कहते मौत के आलिंगन द्वारा जीवन मुक्ति का संदेश बस ! थोड़ा कहना समझना बहुत । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चन्द्रेश्वर बाबू, बालगोपाल तथा रामधुनमंडल!

जय हिन्दबाडी,
जामनगर

जय श्री राम ! दिनांक १५-९-६५

श्री प्रभु कृपा से अभी तक सब आनन्द मंगल है । आगे श्री प्रभु जाने। इधर सौराष्ट्र में खास कर जामनगर में दो बार पाकिस्तान में बर्म्बामेन्ट किया है अेक तो ठीक श्री गुरु महाराज के तिथि के दिवस ही । जिससे ऐसा आतंक लोगों में फैल गया कि दूसरे दिन से गांव में भगदड मच गई किन्तु श्री प्रभु कृपा से इतनी भयंकर बम्बार्टमेन्ट के बावजूद भी कोई क्षति नहीं हुई और पाकिस्तान का दो प्लेन यहाँ के सुरक्षादल ने तोड़ डाला। दूसरे दिन द्वारकाधाम पर उन लोगों ने भयंकर बम वर्षा की, किन्तु बिलकुल आरक्षित होने पर वहाँ भी कुछ नही हुआ । यहाँ तक ही द्वारका में जहाँ माताजी (छगनलाल) के घर पर धुन चल रहा है । वह स्थान वस्ती के बिलकुल बीच में है, वहाँ धुन मंडप के बाजू के खाली मकान पर बम गिरा, जिस दिवाल के नीचे छ बच्चे सोये हुए थे, वह छत टूटा, दिवाल पडा किन्तु न किसी बच्चे को कोई हानि पहुँची, न मकान को, न भंडप को, न आजू बाज के मकान या वस्ती को । इस प्रकार श्री प्रभु कृपा एवं भगवन्नाम का प्रत्यक्ष प्रमाण और क्या हो सकता है ? किन्तु फिर भी हिन्दुओ में भगवन्नाम निष्ठा या नगद भरोसा की भावना जागृति नही हो रही है। लोग हरि हरि करने के बदले हाय ! हाय !

कर रहे है और भाग रहे है। बिहार से गिरधारी लाल तथा, द्वारकाप्रसाद मुझफ्फरपुर से और श्री यमुना बाबू शिवहर से बड़ी हिम्मत, श्रद्धा, निष्ठा तथा आत्मबल पर, यथा समय पहुंच गये थे जिस दिन महाराज की तिथि थी उसी दिन बम्बार्टमेन्ट शुरु हुआ इससे ऐसा लगने लगा कि तिथि इस बार निर्विघ्न पूर्ण होगी या नही ? साथ ही ऐसा विचार आने लगा कि अगर बिहार या बाहर वाले कोई न आवे तो अति उत्तम किन्तु आने वालें लाखों अफवाहो के सुनते हुए भी आ ही गये उसमें श्री यमुना बाबू का आना तो एक पहेली सी बन गई, उन्हे तो दिल्ली से ही रोका गया कि जामनगर खतम हो गया, मत जाओं, गाड़ियों की भी काफी गड़बड़ी थी फिर भी वे हिम्मत करके आगे बढ़े और किसी तरह यत्र तत्र गाड़ी की अदली बदली करते जब राजकोट पहुँचे तो और भी उनकी परेशानी बढ़ गई। रेलवे वाले, पुलिश वाले सबके सब कहने लगे अभी यही से पीछे लौट जाओं, जामनगर जाने की चेष्टा मत करो वहाँ पहुँचने की कोई व्यवस्था नहीं है । गाँव खाली हो गया है किन्तु उन्होने निराश होकर अत्यन्त दीन बन कर, आर्तनाद से श्री प्रभु को पुकारना शुरु किया और तत्काल ही एक आटोरिक्सा सामने से आकर पूकारने लगा जामनगर ! जामनगर ! उनके हर्ष का कोई पार न रहा। उस समय कोई भी सवारी जामनगर जाने के लिये मिलना असम्भव था मिले तो रात्रि के दो बजे ५४ मील की यात्रा भी अनजान व्यक्ति के लिये और अनजान वाहन वाले के साथ शून्यशान्य सर्वत्र ब्लेक आउट (अंधारपट) में हिम्मत करना कितना भयावह है किन्तु भक्त की निष्ठा एवं सच्ची श्रद्धा भक्ति के सामने न कुछ भयंकर ही है और न भय ही है । **क्योंकि भयको भयभीत करनेवाले काल के भी महाकाल श्री प्रभु है और उनसे भी श्रेष्ठ और समर्थ उनका नाम है जो सर्व मंगलमय है तो ऐसे श्री नाम महाराज का आश्रय लेनेवाले को भय या अनिष्ठ हो ही क्या सकता है ? अभाव है सीर्फ श्रद्धा, निष्ठा, दृढता, विश्वास का** । जब तक श्री महाराज की तिथि रही तबतक सात दिवस तक जामनगर किसी प्रकार

की गड़बड़ी नही हुई न बम्ब फूटा न कोई आतंक फैला जब सब आनन्द पूर्वक पूर्णिमा को सम्पन्न हो गया और दूसरे दिन आह्‌वानित समस्त देवों का जब विधिपूर्वक विसर्जन कर दिया गया तो तीसरे दिन रविवार को फिर सन्ध्या को भयंकर बम्बार्टमेन्ट पाकिस्तान ने किया जो गिरिधारी, यमुना बाबू तथा द्वारका के सन्मुख ही हुआ। अतः मैने उन लोगो को आग्रह किया कि आप लोग जल्दी से जल्दी अपने घरो को लौट जाइये। गिरिधारी द्वारका कल्ह विहार के लिए रवाना हो गये किन्तु यमुना बाबू द्वारका धीश का दर्शन करने गये और वहाँ से सुदामापुरी होते हुए बिहार जायेगें। आप ने जो अपने यहाँ की, ईनार,-कुआ के जल की अंध विश्वास की बात लिखी उसकी विषय में क्या कहा जाए ? यह हिन्दू जाति इतनी पतित और विचार हीन हो गई है कि झूठी धर्म निष्ठा के नाम अधर्म निष्ठा का प्रचार, विस्तार करती जा रही है। जिसके फल स्वरुप काल की भयंकर मार पड़ रही है । यह देख कर लोगों को पश्चाताप के सिवाय और होवे ही क्या ? इसी का नाम कलिकाल ? और कलिकाल है ही क्या? विचार हीनता और स्वार्थपरायणता, विषयविलासिता, भोगवासना, असत्य का ही संग्रह, संचय का प्रवल प्रयास का नाम ही कलिकाल है। आपने नाम जय के विषय मे जो दो उदाहरण निवेदित किये उसमें संसय जैसी कोई बात नहीं । वे दोनों नाम सम्बन्धी लेख विद्वानो के है किसी संत के नहीं अतः पूर्ण विश्वासनीय नही हैं । कारण कि विद्वान अपनी बुद्धि के आधार पर लिखता है और सन्त अपनी अनुभूति के आधार पर । विद्वता श्रम साध्य है। सन्तता या सन्तपना कृपा साध्य है। एक कल्पना प्रसूत दूसरा अनुभव प्रसूत । अतः सन्त सर्वथा मान्य है। दूसरी बात वहाँ मंत्र और नाम का प्रसंग है मंत्र में विधि है नाम में कोई विधि विधान नही । विजय मंत्र नामात्मक मंत्र है इसलिए इसका जप भी हो सकता है और धुन भी, विजय मंत्र हरे राम हरे राम ये नामात्मक मंत्र है इससे दोनों हो सकता है जप भी और कीर्तन भी । संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदासजी की आज्ञा

है । भाय कुभाय अनख, आलसहु' तो संशय के लिए स्थान ही कहा, किसी प्रकार नाम लेना चाहिए जिसको नाम लेना नहीं है सिर्फ उपदेश करना है वही इस तरह लिखा करते है। जिससे सामान्य व्यक्ति में संशय पैदा हो जाता है और किसी भी अवस्था में कहीं भी कर सकते है आप का १५ रुपया मिल गया । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चन्द्रेश्वर बाबू तथा बाल गोपाल ! श्री द्वारकाधाम

आशीर्वाद ! दिनांक ९।१२।६४

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है। आज छगनलाल खिचड़ी सदा व्रतवालें से आप का समाचार जानकर विशेष प्रसन्नता। अपना तो जो भी कुछ चिन्ता नहीं अपने प्रेमीजन,भगवत स्नेहीजन आनन्द प्रसन्न रहें, बस! इसीं में अपनी प्रसन्नता। अपने जीवन की मुराद। श्री प्रभुनाम रटन, स्मरण,चिन्तन करने कराने का भी कोई इतर लक्ष्य नहीं, सीर्फ इतना ही कि सत्यशास्त्रों एवं संतो की अनुभूतियों का आश्रय ले आधि,व्याधि,उपाधिग्रस्त प्राणी कुछ भी सुख शान्ति का अनुभव करे करावे। आत्मकल्याण के साथ-साथ विश्वकल्याण सम्पादन का भी भागी बनें और इस बढ़ती हुई कलिकाल की भीषण करालता- इति,भीति, रोग, शोक, भय वियोग से कुछ त्राण पा सके। इस स्थिति की उपलब्धि का अेक मात्र अमोघ साधन श्री प्रभुनाम का दृढ़ अवलम्ब ही है। अेंसा सभी सन्तों तथा शास्त्रों का निश्चित मत है। बस! इसी प्रभुनाम का दृढ़ आश्रय ग्रहण किये रहें इसी में अपनी सभी साधनों का पर्यावसान! श्री प्रभु कृपा वगैरह यह सम्भव भी नहीं। जब जीव का अनेक जन्मजन्मातरों का पुरायपुंज उदय होता है तभी जीव की प्रवृत्ति संत या भगवंत की ओर होती है अन्यथा तो यह जीव अनादि काल

से भवप्रवाह में बह ही रहा है और जब तक उसकी अहैतुक अनुकम्पा न होगी तब तक बहता ही रहेगा कारण कि जीव मायाग्रस्त अधोमुखी होने से स्वतः सत्कर्म,भगवत् धर्म की ओर प्रवृत्त होने की शक्ति ही नही। अगर होती तो मायावश रहता ही क्यों? इस प्रभु की गुणमयी माया से त्राण तो उसकी दया से हो सकती है। अभी द्वारका में १३ दिवस से अखंड चल रहा है जिसकी आज पूर्णाहुति है और कल्ह से पुनः छ मास का अखंड प्रारम्भ होगा । जामनगर में पाँच मास से अखंड चल रहा है। २१।१२।६४ से ३०।१२।६४ तक अहमदाबाद में प्रोग्राम है रामजी मंदिर हाजा पटेल की पोल अहमदाबाद । श्री प्रभुकृपा से रामनाम की अनवरत धारा चल ही रही है अभी गुजरात में। सभी प्रेमियों को जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारकाधाम

प्रिय चन्द्रेश्वरजी,राम धुन मंडल तथा

बाल गोपाल !

दिनांक २०।७।६५

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द ही आनन्द है। श्री वृन्दावन से हरिद्वार जाते वक्त मेरे पाव की अेक अंगुली में छोटी सी फुन्सी हुई और ठीक जैसी सराठे में हाथ की अंगुली की स्थिति हुई, वही भयंकर स्थिति हरिद्वार में पाँव की अंगुली की हो गई। राजदेव साथ में था, उसने विलक्षण सेवा की। घाव भरते-भरते अेक मास लग गया। मैनें किसी को भी सूचना नही ं की कारण जब श्री प्रभु अन्तर्यामी,घट घट वासी साथ में ही हैं तो उनका अनादर कर,अज्ञानी,अल्पज्ञ,जड़ मनुष्य को सूचना भेजने से लाभ ही क्या? अगर अेसा करें भी तो इस समय मेरे जैसे अकिंचन साधु को पूछने वाले भी कितने हैं ? नही ं हैं,अेसी बात तो नहीं है किन्तु विरले ही हैं-जो सचमुच सत्यानुरागी हैं, श्री सर्वशास्त्र,संतसम्मत,समस्त

वेद शास्त्रों के सार स्वरुप श्री भगवन्नाम में श्रध्धा,निष्ठा,भाव रखनेवाले हैं और जो निष्ठा भी अनेकजन्मो के समाजित ही पुरायपुंज्जों का ही परिपाक है- अेसे विरले ही श्री प्रभु के लाडिलें लाल हैं जो मेरे जैसे के प्रति भी श्री प्रभुनाम के नाते प्रेमभाव रखते हैं। नही तो इस समय तो जो भी सत्कर्म या सेवा की जाती है,वह स्वारथ या कीर्ति के लोभ से ही। सच्चाई,संयम,सदाचार,सद्विचार से नहीं- नहीं तो यह राष्ट्र,समाज इतना दुखी होता ही क्यों? जबकि संतो का प्रत्यक्ष अनुभव है कि इस कराल कलिकाल में भी जीव श्री भगवन्नाम का आश्रय लेकर पुर्ण सुखी हो सकता है। इहलौकिक,पारलौकिक भोगों के साथ श्री भगवतप्रेम तथा भगवद्धाम की भी प्राप्ती कर सकता है ।

रामनाम कलिकामतरु, सकल सुमंगल कंद ।
तुलसी करतल सिध्धि सब, पग पग परमानन्द ॥
साधु गाँठि न बांधई, उदर भराता लेय ।
आगे पीछे हरि खड़े जब मांगे तब देय ॥

इस श्री कबीर की अनुभूति को श्री प्रभु ने मेरे लिये इस बार प्रत्यक्ष करके दिखलाया जबकि यह शरीर बिलकुल पंगु बन के दिल्ली के स्टेशन पर बैठा था,अेक कदम चलना भी कठिन था और किराये का पैसा भी जो श्री प्रभुबाबू वकील के पास था वह भी कोई धूर्त उनके पास से ठग लिया,उस समय बिलकुल निराधार बनकर क्या करता? यह कुछ समझ में नहीं आ रहा था जरा मन में उसका चिन्तन हुआ प्रभु क्या करोगें? अेक सेकेन्ड के भीतर सामने जामनगर का अेक प्रेमी खड़ा है बाद में पचाँसों आये। बस आनन्द ही आनन्द। कपड़े का पार्सल और प्रसाद ११) रुपया मिला ९ दिवस के बाद चलता अखंड में पैसा लगा दिया। अभी दो-तीन दिन बाद जामनगर जाना है। सभी प्रेमियो को मेरा जय श्री राम। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चन्द्रेश्वरजी, बाल गोपाल !

जामनगर

आशीर्वाद !

दिनांक ३०।८।६०

पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ। श्री प्रभु की लीला विचित्र ही है, इसमें बड़े-बड़े ज्ञानी भी मोहित हो जाते हैं तो सर्व साधारण की तो बात ही क्या? इस कलिकाल में सदैव इसी प्रकार संघर्ष चलता ही है और, चलता ही रहेगा,जिसका परिणाम सर्वत्र दुख, अशान्ति, दैत्य, दरिद्रता का ही प्राबल्य होगा। राजा प्रजा में भी इसी प्रकार का मनोमालिन्य तथा संघर्ष चालू ही रहेगा। इसका पूरा-पूरा ज्ञान प्राप्त करना हो तो श्री गोस्वामी तुलसीदासजी रचित श्री रामचरित मानस उत्तरकांड अर्न्तगत कलि वर्णन पढ़िये, समझिये और मनन कीजिये तो अनुभव होगा कि गोस्वामी का कथन किस प्रकार अक्षरशः सत्य होता जा रहा है। होना भी निश्चित ही है कारण कि वे सबके सब त्रिकालज्ञ थे और अपने अनुभव के आधार पर ही भूत,भविष्य और वर्तमान तथा सत्ययुग त्रेता द्वापर एवं कलि का चरित्र चित्रण किया है। धर्म भी लोग यश या स्वार्थ के लिये ही करेंगे। सर्वत्र वर्णसंकरता, अनाचार, व्यभिचार के कारण सत्यता,शान्ति एवं सत्कर्म का अभाव सा हो जाएगा। राजा तो टैक्सो के द्वारा प्रजा का इतना शोषण ही कर जाएगा। **"द्विज श्रुतिं बेचक,भूप प्रजासन।" कोऊ न मान निगम अनुशासन।" असन याने भोजन अर्थात् राजा या शासक वर्ग** शासितो को,प्रजा को निगल जाएगे। **जिसका परिणाम "कर दंड विबंड प्रजा नितही।"** यह कलिकाल सभी **अनर्थो का मूल है, पाप का भंडार है** किन्तु इसमें अेक ही महान गुण है कि जो भी व्यक्ति श्रद्धा विश्वासपूर्वक श्री प्रभुनाम का आश्रय लेगा वह अवश्य ही इस संसार सागर से जन्म-मरण से सदा के लिये मूक्त हो जायेगा। कलिकाल की अेक ही विशेषता है- **"भाव, कुभाव, अनरव, आलसहुँ"** । नाम निष्ठा बनाये रखना । इसी कारण सभी सन्त तथा शास्त्र कलिकाल को सभी युगो से श्रेष्ठ मानते हैं । बस ! **श्री नाम महाराज** का दृढ़ आश्रय लिये रहिये यहाँ सब मंगल

ही मंगल है। श्री गुरु तिथि जामनगर में ही है। स्वास्थ्य ठीक है गुजरात का प्रोग्राम था किन्तु अभी बंद किया है। सभी प्रेमियों को जय श्री राम।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चन्द्रेश्वर बाबू, जैतपुर मोरबी
राम धुन मंडल तथा बाल गोपाल ! दिनांक २१।१०।६५

सप्रेम सस्नेह आशीर्वाद सह जय श्री राम ।

श्री प्रभु कृपा सब आनन्द है। आप का पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ। राजदेव यों ही बोला करता है, मैने निश्चयात्मक रुप से कोई स्वीकृति उसके लड़के के यज्ञोपवित में आने की नहीं दी है। आग्रह करता था, मैने कहा था, समय आयेगा तो देखा जायेगा, जैसी प्रभु की मर्जी। किन्तु वह तो व्यर्थ सर्वत्र यह बवंडर फैला रहा है कि बनारस करुँगा तो प्रयागराज करुँगा, तो खैरवा करुंगा । अभी तो इधर तीन तीन जगहों में अखंड चल रहा है, उसकी पूर्णाहुति का वक्त आ रहा है । द्वारका प्रसाद मुजफ्फरपुर वाला का भी अेक मास अखंड कराने का आग्रह है । अब कहाँ कहाँ दौड़ा जाए कोई सहायक भी नही । अवस्था और शरीर भी अपना काम कर ही रहा है । इस समय भजन के साथ साथ मातृभूमि तथा स्वतंत्रता की रक्षा का भी प्रश्न है । जगह-जगह लोगों में जागृति लाने की जरुरत । श्री प्रभु नाम का दृढ़ आश्रयपूर्वक। सच्चिदानन्द अभी अमृतसर में है अेसा तो मुझें नहीं जचता है आगे भगवान जाने। बस नाम रटने रटाने की खास आवश्यकता है जिससे वायुमंडल विशुद्ध बने, बढ़ी हुई आसुरी सम्पति का विनाश हो, दैवी सम्पदा का विकास हो जिससे प्राणी में सुख शान्ति आवे। अशान्ति, आतंकमय, चिन्ताका वातावरण नष्ट होवे । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चन्द्रेश्वर बाबू, बाल गोपाल
तथा राम धुन मंडल !

श्री द्वारकाजी

आशीर्वाद ! दिनांक २७-११-६५

श्री प्रभु की कृपा से सब आनन्द है जामनगर में बम्वार्टमेन्ट के पश्चात् श्री पूज्य गुरुदेव महाराज की तिथि सानन्द, सकुशल सम्पन्न कर मैं अेक महात्मा के अति आग्रह के कारण जैतपुर गया था,जहाँ से आप को अेक पत्र दिया था। वहाँ से सीधे पोरबंदर जाना था। किन्तु उस इलाके में प्रचार बढ़ जाने से लगभग अेक डेढ़ मास लग गया। दीपावली के अवसर पर जामनगर आना पड़ा और वहाँ से द्वीतिया के दिवस द्वारका आया, यहाँ लोगों में इतना उत्साह,उमंग आया कि गल्ली गल्ली में अखंड चलने लगा इसका कारण यह था कि जिस दिन मैं द्वारका में आया, उसी दिन वगैर सूचना ही डेढ़ मास से चालू अंधारपट (Black out) निकल गया और सारी द्वारकापुरी में बड़े-छोटे अबालवृद्ध नरनारी स्वभाव से कहने लगे महाराज! के गाँव में आते ही अंधकार मिट गया अच्छे-अच्छे पढ़े लिखे लोग भी जो किसी समय विरोधी थे वे भी कहने लगे महाराज आप के आते ही Black out खतम हो गया। जनता को इसकी बिल्कुल खबर नही थी कारण उसी दिन संध्या को दिल्ली से आर्डर आया और अंधारपट निकल गया किन्तु आनेवाले और अेसी प्रसंशा करनेवाले लोगों को मैने इतना ही कहा कि मेरी झूठी प्रशंसा करके मुझे क्यों गिराना चाहते हो **"ना मैं किया न कर सकू साहीब करता मोर, करत करावत आप हैं पलटू पलटू शोर"** हाँ ! श्री प्रभु द्वारकाधीश की इतनी असीम अहेतुकी कृपा अवश्य है कि मेरे को यश दिलाते हैं और साथ ही इतनी कृपा करुणा रखते है जिससे अपने में अहंकार नहीं आता और यह धारणा बनी रहती है कि जो कुछ जीवन में हो रहा है वह सब उनकी कृपा का हीं फल है। अपने

पुरुषार्थ का नहीं फिर भी पुरुषार्थ तो निरन्तर चालू ही है कारण मर्त्यलोक,मनुष्य शरीर रुपी कर्म भूमि में आकर कोई भी प्राणी अेक क्षणभर भी कर्म किये बगैर रह ही नहीं सकता । साधन पुरुषार्थ तो अहंकार मिटाने के लिये ही होता है न कि प्रभु प्राप्ति के लिये,कारण कि **श्री प्रभु की प्राप्ति कृपा साध्य है; साधन साध्य** नहीं किन्तु साधन करते-करते जब निराशापूर्वक दैन्यभाव आकर अहंभाव को ज्यों ही विलीन कर देता है त्यों ही आत्मा का, परमात्मा का, सत्य का अपने इष्ट का प्रकाश हृदय मंदिर में हो जाता है जिसे पाकर जीव अपने को कृतार्थ मानने लग जाता है । इसी आधार पर जप,तप,योग,ज्ञान वगैरह की साधना है किन्तु जब तक अन्तःकरण विमल,विशुद्ध होकर श्री प्रभुके लिए आकुल व्याकुल नही होता सच्ची छटपटाहट प्राप्त नहीं हो तो, तब तक संस्कारानुसार सबको साधन में लगा ही रहना पड़ता है । नाम जप में नाम निरंतर रटने, जपने चिन्तन करने के सिवाय दूसरा कोई विधि विधान नहीं है । हाँ ! इतना अवश्य है कि पवित्र स्थल में पवित्रतापूर्वक नाम लिया जाय तो तत्कालिक अनुभव होता है कारण कि नाम का प्रभाव अन्य शुद्धि में न लगाकर मन शुद्धि में ही लगाओं। विशेष श्री प्रभु कृपा। सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

“श्री राम जय राम जय जय राम”

प्रिय चन्देश्वर बाबू, सत्संग मंडल एवं श्री द्वारकाधाम

बाल गोपाल !

आशीर्वाद ! दिनांक २१-७-६६

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । इस बार गुरुपूर्णिमा का महोत्सव बड़ा ही सुन्दर रुप से सम्पन्न हुआ। साथ ही श्री प्रभु की प्रेरणा भी कुछ अेसी विलक्षण

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

हुई कि गुरुपूर्णिमा के दूसरे दिन सवेरे ही अेकाअेक १५ मिनिट के भीतर ही बगैर किसी को सूचना दिये ही पंढरपुर और सज्जनगढ़ के लिये चल पड़ा। सज्जनगढ़ में श्री समर्थ रानदासजी स्वामी जिन्होने इस विजय मंत्रके द्वारा श्री छत्रपति शिवाजी को अपना निमित्त बनाकर भारतीय संस्कृति,सनातन धर्म का रक्षण किया, उन्हीकी समाधि है। इसबार अनावृष्टि के कारण समस्त गुजरात,सौराष्ट्र,महाराष्ट्र एवं बम्बई में हाहाकार मचा हुआ था,अगर चार दिवस और वृष्टि में विलम्ब होता तो बम्बई नगर नष्ट भष्ट हो जाता क्योकि वहाँ की म्युनिसपेलटी ने पानी देना बंद कर दिया था और बम्बई खाली करने का हुक्म भी जारी कर दिया था। लगभग पाँच लाख टीकीट भी लोंग ले चुकें थे । इतनें लोंग कहाँ जायेगे और केसै रहेगे अेक बहुत बड़ी समस्या खड़ी हो गई थी । सब लोंग हार कर सभी धर्म एवं सभी संप्रदाय के लोग प्रार्थना भजन भी करने लग गये थे जिसका परिणाम यह हुआ कि यथासमय पर्याप्त वृष्टि हो गई और लोगों के प्राण में नवजीवन आ गया। जब मैं पंढरपुर गया था उस समय वृष्टि की नाम निशान नहीं था चलते समय वृष्टि प्रारंम्भ हुई फिर बम्बई आया तो अभी भी हाहाकार ही था, वहाँ से चलते समय भी वृष्टि शुरु हुई फिर भरुच (भृगुक्षेत्र) श्री नर्मदाजी के तट पर आया और वहाँ तीन दिवस का अखंड प्रारंम्भ किया और अखंड के दो-चार घंन्टे बाद ही वृष्टि शुरु हो गई और वहाँ से ज्यों-ज्यों सौराष्ट्र, गुजरात की ओर बढ़ता गया पीछे पीछे वृष्टि भी चलती गई । परसो द्वारका पहुँचा तीन वर्षो से वृष्टि नहीं थी उसके लिये १०८ दिवस का अखंड रखा गया है यहाँ आते ही कल्ह से पानी-पानी हो गया। यह सब श्री नाम महाराज का प्रताप कुछ भी असंभव नही। विशेष श्री प्रभु कृपा। सभी प्रेमियों को जय श्री राम।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारकाधाम

प्रिय चन्द्रेश्वर बाबू, रामधुन मंडल
तथा बाल गोपाल !

आशीर्वाद ! दिनांक २३-९-६६

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। श्री प्रभु नाम का प्रचार विस्तार का काम भी उन्हीं के कृपा प्रेरणा के आधार पर सुचारु रुप से चल रहा है। अभी गुजरात प्रांत प्रचार का केन्द्र बन रहा है। अेसे भीषण काल में भी अत्यंत प्रवृत्ति परायण विशाल नगरों में भी वगैर पैसें वगैर याचना वगैर विज्ञापन के भी श्री प्रभुनाम का प्रचार प्रसार द्रुतगति से हो रहा है। यह सब अेक मात्र श्री गुरुदेव के सत्य संकल्प एवं सत्यसंकल्पस्वरुप श्री प्रभु की कृपा प्रेरणा का ही परिणाम है अन्यथा मेरे जैसे अेक सामान्य प्राणी की क्या हस्ती है? कि नाम का प्रचार कर सके। हाँ! इतना अवश्य है कि उसकी अहैतुकी कृपा से उसके कार्य संपादन के लिये यह शरीर निमित्त बन गया है। बन क्या गया है? उसी ने बना लिया है। बस अपने लिये तो यही साधन है और यही सिद्धि एवं साध्य है कि हर परिस्थिति प्रवृत्ति को उसी की करुणा प्रेरणा समझकर अपने को अेक निमित्त मानकर निष्काम भाव से संतुष्ट चित्त से उत्साहपूर्ण हृदय से अथक श्रम एवं अडीग श्रध्धा निष्ठा एवं अचल अविचल विश्वासपूर्वक उसका अनन्यशरण ग्रहण किये रहें । पल-पल में विचार करते रहें श्री प्रभु मंगलमय हैं, कल्याणमय हैं, आनन्दमय हैं, ज्ञान विज्ञानमय हैं जगत के अेकमात्र नियामक, पालक, नियन्ता हैं । अत: उनका प्रत्येक विधान प्राणिमात्र के कल्याण के लिये ही है । जब तक मनों के अनुकूल परिस्थितियों में सुख और शान्ति है और प्रतिकूल परिस्थितियों में दुख और अशान्ति का अनुभव होता है तब तक समझना चाहिये कि वास्तव में मेरी भक्ति पूर्ण नहीं बल्कि अपूर्ण है कारण जब भगवान में सच्ची भक्ति हो जाती है तो वह भक्ति भक्त को भगवान से कभी विभक्त होने नहीं देती । वास्तव में भक्ति शब्द का अर्थ ही है कि आत्मसमर्पणपूर्वक, सर्वस्वसमर्पणपूर्वक उस सत्य के

साथ,आत्मा के साथ परमात्मा के साथ, राम, कृष्ण, गोविंद, गोपाल, माधव, सूदन, ईश्वर, अल्लाह, गौड के साथ एक हो जावे उसी का अंश जीव सत्य चित्त, आनन्द सच्चिदानन्द अपने अंशी सच्चिदानन्द धन से,अविद्याद्वारा, माया द्वारा अनेक जन्मों से विमुक्त हुआ उसी के साथ पुनः संयुक्त हो जावे । आवागमन से संसार चक्र से छुट जावे जिसकी प्राप्ति का साधन कलिकालमें अेकमात्र श्री प्रभु का नाम ही है। नाम ही साधन और नाम ही साध्य है । अतः नाम महिमा के अलावा जो कुछ भी गान किया जावे सभी अपूर्ण ही है । नाम ही साध है, नाम ही सिध्धि है और नाम ही तारक है । श्री गुरुमहाराज की तिथि महोत्सव यहीं है । विशेष श्री प्रभु कृपा । सभी प्रेमियों को जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चन्द्रेश्वर बाबू, श्री रामधुन मंडल तथा बाल गोपाल ! — श्री द्वारकाधाम

आशीर्वाद ! — दिनांक २७-१-६७

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । आप के दो पत्र मिले, किन्तु बहुत काल के बाद कारण की लगभग छ मास से मैं द्वारका से बाहर था। लगभग तीन मास तक तो गुजरात के पहाड़ी जंगली इलाकों तथा ग्रामो नगरों में प्रचारार्थ पर्यटन चालू रहा। कोई निश्चित प्रोग्राम न होने से पत्र व्यवहार बंद जैसा ही था अतः जिस पते से पत्र आया वही महीनों तक पड़ा रहा । थोड़े दिन पहले आपका दिनांक १-२-६७ का पत्र मिला इसके पहले भी आपका अेक पत्र मिला था,जिसमें गौ हत्या बंदी के आंदोलन के मुतल्लिक ही सभी बातें थी । कांग्रेस सरकार के प्रति भी अति कठोर आलोचना में तथा श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी एवं जगतगुरु

शंकराचार्य पुरी वाले के प्रति अनन्य भक्ति एवं पूर्ण सहानुभूति के ही उदारपूर्ण शब्द भरे थे । ईश्वर, धर्म, अध्यात्मिक सम्बन्धी कोई चर्चा न होने के कारण कुछ विशेष ध्यान भी नही दिया और पत्रोत्तर भी जानबुझ कर नहीं भेजा । मुझे ऐसा लगा कि प्रचलित वातावरण ने आपको खूब प्रभावित कर रखा है । स्वधर्म पालन करना और स्वधर्म पालन में मर भी जाना जीव के लिये श्रेयस्कर है ऐसा श्री गीताजी का सिद्धान्त है। आज तक भारतवर्ष के इतिहास में ऐसा विरला ही दृष्टांत होगा कि कभी किसी संत ने सत्ता के आगे आंदोलन किया हो कारण संत तो सत्य परायण होने से उनमें अध्यात्मिक आत्मिक बल होता है जिसके आगे भौतिक बल वाली सत्ता स्वभाव से नतमस्तक होती है किन्तु जब संत साधु अपने स्वाभाविक धर्म सत्य संकल्प, आत्मबल, श्री प्रभु निर्भरता आदि को छोड़कर जब राजनैतिक चालबाजीयों में भाग लेने लगे भौतिक पदार्थो के संग्रह संचय में सुख शान्ति मानने लगें धन काम संभालने को लक्ष्य मानने लगे तो ऐसे लोगों के आगे सत्ता कब झूकने वाली है जो ईश्वर, धर्म, निति में विश्वास श्रद्धा ही नही रखती है। विश्वामित्रजी में नई सृष्टि रचने की शक्ति थी तो क्या मारिच, सुबाहु, तारका से अपने यज्ञ की रक्षा नही कर सकते थे। फिर राम लक्ष्मण की क्या आवश्यकता थी। त्यागी, ज्ञानी, भजनानन्दी भी जब धनमदान्धों सत्ताधारियों की ही आशाभरोशा करने लगे तो ईश्वर पर भरोसा कौन करे करायेंगा ? विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जूनागढ़ अनन्तधर्मालय

प्रिय चन्द्रेश्वर बाबू,तथा बाल गोपाल !

दिनांक ३०-९-६७

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है, और उन्ही की कृपा प्रेरणा तथा शक्ति से ऐसे भयंकर कलिकाल में भी श्री अखंड हरिनाम महायज्ञ का अविरल प्रवाह

अजश्रगित से प्रवाहित हो ही रहा है । इसबार श्री गुरुमहाराज का तिथि का उत्सव बड़ा ही विलक्षण हुआ। सारा वेरावल शहर अयोध्यापुरी बन गई थी। प्रातः काल तीन-तीन मंडलिया गल्ली-गल्ली में प्रभात फेरी में निकलती थी। हजारों की तायदाद में रात दिन श्री अखंड में भक्तजन भरे रहते थे। नगर कीर्तन का वर्णन क्या लिखू ? बड़े-बड़े सेठ साहुकार पंडित विद्वान,सत्ताधारी,औफिसर लोग श्री भगवन्नाम में पागल बन अपने देह गेह सत्ता संम्पत्ति की भान भूलकर जनपथ पर नाच रहे थे, उनके गगनभेदी नाद से दिशाये निनादित हो रही थी, उनके मध्य में श्री पूज्यपाद श्री गुरुदेव महाराज तथा श्री करुणावरुणालय, दीनजनशरणालय, राजराजेन्द्र, राजीव लोचन श्री राघवेन्द्र प्रभु की रथस्थित वांकी झांकी तो कुछ विलक्षण छटा छिटका रही थी। भारतवर्ष की बात कौन कहे अफ्रिका तक के प्रेमीजन खास कर इसी उत्सव के लिये आये थे और अपने हृदय में श्री भगवन्नाम तथा पू. गुरुदेव की महती महिमा का अमिट छाप लेकर गये,उसके बाद २४ घन्टे का अखंड श्री सोमनाथजी के मंदिर में और २४ घन्टे का प्राची(मोक्ष विमल) जहाँ पर श्री भगवान श्री उद्धवजीको एकादश स्कंध श्रीमद्‌भागवत का अंतिम उपदेश दिया था-वहाँ रखा गया था। इन स्थलों में भी अभूतपूर्व आनन्द हुआ। उसके बाद भक्तराज श्री नरसी महेताजी की प्राकट्य भूमि श्री जूनागढ़ में २४-९-६७ से १-१०-६७ तक के लिये रखा गया है यहाँ खास करके विद्वत् समाज पर खूब प्रभाव पड़ा है। इन सभी जगहों में व्यवस्था करने वाले प्रोफेसर तथा सैलटैक्स ओफिसर लोग ही हैं इसके बाद ४-१०-६७ से १९-१०-६७ तक महुवा में हैं। राजदेव बाबू खूब आनन्द ले रहें है श्री सच्चिदानन्द भी आ गये हैं आप की भेजी सभी चीजें यथा समय प्राप्त हो गई थी। आप गौ हत्याबंदी के आन्दोलन में बहुत अस्तव्यस्त थे। एेसा आप के एेक पत्र से प्रतित हुआ इसी कारण पत्रोत्तर लिखना बंद था। धर्म ईश्वर में श्रद्धा नहीं यह सब मान बड़ाई के लिये ही है । **नाम बिना कुछ भी नहीं होता ।** विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चन्देश्वर बाबू, बाल गोपाल तथा समस्त प्रेमीजन !

श्री संकिर्त मंदिर
पोरबंदर

शुभाशीर्वाद सह जय श्री राम ! दिनांक ३१-७-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है तथा उन्ही की कृपा प्रेरणा तथा सहायतानुसार उन्हीं के परममंगल **श्री नाम महाराज** का प्रचार प्रसार भी बड़ी द्रुतगति से दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। जो कुछ हो रहा है, सब अनायास ही हो रहा है। बहुत दिनों के बाद पत्र लिख रहा हूँ इसका अेकमात्र कारण अति भ्रमणशील जीवन गति ही है। अभी तो विशेषतः काल गुंजरात में ही व्यतीत हो रहा है, जहाँ पर नाम प्रचार का नामोनिशान नहीं था । इसबार गुरुपूर्णिमा का महोत्सव भी अभूतपूर्व ही हुआ। श्री द्वारका, जामनगर, पोरबंदर में श्री अखंड यज्ञ स्थायी रुप सें चल रहा है। तीनों स्थलों भजन के लिये स्वतंत्र संकिर्तन मंदिर बन गया है। द्वारका में मंदिर का काम अभी चालू है । शायद अगहन पौष तक तैयार हो जायेगा। आपका प्रेम, भाव, श्रध्धा, नाम-निष्ठा श्लाधमय है, आदरणीय है । आपका श्री गुरुपूर्णिमा के निमित्त भेजा हुआ सभी सामान यथा समय व्यवस्थित रुप में प्राप्त हो गया है। कल्ह रात्रि को अेक ग्राम से ९ दिवस का अखंड पूर्ण करके आया हूँ और आज फिर जा रहा हूँ। इसके बाद ९-८-६८ को साबरमती अहमदाबाद जाऊँगा जहाँ पर १०-८-६८ से २०-९-६८ तक ४० दिवस का अखंड रेलवे कोलोनी साबरमती में है इसी बीच ३१-८-६८ से ८-९-६८ तक तालुका महुवा जिला- भावनगर सौराष्ट्र महाराजश्री की तिथि का उत्सव है मुन्ना को मेरी यादी । सभी प्रेमियों को जय श्री राम। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चन्द्रेश्वर बाबू,प्रेमी मंडल
तथा बाल गोपाल समस्त प्रेमीजन !

श्री रामजी मंदिर
हाजापटेल की पोल,
अहमदाबाद

आशीर्वाद सह
श्री राम जय राम जय जय राम ! दिनांक ५-१२-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है और उन्हीं की कृपा प्रेरणा सहायता द्वारा श्री राम नाम महाराज का प्रचार प्रसार भी दिन प्रतिदिन अनायास ही होता जा रहा है। आप का आज पत्र मिला है,पढ़कर आश्चर्य हुआ कि श्री भगवान व्यर्थ की ही बात क्यों किया करता है बार बार मुझे पत्र भी लिखता है कि मुझे आपके हि साथ रहना है तो मैं किस तरह उसे साथ रखू और किस लिये रखू। इधर तो छोटे-छोटे बच्चे भी ढोलक-तबला बजाते हैं। मुझे लिखता है कि बिहार में मैं सिर्फ अकेला ही गाँव-गाँव में नाम का प्रचार करता हूँ। वैशाख में मोटर दुर्घटना जरुर हुई थी और हुई भी अेसी भयंकर थी कि देखने वाले के रोंगटे भी खड़े हो जाते थे किन्तु श्री प्रभु कृपा, करुणा का अेसा प्रत्यक्ष प्रदर्शन था कि सुनने वाले देखने वाले भी आश्चर्य चकित हो जाते थे कारण कि मोटर में बैठे हुए लोगो को तथा मोटर चलाने वाले को भी न किसी प्रकार की चोट लगी न मोटर का कुछ नुकसान हुआ,नाम मात्र आगे का मडगार्ड दब गया था। मोटर ने पूरा झाड़ तोड़ डाला था और झाड़ को घसीटते लगभग दो फर्लांग ले गया था। काकू को भी कुछ नहीं हुआ झाड़ की जड़ के धक्के से अेक मुसलमान के कलेजे में चोट लगी थी उसी में उसकी मृत्यु अस्पताल में तीन चार घन्टे बाद हो गई थी न मुझे कही जाना पड़ा न काकूभाई को, अन्य बैठने वाले को ही। अेक सेकन्ड के लिए भी काकूभाई को भी जेल के हिरासत में जाना नही पड़ा। हवाई अड्डा की तो कोई बात नहीं थी ये तो बम्बई की बात है। मृत्यु हो जाने से कोर्ट में केश चला और काकूभाई बिल्कूल निर्दोष छूट गया। मुझे तो न कही जाना

पड़ा न आना पड़ा। सिर्फ वकील ने काकूभाई के बचाव के लिए मेरा नाम साक्षी में रखवाया था किन्तु मुझे तो न साक्षी देनी पड़ी न कुछ करना पड़ा। मुकद्दमा यो खतम हो गया। वसंतपंचमी पर द्वारका संकीर्तन मंदिर का उद्धघाटन है १५ दिन बाद वही जाऊँगा। ऐसी अन्टसन्ट बाते करने से क्या फायदा मधु का अभी मुझे खबर नही है। वहाँ आया होगा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चंन्द्रेश्वर बाबू तथा — श्री द्वारकाधाम

बाल गोपाल एवं समस्त मंडल !

आशीर्वाद ! — दिनांक २८-१-६९

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है तथा उन्हीं के कृपा प्रेरणा द्वारा श्री नाम महाराज का प्रचार प्रसार अनायास ही दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। श्री द्वारकाधाम में श्री संकीर्तन मंदिर का निर्माण भी विलक्षण हुआ है तथा उद्धघाटन उत्सव भी अभूतपूर्व ही हुआ है। सबों की इच्छा थी कि आप लोंग इसमें संम्मिलित अवश्य होवे मुझसे भी हरिदास वगैरह ने अति आग्रह किया था कि आप पत्र लिखिये तो अवश्य आयेंगें किन्तु मुझे कुछ अेसा आभास हुआ कि किसी कारणवशात् आप या वैकुन्ठबाबू नहीं आ सकेगें। इसी कारण में स्वयं आग्रह पत्र नही लिखा। अभी होली के उत्सव तक यही ठहरने का विचार है। अगर उस अवसर पर भी आ सके तो अवश्य ही एक बार यहाँ का दर्शनलाभ लिजियें। आपका भेजा हुआ दो दिवस अखंड का व्यय ३० रुपैया व्यवस्थापक को प्राप्त हो गया है। रशीद उनके द्वारा भेजी जायेगी। यहाँ सीर्फ अेक वर्ष का अखंड नहीं है अखंड तो जब तक श्री प्रभु द्वारकाधीश की कृपा होगी तब तक

स्थायी रूप से अखंड चलाना ही पड़ेगा । इसके लिये ग्राम-ग्राम में मंडलियों का आयोजित किया जा रहा है । और जिन लोगों का नाम स्थायी सदस्य के रूप में होगा उनको प्रतिवर्ष शुल्क भेजना ही पड़ेगा तो यह सूचित करने का कष्ट करेंगे कि आपका वो नियम का स्थायी रूप में रखा जाए या सिर्फ एक ही बार वाले है । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
नैमिषेश

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चन्द्रेश्वर बाबू,
बाल गोपाल तथा अन्य प्रेमीजन ! श्री संकीर्तन मंदिर द्वारका

आशीर्वाद सह् जय श्री राम ! दिनांक १९-६-६१

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है तथा उन्ही की कृपा प्रेरणा सहायता द्वारा श्री अखंड का प्रचार प्रसार भी अनायास ही अविराम गति से होता जा रहा है। आपका पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ । संसार का इतना नैतिक पतन हो चुका है कि सत्य, सदाचार, सद्विचार, विवेक, वैराग्य के लिये कहीं स्थान ही दृष्टिगोचर नहीं होता। भगवान के धर्म के नाम पर ही सर्वत्र दंभ,पाखंड, कपट, विश्वासघात, धोखाधड़ी का ही बाजार गरम हो रहा है । नया-नया मत,नया-नया पंथ, नया-नया संत । धर्म और साधुता के नाम पर ही धर्मगुरुओं में अपना शिष्य मंडल की वृद्धि के लिये अेक होड़ सी लगी हुई है । किसी भी सन्मार्ग में, सत्यपंथ में लगे हुए व्यक्तियों को अपनी और बुद्धि कौशल से, खोटी दलिल से, तर्क-वितर्क से कुतर्क द्वारा उनकी बुद्धि में भेद, भ्रम, संसय डालकर जो कुछ भी कर रहे हैं,उनसे भी वंचित कर अपने मार्ग में लगा लेना यही आजकी परिपाटी बन गई है । अब राजनिति में तो लोंग जानकार हो गयें हैं । अतः भोले-भाले, सीधे-सादे, सरल हृदय धर्म श्रद्धालु प्रजा को किसी तरह धर्म के, ईश्वर के नाम पर

लूटना अेसे ही धर्म ध्वजी पाखंडियों, कालनेमि साधुओं का व्यवशाय बन गया है। आप लोगों जैसे समझदार, विवेकी, विचारवान पुरुषों को वेषधारी बाबाओं से सावधान रहना चाहिए और संशय संदेह उत्पन्न होने पर प्राचीन ऋषि, महर्षियों के सद्ग्रंथों, सत्शास्त्रों, उनकी वाणियों का पूर्ण आश्रय लेकर श्रद्धा, विश्वास तथा हृदय पूर्वक अपनाएँ हुए मार्ग में अविराम गति से बढ़ते रहना चाहिए। जिस व्यक्ति विशेष की ओर स्वभाव से ही हृदय आकृष्ट हो जिसके दर्शन, स्पर्श तथा वाणी द्वारा स्वाभाविक आकर्षण एवं अंतर चेतना की जागृति होवे वही "गुरु" जिसके प्रदत्त मंत्र द्वारा स्वाभाविक रुपसे हृदय से एक प्रकार के अल्हाद का,चित्त अेक प्रकार के चैतन्य का,मन अेक प्रकार शान्ति का, बुद्धि अेक प्रकार के निश्चय का शनैःशनैः अनुभव करने लगे तो वही सच्चा मंत्र,सिद्ध मंत्र,चैतन्य मंत्र जिसके सिर्फ सुनने मात्र से ही छोटे छोटे अबोध बालकों अनपढ़,अल्पज्ञ जड़ अज्ञानी नर नारीयों में भी धारणा हो जावे अल्प अभ्यास से उसका रटन, चिन्तन,स्मरण होने लगे **वही सिद्ध चैतन्य मंत्र** । श्री विजय मंत्र का प्रत्यक्ष प्रभाव सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। बस! निर्भय,निश्चिन्त हो कर विजय मंत्र जपिये विजय लाभ लिजिये । प्रबल नाम निष्ठा के लिए गोस्वामीजी की कवितावली और विनय पत्रिका पढ़िये । विशेष श्री प्रभु कृपा । वार्षिक लीस्ट में नाम रख लिया गया । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री संकीर्तनमंदिर, द्वारका
द्वारकाधाम

प्रिय चन्द्रेश्वर बाबू तथा बालगोपाल !

दिनांक ९-७-६९

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से आनन्द है। आप का बहुत दिनों से कोई समाचार प्राप्त

नही हुआ हैं। आशा है आप सपरिवार मित्र मंडल सहित सकुशल होगें । मुन्ना का क्या समाचार है? देश काल परिस्थिति कैसी है ? भजन तो सुचारु रुप सें चलता ही होगा। कुछ समय पहले आप का अेक पत्र मिला था । इधर इन दिनों ज्यादातर ग्रामों में और जगह-जगह भटकने के कारण तथा अत्याधिक शारीरिक श्रम के कारण थोड़ा स्वास्थ्य बिगड़ गया था। छाती में अत्याधिक ठंडी लग जाने के कारण Tonshil में सूजन हो गया था और खाँसी बहुत आती है जिससे अखंड सत्संग वगैरह में बोलनें में आनन्द नही आता था और थोड़ा विक्षेप जैसा लगता था। किसी प्रकार का नियम तो है नही न खाने का,न सोने का,न बोलने का। लगभग बीस वर्षो से रात दिवस यही क्रम चालू है फिर शरीर तो अेक यंत्र ही ठहरा, कितना काम करे साथ अब ,अवस्था भी आ रही है फिर भी श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द ही है। शरीर रहे तब तक भजन नाम रटन करने कराने दें तो बस। यही उनकी महती अनुकम्पा। श्री द्वारकाधाम,श्री सुदामापुरी तथा जामनगर तीनों स्थलों में भिन्न ढ़ग से सुन्दर संकिर्तन मंदिर बन गये हैं तथा तीनों स्थानों श्री अखंडमहायज्ञ भी बड़े सुन्दर ढंग से चल रहा है। यह सब श्री प्रभु नाम का ही परम प्रताप है । उन्ही की कृपा प्रेरणा से श्री नाम महाराज का प्रचार प्रसार भी अविराम गति से हो ही रहा है। इसबार श्री गुरुपूर्णिमा का महोंत्सव श्री द्वारकाधाम में तथा श्री गुरुतिथि का महोत्सव श्री सुदामापुरी (पोरबंदर) में निश्चित हुआ है आमंत्रण पत्र पीछे भेजे जायेगें। पूर्व सूचना के लिये लिख रहा हूँ क्योकि हर वक्त आमंत्रण पत्र आप लोगों को अति विलम्ब से प्राप्त होता है । श्री संकीर्तन मंदिर द्वारका तथा पोरबंदर । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चन्द्रेश्वर बाबू, बाल गोपाल
तथा समस्त नाम प्रेमीजन !

पोरबंदर
दिनांक २२-८-६९

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। स्वास्थ्य भी अब ठीक है किन्तु पूर्ववत् अभी शक्ति नही आई है फिर भी अखंड का काम तो चालू ही है। मुझे याद है कि मैने श्री गुरुपूर्णिमा के बाद ही आप को पत्रोत्तर दिया था। हो सकता है संकल्प मात्र ही रह गया हो, लिख नही पाया होऊ जैसा कि आप के तत्कालिक पत्र से प्रतीत होता है। इस बार श्री गुरुपूर्णिमा के पूर्व ही आप का भेजा हुआ रजिस्टर्ड पोस्ट पार्सल प्राप्त हो गया था,उसके अन्दर की सभी वस्तुअे सुरक्षित थी। इसबार का महोत्सव भी अभूतपूर्व ही रहा। बाहर से भी बहुत से प्रेमीजन आये थे। परमपूज्यनीया मातुश्री का आगमन तो सोने में सुगंध जैसा काम किया आप लोगों की नाम निष्ठा देखकर,हृदय को अति अहलाद प्राप्त होता है। रमाशंकर बाबू की नाम निष्ठा अत्यन्त प्रशंनीय है यही तो कलिकाल में अेकमात्र कल्याण का आधार है। लोक परलोक दोनों को बनाने वाला है। आवश्यकता सीर्फ श्रद्धा, निष्ठा,भक्ति अनन्यता की। श्री यमुना बाबु शिवहर का भाव-प्रेम, निष्ठा, श्रध्धा, भक्ति अनन्यता अत्यन्त सराहनीय है। इस बार उन लोगों ने अेक मास का अखंड रखा जिसकी सूचना भी मुझे मिल गई थी फिर भी पत्र देने में असमर्थ ही रहा तो उन लोगों को लिये सूचना कर देंगे कि वे लोग मन में कुछ और न समझे। यह उपेक्षापूर्वक नहीं की गई बल्कि इच्छा पूर्वक की गई कारण की जब तक अखंड चलता रहा तब तक पत्र के बहाने भी वृत्ति इधर ही लगी रही और हम लोगों का मानसिक मिलन अखंड बना रहे। इसबार श्री गुरुतिथि पोरबंदर में होने वाली थी किन्तु श्री प्रभु प्रेरणा से स्थानान्तर हो कर अब पोरबंदर से लगभग ६० मील दूर ढ़ाक पाटन गाँव में होगी। विशेष सूचना पीछे भेजी जायेगी। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय श्री राम !

संकीर्तन भवन पोरबंदर

आशीर्वाद !

दिनांक २३-६-६४

तुम्हारा दो पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ । अवकाशाभाव तथा निश्चित स्थितित्या- भाव के कारण पत्रोत्तर यथा समय नहीं दे सका इसके लिए कुछ मन में और भाव या भावाभाव नही समझ ना। सच्ची बात तो यह है प्रेमी के लिए पत्र अथवा पत्रोत्तर की भी आवश्यकता नहीं रहती कारण प्रेम में अेकत्व होता अभिन्नत्व होता है। प्रेमास्पद प्रेमी से कभी भी जुदा या दूर होता ही नही, प्रेमास्पद की मूर्ति तो प्रेमी के हृदय मंदिर में निरंतर बनी ही रहती है और जब उसे मिलन की आकांक्षा होती है उसे अपने हृदय मंदिर में ही निहाल लेता है, जो कुछ सुनना समझना होता है वह वहीं से कर लेता है, किन्तु हाँ! इतना अवश्य है कि जब तक उस दिव्य प्रेम तत्वका पूर्ण विकास प्रकाश न हो, तब तक प्रेमी को साधक को जागरुक रहना पड़ता है, विषयों में विचरती हुई बर्हिमुखी वृत्तियों को अन्तर्मुख रखने के लिए सतत् प्रयास करना पड़ता है। जब प्रेमपूर्ण रुपेण विकसित हो जाता है तब साधना की आवश्यकता रहती नहीं अतः सदा जागरुक रहकर उस सर्वेश्वर सर्वाधार सर्वनियन्ता श्री प्रभु के मंगलमय नाम का रट, जप स्मरण बनाये रखो परिणाम मंगलमय ही होगा। सभी ग्रामवासियों को मेरा जय श्री राम सह यथा योग्य कहना। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय श्री राम ।

आशीर्वाद ।

तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । तुम्हारी सरलता, निषकपटता, श्री प्रभु प्रति निष्ठा, भावना देख अति प्रसन्नता होती है । बिहार यात्रा में अगर

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

कोई निष्काम प्रेमी देखने में मिला, तो तेरे सिवाय कोई नहीं, अेसा भी कहुँ तो कोई अतिशयउक्ति नहीं। श्री प्रभु तुम्हारी श्रद्धा, निष्ठा, भक्ति, प्रभु अनुरक्ति सुदृढ़ बनावें अेसी सद् कामना सह श्री प्रभु प्रार्थना। पूजनीया "माताजी के परम पावन पाद-पदमों में मेरा कोटिशः प्रणाम"। सभी प्रेमियों एवं ग्रामवासियों को यथा योग्य सह जय श्री राम। कुम्भ मेला में जाने का अभी कोई निश्चय नहीं है समय आने पर जैसी प्रभु की मर्जी होगी वैसा होगा। विशेष श्री प्रभु कृपा । **नाम जप खूब करना जीवन की यही सच्ची कमाई है ।** श्री चटर्जीजी को भी कहना "श्री राम जय राम जय जय राम ।" मंत्र में **"श्री" समस्त पहले माताजी का ही नाम हैं । "श्री" समस्त शक्तियों का बीज मंत्र है । श्री सीताजी, श्री राधाजी श्री लक्ष्मीजी ।**

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय श्रीराम!

श्री द्वारकाधाम

आशीर्वाद ! दिनांक १५-७-६५

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। तुम्हारा २७-६-६५ का लिखा हुआ पत्र आज प्राप्त हुआ। पढ़कर अति प्रसन्नता हुई। तुम्हारी भाव भक्ति श्रद्धा निष्ठा देखकर इतना संतोष अवश्य होता है कि यद्यपि समस्त ग्राम वासी भूल गये हैं फिर भी कम से कम अेक व्यक्ति को भी जन्मभूमि के नाते स्मृति है, तो बहुत है। यह तो श्री प्रभु तथा श्री गुरुदेव की असीम कृपा का फल था कि जन्मभूमि निवीसियों ने इस शरीर के साथ इतनी आत्मीयता तथा स्नेह दिखलाया नहीं तो यह कहावत तो सदा चरितार्थ ही है "घर का योगी जोगड़ा बाहर के जोगी सिद्ध" जन्मभूमि निवासियों के उस स्नेह तथा श्री राम नाम निष्ठा के लिये तो मैं सदा आभारी ही हूँ कही आने जाने की बात तो अपने हाथ की नहीं, यह तो उस

सर्वाधार सर्वेश्वर सूत्रधार के ही सर्वथा अधीन है। जिसके सहारे यह जड़ शरीर समस्त क्रिया कलाप सम्पन्न कर रहा है । **श्री प्रभु नाम रटन खूब करना कराना यही लोक परलोक का कल्याण करनेवाला अेकमात्र अमोघ उपाय साधन** है । बिहार से आने के बाद नई-नई जगहों में ही परिभ्रमण चालू है। जामनगर, पोरबंदर, द्वारिका तो बहुत कम रहना होता है। विशेष अब गुजरात प्रान्त में ही प्रचार हो रहा है यों तो जामनगर, पोरबंदर, श्री द्वारका सभी स्थलों में अखंड चालू ही है। परम पूज्यनीया माताजी के चरण कमलों में कोटिशः प्रणाम। सभी ग्रामवासियों को यथायोग्य सह जय श्री राम। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय श्री राम !

पोरबंदर

आशीर्वाद ! दिनांक १२-१२-६५

पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ। श्री रामपुकारसिंहजी आये थे। द्वारका में मेरे साथ कुछ दिन रहें। बाद में श्री द्वारकाधाम में अखंड बढ़ जाने के कारण मुझे पोरबन्दर जानें में विलम्ब हुआ, जिससे उन्हें अकेला ही जाना पड़ा, द्वारका में उन्हें विशेष आनन्द नहीं आया, अेसा उनके पत्र से प्रतित होता हैं किन्तु उधर से इधर आनेवाले किसी भी व्यक्ति को यह ध्यान में रखना चाहिए कि द्वारका तीर्थस्थान, जहाँ के लगभग सभी निवासी बाहर से आनेवाले यात्रियों पर ही निर्भर करते हैं। खास करके ब्राह्मण पंडाओं का आजीविका ही यात्रियों के उपर है । साथ ही बम्बार्टमेन्ट के बाद तो यात्रियों का आना जाना बिल्कुल बन्द हो गया था जिससे वहाँ के निवासियों का लगभग डेढ़ मास से जीविका विहिन से हो गये थे फिर भी मेरी समझ से उनके स्वगत सत्कार में कुछ कमी न हुई, किन्तु न मालूम किस कारण उन्हें द्वारका के प्रति उन्हें उदासीनता आई। पोरबन्दर बम्बई, भी मैने पत्र लिख दिया था और उन्हें पता भेज दिया था उन स्थलों में कैसा

रहा मुझे पता नहीं! खैर कुछ त्रुटि हुई हो तो क्षमा करेंगे। कुम्भ में जाने का अभी तक कोई विचार नहीं है आगे जैसी प्रभु की मर्जी, कहीं भी जाने आने में कुछ नहीं हैं। जहां भी रहो प्रभु नाम रटन, स्मरण, चिन्तन करते रहो इसी में कल्याण है। विशेष श्री प्रभु कृपा सभी प्रेमियों को जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय श्री राम ! पोरबंदर

आशीर्वाद ! दिनांक ११-३-६६

तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ। कुम्भ मेला पर नहीं जा सके उसके लियें दुखी होने की कोई आवश्यकता नहीं, कारण कि इस कलिकाल में तीर्थ, व्रत, यज्ञ, वगैरह सब का फल श्री प्रभु नाम करने मात्र से ही प्राप्त हो जाता है । न यत् फलं तपसा न योगेन न समाधिना तत्फल लभते सम्यक् कलौ केशव कीर्तनात् ! बस ! श्री प्रभु नाम रटन, स्मरण, जितना अधिक हो सके यही सर्व श्रेष्ठ उपाय है, साधन है और वही सिद्धि भी है । नाम निष्ठा समस्त सत्कर्मो का फल है। भक्ति और मुक्ति का सार है। मुझे भी तो बहुत ज्यादा फिरना पड़ता है जिससे समय पर पत्रोत्तर दिया नहीं जा सकता आज सवेरे कही तो शाम को कहीं कभी सौराष्ट्र तो कभी गुजरात । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय श्री राम ! श्री द्वारकाधाम

आशीर्वाद ! दिनांक २२-६-६६

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है। श्री सुदामापुरी तथा श्री द्वारकाधाम

में क्रमश: तेरह एवं अठारह मास से चालू अखंड की पूर्णाहुति के समारोह के साथ हो गई और पुन: ४-६-६६ से १०८ दिवस के लिये श्री द्वारकाधाम में अखंड प्रारम्भ हुआ है। जामनगर में लगभग दो वर्षो से अखंड चालू है और पाकिस्तान के बम्बार्डमेन्ट के समय जब सारा शहर लगभग खाली हो चुका था और Black out था फिर अखंड तो चालू ही था और अभी तक चालू ही है। इसके अलावा बिहार से आने के बाद से ही गुजरात प्रान्त में जहां अखंड हरिनाम का नाम तक नहीं था वहां भी अमदावाद, वड़ौदा, धोलका, डाकोर, पादरा, कपड़वंज वगैरह बड़े-बड़े शहरों में अखंड श्री प्रभु कृपा से चालू हो गया है। अभी दो मास तक अमदावाद में अखंड चला, गत वर्ष अढ़ाई मास तक चला था। जन्माष्टमी के अवसर पर फिर वड़ौदा भरुच में प्रोग्राम है। पूजनीया माताजी के चरण कमलों में मेरा साष्टांग दण्डवत् प्रणाम तथा अन्य सभी प्रेमीजनों ग्राम वासियों को यथा योग्य सह जय श्री राम, भाई की पुत्र की आश्रय लग गई यह भी श्री प्रभु की कृपा। इसबार श्री गुरुपूर्णिमा तथा श्री गुरुमहाराज की तिथि भी यहीं होगी। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय श्री राम !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । बिहार का दुर्भिक्ष बिहारियों के पाप का ही परिपाक है । जहां के लोग पशु की तरह मनुष्य की हत्या करनें में भी संकोच नहीं करतें । गरीबों, दीन-दुखियों मजदूरों के शोषण द्वारा ही अपना पोषण विषय विलास औज मौज भोगवासनाओं की तृप्ती के लिये ही रात दिवस आकुल व्याकुल हैं, उन लोगों के सिवाय दूसरे और किस की असी गति होवे ? मैं तो

बिहार के भूकम्प के समय से ही देखता आ रहा हूँ कि बिहार के सामान्य जनता से लेकर सत्ताधारियों तक की क्या स्थिति है? उनका नैतिक पतन कितना हो चुका है। श्री प्रभु कृपा प्रेरणा से वर्षो बाद यह शरीर तुम्हारे प्रान्त में आया जितनी बन सकी उतनी सेवा तुम लोगों की कि, सीर्फ लोगों की गिरि हुई मनोवृत्तियों को समुन्नत करने के लिये विशुद्ध अध्यात्मिक प्रयोग द्वारा साथ ही समाज सेवा का आदर्श रखने के लिये श्री देकुली महादेवजी के सरोवर का विलक्षण जीर्णोद्धार तेरह तेरह लक्ष बिल्वपत्र द्वारा श्री महादेवजी का अभिषेक वगैरह संग्रह संचय और याचना के सिर्फ अखंड नाम स्मरण द्वारा वृष्टी रोग निवारण वगैरह अनेक चमत्कार फिर भी तुम्हारी आँखे न खुली तो इस अनिति अनाचार व्याभिचार अत्याचार दूराचार का परिपाक कौन भोगेगा? जैसा बोओंगे वही तो काटोगें भी। श्री १०८ श्री परमहंस बाबा के युगल चरण कमलों में मेरा अति दीनता पूर्वक साष्टांग दण्डवंत कहना और मेरी ओर से प्रार्थना करना कि बाबा आशीर्वाद देवें कि जब तक प्राण रहे तब तक नाम स्मरण रटन चालू रहे । पूजनीयमाताजी के चरणों में साष्टांग दण्डवंत प्रणाम सभी प्रेमियों को जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

अहमदाबाद

प्रिय श्री राम !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है अभी लगभग तीन मास से गुजरात प्रान्त के पहाड़ी इलाकों में यहां के आदिवासी को व भील्लों की बस्तियों में श्री प्रभु कृपा प्रेरणावसात् कर्तव्य पालन के निमित्त भ्रम रहा हूँ । अेक सप्ताह पहले बड़ौदा की तरफ से पंडित श्री भैरवगिरजा चिन्तामणि औषधालय, मुजफ्फरपुर वालें से मिलने के लिये, यहां आये थे, वे अेक आयुर्वेदिक सम्मेलन में भाग लेने के लिये

यहाँ आये थे। उनका विचार द्वारका, सोमनाथ, जूनागढ़ वगैरह सौराष्ट्रान्तर्गत प्राचीन पवित्र स्थलों का दर्शन करने का था किन्तु इस बार द्वारका सौराष्ट्र में दुसह्य भयंकर ठंड़ी के कारण उनका उस तरफ का जाना बन्द रहा, वे मुजफ्फरपुर ३०-१-६७ को लौट गये किन्तु मै यहां के प्रेमियों के आग्रह के कारण रुक गया हूँ लगभग अेक सप्ताह बाद द्वारका जामनगर की तरफ जाने का विचार है आगे श्री प्रभु इच्छा। भाई श्री समनेतसिंहजी का भी पत्र आया था और यथा समय पत्रोत्तर भी दे दिया था अतिवृष्टि अनावृष्टि मनुष्य के पापों का ही परिणाम है अन्यथा परमात्मा के यहां कोई पानी का अभाव नहीं है। जीव में सत्य के प्रति, धर्म के प्रति, परमात्मा के प्रति प्रेम श्रद्धाभाव का अभाव यही अकाल, रोग, आधि-व्याधि, उपाधि का मूल कारण है। इससे त्राण पाने का अेक ही उपाय है **दीन बनकर आर्तनाद और करुण स्वर से श्री प्रभु को पुकारे** अधिक से अधिक नाम रटन चिन्तन स्मरण करे इसी में अपने जीवन का सार छिपा है । बस ! खूब नाम रटन करो कराल कलिकाल में त्राण पाने का अेक ही उपाय है **श्री हरिनाम** । विशेष श्री प्रभु कृपा । सभी प्रेमियों को मेरा यथायोग्य सह जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

बम्बई

प्रिय श्री राम !

दिनांक ४-८-६७

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। तुम्हारा पत्र कल्ह मिला । समाचार मालूम हुआ। तुम्हारी भावना श्रद्धा निष्ठा श्री प्रभु कृपा से अति सुन्दर है इसी प्रकार की श्रद्धा निष्ठा बनी रहे बढ़ती रहे, निरंतर श्री प्रभु का रटन चिन्तन स्मरण होता रहे अेसी हार्दिक सद्कामना सह श्री प्रभु प्रार्थना। इधर वर्षा खूब हुई कहीं तो सौ वर्ष में अैसी

वर्षा नहीं हुई थी वैसी हो गई है। द्वारका पोरबंदर में भी काफी वर्षा हुई, विहारी गाँव वाले पाँच सात आये थे साथ में श्री भगवान भी था वे लोग कहते थे हन लोगों को इधर दो महीने आप के साथ साथ रहना है। विहार के गांवो में जैसा खाना पीना जलसा होता था, वैसा भला शहरों में किस प्रकार हो सकता है, जहाँ सब कुछ रेशनींग से मिलता है और इतनी महंगायी बढ़ गई है कि जिसकी बात न पूछो फिर भी लोगों ने स्वागत सत्कार किया हीं है। मेरा तो कोई ठीकाना नहीं कि कब किधर जाना पड़े एेसी हालत में चार पाँच आदमियों को लेकर मै कहां कहां और किस प्रकार फिरु ? उन लोगों को किराया वगैरह व्यवस्था "कर दी। परम पूज्य १००८ श्री परमहंस बाबा के चरणों कमलों में मेरा सादर सविनय साष्टांग दण्डवत कहना और कहना कृपा दृष्टि रखें जिससे अधिक से अधिक नाम स्मरण कर सकू और करा सकू सभी प्रेमियों को जय श्री राम।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय श्री राम तथा बाल गोपाल ! जामनगर

आशीर्वाद ! दिनांक २५-१०-६७

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। आज तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ। श्री प्रभु के लिए तुम्हारे हृदय में लालसा है, भावना है, तमन्ना है, यह जानकर अत्यंन्त प्रसन्नता, इस में शक नहीं **श्री प्रभु कृपा ही जीव मात्र के कल्याण का अेक मात्र साधन है** फिर भी जीव को उसकी प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील तो होनी ही चाहिए। यही मानव जीवन का लक्ष्य है और इस लक्ष्य की प्राप्ति में ही मानव जीवन जन्म का साफल्य है। **माया का ध्वंस श्री प्रभु की दया विना सर्वथा असंभव ही है किन्तु उस दयाकी प्राप्ति का साधन असंभव भी नही, बहुत कठिन भी नहीं सीर्फ वृत्तियों की बदलने की आवश्यकता**

है। दया को उलटकर लिखो तो याद बनेगा। बस ! जिस प्रकार हम लोग अनादि काल से माया को याद करके, उसकी दया प्राप्त कर बन्धन में फँस गये हैं, उसी प्रकार अब अगर मायापति को याद करके उसकी दया प्राप्त करले तो सदा के लिये उस माया के प्रबल बंधन से मुक्त हो, जीवन मुक्तबन जावें। बस ! सतत् नाम रटन,चिन्तन, स्मरण करते रहो, इसी में सब प्रकार की सुख शान्ति भक्ति, मुक्ति निहित है। इस बार भी गुरुपूर्णिमा के बाद से ही सर्वत्र विलक्षण प्रचार प्रसार हो रहा है। श्री पूज्य गुरुदेव महाराज की तिथि का महोत्सव तो इस बार अभूतपूर्व ही हुआ वेरावल, सोमनाथ, प्रभास, प्राची, जूनागढ़ उसके बाद महुवा होकर आज यहां आया हूँ, इसके बाद गुजरात का प्रोग्राम है। सभी ग्रामवासीयों को मेरा जय श्री राम श्री १००८ श्री परम पूज्य परमहंस बाबा के चरण कमलों में सादर सविनय साष्टांग दण्डवत प्रणाम। पुज्यनीया माताजी के चरण कमलों में सादर सविनय दण्डवत प्रणाम। रामनेत, कामेश्वर तथा बालगोपाल को आशीर्वाद। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय श्री राम तथा बाल गोपाल !

श्री हनुमानजी का मंदिर,
राणीप, साबरमती, अहमदाबाद
दिनांक १२-१०-६८

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। कल्ह तुम्हारा पत्र तथा पूज्यपाद श्री १००८ श्री परम हंसबाबा का प्रसाद मिला। प्रसाद पाते श्री बाबा के प्रत्यक्ष दर्शन, कृपानुग्रह का अनुभव हुआ। मेरी ओर से श्री पूज्य पाद प्रातः स्मरणीय परम वंदनीय श्री बाबा के दिव्य चरण कमलों में मेरा वार-वार साष्टांग दण्डवत प्रणाम करना और कहना कि इसी प्रकार कृपादृष्टि बनायें रखें, जिससे उनका अज्ञानी,

अबोध, मूढ़, मतिहीन, दीन, मलीन, सब विधिहीन बालक श्री प्रभु नाम का दृढ़ आश्रय लिये रहे । स्वंय भी नाम जप कर कृतार्थ होवे औरों की भी इसी द्वारा सच्ची सेवा जीवन पर्यन्त करता कराता रहे । तुम भाग्यशाली है जो श्री बाबा के नित्य दर्शन का अलभ्य लाभ लेता है। मुझे (बाजा) की कोई खास तकलीफ नहीं जिससे ओपरेशन की नौबत आवे। यह तो शरीर का धर्म ही है कभी विशेष सर्दी के कारण कुछ तकलीफ बढ़ जाती है तो आप ही आप ठीक हो जाता हैं । एेसी कोई बात नहीं कि पैसे अभाव के कारण ऑपरेशन नहीं होता। पैसा खर्च करने वाले तो हजारों हैं। मुझे उसकी कोई आवश्यकता ही नहीं। तुम्हारी सद्भाव उत्तम है। पैसे का उपयोग अपने परिवार की सेवा में तथा किसी दुखी, रोगी, बीमार व्यक्ति या अपने आसपास रहने वाले साधु संतो की सेवा में करना । परम पूजनीय जगजननी स्वरुपा माताजी के चरण कमलों में मेरा दण्डवत प्रणाम। मेरे अनुज तथा बालगोपाल सबको यथा योग्य सह श्री राम जय राम जय जय राम। सभी प्रेमियों को यथा योग्य सह श्री हरिस्मरणं ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

महुवा, सौराष्ट्र

प्रिय श्री राम !

दिनांक १७-४-६८

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है यहां एेक मास का अखंड चल रहा है। जिसकी पूर्णाहुति २७-४-६८ को होगी उसके बाद मेहसाना में सात दिवस का प्रोग्राम है। बाद में वहाँ से सीधे पोरबंदर जाऊँगा या कुछ समय मिला तो बम्बई होकर पोरबंदर जाना होगा कारण कि पोरबंदर का वार्षिकोत्सव पहली दुसरी जून को है। श्री गुरुपूर्णिमा तथा श्री गुरुमहाराज की तिथि का उत्सव द्वारका में होने वाला था किन्तु श्री द्वारकाधाम संकिर्तन भवन तैयार होने में विलम्ब होने के कारण वहां का तात्कालिक

प्रोग्राम बंद रखा गया है। शायद कार्तिक मार्गशीर्ष में पूर्ण होगा। श्री प्रभु कृपा एवं श्री गुरुदेव की कृपा, प्रेरणा, सहायता तथा वीरपुङ्गव श्री हनुमानजी के अखंड संरक्षण में श्री नाम महाराज का प्रचार प्रसार दिनप्रतिदिन अविराम गति से प्रवाहित होता ही जा रहा है। यहां तो नित्य हजारों व्यक्ति लाभ लेते हैं । इस भयंकर कलिकाल में लोक परलोक बनाने तथा श्री प्रभु प्राप्ति का सर्व श्रेष्ठ साधन श्री भगवन्नाम ही है । श्री पूज्य माताजी तथा श्री परमहंस बाबा को मेरा सविनय सादर साष्टांग दण्डवत कहना। सभी ग्राम वासियों को मेरा यथा योग्य सह श्री राम जय राम जय जय राम। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय श्रीराम तथा ग्रामवासी गण

तथा बाल गोपाल ! पाटन

आशीर्वाद ! दिनांक २६-७-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र मिला समाचार मालूम हुआ।पहले वाला पत्र का जवाब तो मैने तत्काल ही भेज दिया था, पता नही पत्रोत्तर क्यों नहीं मिला? इसबार गुरुपूर्णिमा का उत्सव बड़ा ही विलक्षण अभूतपूर्व हुआ शायद इतने वर्षो के उत्सवों में सर्व प्रथम एेसा भव्य उत्सव हुआ। पोरबंदर में ही हुआ। पोरबंदर संकीर्तन मंदिर के लिये जमीन दान करने वाला सेठ भी इसबार आये थे यहां का वातावरण उत्सव आयोजन देखकर उनका हृदय बिल्कुल परिवर्तन एवं इतना प्रभावित हो गया कि संकीर्तन मंदिर के बाजू का जो जमीन वह विशेष विस्तार के लिये अर्पण कर गये। अभी तो ग्रामों में फिर रहा हूँ किन्तु १०-८-६८ से साबरमती में ४० दिवस का अखंड है। उसी बीच ३१-८-६८ से ६-९-६८ तक पूज्यपाद श्री गुरुमहाराज की तिथि का परमोत्सव महुवा में है। श्री द्वारकाधाम में संकिर्तन मंदिर बन रहा है उसका उद्‌घाटन अग्रहन में होनेवाला

था किन्तु हरिदास जमुनादास कनानी जो वहां का कर्ताधर्ता था उसका मोट (Accident) हो जाने से जड़ा कार्य मंद पड गया है। द्वारका, पोरबंदर, जामनगर तीनों जगहों में स्थायी अखंड चल रहा है। पूज्य माताजी के चरण कमलों में साष्टांग दण्डवत प्रणाम।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय श्रीराम ! जामनगर

आशीर्वाद ! दिनांक १७-१०-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। इसके पूर्व अेक तुम्हारा पत्र आया था, जिसका उत्तर मैने तत्काल ही भेज दिया था न मालूम क्यों नही मिला। दिनांक ८-१०-६८ का लिखा हुआ पत्र अभी मिला है और जवाब भी अभी लिख रहा हूँ। मैं दो तीन दिनों के लिये श्री द्वारका गया था आज ही दोपहर को लौटकर आया हूँ। और कल्ह दोपहर को यहां से सुरेन्द्रनगर २१ दिवस का अखंड प्रारंभ करने के लिये जाने वाला हूँ। श्री द्वारकाधास का संकीर्तन मंदिर अत्यन्त ही भव्य बन गया है। थोड़ा पेन्टिग वगैरह का काम बाकी है। हरिदास कनानी (वाघेरिया) सेठ जो वहां का मुख्य कार्यकर्ता है उसे मोटर अेक्सीडेन्ट फ्रेक्चर हो जाने के कारण उद्घाटन का समय लंबाना पड़ा। माघ मास की वसंत पंचमी के अवसर पर उद्घाटन होगा, अेसा प्रतीत होता है। **खूब नाम रटन स्मरण करते रहना किसी बात चिन्ता नहीं करना।** पूजनीया माताजी के परम पावन चरण कमलों में इस दीन का साष्टांग दण्डवत् प्रणाम कहना और कहना उन्हीं की कृपा से सर्वत्र श्री प्रभु नाम प्रचार द्वारा अनेक जीवों का कल्याण हो रहा है। सभी प्रेमियों को यथायोग्य सह जय श्री राम।

हितच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय श्रीराम, तथा ग्रामवासी गण
तथा बाल गोपाल !

सुरेन्द्रनगर
दि ६-१२-६८

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। तथा उन्हीं की कृपा प्रेरणा सहायता श्री मंगलमय नाम महाराज का प्रचार प्रसार भी अनायास ही दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। विहारी वाले श्री पूज्यपाद श्री १००८ श्री गुरुमहाराज की तिथि पर भादो मास में आये थे और उसके बाद जामनगर पोरबंदर, वेरावल, सोमनाथ, प्राची तथा द्वारकाजी का दर्शनकर वापिस गयें। श्री द्वारकाधाम का संकीर्तन मंदिर बड़ा ही भव्य एवं आकर्षक बन गया है। थोड़ा बहुत काम बाकी है, वह अेक ही मास में पूरा हो जायेगा। श्री प्रभु कृपा से तथा श्री गुरुदेव की दिव्य प्रेरणा से अनायास ही दो तीन स्थलों में श्री द्वारकाधाम, श्री सुदामापुरी तथा जामनगर में अेक से अेक बढ़कर संकीर्तन भवन बन गया है और स्थायी श्री अखंड यज्ञ भी तीनों स्थलों में चालू है। माघ वसंत पंचमी के उपर श्री द्वारका संकीर्तन मंदिर का उद्घाटन होगा अेसा अभी निश्चय हुआ है । खूब नाम रटन स्मरण चिंतन करो कराओं इसी में लोक परलोक की सार्थकता सफलता निहित है ।

सगुण ध्यान रुचि सरस नहिं, निर्गुण मन ने दूरि ।
तुलसी सुमिरहुं राम को, नाम संजीवनी मूरि ॥
राम नाम कलि काम तरु, सकल सुमंगल कंद ।
तुलसी करतल सिद्धि सर्व, पग-पग परमानन्द ॥

सभी ग्रामवासियों तथा प्रेमियों को यथा योग्य सह् श्री राम जय राम जय जय राम । यहां २१ दिवस का अखंड था कल्ह पूर्णाहुति ह । शनिवार को धांगधां है ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

॥ श्री रामं ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री कामनाथ महादेव मंदिर
भरुच (भृगुक्षेत्र गुजरात)
दिनांक १८-१२-६८

प्रिय श्रीराम, तथा ग्रामवासी गण
तथा बाल गोपाल !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। तुम्हारा पत्र आज मिला है, समाचार मालूम हुआ। श्री रामपुकार बाबू का भी पत्र घुमता फिरता प्राप्त हुआ, उनका पत्र तो ज्ञान, वैराग्य, भक्ति भावनाओं से भरपूर है। पुष्टि के लिये रामायण की चौपाइया तथा दोहे भी पर्याप्त लिखी हुई हैं। विनय पत्रिका में के भी उद्धाहरण खूब दिये गये गये हैं। उन्होंने भी श्री द्वारकाधाम संकीर्तन मंदिर के उद्‌घाटनोंत्सव की तिथि के लिये सूचना के लिये आग्रह किया है उद्‌घाटन के लिये वसंत पंचमी ता- २२-१-६४ लगभग निश्चित ही है किन्तु कतिपय कारण विशेष द्वारका पहुँचने के बाद ही निश्चित ही सूचना भेजी जायेगी, इसी कारण उन्हें पत्रोत्तर नहीं भेजा गया है। लगभग १-१-६८ तक में द्वारका पहुँच जाऊँ गा असा विचार है आगे श्री प्रभु कृपा। दीपावली के बाद से इधर बाहर ही बाहर फिर रहा हूँ। इसी कारण न यथा समय पत्र मिल पाता है और न पत्रोत्तर दिया जा सकता है। अभी तुम्हारा पत्र मिला है और अवकाश होने से तत्काल ही पत्रोत्तर लिख रहा हूँ। सबों को मेरा यथायोग्य सह जय श्री राम। श्री पूजनीया माताजी के चरण कमलों में मेरा साष्टांग दण्डवत प्रणाम। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

|| श्री राम ||

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय श्रीराम !

श्री संकीर्तन मंदिर

द्वारकाधाम

आशीर्वाद सह श्रीराम जयराम जयजय राम !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । श्री द्वारका संकीर्तन मंदिर बड़ा ही भव्य एवं रमणीय बना है । उद्घाटनोत्सव भी अभूतपूर्व ही हुआ । अभी होली के बाद अवसर पर बाहर से आनेवाले यात्रियों ने भी अलभ्य लाभ उठाया। तुम्हारे आने की अपेक्षा भी थी किन्तु बाद में अेसा प्रतीत हुआ कि परिस्थिति वसात् न आना हुआ होगा । कहीं भी रहकर **श्री प्रभु नाम रटन करते रहो**, इसी में अपना परम कल्याण है । अगर हृदय में भगवन्नाम अंकित हो गया तो अपना शरीर ही अयोध्या द्वारका बन जायेगा । श्री १००८ श्री परमहंस बाबा के चरण कमलों में मेरा कोटि-कोटि वंदन कहना और उन्हे कहना कि अपने संचित शक्ति में से शक्ति प्रदान करते रहें जिससे अपना और समस्त प्राणियों के कल्याण का अेकमात्र साधन श्री भगवन्नाम का प्रचार प्रसार में निमित्त बना रहकर समाज की सेवा करता रहूँ । श्री नाम महाराज में जन्म जन्म अटूट..... अखंड श्रद्धा निष्ठा बनी रहे। पूजनीया माताजी के चरणो कमलों में कोटि कोटि वंदन। सभी ग्राम वासियों को यथा योग्य सह श्रीराम जयराम जयजय राम। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

|| श्री राम ||

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय श्रीराम, तथा बाल गोपाल ! श्री संकीर्तन मंदिर

पोरबंदर

आशीर्वाद ! दिनांक १९-५-६९

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । तुम्हारी लगन, श्रद्धा, निष्ठा, श्लाधनीय़ है। बिहार के खास करके जन्मभूमि के तो तुम ही अेक अेसा भावुक निकले कि सदा सर्वदा पत्र लिखता ही रहता है। बस! खूब नाम रटन करते रहो। इसी में सब तत्व भरा है। सभी शास्त्र संत का अेक ही मत है:– "वेद पुराण संत मत अेहु सकल सुकृत फल राम सनेहू ।" इसी से लोक परलोक भोग मोक्ष सब सुलभ हो जाता है । "लोक लाहु परलोक निवाहु" पूजनीया श्री मातु श्री के चरण कमलों में इस दीन हीन मलिन का साष्टांग दण्डवत प्रणाम । जो कुछ हो रहा है उन्ही की कृपा का फल है। श्री १००८ परम हंस बाबा के चरण कमलों में मेरा दीन हीन मलिन का साष्टांग दण्डवत तथा आशीर्वाद के लिये करबद्ध प्रार्थना। सभी ग्राम वासियों को यथा योग्य सह जय श्री राम। विशेष श्री प्रभु ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

|| श्री राम ||

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय श्रीराम, तथा बाल गोपाल ! जामनगर

आशीर्वाद ! दिनांक १५-८-६९

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । इस बार श्री गुरुपूर्णिमा का महोत्सव अभूतपूर्व ही हुआ पू. माताजी का आगमन भी अेक अपूर्व भगवत लीला रही । मुझे तो उनके आगमन का सीर्फ अेक दिवस पहले पता चला । परम पूज्य

प्रातः स्मरणीय श्री श्री १००८ श्री परम हँसबाबा का समाचार जानकर अत्यन्त दुख हुआ। तुम्हारा पत्र बहुत देर से मिला नहीं तो माताजी के साथ साथ आने का प्रयास अवश्य करता । अब तो उनके चरण कमलों में मेरा साष्टांग दण्डवत प्रणाम कहना और बन सके उतना तन मन से सेवा करना । यह अेक अमूल्य लाभ तुझे प्राप्त हुआ है। यहां नं आकर उनकी सेवामें लगा रहा यह जानकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई है । आना जाना तो होता ही रहता है । अेसी सेवा का अवसर तो किसी महान पुण्यशाली प्राणी को ही प्राप्त होता है । अब मेरा स्वास्थ्य ठीक है ठंड़ी और हाई ब्लडप्रेसर का असर हो गया था श्री प्रभु की जैसी इच्छा । शरीर तो रोग मंदिर है ही और साथ ही अनित्य भी है । इससे जितना सत्कर्म हो जावें उतना ही सफल बाकी सब निष्फल ही है । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय श्रीराम !

आशीर्वाद!

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। श्री श्री १००८ श्री परमहंस बाबा की अस्वस्थता सम्बन्धी पत्र १५-८-६९ को मिला मुझे तो अेसा प्रतीत हुआ कि परमहंस बाबा इस मर्त्यलोक में अब नहीं है फिर भी तुम्हारी प्रसन्नता के लिये तत्काल ही पत्रोत्तर लिख दिया । कल्ह तुम्हारा तार मिला कि वे साकेत वासी १४-८-६८ को ही हो गये, अपना इलाका तथा समाज ने एक अपूर्वनिधि खो बैठा किन्तु किया क्या जाए ? यही इस जगत् की लीला है । बस उनके आदर्श का पालन करना ही अपने लोगों के लिए उनकी बड़ी से बड़ी सेवा है, श्रद्धांजलि है । कल्ह से ही यहां के रामधुन मंडल ने बाबा के निमित्त १५ दिवस का अखंड प्रारंभ कर दिया है । तुम लोगों से भी जितना शक्ति अनुसार बन सके उतना

अखंड नाम स्मरण करना कराना इससे बाबा को बड़ी प्रसन्नता होगी क्योंकि वे स्वयं अखंड जापक थे। कल्ह पोरबंदर जानेवाला हूँ, वहाँ संकीर्तन मंदिर में एक भोजन शाला बना है उसी का गृहप्रवेश मुहुर्त २१-८-६९ गुरुवार को है और उसी में इसबार श्री गुरुमहाराज की पुण्यतिथि भाद्रपद शुक्र अष्टमी से पूर्णिमा तक मनाई जाने का निश्चिय हुआ है । वहां भी अवकाशानुसार बाबा के निमित्त अखंड रखा जाएगा । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय श्रीराम !

श्री पुष्पनाथ महादेव,
पालड़ी, अहमदाबाद

आशीर्वाद !

दिनांक ६-९-६९

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम परम भाग्यशाली है, जो १००८ परमहंस बाबा की सेवा का इतना अलभ्य लाभ ले सका । मैं हतभागी हूँ कि उनका अंतिम दर्शन तक नहीं कर सका। उनकी निधन की सूचना भी देनेवाला तुम्हारा पत्र उनके निधन के अेक दिवस पश्चात प्राप्त हुआ । ठीक वैसे उनकी अन्तेष्ठी क्रिया समाचार भी दो दिवस बाद जब द्वारका से पालेज जा रहा था तो ट्रेन में जोशी ने पत्र दिया फिर क्या करता ? तुमने तथा ग्रामवासियों ने जो महाराजश्री की सेवा की इसके लिये तुम लोग अति धन्यवाद के पात्र हो । अब उनके आदेश तथा आचरण का संदेशा कुछ जीवन में उतारो तो तुम लोगों का सब दुःख दैन्य दारिद्रय दूर हो जावे । श्री श्री १००८ परमहंस बाबा की स्मृति तथा श्रद्धांजलि में समाचार मिलते ही उसी दिन से जामनगर में १५ दिवस का अखंड रखा गया था । द्वारका में भी अखंड का आयोजन करने का था जिसकी सूचना पत्र भी तुम्हे भेजा था श्री श्री १००८ गुरुमहाराज की तिथि का उत्सव पोरबंदर में होनेवाला था किन्तु स्थानान्तर करके वहां से ३०-३५ मील दूर अेक

ग्राम में रखा गया है । १९-४-६९ से २५-८-६९ तक है। यहां से अब मैं सिधे पोरबंदर जाऊँगा। पूजनीया माताजी के चरण कमलों में प्रणाम। अन्य ग्राम वासियों को यथायोग्य सह श्रीराम जयराम जयजय राम। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय श्रीराम तथा बाल गोपाल ! जामनगर

आशीर्वाद ! ३१-१०-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । श्री गुरुमहाराज की तिथि के अवसर पर मेरा स्वास्थ्य बिलकुल बिगड़ गया था । दस दिनों तक जामनगर ज्वर फ्लू के कारण बिलकुल कमजोरी आ गई थी। खांसी, ब्लड प्रेशर वगैरह अनेक उपद्रव बढ़ गये थे किन्तु उत्सव स्थल से लौटकर पोरबंदर आते ही तीन दिनों में सभी उपद्रव दूर हो गया ज्वर खासी भी मिट गई । अब स्वास्थ्य बिलकुल ठीक है किन्तु कमजोरी अत्याधिक होने के कारण अभी बाहर का सभी प्रोग्राम बंद है। गुजरात के कौमी दंगा के कारण गुजरात में बृहद् प्रोग्राम अभी संभव भी नही हैं। अतः दिसम्बर तक यहीं ठहरने का निश्चय है बाद में बम्बई होकर महुवा जाने का विचार है । जामनगर पोरबंदर तथा श्री द्वारकाधाम में स्थायी अखंड बड़े ही आनन्द के साथ चल रहा है। अमदाबाद, वड़ोदा वगैरह में अभी भी आशंका तो लोगों में बनी हुई है कि न जाने कब क्या हो जाएगा ? पूजनीया माताजी के चरणो में मेरा साष्टांग दण्डवत प्रणाम । कामेश्वर सिंह आये थे और माताजी के साथ गये उसकी सूचना तक नहीं भेजी । औरों के पास उनका पत्र व्यवहार चालू है सभी ग्रामवासियों को मेरा यथायोग्य श्रीराम जयराम जयजय राम । खूब नाम रटना, आनन्द से रहना, समय भयंकर है । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय श्रीराम !   महुवा

आशीर्वाद !   जि. भावनगर

श्री प्रभु कृपा से आनन्द है । तुम्हारा पत्र मिला पोरबंदर से Redirect हो कर आज मिला है । मेरा स्वास्थ्य श्री गुरुमहाराज के तिथि के अवसर पर बिगड़ गया था । ज्वर का प्रकोप हो गया था । खांसी भी थी किन्तु थोड़े समय बाद जामनगर में आने के बाद स्वास्थ्य बिल्कुल अच्छा हो गया था । दिसम्बर में जामनगर से बम्बई गया था, वहाँ किसी प्रकार की शिकायत न होने पर वहां का अेक मेरा प्रेमी भक्त डाक्टर आया और कहने लगा कि आप की तबियत ठीक नहीं थी मुझे जाँच करना है । अेसा करके उसने इच्छा विरोध अपना इलाज शुरु किया । दवा की Reaetion हो जाने से कमजोरी बहुत हो गई थी अब तो बिल्कुल ठीक है । चिन्ता करने की कोई बात नही । शरीर का भोग कभी कभी सभी को भोगना ही पड़ता है । न कोई तकलीफ न कोई इच्छा फिर भी अकारणवशात् इलाज करना तो और क्या कह जाए । अब स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक है । चिंन्ता करने योग्य तो कभी भी अस्वस्थता नहीं थी । पूजनीया माताजी के चरण कमलों में साष्टांग दण्डवत् प्रणाम । समस्त ग्राम वासियों को यथा योग्य सह जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चारु बाबू !   कांदीवली

आशीर्वाद !

आपका पत्र मिला, समाचार विदित हुआ । आपने आपनी सहृदयता से मुझे मेरी वाणी की "कि माताके अन्तिम समय अवश्य रहूँगा । स्मृति भी

दिलाई. किन्तु यह स्मृति भूली भी नहीं थी और शायद भूलेगी भी नहीं लेकिन सारा दारो मदारतो प्रारब्ध तथा विशेष श्री प्रभु कृपा कर निर्भर है । मैं तो समझाता हूँ कि जैसे मैंने एक मां का त्याग किया तो अभी मुझे हजारों मां हो गई है उसी प्रकार माँ ने एक पुत्र का त्याग किया तो आप लोग अभी माँ के अनेकों पुत्र मिल गयें है - यह दूसरी बात है कि मां इसका अनुभव न करें और आप लोग भी अपने कर्त्तव्य से वंचित रह जावें । यों तो श्री प्रभु का विधान सभी मंगल मय है, कल्याणमय, दुख देकर भी श्री प्रभु सुख का ही नूतन सृजन करते हैं । अतः श्री करुणा निधान प्रभु की करुणा में पूर्णारूपेण विश्वास करना और बने तो अपने तथा अपने सम्बन्धियों के कष्ट निवारणार्थ श्री प्रभु से प्रार्थना करना, उनके लिये भजन स्मरण करना कारण कि जितना जीव को अपने पुत्र पर, मित्र पर, डाक्टर, वैद्य, पर विश्वास है उतना भी विश्वास श्री प्रभु के उपर नहीं भला प्रभु कैसे मेरी सहायता करें ? अतः श्री माताजी के चरण कमलों में साष्टांग दण्डवत कहना तथा आग्रह करना कि श्री प्रभु नाम निरंतर रटे, अपने को श्री प्रभु की शरण में सदा अभय समझें सच्चा पुत्र, मित्र पति, तो एक श्री प्रभु ही हैं । और वह अपने पास ही सदैव है, उन्हीं को आशा भरोशा, विश्वास पूर्वक पुकारना चाहिए और जब प्रभु की इच्छा होगी तो यह शरीर भी हाजीर होगा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री रामः शरणं मम

"श्री राम जय राम जय जय राम"

कांदीवल्ली

प्रिय चारूबाबू भोलाजी तथा

दिनांक ७-१-५१

कुंजीलालजी !

जय श्री रामजी की !

श्री प्रभु की असीम अहेतुकी अनुकम्पा का ही फल है, जो आप लोगों ने प्रत्येक शनिवार श्री अष्टमास महायज्ञ का आयोजन तथा सम्पादन

कर अपना तथा अपने से सम्बन्ध रखने वाला विश्वका परम कल्याण कर रहे हैं। वस्तुतः सच्चाई क्या है और उसमें जीवन का परिचय या ज्ञान कैसे होता है और कब क्या होता है और होगा इसका भी निश्चय बड़े बड़े ज्ञानी लोगों को भी नहीं होता। अतः उन्ही संतो का कथन है कि अपनी ओर से प्रभु को अपना मान लेना याने उनके साथ किसी प्रकार नाता जोड़ लेना तथा निरंतर उनकी स्मृति बनाये रखना यही जीव का पुरुषार्थ है। किन्तु इसका फल तो प्रभु के हाथ में है। और हमें भी उन्ही के उपर छोड़ना चाहिए। जब प्रभु से सम्बन्ध होने लगता है तो दूसरे सम्बन्ध या चिन्तन अपने आप छुटने लगते है। इसके लिये **प्रभु का नाम स्मरण ही महान मंत्र है** किन्तु जैसे दवा सेवन करते समय पथ्य तथा अनुपात की आवश्यकता होती है उसी प्रकार प्रभु का नाम स्मरण करते हुए पथ्य याने जो व्यक्ति विशेष या-ग्रथ विशेष या स्थल विशेष प्रभु में प्रीति दृढ़ कर उसको अपनाना चाहिए तथा जो इसमें विध्न या बाधा डाले उसका त्याग करना चाहिए तथा अनुपान यही कि गुरु की वाणी में पूर्ण श्रद्धा तथा विश्वास के साथ उसका अधिक से अधिक, अनुष्ठान करना अगर यह बन सके यानी अपनी कमजोरी प्रभु स्मरण करने पर भी न जाती हो तो इसके लिए हृदय से रोना चाहिए और प्रभु की अहैतुकी कृपा में पूर्ण विश्वास कर उनसे प्रार्थना करनी चाहिए, प्रभु अपने आप सब सुधार लेते हैं। विशेष श्री हरि कृपा। और सब समाचार अच्छा है। यहां भी सत्संग भजन चल रहा है, अभी शायद द्वारिका की ओर जाय ऐसी अपनी इच्छा, विशेष न होने पर भी श्री प्रभु की प्रेरणा मालूम होती है। **जीवन क्षण भगुर है, संसार के भोग मिथ्या है। अतः जिवन कालमें ही प्रभु का पूर्ण प्रेम प्राप्त करने की चेष्टा करनी चाहिए। नाम खूब रटो, रटाऔ, यही एक मात्र कल्याण का उपाय है।**

आपका हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चारुबाबू, भोलाजी,
बैजनाथ गुप्ता !

तिथि २२ सितम्बर,
भाद्र पद शुक्र,
एखादशी रोजे शुक्र ।

आशीर्वाद

करुणा वरुणालय दीनजन शरणालय श्री राघवेन्द्र प्रभु की असीम अनुकम्पा एवं श्री गुरुदेव की महती दया से ईसबार श्री गुरुदेव की तिथि यही मनायी जायेगी क्योंकि यहां जहाँ की अष्टयाम का कोई नाम भी नहीं लेता था आज गुरुदेव की कृपासे नगर गुंजा करता है और लोगों का प्रेमभी बहुत है। अतः इसबार यहीं तिथि मनायी जायेगी । रास्ते में और पास में भी अनेक तीर्थ पड़ते है। सब आनन्द है किन्तु समय तथा पैसे की बात है। अतः अगर हर प्रकार की सहुलियत मिल सके तो आप लोग आना नहीं तो किसी प्रकार का अड़चन हो तो निःसंकोच आना बंद कर देना । वही पर सब लोग आनन्द मनाना । जगन्नाथ और मदन इनमें भी किसी प्रकार की अड़चन न हो तो उनको भेज दीजिएगा । यहां से फिर उनके टिकट का प्रबन्ध हो जायेगा । आने वालों को विशेष समान या झंझट की चीजें नहीं लानी चाहिए, कुंजी लालने एक बड़ी भूल की है जो मेरा चित्र मुझे झूठा बनाकर लेकर चला गया अतः जब कोई आवे तो बाबाजी का भोलाजी के यहां वाला चित्र साथ भेज दीजिएगा । और सब इन्तजाम यहां के लोग कर रहे हैं । बैजनाथ यहां है भी नहीं और कोई विशेष अब प्रेमभी नहीं. सब इन्तजाम ग्राम के गरीब लोग कर रहे है । एलाहाबाद से बम्बई एक्सप्रेस में बैठकर बम्बई से पहले ही दादर स्टेशन पर उत्तर जाने और वहां से बी.बी.डी. सी. आ इलेक्ट्रीक ट्रेन में बैठकर कांदीवल्ली आ जाएँ। स्टेशन पर उतर कर बाजार में आते ही सब पता चल जायेगा । आप लोग उधर के जितने लोग आने वाले हो सब लोग एक ही दिन चले और चलने के साथ ट्रेलिग्राम कर दे तो आदमी दादर स्टेशन मौजद

मिलेंगे जो कांदीवल्ली साथ साथ ले आवेंगे । शिवजी वगैरह को भी पत्र लिख रहा हूँ सब लोग जब आवे तो एक साथ आवे । एलाहाबाद बम्बई एक्सप्रेस से आने में सहुलियत रहेगी, क्योंकि वही से गाडो बनती है । पत्रोत्तर देना राधाकृष्णसेठजी द्वारिका तथा अपना यगल चौधरी का पत्र है उसको दे दिजिएगा। शिवजी वगैरह आना चाहे तो उसको सब समझाकर गाड़ी में एलाहाबाद के लिये बैठा दिजिएगा । टिकट दादर का मिल जाए तो अच्छा, नहीं तो बम्बई का ही बनवा लिजिएगा । और दादर स्टेशन उतर जायेगा । दो-तीन आना पैसा बेकार जाएगा और जितने प्रेमी हो सब को सूचना कर दिजिएगा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

झीटकाहियाँ

प्रिय चारुबाबू !

जय श्री सीताराम दिनांक १०-४८

श्री करुणावरुणालय, दीनजन शरणलय भगवान कौशलेन्द्र राघवेन्द्र प्रभु की असीम अनुकम्पा तथा श्री अनन्त गुरुदेव की महती कृपा से यह शरीर कायम है । तथा आशा करत हुँ कि आप भी सपरिवार सकुशल सानन्द होगें । यधापि श्री गुरुदेव जी ने आप को बार बार मना किया कि मालिक के विरुद्ध बराबर काम करना, उचित नहि तथा यह शरीर भी आत्मीय होने के नाते सदैव आप को यही राय देता है किन्तु आप कुछ भी ध्यान नही देते। एक गृहस्थ का परम धर्म यही है कि प्रभु के दत्त कर्तव्य का समुचित पालन तथा उसे श्री प्रभु की भक्ति समझना, अभी आप हाल में ही मालिक के विचार के प्रतिकूल ही श्री अवध धाम गये थे तथा फिर आप झीटकहियाँ आना चाहते थे तथा लखनपुर की तैयारी कर रहे है यह कहां तक उचित है । यह आप समझे । (यही तो कसौटी है जो गुरुकृपा से ही कोई लाल खरा उतर सकता है ।

यह मुझे बिल्कुल पसंद नहीं । आप का धर्म सीर्फ किर्तन ही करना या करना नही है — मौजूदा समय अपनी ड्युटी पुरी करना भी कीर्तन ही है। अतः आप से यही अनुरोध है कि बगैर मालिक की इच्छा के सदैव इधर उधर जाने की चेष्टा न करे। अभी मेरा मौन नवमी तक है। हो सकता है कि विजय दशमी को मुजफ्फरपुर आऊँ । कई रोज से आना चाह रहा हूँ किन्तु प्रभु की इच्छा, यहाँ भी समय आनन्द पूर्वक व्यतीत हो रहा है सदैव कथा किर्तन होता ही रहता है आज अखंड भी एक पूरा हुआ और दो-तीन और अखंड होने वाला है प्रभु की जैसी इच्छा । अब यहाँ ठहरने की इच्छा नहीं हैं मेरे वस्ती वाले एक छोटाभाई आया था वहाँ जाने के लिए मैं जाने में तैयार नहीं हुआ यही तो कसौटी है जो गुरु कृपा से कोई लालखरा उतर सकता है आपका प्रेम रामनाम मातृ पितृ, स्वामी समर्थ हितु, आस राम नाम को, भरोसो राम नाम को । प्रेम राम नाम ही सो नेम राम नाम ही को। जानौ न मरण पद दाहिनो न वाम को। स्वार्थ सकल, परमार्थ को राम नाम राम नाम तुलसी न कोई काम को। राम की शपथ सर्वस्व मेरे राम नाम, काम धेनु, काम तरु, मोसे छिन छाम को ।

अतः प्रीति प्रतिती, सुरीर्ति सो राम नाम जपु राम तुलसी मेरो है भलो आदि मध्य परिणाम ।

मन लगे, न लगे–भी नाम रटिये। ऐसा तो सभी को होता है कि मन लगता है कभी नही लगता । इसकी कोई परवाह न करना । श्री गुरुदेव की तिथि यहां भी बडे विलक्षण एवं नवीन ढग से मनायी गई। असीम आनन्द रहा । अन्य सभी प्रेमियो को मेरा जय श्री सीताराम । गप्ताजी का क्या हाल है मेरा आशीर्वाद गुप्ता को कह दिजियेगा । कुंजो सत्यनारायण को भी आशीष ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम

॥ श्री रामः शरणं मम ॥

प्रिय चारुबाबू,

जय श्रीरामजी की ।

आपका पत्र मिला पढ़कर प्रभु की अनुकम्पा एवं कर्म की विचित्रता का अनुभव हुआ, कहा नही जा सकता कि हमारे संस्कार कब क्या करादे-दुःख सुख तो जीवन का नित्य संगी है लेकिन आनन्द शान्ति एवं प्रभु भक्ति श्री प्रभु कृपा की देन है। एक वस्तु बहुत अच्छी हो सकती है । लेकिन अधिकारी न होने पर तथा उचित समय का अभाव रहने पर वही वस्तु जो वरदान रुप होता है। अभिशाप का रुप धारण कर लेता है– प्रभु से न भय करने की आवश्यकता है और न संकोच की लेकिन संसार से तो नित्य ही डरना तथा संभाल रखना चाहिए क्योकि दुरंगी दुनिया तो सदा दो तरह की ही बातें करती है– सुसमय में खुशामद, कुसमय में बदनामी, इसलिये कहा गया है कि सत्य को भजन को सदा गुप्त रखना तथा असत्य बुराई को प्रगट करना समय सदा एक सा नहीं रहता, वह तो पल पल में बदलता है– अतः कभी दुःख कभी सुख लेकिन -

रहिमन विपदा हुँ भली जो थोड़े दिन होय ।
हित अनहित या जगत में जानि पड़े सब कोये ॥

इस समय अधीर होने और घबराने से कुछ काम चलने का नहीं धैर्य के साथ तथा पूर्ण निष्ठा एवं विश्वासपूर्वक श्री प्रभु का नाम स्मरण ही रात दिन करना चाहिए ताकि हमारे दुर्दिन का अन्त शीघ्र हो जाये- सब प्रकार के दुःखों को, कलेशो को, दीनता तथा दरिद्रता को दूर करनेवाला श्री प्रभु का नाम ही हैं । यह तप का कसौटी का वख्त है, घबराना नही चाहिए- अन्य सभी चिन्ताओं को त्याग कर, दिव्यचिन्तामणि सभी चिन्ताओं को दूर कर, भोग मोक्ष प्रदान करता है :-

अतः तुलसी सीताराम कर दृढ़ राखो विश्वास
कबहु बिगड़त ना सुने रामचन्द्र के दास ।

मुसीबत रो रो कर भी सहना ही पड़ता है । ऐसा सहना भी मुसीबत से छुटकारा नहीं दिलाता बल्कि उसे और भी प्रबल बना देता है। किन्तु मुसीबत श्री प्रभु कृपा समझकर धैर्य तथा प्रसन्नतापूर्वक भोगने से तप का काम करता है जिससे तेज बढता है । और वह तेज हमारे दुसंस्कारो का नाश कर, सुख सम्पति, प्रदान कर, कुन्दन की तरह हमें विशुद्ध बनाता है । अतः अधिक से अधिक प्रभु नाम रटना, दिनता और आर्ततापूर्वक पुकारना ही ऐसे समय में अपना सबसे बड़ा लाभ है । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चारुबाबू ! बेट द्वारिका

जय श्री राम दिनांक - १४-७-५३

आपका पत्र मिला, समाचार बिदित हुआ । ठीक ही है कि इस कराल समय में त्याग की किम्मत नहीं सी प्रतीत होती है । कारण कि लगभग समस्त मानव समाज भोग रुप ही बन गया है। जो शेष है वह बनने को उतारु है अतः भोग एवं विलास मयी दृष्टि वाले व्यक्ति को त्याग विराग की दृष्टि कैसे बन सकती है । नयन दोष जा कहँ जब होई, पीत वरण शशि कँह कह सोई । यह उक्ति तथा मुक्ति इस समय मानव समाज में अक्षरशः चरितार्थ हुआ दीखता है। यधपि यह कथन सर्वदा सर्वकाल के लिये सत्य है। ऐसा जो करोड़पतियों का पापियों का जो दास बना हुआ है । उनकी गन्दी नाली का जो कीड़ा बना हुआ हैं, उसके लिये दूसरी दृष्टि कैसे बन सकती है। वह तो साक्षात लक्ष्मी पतियों को भूलकर संसार के बने हुए लक्ष्मी पतियों का ही

वखान करता है । महत्व समझता है। उसी का किंकर बना हुआ हैं । वैसे ही जीव में मूरली भी है तो भला इस तरह की बात न करे तो और क्या कहे वह अपनी स्थिति से लाचार है नहीं तो मै जानता भी नहीं हूँ कि रघुनाथजी के सामने जगत में करोड़पति कौन हैं और कौन हो सकता है। ठीक है समयानुसार आप लोगो के विचार में भी विभेद होना, कोई आश्चर्य नही स्वाभाविक ही हैं । जामनगर में तो ऐसे करोड़पति हैं और कांदीवल्ली में कि कही जाने के टीकट भी मिलना कठिन हो जाता है उनकी ओर से, किन्तु जो सच्चे करोड़पति है उनका मैं प्रेमी ही नही बल्कि दास हूँ कि जन्होने रात दिवस परिश्रम करके, जागरण करके एक मास दो दो तीन तीन करोड़ विजय मंत्र सच्चा राम नाम धन उपार्जन करके स्वयं तथा मुझे भी धनवान, तथा कृतकृत्य बनाया है । उनसे हमारा प्रेम और प्राण समान वे प्रिय हैं । जिस स्थल से मेरा विकास प्रकाश हुआ और हो रहा है ऐसे स्थल को छोड़कर और कौन सी जगह में मैं जाऊँ । आप लोगो को मंत्र लिखने का प्रभु आदेश हुआ तौभी तीन वर्ष के भीतर कभी भी बिहार से पचीस तीस लाख मंत्र नहीं हुआ। जो जामनगर, दो दो करोड मंत्र लिखा है महीनों महीनों अखंड हुआ, हो रहा है, दैनिक ३ घंटे धुन चालू है। वह स्थल मेरे लिए क्या हानिप्रद है। यधपि स्थायी रुप से कही रहता भी नहीं हूँ दो मास एकमास वह भी अखंड लेकर, ही। अभी मुझे बेट में आये २२-२३ दिन हुआ हैं जिसमें २० दिन तक अखंड चला है । और आज से फिर शरु होने वाला है । यहाँ द्वारिका, सुदामापुरी, ऐसे पवित्र भूमि भगवान के नाम की भी कितनी महिमा है, यह छोड़कर अन्यत्र जाकर करे क्या ? और अपनी शक्ति या इच्छा कर ही क्या शकती है ? जो मैं इच्छा करु कि यह स्थल छोड़कर अन्यत्र चला जाउँ । अतः अपना तो वही सिध्धांत है कि जहाँ राम का नाम वही काशी अयोध्या, द्वारिका हरिद्वार सबतीर्थ सब धाम । उस पर भी श्री प्रभु की इच्छा, अपने ख्याल रखने की बात लिखी थी सो तो गुरुदेव नित्य ही हम लोगो का ख्याल रख रहे है ।

रक्षण कर रहे हैं लेकिन अगर हम लोग उस रास्ते पर न चले, भजन न करे तो दूसरा क्या कर सकता है । भोजन स्वयं करने पर ही तृप्ति होती है उसी प्रकार भजन स्वयं करने पर ही उसका आनन्द उसका महत्व, समझ में आता है । अभ्यास वगैर कुछ नही होता, भगवत् की गुरु की कृपा तो हो गई कि भगवान ने मानव शरीर दिया। गुरु दिव्य मंत्र तथा सच्चा मार्ग दर्शाया । अब चलना न चलना अपना काम है । नाम रटन करना चाहिए ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चारु ! श्री प्रयाग

सादर सप्रेम श्री हरि स्मरणं । दिनांक २०-१-५४

आप का पत्र मिला । आप को जैसी दर्शन की अभिलाषा है वैस ही मेरी भी है किन्तु मैं तो आप लोगो का दर्शन नित्य ही करता हूँ । और श्री प्रयाग स्नान समय श्री गुरुदेव सहित समस्त प्रेमीगणों को स्मरण करता ही हूँ। शरीर जड़ अनित्य एक देशी होने से सर्वथा इसका मिलन दर्शन होवे यह सर्वथा कठिन ही नही वरण असंभव ही है । अतः शारीरिक मिलन तथा दर्शन की आकांक्षा भी व्यर्थ सा ही है और जब प्रभु की कृपा होवे तब हो भी जावे। सभी प्रेमियो को मेरा सादर सप्रेम जय श्री राम । यहां रहने का कोई निश्चित समय नही है । कब तक रहना । पीछे अयोध्याजी जाने का विचार है । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारका

प्रिय चारुबाबू !

जय श्री राम दिनांक - ७-९-५७

आप का पत्रोत्तर वर्षो के बाद प्राप्त हुआ, यह मेरा अहो भाग्य अभी श्री अखंड चालू होने के कारण अवकाशभाव और थोडी अब पत्र लिखने की ओर स्वभाविक उदासीनता के कारण पत्रोत्तर में विलम्ब हुआ उसके लिए दर गुजर । मैं आप को क्या लिखूँ हम लोग तो एक सिक्का के दो बाजू जैसे ही हैं इसमें बड़ा छोटा, नाना मोटा का प्रश्न ही कहाँ है ? फिर भी आप मुझे मोटाई देते हैं तो यह आप के उदार हृदय का ही परिणाम है, भावुकता का परिचायक है । आपने लिखा कि मेरे लिये क्या करना उचित है वह लिखे तो इसमें मैं क्या लिखू ? इसके लिए पूज्य श्री गुरुदेव का ही आदेश उपदेश अपने लिए परम उपादेय है, श्रेयस्कर है। बस ! जो बन सके तो अधिक से अधिक प्रभु भजन के लिए आग्रह रखना चाहिए और जो कुछ अपने सामने उपस्थित होवे उसे प्रभु कृपा प्रसाद समझ कर सहर्ष शिरोधार्य करना चाहिए । श्री प्रभु नाम का रटन चिन्तन तथा श्री प्रभु विधान में मंगल भावना यही भवसागर तरने का सुगम सरल उपाय है, जैसा कि संतो शास्त्रो के वचनो से प्रतीत होता है। और श्री पुज्य गुरुदेव का उपदेश आदेश तथा जीवन भी यही था । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

आपका ही हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चारुबाबू ! ओखापोर्ट

आशीर्वाद ! दिनांक - ५-११-५८

आप का पत्र मिला, आप सबकुछ जानते समझते हुए भी बार बार मेरे

उपर इतना बोझ डालत हैं तो मैं किस प्रकार सहन कर सकुं उठा सकुं - हम तो दोनो एक ही रुप के दोनो पृष्ट जैसे हैं - एक तरफ चित्र है तो दूसरी तरफ अक्षर अंकित है किन्तु दोनो का आधार मूल तत्त्व तो कोई और ही है- हम दोनो को दृढ़तापूर्वक पकड़ना चाहिए । वह अपना सर्वस्व है, अपना जीवनाधार है। दुख दैन्य के समय विहवल न होना, सुख सम्पति के समय इतराना नहीं इठलाना नही, यही तो श्री गुरुदेव श्री प्रभुके शरण लेने वाला जीव का लक्षण है। नाम लेने में मन न लगे तो भी लेते रहना चाहिए । कितनाभी मन अपना बिगाड़ने का प्रयास करे फिर भी हठ पूर्वक जिह्वा से नाम रटते रहना चाहिए । अभ्यास करते करते मन लगता है । इसके लिए अधीर होने की आवश्यकता नहीं - श्री पूज्य गुरूदेव का चरणबिन्द का ध्यान करते उनके आदेश का पालन करना चाहहिए । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

आपका ही हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

भागत अभाग, अनुरागत बिराग ।
भाग जात तुलसी हूँ से आलसी निकाम को ॥३॥
धाई धाई किटि कै गोहारि हित कारी होत ।
आई मिचु मिटत जपत राम नाम को ॥४॥

बस ! सीर्फ प्रभु नाम ही सर्व सोच संकट — है, घबराईये मत, धैर्यपूर्वक श्री नाम महाराज का आश्रय लिये रहिये और यथा साध्य पुरुषार्थ कीजिये अपनी व्यर्थ का आडम्बर कम किजिए कितनी वस्तुओ के बगैर अफना काम चला सकते है । इस सत्य अनुभव को व्यवहार में उतारइये । अपनी स्थिति के अनुसार ही अपना व्यवहार रखिये, संसार मुझे क्या कहेगा ? पहले कैसा था ? अब कैसा है ? इस दुराग्रह को त्यागने का प्रयास कीजिये। विशेष श्री प्रभु कृपा । मेरे साथ लोमसजी वाली कोई बात नहीं, श्री लोमसजी तो समर्थ

पुरुष थे, अभिशाप वरदान दोनों के लिए पूर्ण समर्थ थे मैं तो एक सामान्य प्राणी आपकी क्या सहायता कर सकता हूँ इसके सिवाय की निर्बल के बल राम । हारे को हरिनाम ।

हितैषु
प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

ओंग्रापोर्ट

प्रिय चारुबाबू !

जय श्री राम ! दिनांक १-५-५९

आप का २३-३-५९ का लिख्रा हुआ पत्र मिला । आपकी स्थिति का यथामति अनुभव हुआ। किन्तु विपत्ति के समय इस प्रकार घबराने से, व्याकुल होने से कुछ काम नहीं चलता, गोस्वामीजी ने श्री रामायण जी तथा विनय में जो नाम की महिमा लिखी है वह कदापि मिथ्या नहीं है – सर्वथा सत्य है किन्तु तुम्हारी यह स्थिति नहीं है, जो हम उसे अनुभव कर सके या उसे चरितार्थ बना सके । श्री गोस्वामीजी के दुख दैन्य की कोई मिति नहीं थी जैसा कि उनका स्वयं अनुभव "फिरी ललात बिनु, नाम उदर लागि, दुख्रउ दुखित मोहि हेरे ।"

जिसको देखकर दुःख भी दुःखी हो जाता है, उसकी दुखद दन्य स्थिति का वर्णन ही क्या हो सकता ? किन्तु ऐसे भयंकर काल में भी हम लोग जैसे गोस्वांमी अधीर, व्याकुल तथा किंकर्तव्य विमूढ़ नहीं थे बल्कि सतत श्री प्रभु नाम रटन और उनकी कृपा की दीन भाव, आर्त ह्रदय से ही राह जोह रहा है । संसार के आगे रोने से कुछ नही होनेवाला है श्री प्रभु के आगे ही रोना श्रेयस्कर है । मैने आपके सभी पत्रो का उत्तर दिया है किन्तु आप लिख्रते है आपके उत्तर नही मैं हेरान हूँ भगवान हमारे बस में थोड़े ही हैं कि जैसा मैं

कहुँ वैसा वे करे । अपना सुनाने का है । सुनने की मर्जी उनकी है । विशेष प्रभुकृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चारुबाबू !

माधोपुर

आशीर्वाद !

दिनांक - २३-५-६०

तुम्हारा पत्र मिला । समाचार सब मालूम हुआ । जीवन तो एक पहेली है जिसकी पगडन्डी बड़ी संकीर्णता एवं कंटकारिणी है, किन्तु सावधान सचेत पथिक पथ तय कर ही लेता है । अगर उसकी चेतनता का संयोग सहयोग उस परमानन्द जिस शुद्ध बुद्ध चेतन स्रोत से विभूत होता हो, तो यह किंचित भी जिस जीव को अंधकार पूर्ण उस पथ में श्री प्रभु का आलोक प्राप्त हो चुका है वही और जिसने उस आलोकित जीवन रथ की बागडोर उस सर्व समर्थ परम दयालु अकारण कृपालु प्रभु के कर कमलों में अपर्ण कर निश्चित हो चुका है । वह यहाँ वहाँ दोनों स्थलों के लिये निश्चित एवं निर्भय बन चुका वियोग व्यथा व्यर्थ नही, अगर विस्मरण को संयोग का समावेश न हो बल्कि इसके लिए निर्यात वियोग व्यथा ही ऐसी अनुपम अमोघ औषधि है । जो समस्त व्यथित हृदय को अव्यवस्थित कर देती है। बाहर की तार तोड़कर अन्तर की नित्य तार जोड़ देती है । भूर्त अभर्त साकार, निराकार के बेकार विचारो को दूर कर नित्य शुद्ध बुद्ध चेतन शिव एक रूप की अनायास ही उपलब्धी कर देती है। इसी औषध को पहचान कराने के लिये अपने इतने सन्निकट होकर भी दुरस्थ ही प्रतीत होता है ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री सुदामा, श्री नग्गी मेघजी,
श्री हनुमान गुफा, पोरबंदर

प्रिय चारुबाबू !

जय श्री राम ! दिनांक - ६-१-६१

आप का पत्र बहुत दिन पहले ही प्राप्त हुआ किन्तु मंत्र मंदिर के झंझटो के कारण स्थिति अस्त व्यस्त होने के कारण पत्रोत्तर नही दे सका, तो इसके लिये क्षमा कीजिएगा। पत्रोत्तर में भी क्या लिखू आप एसी बातें लिखते हैं जैसा कि कोई एक नादान बालक हो। भगवान के नाम में निष्ठा हो, यह किसी अन्य के प्रयास से होने वाला नहीं - इस के लिए तो स्वयं यत्नशील होना पडेगा। शास्त्र संत सद्गुरु, सुहृदय का भी तो इतना ही फर्ज हैं कि हमें सन्मार्ग को प्रदर्शन कर, सन्मार्ग को पर संचालित कर अपने नार्दिष्ट स्थान की आर गतिशील होने के लिए प्रोत्साहित करे, किन्तु चलना तो मुझे ही होगा। राह मिल जाने पर राह तो स्वयं ही पार करनी पड़ेगी। भूख मिटाने के लिये भोजन स्वयं ही करना पड़ेगा। प्यास मिटाने के लिए पानी स्वयं ही पीना पड़ेगा। जब कि ये व्यवहारिक क्रियाएँ इतनी प्रत्यक्ष हैं तो परमार्थ की तो बात ही क्या ? अतः अधीर न होके जितना भी बन सके, मन न लगे तो भी दृढ़तापूर्वक भी नाम रटते रहिये श्री प्रभु दयालु हैं, उनकी कभी न कभी दया-दृष्टि होगी ही। हम लोग साधन करना नहीं चाहते और सिध्दि का फल भोगना चाहते हैं तो यह किस प्रकार से हो सकता है ? अगर मेरा ही प्रश्न लीजिये तो श्री गुरुदेव ने जो आदेश दिया, उसके मुताबिक इच्छा न होने पर भी बलात् भी उस मार्ग में लगा ही हूँ। तथा धैर्य एवं श्रम के साथ लगे रहने से पूर्व की अपेक्षा जीवन में कुछ न कुछ परिवर्तन कुछ न कुछ अनुभव हो ही रहा है। यह कर्म भूमि है। यहाँ आकर सभी को सर्वेक्षा या प्रेरणा से कर्म करना ही पड़ता है। कारण कि कर्म संस्कार को पाने के लिए भी

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

कर्म अनिवार्य है । अतः श्रीमद् गोस्वामीजी का आदेश उपदेश को ध्यान में रखते जीवन में उतारने का प्रयास कीजिएः– संसार के आगे दीन बनने अनुनय विनय करने के बजाय, श्री प्रभु से ही सब कुछ मांगिए, उन्ही के आगे ही अपना हृदय खोलकर रखिये, कारण कि **"देव दनुज मुनि, नाग मनुज सब माया विवस विचारे, तिन के हाथ "दास तुलसी" प्रभु कहाँ अपनयौ हारे"** विनय (१०१) इसके अलावा :– जाऊ कहाँ तजि चरण तुम्हारे?

असि विचारि मति धीर, तजि कुतर्क संशय सकल ।
भजहुं राम रघुवीर करुणाकर, सुन्दर सुखद ॥

मंत्र मंदिर की स्थापना श्री प्रभु कृपा से सानन्द सम्पन्न हो गया । मुझफ्फरपुर वालों के सिवाय नारायण टीक माणी के किसी के निमंत्रण पत्रिका के पत्रोत्तर तक नहीं आये । भगवद इच्छा विशेष श्री प्रभु कृपा । वहाँ के प्रभु प्रेमियो को मेरा जय श्री राम । श्री १०८ गोलमोलजी होवे तो सादर सप्रेम ॐ नमो नारायण ।

हितेच्छु
प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

लोहाण विद्यार्थी भुवन
पोरबंदर

प्रिय चारुबाबू !

आशीर्वाद ! दिनांक - १८-७-६१

आपका पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । ऐसी व्यवहारिक बातो में आप को क्या सलाह दे सकता हूँ ? आप स्वयं समझदार हैं, यो तो आप जानते ही हैं कि **"जगत तथा भगत"** का सदा से वैर विरोध है । **जहाँ काम तहँ राम नहि, जहाँ राम नहि काम, तुलसी कबहुँ होत नहि, रवि रजनी एक**

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

ठाम । यधपि यह अनुभूति श्री गोस्वामीजी के लिये सत्य है फिर भी मेरी स्थिति तो उनकी जैसी है नहीं, न श्री प्रभु में पूर्ण प्रेम है राग है न जगत में पूर्ण वैराग्य है तो क्या किया जाए ? ऐसी स्थिति मे तो प्रारब्धानुसार भोगों को विवेकपूर्ण भोगते हुए श्री प्रभु प्रेम भक्ति बढ़ाने का ही प्रबल प्रयास करना चाहिए । अधीर होने घबराने या अकूलाने से तो काम चलने वाला नही, देशकाल परिस्थिति, अपनी वर्तमान स्थिति का विचार रखते जीवन यात्रा चलानी चाहिए । आज के धनी मानी, ज्ञानी भक्तों, धर्म ध्वजों की तो यही स्थिति है "झुठे लेना, झुठे देना, झुठे भोजन झुठे चवेना, बोलहि मधुर बचन जिमि मोरा, खाहि महा अहि हृदय कठोरा" । अेसे कराल कालिकाल से तो श्री प्रभु उबारे तो जीव उबर सकता है, अन्यथा साधन शक्ति व्यर्थ जैसा ही है फिर भी जिसको श्री प्रभु का पूर्ण आशा भरोशा है, उसे श्री प्रभु उबार ही लेते हैं, बचा ही लेते हैं । "सीम की चाप सकै कोई तासु, बड रखवार रमापतिजासू" । बस ! श्रीप्रभु नाम निष्ठा बनाये रखिये, उन्ही से शक्ति, शील, सहिष्णुता के लिये निरंतर प्रार्थना किजिए । विशेष श्री प्रभु कृपा । दिन प्रति दिन कलिकाल का तांडव नृत्य सर्वत्र करालरुप ही धारण करता जा रहा है । अतः "यहि कलिकाल मलाय तन करि मन देख विचार, श्री रघुवीर नाम तजि नाहिन आन अधार ।" श्री गुरुपूर्णिमा का उत्सव यही मानाय जायेगा और श्री पूज्यपाद महाराज की तिथि तक अखंड चालू रहेगा । निमंत्रण पत्रिका रामजीभाई भेजने वाला है । बेट मंत्रमंदिर के उद्घाटन समय जितने भी निमंत्रण पत्र भेजे गए मुजफ्फरपुर वालों ने एक का पत्रोत्तर तक भी नहीं भेजा, राधेबाबू तक का समाचार नहीं तो औरो की तो बात ही क्या? इसी से समझ लिजिये ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

|| श्री राम ||

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चारुबाबू !

श्री सुदामापुरी
दिनांक - १३-७-६३

जय श्री राम !

आप का पत्र तथा विनय पत्रिका मिला । पत्र पढ़ा किन्तु समयाभाव के कारण विनय पत्रिका पढ नहीं पाया हूँ । मैं पत्रोत्तर में आप को क्या लिखूं कुछ समझ में नहीं आता । आप जैसे समझदार भावुक भक्त को इस तरहकी अधीरता शोभा नही देती । जब अपने किये कुछ होता ही नही तो व्यर्थ की चिन्ता करने से क्या लाभ ! सम्पति, सन्तति या भक्ति ऐसी चीज नहीं है जो जब चाहे तभी मिल जाय । यह तो जीव के प्रारब्ध तथा विशेष श्री प्रभु कृपा पर निर्भर करती है । सम्पति सन्तति तो प्रारब्ध के वश होता है ही, भक्ति भी अनेक जन्मों की संचित से ही प्राप्त होती है । **धीरे धीरे रे मना धीरे सब कुछ होये । माली सीचे सौ घडा ऋतु आय फल होये ।** अतः घबराने औऱ व्यग्र होने के बजाय, शान्ति चित्त से प्रभु भजन में लगे रहना चाहिए । प्रभु दयालु, अन्तर्यामी है । उन्हे कीड़ी से कुंजर तक की खबर है । वे सब की सम्भाल करते हैं तो हमें कैसे भूल जाएगे, लेकिन इतना अवश्य है जब जैसी स्थिति में प्रभु रखे वैसे ही अपना मन तथा कर्म बना कर रहना चाहिए । एक धनवान धन से प्रभु की सेवा कर सकता है तो एक रंक अपनी मूक भावना द्वारा ही सेवा कर सकता है । उसे धन के अभाव में विशेष खटपट करने की आवश्यकता ही नहीं श्री प्रभु तो अपने भोले अकिंचन भक्त की मानसिक सेवा को ही अपनी सच्ची सेवा मानकर उसे कृतार्थ करता है । रही बालूघाट की पूर्णिमा की बात तो वह मेरे वश की बात नही वह तो स्वयं पूज्य पाद गुरुदेव ही जाने वे कब कहाँ क्या करायेंगे ? अभी तो उनकी प्रेरणा से जामनगर का निश्चय हो चुका है । विशेष श्री प्रभु कृपा । आप के दो रुपयै दो उत्सवो के लिए आये, मै समझता हूँ यह दो लाख का काम करेगा मुझे भी संतोष है और पुज्य श्री गुरुदेव को भी संतोष होगा कि मेरा भक्त मेरी आज्ञानुसार अपनी स्थिति के अनुसार ही वर्तन करता है यह

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

परम उपादेय है ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चारुबाबू ! जूनागढ

जय श्री राम ! दिनांक - २८-९-६८

आप का पत्र तथा भेजा हुआ प्रसाद यथा समय प्राप्त हो गया और पूज्य पाद श्री १००८ श्री महाराज की तिथि के अवसर पर आप का सारा का सारा डब्बा भोग लगाकर भक्तों में वितरण किया गया और मै ने भी बड़े प्रेम से लिया । मैने महाराज से प्रार्थनाभी की कि आप के सभी भक्त आनन्द में है तो आर्थिक दृष्टि से एक चारुभाई को ही क्यो अभी तक सुदामा बना रखे हो किन्तु मुझे कोई उत्तर नहीं मिला । अब आप जाने और वे स्वयं जाने । गोविन्द की गति गोविन्द जाने और सब आनन्द मंगल है । इस बार गुरु महाराज की तिथि का विलक्षण प्रभाव और समारोह हुआ न जाने कब क्या करना कराना चाहते हैं ।गुजरात में भी उनकी कृपा प्रेरणा से प्रचार भी अच्छा हो रहा है । सभी प्रेमियों को जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चारुबाबू तथा बाल गोपाल ! श्री राम जानकी मंदिर,
हाजा पटेल की पोल,
अहमदाबाद

जय श्री राम ! दिनांक : २७-१-१९६५

श्री प्रभु कृपा से आनन्द मंगल है । और उनकी कृपा विधान में विश्वास

श्रद्धा रखने वाले को हमेशा हर हालत हर अवस्था परिस्थिति में आनन्द मंगल ही मानते रहना चाहिए। जबकि अपने लाख करने पर भी हम कुछ कर ही नहीं सकते, तो व्यर्थ की चिन्ता करने से क्या लाभ ? प्रभु जिस स्थिति में रखें उसी में उनकी कृपा समझ **"धीरज धर्म"** मित्र, अरनारी, आपद काल परखीय में चारी की कसौटी पर अपने को कसते रहना चाहिए श्री प्रभु नाम की रट लगाते रहना चाहिए। कभी न कभी उस दीन दयालु करूणा वरुणालय की अनन्त कानों में से किसी एक कान में भी भनक अवश्य पड़ेगी। बस ! चिन्ता करनी ही हो तो हरिनाम की ही कीजिये, सभी चिन्ताओं को हरण करने में सर्व समर्थ है। और तो मैं कर ही क्या सकता, हम दोनों तो एक ही चरण शरण के आश्रय हैं, जिसने हाथ पकड़ा है वह अवश्य निभायेगा ऐसा पूर्ण निश्चय है श्रद्धा है विश्वास है। वस ! श्री प्रभु नाम रटते रहिए। इसमें अपना जीवन सर्वस्थ है। आप के दोनों पत्र मिले। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चारुबाबू !

हरिद्वार

आशीर्वाद ! दिनांक - १९-६-६५

बहुत दिनों से पत्र नही लिखा है, तो माफ किजिएगा। आप के लिए हृदय मे बहुत चिन्ता होती है किन्तु न जाने श्री प्रभु तथा श्री गुरुमहाराज की क्या कृपा है ? खैर राजी की अर्जी "किए ही बनै सुनिये न सुनिये सो मर्जी हुजुर की।" इस कथानानुसार अपने को तो उनके उपर ही भरोशा आशा करना ही है। बस! श्री प्रभु कृपा। मै वृन्दावन आया और वहाँ से हरिद्वार आया और यही पर पाव की छोटी अुंगली में एक फुन्सी के कारण ऐसी भयंकर

तकलीफ बढ़ी की यहाँ अेक कमरे में पड़े पड़े ४० दिन हो गये है । आज दिल्ली होकर बम्बई जा रहा हुँ । अब जख्म ठीक गए है । श्री प्रभु सब की देख रेख करते ही रहते है । अपने ही कर्म का, संस्कार का कुछ दोष है जिससे उनकी कृपा में विलम्ब दीख पड़ती है । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारकाधाम

प्रिय चारुबाबू !

जय श्री राम

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । आप का ३१-१०-६५ का लिखा हुआ पत्र कल्ह मुझे यहाँ प्राप्त हुआ । ईधर कोई निश्चित स्थिति न होने के कारण पत्र मिलने मे भी विलम्ब हुआ करता है । और यथा समय पत्रोत्तर भी नहीं दिया जा सकता है, इसके लिये क्षमा किजिएगा । श्री गौरबाबू के अवसान से व्यवहारिक दृष्टि से दुख अवश्य हुआ किन्तु परमार्थिक दृष्टि से इसमें दुख का कोई कारण हीं नहीं, कारण कि यह ध्रुव सत्य है कि **"आया है सो जायेगा राजा, रंक फकीर एक सिहांसन चढ़ी चला एक बंघा जंजीर"** । श्री रामकृष्ण परमहंस जैसे को भी अंतकाल में बहुत कष्ट हुआ था इसका यह अर्थ नहीं कि उनका भजन व्यर्थ है । यह शरीर और उसका भोग तो प्रारब्धधीन है । जिसे भोगे बिना, छुटकारा नहीं । इतनी भेद बुद्धि के कारण जीव दुखी हुआ करता है कि मैं इतना अच्छा कर्म करता हूँ फिर भी दुख क्यो ? अभी का कर्म भविष्य का निर्माण कर रहा है । पूर्व का वर्तमान में प्रारब्ध रुप से दुख सुख हानिलाभ संयोग वियोग करा रहा है । इसमें जराभी संन्देह नहीं कि हमारा वर्तमान जीवन पूर्ण भक्ति मय बन जाये तो प्रारब्ध भोग नष्ट हो जावे । कर्म की गति गहन है । बुद्धि कुछ काम नहीं करती । श्री प्रभु जैसी स्थिति में

रखे उसी में सुख मानकर उनकी कृपा प्रेरणा समझकर धैर्य संतोषपूर्वक रहना चाहिए । वैदेही की चिन्ता भी व्यर्थ ही करते है । जब समय आयेगा बगैर पुरुषार्थ के सब हो जायेगा । सभी को अपना प्रारब्ध भोगना पड़ता है । समय आने पर ही सब कुछ होता है । विशेष श्री प्रभु कृपा । सभी प्रेमियो को जय श्री राम ।

हितेच्छु
प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चारुबाबु तथा
हरदेव चौधरीजी !

C/o. विनोदभाई,
प्राणीजीवन महेता,
महुवा, जिला-भावनगर
(सौराष्ट्र),

सादर सप्रेम जय श्री राम ! दिनांक - १०-४-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । और उन्ही की कृपा प्रेरणा सहायता से उनके परम मंगल मय नाम का प्रचार प्रसार दिन प्रतिदिन विलक्षण रुप से बढता ही जा रहा है । आप का १-३-६८ का पत्र द्वारका होकर आज १०-४-६८ को यहाँ मिला । समाचार जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई । आपकी दयनीय आर्थिक स्थिति की बात जानकर तो मुझे कितना क्षोम होता है उसका वर्णन मै क्या करु ? इसी क्षोम के कारण पत्र भी नही लिख पाता हूँ, जब आप का कोई पत्र आता है तभी कुछ लिखने का भी दुःसाहस करता हूँ । क्या करु ? श्री प्रभु की लीला भी कुछ समझ में नही आती ? कुछ विशेष विचार करने लगे तो बुद्धि भ्रमित होने लगती है । बरबस माताजी की बात याद आ जाती है :– **कोमल चित्र कृपालु रघुराई, कपि केहि हेतु धरी निठुराई ।** जोभी हो हम लोगो को और दूसरा अवलम्ब भी क्या है ? हारे को हरि नाम ।

श्री हरदेवजी ने आप को इस काम में लगाया है वे वास्तव में धन्यवाद के पात्र है । बस! श्री प्रभु कृपा प्रेरणा से यह आप का काम सुचारु रुप से चले, आपके अनिष्ट संस्कार का समय दूर होवे, श्री प्रभु कृपा से जीवन चिन्ता विहीन बने यही सद्‌कामना सह श्री प्रभु प्रार्थना । सभी प्रेमियो को मेरा जय श्री राम सूरज, बैजनाथ, गुप्ता द्वारका गिरिधारी उमेशबाबू, रामशरण वगैरह जो भी प्रेमीजन मिले उन सबको मेरा सप्रेम जय श्री राम । गोला का दाल बाला शिवधारी पगला बाबा का चेला मिले तो उससे भी मेरा खूब खूब प्रेमपूर्वक जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

पोरबंदर

प्रिय चारुबाबु !

आशीर्वाद

सब भजन करते होगे । वास्तव में जीवन का कोई ठिकाना नही कि कब तक है और कब चला जाय । इसलिये भजन के लिए टाल मटोल या समय का इंतजार न करके, बचपन जवानी की बात न सोचकर सदा ही नित्य ही भजन करना चाहिए जैसे शरीर को कायम रखने के लिये भोजन जरुरी है । उससे कही अधिक जरुरत भजन की आत्मसुख, आत्म शान्ति के लिये है। क्योंकि मनुष्य चाहे कितना ही धनवान, विद्वान, बुद्धिमान क्यो न हो । जब तक उसे सद् विचार सदाचार नही होता तब तक शान्ति नहीं मिलती और जब तक शान्ति नहीं तब तक जीवन भार ही है । वरन नरक तुल्य है और सब गुण प्रभु भजन से अपने आप आता है । अतः श्री प्रभु के नाम को अपने हृदय का हार बनाओ दिसमें तुम अपना कल्याण कर सको और दूसरो का कल्याण कर सको । अभी यहां दो सप्ताह से अखंड धून चल रहा है और

आगे भी शायद चले ।

हितेच्छु
प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चारुबाबु !

पूज्य स्वामीजी का जामनगर से आया हुआ पत्रः–

श्री करुणानिधान, ज्ञानभंडार आनन्दागार भगवान श्री रामप्रभु की अहैतुकी कृपा एवं श्री पूज्यपाद गुरुदेवजी की महती दया से यह शरीर कायम है । और आशा करता हूँ कि तुम लोग भी सब सपरिवार सकुशल सानन्द होगे । विधि का विधान भी कुछ विचित्र ही है किन्तु श्री प्रभु की कृपा भी कुछ कम विलक्षण नहि मनुष्य कर्म कत्व के अनुसार विधाता उसके भोगरुप दंड का विधान करता है और जीव उसी शुभ अशुभ संस्कार अनुसार अनेक योनियो में भटकता हुआ, कभी पुण्य बल से भोग मयी देव योनि और पाप बल से तामसी भोग रुपि कीट पतंग पशुपक्षी आदि योनियों में निरंतर भटकता हुआ महान कष्ट भोगता रहता है । इसकी जब अत्यन्त दयनीय दशा देखकर जब उस दया निधान को उस जीव पर दया आती है तभी देवदुर्लभ मानवशरीर प्राप्त होता है तथा उन्ही के द्वारा दी हुई सद्बुद्धि के द्वारा जीव सत्यासत् का निश्चय कर, असत्य शरीर तथा संसार के भोगो से चित्त हटाकर, सत्य नित्य अविनाशी आनन्द स्वरुप श्री प्रभु के नाम में अपना चित्त जोड़ कर जीव कृत्य-कृत्य हो जाता है। भगवान ने जगह २ सद्ग्रन्थो में यही उपदेश किया है कि मानवशरीर का फल न संसार का तुच्छ भोग है और न स्वर्ग का दिव्य भोग । इसका अेक मात्र फल श्री प्रभु भजन ही है । जिसका आनन्द अवर्णनिय तथा अनिर्वचनिय है । अतः तुम लोगो का परम कर्तव्य भी यही है कि मन से प्रभु का भजन करो याने मन को श्री प्रभु के चरणों में लगाये रखो, तथा

तन से अपने सगे सम्बन्धियों याने संसार की सेवा करो जो प्रभु के नाते श्री राम प्रभु की सब वस्तु है । इस यात्रा में जो प्रभु कृपा से आनन्द प्राप्त हुआ है वह प्रभु की अहैतु की कृपा का फल है । मेरा विचार भी अभी तीनचार महीने उधर आने का नहीं अगर नही आऊँ तभी भी तुम्हारे पास ही हूँ प्रभु भजन करना सुखी रहना और दुसरे को सुखी बनाना यही आशीर्वाद ।

प्रश्न-१ धरमें जाये की अलग भजन करे ?

उत्तरः- घरमे या बाहर सब जगह अपनी वासना ही काम करती है । (मूल वासना (कारण शरीर) नाश यही उदेश्य है । वासना नाश का ही नाम मुक्ति या पराभक्ति है । नाश कैसे होगा उसी के विषय में यह सारा श्रीगोस्वामीजी की प्रेरणा तथा आदेश)

अभ्यास करते करते धीरे धीरे यह छुट जाती है :—

रस रस सूख सरिता सरपानी, ममता त्याग करे ही जिमी ज्ञानी वर्षा के बाद शरदऋतु में तालाब पोखरा नदीयों का पानी जैसे धीरे धीरे कम होने लगता है उसी प्रकार ज्ञानी तत्व को ज्यों ज्यों समझता जाता है त्यों त्यों वासनाओं का त्याग होता जाता है । त्याग अपने आप होता जाता है । जैसे साप की केचुली अपने आप उत्तर जाती है, लेकिन बड़ा से बड़ा डाक्टर भी उसे उतार नहीं सकता । उसे घायल कर देगा, उसी प्रकार बलात् किसी वस्तु विशेष का त्याग करने से कुछ दिन बाद फिर वृत्ति उधर जाने लगती है। अतः क्रमशः भजन करने से ज्यों ज्यों भजन तत्व चित्र में प्रतिष्ट होने लगता है त्यों-त्यों शरीर संसार (शरीर पहले लिखना शरीर को समझ लेने के बाद संसार भी समझ में आ जाता है) दोनों में तो वही पांच तत्व हैं तथा पर लोक सुख की भी भावना विलिन होने लगती है, उस समय न कोई प्राप्त रहता है और न कोई साध्य रहता है। स्वाभाविक ढगसे जैसे प्राण किया चल रही है वैसे ही प्राण में प्रविष्ट हो नाम स्वाभाविक चलने लगता है । उस समय का जो आनन्द है वह अवर्णनीय है । जब तक मन की प्रबलता (राम नाम जपने

पर जब वृत्ति अन्तमूर्खी होती है तन मन का वेग अनुभव होता है । इस लिये भजन करने वाले कहते है कि मन बड़ा दुःख देता है, जब तक इसका अनुभव नही होता तब तक प्रभुबल का पुरा भान भी नही होता है, जब मन बैचेन करता है तब जीव दीन भाव आर्तनाद और करुण स्वर अर्थात् इन तीनों मिलने पर शरण गति होती है) प्रभु को पुकारना शुरु करता है और जिस समय अन्त मर्म से स्वाभाविक दीन पुकार निकल पड़ती है उसी समय प्रभु सामने खड़े हो जाते है । लेकिन यह स्थिति कोई एक दो दिन में आने वाली नहीं और यह भी कहना सत्य नहीं क्योंकि कृपा का कोई खास आधार नही । प्रभु कभी भी और किसी व्यक्ति पर कृपा कर सकते है यह उनकी मौज है । जैसे राजा का मन स्वतंत्र होता है, वह किसी की लाख बिनती करने पर भी नही सुनता और किसी दीन हीन बदसुरत को देखते ही प्रसन्न हो जाता है – प्रभु राजाओं काभी राजा है । स्वतंत्रता तथा लक्ष्मी उनकी दासी हैं किसी को फाँसी की सजा होती हैं तब अन्त में राजा या प्रधान के पास मर्शी अपील होगीं है, उस जिसे किसी तरह भूल नही होना चाहिए उसे भी राजा छोड़ देता है । तो उस समय क्या जज राजा को प्रश्न पूछेगा ? कि क्यों छोड़ दिया? राजा ने कानून बनाया है, राजाने जज बहाल किया है किन्तु राजा उस नियम के भीतर भीतर वर्ध नही है वह तो स्वतंत्र सबका नियामक है यह एक भौतिक जगत की बात है किन्तु राजा राजेन्द्र राजीव सोचन राजा धिराज श्री राघवेन्द्र सर्वत्र स्वतंत्र है फिर क्या ? किन्तु यह बात नहीं कि स्वतंत्र होने से मनमाना करे, किसी को दुख पहुँचाने वे साथ ही आनन्द स्वरुप हैं तथा पूर्णज्ञान स्वरुप हैं अतः सर्वशक्तिमान की उपाधि उन्हे प्राप्त है– वे जो कुछ करते हैं ज्ञान पूर्वक करते हैं तथा दयापूर्वक न्याय करते है, अन्य सत्ता में न्याय तथा दया एक साथ नही चल सकती है किन्तु प्रभु की यही विशेषता और विलक्षणता कि वे दयापूर्वक न्याय करते है और जब सर्वसमर्थ है :–

"कर्त्तुम अकर्त्तुम् अन्यथा कर्त्तुम समर्थ"

तब उनके लिये कोई बात आश्चर्य पूर्ण ही है

सोई जाने जेहि देहु जनाई ।

जानत तुमही तुम ही होई जाई ॥

अतः मन कर्म बचन छाड़ि चतुराई, भजत कृपा करि हैं रघुराई ।

और वही कृपा मोरी सुधारी हैं, सो सब भांति जासु कृपा नहि कृपा अगाती ॥

सबका सार यह हैं किः- केही आचरण भलो मानत प्रभु सो तो न जानि परयो तुलसीदास रधुनाथ कृपा को जो वत पंथ खड़ो ॥ अतः प्रभु का नाम स्मरण करते हुए कृपा की बाट देखनी चाहिए । यही सब साधन का मूल है । गोस्वामी के ये सिद्धान्त वाक्य तथा अनुभूत प्रत्यक्ष साधन है ।

सब अंगहीन सब साधन विहिन मन, वचन, मलीन हिन कुल करतुती है । बुद्धि बलहीन भाव भक्ति विहिन गुणहीन, ज्ञानहीन, मांगहु विभूति है ।

तुलसी गरीब की गई वहोर, रामनाम जाहि जपी जिह, राम हु को बैठे धुति है ॥

प्रीति राम नाम सो, प्रतीति राम नाम की,
प्रसाद राम नाम के, पसारे पांव सूति हैं ।
राम नाम मातृ-पितृ, स्वामी समर्थ हितु,
आश राम नाम की, भरोशो राम नाम की,
प्रेम राम नाम सो, नेम राम नाम की,
प्रेम राम नाम सो, नेम राम नाम ही की
जानौ न भरमपद दाहिनों न वाम को
स्वारथ सकल परमारथ को राम नाम
राम नाम हीन तुलसी न काहु काम को ॥
राम की सपथ सर्वस्व मेरे राम नाम
कामधेनु कामतरु मोसे छीन छाम को ॥

मेरे जाती पाती न चही, काहु कि जाति पाति, मेरे काम को न हो, काहु के काम को, लोक परलोक रघुनाथ ही के सब, भारी है भरोशो तुलसी को एक नाम को ।। यही मांग है:- नाम भरोसो नाम सनेहु ।

जन्म-जन्म रघुनंदन तुलसी यही देहु ।।

क्यो कि श्री राम से श्री राम प्रभु का नाम बड़ा है,

राम सकल रन रावण मारा, सिय सहित निज पुर पगु धारा

राजा राम अवध राजधानी, गावत गुण सुर नर मुनिवर ज्ञानि,

सेवक सुमीरत नाम सप्रीति, बिनु श्रम प्रबल मोह दल जीति ।।

फिरत सनेह मगन सुख अपने, नाम प्रसाद सोच नही सपने ।।

त्रेता युग में मोह प्रधान रावण को मारने के लिये श्री राम को सांकेत छोड़कर पृथ्वी पर आना पडा तथा उसे मारने के लिये अनेक यत्न करना पड़ा फिर भी त्रेता युग के बाद मोहरुपि रावण मौजुद ही रहा किन्तु श्री रामनाम महाराज का प्रताप चारो युग तीनों काल में अेक सा चलता है, और जो उनकी शरण लेता है वह बिना प्रायस ही मोह रुपि रावण को जितकर अपने आनन्द स्वरुप में मग्न रहता है तथा उसे किसी प्रकार की चिन्ता रहती ही नहीं क्योकि उपल (पथ्थर) चिन्तामणी तो केवल धर्म अर्थ काम दे सकता है किन्तु नाम रुपि चारु चिन्तामणी तो मुक्ति को दासी बना स्वयं नाम धारी (श्रीप्रभु)को ही सामने हाजीर कर देता है । इस लिये अनेक प्रकार की साधनाए करने के बाद तथा सर्वशास्त्र पुराणो तथा संत मत के ढूंढते के बाद जो गोस्वामी को चारु चिन्तामणी प्राप्त हुई वह यही श्री रामनाम है । (विनय पद २६५) यह चिन्ता दूर करीये को अमित जतन उर आने ।। तुलसी चिन्त चिन्ता न भी हौ, बिनु चिन्तामणि पहिचाने ।। अब यह चिन्तामणि प्राप्त हो गई है, इस लिये गोस्वामी जीने बडे यत्नपूर्वक अत्यन्त सुरक्षित स्थान में रखा है तथा उसकी परम ज्योति की ज्योत्सना प्राप्त कर अनेक जन्म के जीव बंधन को छिन्नभिन्न कर कृत्य-कृत्य हो गये है तथा भक्त माल के २०६ भक्तो की माला मे सूमरु

याने सबसे उपर संतशिरोमणि बन कर बैठे हैं। तथा बड़े प्रेमपूर्वक विषय के विषय ज्वाला में संदग्ध प्राणियों को संतबनने तथा कृत्य कृत्य होकर जीवनजन्म सफल करने के लिये अह्वान कर रहे है सुनो ! उनकी दिव्यवाणी तथा उन्ही के सामान अपने सुरक्षित स्थान में वह चारु चिन्तामणी छिपाकर रखो तथा प्रतिज्ञापूर्वक उसका आनन्द लो। अबलौ नसानी अब ना नसैहे।

राम कृपा भव निशा शरानि, जागे पुनि ना डसै हौं ॥
पायो नाम चारु चिन्तामणी, उर करते न खसै हौ ॥
परवश जानि हस्यो इन इन्द्रीयन निजबस है न हसै हौ ॥
मनमधुकर प्रण करि तुलसी रघुपति पद कमल बसै हौ ॥

"शील गहनी सबकी सहनी, कहनी हिय मुख राम
तुलसी रहिये यहि रहनी, संत जनन को काम"

पूर्ण संत बबने की यही चार बाते शील, सहन शीलता, हृदय तथा इन दोनो से विलक्षण संत महिमा तथा संत शिरोमणि तुसलीदास के सामान तुलसी की वाणी सून और सुनाओ तथा श्री महायज्ञ में मन कर्म वाणी से शामील हो तथा दूसरो को शामील बना जीवन जन्म सफल करो।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

कल्ह प्रभु ने जो किया वह अच्छा ही किया, क्योंकि उनके हरेक विधान में कल्याण ही रहता है, यधपि अज्ञानी वरवश जीव को भास नहीं होता, और यही ज्ञान कराने के लिये प्रभु अपनी अहैतुकी कृपा से ज्ञान में अज्ञान, हर्ष में विषाद अनुकुलता में प्रतिकुलता समावेश कर देते है या यों कहे कि जैसे होमियोपेथिक दवा पहले छिपे हुए रोग को मूल उभार कर याने रोग को बढ़ाकर

पीछे उसे समूल नाश कर डालता है, इसी प्रकार श्री प्रभु हमारे छिपे हुए रोग को बढ़ाकर हमे अपनी दीनता, असमर्थता का भान कराकर फिर सच्चा ज्ञान देते हैः-

परहवस जीव स्ववश भगवन्ता,

जीव अनेक श्री कान्ता ।।

हर्ष, विषाद, ज्ञान अज्ञान, जीव धर्म सह मिली अभिमाना ।। लेकिन... ज्ञान, अखंड, अेक सीतावर, मायावश जीव चराचर ।।

जो सब के रह ज्ञान एक रस, ईश्वर जीव ही भेद कहुं कछु ।।

याने जीव परवश परतंत्र है, प्रभु स्ववश स्वतंत्र है जीव का ज्ञान खंड है प्रभु का ज्ञान अखंड है । जीव अनेक है प्रभु एक हैः- जीव शान्त याने सीमित, प्रभु अनंत असीम हैं तो फिर सिन्धु का पता कैसे करेगा? क्या अपने पुरुषार्थ से ज्ञान तथा बुद्धि बल, धनबल, तपबल से ? कदापि नही- अगर कर सकता है तो केवल एक दैन्य बल से जो भक्ति योग का प्राण है- लेकिन दैन्य का अर्थ कायरता-दुर्बलता, कमजोरी, हीनता आलस्य नहीं, प्रत्युत सब प्रकार के साधन करने के बाद भी मेरा बल प्रभु के सामने तुच्छ तथा निर्बल है, इस स्थिति की अनुभूतिका नाम दैन्य है, वे काम बैठे रहकर भोग विलास में फसे रहकर योग की महानता का उस स्थिति में जीव की दीनता तथा प्रभु की महानता का संयोग होता है, और उस समय जैसे ग्रीष्म काल में सूर्य के प्रचंड ताप से जब पृथ्वी अत्यन्त सन्तप्त हो जाती है, और सारे पेड़पौंधे झुलसने लगते है उस समय जल के भंडार बादल के भीतर अपने आप करुणारस की धार फुट पड़ती है, और घनघोर जल वृष्टिसे बादल पृथ्वी के अन्तःस्थल को नर कर देता है, क्योंकि पात्र पाकर ज्ञानी अपने ज्ञान रस को उस पात्र मे उडेले बगैरह रह नही सकता, यह उसकी सहज स्वभाव है और यही प्रकृति का खंड नियम है उसी प्रकार जब जीव की दीनता तथा प्रभु की महानता

का संयोग होता है, उस समय सर्व समर्थ प्रभु में करुणा रस की धारा फुट पडती है तथा त्रय ताप से अति संतप्त जीव के अन्तरस्थल को तर कर देती है, फिर जब उस करुणारुपी शीतलता को पाकर आकुल व्याकुल परेशान जीव शांत होता है, उस समय प्रभु अपने ज्ञान प्रकाश की किरणे उस तिमिरा छन्न याने (अविधा अंधकार से आच्छादित) जीव के हृदय मंदिर में छिटकाते हैं, तब उसे दिखने लगता है कि "अहो ! कैसी यह बिडम्बना ? कैसा संसार ! कैसी प्रभु की विचित्र रचना ? कहां मैं मैं करने वाला अभिमानी जीव कहाँ शुद्ध सच्चिदानन्द परात्पर पूर्ण ब्रह्म तूँ ? धनय तैरी माया धन्य तेरी लीला? लेकिन सब से विलक्षण धन्य धन्य धन्य तेरी करुणा, उदारता महानता उस स्तिथि में पहुँचने पर ही प्रभु का रहस्य जीव को अवगत होता है तथा प्रभु के साथ तन्मयता रुप भोग की प्राप्त कर भक्त प्रेमी तू ही तू है और ज्ञानीतत्व मति का पाठ पढता है लेकिन तत्वतः स्थिति दोनों एक ही है यह भेद श्री प्रभु कृपा बिना मालूम नहीं होता, क्योकिं दोनो के ज्ञान में क्या अन्तर यह पहले कह चुका हूँ । इस लिये ज्ञान होने परभी सच्ची ज्ञानी भक्ति याने प्रभु प्रेम को छोड देता हैः–

मोरे प्रौढ तनय समज्ञानी, बालक .... दास अमानी ।

जनाहि मोर बल नीज बलता कै .... काम क्रोध रिपुआ के अस विचारि पंडित मोहि मजाहि............. पापहुँ ज्ञान भक्ति नाही

क्योकि प्रभु की प्रतिज्ञा है किः– सुनु मुनि तोहि कहौ सहरोसा, भजहि जे मोहि तजि सकल भरोसा । करौ सदा तीन की रख बारी, जिमि बालक हि राख्र महतारी ।। माँ के दो पुत्र एक सयाना, जिसे कुछे अपना ज्ञान हो गया, अतिरिक्त साक्षात् प्रभु में भी उतना विश्वास नहीं करेगा, कृपा शब्द का अर्थ समर्थ है किन्तु उनमें भी समर्थ उनका नाम का ही है - मेरा तो एक मात्र निश्चयः –

जायो अहाँ सो तहाँ तुसली तिहु ताप दहयो है ।
ना कहुँ कियो अपने सपने हुं, नहीं सुख लेस लह्यो हैं ॥
कियो न कुछ, करियो न कुछ कहियो न कुछ, मरि बोई रह्यो है ॥
राम के नाम से होउ से होउ, नसो अहिये रसना ही कर्यो है

नाम भरोसो, नाम रति नाम सनेहु ।
जन्म-जन्म रघुनन्दन तुलसी येही दे हु ॥

जो होना होगा वह एक राम के नाम से ही होगा, वह भी नाम हृदय से नहीं लिया मरि बोई रह्यो है । मुख से ही जैसा तैसा रहता हूँ, चाहे भरता रहूँ तो भी कुछ कहुँगा नहीं, और दूसरा अयाना याने अबोध जिसे माँ के अलावा अन्य किसी का ज्ञान ही नहीं, जो अग्नि को उठाने दौडता है, सर्प से बिच्छु से खेलने लगता है लेकिन सिर्फ अपने उपर भरोसा, आशा विश्वास तथा ज्ञान रखने वाला उस बाल शिशु की हर प्रकार की रक्षा के लिये माँ सर्वत्र हाजिर रहती है, उसी प्रकार जो जगत जननी रुप प्रभु को ही अपना सर्वस्व समझता है, अन्य किसी का आशा भरोसा कौन कहै ज्ञान तक नहीं रहता तथा जब कभी काम रुप सर्प क्रोध रुप बिच्छु के साथ अज्ञान बस खेलने के लिये दौडता है उस समय अबोध बालक की तरह अपने शरणागत भक्त की रक्षा के लिये प्रभु रुप माँ तत्क्षण दौड़ती और माँ जैसे बच्चे को गोद में लेकर अनिष्ठ से बचजाने के लिये प्रभु को धन्यवाद देने लगती है, अपना भाग्य मनाने लगती है, उस प्राकृतिक जननी से अनन्त गुण अधिक प्रसन्नता तथा सौभाग्य उस जगजननी माँ सीता को होती है जब वह अपने भक्त को इन शत्रुओं से बचा लेती है:- अधिक क्या कहूँ ? माँ तो अपने बच्चे को इष्ट-अनिष्ट के लिये सिर्फ दो नेत्र से ही आँसू बहाती है लेकिन भक्त की रक्षा होनें पर प्रभु रुप माँ का तो एक साथ अनन्त नेत्र आनन्द के आवेश में सावन के कड़ी जैसे झरने लगती है, फिरभी हम उस अहैतुकी परम कृपालु प्रभु के

लिये थोड़ा समय लगाने, थोड़ा शरीर के कष्ट होने तथा थोड़े पैसे खर्च होने के भय से घबराते है अहा ! कैसा मेरा दुर्भाग्य, कैसी मेरी मूढ़ता, कैसा मेरा प्रमाद, सोचो विचारो, शान्त चित्त से मनन करो, प्रभु से विमुख होकर न किसी का धन रहा न जन रहा न ज्ञान, न गौरव रहा, न तेज न सौरत रहा, लाखो आयें गयें आ रहे हैं जा रहे हैं लेकिन उन्हें कौन जानता है ? कुकर सुकर की जन्म ले, भोग भोग के चल जाते, इस नाशवान अनित्य शरीर तथा संसार में जो प्रभु के प्यारे ही अमर है, वही शरीर वही धन, वही जन, वही ज्ञान, वही बुध्दि, वही कुल धन्य है जो प्रभु में लगे, बाकी सब व्यर्थ ही है । देखो न हमारी जड़ता, अनित्य कुर्ते का भोजन, जलाने पर भस्म, गाड़ने पर किड़ो द्वारा खाये जाने पर बिट याने विष्टामल ही जिसका अंतिम परिणाम उस शरीर के लिये कितना राग, कितनी ख़िदमत, लेकिन लाख उसकी झाड़ पोंछ करे यह तो पलभर में ही कालकलवित हो जायेगा अतः इस अनित्य और मलयुक्त शरीर को पाकर जल्दी से जल्दी नित्य निर्मल यश प्राप्त करने की चेष्टा करो, नहीं तो समय बीतें पीछे हाथ मलना ही शेष रहेगा, प्रभु की यही आज्ञा उनके परम गृह तत्व से भरपुर श्री गीताजी के .... अध्याय में ३३२ लोक में है अनित्य, असुखं लोक निमय, प्राप्त भजस्वमाम" कल्ह जो प्रभु की लीला हुई उसका वर्णन करने में मेरी वाणी मूक हो गई, कैसे प्रभु काठं की पुतली की तरह नचाते है, लेकिन मुझे क्या? मैं तो नाचने वाला हूँ नचाने वाला चाहे जैसे नचाये, पाँच मिनट पहले कुछ नही और यहां से प्रोग्राम के बदलते ऐसे लगने लगा, यहां तो कुछ है ही नही – यहां सन्नाटा छा गया दिब्यता कही और चली गई, मुझे तो ऐसा लगने लगा कि तीनदिन अनुष्ठान भी शायद ही पूरा हो सके क्योकिं जब सुनने वाला नही तो सुनाउँगा किसे, और इसका सायंकाल धून में भी प्रत्यक्ष हुआ, किसी को आनन्द नही आया, औरो को आया भी हो तो मुझे तो बैठनाभी मुश्किल हो गया था । लेकिन यह सब प्रभु की लीला गुरुदेव की कृपा ही थी जो मुझ अज्ञानी को बहुत कुछ ज्ञान

इस घटने में कराया आप लोगो को मालूम नही कि क्या अनुष्ठान कर रहा हूँ और क्या प्रभु की लीला हो रही है पहले दो लेख में गुरुदेवजी की जो वाणी निकली कि कितनो का कायापलट जायेगा, भाग्य जगेगा, मुद्दतो का सोया जगा जो कुछ आप उसमें सुनते है वह सब मेरी आँखो के सामने दृश्य आता था और देखकर लिखता था फिरभी आप थोड़े से खर्च और आने में खर्च की बात सोचकर घबरा गये और उन्ही लोगों के लिए यह बदली बात हुई, नही तो जमनादास भाई के हृदय में इस बात की गंध भी नहीं थी, खैर हुआ सो तो बहुत अच्छा हुआ अब रहस्य क्या है? कुछ सुनलेः-

उस दिन प्रभु श्री राम राज्य सिहासन पर विराजमान होगे, तथा उसी के उपलक्ष में श्री हनुमंतलालजी को यह दिव्य विजयमंत्र मणी की माला मिलेगी, जिसे गले में पडते तथा श्री भुगल सरकार श्री माता पिता को दिव्य सिहासन पर बिराजमान किरीट मुकुट, कुंडल धारण मिल सजल बादल की तरह श्यामवर्ण तथा माताजी के गोरवर्ण कान्ति प्रभु के नील शरीर को विचित्र ज्योति से जगमगाती प्रभु मंद मंद मुश्कान से भक्तों को सर्व पाप ताप आधि व्याधि को हरते तथा अभय मुद्रासे अपने नामकी शरण लेने वालों की सर्व प्रकार की उपाधियों से अभय तथा रक्षा करने की प्रतिज्ञा सूचित करते तथा माँ अपनी करुणा वात्सल्य के कारण प्रभु से अपने कलि के बाधासे आश्रित जीवों की शीघ्र रक्षा करने की याचना करती । श्री लखन लालजी पीछे भाग में छत्र धारण किये तथा जीवों की प्रतिनिधि श्री भरतलालजी दाहिने भाग में चमर लिये तथा दासो का दास शत्रु के दमन करने वाला श्री शत्रुघ्नजी बायें भाग में व्यंजन(पंखे) लिये तथा भक्तों के परम रक्षक प्रभु के समस्त परिवार तथा माँ के परम दुलारे श्री हनुमंतलालजी प्रभु के मुगल चरण कमलों को पकड़े दोनों नेत्र अेक टक प्रभु की कृपादृष्टि की ओर लगाये तथा मेरे परम पुज्य अनन्त श्री गुरुदेव दूसरी ओर माँ के चरण कमलों के पास आनन्दोल्लित मुँख मुद्रासे बैठे तथा चारो तरफ संत, भक्त, देव, ऋषि, गंधर्व, किन्नरों का मंडल

बिराजमान है ऐसे परम आनन्दोत्सव मंगल मय कल्याणमय शुभवेला कलि कुटिल जीव निस्तार हित वाल्मीकि तुलसी की पत्रिका श्री प्रभु की सेना में पहुँचेगी और सही होते भवसागर के लिये सेतुरुप प्रभु का नाम की तुमुल होगी और उस समय श्री हनुमंतलालजी यह दिव्यमाला पहनकर आनन्द विभोर होकर नाचने लगेगे, तथा विजय मंत्र मणीमाला तैयार करनेवाला की साक्षी भरेगे कि प्रभु देखिये । मेरे गले में अमुक अमुक भाई, बहनों बच्चों तथा माता तैयार किया है ऐसा कह देने से मात्र कलिके समस्त भय दूर हो जायेगे, लोक परलोक सब बन जायेगा, और जो इस नाम मृत को पान करेगे वे इसी जीवन में मुक्त होकर स्वतंत्र विचारेगें यह प्रभु की अहैतुकी कृपा है जो आप के ग्राम में प्रभु की लीला हो रही है, अगर श्रद्धा भावना तथा हृदय से शामिल होगे तो इतने दिन में सारे श्री रामवतार की लीला दिख जायेगी, और प्रभुलीला आज १५ दिन से चालू है अतः अधिक कुछ न कहकर यही कहना चाहता हूँ कि आप सब लोग अेक सप्ताह के लिए सब कुछ भूल जावे तन मन से इस महान कृपा रुपी दिव्य यज्ञ में शामील होकर अपनाजीवन जन्म सफल करो ! देखो प्रभु कृपा से क्या क्या उनकी लीलाएँ होती हैं, किन किन बडभागी को प्रभु अपनी कृपा का पूर्ण अनुभव कराते है, इस प्रकार जब विजय मंत्र रुपी मणिमाला श्री हनुमंतलालजी को अर्पण हो जायेगी तथा जब अपनी आनन्दो द्वेत महान यज्ञ में आनन्द विभोर नाच लेगे फिर उनकी विजय पताका गाँवकी ओर चलेगी और इस समय जितने लोग आते हैं कम से कम उतने घरो में चौबीस घंटे का अखंड महायज्ञ होकर ही रहे, इसके लिए आप सब तैयार हो जाई ये और देखे कौन बड़भागी प्रेमी श्री हनुमंतलालजी के धूनयज्ञ के लिये निमंत्रित करते है, एकबार छोटी काशी को बड़ी काशी बनाओ, श्री रामनाम के गुंजार से बड़ी काशी की महिमा तथा विश्वनाथजी की महिमा सब इसी दो अक्षर राम पर है और चल रही है आप चिन्ता न करे जब कष्ट हरन करने वाला हरि है तो आप को कष्ट होगा ही नही, अगर कुछ हुआ

श्री तो हमे कुंदन याने सोना के समान विशुद्ध करने तथा कंचन के समान विशुद्ध करने के लिये होगा । अतः आप सब मिलकर यही शुभ संकल्प करे कि कोई कष्ट नही होगा सब आनन्द पूर्वक होगा और आप अत्यन्त उल्लास हर्ष पूर्वक अधिक से अधिक संख्यामें नरनारी वृध्दि बड़े छोटे इस दिव्य यज्ञ के श्री दिव्य अमर फल श्री प्रभु नाम का पीयुस पान करके शंकर के समान कल्याण स्वरुप बन जाये । विशेष श्री राम कृपा । अेक सप्ताह अपने दिल में कोई बात न आने दो एक नाम चाहे आवे या न आवे चित्त में बैठा लो उस दिव्य नाम को और जो परिक्षित को सप्ताह भागवत् जैसा महान ग्रंथ सुनकर फल प्राप्त होगा क्योंकि भागवत् का प्राण श्री प्रभु का नाम ही है और परमहँस शिरोमणी श्री शुक्रदेवजी श्री भागवत महापुराण की समाप्ति में नाम कीर्तन की महिमा सूचित करते हुए कहते है क्योंकि वक्ता के हृदय में जो प्रधान लक्ष्य तथा तत्व रहता है वह सब कुछ कहने के बाद सार रुप से थोड़े शब्द में सबसे अंतिम कहता है ऐसे ही श्री गोस्वामीजी ने भी अपने सभी ग्रंथो के अन्त में कहा है सुनिये- श्री शुक्रदेवजी कहते है अन्तिम श्लोक १००००

नाम संकीर्तनस्य सर्व पाप प्रनाशनम् ।

प्रणामों दुःख समनस्तं नमामि हरि परं ॥

याने जिस प्रभु का नाम संकीर्तन सब पापो का नाश करने वाला है तथा जिसके स्मरण से पवित्र निर्मल विशुद्ध हुआ अन्तकरण से दीनता आर्तता पूर्ण किया हुआ प्रणाम सब दुखो का शमन करने वाला है, उस श्री हरि रुप प्रभु को प्रणाम करता हूँ तथा श्री पुज्य पाद परमाचार्य प्रातःस्मरणीय परम पूज्यनीय श्री गोस्वामीजी रामायण जैसे अदभुत ग्रंथ में जिसमें नाना पुराण निगमागम सम्मत तथा कवचिदन्यतोडपि याने जिसमें सम्पूर्ण वेद पुराण शास्त्र तथा संत मत भरा है, उस ग्रंथ कि समाप्ति में क्या कहते है? सूनिये :-

कामहि नारि पियारिजीमि, लोभी के जिभी प्रिय दाम

तिमी रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोही राम ।

इसमें दो ही चीज मांगी गई रघुनाथ शब्द से रुप तथा राम शब्द से नाम मांगा गया, क्योंकि रुप के बिगड़ने पर तो फिर भी कामी का मन नारी के रुप में नहीं लगता। लेकिन दाम याने धन की तृष्णा तो मरते समय तक संसारी लोगों को छुटती नहीं वो उसी प्रकार श्री गोस्वामी कहते है कि चाहे आप का रुप सामने आवे न आवे लेकिन मरते दम तक जैसे लोभी को धन से धन से तृप्ति संतोष नही होता उसी तरह जीवन भर कितना भी नाम रटता हूँ नाम रटने से मुझे संतोष तृप्ति न हो बल्कि .... ?

(इसके आगे का लिखा हुआ अप्राप्य है)

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जोशी आर्ट स्टुडिओ

जामनगर

प्रिय प्रवीण !

आशीर्वाद ।

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ। श्री प्रभु की जो इच्छा, आते समय मैं तुम से कहना चाहता था कि जरूर आना किन्तु तुमने कहा कि तीन दिन छुट्टी लेनी पड़ेगी। इससे मैंने कुछ कहाँ नहीं। अेसा मौका वार वार नहीं आता। आनन्द यहाँ का इस बार अभूतपूर्व था। मुझे दुख बहुत हुआ। रमणीक के साथ आने के लिये फोन भी यहाँ से कराया था। किन्तु तुम्हारा हठीला स्वभाव ही इस आनन्द लाभ से तुम्हें वंचित रखा, नहीं श्री प्रभु की तथा मेरी भी इच्छा बहुत थी, दो व्यक्तियों के साथ प्रसाद भेज रहा हूँ नथु जी दरबार तथा दामोदर भाई। विशेष श्री प्रभु इच्छा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय वत्स प्रविण !

दहिसर

आशीर्वाद ।

दिनांक ७-८-६७

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्रा मिला, पढकर अत्यानन्द प्राप्त हुआ कारण बालक को माँ को देखने पर जितनी प्रसन्नता होती है उससे कई गुना अधिक प्रसन्नता, सुतवत्सलता माता को पुत्र को देखने पर होती है । इसी न्याय से अनेक जन्मों के सम्बन्ध के काणर उपयुक्त समय आते ही वह प्रेम बीज प्रस्फुतित हो चला जो धीरे-धीरे वर्षो से अंकुरित हो रहा था और पुर्ण प्रकाश में विकास प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील था । हुआ भी ऐसा ही, है भी, ऐसा ही है और महामहिम घटघटवासी, अविनाशी की अनुकम्पा रहेगी तो रहेगा भी ऐसा ही, कारण प्रेम नैतिक भव्य भाव है जो मन भावनाओं का विभव है, यह वह ज्ञान गरिमा है जो गौरवक्रामुख को सगौख करती है यह वह धारण है जो धरणी सजीव जीव धारण का आधार है यह ऐक विचार परम्परा है जो विचारशीलता की शिला है, जो पतितों को उठाता है, पतितों को अपनाता है हृदय हीनों को हृदय प्रदान करता है तथा नेत्रहीनों को नेत्र प्रदान करता है या यों कहो कि प्रेम वह है जिसमें प्रदान है आदान नहीं है जिसमें आकर्षण, विकर्षण नहीं, जिसमें गुणदर्शन है दोषदर्शन नहीं, जिसमें प्यास है किन्तु आस नहीं, जिसमें उन्माद है प्रमाद नहीं, जिसमें परिव्यक्ति है आसक्ति नहीं, जिसमें निमज्जन है उन्मज्जन नही, ज्यों ज्यों बूढ़ो श्याम रंग, त्यों त्यों उजलों होई, यही प्रेम की विलक्षणता है यही विशेष है कि जिसमें दूरस्थता का द्वैत का, वियोग का, विशाद का कोई स्थान नहीं उनके लिये अवकाश ही नहीं । बस ! जब जैसी स्थिति में अपना प्रारब्ध पर श्री प्रभु का प्रभाव प्रताप रखे, उसी में पूर्ण संतोष तथा समाधान समझकर हँसते-हँसते जीवन यात्रा चलानी चाहिए । मंजिल दूर है फिर भी

चिन्ता का क्या कारण । जब भगवान खेवैया । अपने माता-पिता तथा परिवार को जय श्री राम । विशेष की प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

छबिला हनुमानजी

प्रिय वत्स प्रविण !

सुरेन्द्रनगर

आशीर्वाद ।   दिनांक २०-१०-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । नूतनवर्ष तो इस बार का बड़ा ही सुन्दर मंगलमय रहा है । मोटर बिगड़ने से अपना कुछ विगड़ा नहीं । श्री द्वारिकाधीश प्रभु का तथा श्री द्वारका स्थित अन्य सभी मंदिरों में अन्नकूट के दर्शन तथा प्रसाद सेवन बड़े ही आनन्द से हुआ । मोटर तथा मोटरवालों को चक्कर में रामजी भाई पड़ा रहा है । जामनगर का अन्नकूट दर्शन भी बड़ा ही भव्य था । मानव मेदिनी भी भरपूर थी । २८-१०-६८ को शायद बम्बई जाना पड़ता किन्तु श्री प्रभु कृपा से रात्रि को ११ा बजे श्री बाला हनुमानजी में धून बोला रहा था, उसी समय जोशी तार लेकर आया कि **काकूभाई बिलकुल निदोष छूट गया** । कल्ह यहाँ आने पर वही तार आया था । शनिवार या रविवार को यहाँ आयेगा, और उसके बाद श्रीनाथ द्वारा जाएगा । तुम्हारी परिक्षा शुरु हो गई होगी, जामनगर का लिखा हुआ पत्र भी मिल गया होगा । चलते समय मैं तुम्हें देखता रहा, किन्तु पता नहीं तू किधर चला गया । यहाँ के बाद ध्रांगध्रा जाना पड़ेगा अेसा लगता है । ७-११-६८ को यहाँ पूर्णहुति होने वाली है । पहले की अपेक्षा अब धून में लोगों की संख्या बढ़ने लगी है। देवदत्त मजा में है । तुम्हारा तैयार किया हुआ फोटो प्रेमजी द्वारा खो गया । दूसरा तैयार करके जोशी भेजेगा या जब मैं मिलूँगा तो लेता

आऊँगा । श्री मेजर साहेब तथा अन्य सभी प्रमियों को जय श्री राम, भजन खूब करना । सीर्फ श्रम कुछ काम नहीं आता । परिश्रम के साथ साथ श्री प्रभु कृपा की नितान्त आवश्यकता है जो भजन द्वारा ही प्राप्त होता है और जिसकी प्राप्ति होने पर जीवन में कोई भी कमी या खामी नहीं रह जाती है विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय वत्स प्रविण !

शोपिंग सेन्टर, न्यु रेल्वे कोलोनी

साबरमती, अहमदाबाद-१९.

आशीर्वाद ।

दिनांक १०-८-६८

श्री प्रभु कृपा ही जीवमात्र के कल्याण का अेक मात्र अमोघ उपाय है किन्तु उसकी प्राप्ति के लिये मन, वाणी, कर्म की निर्मलता, निश्छलता एवं अेकतानता की नितान्त आवश्यकता है । उसके लिये श्री प्रभु की अखण्ड स्मृति अनिवार्य है और अखंड स्मृति बनाये रखने के लिये श्री नाम महाराज का अनन्य आश्रय ही अेक मात्र साधन है । अतः सदा सावधान जागरूक रह कर यह विचारते रहना कि किसी भी कारण विशेष या अवस्था विशेष में भी श्री प्रभु का नाम न भूलने पावे, न छूटने पावे कारण **राम नाम कालि अभिमत दाता, हित परलोक लोक पितु माता । रामनाम कलि काम तरू सकल सुमंगल कंद तुलसीकरतल सिध्धि सब पगपग परमानन्द** आते समय अति जल्दी हुई कि न किसी से मिल सका न किसी से कुछ कह सका । शान्ति लाल को तुम्हारे लिये प्रसाद देने को था वह भी भूल गया । सवेरे का तुम्हारा हृदय विदारक करूण क्रन्दन अभी भी मेरे हृदय को भेद ही रहा है । न मालूम कब किसको कैसी प्रभु प्रेरणा हो जाती है । मेरा तुम्हारे उपर वात्सल्य भाव

है उसको वाणी द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता है । उसकी अभिव्यक्ति तो क्रिया द्वारा या मौन भाषा द्वारा हो सकती है । माता का प्रेम बालक पर और बालक का प्रेम माता पर अन्योन्स होता है फिर भी थोड़ा अन्तर जरूर होता है । बालक को जब माता की आवश्यकता प्रतीत होती है तभी याद आती है किन्तु माता को तो बालक की स्मृति सतत बनी ही रहती है, कारण बालक अबोध होता है और माता सबोध होती है जिससे बालक के हर प्रकार के संभाल रखने के लिये उसे सदा सचेत तथा जागरूक रहना ही पड़ता है । श्री प्रभु कृपा से बड़े आनन्द साथ पहुँच गया हूँ यहाँ ठहरने का और अखंड का भी स्थल बड़ा सुन्दर है । लोगों में खूब उत्साह उमंग है । कल्ह न मालूम क्या हुआ कि रामजी भाई के टेलिफोन करने पर जैल वाला ने उलटा ही समाचार दे दिया कि स्वामी जी तीन चार दिन बाद आनेवाले हैं जिससे यहाँ के प्रेमियों का उत्साह थोड़ा भंग सा हो गया था किन्तु रात्रि को आने का समाचार सुनकर सबके सब आनन्द मग्न हो गये । शान्तिभाई मास्टर को मेरा खूब खूब श्री राम जय राम जय राम कहना । **नाम स्मरण खूब करना सुखी रहना यही हार्दिक कामना सह श्री प्रभु प्रार्थना** । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जामनगर

प्रिय वत्स प्रविण !

आशीर्वाद । दिनांक २७-११-६९

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र मिला पढ़कर समाचार मालूम हुआ । तुम्हारी क्षमाशील एवं उदारवृत्ति - अपने बुरा चाहने वाले - अहित करने वाले के प्रति भी सहिष्णुता एवं सद्कामना के लिये प्रभु से असी

सद्बुद्धि के लिये हार्दिक याचना वाली बात जानकर अति हर्ष तथा गौरव का अनुभव । साथ ही साथ अेसे आर्दश जीवन यापनार्थ सदकामना के लिये कोटि कोटि धन्यवाद । पर निन्दा, पर चर्चा ही परमार्थ पथ में सबसे बड़ा विघ्न है । इससे मुक्त रहने वाला ही श्री प्रभु का परम प्यारा, परम कृपा पात्र होता है । To err is human to forgive is divine. गलती करना मानव स्वभाव क्षमा करना दैवी गुण ईश्वरीय स्वभाव । जैसे तुझे मेरी याद रातदिन, सुबह शाम होती है वैसे यहाँ भी है जैसी सुतवत्सला माता अपने नवजात शिशु के लिये, गौ अपने नये बछड़े के लिये, मछली जैसे जल के लिये, न जाने क्यों ? मेरा चित्त तेरे लिये सदा तड़फना ही रहता है । तुम्हारी विस्मृति का प्रबल प्रयास भी निष्फल जाता है तथा विस्मृति के बदते तुम्हारी स्मृति को बिल्कुल प्रगाढ़ बना देता है । हृदय अेसा चाहता है कि जो कुछ भी मेरा हो, वह सब तुझे देकर निश्चिन्त हो जाऊँ । पश्चाताप ही सबसे बड़ा प्रायश्चित है जिसके द्वारा अन्तःकरण की शुद्ध निर्मलता प्राप्त होने पर ही जीवन के परमोत्कर्ष का मंगलमुहत होता है । बस ! खूब नाम रटो, श्री प्रभु का दृढ़ शरण ग्रहण कर सुखी बनो बनाओं । नाम जपते रहो, काम करते रहो, जीवन सत्यथ पर बढ़ते रहो, जीवनसार सात्विक सुख शान्ति अनुभवते रहो - अन्ततः श्री प्रभु सर्वाधार, सर्वात्मा, सर्वेश्वर अपने प्रियतम मिलने के लिये तड़फते रहो । जोशी को सपरिवार यथायोग्य सह श्री राम जय राम जय जय राम । वहाँ के सभी प्रेमियों को तथा रामजी को आशिर्वाद सह जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

"श्री राम जय राम जय जय राम"

"श्री राम जय राम जय जय राम"

"श्री राम जय राम जय जय राम"

होते हुए शाम तक द्वारका पहुँचने का विचार है क्योंकि वहाँ नूतन वर्ष के दिवस अखंड में अन्नकूट रखा है । राम जी का पत्र आया था कि जामनगर से द्वारका होकर शाम को पोरबंदर आना किन्तु द्वारका पाँच-छ दिवस रुकने का है इसलिये पोरबंदर होकर वहाँ जाना ठीक रहेगा । पोरबंदर दोपहर तक पहुचुँगा, अेसा रामजी और मंडल के लोगों को बोल देना । तुम्हारा स्टुडियों में का लिया हुआ फोटो अत्यन्त ही सुन्दर आया है । नूतनवर्ष के दिवस लेता आऊँगा । फोटो में साहेब, साधक सेवक सबकी झाकी मिलती है । इस बार का तुम्हारा बालसुलभ सरलता, निश्चलता निष्कपटता, निरावरशाता एवं वात्सल्यता का भाव हृदय पर गहरा छाप डाल गया । बस ! इसी तरह सरल निष्कापट, निरावरण रहकर विवेकी, विनयी, संयमी, सद्विचारी, सदाचारी बन कर अपना जीवन उच्च एवं महान बनाकर अपना अपने कुटुम्ब का तथा मेरा भी गौरव बढ़ाओं, यही सद्कामना सह हार्दिक श्री प्रभु प्रार्थना । मंगलामय, कल्पाणामय, आनन्दमय श्री प्रभु नाम में नित्य नूतन श्रद्धा, निष्ठा बढ़ती रहे, यही नूतनवर्ष का नित्यनूतन संदेश अन्य सभी प्रेमियों नाम जापकों को भी यही संदेश अधिक से अधिक श्री नाम महाराज में प्रीतो का संदेश, श्री भेजर साहेब को भी नूतन वर्ष का संदेश मंगलमय नाम में नित्य नूतन प्रीतो । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

C/o. विनोदभाई

Esso Agent, महुवा

दिनांक ३-५-६८

प्रिय वत्स प्रविण !

आशीर्वाद ।

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र मिन्न मिला, समाचार मालूम हुआ आशा करता हूँ कि तुम्हारा सभी पेपर अच्छा गया होगा

श्री रामनवमी के अवसर पर परीक्षा के कारण नहीं आ सकते हो तो कोई बात नहीं । जब जो प्रभु इच्छा होतो नही होता है और उसी में अपने को आनन्द मानना चाहिए कारण कि सर्वज्ञ, सर्वेश्वर होने से उसका ही विधान ठीक माना जाता है । धोलका में तो अेक अभूतपूर्व प्रभाव हुआ । अेसा लगता था कि वहाँ कुछ नहीं होगा किन्तु श्री नाम महाराज का प्रभाव प्रताप दिन प्रति दिन कुछ विलक्षण ही होता जा रहा । द्वारका से श्री जयन्तीभाई की अेक विचित्र खबर आयी है महाजनवाड़ी में जहाँ ठाकूर जी विराजते थे और जहाँ चोरी हुई थी और फिर चोरी की माल भी वापिस आ गई, वही पर अब सिर्फ अेक मंत्र महाराज की छबि हैं और अेक मेरा फोटा है वहाँ सुबह को जयन्तिभाई अेक बार पूजा करने को जाता है । अेक दिन गया तो देखा कि बाहर भीतर सब जगह ताला बंद है और कोई आकर पूजा कर जाता है । यहाँ अखंड खूब आनन्द, उत्साह से चल रहा है । सभी प्रेमियों को जय श्री राम । व्यवस्था खाने-पीने रहने के सब अच्छे हैं । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय वत्स प्रविण ! नूतननगर, महुवा

आशीर्वाद । दिनांक ६-३-६९

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । यहाँ फूल डोल का उत्सव अपने संकीर्तन मंदिर में अभूतपूर्व ही हुआ । जबसे यात्रीगण आने लगे तभी से मंदिर खचाखच भरा रहा था । अेसा अंदाज होता है कि इस बार द्वारका में आने वाले यात्रियों में से शायद ही कोई अेक व्यक्ति होगा जो मंदिर में न आया हो और आनेवाले मंदिर में प्रवेश करते ही मंत्रमुग्ध बनकर नाम रटन करने

लग जाते थे ? इस संकीर्तन मंदिर तथा मंत्र मंदिर का मुग्धकारी चमत्कार का प्रभाव अपने हृदय में भरकर भूरि-भूरि प्रशंसा करते बाहर निकलते थे । सबों के मुख से अेक ही उद्गार अेसा मंदिर तो भारतवर्ष में कही देखा ही नहीं जहाँ कि पैसा न लिया जाए और मुफ्त प्रसाद दिया जाए, कुछ लोग तो चाकित होकर बार-बार पूछते थे क्या रात दिवस अेसा चलता रहता है ? सत्य है सच्चाई, तप और त्याग का प्रभाव प्रताप तो प्रत्यक्ष प्रकट होता ही है । यह बात कुछ और ही है कि अेसा प्रकटीकरण कभी कभी तत्काल ही दृष्टिगोचर होता है । कभी-कभी कुछ काल बाद किन्तु सत्य, सदाचार, सत्कर्म का प्रभाव होता अवश्य है और होता भी है चिर-स्थायी । असत्य अनाचार का कभी तत्काल फल भले ही मिल जाए किन्तु वह कभी चिरस्थायी या सुखकारी सुखद नही होता । असत्य, असंयम अनाचार अपरिणाम तो सदा दुखदायी ही होता है । कलिकाल का स्वरुप है कपट और उसका परिणाम है कलह, दुःख, दैत्य, अशान्ति । इसकी बढ़ती देखकर अब विचार करने का मौका आ जाता है कि किसके उपर विश्वास किया जाए और किसके उपर नहीं कारण अपने पूर्ण अन्तःकरण से जिसे अपना समझकर अपनाने का पूर्ण योग पूर्वक प्रयास करने पर भी निराशा ही की अनुभूति है यद्यपि उसमें अपना कोई भौतिक स्वार्थसाधना की लालसा नहीं किसी प्रकार के प्रलोभन की गंध नहीं - अेक स्वभाविक सहज भगवत प्रेम का प्रवाह । किसी के जीवन को समुन्नत देखर अहलादित होने की आकांक्षा । जहाँ भेद भाव बिलकूल दूर हटाकर अभेद बनाने वनने का विचार, वहाँ भेद-भ्रम की ही प्रचुरता है अतः इन सब कारणों से हृदय उपरामता का कुछ विशेष अनुभव कर रहा है और अेसा होता है कि जो कुछ स्वभाव से होवे, वही होने दे । किसी के लिये विशेष आग्रह दुराग्रह क्यों ? इन्हीं सब विचारो को लेकर और तुम्हारी परीक्षा नजदीक होने से तुम्हारे अभ्यास में प्रतिरोध रूप न बने इसी कारण पत्रोत्तर नहीं दिया, जब प्रताप ने पत्र दिया और पढ़ा कि तीन दिनों से तुम्हारा अभ्यास में मन नहीं लगता है तो लाचार

होकर पत्र लिख रहा हूँ । मैं तो अेक हितेच्चु के नाते यही कहूँगा कि जो प्रस्तुत प्रोग्राम पढ़ाई की है, उसी अेक ओर दत्तचित होकर पूर्ण करने का प्रयास करो । अनेक तरफ अेक साथ चित्त दौड़ाने से कोई भी काम पूरा नहीं हो पाता :-

अेक ही साधे सब सधे, सब साधे सब जाए ।
जो तु सीचों मूल को, तो फूले फले अधाए ॥

विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय वत्स प्रविण ! अहमदाबाद

आशीर्वाद । दिनांक ७-१२-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है और उन्ही की कृपा प्रेणा सहायता से श्री मंगलमय, कल्याणमय, आनन्दमय श्री नाम महाराज का प्रचार प्रसार दिन प्रति दिन अनायास ही बढ़ता जा रहा है । यह सब सीर्फ श्री गुरु महाराज की अहैतुकी अनुकम्पा का ही परिणाम है अन्यथा मेरे जैसा पामर प्राणी क्या कर सकता है ? श्री गुरुदेव ने अपना कृपापात्र बनाया अपने मिशिन प्रचार का मुझे निमित्त बनाया यही मैं अपना परमसद्भाग्य मानता हूँ ।

"गुरु विनु भव निधि तरै न कोई, जो विरंचि शंकर सम होई ।"

कारण कि :

गुरु के वचन प्रतीति न जेहि, सपनेहु सुगम न सुख सिध्धि तेहि ।
तजौ न नारद कर उपदेशु आप कहै शतवार महेशु ॥

कबतक :-

जन्म कोटि लगि रगड़ हमारी, वरा शंभु न तो रहौं कुमारी । अेसी

जिसकी अटल श्रद्धा निष्ठा होती है वही जीव संसार में कुछ कर सकता है। अपना तथा अपना अहैतुक हितकारी पूज्यपाद श्री गुरुदेव महाराज की कीर्ति ज्योत्सना का प्रसार विस्तार कर कृतकार्य हो सकता है। इसी कारण मंगलाचरण में पूज्यपाद गोस्वामी तुलसीदास महाराज ने लिखा है :-

भवानी शंकरौ वन्दै श्रद्धा विश्वास रुपिनौ ।
याम्याम् विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तस्थमिश्वरम् ॥

श्री गुरुदेव एवं संत तो अपने अन्दर छिपे हुए सुषुप्त संस्कारों को अपनी दिव्यवाणी द्वारा, अपने सत्यसंकल्प द्वारा जाग्रत कर देते हैं। "अगर शिव्य वैराग्यवान, मुमुक्षु न हुआ तो कोई विशेष लाभ नहीं उठा सकता।" अतः हमेशा जागरूक रहकर जीव जगत, ब्रह्म तथा अपने लक्ष्य की ओर विचार करते रहना चाहिए, जिससे जीवन पथ प्रशस्त होता रहे और अंधकार से निकलकर प्रकाश की ओर बढ़ते रहे। इसमें अपना उमंग, उत्साह, धैर्य, विश्वास, श्रद्धा इतनी प्रबल होनी चाहिए कि महान् से विपत्ति भयंकर से भी अति भयंकर विध्नवाघायें भी मेरी प्रगतिशील मार्ग अवरुद्ध न कर सके। सिर्फ भोगों के लिये प्रयास करना या प्रयत्नशील रहना मानव जीवन के लिये अेक कलंक है, महान अभिशाप है कारण भोगे तो स्वभाव से ही क्षणमंगुर विनाशशील होने से दुःख रूप ही हैं और उनकी प्राप्ति भी नीच से नीच योनियों में भी विना प्रयत्न ही प्राप्त हुआ ही करती है। अतः मानव योनि जैसा देव दुर्लभ योनि प्राप्त करके अगर उन्ही तुच्छ भोगों के लिये ही जीवन की अमूल्य घडियाँ गवा ही जाएँ उन्हे कोई अच्छा नहीं कहेगा बाल्कि श्री भगवान ने तो रामायण, गीता, भागवत में तो अेसे लोगों को आत्म हत्यारा ही बतलाया है। सीर्फ लौकिक परिक्षाओं को पास कर लेने से ही जीवन की समस्यायें सुलझ नहीं जाती बल्कि उसके पश्चात् तो वास्तव में विशेष उलझन का ही काल-उपस्थित होने लगता है और सीर्फ पुरुषार्थ और परिश्रम से सब कुछ प्राप्त नही हो जाता, वहाँ भी प्रारब्ध या श्री प्रभु कृपा की अपेक्षा तो रहती ही है। वैभव, सत्ता, सम्पत्ति,

सतति की प्राप्ति हो जाने पर भी सभी सुखी नहीं हो पाते । सब कुछ प्राप्त होने पर प्राणी दुःखी, अशान्त, व्याकुल, बेचैन दिखे जाते हैं । सुख में भी जब सब सुखी नहीं देखे जाते तो दुःख की तो बात ही कहना क्या ? इस संसार का नाम ही दुखालय है तो सुख किसी को मिल भी कहाँ से सकता है ?

राजा दुखी प्रजा दुखी, योगी के दुख दूना ।
कहैं कबीर हम घर घर देखा, अेको घर न सूना ॥

तो वास्तव में सुखी कौन है ? जिसे संसार की किसी वस्तु की कामना नहीं है । अगर कोई कामना है भी तो उसी आप्तकाम, पूर्णकाम, परमनिष्काम परमात्मा की, जिसकी कामना दुखरूप समस्त कामनाओं को सदा सर्वदा के लिये निर्मूल कर देती है । संत तथा भगवन्त ने समस्त अनीति, अनाचार, व्यभिचार, पाप के मूल अेक काम को ही बतलाया है । **जिस प्रकार काम समस्त असद् वासनाओं का अेक सामुहिक नाम है । उसी प्रकार समस्त सुख, सम्पति आनन्द एवं सद्‌गुणों का मूल राम है ।** मानव जीवन का अेक मात्र लक्ष्य जन्म जन्मान्तरों से हृदय में स्थित इस दुख दैन्य दारिद्र रूप काम को समूल उन्मूलन कर नित्य, निर्मल, परमानन्दरूप, आनन्दसिधु, सुख सागर राम **को हृदय में वसा लेना ही है ।** अतः सन्तों ने जो निज अनुभव से इस भयंकर कालिकाल में भी लक्ष्य प्राप्ति का साधन बतलाया है । उसे हृदय से अपना कर अपने को कृतार्थ बनाने का अवश्य प्रयास करना चाहिए :-

विन संतोष न काम नशाहि, काम अछत सुख सपनेहु नाहि ।
राम भजन विनु मिटहिं कि कामा ।
अस, विचारि मतिधोर, तजि कुर्तक संसय सकल ।
भजहुं राम रघुवीर, करूणाकर सुन्दर सुखद ॥

कई दिनों से पत्र लिखने के लिए मन उछल रहा था किन्तु दो अेक विचार आकर उस उमंग को उछाल को बंद कर देते थे किन्तु गत तीन दिनों

से तुम्हारी स्मृति व्याकुल किये डालती थी ज्यों ज्यों भूलना चाहता था त्यों त्यों और प्रबल होती जाती थी, अतः कल्ह सवेरे निश्चय लिया कि दोपहर के बाद तो आज पत्र लिखकर स्वस्थ हो ही जाऊँगा और प्रविण का इतनो प्रबल इच्छा होगी तो आज उसका पत्र भी आही जाएगी । ज्यों ही कागज कलम लिखने को बैठा त्यों ही तुम्हारा पत्र आया । **"जापर जाकर सत्य सनेहुं सो तिहि मिलै न कुछ सन्देहु** । गोस्वामीजी का यह कथन अक्षरशः सत्य है । सुरेन्द्रनगर में पत्र मिला था, किन्तु तुमने लिखा कि परीक्षा चालू है और पहला पेपर बहुत अच्छा गया है तो उस समय इसलिये पत्रोत्तर नहीं दिया कि अभी परीक्षा में लगा है तो पत्र लिख कर कहाँ समय बिगाड़ू । पालेज में पत्र आया था उसमें कुछ लिखा ही नहीं था कि परीक्षा पूरी हो गई या क्या हुआ ? इसी इन्तजार में रहा । तुझे इतना मालूम नहीं है कि **वछड़े को जब भूख लगती है - जरूरत पड़ती है तभी माँ को याद करता है किन्तु माँ तो खछड़े के हित के लिये, सुख समृध्धि के लिये सदा जागरूक ही रहती है । बच्चे को माँ से मिलकर जितना आनन्द नहीं होता उसे करोडों गुण अधिक आनन्द माँ को बच्चे से मिलकर होता है** । कारण कि बालक की अपेक्षा तप त्याग अत्यधिक होता है । **भोग इस जीवन का कभी पूरा सहारा नहीं किन्तु भजन और भगवान तो यहाँ वहाँ सभी जगहों के सदा सर्वदा सच्चा साथी हितकारी हैं और उन्हीं के नाते मेरा और तुम्हारा सभी प्रेमियों का नाता है जो अटूट अखूट** । बस ! खूब भजन करते अपने कर्त्तव्य पथ पर आरूढ़ रहना । भजन द्वारा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रकाश, विकास होता है । संसार में जितने महापुरुष हो गये हैं उन सबों ने उसी महामहिम की आश्रय लेकर । रामजीभाई कल्ह आया और आते ही बिमार हो गया । आज सवेरे ठीक हो गया है सभी प्रेमियों को राम-राम कहना । **पहले राम पीछे काम** । रामजी पूर्ण स्वस्थ हो गया है आज यहाँ पूर्णाहुति है कल्ह से दूसरी जगह ५ दिवस का अखंड है उसेक बाद १४-१२-६८ से २२-१२-६८ भरूच उसके बाद बम्बई

होकर या सीधे द्वारका देवदत्त महाराज का आशीर्वाद, रामजीभाई की याद, मंगल, मुरारजी जग्गु, शान्तिभाई अमू, प्रताप, नरेन्द्र, मोहन, पंकज महाराज, भत एवं सभी प्रेमीजनों को जय श्री राम ।

प्रिय मेजर साहेब को मेरा जय श्री राम कहना और कहना कि श्री प्रभु नाम रटन करते रहे सब मंगल ही मंगल होगा । स्वतंत्ररूप से पता लिखना था किन्तु पत्र कही सब चिट्ठियों में भूल गई अन्तर से तो पत्र लिखता रहता हूँ ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय वत्स प्रविण ! वेरावल

आशीर्वाद । दिनांक २५-३-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है । श्री नाम महाराज के प्रताप प्रभाव से ही उनका प्रचार प्रसार भी अस्खिलित रूप से दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है और भयंकर कालिकाल के कराल समय में भी सद्भागी संस्कारी आत्मायें उनका दृढ़ आश्रय ले अपने को कृतकृत्य मान रहे हैं । अपने स्वप्न में भी कल्पना न आ सके ऐसा प्रभाव प्रताप श्री नाम महाराज का अभी प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रहा है । राणीप ४० दिवस का अखंड महायज्ञ का प्रभाव तो अवर्णनीय है । जहाँ पर लगभग १५ मील का तो नगर कीर्तन निकला, गुजरात में तो हाथी का नाम नहीं - वहाँ भी नगर किर्तन में हाथी, घोड़ा, ऊँट, मोटर, फिटिन, छत्र, चवर के साथ असंख्य मानव मेदिनी नाम प्रेम पीयूष पानकर, प्रेमोनाद में पागल बन नृत्य करते हुए ऐसे शोभा पा रहे थे, मानों श्रीनाम महाराज की अजय सेना पापरूप, अधर्मरूप कालिराजा को सहित समाज भारत से बाहर मार भगाने के लिये कूच कर रही हो । उसके बाद

पालेज और उसके आस-पास के गावों के अखंड महायज्ञ का भी विलक्षण आनन्द रहा । यहाँ आते समय तो अहमदाबाद जंक्शन का सारा प्लेटफार्म राणीप गाँव के निवासियों, यू.पी. के भईया लोगों तथा अहमदाबाद के प्रेमियों से खचा खच भरा था तथा सारा स्टेशन विजय मत्र के गगन भेदी नांद से गुंज रहा था । अेसा मालूम पड़ता था कि श्री नाम महाराज का अखंड साम्राज्य ही क्यों न स्थापित हो गया हो ? पुष्प, माला, प्रसाद की तो मानों वरसात ही हो रही थी, यह सब अेक मात्र पूज्यपाद गुरु देव महाराज की कृपा प्रेरणा का ही फल कि आप स्वयं दिव्य चिन्मयकाया धारणकर अन्तरिक्ष में व्याप्त हों मेरे जैसे पामर प्राणी को निमित्त बनाकर अपनी सब अद्‌भूत लीला कर रहे हैं और लाखों संस्कारी, सद्‌भागी आत्माओं को कृतार्थ कर रहे हैं । धन्य है ! उनकी शक्ति ! धन्य है ! उनकी कृपा करूणा प्रेरणा । धन्य है ? उनका कृपालु, मायालु एवं परमदयालु स्वभाव । तुम्हारा पत्र कल्ह मिला । पढ्कर आनन्द हुआ "तुमने लिखा मुझसे कोई भूल हुई" इसलिये आप रूष्ट गये हो, तो क्षमा करना । मुझे तो आश्चर्य लगता है कि तुम्हारे मन में ही यह शंका क्यों उठती है कि मैं रूष्ट हो गया हूँ जबकि कोशिश करने पर तुझे भूल नहीं पाता । अगर कोई स्वार्थ हो, मतलब हो, कभी बदला की अपेक्षा हो तो यह संभव भी हो सके किन्तु अेसी तो कोई बात है ही नहीं । यह तो कई जन्मों के संस्कार के कारण अकारण स्नेह बढ़ गया... उसका समय समुपस्थित होने पर सुप्तावस्था में से जाग्रतावस्था में आ गया और जिसे सच्चा स्नेह है, हृदय में सच्चाभाव है, श्रद्धा, निष्ठा है उसके लिये वास्तव में पत्र वगैरह की भी आवश्यकता ही क्या है ? अगर संदिग्ध प्रेम है तो प्रेम पत्र आने जाने से भी क्या ? यार का दिदार तो दिल के आइने में सदा सर्वदा मौजूद ही है । जब मन चाहे उसे देख लो, बाते कर लो, दिल बहला लो । बाह्य साधन की आवश्यकता भी क्या है ? सीर्फ उसे अर्न्तमुख करने के लिये ही तो । बस ! अन्तर में झाँकों और वहीं अपने प्रेमास्पद की

बाँकी झाँकी कर लो । अगर तुझे किसी कारणवशात् लगा भी कि मैं रुष्ट हुँ तो भाई ! रूष्ट क्यों ? किस लिये ? जब जानते हैं कि - रुकना नहीं देश विराना है !

यह संसार झाड़ और झांकर आग लगे बरि जाना है ।
यह संसार कागज की पुड़िया पवन लगे फटि जाना है ।
यह संसार माटी का ढ़ेला, बुंद पड़े गलि जाना है ॥
कहे कबीर सुनों भाई साधों, सत्गुरु नाम ठिकाना है ॥

रहना नहीं देश विराना ।

असे चंदरोजा जिन्दगी में क्यों किसी से शेष ? और क्यों किसी से दोष ! यहाँ तो सबके साथ प्रेम से हिल मिल कर चलना और जब कभी मत में विकार आवे तो आनन्द विमोर, मन मस्त होकर गाते रहना :-

हरि नाम सुमरि सुखधाम जगत में जीवन दो दिन का ।
पाप कपट की माया जोडी गर्व करे धन का ।
सभी छोड़ कर चला मुसाफिर बास हुआ बन का । हरिनाम...
सुन्दर काया देख लुभाया लाड़ करके तन का,
छुटी स्वास विखर गई देही ज्यो माला मन का ॥ हरिनाम ...
जोवन नारि लगे प्यारी मौज करे मन का,
काला बली का लगे तमाचा भूल जाए ठनका ॥ हरिनाम ...
यह संसार स्वप्न की माया मेला पल छिन का ॥
ब्रह्मानन्द भजन कर वन्दे नाथ निरंजन का ॥ हरिनाम ...

बस ! भजन करो, सुखी बनों बनाओं, यही सद्कामना, यही अपना नाता रिश्ता, यही अपना स्नेह सम्बन्ध, यही श्री प्रभु प्रार्थना ।

सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम । परीक्षा नजदीक है तो खूब श्रम करना जिस काम में हाथ लगाना, उसे सुन्दर ढ्रग से पूरण करना, यह भी तो भक्ति ही है । यहाँ आने की क्या आवश्यकता है । परीक्षा पूरी होने पर

जब अवकाश हो तो तुम्हारी रुचि और गार्जियन की अनुमति हो तो तब तहाँ आना जाना । आनन्द लेना । विशेषश्री प्रभु कृपा । जो कुछ करना हो करना, सीर्फ अेक नाम महाराज को नही भूलना । बस ! यही अेक मात्र सिद्धि का सोपान है, जीवन का आधार है, भक्तों की, संतों की पुकार है ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय वत्स प्रविण !

शोपिंगसेन्टर, न्यु रेल्वे कोलोनी

साबरमती, अहमदाबाद-१९.

आशीर्वाद । दिनांक २८-८-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । यहाँ अखंड यज्ञ बहुत ही सुन्दर ढ्ग से चल रहा है । श्री जन्माष्टमी का उत्सव यहाँ करके दूसरे दिन नवमी १७-८-६८ को पालेज तीन दिवस के लिये गया था, कल्ह शाम की वहाँ से आया हूँ । मेजर साहब आये उस दिन उन्होंने शान्तिलाल मास्टर तथा रामजीभाई का पत्र दिया और कहा था प्रविण स्टेशन आया था और कहा कि मैंने पत्र लिखा है बापूजी को मिल जाएगा । इसीलिए अेसा मन में होता था कि क्या हुआ जो प्रविण का लिखा हुआ पत्र अभी तक नहीं आया । शायद अेड्रेस भूल गया होगा । अेसा भी कुछ प्रतीत होता था कि तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा नहीं है । आज सवेरे में भी भक्तों के साथ खूब चर्चा की के न जाने क्यों प्रविण का पत्र नहीं आया । अभी ५ा बजे तुम्हारा पत्र मिला है । पत्र भी लिखते हो तो इतना अधूरा कि मन में कुछ न कुछ चिन्ता बनी ही रहे । कम से कम शारीरिक तकलीफ क्या हो गया था, उसका कुछ स्पष्टीकरण तो करना था । ज्वर आ गया था या पेट का ही कुछ विकार पहले जैसा हो गया था । उस बार उलटी दस्त हुआ था उसके बाद ही सब कुछ खाने पीने लग गये थे । हो सकता है कि उसी वजह से पेट की कमजोरी के कारण फिर पेट बिगड़ गया हो या पाव में

जख्म होने से सम्भव है बुखार आ गया हो। कुँए पर जब तुझें ठोक्कर लगी और चक्कर खाकर गिरते गिरते बच गये **तभी से मेरा मन कुछ न कुछ चिन्ता हो रही थी।** खाने पीने का ध्यान रखना, ठंडी वासी भोजन नहीं करना। जो जरूरत हो निःसंकोच लिखना। अगर स्वास्थ्य ठीक नहीं है तो पढ़ने लिखने की भी बहुत चिन्ता नहीं करना। थोड़ा समय आराम से, शान्ति से पढ़ना लिखना। स्वास्थ्य सुधरने पर फिर विशेष परिश्रम द्वारा सब पाठ पूरा किया जा सकता है और सफलता के लिये सीर्फ अति परिश्रम ही प्रर्याप्त नहीं, सबसे बड़ी चीज तो **श्री प्रभु कृपा ही** ह जिसके द्वारा असंभव भी संभव बन सकता है। **चरणकमल बन्दौ हरिराई।**

जाकी कृपा पंगु गिरि लंधै, अंधे को सब कछु दर्शाई ॥

वहिरों सुनै मूक पुनि बोलै रंक चलै सिर छत्र धराई ॥ चरणकमल...

सूरदास स्वामी करुणामय बार बार बंदौ तेहि पाई ॥

पालेज से शान्तिभाई के नाम संकीर्तन मंदिर के पते पर अेक पोस्ट कार्ड भेजा है, उसमें लिँखा था कि प्रविण का पत्र अभी तक नहीं मिला है। रामजीभाई हरेक पत्र में लिखता है। प्रविणभाई मजा में है कोई चिन्ता नहीं करना कारण आते वक्त और स्टेशन पर भी मैंने रामजी को कहा था प्रविण अपना वच्चा है उसका ध्यान रखना, कभी दुःखी न होवे। २९-८-६८ को यहाँ से महुवा जाने का निश्चय रखा है आगे श्री प्रभु कृपा। देवदत्त, देवाभगत, भोजा भगत मजा में है। तुझे भी वे लोग बात चीत चलने पर याद करते हैं।

If Wealth is gone
Nothing is gone
Health is gone
Some thing is gone
If character is gone
Every thing is gone

कल्ह से अभी तक मेजर साहेब न मिले हैं रामजीभाई को कह देना कि २९-८-६८ को यहाँ से महुवा चले जाने की इच्छा है। कल्ह से अभी तक मेजर साहेब न मिले है श्री रसिक भगत अहमदाबाद वाले १७-८-६८ को श्री राम शरण पा गये। अेक नाम प्रचार का बड़ा पाया टूट गया। श्री प्रभु इच्छा।

"सरूज शरीर बादि सब भोगा"

शरीर के स्वस्थ्य रहने पर ही सब कुछ हो सकता है। चाहे संसार का सुख लेना हो या परमार्थ का। शरीर अस्वस्थ रहने पर संसार का छप्पन भोग भी विषतुल्य ही है वैसे शरीर स्वस्थ न रहने से भजन भी नहीं हो सकता है। अतः शरीर की स्वास्थ्य की कालजी तो रखनी ही चाहिए। सौ दवा का अेक संयम। **रिपु, रूज, पावक, पाप अहि जनि जानिये छोट करि**। श्री गोस्वामी तुलसीदासजी श्री रामयण में लिखते हैं कि **शत्रु रोग, अग्नि, पाप और सांप (सर्प)** इन पाँचों को छोटा समझकर उपेक्षा नही करनी चाहिए बल्कि प्रारम्भ में ही इनका निदान कर लेना चाहिए, जिससे आगे चलकर भयंकर रूप धारण न कर लेवे। अगर कोई बिमारी है अगर शुरु में उसे साधारण समझकर ध्यान न देवे तो बढ़ते बढ़ते भयंकर बन जाता है। आग की अेक चिनगारि अगर कही घास में पड़ गई तो सारे गाँव को, जंगल को जलाकर भस्म कर देती है। अतः संत शास्त्र हम लोगों को संचेत करते हैं कि इनको छोटा नहीं समझना। ये छोटे हो या बड़े इन्हें तो निर्मूल ही कर देना चाहिए। बस ! अधिक क्या लिखू ? तुम स्वयं समझदार हो। समझ से विचार से रहना। किसी बात की चिन्ता, आशंका नहीं रखना जब जो इच्छा हो हृदय खोल कर कहना, लिखना, मैं तो **तुझे सुखी, समुन्नत देखते रहना चाहता हूँ। यही हार्दिक सद्कामना सह श्री प्रभु प्रार्थना है**। विशेष श्री प्रभु कृपा, सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री रामं।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

|| श्री राम ||

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय वत्स प्रविण !

आशीर्वाद ।

श्री प्रभु कृपा ही जीव मात्र के कल्याण का अेक मात्र साधन, अेकमात्र अमोध उपाय है । उस कृपा की उपलब्धि भी उसी की अहैतकी कृपा से ही सम्भव है फिर भी इस जीव को अपनी स्थिति को तो उस रूप में लाने का तो अवश्य ही प्रयास करना चाहिए कि जिससे उस करुणावरुणालय, दीन-जनशरणलय, राजराजेन्द्र, रजीवलोचन श्री राघवेन्द्र की कृपा अनायास ही वृष्टि के रूप में अपने उपर आ पड़े । इसके लिये संतों भक्तों के द्वारा बतलाया हुआ मार्ग भी सरल और सीधा है किन्तु यह प्रमादी, विषयी, विलासी जीव उसकी ओर अग्रसर होने के लिये तैयार ही कहाँ है ? जैसे बिष्ठा के कीड़े को विष्ठा में ही पड़ा रहना और उसी का आहार विहार आस्वादन अभिष्ट होता है उसका त्याग उसके लिये असम्भव सा ही है इसी प्रकार मानव शरीर प्राप्त करके भी जिसने मानवता को तिलाजंलि देकर दानवता - आसुरीवृत्ति - भोगवासना जो वास्तव में स्वयं दुखरूप है और समस्त दुखों, पापों अनिष्टो की जननी है अपनी अज्ञानता जड़ता के कारण उसे ही सुख रूप या सुख का साधन मान रखा है अेसे विषयी पामर, पतित प्राणी के लिये सद् विचार, सदाचार, सच्चा सुख शान्ति धर्म, ईश्वर की बाते, चर्चा उसके लिये व्यर्थ ही है । वास्तव में जब तक स्वयं अपने अन्दर किसी तत्त्व को, पदार्थ की प्राप्ति की प्रबल लालसा होती है उसे ईश्वर कृपा प्रेरणा से अनायास ही ऐसा मार्ग, साधन और मार्गदर्शन करनेवाला भी मिल ही जाता है ऐसी एक कहावत भी है । जहाँ चाह वहाँ राह Where There is will There is the way जाकी यहाँ चाहना है बाकी वहाँ चाहना है **जाकी वहाँ चाहना वाकी यहाँ चाहना** बस समस्त सिद्धियों का मूल है श्रद्धा और विश्वास । जिसकी जैसी श्रद्धा होती

है वह उसका ही रूप बन जाता है तभी तो श्री भगवान ने श्री गीता में कहा है **श्रद्धावान लभते ज्ञानं तत्परः संयतन्द्रियः । ज्ञानं लवद्धापरां शान्तिमचिरेणाधि** गच्छति । श्री राम चरित मानस में भी श्रीमद् गोस्वामी तुलसीदासजी ने लिखा है :-

भवानी शंकरौ वन्दे श्रद्धा विश्वास रुपिन याम्भाम् बिना न पश्यन्ति सिद्धाः

स्थान्तस्थमिश्वरम् । श्री प्रभु में अडिग, अटूट श्रद्धा विश्वास रख अपना वर्त्तव्य पालन करो । **अेक श्री नाम महाराज की प्रसाद से, कृपा से सभी भोग मोक्ष सुलभ है** । तुम्हारे जाने के बाद उसी दिन दोपहर के बाद मेरे कान में भयंकर दर्द शुरु हो गया जो दो दिनों तक रहा । श्री प्रभु कृपा से जूनागढ पहुँचते मिट गया । जूनागढ़ में पढ़े लिखें समाज पर बहुत प्रभाव पड़ा है । अखंड के शुरु में अढ़ाई घन्टे के प्रवचन सुनकर सब दंग हो गये । दूसरे दिन श्री गुरुनानक देव की जयन्ती के उत्सव पर अनुप के कालेज के बड़े-बड़े प्रोफेसर अेक चित्र थे । वहाँ पर संतो तथा गुरुनानकदेव की अपने राष्ट्र के उपर कितनी देन है और मध्यकालीन भारत में जब अपनी संस्कृति तथा साहित्य का सर्वनाश होता जा रहा है और विधर्मी लोग उसे समूल विनष्ट कर डालने के लिये अत्यन्त निन्द प्रयास कर रहे थे उस समय किस प्रकार सन्तों ने अपने धर्म साहित्य और संस्कृति को डूबती नौका को किस प्रकार बचाया - इस विषय पर लगभग अढ़ाई घन्टे सत्संग चला जिसे सुनकर सभी प्रोफेसर स्तब्ध हो गये और कल्ह से सब के सब अेक दूसरे को साथ लेकर सत्संग में आने लग गये हैं । शिक्षित समाज पर खूब प्रभाव पड़ा है । अखंड में हजारों की मेदिनी रहती है । कल्ह सबेरे मैं सोच ही रहा था कि प्रविण ने पत्र नहीं लिख क्या ? परिक्षा की तैयारी में लीन हो गया है या कुछ बहुत दिन साथ रहने से उदासीनता आ गई है ? इतना विचार ही कर रहा था कि तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हूआ किन्तु दोपहर को या रात्रि के समय

पूरा याद नहीं मुझे जरा नींद आ गई तो मैंने ऐसा देखा कि प्रविण मेरी गोद में पड़ा है और कुछ उदासीन, दुःखी चिन्तित सा लगता है । इतने में नींद खुल गई । विशेष श्री प्रभु कृपा । मुरारिजी जगु हर गोविन्द तथा अन्य सभी प्रेमियों को जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा । खूब आनन्द है ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

विजापुर

प्रिय वत्स प्रविण !

आशीर्वाद ।

दिनांक ४-६-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । **तुम्हारी जुदाई से मुझे क्या क्या हुआ, उसका उल्लेख करने की भी मुझे हिम्मत नहीं तू तो कम से कम इता शक्तिशाली तो है कि अपने वियोगजन्य व्यथा का यत्किञ्चित उल्लेख तो कर सका** । मैं भी यही समझ रहा था कि जो विछावन पर पड़ते ही ऐसी आनन्द विभोर निश्चिन्त हो निद्रा की गोद में लीन हो जाता था कि जिसे करवटे बदलने की भी फुरसत नहीं मिलती थी, **उसे आज अवश्य ही सारी रात्रि करवटे बदलते और आहे भरते ही वितेगी । सब है शुद्ध प्रेम का पवित्र भाव का यही परिचायक** ह कि संयोग में उसका प्रभाव प्रताप प्रकाश इतना प्रबल नहीं होता **जितना कि विप्रयोग दशा में होता है** और वैसी दशा में अतीत की विस्तृत सी स्मृतियाँ, लीलायें, कौतुक, क्रिडायें स्मृति पट पर आकर उसका रसास्वादन प्रत्यक्ष जैसा कराती रहती हैं और पुनः उस रसमय रसास्वादन के लालायित आकुल, व्याकुल परेशान बनाती रहती हैं तथा साथी ही यह अनुभव कराती है कि **विशुद्ध प्रेम में अतृप्ति ही तृप्ति है और वियोग ही मिलन** ह जिसमें किसी प्रकार का व्यवधान नहीं । तुझे स्टेशन छोड़कर आने के बाद कई लोगों के मुख से यही चर्चा होने लगी कि जिस महाराज को १॥ मास पहले सोमनाथ

मेल में विदाई दने के लिये हजारों व्यक्ति नाचते कूदते गाते गये थे, वही महाराज आज अेक लड़के को छोड़ने के लिये स्वयं स्टेशन गये थे - वह कैसा भाग्यशाली होगा ? तुम्हारे जाने के अेक दो दिन पहले से बिलकुल नवजात शिशु जैसा दांत दांत काढता कांढता केम ! बापूजी ! केम बापूजी ! बाल सुलभ सरलता, निश्छलता का दश्य अभी अभी मेरे नेत्रों के सामने नाँचकर विहबल बना रहा है । शुद्धभाव में वात्सल्यभाव में कितना बड़ा प्रभाव चमत्कार है कि अेक नवजवान को भी पल भर में पलट कर बिलकुल बाल ही बना देता है । प्रमोदभाई चन्दूभाई वगैरह में भी अेसा लगता था कि प्रविण का पत्र क्यों नहीं आया । अेसा विचार हीन तो हो नहीं सकता । धोलका की पूर्णाहुति और नगर कीर्तन भी अभूतपूर्व ही रहा है । जोशी को भी रसिक भगतने फोन करके बुला लिया था, राणीप, अहमदाबाद, राजकोट वगैरह कई जगहों से भी काफी तायदाद में भविक भक्त जन अेकत्रित हो गये थे, सारे गाँव, तलाब वगैरह का दो सौ फीट फिल्म भी लिया गया । बड़ा अपूर्व आनन्द था । बार-बार मैं देवदत्त को रास्ते में कहता था - प्रविण बेकार में दो दिन के लिये भाग गया रहता तो कैसा आनन्द आता । रविवार को ही विजापुर से दो मोटरे लेकर आ गये थे । अतः इच्छा न होने पर भी आना पड़ा । जोशी भी साथ ही आया है आज जा रहा है । यहाँ के लोग बहुत ही भावुक और कुलिन है । अत्यधिक गर्मी के कारण कल्ह सोमवार ता. ३-६-६८ से तीन दिन के लिये अभी बारोट साहेब के घर में अखंड शुरु हुआ है, शायद अेक दो स्थान में और भी होवे । हिम्मतनगर हँसमुख की जगह यहाँ से १४ मील ही है तो शायद वहाँ भी जाना पड़े । जैसे महुवा में नारियल सुपाडी का बागीचा है । वैसे यहाँ आम का बगीचा है लगभग अेक लाख वृक्ष आम के हैं अेसा लोग कहते हैं । जोशी को पत्र लिखा होगा । तुम्हारा पत्र भी जोशी को पढ़ाया, पढ़कर बहुत खुशी हुआ कहता था समझदार तो बहुत है, भगवान

उसे अेसे सदा रखे । रामजीभाई को समझा दिया बड़ा अच्छा किया, बुद्धिमानी विवेक का काम किया । परिणाम के बारे में कुछ नही लिखा तो जरूर लिखना । किसी प्रकार की चिन्ता नहीं करना । आनन्द में रहना । सभी प्रेमियों के जय श्री राम । घरवाले तो नाराज न हुए ? अभी भी कमी कमी जोशी के सामने हरिश के बदले अमे ! **प्रविणा बोला ही जाता है यह सुन कर जोशी कहता था - प्रविण कितना चित्त में बस गया है कि अभी भी भूलता नही मैंने कहा प्रेम में कभी विस्मृति हो सकती है । सतत स्मृति तो हो सच्चे प्रेम की मूर्ति है ।** भोजा भगत का तुम गये उसके दूसरे दिन ही तार आया तार हरिभाई का लिखा हुआ था । मैंने सोचा कि हरिभाई से तुझे बातचीत हुई होगी । अब तो जामनगर, द्वारका जाने का बहुत टाईम नहीं रहता । शायद कही अहमदाबाद में भी यहाँ से ९ दिवस के लिये जाना पड़े । तब तो गुरुपूर्णिमा का दिवस ही कितना रह जाएगा ? अभी शायद पाँच-छ दिन यहाँ लग जाएगा तो परीक्षाफल और अेडमीशन का समाचार जरूर भेजना । जोशी को भी समझ दिया है कि दूसरे किसी से अेक्सडेन्ट बात नहीं करना । काकूभाई का भी अभी तक कोई पत्र नहीं आया है विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

रामजीभाई का पत्र मिला है जामजोधपुर (पाटण) का प्रोग्राम जैसा मौका होगा वैसा लिखूगाँ, भगत का Repaly Paid Teligram था । अभी तक जवाब नहीं दिया है अगर योग बन जाएगा तो हरिभाई को जामजोधपुर तार कर दूँगा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय वत्स प्रविण !

जोशी आर्ट स्टुडियों
जामनगर

आशीर्वाद ।

दिनांक ९-८-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । आशा करता हूँ अब तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक हो गया होगा । अगर कुछ अभी भी खड़बडी हो तो नियम पूर्वक उपचार करना जिससे जल्दी स्वास्थ्य ठीक हो जाएगा । शरीरमाघ खलु धर्मसाधनम् क्योंकि स्वस्थ शरीर द्वारा ही सब प्रकार साधन हो सकता है थोड़ा काजू भेज रहा हूँ मेजर साहेब के साथ तो इसका उपयोग करना, सुखी स्वस्थ रहना । श्री प्रभु भजन अवश्य करते रहना, इसीसे जीवन के सभी क्षेत्र में प्रगति होगी । जब कभी कोई जरूरत हो तो निःसंकोच लिखना विशेष श्री प्रभु कृपा । सभी प्रेमियों को और शान्तिभाई को खास कर मेरा श्री राम जय राम जय जय रा । आज महुवा जा रहा हूँ, देवदत्त और दोनों भगत आनन्द में है ।

प्रति प्रविण कुमार थानकी पोरबंदर

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय वत्स प्रविण !

गांव राणीप अखंड यज्ञ
साबरमती, अहमदाबाद

दिनांक २२-१२-६७

आशीर्वाद ।

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । बहुत दिनों के बाद पत्र लिखा रहा हूँ इसका क्या कारण ? समझ नही पड़ती । शायद मेरी या तुम्हारी किसी

के भाव में कुछ शीथिलता होगी या स्वाभाविक प्रमाद होगा ? कुछ भी हो जीव की वृत्ति का हमेशा ओक जैसा रहना सम्भव भी नहीं, कारण कि प्रकृति तो स्वयं स्वभावतः परिवर्तनशील है ही साथ ही साथ भौतिक वातावरण के साथ भी उसका अभद्य सम्बन्ध है । प्रेम में संयोग इतना अच्छा स्थान नहीं रखता जितना कि विप्रयोग (वियोग) विरहाग्नि प्रेमी प्रेमास्पद के अन्तरायरूप से अन्तर में छिपी हुई दुसंस्कारो एवं मलिनताओं को अनायास ही विदग्ध कर देती है और दोनों को सर्वासोण निर्मणलता प्राप्त करा कर ओक बना देती है । देह से भिन्न किन्तु देही से अभिन्न । द्वैत-द्वन्द को मिटाकर अद्वैत निर्द्वन्द बना देती है । जब तक यह प्रक्रिया किसी व्यक्ति विशेष, पदार्थ विशेष या स्थान विशेष से सम्बन्धित रहती है, तब तक इसे साधना, उपासना या आराधना कहते हैं जब यही आत्मा परमात्मा से जूट जाती है, तब इसे सिद्धि या सच्ची उपलब्धि कहते हैं । उस समय परमात्मा का सनातन अंश माया में आवद्ध चेतन-जीव जीव न रहकर स्वयं शिव बन जाता है और उस समय सर्वथा निर्द्वन्द निर्विकार आनन्द सागर में निमग्न रहता है । इसी का नाम जीवन जन्म का साफल्य सार्थक्य है । इस अनुपम स्थिति की उपलब्धि का साधन और सिद्धि भी ओक मात्र प्रेम है जिसका स्वरूप है सबलता और छलहीनता बदलती रहती है । भजन करना, सुखी रहना, सभी प्रेमियों तथा अपने कुटुम्बीयों को मेरा यथायोग्य सह जय श्री राम । यहाँ का अखंड बहुत अच्छी तरह चल रहा है यू. पी. के भइया लोगों का खूब सहयोग है दो-दो घन्टे पर मंडल बदलती रहती है भजन करना सुखी रहना सभी प्रेमियों तथा अपनी कुटुम्बीयों को यथायोग्य सह जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय वत्स प्रविण !

श्री हनुमानजी का मंदिर,
राणीप, साबरमती, अहमदाबाद

आशीर्वाद । दिनांक ९-८-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र मिला था किन्तु प्रमादवशात् यथा समय पत्रोत्तर नहीं भेजा गया साथ ही यह भी विचार आया कि तुम्हारी परीक्षा का समय सन्निकट आता जा रहा है तो पत्र लिख-लिख कर कहाँ तुम्हे हैरान करूँ, जब प्रेम का उभाड़ आया तो देख लिया "यार का तस्वीर हृदय के आईन में" यो तो तुम्हारा स्मरण आया ही करता है, खास करके जब दादर की खाज बढ़ती है और B Tex का आयोजन करना पड़ता है तो तुम्हारी विशेष स्मृति आती है कारण कि यही तो तुम्हारी गुप्त सेवा थी । श्री अखंड यज्ञ बहुत सुंदर ढंग से चल रह है गुजरात के भक्तों के स्वार्थपरता के कारण गुजरात का प्रचार शिथिल होने वाला था किन्तु श्री प्रभु ने अेक अेसा भक्त पैदा किया कि जो गुजरात में खास करके अहमदाबाद में भगवन्नाम का प्रचार कायम ही रखेगा अेसा प्रतीत होता है यहाँ की व्यवस्था करनेवाला कमला शंकर मिश्र को दूसरा अपना रामजी भाई समझ लों । यहाँ यू.पी.सी.पी. विहार के भइया लोगों का खूब प्रभाव है और उन लोगों का व्यवस्थित अनेकों भजन मंडलिया भी है । यहाँ उन्हीं लोगों के सहयोग से चल रहा है इधर अखंड रखने से आजू बाजू में खास करके रेलवे कर्मचारियों, मिल कर्मचारी तथा जेल कर्मचारियों पर अच्छा प्रभाव पड़ा है । सभी प्रेमियों को तथा अपने माता पिता आदि को, बाल गोपालों को यथायोग्य सह श्री राम जय राम जय जय राम । भजन करते कर्त्तव्यपरायण रहना ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय जयन्ती !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है । देकुली का काम पूरा हो
गया । तालाब गंगासागर की तरह निर्मल जल से लबालब भर गया है । उसके
भीन्डों पर चारों तरफ हरी-हरी घास फैल गई । फूल पतियाँ लग गई है ।
दृश्य अत्यन्त ही मनोरम बन गया है । वहाँ श्री गुरुपूर्णिमा का महोत्सव,
श्रमयज्ञ, जपज्ञ की पूर्णाहुति कर, अषाढ पूर्णिमा के बाद उसके आस पास के
गावों में अखंड चलता रहा, तीन चार दिनों से पताही आ गया हूँ जहाँ श्री
जन्माष्टमी का महोत्सव मनाया गया और आगामी सोमवार को सराठा जाने
का विचार है जहाँ पर श्री गुरु महाराज की पुनित तिथि मनाई जायेगी । उसके
बाद जैसा प्रोग्राम होगा, वैसा लिखूँगा । वेट मंत्र मंदिर के बारे में मैंने
व्यवस्थापक को बहुत कठोर शब्दों में लिखा था और जवाब भी संतोषजनक
आया किन्तु न जाने वस्तु स्थिति क्या है ? उसने कुछ सुधार किया या
नहीं ? केवल मीठी-मीठी बातों में ही जवाब दे दिया । वार्घेरिया को भी लिखा
था लेकिन उसने सिर्फ इतना ही लिखा कि व्यवस्थापक को मिलकर बात चीत
करूँगा, किन्तु न जाने क्या किया ? क्या नहीं ? श्री प्रभु की लीला भी विचित्र
है न जाने मैं जितना ही निवृत्त होना चाहता हूँ उतना ही कही न कही से
कोई न कोई आकर चिपक ही जाता है । बिना किसी सूचना के ही शशीकान्त
और अवधूत पताही में पहुँच गये हैं । अब्र आगे भगवान जाने । अवधूत तो
अब कथा वाचक हो गया है, भाषण करता है किन्तु बिहार में शायद इसकी
दाल गलने वाली नहीं सुना इस साल उधर बारिस नहीं हुई है । सो बात
क्या है ; घनश्याम पंडित ने लिखा था कि महाजन बाड़ी का सुधार हो गया
है और कीर्तन भजन के रूप में परिशात हो गया है । सो भी कोई खबर

नहीं कि सच्ची बात क्या है ? श्री जन्माष्टमी का महोत्सव बड़े समारोह से मनाया गया होगा । मेरा अेसा सौभाग्य नहीं था कि अेसे अवसर पर उपस्थित हो कर वहाँ का दिव्य लाभ ले सकू । श्री प्रभु दर्शन तथा वहाँ के प्रेमियों के दर्शनों से भी वंचित रहा । ललीता माँ, धनलक्ष्मीबेन तथा अन्य सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री जय कहना और वहाँ का नूतन समाचार लिखना । सात दिवस का अखंड होगा । पहले पाँच दिवस का अखंड होता था अब सात दिवस का होगा । सभी को सूचना कर देना । श्री महाराज की तिथि सराठा में ही होगी । इसबार एकादशी के बदले श्री राधाष्टमी से २७-८-६३ से ३-९-६३ तक । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय जयन्तीलाल ! रीलीफ रोड,

आशीर्वाद ! अहमदाबाद

पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । अखंड यज्ञ का प्रवाह चालू ही है । अब सिर्फ चार-पाँच दिवस का यहाँ प्रोग्राम है उसके बाद बम्बई वालों का अति आग्रह के कारण से बम्बई जाने का विचार था किन्तु गाड़ी में भीड़भाड बहुत होने से और समय के अभाव से भी अब यहाँ से सीधे पोरबंदर का ही विचार रखा है आगे श्री प्रभु इच्छा । छगनलाल मजाती का पूर्णाहुति के लिये पत्र आया है जिसमें लिखा है कि मैंने किसी स्वार्थ से अखंड नहीं किया है और न मैंने अखंड के लिये किसी को कहा ही है यह तो सब राम नाम का प्रताप है । जो चल रहा है अेसे मनुष्य को क्या कहा जाए कि इतने इतने दिनों तक भगवान का नाम जपने से भी अन्तःकरण की मलीनता कुटिलता नही गई क्या कहूँ ? अेसे लोगों

के अखंड करने से क्या समाज में किसी प्रकार भी नाम निष्ठा बढ़ सकती है ? कदापि नहीं । बल्कि लोगों के उपर इसकी उल्टी छाप पड़ेगी । तामरीवाला को देखो ? रात दिन साथ रहता था, कैसे बाते करता था किन्तु जैसा बाहर से उसका शरीर काला है वैसे भीतर से उसका हृदय भी कलुषित है कि "श्री राम जय राम जय जय राम" का इतना प्रभाव प्रचार प्रसार देखकर भी उसका दुराग्रह नहीं गया और सीताराम की धुन करके अपना महत्त्व बढ़ाने के लिये इधर गोमती किनारे ढ्रोग करके बैठा है । ठ़ीक अपना तो किसी से बैर विरोध है नहीं । जो श्री द्वारकाधीश श्री प्रभु की इच्छा प्रेरणा कृपा होगी वही होगा । नहीं किसी की ईर्ष्या करने से अपना कुछ बिगड़ने वाला है और न किसी की सहानुभूति हमदर्दी दिखाने से कुछ बनने वाला है यहाँ तो "लोक परलोक रघुनाथ ही के हाथ सब भारी है, भरोसो "तुलसी" को अेक नाम को ।" श्री नाम महाराज की कृपा करूणा से ही सब कुछ हो रहा है, हुआ है और जो कुछ भी आगे होगा यह सब अेक मात्र उन्ही का प्रभाव प्रताप है नहीं तो मेरी तो स्थिति हैं तो सदा खर को असवार तिहारो ही नाम गयंद चढ़ायो । बस ! कोई कुछ भी करे अपने को सदाश्री राम नाम महाराज - का अटूट आश्रय लिये रहना चाहिए इसी में अपना परम कल्याण है । पोरबंदर में अेकम और बीज तदनुसार शनिवार, रविवार ता. ३१-५-६६ और २२-५-६६ को पूर्णाहुति समारोह के लिये रामजी ने निश्चय किया है । और छगनलालने जेठ सुदी-९ ता. २८-५-६६ को पूर्णाहुति के लिये लिखा है । कोई खास नवीनता नहीं है जामपुरा हलेली के सबको मेरा यथायोग्य सह "श्री राम जय राम जय जय राम" कहना । आलस्य के कारण पत्र नही लिख सका हूँ तो मन में कुछ दूसरा नही समझना । माँ । को जो मुझ पर प्रेम है तो मैं वाणी के द्वारा वर्णन कर ही नहीं सकता । वाणी का विषय भी नही है अगर वाणा से कुछ कहा भी जाए तो मेरी समझ में वाणी भी कलंकित होगी । बस ! श्री प्रभु के नाते हम सब सदा अेक हैं और उनकी कृपा, करुणा,

दया से सदा अेक रहेंगे - अपने सभी के शरराय तो वही अेक है चाहे राम हो चाहे कृष्ण, माधव ही या मधुसुदन । बस ! श्री प्रभू नाम रटे-रटावे अपना जीवन जन्म सफल सार्थक बनावे । यही हार्दिक कामना सह श्री प्रभु प्रार्थना । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

धर्ममयी, प्रेममयी, स्नेहमयी, हँसमुख, मदाकिनी, प्रमोदिनी !

पताही मुजफ्फरपुर
बेलसन्ड

शुभाशीर्वाद !

दिनांक : २०-९-६२

तुम्हार पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । तुम लोगों के स्नेह, सेवा तथा भक्तिभाव का, श्रद्धानिष्ठा का वर्णान करने की ताकत न मेरी वाणी में है न मेरी लेखनी में ही है । बस ! मौन रहकर ही उसका आस्वादन करता रहता हूँ । तुम लोग तो अभी नादान हो, तुम्हारा बच्चपन है किन्तु माँ तथा धनलक्ष्मीबेन के निस्वार्थ स्नेह का तो स्मरण मात्र से हृदय द्रवीभूत हो जाता है, नेत्रों में अश्रु की झड़ी लग जाती है । शरीर को जन्म देनेवाली माता ने भी इतना स्नेह नहीं किया और न उन्हें करने का मौका ही श्री प्रभुने दिया किन्तु न जाने स्वयं प्रभु ही ललीता, धनलक्ष्मीबेन के रूप में मेरी सार संम्भार न करते हो अेसा प्रतीत होता है । पत्र लिखूँ कि न लिखूँ किन्तु हृदय में तुम्हारे भाव भक्ति, स्नेह सेवा का लेख नित्य लिखता रहता हूँ लिखता क्या रहता हूँ ? बस ! वह तो इस बार लिखा जा चुका है कि उसका विस्मरणा तो अेक श्री प्रभु के पादपदमों की नित्य प्राप्ति ही करा सकती है अन्यथा असम्भव है । हम लोग श्री प्रभु नाम की दिव्य डोरी पकड़कर, उनके दिव्य धाम में पहुँच कर अपना पराया भेद भगा कर ही चैन लेगें, और जब श्री

प्रभु पतित पावन, अधमउद्धारण, अशरणशरशा, करूणावरुणालय, दीनजनशरणालय भक्तवत्सल, करुणानिधान है ही तो वे हमें ठुकरा भी किस तरह सकते हैं बस ! कही भी रहो, किसी भी परिस्थिति में श्री प्रभु चिन्तन का तार नहीं तोड़ना बल्कि जागरूक सतत जोड़े रहने का प्रयास करते रहना। प्रभु सत्स्वरूप हैं और हमारे भीतर सच्चाई है तो वे अवश्य ही मिलेंगे, कृतार्थ करेंगे, भूले भटके को अवश्य अपनायेंगे, इसमें जरा भी शक नही, संशय नही। श्री गुरु महाराज की तिथि विलक्षशा रूप से मनाई गई। मातुश्री की तबियत ठीक है। अभी तक तो आने के समय जो किया था उसके बाद अभी तक पुनः दर्शन नही कर पाया हूँ। वर्षा, बाढ़ बहुत थी किन्तु छतौनो में कोई नुकसान नहीं है सब लोग अच्छे हैं फसल भी अच्छी है। धनलक्ष्मीबेन तथा अन्य सभी प्रेमियों को यथायोग्य विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय जयन्ती !

श्री द्वारकाधीशो विजयते

पताही

शुभाशीर्वाद ! दिनांक : १-१०-६२

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है। आज १९-९-६२ का लिखा हुआ तुम्हारा पत्र मिला। श्री पूज्य गुरुदेव की तिथि का उत्सव बड़े समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। उसकी सारी व्यवस्था और खर्च भी अकेला श्री वैकुन्ठ बाबू ने ही किया। बाहर से जो पैसा आया उसका अभी तक वैकुन्ठ बाबू ने कहा कि यज्ञ में तो सिर्फ मेरा ही खर्च होगा और पैसो का जहाँ इच्छा हो आप उपयोग कर दिजिये। दरिद्र नारायण का मंडारा भी किया था। तिथि के बाद १० दिन के लिए मुजफ्फरपुर गया था अभी राधेबाबू के यहाँ सात दिवस का अखंड हुआ था। वहाँ से मेरा विचार वैधनाथ धाम में नवरात्रि करने का था

किन्तु वैकुन्ठ फिर आये और बहुत हठ करके नवरात्रि भर के लिए फिर उन्हीं के यहाँ ९ दिवस का अखंड चल रहा है । इसके बाद नौ नौ दिवस का अखंड सर्वत्र प्रचार होगा । लोगों को लगन बहुत है । बहुत से असे बड़े बड़े आदमी तैयार हो रहे हैं कि अगर उनके इलाके में प्रचार होगा तो वर्षों लग जाएगा । इसबार मुजफ्फरपुर जिला के अलावा दरभंगा, चम्पारण (मोतीहारी) जिले के लोग भी तैयार हैं आशा है विजयादशमी के बाद श्री प्रभु श्री हनुमन्त लालजी तथा पूज्य श्री गुरुदेव की कृपा से इसबार व्यापक प्रचार होगा इसके पहले भी मैंने अेक पत्र जामपुरा हवेली के पते से भेजा था, जिसमें तुम्हारा भी पत्र था । विष्णुयज्ञ की विभूति तथा जन्माष्टमी का प्रसाद मिलते ही पत्रोत्तर दिया था, न मालूम क्यों नहीं मिला । बाबू हनुमान को मेरा खूब खूब आशीर्वाद कहना श्री प्रभु कृपा से उसका चित्त अेसे भगवत सेवा परायणा बना रहे । हरिदास और नरसी तो बिलकूल अनजान, अपरिचित सा ही बन गया है - क्यों न हो अब बड़ा आदमी जो हो गया है । पू. ललीता माँ, धनलक्ष्मीबेन, हँसमुख, मन्दाकिनी, प्रेमोदिनी, राजबाई सबको मेरा यथायोग्य कहना सभी धुन प्रेमियों को मेरा जय श्री राम कहना । माताजी, वल्लभदास, मनसुख, गिरधारी, प्रवीण, नट्टू, मोहनजी सेठ, बाबूभाई पूजारी, वगैरह को भी मेरा जय श्रीराम। ओखा, मीठा, वेट के सभी नांमानुरागीयों को मेरा जय श्री राम । हरिदास, नरसी, प्रेमकुर तथा उनके परिवार सभी बाल गोपाल को मेरा यथा योग्य श्री द्वारकाधीश प्रभु के दिव्य चरणारविन्दो में कोटि-कोटि साष्टांग दडवत् प्रणाम । श्री राम जय राम जय जय राम । मंगला में बोलनें वाले प्रमियों को तथा विशेषकर लाला को मेरा जय श्री राम कहना । अभी मैं उधर नहीं आसकूंगा, अेसा लगता है कारण कि श्री प्रभु नाम का प्रचार खूब होने वाला है ऐसा प्रतीत होता है । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

धर्म एवं स्नेहमयी मन्दाकिनी
तथा प्रमोदिनी ?

सराठा

आशीर्वाद ! दिनांक : १९-११-६२

तुम्हारा पत्र नूतन वर्ष के उपलक्ष में प्राप्त हुआ था किन्तु समयाभाव के कारण पत्रोत्तर द्वारा नूतनवर्ष का मंगल कामना न भेंज सका, किन्तु मानसिक तथा हार्दिक मंगल कामना तो नित्य ही किया करता हूँ तुम लोगों के किये हुए सेवाभाव को किस प्रकार भूलाया जा सकता है । न तो आज तक किसी ने एेसी सेवा की है न किसी के करने की सम्भावना ही दिखती है, **तन की, धन की सेवा तो अनेकों व्यक्ति कर सकते हैं । किन्तु आत्मा की, सत्य की सेवा तो कोई विरला ही कर सकता है किन्तु तुम लोगों ने तो अकिंचन होकर भी तन, धन, मन की कौन कहे, श्री प्रभु नाम स्मरण द्वारा आत्मा की भी सम्यक् सेवा की है ।** जिसका बदला देने में तो स्वयं श्री प्रभु भी असमर्थ हैं । माँ, भाभी की तो बात ही क्या करु ? उनके उपकार के लिए, प्रेमभाव के लिए, वाणी सर्वथा मूक है । लेखनी तो जड़ है ही, कुछ लिखने के प्रयास करते वखत मैं भी जड़वत हो जाता हूँ । यहाँ श्री प्रभु कृपा से अखंड नाम का प्रचार गावों गावों वड़े प्रेम तथा उत्साह के साथ हो रहा है । नवीनता विशेषता यह है कि हाई स्कूल कालेजों तथा अन्यान्य आज के पढ़े लिखे समाज में विशेष अभिरुचि पैदा हो रही है । धनमानी व्यक्ति भी खूब भाग ले रहे हैं । पूजनीया मातु श्री की तबियत ठीक है एेसा सुनता हूँ । उनके पुनीत दर्शन तथा चरणास्पर्श का तो एेक ही बार आते के साथ ही जो अवसर प्राप्त हुआ वही ? अभी तक पुनः एेसा शुभावसर प्राप्त नही हो सका है । अन्नकूट का प्रसाद पताही आ गया है एेसा कल्ह समाचार प्राप्त हुआ है कारण कि "रोज रोज बदले मुकाम" और सब आनन्द मंगल है । माँ, भाभी, हँसमुख

को मेरा यथा योग्य कहना । सभी प्रेमियों, भाई, बहनों को मेरा जय श्री राम।
विशेष श्री प्रभु कृपा ।

शुभेच्छु
प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय जयन्ती !

आशीर्वाद !

तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । श्री प्रभुलालजी का प्रसाद भी प्राप्त हुआ । ललीता माँ, धनलक्ष्मीबेन का ऋण तो बढ़ता ही जाता है और मेरे पास उनसे मुक्त होने का कोई साधन सामग्री भी नहीं, कारण कि जहाँ निष्काम प्रेम है वहाँ स्वयं भगवान भी लाचार हैं । जब कोई कामना होवे तो जीव किसी प्रकार उस कामना की पूर्ति कर छुट्टी पा लेवे किन्तु जहाँ कोई कामना-वासना ही नहीं, वहाँ तो सीर्फ अपनी लाचारी प्रगट करने का और है ही क्या ? श्रीमदभागवत का गोपी प्रेम क्या है ? परम निष्कामता, सच्ची सेवा, परमोत्कृष्ट प्रेम का अलौकिक आदर्श । जिसका पुरस्कार, परिणाम क्या है ? श्री प्रभु की वेवशी-लाचारी-ऋणामुक्त होने की असमर्थता सदैव ऋणी ऋणी रहने की प्रतिज्ञा ! अपने सहृदयता से उऋणा करे तो भले ही ! रास पंचाध्यायी दसमस्कंध ३३वाँ अध्याय :- न पारंयेऽहं निरवद्यसंयुजां "श्री भगवान की प्रतिज्ञा" । साथ साथ जैसा संग वैसा रंग वाली सच्चा कहावत अब तुम्हारे साथ भी चरितार्थ हो रही है । तुम्हारा भी सम्बन्ध तो मेरे साथ अकारण ही है । मेरे द्वारा तुम्हारा उपकार तो कुछ भी बन नहीं पाया है फिर भी बिहार से लेकर यहाँ तक की तुम्हारी दौड़ा दौड़ी, लागणी, त्यागभावना क्या प्रदर्शित करती है ख़ैर ! जो भी हो श्री प्रभु तुम लोगों की श्रद्धा, निष्ठा, भक्ति, प्रेम की उत्तरोतर वृद्धि करावे तथा श्री चरणों में लगावे,

यही अभ्यर्थना । और तो कर ही क्या सकता हूँ ? "यहाँ तो हारे को हरिनाम" वाली स्थिति है । मेरी जरूरत अब क्या है ? प्रभु तुम लोगों को खूब बल दे दिया है । गैर हाजिरी में २२ मास तो अेक मास क्या बड़ी बात है । श्री अखंड यज्ञ यहाँ श्री पूज्यपाद महाराज श्री की तिथि तक चालू रहने वाला है श्री सिद्धनाथ में अखंड करना हो तो जरूर करो । ललिता माँ, धन लक्ष्मीबेन, बच्चियों को सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय जयन्ती !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है । यहाँ का तालाब जीर्णोद्धार का काम जो पहले असम्भव सा मालूम होता था श्री प्रभु कृपा से विलक्षणा ढंग से सम्पन्न हो गया है । जैसा जमाना है उसके मुताबिक जितने भी यहाँ के भी पाखंडी ढोगी लोग उपर से बहुत दिनों से आग्रह करने वाले थे, वे सबके सब निकम्में निकले किन्तु जिसकी प्रेरणा थी उसी की कृपा तथा उनके कृपापात्र जीवों के द्वारा विलक्षणा ढ्ग से बहुत अल्प समय में काम पूर्ण हो गया । लगभग २०००० (बीस हजार) आदमी राजा, रंक, फकीर, मूर्ख, पंडीत, सत्ताधारी, अधिकारी लोग भी इस तालाब की मिट्टी निकाल गये हैं । सरकारी अधिकारियों पर भी काफी असर पड़ा है । कमिश्नर, कलेक्टर तक मिट्टी फेंकते थे । श्री शंकरजी की कृपा से जप यज्ञ और श्रमयज्ञ दोनों १९-६-६३ से अखंड चल रहा है जिसकी पूर्णाहुति ५-७-६३ और ६-७-६३ तद्नुसार चतुर्दशी और गुरुपूर्णिमा को होगी जिसकी सूचना तार द्वारा हरिदास को दी गई है और सबों के लिए आमंत्रण पत्रिकायें भी भेजी गई है । वेट मंत्र मंदिर के विषय

में हरिदास को भी पत्र लिखा है और व्यवस्थापक को लिख रहा हूँ । मंदिर के सफलता का समाचार तार द्वारा मिला और पत्र द्वारा यथा समय उत्तर भी दे दिया अभी तक तो सख्त परिश्रम करना पड़ता था । सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम । ललीता माँ, धनलक्ष्मीबेन वगैरह को यथायोग्य । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय जयन्ती !

बडौदा संतराम,

मेडिकल कालेज

दिनांक २६-८-६४

आशीर्वाद !

तुम्हारा २७-८-६४ का लिखा हुआ पत्र आज मिला । समाचार मालूम हुआ। अहमदाबाद में काफी आनन्द हुआ । वहाँ भी महीना दिवस से बरसात पड़ी नहीं थी किन्तु जैसे १०.३० बजे अखंड प्रारम्भ हुआ कि मूसलाधार वर्षा और जब तक अखंड चला तब तक बरसाद चालू ही रहा, सीर्फ पूर्णाहुति के दिन संध्या समय से बन्द हो गई । साबरमती नदी में भी पूर (वाढ़) खूब आयी। बड़ौदा के लिए तो जो स्वप्न में भी कल्पना नहीं थी ऐसी लीला श्री प्रभु की तथा **श्री नाम महाराज** की हो गई है । यहाँ का प्रसिद्ध भगत, राम भगत जिससे अपना कोई परिचय भी नहीं था किन्तु यहाँ आने पर जो उसने स्वागत किया, भाव दर्शाया उसका वर्णन वाणी द्वारा कठिन प्रतीत होता है । अखंड प्रारम्भ करने के पहेले मोटर संगार कर जहाँ अपना उतारा है वहाँ से नगर कीर्तन के रुपमें सारा गाँव फिरा कर अखंड वाली जगह में ले गये । मंडप भी विलक्षण बनाया है । भगवान की छबि भी अनुपम शोभावाली और मंदिर जिसने भगवान विराजमान है सब चांदी का है । मानसों हजारों

के तायाडाद में एकत्रित होते हैं । विशेषता यह है कि जो कोई आता है रामी वगैर कहे आप ही आप नाम जपते रहते है । यह सब रामभगत का संस्कार है । भगत ऐसा प्रभावित हो गया है कि करताल लेकर नाचता ही रहता है । अखंड शुरु करने के पहले थोडा मेरा नाम जप यज्ञ पर सत्संग चल रहा था, उसी समय डोंगरे शास्त्रीजी भी आ गये और पन्द्रह मिनट के लिए आये थे किन्तु १॥ कलाक (डेढ़ घन्टे) घटे बैठे रहे । मेरा जब जय यज्ञ पर सत्संग पूरा हुआ तो मैने कहा आप जय यज़्ञ उपर कुछ बोलो, तब शास्त्रीजी ने कहा "महाराज श्री की वचनामृतवाणी सुनने के बाद मुझे कुछ कहने का रहा नहीं ।" मै तो मेरा अनुभव कहता हूँ कि सीर्फ इनके चरण में बैठे तो भी जीवन सुधऱ जाए । मैने तो इनके शरीर में श्री हनुमानजी का दर्शन हुआ है और यहाँ लानेका तो बहुत दिनों से मेरा संकल्प था किन्तु निमित श्री प्रभु ने रामभगत को बनाया । इस समय शास्त्रीजी ने अपने हृदय का भाव खोल दिया । भजन जोरदार चलता है । बड़ौदा जैसा नई जगह में कहीं भी अेसा प्रभाव नहीं देखा । सोमवार ३१-८-६८ को पूर्णाहूति है । उसके बाद डाकोरजी और वहाँ से दो तीन जगहों के प्रोग्राम के लिये राम भगत कहते हैं – (१) कपडवञ्ज (२) डबोई। अभी तक निश्चय नही किया है । पूर्णाहुति बाद जैसा प्रोग्राम होगा, वैसा लिखूँगा । मेरा विचार तो इस बार तिथि भी श्री डाकोरजी में करने का है । अब रणछोड़राय की मर्जी । श्री प्रभु की लीला विचित्र है । मनु (चन्द्रिका) भरुच से आज आई थी और शाम को चली गई । सब आनन्द में हैं । मुझे चलने के लिए कहती थी किन्तु अभी पूर्णाहुति तक तो निकलना असम्भव लगता है और बाद में डाकोर वगैरह का प्रोग्राम है । समय मिलेगा तो जाऊँगा नहीं तो दरश-परश तो हो ही गया है । ललीता मां, धनलक्ष्मीबेन, हँसमुख, मन्दाकिनी, प्रमोदनी वगरह को मेरा यथायोग्य तथा मनु का सब समाचार कहना। धुन बहुत सुन्दर ढंग से चल रहा है। शान्तिलाल अहमदाबाद से चला गया । अहमदाबाद से बडौदा का वातावरण बहुत पवित्र

तथा संस्कार पूर्ण है । न मालूम श्री प्रभु कब क्या करते कराते हैं । उनकी कृपा, करुण, लीला का पार पाना जीव के लिये तो सर्वथा अगम्मय ही है । वे जब कृपा करे तभी जीव को कुछ समझ पड़े । अपने लिये तो श्री नाम महाराज का रट लगाये रखना यही अेक मात्र साधन और यही अेक मात्र सिद्धि है । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय जयन्ती !

आशीर्वाद !

तुम्हारा २६-२-६५ का लिखा हुआ पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ। अभी वृन्दावन जाने के वाद ही वहाँ की परिस्थिति का ठीक ठीक पता चलेगा इसलिए अभी किसी को भी ले जाना ठीक नहीं लगता । मनसुख गिरधारी के लिए ही तुमको लिखा था कि कही ये लोग तैयार हो जाएंगे तो यहाँ से तो इनका टीकीट प्रबन्ध कोई कर नहीं सकेगा तो अगर इन लोगो को जाना होगा तो यहाँ से टीकट ले लिया जायेगा । वेचरदास आ गया है और वह साथ जाने को तैयार है । ललित को यहाँ अभी भेजने की जरुरत नही है । धनलक्ष्मी बेन को भी वहाँ से जाकर पत्र लिखूँगा फिर जैसा विचार होवे वैसा करे । जोशी भी जानेवाला है । प्रभुदत्तजी खास करके लिखा है कि कीर्तन कार न आवे तो कोई बात नहीं, तुम अकेले आओ और किसी फोटो ग्राफर को लेते आओ । मैंने स्पष्ट लिख दिया था कि मेरे पास पैसे नहीं हैं और न रखता हूँ न मांगता हूँ फिर भी उनका पैसा तो नहीं आया, इतना लिखा कि जितने पैसे की जरुरत हो उतना लिखो तो भेज दूँ । उसके पत्रोत्तर मैने

लिख दिया है कि जब मैं गृहस्थों को भी पैसे के लिए नहीं कहता तो आप को क्या लिखू ? श्री प्रभु कृपा से सब हो जायेगा । मै आ जाऊगा । मैने लिखा है शायद द्वारका के दो तीन ब्राह्मण मेरे साथ आवे । अभी बिहार मे रीगा स्टेशन के पास जहाँ २५वर्ष अखंड का संकल्प है और पाँच वर्ष चलते भी हो गया । वहाँ एक बड़ा बारी आयोजन किया था । ११-२-६५ से २०-२-६५ तक प्रोग्राम था । नवकुन्ज अखंड(नवकुज एटले नव जुदा-जुदा कुंज) ऐसे ८१ नवकुंज था जिस में २५००० आदमी एक साथ धुन करते थे । धुन करने के लिये लगभग २ा अढाई लाख का लकड़े और घास का तीन मंजीला बंगला बनवाया गया था, उससे १०० गज उत्तर दक्षिण रुद्र यज्ञ और विष्णु यज्ञ का भी आयोजन था किन्तु पाँच दिन बाद १३-२-६५ को अचानक आग लग गई, बहुत से कीर्तन वाले जल गये, कुद-कुद के भागने से बहुत घायल हो गये । सारा यज्ञ विध्वन्स हो गया । चन्द्रेश्वर बाबू का अेसा पत्र आया है ब्रह्मचारी जी के यहाँ भी बहुत लम्बा चौडा प्रोग्राम है वहाँ रुबरु गये और वगैर व्यवस्था के कोई खबर न पड़े । घास की झोपडी और टेन्ट लगाकर हजारों आदमी मेला के रुप में रहने वाले हैं । अेसा खास आग्रह किया है तो गन्दगी और भीड़ भाड़ तो होगा ही, साथ गरमी भी आ गई जिससे रोग वगैरह का भी भय है । अतः वहाँ की परिस्थिति से परिचित होकर पत्र लिखूँगा, तभी कोई व्यक्ति आने का विचार करना । अखंड तो मेरी समझ मे गौन ही रहेगा । जो खास आदमी अखंड के लिये नियुक्त रहेगे, वे ही अखंड करेगे बाकी तो कथा में, सम्मेलन में ही रहेगे । मेरा प्रबन्ध कहाँ हो जाएगा । हरिदास को भी मालूम है । जोशी, काकू सबको खबर है । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय जयन्ती !

शिवहर

शुभाशीर्वाद !

दिनांक ५-४-६३

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है। श्री प्रभुनाम का प्रचार भी उन्हीं की कृपा, प्रेरणा तथा सहायता से ठीक -ठीक चल रहा है। मुजफ्फरपुर बालूघाट कुटिया के बाद मै पुनः गावो में आ गया हूँ और काफी उत्साह के साथ २२ दिवस तक अखंड एक ही ग्राम खैरवा-दर्प में चला। श्री रामनवमी का महोत्सव भी वही पर बड़े आनन्द के साथ मनाया गया। कल्ह वहाँ से शिवहर आ गया हूँ और यही ९ दिवस का अखंड है जिसकी पूर्णाहूति १३-४-६३ को होगी और उसके बाद ही १४-४-६३ को यहाँ से १०० मील (पचास गाँव) पर एक रामनगर ग्राम में प्रोग्राम है। वहाँ का अभी निश्चित नहीं है कि कितने दिनो तक अखंड चलेगा, कारण वह एक बिलकुल नई जगह है, जहाँ के लोग अपने से खास परिचित नही है। और है भी नेपाल राज्य के सरहद पर। श्री जनकपुर धाम की यात्रा तो होली के दिन ही हो गई। वही श्री संकटमोचन हनुमानजी में डेरा था। तुम्हारी भावनाभक्ति, निष्ठापूर्वक भेजी हुई सभी पूजन की सामाग्रियाँ श्री हनुमन्तलालजी की सेवा में विधिपूर्वक लगा दी गई। प्रसाद भी बाबूभाई ले गया है। माताजी (छगनलाल) मालदेव, चन्दु, बाबूभाई(ओखा) और लक्ष्मीदास समय पर आनन्द पूर्वक पहुँच गये थे और मुजफ्फरपुर से पताही तक बडे आनन्द उमंग से साथ रहे फिर वहाँ से सब लोग खैरवा आये और दो दिवस रहकर माताजी, मालदेव बम्बई के लिए और लक्ष्मीदास कलकत्ता के लिऐ रवाना हुए। बाबू और चन्दु हमारे पास ही रह गये थे और बार-बार पूछने पर भी कहते थे कि अभी नहीं जाना है अभी आप के पास ही रहूँगा। बाबू से तो बार-बार पूछने पर भी कहता था कि मैं तो सभी चले जायेगें तो भी मास दो मास आप के साथ ही रहूँगा किन्तु

लक्ष्मीदास के चले जाने पर तो वह पागल सा बन गया और कहने लगा कि मेरा मन एक क्षण भी अब नहीं लगता है साथ ही कुछ मन ही व्याकुलता के कारण और कुछ जलवायु के कारण एक रोज कुछ अस्वस्थ जैसा भी हो गया किन्तु खास बिमारी उसके भाई बन्धु की जुदाई ही थी जो खैरवा छोड़कर शिवहर आधा गाव पहुँचते ही बिमारी जाती रही । चन्दु जाना नहीं चाहता था किन्तु अकेला और अनजान होने के कारण बाबू उसे कलकत्ता तक ले गया, वहाँ लक्ष्मीदास से भेट हो गई पीछे चन्दु लौटकर चला आया और अभी मेरे पास ही है । बड़े आनन्द में है जब उसकी इच्छा होगी तब जाएगा । बाबू और लक्ष्मीदास जगन्नाथजी होकर शायद अयोध्या, मथुरा, वृन्दावन, हरिद्वार, श्री नाथजी वगैरह यात्रा करते वहाँ लौटेगा । हमारे साथ लोगो का प्रेम वैसा ही जैसा कि मेरे इस देश में कहावत है "**शिधरी का रोजगार, पशुपतिनाथ का दर्शन**" नेपाल में पशुपतिनाथ महादेव है उस राज्य में शिवरात्रि के सिवाय दूसरे दिन जाने पर पासपोर्ट लेना पड़ता है जिसमें बहुत कठिनाई होती है लेकिन अगर कोई सुखी मछली बाध ले और कहे कि मछली बेचने जा रहा हूँ तो जाने की छूट मिल जाती है । होता तो है अपने मन का और साथ ही पशुपति नाथ का दर्शन मुफ्त हो जाता है । भाई जगत का सम्बन्ध तो प्रायः अेसा ही है किन्तु सबके लिए तो ऐसी बात नहीं हो सकती। हर नियम में अपवाद भी होता है। बिहार सम्मेलन वाले झूठी दिखावा मेरे साथ भी करते थे कि "चलिए" किन्तु कोई खास निष्ठा नहीं थी और जा भी नहीं सकता था। पू. ललिता माँ, धनलक्ष्मीबेन, हँसमुख, मंदाकिनी, प्रमोदिनी वगैरह सबको यथायोग्य कहना । हरिदास का तो कोई पता ही नहीं । धुन बुलाने वाले लाला को मेरा खास श्री राम जय राम जय जय राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय जयन्ती !

परमहंस आश्रम,

वृन्दावन-मथुरा

जय श्री राम !

दिनांक ३१-३-६५

तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ। तुम्हारा भाव प्रेम का व्यंग भी अति मधुर है। किन्तु क्या करु मैं तो बंदर जैसा हूँ। मदारी जैसे नचावे वैसा नाचना ही पड़ता है। अपना कुछ बल, शक्ति, सत्ता तो है नहीं, जिसके बल पर कुछ कर सकूँ। वह जैसा नाच नचाता है वैसा नाचना पड़ता है। **"नट मर्कट इव सबही नचावत, राम खगेश वेद अस गावत"** मै तो प्रभुदत्तजी के यहाँ गया किन्तु उनके यहाँ के रंग, ढग, उनके यहाँ के कार्यकर्ताओ की तापखाही साथ अनेक सम्मेलन **"अखंड हरिनाम नव कुन्ज महायज्ञ"** की बात तो सही किन्तु प्रधानता और ही की। नौ जगहों नौ कुटिया बनी है उसी में दोचार आदमी जैसे कोई रो रहा हो। ऐसे अखंड चल रहा है जिसमें नेपाल, बिहार, बंगाल, आन्ध्र के लोग ही चला रहे हैं। बाकी तो लीला और सम्मेलन प्रवचन के लिए बहुत बड़ा पंडाल बना है उसी की प्रधानता है। खास कर पैसा और पैसावालों की विशेष कद्र आगत-स्वागत व्यवस्था है या जो इधर के विख्यात, प्रसिद्ध पंडीत या महात्मा हैं उनकी कद्र है मेरे जैसा तो उनकी द्दष्टि मे एक अनजाना जैसा। संयोग से दिल्ली में ही मेरे एक पूर्व परिचित संत मिल गये थे तो मै तो वही से नन्दगाँव की होती देखने के लिये रस्ते में ही उतर गया और बेचरदास और गिरधारी को उनके परमहंस आश्रम में भेज दिया। बाद में प्रभुदत्तजी के आश्रम वंशीवट में बेचरदास गया किन्तु कोई जवाब ही नही देवे फिर उनके पुनित निवास गोलोक धाम में गया तो भी पूरा पता न लगा तो मै स्वंय चलकर गया तो श्री प्रभुदत्तजी जी मिले,

बड़ा प्रेम भी दिखलाया और अेक अेसी कुटिया दिखला दी कि जिसमें कोई रहने की कोई व्यवस्था ही नहीं, जमीन भी एक सरखी नही, घास उपजी हुई, दो दिन बाद कुछ साफ सूफ कराया तो मै रहने को गया किन्तु मेरा मन बिलकुल लगता नही था और बेचरदास बीमार हो गया था । इसलिये मैं वहाँ से चला आया और परमहंस आश्रम में ही हूँ । यहाँ बहुत शान्ति है स्वतंत्रता है, चारों बाजू शौच मैदान जाने की खुली जगह है, तालाब है सब आनन्द है। यो तो वृन्दावन भूमि आनन्द रुप ही है अभी नवरात्रि में यही नौ दिवस का अनुष्ठान करुँगा । बाद में बरसाना, गिरिराज, नन्दगाँव वगैरह जाऊँगा। कमला देवी अपने कुटुम्ब सहित कान्दीवल्ली से आई हुई । सुबह को भिक्षा करने जाता हूँ साँम को भोजन बनाकर भेज देती हैं । गिरधारी दिन को बना लेता है कमला देवी खूब सेवा करती है इसके लिये आई थी किन्तु ब्रह्मचारीजी के यहाँ तो उनके लिए रहना बड़ा कठिन है । तीन माईल गाँव से दूर घोड़ा गाड़ी एक वक्त आठ दस रुपया लेवे। श्री राधावल्लभजी के मंदिर के पास नई गुजराती धर्मशाला में है वहाँ सगवड ठीक है और सब आनन्द है कोई चिन्ता नही करना कोई चीज की जरुरत भी नहीं है बेचरदास बिमार होकर द्वारका चला गया। यही इस मत्यलोक का नियम ही है आया है वह जाएगा ही । चाहे आज जाये या कल्ह । जाना जरुर है अतः इसकेलिये व्याकुल होने की आवश्यकता ? धैय व विवेक रुप श्री प्रभु का स्मरण करना चाहिए । जिससे अपने को भी शान्ति मिले और उस आत्मा को भी । विशेष श्री प्रभु कृपा । ललिता मां, धनलक्ष्मीबेन, हँसमुख, मन्दाकिनी, प्रमोयदनी, राजभाई, शान्तिलाल वल्लभदास, मनसुख, बाबू ललिता, बाबूभाई, पूजारी तथा अन्य सभी-प्रेमी भाई बहनों तथा हरिदास के परिवार को मेरा जय श्री राम।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय जयन्ती !

श्रीरामजी मंदिर,
हाजा पटेल की पोल,
रीलीफ रोड, अहमदाबाद

जय श्री राम !

श्रीरामजी की कृपा से सब आनन्द मंगल है । और आनन्द मंगल होता जा रहा है । जो कभी अपने स्वप्न में भी न आवे, एेसी श्री प्रभु की तथा श्री नाम महाराज की दिव्य लीला दिन प्रतिदिन देखने में आ रही है नहीं तो अहमदाबाद जैसे नगर में इतना भव्य और विशाल नगर कीर्तन। यह सब श्री प्रभु एवं श्री गुरुदेव भगवान् की अहैतुकी कृपा का ही फल है । अखंड का प्रभाव दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है । अभी तक तीन अखंड पूरा हुआ। चौथा कल्ह से प्रारम्भ हुआ है और आगे के लिए मांगनी आ रही है । पहले २० दिवस रहने का बड़ा ही सुन्दर स्वतंत्र विशाल मकान मिल गया था जिसमें सबसे पहला अपना ही निवास हुआ । हजारो रुपये देने पर भी एेसा स्थान मिल नहीं सकता, किन्तु न जाने श्री प्रभु की कृपा पहले से ही सब तैयार रखती है सच उनकी कृपा हो तो जगत में कुछ भी अलभ्य नहीं । यधपि मैं उनकी कृपा प्राप्ति का बिलकुल ही अधिकारी नहीं फिर भी वे तो कृपा निधान ठहरे, दीनबन्धु, दीनज़नशरणालय ही ठहरे । जब कीड़ी से लेकर कुंजर तक उनकी अकारण ही कृपा प्राप्त कर सुखी होते हैं तो मैं तो किसी तरह एक मानव हूँ । सच्चा मानव भले नहीं किन्तु मानव की आकृति तो खरी। जो भी श्री प्रभु को प्रिय है । सच्चितानन्द (शशीकान्त) यहाँ आया था । किन्तु न अपने साथ रहा और न अखंड में ही कुछ भाग लिया एक दूसरे के साथ रहा और कभी कभी थोड़ी देर के लिये मेरे पास आता था और कोई बहाना निकाल कर चला जाता था । पहले धून की पूर्णाहति के बाद

ही सूरत चला गया, जाते समय कुछ आग्रह नहीं देखा । अतः सूरत का प्रोग्राम बंद जैसा ही है । बम्बई से काकूभाई प्रेमजीभाई तथा दहीसर से बाबूभाई जिसने खंभातिया में गायत्री पुरश्चरण तथा अखंड किया था उसका भी बम्बई आने के लिये आग्रहपूर्ण पत्र आया है । मनसुख लाल का तो वही **क्षणो रूष्टा क्षणो तुष्टा वाली हरकत** है । नाथू भट्ट का पत्र आया था कि कनूआ का लगन करना है और इस बार सब मेरा राम भरोसे है तो अगर तुम्हारे पास कुछ पैसा बचा होतो १०१ रुपैया दे देना पीछे जैसा होगा वैसी व्यवस्था हो जायेगी । बचा हुआ न हो तो भी दे देना पीछे समझ लेगे । अभी मै किसको पत्र लिखू । भाट्टजी को समाचार भी कह देना का उनका पत्र मिल गया, समाचार भी मालूम हुआ, जो कुछ बन सका मदद रुप किसी तरह भेट किया । ललीता मां, धनलक्ष्मीबेन, हँसमुख, मन्दाकिनी, प्रमोदिनी सबको मेरा यथायोग्य कहना विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

श्री द्वारकादिशों श्री राम विजयते ।

श्री राम जय राम जय जय राम

श्रीरामजी मंदिर,
हाजा पटेल की पोल,
रीलीफ रोड, अहमदाबाद

प्रिय जयन्ती !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है । मेरा स्वास्थ भी ठीक है श्री प्रभु कृपा तथा श्री प्रभु के लाडिले लाल श्री वीरपुङ्ग श्री हनुमन्तलालजी की सहायता एवं परमपूज्य परमात्मा स्वरुप श्री गुरुदेव के दिव्य प्रेरणा से यहाँ श्री अखंड यज्ञ में अभूतपूर्व सफलता मिली है । नगर कीर्तन भी देशकालानुसार भव्य निकाला। जामनगर से जोशी, छगन वगैरह पन्द्रह आदमी आये थे खूब

आनन्द हुआ । चालू अखंड में ही सद्‌विचार समिति तथा रसिक महाराज के आयोजन से उसी चालू अखंड में अभी नव दिवस का अखंड बढ़ा दिया गया है किन्तु उन लोगो का विचार संक्रान्ति तक बढ़ाने का है मिति १४-१-६५ तक रहने की जगह भी विशाल स्वतंत्र मिल गई है । शहर में प्रचार भी ठीक हो रहा है । लोगों को काफी उत्साह लगता है यहाँ आने पर । न जाने श्री प्रबु कब क्या करते कराते है ? जीव की शक्ति ही क्या है ? जिससे उस घट घट वासी परम अविनाशी का रहस्यमय नाम जान सके? हाँ ! इतना अवश्य है कि जीव अगर उस महामहिम, घट-घटवासी, परम अविनाशी, सच्चिदानन्द श्री प्रभु की अनन्य शरण प्राप्त करले । मन, वचन, कर्म से सब चतुराई भूल जावे, दीन भाव, आर्तनाद, करुणस्वर से अर्हिनिश उनके दिव्य, चिन्मय नाम रटाये लगाये रखे तो वे करुणावरुणलय, दीनजनशरणालय, श्री राघवेन्द्र अपनी अहैतुकी अनुकम्पा की कोर से जीव के अज्ञानान्धकर के तिमिर तोम को अवश्यमेव तिरोहित कर उसे अपना लेगें अपना बना लेगें । उस समय आप ही आप जीव को अपने बंधन मोक्ष का रहस्य समझ आजाएगा । यथा अपनी साधना, अराधना के बल पर कोई भी जीवमुक्त हो नहीं सकता । अतः उसी के द्वार पर उसी के नाम का ही रट लगाते पड़ा रहना चाहिए । **राम राम रटते रहो, जब लग घट में प्राण, कवहुँ तो दीन दयाल के भनक पड़ेगी कान** **"रामनान सो प्रतीति प्रीति राखे कबहुक तुलसी ढरेगें राम अपनी ढरनी ।"** श्री अखंड यज्ञ वहाँ भी सुन्दर ढंग से चल रहा है यह भी श्री प्रभु द्वारकाधीश की कृपा का ही फल है । छगन लाल, वल्लभदास बाबू, हनुमान, हरिदास, शान्तिलाल, ललित अन्य सभी प्रेमियों को मेरा सादर सप्रेम जय श्रीराम कहना और यह भी कहना मेरी गैर हाजिरी में भी जो आप लोग इतने प्रेम और लगन से जो श्री प्रभु धाम में, उनके नित्य सानिध्य में श्री अखंड महायज्ञ में भाग लेकर चला रहे हो इसमे तो तुम लोगो का परम भाग्य तो है ही, मैं भी अपने उपर श्री प्रभु द्वारकाधीश का परम कृपा मानता हूँ कि अपने

सानिध्य से दूर हटाकर भी अपने नाम के नाते अखंड यज्ञ के नाते नित्य
अपने सांनिध्य में ही रखे हुये हैं और वही से अपनी दिव्यशक्ति प्रदान कर
रहे है । ईश्वर, महेश, राजा, तुलसीदास, लक्ष्मीदास, घोड़ागाड़ी वाला केशव,
घनश्याम योगी, यती, हरिधाम, शुक्रचार्य, सबको मेरा जय श्री राम। श्री
जामपुरा में - पुजनीया ललीता मां, धनलक्ष्मीबेन, जीतु हँसमुख, मन्दाकिनी,
प्रमोदिनी, राजबाई सबको यथायोग्य । पार्सल अभी आया नही है । आ ही
जायेगा । भजन तन, मन, धन से खूब करना। इस कलिकाल में नाम स्मरण
ही एक अमोध उपाय है अपने बड़े भाई गोविन्द के परिवार तथा अपने सत्संग
मंडल के सभी प्रेमियों को भी जयश्री राम । श्री नाथुभट्ट का पत्र आया था,
समाचार मालूम हुआ। श्री राम राम महाराज अस्वस्थ है तो उनसे भी मेरा जय
श्री राम कहना । विशेष श्री प्रभु कृपा । यहाँ ठंडी बिलकुल नहीं है आये उसी
दिन से बंद हो गई । शशीकान्त आया है अखंड में नाम मात्र आता है अपना
मनन चल रहा है। सूरत जाने का विचार नहीं है।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्रीरामजी मंदिर,

अहमदाबाद.

प्रिय जयन्ती !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुमने पत्र लिखा वही अनुचित किया । मेरे साथ सम्बन्ध रखना हो तो इस तरह का पत्र कभी भी मेरे पास नहीं लिखना । क्या मैं सर्वव्यापी, घटघटवासी श्री प्रभु की आँखो में धुल झोकेगे ? कि उपर से महात्मा बनके, भीतर से संसारी सम्बन्ध रखू । जगत के सभी प्राणियों को अपने अपने प्रारब्ध कर्म का भोग भोगना ही पड़ता है

और इसे भोग लेने पर ही छुटकारा मिलता है। आर्थिक स्थिति सुधारने को चेष्ठा करता तो कब कि सुधर गई होती किन्तु वह तो मनमुखी, स्वछंन्दी है ऐसे को मदद करना सर्प को दूध पिलाने जैसा है। "सुनहुँ भरत भावी प्रबल, बिलखि कहेउ मुनिनाथ। हानि लाभ जीवन मरण जश अपयश विधि हाथ।" अतः तुम लोग भूलकर भी ऐसी चेष्ठा नहीं करना कि इस बात की खबर काकू जोशी या हमारे किसी स्नेही को मिले। इतने दिनों तक जिस प्रभु ने निभाया, क्या वह सर्वेश्वर सो गया है ? वह मुर्ख है जो तुम लोगो के पास अेसा पत्र लिखता है उसके पास जमीन है पैसा नही है तो जमीन बेचकर अपना काम चलावे इस पर भी न हो तो नौकरी करे, उधम करे, अपनी आजीवका के लिए अपने आप के अनुसार व्यय करे। इस तरह भीखमंगी करने से कब तक उसका चलने वाला है। बस! तुम लोगो को तो अपने साथ भगवत् का ही सम्बन्ध रखना चाहिए। व्यर्थ के प्रपंच में पड़ने से क्या लाभ? विशेष श्री प्रभु कृपा

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

धोलका

प्रिय जयन्ती !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्दमंगल है। श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी के यहाँ वृन्दावन में अेक मास अखंड तथा और भी अनेक प्रोग्राम है। उनका पत्र आया है कि जितनी जल्दी हो सके वृन्दावन आ जाओ। १०० किर्तन करनेवालो को साथ लेते आना। बाद मैने उनको पत्र लिखा आप जानते हो कि मेरे पास अेक पैसा नही रहता है और न मैं किसी से याचना करता हूँ तो में १०० व्यक्तियों की व्यवस्था कैसे, कहाँ से कर सकता हूँ ? यह भी उस पत्र में लिखा था कि अगर दूसरे न आवे तो न आवे आप अकेला ही आओ।

मैने उस पत्र का जवाब लिख दिया था कि अगर टीकट की व्यवस्था वह करेगा तो देखा जाएगा । किन्तु आज उस पत्र का खुलासा आ गया । लिखते कोई आवे न आवे तुम अकेले ही आ जाओ । मेरे लिए एक ही लाख के बराबर है । यह भी लिखा है कि टीकीट का संकोच हो तो लिखो उतना पैसा भेज दूँ इसके जवाब में लिख दिया है कि जब मैं गृहस्थो को भी नहीं लिखता तो आप को क्या लिखू जो कुछ भेजना था, वह भेज देना चाहता था किन्तु लिखे कौन। शायद मनसुख, गिरधारी भी साथ जाने की आशा तो जरुर रखते होगें । बेचरदास तैयार है । तो शायद द्वारका आना अभी नही हो सकेगा । अहमदाबाद से सीधे वृन्दावन जाऊँगा, कारण द्वारका आने जाने में जितना खर्च लगेगा उतने में वृन्दावन पहुँच जाऊँगा । इसबार नही जाऊँगा तो ब्रह्मचारीजी को बुरा लगेगा । उनका प्रोग्राम भी बहुत लम्बा चौड़ा है । वहाँजाने पर वहाँ की व्यवस्ता देखकर लिखूँगा फिर तुम लोगो को किसी को आना होतो आना । भट्ट जी के कन्हैया का लगन हो गया होगा । मेरा वरवधु को आशीर्वाद । टिकीट की सामग्री कुछ तुम्हारे पास है कि पूरा हो गया ? कुछ नवीनता नहीं है यहाँ धुन ठीक चल रहा है यहाँ के बाद १० दिवस का अहमदाबाद में प्रोग्राम है उसको पूरा करके वृन्दावन प्रस्थान करने का विचार है विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय जयन्ती !

आशीर्वाद !

तुम्हारा पत्र मिला, समाचार मालूम हुआ । इसमें क्षमा मांगने की कोई आवश्यकता नहीं । जीव तो अपने-अपने स्वभावसे लाचार है संसारी भक्त में भी कुछ न कुछ संसारिकता तो रहती ही है, वह विरक्ति के तत्व को समझ

भी किस प्रकार सकता है । जीव मात्र को अपना प्रारब्ध भोग भोगना ही पड़ता है। वह संसारी हो या विरक्त। मेरे पास जो कुछ भी प्रभु कृपा से था उसे भी प्रभु के भरोसे त्याग कर दिया तो मेरा भी उनकी कृपा से जीवन पालन हो रहा है तो उसको भी ईश्वर पर श्रद्धा विश्वास होवे तो क्या प्रभु उसकी सहायता न करे । मां के गर्भ में जिसने रक्षा की है क्या वह प्रभु कहीं सो गया है ? उसकी कृपा की तो अहर्निश बरसात पड़ ही रही है उसका ग्रहण करने के लिये जीव में क्षमता, पात्रता की आवश्यकता है । कालरा का तो मुझे पता भी नही था किन्तु अभी तुमहारे पत्र से पता चला और यहाँ (पूछने) (दरियाफत) करने पर पता चला किस सचमुच गाँव में बिमारी है अभी तो १७-२-६५ तक अखंड यहाँ पर है १८-२-६५ को धोलका सात दिवस के लिए जाना है वहाँ से आकर दस दिवस का अखंड धुन अहमदाबाद में है उसे पूरा करके द्वारका तरफ आने का है लगभग हजार बार सौ आदमी फूलडोल उपर गुजरात से आनेवाला है रामभगत का मंडल भी आनेवाला है उन लोगो ने ही बहुत आग्रह किया है कि आप इधर का प्रोग्राम बन्ध करके फूलडोल पर द्वारका जरुर चलो जिससे हम लोगो को ख़ूब आनन्द आवे । रामभगत पहले जितनी लगन दिखलाता था इधर आने पर कुछ भी नही । तीन वक्त यहाँ आया तो बडौदा चलो अैसा भी नहीं बोला । रसिक महाराज की ख़ूब लगन है रोज अखंड धून में आते हैं । हरिदास, प्रेमजी शेठ, ईश्वरभाई जोशी बम्बई जाते समय मिला था और विनू के विवाह का सब समाचार दिया था । अगर विनू अपनी पत्नी सहित यहाँ आने वाला हो तो पत्र मिलते जाकर उसे मनाकर देना कि यहाँ न आवे मैं थोड़े दिन में वही आनेवाला हूँ तो वहीं प्रणाम कर लेगा । इधर का सीजन ठीक नही है । मंदाकिनी को भी पत्र पढ़ा देना और छगनलाल, वल्लभदास जामपुरा के सभी लोगों को, बाबू, हनुमान, ललीत, प्रेमनारायण तथा सभी प्रेमियो को यथायोग्य । विशेष श्री प्रभुकृपा ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

|| श्री राम ||

"श्री राम जय राम जय जय राम"

गीता मंदिर, पोरबंदर

प्रिय मदन !

आशीर्वाद दिनांक : ३१-१२-५९

श्री प्रभु कृपा ही जीव के लोक परलोक का एक मात्र सहायक है और वह कृपा एक मात्र प्रभु की शरणागति द्वारा प्राप्त होती है लेकिन वाणी की शरणागति शरणागति नहीं बरन हृदय की शरणागति होनी चाहिए और हृदय की शरणागति का स्वरूप क्या ? लक्षण क्या ? वह श्री गोस्वामी जी अपने हृहय के शब्दों में कहते है "**मन, कर्म वचन छांड़ि चतुराई, भजत कृपा करि हैं रघुराई** । वही कृपा तव मेरी सब सुधार करे देगी इसमें किच्ञित मात्र भी संशाय नहीं लेकिन मेरी श्रद्धा अटल और विश्वास दृढ़ होना चाहिए जब तक ये दोनों बाते पूरी न हो तब तक श्री प्रभु का नाम रट निरंतर करते रहना चाहिए । "**दूलन**" केवल **नामधुन हृदय निरंतर ठान, लागत लागत लागि है जानत जानत जान** । तुम्हारी भावना तथा प्रेम के द्वारा भेजा हुआ सुदामापुरी में सुदामा के तराडुल जैसा बन गया वहाँ अखण्ड सप्ताह अष्टयाम चल रहा था । उसकी पुर्णाहुति के समय जामनगर नगर से चीउरा का पार्सल आया और मैंने प्रभु को भोग लगाकर सभी प्रेमियों को वितरण कर दिया इतनी अधिक संख्या थी कि दो चार दाने ही लोगों को मिले होंगे - अतः तुम्हारे प्रेम भावना का सच्चा उपयोग हुआ, यहाँ जनता बहुत प्रेमी है और सात-सात दिन का अखण्ड चल रहा है सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम । यहाँ के अखंड में जनता की अपार भीड़ होती है विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय हनुमान तथा मदनलालजी ।

जय श्री राम

आपका पत्र मिला । लेकिन उस समय यह शरीर पर साल जैसा २७ दिवस का काष्ठ मौन तथा अनुष्ठान में बैठा था जिसकी पूर्णाहुति गत १५-६-५२ को बड़ी धूमधाम से हुई इस अनुष्ठान के फलस्वरुप पहले दिन से लेकर २७ दिन तक नगर के भिन्न-भिन्न हिस्से में अखंड चलता ही रहा जिससे इस समय जामनगर के कोने कोने में बच्चे-बच्चे में इस विजय मंत्री की ध्वनि गुंज रही है । सिनेमा तथा अन्य गाने भजन वंद से हो गये यह श्री प्रभु, उनके नाम तथा श्री गुरुदेव की ही अहैतुकी कृपा तथा महिमा का फल है किन्तु कलि महाराज अपनी हाथ में तो सदा लगे ही रहते हैं जब मोका जरा छिद्र मिला कि अपना काम बनाया - जैसे वहाँ मंडल दो हो गया, वैसे यहाँ भी भीतर आपस में राग द्वेष बढ़ रहा है जिसके लिये मैंने लोगों को बहुत फटकारा है कारण कि जब नित्य भजन करनेवाले थोड़े से मंडल के लोगों में से ही राग द्वेष, कपट, न मिटा और प्रेम संगठन, सहान्भ्ति पैदा न हुई तो दूसरों को सुनाने और कहने का क्या असर होगा । अतः ऐसा जो लोग करते है वे तो नाम महाराज की महिमा घटाते ही है । नाम जपने वाले को प्रचार करने वालों का जीवन आदर्श होना चाहिए । कलि कपट का भंडार है अतः इससे वचते हुए प्रभु नाम स्मरण करो तो तत्काल लाभ ही होगा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय भोलाजी, चारु बाबू, मदनलाल
गिरधारीलाल तथा हनुमान !

जय श्री राम !

श्री प्रभु का आदेश है कि आप लोग एक मास तक (पुरुषोत्तम मास भर) सपरिवार मुस्तैदी, लगन तथा श्रद्धा के साथ अधिक से अधिक मंत्र लिखे। भले निंद्रा तथा भोजन भी कम करना पड़े, इसमें परम कल्याण होगा, **नहीं तो अपनी करनी पार उतरनी** वाली कहावत ही बनेंगी, श्री प्रभु कृपा की बात शंपुष्प जैसी ही समझानी चाहिए, अपने सगे सम्बन्धियों तथा मित्रों को भी सूचित करे पुरुषोत्तम मास जैसा पावन समय कहाँ मिलेगा। हम लोग पावर है फिर भी प्रभु तो पतितपावन है, अकारणा कृपालु हैं एक बार जो उसकी शरण सच्चे हृदय से जाता है प्रभु सदा उसकी संभाल करते रहते हैं। उसी अपनी अहैतुकी करुण से प्रेरित होकर अपना जीवन जन्म सफल सार्थक बनाने के लिए श्री प्रभु हम लोगों को ऐसा शुभ अवसर देते है। राधेबाबू तथा अन्य सभी प्रेमियों को भी सूचना देना। ईश्वर बाबू को मेरा राम राम। एक मास का अखण्ड चालू हैं। मेरा मौन स्वयं का।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय मदनलाल तथा हनुमान !

जय सीया राम

इस बार भी मंत्र यज्ञ जामनगर में होगा, कल ही उसका निर्णाय हुआ है। २२-५-५३ शुक्रवार को श्री जानकी नवमी है उसी दिन मंत्र अर्पण होने के पश्चात

पूर्णिमा तक अखंड होगा । अतः जो मंत्र लिख गया हो उसे २२-५-५३ के पहले या उस दिन तक वहाँ पहुँच जाना चाहिए । वहाँ के मंत्र लिखने लिखाने वाले प्रेमियों को भी सूचना कर देना और पता दे देना । अच्छा होता अगर सब लोग मिलकर सब मंत्र इक्ठा करके एक साथ ही भेज देते । मंत्री-संख्या, टोटल ठीक लिखकर भेजना । विशेष श्री प्रभु कृपा । १८-५-५३ को जामनगर जानेवाला हूँ ।

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय मदनलाल तथा हनुमान ! कन्हैया भुवन

जय श्री राम जी की ! वेट

तुम्हारा पत्र तथा टेलीग्राम दोनों मिला, किन्तु अनुष्ठान तथा गुरुदेव की तिथि की प्रवृति के कारण उत्तर नहीं दे सका । इस बार जो श्री द्वारिकाधीश की कृपा से श्री हनुमन्तलालजी की सहायता से तथा श्री अनन्त गुरुदेव की प्रेरणा से **बेट धाम** जो आनन्द हुआ है वह अवर्णीनीय ही । सारा गांव का ब्राह्मण, साधु, संत, अमलदार यहाँ तक कि सभी हरिजन तक का भंडारा गुरुदेव की तिथि की पूर्णाहुति में हुई । श्री द्वारिकाधीश को, हनुमानजी डांडी, शंकरजी धोगेश्वर सबको झन्डा चढ़ा । गाँव के अवालवृद्ध नरनारी पैदल धुन करते सब जगह गये । यहाँ का नगर किर्तन तथा भगवान का पुष्प विमान की रचना अद्‌भूत थी । बड़े से छोटे तक पागल होकर नाचते थे । ७ बजे की पूर्णाहुति रात्रि को ३॥ बजे हुई । यहाँ महिने से अखंड़ चल रहा है । इस महान यज्ञ में वगैर किसी सूचना के सहायता देने वाले कान्दीवाली के जेठाभाई, रामजी, मिठाईवाला भाई, माटुंगा के जेठाभाई की बहिन, मात्रे, जामनगर की गौरीबेन गोधु तथा अन्य प्रेमीजन है जिस दिन अनुष्ठान ५७ दिवसे का पूरा हुआ उसी दिन तिथि शुरु हुई । इसीसे किसी को सूचना नहीं दी जा सकी । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

द्वारिकाधाम

प्रिय मदनलालजी, हनुमान तथा
बाल गोपाल !

दिनांक : २४-६-५६

जय श्री राम

प्रभु का नाम मंगलमय है । उसका जिसने दृढ़ आश्रय ले लिया उसके सर्वदा, सर्वत्र मंगल ही मंगल है । परमभाग्य है जो सपरिवार नित्य प्रभुनाम स्मरणा करते हैं । परमभाग्य है जो सपरिवार नित्य प्रभुनाम स्मरण करते हैं । जहाँ प्रभु का नाम स्मरणा होता है, स्थल तीर्थ स्वरुप बन जाता है, नाम रटने रटाने वाला देव तुल्य बन जाते हैं । आपका भेजा सभी सामग्री मिली । अेक परम भगत परम वैष्णाव के द्वारा आपका तुलसी, फूल भगवान को अर्पण करा दिया, स्पेशल ट्रेन की यात्रा का अलम्य लाभ है । इस लिए बन सके तो आप तैयार होना और दूसरे को भी तैयार करना । अेसा अवसर हाथ नहीं आएगा । धन यौवन संसार तो चंचल चलायमान है, आज है कल नहीं अतः इस क्षण भंगुर जीवन में जो शुभ कर्म जितना शीघ्र बन जाए वहीं सत्य, वहीं सार बाकी सभी मिथ्या असार है । नारायण को जूथाराम, चीरंजीलाल को भी यह पत्र पढ़ा देना, तथा सूचना कर देना । आषाढ शुक्ल पूर्णिमा का छ मास के अखंड महायज्ञ की पूर्णाहुति होगी । सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

द्वारिकाधाम

प्रिय मदनलालजी, हनुमान
तथा बाल गोपाल !

दिनांक : ६-१-५८

जय श्री राम

आप का दो तीन पत्र आया, किन्तु जवाब नहीं दे सका इसका कारण कुछ

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

तो मेरा आलसी स्वभाव और दूसरा व्यवहारिक विषय । इस समय में किसे क्या कहाँ जाए ? किसे ? साधु और किसे असाधु ! कहे यही समझ नहीं पड़ता । इस समय तो कलिमहाराज का भयंकर तांडव नृत्य होता जा रहा है कही वर्णाश्रम का नाम नहीं कही सदाचार, सदविचार की निशानी नहीं-जहाँ देखो वही झूठ, कपट ईर्ष्या द्वेष की भयंकर अग्नि भभक रही है न किसी को किसी पर विश्वास है, न आस्था है । अपने मतलब, विषय वासना की पूर्ति के अतिरिक्त कोई दूसरा प्रश्न ही नहीं बात ही नहीं । अब अेसे समय में तो यही ठीक लगता है कि जहाँ तक बने मौन ही रहे, तटस्थ रहकर अपना शेष आयु व्यतीत कर लिया जाए । मुझे तो इसका खूब अनुभव है इस समय कौन शिष्य और कौन गुरु । साथ ही भजन करने वाले लोग भी अेसे हैं कि बाहर तो भजन का खूब दिखावा करते है और अन्तर में विषय वासना का भंडार भर रहा है कारण कि **भजन का फल विषय से वैराग्य ही है**, यह तो उनसे होता नहीं, बल्कि विषय वासना की आशा तृष्णा दिन प्रति दिन प्रबल ही होती जाती है । अतः परिणाम यह होता है कि अज्ञानी विरोधी लोगों को कटाक्ष करने का, टीका ही करने का अवसर प्राप्त होता है ।

धीर धुरीण घुरंघर देवा,
साधु समाज सदा तू सेवा ॥
जन्म मरण सब सुख दुःख भोगा,
हानि लाभ प्रिय मिलन वियोगा ॥
काल करम वश होहि गोसाई ।
वरवश रात दिवस की नाई ॥
सुख हर्षहि जड़ दुःख विलरवाही ।
दोउ सम धीर धरही मन माही ॥

और प्रभु जो करते हैं जीव के कल्याण के लिए ही करते हैं, जीव अपनी जडता तथा अभिमान एवं वासना के कारण उस कल्याणमय विधान को भी अमंगलमय बना लेता है । प्रभु में विश्वास हो तो उनके विधान न में भी विश्वास

करना चाहिए और सुचित रहना चाहिए । आप का वार्षिकोत्सव आनन्दमय सम्पन्न हो चुका होगा, कारण कि आप का पत्र आज दोपहर पीछे प्राप्त हुआ है । विशेष श्री प्रभु कृपा । सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय मदनलालजी, हनुमान !

जय श्री राम जी की !

आप का दो पत्र तथा अखंड महायज्ञ के निमित्त १५) प्राप्त हुआ आप के नाम अखंड भी हो गया किन्तु आपका कोई दुकान पता न होने से पत्रोत्तर में विलंब हुआ । श्री अखंड की पूर्णाहुति भाद्र पूर्णिमा श्री पूज्य गुरुदेव की तिथि पर होगी । श्री प्रभु भजन, स्मरण करना चाहिए यही मानव जीवन का सच्चा फल हैं विषयों का संग्रह तथा संभोग तो इतर योनियों में होता है और होता आ रहा है ।

यहि तन कर फल विषय न भाई ।
भजिए राम सब काम विहाई ॥

विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

ओखा पोर्ट

प्रिय मदनलालजी, हनुमान तथा बाल गोपाल !

दिनांक : ४-३-५९

जय श्री राम

आप की पहले की भी भेजी हुई चीजें, दैनिक कीर्तन के वार्षिकोत्सव की

सूचना तथा अभी भी का भेजा हुआ चीउरा रामकिशोर का पार्सल मिला। उसका सदुपयोग भी सही भक्त और श्री भगवान की सेवा कर दी गई। इसी कलिकाल मे श्री प्रभु नाम की ही अेक मात्र गति है। अतः जैसे बने, वैसे श्री प्रभु का नाम लेते रहना चाहिए, कारण कि सच्चा धन और सच्चा साथी अेक वही है और तो सभी माया के खेल हैं जाल हैं जो देखने मात्र का ही है, समय उपस्थित होने पर तो व्यर्थ सिद्ध होता है। इसी कारण तो बड़े-बड़े राजा महाराज, पंडित, विद्वान, बुद्धिमता ने भी अंतकाल में श्री प्रभु की शरण ली है और ले रहे है और जो प्रभु को अपना बना लेते है वही इसी जीवन में ही मुक्त हो जाते है तो मरने के बाद की तो वात ही क्या। विशेषश्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय मदनलालजी तथा हनुमान ! द्वारिकाधाम

जय श्री राम दिनांक : २३-५-५६

पत्र मिला, मनीओर्डर रूपये का यशाकथित व्यवस्था हो गई। आप का परिवारिक कीर्तन चल रहा है, यह प्रभु की तथा श्री गुरुदेव की महान कृपा का ही फल है। प्रभु नाम जीव को क्या नहीं दे सकता क्या नहीं कर सकता ? किन्तु हतभागी जन्म जन्म का दृष्कर्मी उस प्रभु नाम का आश्रय ले भी कैसे सकता है, जो पूर्व का कोई महान पुण्य पुंज उदय होते और श्री प्रभु की कृपा होवे तभी वन सकता है अन्यथा इस घोर कलिकाल में जबकि सर्वत्र अनाचार, दुराचार, व्यभिचार, मिथ्याचार का प्रचार विस्तार हो रहा है। अेसे विकराल काल प्रभुनाम स्मरण हो रहा है। अेसे बिकराल काल प्रभुनाम स्मरणा हो भी कहाँ से ? लेकिन जिस बड़भागी जीव की प्रीति प्रतीति प्रभु नाम में हो गई है उसका लोक परलोक सब बन गया वह अनायास ही वाजी जीत गया। बस ! यहाँ ९८०

दिवस का अखंड है जिसकी पूर्णाहुति अषाढ सुद पूर्णिमा को होगी, उसके बाद का प्रोग्राम गिरधारी के पत्र से मालूम करना । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेमभक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

सुदामापुरी

प्रिय मदनलालजी तथा हनुमान !

जय श्री राम दिनांक : ३-७-'६१

आपका पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । लगभग १॥ मास से मैं श्री सुदामापुरी में हूँ - जहाँ अखंड चल रहा है । आपकी भेजी हुई आम की पेटी श्री द्वारका में पहुँच गई बारह दिन बाद आई अतः उसमें कुछ विकृति हो गई जिस कारण श्री द्वारकाधीश को भोग धर दिया गया । ऐसा समाचार आया ह । बहुत कम अच्छ रह गये थे ज्यादा आम बिगड़ गये थे । विशेष श्री प्रभु कृपा । भजन करना चाहिए, करते हो तो मात्रा बढ़ानी चाहिए, भूलते हो तो सचेत होना चाहिए ।

हितेच्छु
प्रेमभक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री बेट द्वारका

प्रिय मदनलालजी तथा
बाल गोपाल !

जय श्री राम दिनांक : २४-३-६१

श्री प्रभु कृपा ही जीव मात्र के कल्याण का अेक मात्र साधन है जिसकी प्राप्ति मन, वाणी, कर्म की चतुराई छोड दीन बनकर श्री प्रभु भजन करने से अनायास ही हो जाती है । "मन, करम वचन छाड़ि चतुराई, भजत कृपा करिहैं रघुराई ; भजन में तो श्री प्रभु कृपा से सब के सब लग ही गये हो किन्तु इतने से ही संतोष न मानकर पूरा असंतोषी बनकर श्री नाम धन कमाओं । जब

नाशवान धन से जीव को संतोष प्राप्ति नहीं है और जीव जीवन पर्यन्त प्राणयण से संग्रह के लिए संलग्न ही रहता है तो अक्षय, अविनाशी धन के लिए क्यो थोड़े से संतोष करना चाहिए । अधीर बन के, असंतोषी बन के, लोभी बन के जीवन के अन्तिम साँस तक श्री नाम धन का खजाना कमाओ, बूढाओ और बटाओ । हनुमान, बिहारी और सभी वाल गोपाल को मेरा यथायोग्य भोला बाबु, कुंजी, सत्यनारायण, चारु वाव, गुप्ता, ईश्वर बाबु तथा अन्य सभी प्रेमियो को मेरा जय श्री राम । तुम्हारी मीर्ची का भोग अभी तक लग रहा है । तुम्हारी मीर्ची में भी गाँव की मीठास भरी है । श्री मंत्र मंदिर का उद्घाटन दि. १८-८-६९ को होने का निश्चय है । विशेष श्री प्रभु कृपा ।"

हितेच्छु

प्रेमभक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय मदनलालजी तथा — सुदामापुरी

बाल गोपाल ! — जय श्री राम — दिनांक : १९-८-६९

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है हनुमान दक्षिणा की सभी यात्रायें करके आज आनन्द पूर्वक यहाँ आ गाय है । आज प्रातः काल ही मुझे मिला है । श्री द्वारकाजी जाने वाला है । खूब नाम रटन करना इसी में सब प्रकार का कल्याण है ।

मंगल भवत अमंगल हारी ।
उमा सहित जेहि जपत पुरारी ॥
जिन्ह कर नाम लेत जगमाहि ।
सकल अमंगल मूल नशाहि ॥
करतल होंहि पदारथ चारी ।
सोई श्री राम कहेउ कामाकी ॥

सभी बाल गोपाल को यथा योग्य सह श्री राम जय राम जय जय राम विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

सुदामापुरी

दिनांक : २३-६-६८

९-०० बजे रात्रि

प्रिय मदनलाल, हनुमान
तथा बिहारी !

जय श्री राम

अभी तुम्हारा पत्र तथा आम की अेक पेटी मिली जिसमें लगभग ९० आम ठीक निकले बाकी सभी गल गये थे । खैर ! तुम्हारी इतनी सदभावना थी तो इतनी भी तो पहुँच तो गई । भजन खूब करो यही अेक मात्र जीवन जन्म का सच्चा लाभ है । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री रामः शरणां मम्

"श्री राम जय राम ज़य जय राम"

प्रिय भुवनेश्वर !

आशीर्वाद !

तुमने योगीराज का दर्शन किया, यह वड़े भाग्य की बात है किन्तु योगीराज का उपदेश भी धारण करने की चेष्टा करनी चाहिए क्योंकि जब तक मेरा मन स्वंय योगी न बन जाए तब तक योगी राज के दर्शन से भी उतना लाभ नही होता, जितना होना चाहिए।

तन का योगी सब करै, मन को बिरला काय ।
सहज ही जब सिद्धि पाइये, जो मन योगी हाय ॥

...और सदा श्री प्रभु के साथ प्रेम किये बिना कोई सुख नहीं सकता । अतः शान्ति, धीरे एक दम विश्वास पूर्वक आज से मन को लगाना ही मन की थोड़ी शान्ति सकता है, इसे इसी के लिए [illegible] तथा कृष्णचंदजी से द्वारिका में मेरा समाचार तथा आशीर्वाद कहना और पत्र पता देना और सभी प्रेमियों को तथा अविच्छिन्न साधु को मेरा समाचार तथा जय श्री राम। गोल मोल बाबा का पता हो तो मेरा अष्टांग मत्था टेकना लिखना विशेष श्री हरि कृपा ।

शुभाशा हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री अवध सरकता कुञ्ज

प्रिय भुवनेश्वर !

दिनांक २५-११-४०

आशीर्वाद ।

यह मंत्र श्री रामचन्द्र प्रभु ने स्वयं श्री हनुमानलालजी को कालान्तर क्षत्र पति शिवाजी के सद्गुरु समर्थ रामदासजी को दिया था। विशेष अर्थ मिलने पर श्री प्रभु के साथ प्रेम नेम निभाओं इसी में जीव का सच्चा लौकिक तथा पारलौकिक कल्याण

प्रिय भुवनेश्वर ।

तुम्हारा पत्र तथा मनिऑर्डर मिला तुम्हारे हृदय की सरलता तथा उत्कृष्ट श्रद्धा देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई साथ ही यह भी पता चल गया कि वस्तुतः तुम में किसी के होके रहने की क्षमता है। यो तो तुम श्री गुरुदेव के ही परम दुलारे हो तथा उनकी कृपा उनके जीवन काल में ही बहुत कुछ प्राप्त कर चुके हो। अतः तुम बड़भागी हो, इस में संशय नहीं । संसार में वही जीव धन्य है, वही बड़भागी है कि जो देह दुर्लभ मानव शरीर पाकर संतो तथा श्री प्रभु के चरणों में प्रेम करता है यो तो विषय सुख कूकर, शूकर भी भोगते है, वे

भी कर्म करते है सुख दुख का अनुभव करते है किन्तु मानव जीवन जन्म की सफलता तथा सार्थकता तो इसी में है कि श्री प्रभु के चरणो का अनन्याश्रय ग्रहण कर, उनके विधान के अनुसार निष्काम भाव से भगवद्वर्ण बुद्धि से कर्म करते हुए अपना परमार्थ बनाले। यह संभव भी तभी हो सकता है जब मनुष्य सरल तथा निष्कपट भाव से संतो का संग करे तथा संतो का संग भी श्री प्रभु की अहैतुकी असीम अनुकम्पा से ही प्राप्त हो सकता है अन्यथा कोई उपाय नही। इसलिये श्री प्रभु का नाम रट निरंतर करते रहना चाहिए प्रभु अपने आप ही योग क्षेम कर देते है। सीर्फ अपनी अनन्यता बनाने की देर है । प्रभु को अपनाने में कोई देरी नही। संसार में सच्चा शिष्य प्रेमी या मित्र वही हो सकता है जो गुरु प्रेमास्पद तथा मित्र के स्वरुप को पहचानता है। जिस समय तुमने रुपैया भेजा उस समय सचमुच ऐसा हृदय मे भाव हो रहा था कि कोई प्रेमी ऐसे मौके पर कुछ भेजता तो बड़ी प्रभु की कृपा होती । यह हृदय की बात तुमने जान ली, और तत्काल ही रुपये भेज दिये। उसमें विशेषता यह कि तुमने लिखा कि मै "सच्ची कमायी" भेज रहा हूँ सो वस्तुतः तुम्हारी सच्ची कमायी थी, क्योंकि पैसा भी सच्ची कमायी में ही लगा, याने अनुष्ठान में. तुमने हृदय को पहचाना इसलिये अब मै तुझे हृदय की बात बतलाता हूं । सभी चिन्ताए छोड़कर सीर्फ प्रभु नाम की चिन्ता हृदय में रखो, चलते फिरते, काम करते, जहां भी रहो, जब मौका मिले दो चार बार प्रभु का नाम स्मरण कर लो फिर अपने काम में लगजाओ । जैसे काम करते करते जब थककर सांस लेने लगते हो या एक फाइल़ पूरा करके दूसरी उठाते हो, उस समय राम राम दो चार बार कर लिया फिर काम में लग गये। इसके अलावा प्रातः काल तथा सोने के वक्त १०८ बार उपर लिखा हुआ मंत्र प्रति दिन नियमपूर्वक जपा करो। ब्रह्ममूहर्त में जगने की चेष्टा जरुर करो। यह विजय मंत्र जिसमें तीन बार राम तथा तीन बार जय आया है। जपने से तीनों काल तथा तीन लोक में भला होता है । विशेष श्री हरि स्मरणं ।

हारो न हिम्मत, बिसारों न हरि नाम ।
जीवन सग्राम में बढ़ो, हो निर्भय निष्काम ।
पाओगें नाम आराम, अन्त परम धाम ।।

हितेच्छु
प्रेम भिक्षु

॥ श्री रामं ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय भुवनेश्वर !

जगदेव बाबू वकील
सुलतानपुर, (यू.पी.)

आशीर्वाद !

दिनांक २-६-४८

तुम्हारा एक पत्र पहले भी मिला था किन्तु उत्तर नहीं दिया, इस का कारण यही था कि अब पत्रव्यवहार से चित्र उपराम सा हो रहा है। संसार में कुछ करते तो हैं नहीं फिर उनकी ओर अपनी चित्रवृत्ति लगाने से क्या लाभ? लाभ तो इतना ही है कि वे भी श्री प्रभु का प्रेम सम्पादन कर जीवन सफल बनावे अगर वे इतना करने के लिये चेष्टा तक नहीं करते और सीर्फ भौतिक श्री वृध्दि या मान बड़ायी के चक्कर में पड़े हैं जो अनित्य तथा असुखकर है, तो हम लोग अपने परिवार का भी त्याग कर उन लोगों से किस लिए मिले? यह बात सर्व साधारण के लिये लिखी गई है, तुम लोग तो प्रभु के कृपा पात्र हो, क्योकि कैसा भी मलिन जीव क्यों न हो जिसने एक बार भी प्रभु की शरण दीन भावसे ग्रहण किया, उनका नाम वे मन भी स्मरण किया वह धन्य हो गया, वह -बड़ भागी बन गया उसे अपने उपर श्री प्रभु की परम कृपा समझनी चाहिए तथा निरंतर यत्न करना चाहिए कि इस कृपा......... नाम रटने से तुझे स्वयं अनुभव भले न हो, किन्तु इतना तो अवश्य लाभ हुआ कि-तुम समझ ने लग गये कि मन चेष्टा करने पर भी ठहरता नहीं, अगर इतना अनुभव हुआ तो एक दिन वह भी समय श्री प्रभु कृपासे आ जायेगा जब कि

यह अनुभव करने लगोगे कि अब 'मन' बहुत ठहरता है । और प्रभु की मिलन की आकांक्षा प्रबल हो रही है । ये शुभ लक्षण है। इस रोग की औषध यही है याने मन न ठहरने ... की अधिक से अधिक तत्परता दृढ़ता तथा दिनता के साथ प्रभु का नाम रटो। वे अपने आप सब सुधार लेगे। सीर्फ उनकी कृपा का आशा भरोशा रखो, धीरेधीरे सब काम होता है। मन का स्थिर हो जाना कोई साधारण बात नहीं है ? **"दूलन केवल नाम धुनि, हृदय निरंतर ठान, लागत लागत लागी है, जानत, जानत जानो हैं ।"** सूरज......... उपाध्यायजी, भोला वगैरह अन्य प्रेमियों को यथायोग्य हरि स्मरण कहना और यह भी कहना कि । श्री प्रभु की जैसी इच्छा, गोल मोलबाबा को दण्डवत तथा सच्चिदानन्द वा. लाल बाबू को हरि स्मरणं ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय भुवनेश्वर ! श्री अयोध्या, गोलाघाट

आशीर्वाद ! दिनांक ८-८-४८

तुम्हारा पत्र श्री अवध पहुँचने पर मिला । बड़ी प्रसन्नता हुई। साथ ही एक बात का महन् दुख हुआ कि तुम इतने बुद्धिमान होते हुए तथा एक महाविद्यालय के बड़ा बाबू होने पर इतना भी नहीं सीख सके कि पत्र कैसे लिखना चाहिए। यह मैं अच्छी तरह समझता हूँ कि तुम्हारा हृदय निर्दोष किन्तु अंग्रेजी भाषा का तथा सभ्यता का प्रभाव पड़े बिना कैसे रह सकता है। क्यो कि उनके प्रत्येक सजीव मूर्तियों के बीच ही तो दिन रात रहते हो, देखो तुम्हारे पत्र में कही भी एक भगवान का नाम नहीं है। असल में तो सर्व प्रथम श्री प्रभु का नाम लिखकर या लेकर कोई काम करना चाहिए। बाद में पत्र के

भीतर जगह-२ प्रभु का नाम होना चाहिए। क्योंकि मेरे साथ तो सारा इसीका व्यवहार है किन्तु तुम्हारे पत्र में इसका बिल्कुल अभाव पाया गया। तुम्हारे ही नहीं प्रत्युत चारु भोला सभी को इसलिए पत्र नहीं लिखता हूँ कि कुछ सिख देना चाहिए बल्कि इस लिए लिखता हूँ कि तुम लोग उत्तर दोगे तो दस पांच बार प्रभु नाम की स्मृति हो जायेगी। मै अंग्रेजी में भी पत्र लिख सकता हूँ तथा जो हिन्दी नहीं समझते उनको लिखता भी हूँ। किन्तु यह नियम तुम्हारे लिये नहीं है। अतः अब जब कभी कही भी पत्र लिखो या एक कदम भी किसी काम के लिये आगे बढ़ाओ तो सर्वप्रथम प्रभु को स्मरण करलो। अच्छी पंक्तिया तो कई लिख दी है। जिसमें से एक को धारण कर लेने पर दूसरे की आवश्यकता नहीं रह जाती है। सर्वोत्तम पंक्तियाँ यही है **"श्री राम जय राम जय जय राम" इसी को अपने हृदय पर, स्मृति पथ पर अचल अखंड स्थापन करो। जिस दिन अचल स्थापन हो जायेगा उस दिन कृत-कृत्य हो जाओगे। सारी मुराद पुरी हो जायेगी** क्योंकि व्यासदेव का वाक्य :-

विपदो नैव विपदः सम्पदो नैव सम्पदः ।
विपद्विस्मरणां विष्णो सम्पन्नारायणस्मृति ।।

मेरा विचार चतुर्मास श्री अवध में ही करने का था किन्तु यहां कुछ आर्थिक व्यवस्था ठीक न होने से अन्यत्र ही होगा। जगह बहुत अच्छी मिली है किन्तु महात्मा की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है और सब समाचार ठीक है। श्री १०८ गोल मोल बाबा को सादर दण्डवत प्रणाम, सच्चिदानन्दबाबू को जय सीताराम, पिताजी को जय सीताराम... अन्य किरण सहित सभी को आशीर्वाद रविवार नियम का पालन करना — । नाम रटो नाम खूब रटो, रटाओ, यही आदेश हृदय से अपनाओ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय भुवनेश्वर !

श्री अयोध्या,
छुईखदान कोठी,
गोलाघाट.

आशीर्वाद ! दिनांक १९-८-४८

तुम्हारा पत्र मिला तथा तुम्हारी सच्ची कमायी भी मिली । किन्तु सच्ची कमाई तो थोड़ी ही बहुत लाभदायक होती है। अपनी स्थिति के अनुसार ही दान करना चाहिए यो तो तुम बराबर सन्तों की सेवा करते ही रहते हो। सच्ची सेवा तो मेरे तथा श्री गुरुदेव के वचनानुसार श्री नाम धन संचित करने में ही है ताकि हम दोनों के लिये राह खर्च हो सके। मुझे तो पूर्ण आशा है कि श्री गुरुदेव तथा श्री प्रभु की कृपा से तुम सदैव बढ़ते ही रहोगे, स्वार्थ परमार्थ दोनों में ही सिर्फ **नाम महाराज** की दृढ आशा भरोसा किये रहो। अपने भीतर दीनता लाओ, तथा श्री प्रभु की उदारता का हृदय में बराबर अबलम्ब दृढ़ करते रही यह भावना बनाते रहो कि प्रभु अवश्य ही अपनी अहैतुकी कृपा अपनी वरदहस्त कमल की छाया में रखकर कृतकृत्य कर देंगे । बराबर विश्वास रखो कि श्री प्रभु मेरे हृदय में सदैव बिराज मान हैं तथा मैं उनके चरण कमलों की नीचे पड़ा हुआ हूँ, तथा प्रभु अपना अभयदायक कर कमल मेरे सिर पर ...रते हुए परम कृपा दान कर रहे हैं । नाम रटो रटाओ। सच्चिदानन्द को मेरा जय सीता राम। सभी प्रेमियो को यथायोग्य हरि स्मरणं श्री अवध आने का विचार हो तो पहले पत्र लिख देना । विशेष हरि कृपा। श्री रामजीवनदास जी आशीर्वाद भेज रहे हैं । श्रीराम जय राम जय जय राम । विशेष श्री प्रभु शेष समर्पित है ।

तुम्हारा हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय भुवनेश्वर !

गोलाघाट, श्री अयोध्या

आशीर्वाद !

दिनांक २६-८-४८

तुम्हारा पत्र मिला, बडी प्रसन्नता हुई। तुम्हारे हृदय को मै अच्छी तरह जानता हूँ विशेष लिखने कहने का काम नही श्री प्रभु के भरोसे सब कुछ करते रहो देखो श्री प्रभु क्या न करेगें । आज तुम्हारे पत्र के साथ साथ कई प्रेमियो के पत्र भी आये है तथा कुछ अनायास प्रेमियोने पैसे भी भेजे है तथा श्री गुरुदेव तथा श्री प्रभु की प्रेरणा भी हो रही है कि इस बार श्री गुरुदेव की वार्षिक तिथि १४ सितम्बर श्री अवध में ही मनायी जाए। दिन भी मंगलवार पड़ गया है जिससे श्री हनुमन्तलालजी की भी अनुमति प्रतीत होती है । अतः मेरा अनुरोध है कि एक पंथ दो काज । श्री अवध धाम तथा हजारों संतो का दर्शन तथा श्री हरिनाम यज्ञ, इससे बढ़कर और सौभाग्य की बात क्या होगी, अतः चारुबाबू भोलाजी वगैरह से मिलकर निश्चय हो जाए तो एक सप्ताह पहले खबर देना और भी कोई प्रेमी आने वाले हो तो यज्ञ में भाग ले सकते है। इस बहाने भी तो श्री अवध का दर्शन हो जाएगा । चेष्टा जरुर करना आगे मर्जी प्रभु की सच्चिदाबाबू से सब समाचार कहना । विशेष हरि स्मरणं ।

तुम्हारा हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

सुलतानपुर

प्रिय भुवनेश्वर !

शुभाशीर्वाद !

दिनांक २६-६-४९

तुम्हारा पत्र मिला, तुम्हारे शुद्धभाव से मैं अत्यन्त ही अनुग्रहित हूँ । प्रभु का स्मरण करो, सुखी रहो यही मेरी लालसा, भावना, तथा आशीर्वाद है ।

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

प्रभु का अवलम्ब ही सुख शान्ति का तथा संसार का आशा भरोसा दुःख तथा अशान्ति का कारण है । अतः संसार याने सांसारिक विषयों से अपने चित्त को यथा साध्य हटाते हुए श्री प्रभु के प्राप्ति की ओर बढ़ाने की चेष्टा करनी चाहिए और इसके लिए एक मात्र प्रभु के नाम की ओट ले उनसे कृपा की भीख मांगते हुए उनके नाम पर रोना सीखना चाहिए । जब तक हम संसार के सामने रोते रहेंगे, हमारा रोना कभी बन्द नहीं होगा किन्तु जभी से हम प्रभु के आगे रोना सीखने लगेंगे तभी से हमारा जन्म जन्म का पाप नष्ट हो हमारा रोना हँसने में बदल जायेगा। और मेरा जीवन जन्म सफल हो जाएगा। अतः जिस तरह नवजात शीशु माँ के आगे रोता है उसी तरह एक भक्त को भगवान के सामने रोना चाहिए इस रोने में सारी फरियाद भरी है । मै तो Typhaid में ऐसा पड़ा कि सिर में एक बाल भी नहीं है । किन्तु अच्छा होने के बाद से प्रयाग वगैरह में जगह जगह अखंड हो रहा है । इससे बड़ी खुशी और प्रभु की कृपा है । एक सप्ताह में अयोध्या पहुंचने की आशा है । इसबार महाराज की तिथि प्रयागराज में मनाने का लोगो का विचार है। आप सब प्रेमी भी मिलकर विचार करना । विशेष हरि कृपा ।

तुम्हारा हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय भुवनेश्वर !

छुईखदान कोठी,

गोलाघाट, श्री अयोध्या

शुभाशीर्वाद !

दिनांक १८-६-४९

विषय कुपथ्य पडा अंकुरे, ज्ञानिहुँ हिये का नर वापुरो ।

राम कृपा नासहि सव रोगा, जो एहि भांति बनै संयोग। सद्गुरु वैध वचन

विश्वासा, संयम यह न विषय की आशा। रघुपति भक्ति संजीवनी मूरि, अनुपान श्रद्धा अति भूरि। एहि विधि भलेहि सो रोग नशाहि, नाहि तो यत्न कोटि नहि जाहि ॥

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय भुनेश्वर

आशीर्वाद

सभी जीव माया के चक्कर में काल कर्म स्वभाव के परवश हुए निरंतर जन मरण काल चक्र में चक्कर काट रहे हैं। साथ ही सबके सब वर्णित काम क्रोधादि, मानसिक रोग से रोग गस्त दीन प्रति दिन, हिन तथा बलहीन होते जा रहे है, चेष्टा तो सभी सुख प्राप्ति के लिए करते है किन्तु उन्हे प्राप्त दुःख ही होता है क्योंकि संसार तथा शरीर में सुख शान्ति कहाँ। जो स्वयं ही क्षण भंगुर, नाशवान तथा असुखकर है वह दूसरों को याने अपने से सम्बन्ध रखने वालों को सुखी किस प्रकार कर सकता। अतः यथा साध्य धैर्य तथा शान्ति से प्रभु की कृपा का भरोशा रखते हुए विषय याने सांसारिक पदार्थो से चित्तवृत्ति को खीचते तथा प्रभु के चरणो में निरंतर चेष्टा........ गुरुदेव के बताये मार्ग को पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास के साथ यथाशक्ति अनुशरण करते हुए अपना सर्वस्व प्रेमा स्पद को अर्पण करते हुए जीवन संग्राम में जुझते रहना चाहिए। यही जीवन है तथा इसी में जीवन की सार्थकता सफलता, निहोत है। मैं ने अभी हप्ते पहले सुलतान पुर से पत्र दिया। किन्तु अभी तक तुम्हार कोई जवाब नही मिला। इस बार श्री गुरुदेव की वार्षिक तिथि १४ सप्टेम्बर श्री प्रयाग में मनाने का विचार हो रहा है। आगे श्री प्रभु जाने। आप लोगो की जैसी इच्छा हो प्रकट करना, इसकी खबर मिलने पर मैं अपना प्रोग्राम यहां ठहरने या बाहर जानेका बनाऊँगा।

श्री राम जय राम जय जय राम....

बिनु विश्वास भक्ति नही, तेहि बिनु द्रवहि न राम ।
राम कृपा बिनु सपनेहु जीव न लह विश्राम ॥
अस विचारि मति धिर, तजि कुतर्क संशय सकल ।
भजहु राम रणधीर, करुणाकर सुन्दर सुखद ॥

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥
"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय भुवनेश्वर !

शुभाशीर्वाद !

तुम्हारा तो हाल गुलाब के फुल के समान हो गया है, पत्र लिखने पर भी उत्तर नहीं देता । खैर ठीक अगर मंत्र लिखा हो या लिखवाया होतो शुक्रवार तारीख २२-५-५३ के पहले मंत्र नीचे पते पर भेज दो विशेष अन्य जो प्रेमी होवे उन्हे भी सूचना कर देना कि २२-५-५३ के पहले मंत्र भेज देवे। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

पता : मातेश्वरी निवास, भीड़भंजन बारी के पास, जामनगर (सौराष्ट्र)

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥
"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गुप्ता !

श्री द्वारकाधाम

जय श्री राम

दिनांक ३१-१०-५७

बहुत दिनों के बाद तुम्हारा पत्र मिला । समाचार विदित हुआ । भाई इस शरीर तथा संसार की विचित्र गति है । न तो इसकी महिमा की पार और न इसकी अनित्य क्षण भंगुरता का पार । जितना ही यह शरीर अनित्य और

दुःख रुप है उतना ही यह नित्य और सुखरुप स्थिति प्राप्त कराने के लिए परम उपादेय है । अगर सचमुच विवेक पूर्वक अविलम्ब इसका उपयोग किया गया तो श्री प्रभु की कृपा का कोई पार नहीं, उनकी महिमा का कोई अन्त नहीं, उनकी करुणा की कोई भिति नहीं, कोई तिथि नहीं फिर इस अज्ञानी अल्पज्ञ जड जीव उनकी महती महिमा को न समझ अपनी जड़ता अज्ञानता के कारण मिथ्या मोह ममता के वशीभूत हो अनादि काल से इस भयंकर भवाटवी याने संसार चक्र में भटक रहे हैं, अटक रहे हैं, ठकरा रहे हैं, अथरा रहे है । फिर भी हमारी प्रवृत्तियों का अन्त आता नहीं, आयेगा भी नहीं, जब तक कि हम उन परम दयालु, अकारण कृपालु अभय निर्भय चरणारविन्द का सर्वत्रो भावेन आश्रय नही ले लेते । जीव को संसार तथा संसार सम्बन्धियों के निमित्त से होने वाला भय शोक स्पृहा परिभव, अनन्त लोभ तथा देह गेह में, मम मेरा रुपी एक मात्र दुःख रुप ममत्व का पूर्णरुपेन श्री प्रभु चरणार्पण नही हो जाता है जिसने श्री प्रभु के नाम का आश्रय ओट मान भी लिया उसका हर प्रकार बन गया, बन गया है, बन रहा है और बनता ही रहेगा । हाँ ! आवश्यकता है सिर्फ अटूट श्रद्धा निष्ठा एवं दृढ़ निश्चय विश्वास की । हृदय की निष्कपटता तथा अनुराग की दृढ़ता की, जिसके अन्दर ये भाव प्रकट हो गये वह जीव जीवन काल में कृत्य कृत्य हो गया । उसके लिए संसार और संसार चक्र कैसा? वह तो चक्रधारी का स्वयं चक्र बनकर माया वद्ध जीवों को चक्र से मुक्त करने का स्वयं प्रभुका आश्रय बन जाता है । ऐसे जीवन मुक्त कृत्य कृत्य प्रभु परायण जीव को हम लोग संत कहते है । जगत का उद्धारक कहते है जिनमें किसी प्रकार की स्वार्थपरता की गंध भी नहीं होती । इसके आदर्श श्री व्रज के परम भाग्यशालिनी गोपियाँ हैं और उनके एक मात्र आत्मा प्राण तथा प्राग वल्लभ जीवन सर्वस्त्र श्री राधाकृष्ण है । यही तुम्हारे मंत्र की व्याख्या है । अब उसका अक्षरार्थ तथा भावार्थ प्रभु प्रेरणानुसार लिखता हूँ ।

नमो गोपी जन वल्लभाभ्याम ॥ - अर्थ

नमो का अर्थ सर्व भावेन श्री प्रभु के चरणापन्न होना । किस प्रकार होना उसका उत्तर गोपीजन जैसा । गोपी जन का अर्थ गो याने इन्द्रिया- प याने इन्द्रियों को पालने वाला मन । इं - याने विषयो से अतीत हुई मन की वृत्तिया जन- अबोध बालक की तरह सब ज्ञान ध्यान भाव विचार हीन माँ को ही एक मात्र अपना सर्वस्त्र सर्व रक्षक मानकर सर्वथा निश्चित रहने वाला भगवद् भक्त । अब गोपीजन पूरे का अर्थ हुआ वे जीव जिन्होने अपने समस्त कर्म धर्म को समस्त ज्ञान ध्यान पुरुषार्थ को समस्त इन्द्रिया मन बुद्धि चित्त की वृत्तियो को प्रभु में अर्पण कर निश्चित हो गये है । वल्लभ नाम का अर्थ श्री राधा कृष्ण याने शिवशक्ति अभिन्न परम ब्रह्मतत्त्व जिन्होनें ऐसे भक्तो के जीवो के कल्याणार्थ ही एक होते हुए भी अपने दो स्वरुपों अभिन्न होते हुए भी भिन्नरुप, अजन्मा होते हुए भी जन्म धारण करनेवाला, असिम होते हुए ससीम बनने वाला, अपना जीवन सर्वस्व अपना प्राणवल्लभ । साधारण अर्थ सर्वस्व त्यागिनी परम अनुरागिनी गोपियो के प्राणवल्लभ परम प्यारा श्री राधाकृष्ण को नमस्कार ।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गुप्ता ! सुदामापुरी

आशीर्वाद दिनांक ३-७-५४

तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मामूम हुआ । कृष्ण का विवाह का समारोह कर रहे हो यह हर्ष की बात है - संसारी के लिए तो यही सबसे बड़ा आनन्द का स्वरुप माना जाता है अगर वस्तुतः विवाह का सच्चा अर्थ और स्वरुप समझ लिया जाये तो जीव कृत्य कृत्य हो जावे । इसमें शक नहीं प्रकृति पुरुष का

[illegible] समझाने के लिए यह व्यावहारिक प्रथा चालू है । जिसके द्वारा पारमार्थिक सत्य को समझाना ही अभिष्ट, पिता को पुत्र के विवाह में आनन्द अनुभव होता है इसका अर्थ यही है कि जब पुत्र की प्रकृति बुद्धि भगवदाकार होती है तभी वह जीव सुख शान्ति अनुभव कर सकता है, और पुत्र के सुख में पिता को सहज सुख अनुभव होती है । तुम्हार यह कार्य मंगलमय होवे ऐसी प्रभु प्रार्थना सह शुभेच्छा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गुप्ता !.

संकीर्तन भवन,

पोरबंदर (सौराष्ट्र)

आशीर्वाद

पत्र मिला, समाचार मालूम १५-५-६४ को हुआ । जिसके हृदय में भाव है उससे भगवान कभी दूर नहीं । हाँ इतना अवश्य है कि माया के झकझोर में संसार के विषाक्त वातावरण में जीव के भाव में स्थिरता नहीं रहती जिस कारण भगवान की मौजदगी में भी कभी कभी संशय संदेह हो जाया करता है । किन्तु इससे घबराने की कोई आवश्यकता नहीं । जैसे जल के मलीन तथा स्थिर हो जाने पर अपनी ही मुखाकृति उसमें नही दीखती किन्तु जल के निर्मल तथा स्थिर होते ही अपना प्रतिबिम्ब उसमें दिखने लगता है । इसी प्रकार श्री प्रभु नाम रटन करते करते ज्यों ज्यो अन्तःकरण मन बुद्धि, चित निर्मल होने लगता है । त्यों त्यों आत्मा का परमात्मा का अपने इष्टदेव का प्रकाश तथा प्रभाव स्वतः अनुभव में आने लगता है । "मन ऐसो निर्मल भयो जैसे गंगा नीर पीछे पीछे हरि फिरै कहत कबीर कबीर ।" बस श्री प्रभु नाम का दृढ आश्रय ग्रहण किये रहो वे सर्व समर्थ्य श्री नाम महाराज ही यथासमय

सब कुछ कर देगें । विशेष श्री प्रभु कृपा सभी प्रेमियों को जयश्री राम । बालगोपाल को जय श्री राम ।

आप का हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गुप्ता तथा बालगोपाल ! जूनागढ़

आशीर्वाद

तुम्हारा भाव भक्ति प्रेम पूर्ण पत्र मिला । लेकिन समय के अभाव से पत्रोत्तर यथा समय न दे सका, उसेक लिए मन में दूसरा नहीं समझना, साथ ही प्रेम में तो पत्र पत्रोत्तर की आवश्यकता भी नहीं होती । हृदय से समझ होता है । जैसा कि श्री उद्धवजी के कहने पर श्री गोपियों ने उत्तर दिया था :- **प्रीतम को पतिया लिखू जो कही होये विदेश । तन में, मन में, नयन में, बाको कहाँ संदेश ?** बस! जिसके हृदय में सच्चा प्रेम है पवित्र भाव है उत्तम विवेक वह कभी भी अपने से दूर नहीं । सदा साथ ही है और सदा साथ ही रहेगा । श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है । मैं पोरबंदर जा रहा हूँ सभी प्रेमियों को जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गुप्ता तथा बालगोपाल ! श्रीद्वारकाधाम

आशीर्वाद दिनांक १६-११-६५

तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । शरीर तो स्वभाव से ही विकारी है इसमें कुछ न कुछ विकार, बिगाड़ तो क्षण क्षण में हुआ ही करता

है । इसी कारण इसे विकारी एवं विनासी कहा गया है, इसकी तो अेक ही सफलता है जब तक शरीर स्वस्थ है तभी तक इस असत्य शरीर द्वारा सत्य आत्मा परमात्मा की प्राप्ति अनुभूति के लिए प्रबल प्रयास कर लेना चाहिए । भोग तो किसी भी योनि में प्राप्त हो सकता है, किन्तु भोग याने भजन के लिए तो एक ही योनि है, मानव योनि । इसमें भी कलिकाल में तो सीर्फ भगवन्नाम द्वारा ही सबकुछ सुलभ है, फिर भी भाग्य हीन प्राणी इसका लाभ नहीं ले रहा है । श्री द्वारकाधाम में १६० बम पाकिस्तान ने गिराया खास करके जहाँ पर दस मास से अखंड चल रहा है उसके बाजू वाला मकान पर अेक बम पड़ा किन्तु श्री प्रभु नाम के प्रताप से श्री द्वारकाधाम में जान माल की कोई नुकशान नहीं हुआ । किसी का बाल वाका नहीं हुआ । अतः जितना बन सके अधिक से अधिक प्रभु नाम का रटन चिन्तन करो, सुखी बनो बनाओ यही हार्दिक कामना । विशेष श्री प्रभु कृपा । सभी प्रेमियों को जय श्री राम।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

अहमदाबाद

प्रिय गुप्ता तथा बालगोपल !

आशीर्वाद ! दिनांक : १३-४-६६

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र मिला किन्तु पत्र का आशय कुछ समझ में नहीं आया । मनुष्य को खास करके ईश्वर में आस्था रखने वाले को हंमेशा धैर्य उत्साह का सहारा रखना चाहिए और विषम से विषम विकट से विकट विपरित परिस्थितियों के आने परभी श्री प्रभु में अडिग श्रद्धा और अटूट विश्वास रखना चाहिए कि श्री प्रभु मंगलमय हैं, कल्याणमय हैं, ज्ञानमय तथा करुणामय है । अतः उनका प्रत्येक विधान जीव के कल्याण के लिए है और होता है । उनके द्वारा उनके आश्रित जनों के लिए अनिष्ट की तो संभावना

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

ही नही । हाँ अगर एसा कुछ अनिष्ट, संकट विपरितता का अवसर भी आ जावे तो वह अपने पूर्व कृत कर्मोका ही फल समझना चाहिए वहभी धीरे धीरे श्री प्रभु कृपा से दूर हो जाता है । बस खूब श्री प्रभु भजन करना चाहिए चाहे, जिस भी परिस्थिति में श्री प्रभु भजन करना चाहिए चाहे जिस भी परिस्थिति में श्री प्रभु रखे उसी में उनकी कृपा समझकर प्रसन्नता पूर्वक रहना चाहिए । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गुप्ता तथा बांलगोपाल !　　　　　संकीर्तन मंदिर, पोरबंदर

आशीर्वाद　　　　　दिनांक ३१-७-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । और श्री अखंड महायज्ञ का प्रचार विस्तार उन्ही की अहैतुकी कृपा से दिन प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा है । इसबार श्री गुरुपूर्णिमा का उत्सव अभूतपूर्व ही हुआ । तुम्हारा श्री गुरुपूर्णिमा के निमित भेजा हुआ पत्र पुष्प के रुपमें २५) मंडल के कार्य करता श्री रामजी भाई को प्राप्त हुआ, उन्ही की प्रेरणा से यह सूचित कर रहा हूँ । विशेष श्री प्रभु कृपा । अभी इधर उधर बहुत दौड़ धूप करना पड़ता है । जिससे यथा समय पत्रोत्तर भी नहीं दिया जाता है। पत्र मिले या न मिले श्री राम नाम के नाते हम सबके सब एक साथ ही है, और सदा श्री प्रभु कृपा से साथ ही रहेंगे । खूब भजन करना यही जीवन का सार है । कलिकाल में भजनभी सरल और आसान है । चलते फिरते सोते जागते उठते बैठते, श्री प्रभु नाम रटना सभी प्रेमियो को जय श्री राम ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गुप्ता तथा बालगोपाल !

श्री द्वारकाधाम

आशीर्वाद

दिनांक ९-१-६९

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । उन्ही की कृपा प्रेरणा सहायता द्वारा श्री अखंड हरिनाम महायज्ञ का अनायास ही प्रचार प्रसार भी दिन प्रतिदिन होता ही जा रहा है। इधर तीन स्थलो में तो वर्षो से अखंड स्थायी रुप से चालू ही है । जामनगर, द्वारका, पोरबंदर ! मुजफ्फरपुर में भी यत्र तत्र तुम लोग अखंड चला रहे हो यह भी तुम लोगों के पुण्य पूंज एवं श्री प्रभु की अहैतुकी अनुकम्पा का ही अेक मात्र फल है । श्री द्वारकाधाम में भी श्री प्रभु प्रेरणा से बडा ही सुन्दर संकीर्तन मंदिर बन कर लगभग तैयार हो गया । उसका उद्‌घाटन उत्सव श्री वसंत पंचमी ता २१-१-६९ को मनाने का निश्चय हो गया है । निमंत्रण पत्र भी भेजा जाएगा । शायद निमंत्रण पहुँचने में विलम्ब हो तो सभी नाम प्रेमियों को सूचना दे देना । इस भयंकर कलिकाल में जब कि सर्वत्र अनिति अनाचार ही दष्टिगोचर हो रहा है और जिसके फल स्वरुप सर्वत्र दुःख दैन्य दुर्राजय का ही साम्राज्य फैल रहा है । ऐसे भयंकर समय में काल के प्रभाव से बचने का त्राण पाने का एक मात्र अमोघ उपाय साधन सीर्फ हरिनाम ही है । बस ! इसी का दृढ्र आश्रय लिए रहो इसी से लोक परलोक सब बन जायेगा । सभी प्रेमियो को श्रीराम जय राम जय जय राम । बाल गोपाल क मेरा यथायोग्य सह श्री राम जय राम जय जय राम अभी नये मंदरि में शुरु करने के बाद कुछ दिनों तक यही रुकना पड़ेगा । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

|| श्री राम ||

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गुप्ता तथा बालगोपाल ! श्री बाला हनुमानजी,
संकीर्तन मंदिर, पोरबंदर

आशीर्वाद दिनांक १-४-६१

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । पत्र मिला समाचार मालूम हुआ । वास्तव में संसार में अेक ही सार है बाकी निःसार ही है । अेक ही सत्य है अन्य सबके सब असत्य ही है । बस! मन, वचन,कर्म, द्वारा उसी अेक सत्य को सच्चा सहारा लेकर इस भयंकर भवाटबी (संसार चक्र) से पार हो जाना ही मानव जीवन का सार स्वार्थ है । इस भयंकर कलिकाल में अेक मात्र श्री प्रभु नाम ही सब प्रकार के स्वार्थ परमार्थ प्रदान करने में सब समर्थ है । बस ! खूब नाम रटो रटाओं, सुखी बनों बनाओ यही हार्दिक कामना सह श्री प्रभु प्रार्थना । सभी नाम प्रेमियों एवं अखंड संचालकों को मेरा हार्दिक स्नेह सह श्रीराम जय राम जय जय राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

|| श्री राम ||

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय रमेशभाई तथा जामसेत भाया आशगढ़
बालगोपाल ! जिला-थाना महाराष्ट्र

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा निष्कपट, निस्वार्थ, सरल स्वभाव, निर्मल हृदय से उत्पन्न प्रेम तथा भाव पूर्ण पत्र मिला । पढ़कर आनन्द आया, हृदय आनन्द विभोर हो नाच उठा, ऐसा प्रतीत होने लगा कि, रमेश का हँसता, प्रसन्नचित्र मुख्र कमल मेरे हृदय नेत्र के समक्ष सदा उपस्थित ही

है । वास्तव में सच्चा प्रेम में वियोग ही विशेष वाञ्छनीय है कारण कि संयोग में शीथिलता एवं वियोग में विलक्षणता आती हैं । हम अपने प्रेमास्पद से ज्यों ज्यों दूर होते हैं त्यों-त्यों अतीत की प्रेममयी विस्मृत, समस्त क्रियायें, लीलायें अनायास ही स्मृति पर प्रसरित होने लगती हैं और ऐसा अनुभव होने लगता हैं कि हम दोनो एक साथ ही हैं और सदा एक साथ ही रहेगें । श्रीमद्‌भागवत् की सारी लीलाओं का रहस्य ही यही है । अतः श्री भगवान के नाते हम सदा अेक ही हैं साथ ही हैं और अगर इस नाते का निर्वाह हो सका तो सदा साथ ही रहेगें । महुवा से आने के बाद अनेक प्रकार की भगवत् लीलाये दृष्टिगोचर हुई । एक तो अेसी विलक्षण थी कि जिसका जिक्र करना भी उचित नहीं लगता । "गोविन्द की गति गोविन्द जाने ।" बस ! रसिकभाई, मघानी साहेब, भगवानभाई, प्रवीणभाई, घनश्यामभाई, विनोद, सुरेश, प्राणभाई, माला, प्रतापभाई, भरत, सुरेश, प्रफुल्ल, महेता साहब तथा अन्य सभी प्रेमी माताओं, बहनों, भाईओं, बालको को मेरा यथायोग्य सह श्री राम जय राम जय जय राम । प्रवीण, देवदत्त आनन्द में हैं अब हमसे जुदा पड़ने की तैयारी में हैं कारण १-६-६८ को प्रवीण की परीक्षा का परिणाम हैं । २-६-६८ को कालेज का फार्म भरना हैं। विशेष श्री प्रभु कृपा । सभी प्रेमीजनो को मेरा, देवदत्त, प्रविण का यथायोग्य सह जय श्री राम । श्री गुरुतिथि के लिये वृन्दावन का विचार हो रहा हैं । पूर्ण निश्चय होने पर सूचना दूँगा। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय रमेशभाई तथा बालगोपाल ! जेठालाल अमथालाल बारोट

वीजापुर, उत्तर गुजरात,

आशीर्वाद ! दिनांक ८-६-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द हैं। विधि का विधान विचित्र हैं, कर्म की

गति गहन हैं किन्तु श्री प्रभु की कृपा, करुण कुछ कम विलक्षण नहीं बल्कि आति विलक्षण है, जो उनके शरणागत जीवों को पल पल में नूतन अनुभव कराया ही करती हैं । सच हैं कि अगर उसकी कृपा से जीवन में कुछ विलक्षण अनुभव न हो तो जीव की श्रद्धा-निष्ठा भी उसमे अविछिन रह नहीं सकती । श्री प्रभु का प्रत्येक विधान मंगलमय ही होता हैं किन्तु जीव अपनी अल्पज्ञता, जड़ता, अज्ञानता के कारण ही उसे उस रुप में न समझकर, कुछ और ही समझ बैठता हैं और अहंमता, ममता के कारण सुखी दुखी हुआ करता हैं । मन के अनुकूल होने पर थोड़ी देर के लिए सुख मान लेता है और मन के प्रतिकुल होने पर उसे दुख मान कर आकुल, व्याकुल, परेशान होने लगता है किन्तु सच्ची बात तो यही हैं कि जिसने अपने जीवन रथ का सारथी श्री गोविन्द को बना लिया है और रथ में जुते हुए इन्द्रियरुपी घोडो का मन रुपि लगान (वागडोर) उस सर्वाधार, सर्वज्ञ, सर्वेश्वर के करकमलो मैं सदैव के लिये सौप दिया है वह सदा के लिये निर्भय निश्चिन्त हो गया है । उसके लिए हानि, लाभ, मान, अपमान, सुख-दुख, जन्ममरण सब एक समान ही हो गया है हर हालत में उसे एक मात्र उसकी कृपा, करुणा की ही अनुभूति हुआ करती है और वह सदा सर्वदा आनन्द की, चैन की बंशी बजाया करता है और प्रेम विभोर हो- आनन्दोल्लास हो गाया करता है :-

चिन्ता क्या भगवान खेवैया ।
दुखःसुख के सागर में, पड़कर, आशा,
निराशा की लहरो पर डूबत तैरत आवत नैया ॥
चिन्ता क्या भगवान खेवैया ॥
प्रेम दिलो में, मन भगवान में, बढ़े चलो
धीरज धर मग में कर ही देगें पार खेवैया ॥ चिन्ता ॥

अडिग श्रद्धा, अटूट धैर्य, अखूट श्रम, अचल अविचल विश्वास के साथ श्री प्रभु के परममंगलमय, आनन्दमय, परमानन्दमय **श्री नाम महाराज** का दृढ़

आश्रय ले लो यही जीवन का परमध्येय, परमपरमार्थ, परमपुरुषार्थ है । नाम जपो जपाओ सुखी बनो बनाओं, यही हार्दिक सद्कामना सह श्री प्रभु प्रार्थना है प्रविण बहुत याद करता था, बरवान करता था । २८-५-६८ को हमारे पास से गया । यहाँ चार-पाँच दिवस हूँ । बाद में जामनगर जाना हैं । द्वारिका से होकर गुरुपूर्णिमा पर पोरबंदर । सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम ज़य जय राम"

प्रिय रमेश तथा बालगोपाल !

द्वारका संकीर्तनमंदिर

आशीर्वाद !

दिनांक ५-७-६९

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द हैं । पत्र मिला, समाचार मालूम हुआ। श्री प्रभु की कृपा वृष्टि तो जीव पर अनवरत होती ही रहती हैं किन्तु उसकी अनुभूति तो कोई विरला भाग्यसाली जीव ही कर पाता हैं । सच्ची बात तो यह है कि जीव का हृदय जितना निर्मल, विमल, धवल होता जाता है उतना ही अंश में संत, सद्गुरु एवं श्री प्रभु का प्रकाश प्रगट होने लगता है और जीव उस दिव्यानन्द की अनुभूति कर अपने को कृतकृत्य मानने लगता हैं । अनन्तकाल से जो हृदय विषय चिन्तन द्वारा मलिन बन गया है वही हृदय पुनः प्रभुनाम रटन स्मरण द्वारा शुद्ध पवित्र हो जाने पर अनायास ही सच्चे सुख शान्ति का अनुभव करने लगता है –

(१) ईश्वर कृपा – मानवदेह की प्राप्ति ।

(२) गुरु कृपा – सन्मार्ग दर्शन ।

(३) शास्त्र कृपा – गुरु द्वारा प्रदर्शित ।

मार्ग में दृढ, अटूट श्रद्धा निष्ठा किन्तु सबसे महत्त्व की चीज तो (४)

निज कृपा-आत्म कृपा । उपर की तीनों कृपाये होने पर जीव अगर सावधान, सचेत, जागरुत होकर आत्म कृपा याने अपने उपर ही अपनी कृपा न करे तो सभी व्यर्थ जैसा ही समझना चाहिए । कहने का भाव यह हैं कि मानवदेह प्राप्त करने पर, गुरुमिलने पर, शास्त्र समझ लेने पर भी अगर जीव भजन न करे भोगो से वृत्ति हटाने एवं भगवान में जोड़ने की चेष्टा न करे तो कुछ भी लाभ नहीं, खूब नाम रटो, सुखी बनो बनाओ यही हार्दिक कामना सह श्री प्रभु प्रार्थना । बिनु, सुरेन्द्र, भरत, जलाराम, रामा शास्त्री रसिकभाई, भगवानभाई, प्रविण, मनसुख तथा अन्य सभी प्रेमीजनों को यथा योग्य श्री राम जय राम जय जय राम । श्री गुरुपूर्णिमा द्वारका में । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय रमेश तथा अन्य प्रेमीजन ! पाटन भाया, जामजोधपुर

आशीर्वाद ! दिनांक २३-७-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ । प्रेम में वियोग ही जीवन हैं संयोग ही शैथल्य है । किसी कारणवसात् श्री प्रभु ने श्री गुरुपूर्णिमा के उत्सव में सम्मलित नहीं होने दिया यह भी उनकी परम कृपा ही समझना। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण पान, चाय वगैरह व्यसन का त्याग तथा श्री विजयमंत्र जाप का पवित्र संकल्प । यहाँ उत्सव पर आने वाले तथा वर्षो तक मेरे साथ रहने वालों को भी अभी तक ऐसा सौभाग्य बहुत कम लोगों को प्राप्त हुआ है । तो सच्ची बात तो यही है कि श्री प्रभु सर्वमंगलमय, सर्वाधार, सर्वज्ञ, सर्वेश्वर है । अतः उनका प्रत्येक विधान मंगलमय ही होता है किन्तु जीव अपनी अल्पज्ञता, जड़ता, स्वार्थपरता के कारण उसकी

महती महिमा को समझ नहीं पाता और प्रत्यक्ष में कोई लाभ न मिलने पर निराश एवं हतोत्साह सा बन जाता है किन्तु "भगति भक्त भगवन्त गुरु चतुर नामबपु अेक तिनके पद वंदन किये नाशे विध्न अनेक" ॥ अतः इसके लिये कोई दुख नहीं मानना। **अगर सच्चा प्रेम है, सच्ची लगन है तो अपने प्रियतम का दीदार दिल के दर्पण मे जब जहाँ चाहो तभी तब वहाँ कर सकते हो बस।** तुम्हारा सत्य संकल्प परिपूर्ण होवे यही सद्कामना सह श्री प्रभु प्रार्थना। विशेष श्री प्रभु कृपा। यहाँ भोजा भक्त के यहाँ ९ दिवस का अखंड चल रहा है २९-९-६८ को पूर्णाहुति है इसके बाद दो जगहो मैं और अखंड है १०-८-६८ से साबरमती में ४० दिवस का अखंड है सभी प्रेमियो को मेरा जय श्री राम।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय रमेश तथा बालगोपाल ! जामनगर

आशीर्वाद ! दिनांक ९-८-६९

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। श्री गुरुपूर्णिमा का महोत्सव इस बार बड़ा ही भव्य हुआ। विनोद, भगवान, प्रवीण बगैरह यहाँ आने वाले से सभी समाचार मिल ही गया होगा। इस बार का तुम्हारा हृदय के सच्चे उद्‌गारो से भरा हुआ पत्र भी बड़ा ही विलक्षण था। तुमने जो कुछ वर्णन किया था वे सब अक्षरशः सत्य ही थे। पूजन वगैरह का जो समय लिखा था उसमें पाँच मिनिट का भी फर्क नहीं था। यह सीर्फ अन्तः करण की शुद्धि, सच्ची लगन एवं श्री प्रभु की परम कृपा का ही फल हो सकता है अन्यथा ऐसा बनना, अेसा बनता प्रत्यक्ष अनुभव करना असम्भव सा ही है। **श्री प्रभु नाम का प्रताप ही ऐसा है कि बड़े-बड़े मलिन से मलिन व्यक्तिओं के हृदय को,**

अन्तःकरण को निर्मल कर उसमें ज्ञान ज्योति जगा देते है तो तुम्हारे जैसे भावुक, प्रेमी, निष्ठावान के लिये तो कहना ही क्या ? बस! नाम रटते रटते जैसे -जैसे अन्तःकरण कि निर्मलतह निर्मलतम होता जाएगा वैसे-वैसे श्री प्रभु गुप्त रहस्यमय लीलाओं का भी स्वाभाविक दर्शन अनुभव होने लगेगा । बस ! खूब नाम रटो, सुखी बनो बनाओ, इस भयंकर कराल कलिकाल में श्री प्रभु नाम ही श्री नाम महाराज ही भोग, मोक्ष देने में सर्वसमर्थ हैं उन्ही का दृढ़ आश्रय ले लेना चाहिए । सुरेन्द्र, भरत, जलाराम, शास्त्री सभी नाम प्रेमियों को यथायोग्य सह् जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय राम नारायण बाबू !

श्री द्वारका

जय श्री राम ! दिनांक : २८-१०-६६

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। आप का २३-१०-६६ का लिखा हुआ पत्र मिला, इसके पहले कामेश्वर ने भी अेक पत्र इसके बारे में लिखा था, जिसका उत्तर मैंने श्रीराम मास्टर को भेजा था और लिखा था कि बाबू राम नारायण सिंह, मुसाफिरसिंह वगैरह को पढ़ा देना, न मालूम श्रीराम ने उस पत्र का जवाब आप लोगों को सुनाया या नहीं। जब मेरी जगह जमीन भी मेरे नाम नहीं है, तो मैं दूसरे की जगह जमीन की बात ही क्या करु ? फिर भी अगर आप कहते हैं तो मैं आपको क्या मदद करु ? अगर कामेश्वर वह जमीन आप के नाम रजिस्ट्री कर दें और आप का झगड़ा तकरार मिट जाता हो तो मैं कामेश्वर को लिख दूँ। मेरे नाम का जमीन आपको रजिस्ट्री कर दें। किन्तु मुझे तो जगह जमीन, घर गृहस्थी या मुकदमें बाजी का कुछ भी ज्ञान नहीं है। कृपा करके आप लोग मुझे इससे माफ कीजिये तो

अति उत्तम । मेरा इस संसारी झंझट में कुछ काम नहीं है विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिम रामनारायण बाबू !

सादर सप्रेम जय श्री राम ।

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । श्री १००८ श्री परमहँस बाबा के युगलचरणारविन्दों में मेरा साष्टांग दण्डवत प्रणाम उन्हीं महापुरुषों की परम अहैतुकी अनुकम्पा से असे भयंकर कलिकाल में भी जब कि सर्वत्र नास्तिकता अनिति, अनाचार अधर्म की ही वृद्धि हो रही है फिर भी श्री प्रभु नाम स्मरण चिन्तन में, अखंड यज्ञ में किसी प्रकार विघ्न बाधा नहीं है । दिन प्रति दिन श्री गुरुदेव एवं संतों की कृपा प्रेरणा से अखंड यज्ञ का प्रवाह बढ़ता ही जा रहा है, विहार के दुष्काल की बात समाचार पत्रों से सुनता हूँ किन्तु कोई कर ही क्या सकता है ? अपने कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है । सभी ग्राम वासियों को मेरा यथा योग्यसह जय श्री राम ।

आपका ही
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री संकीर्तम मंदिर, द्वारका
दिनांक ३-६-६८

माननीय रामनारायणजी !

जय श्री राम !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । अभी आप का पत्र मिला है और तत्काल ही पत्रोत्तर लिख रहा हूँ । क्या लिखू कुछ खबर नहीं पड़ती कारण

मैं तो आप के अेक बालक जैसा हूँ। कोइ पूर्व के परायपुंज के फल स्वरूप भी श्री गुरु देव की कृपा हुई और उससे इतना बोध हुआ कि मानव जीवन में ही जो कुछ हो सकता है वह हो सकता है और तो सभी भोग योनियाँ है भजन के लिये अेक मानव शरीर ही है। अपना गृहस्थ धर्म का कत्तव्य भी पूरा पालन नहीं कर सका न माता पिता की न भाई बन्धु की, न पुत्र पत्नी की, न सगा सम्बन्धियों की किसी की भी कुछ सेवा न बन सकी फिर भी इस आशा में भजन द्वारा सबों की सेवा यथार्थ रूप में हो जाती है, अपना जीवन तथा शरीर भी गुरुदेव के चरणों में अपर्ण कर दिया और यथा शक्ति यथा संस्कार श्रीराम नाम रटने लगा, रटाने लगा फिर भी जितना होना चाहिए उतना उतना नहीं हो पता। श्री परम हंस बाबा के चरण कमलों में साष्टांग दाण्डवत्, पूजनीय माताजी के चरणकमलों में साष्टांग दण्डवत प्रणाम। सभी ग्रामवासियों को मेरा यथा योग्य सह जय श्रीराम, परिवार के सभी लोगों को यथा योग्य विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

ॐ श्री राम

श्री सपंकला कुंग, अयोध्या

प्रिय भोलाजी !

आशीर्वाद

दिनांक १८-१०-४७

आप का पत्र मिला। पढ्कर बढ्ी खुशी हुई। मैंने आप का पत्र का काफी इन्तजार किया फिर लोगों को पत्र लिखना बन्द कर दिया क्यों कि जब मैं किसी को पत्र नहीं लिखता था उस समय सबके सब पत्र लिखने के लिए आग्रह कहते थे। किन्तु जब मैं आप लोगों के प्रेम परीक्षार्थ पत्र लिखने लगा तो आप लोगों ने मौन ले लिया। खैर कोई बात नहीं भजन कीजिए मस्त रहिए जैसे तैसे भी नाम रट जरूर किजिए क्यों कि दिन पर दिन समय भयंकर होता होगा रहा है। मैंने भी बहुत कुछ सोचा समझा है। किन्तु श्री परम पूज्य प्रातः स्मरणीय श्री गोस्वामी जी के इस पंक्ति को देखकर यह निश्चिय

होता है कि श्री प्रभु के नाम के अनिरिक्त न कोई साधन है और न कोई भजन, सब कुछ श्री प्रभु के नाम रट द्वारा प्राप्त हो सकता है। सीर्फ जरुरत प्रेम विश्वस एवं धैर्य की, जो कुछ भी हम करें धैर्य पूर्वक करते जायें गव संसार में किया हुआ कोई भी कर्म व्यर्थ नहीं जाता तो प्रभु का नाम लिया हुआ कैसे व्यर्थ जायेगा। आज न कल उसका फल हमें अवश्य मिलेगा। क्या हमसे विश्वास अधिक विश्वास कोई और दिला सकता है। वहा की गोस्वामी जी लिखते है कि :- रामनाम मातु पितु, स्वामी समर्थहितु, आस राम नाम को भरोसो राम नाम को। प्रेम राम नाम ही सो नेम राम नाम ही को। जानी न मरम पद दाहिनों व वाम को। स्वारथ सकल, परमार को राम नाम राम नाम सो विहिन, तुलसी न कोई काम को। राम की शपथ सर्वस्व मेरे रामनाम, कामधेनु, काम तरू, मोसे छिन छाम को।

अतः प्रीति प्रतिती, सुरीति सों राम नाम जपु राम, तुलसी तेरो है भलो आदि मध्य परिणाम, ।

मन लगे न लगे, बलात भी नाम रटिये। ऐसा तो सभी को होता है कि कभी मन लगत है कभी नही लगता। इसकी कोई परवाह न करना। श्री गुरुदेव की तिथि यहां भी वड़े विलक्षण एवं नवीन ढग से मनायी गई। असीम आनन्द रहा अन्य सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री सीताराम। गुप्ताजी का क्या हाल है मेरा आशीर्वाद गुप्ता को कह दीजियेगें। कुजी सत्यनारायण को की आशीर्वाद

आपका प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री सद्‌गुरु शरणं ममः

प्रिय भोलाजी, तथा चारुबाबू !

गोरखपुर

सप्रेम श्रीराम स्मरणं ।

दिनांक - २२-५-५०

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है तथा आशा है आप सभी सकुशल सानन्द

होगो। प्रभु की इच्छा हम लोगों का सच्चा दिग्दर्शक एवं पथ प्रदर्शक है। अतः
हम लोगों को चाहिए यथा साध्य अपनी सभी इच्छाओं का समर्पण श्री प्रभु
की इच्छा में विलिन किया करें। मैं गुलाब देवी के विवाह के अवसर पर पहुँच
नहीं सका, यह भी श्री प्रभु की इच्छा, है किन्तु शरीर की अनुपस्थिति रहने
परभी मानसिक सहयोग तो रहेगा ही, साथ ही श्री गुरुदेव की महती अनुकम्पा
हमलोगो का सदा सर्वदा रक्षण करने को प्रस्तुत है ही । चारुबाबू बैजनाथजी
का सेवक श्री फतहलाल पत्र वाहक एक विचित्र ही व्यक्ति है, इसकी सेवा
वृति तथा सद्भाव की प्रशंसा जितनी भी की जाए थोड़ी है। यह परम प्रेमी
है। अतः आप कृपया श्री गुरुदेव की तथा मेरे शरीर के दो चित्र इसे दे देंगे।
विशेष श्री प्रभु स्मरण ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारकाधाम

प्रिय भोलाजी तथा चारुबाबू !

जय श्री राम । दिनांक - २३-५-५६

मैं तो प्रवासी बना ही, आप लोग भवन निवासी रहकर भी एक प्रवासी जैसा ही दीख रहे हैं ठीक है वैभवशाली अकिञ्चन को कब तक ? क्या याद करने लगा ? शैशब की बाल्यकाल की स्मृति अगर बनी रहे तो वास्तव में जवीन में विडम्बना हो ही कहां से ? जब अपना ही बाल्यकाल की स्मृति विस्मृत हो जाती है । तो अन्य अपने से सम्बन्ध प्रेम रखने वाले की स्मृति कहाँ से होवे ? ठीक ही है शरीर संसार की स्मृति तो संसृति का कारण बनती है । किन्तु प्रभु तथा प्रभु मूर्ति गुरु देव सम्बन्धी स्मृति ही तो भवसागर के लिये तरणी तथा घोर तिमिराच्छन अविधा रात्रि के लिए तरुण तरुणी का काम

करती है। बश ! इतना ही पर्याप्त है कि कृपा मूर्ति गुरुदेव प्रदत्त श्री विजय मंत्र "श्री राम जय राम जय जय राम " उनकी असीम अहैतु की अनुकम्पा से अखंड स्मृति बनी रहे, अन्य सभी स्मृतियाँ भले ही तिरोधान हो जावे, जो हो गई, वे हो गई जो बनी हुई हो, उन्हे भी तिरोहन करने की चेष्टा करनी चाहिए कारणकि स्वजन स्नेहबन्धन दुःखत्यज्य है, उससे भी सुदुस्त्यज्य धर्म बन्धन धर्म स्नेह है, इसका तो सर्वथा त्याग ही उपादेय है, श्रेयस्कर है। बाबा बनने वाला भी घर त्याग कर आश्रम बनाता है । पुत्र परिवार त्याग कर शिष्य मंडल, भक्तमंडल बनाता है, तो जैसे संसारी जीव संसार के संभोग से अधर्म से अपने को बंधन में जकड़ लेता है वैसे ही इस कलिकाल में त्यागी बनने वाला .... प्रकार से राग से भी अपने को बांध लेता है । एक के हाथ में लोहे का जंजीर, दूसरे के हाथ में सोने की बंधन रुप दुख्र तो समान ही, वास्तव में श्री प्रभु की ही महत्ती अनुकम्पा । तथा कृपामूर्ति गुरुदेव की अमिय कृपा दृष्टि ही जीव का उद्धार कर सकती है । अन्य सभी कर्म धर्म, योग ज्ञान वैराग्य साधन होकर सिद्ध होते हैं । मुझे भले भुल जाओ न पूर्ण रुप से भूले हो, तो भूल जाने की उत्कट चेष्टा करें किन्तु इतना अवश्य कहता हूँ कि कृपा नाथ गुरुदेव के दिव्यमंत्र को अगर किसी कारण से सम्पति या विपत्ति से, दैन्य या दुर्बलता से, आलस्य या प्रमाद से, संग या संस्कार से कि चिंता भी विस्मृति हुआ हो तो प्राणपन से जोगत करने की चेष्टा करना, दीनभाव, आर्तनाद करुणास्वर से प्रभु को पुकारना वे दयालु हैं कृपालु हैं अपने जनों की पुकार अवश्य सुनते हैं सुने हैं और सुनते रहेगें । अभी प्रभु दया श्री गुरुदेव की प्रेरणा तथा वीर पुङ्गवे इससे आगे मिला नहीं ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

श्री राम

"श्री सद्गुरो शरणांमम"

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय भोलाजी तथा चारुबाबू तथा मदनलालजी ! दिनांक : १-६-'७०

जय श्री राम

आप का प्रेम पत्र प्राप्त हुआ । समाचार विदित हुआ किन्तु सब कुछ होते हुए भी "भगवदीच्छा बलीयसी" जब जीव का पुरुषार्थ करने के अतिरिक्त कर्म फल प्राप्ति में कोई अधिकार ही नहीं तो संयोग वियोग, इष्ट अनिष्ट, हर्ष विषाद की अभयति में चिन्ता की भी गुजाइस नहीं । बच्ची गुलाब के लिये तो पार्वती जिन निरमउ, तेहि सब करहि संभारण यो तो इस शरीर का महत्व क्या है अगर आप लोगों की दृष्टि में कुछ हो भी तो जिसके बदले में वो तो इसकी अनुपस्थिति मे सब तरह आप लोगों के संभाल करने के लिए मौजूद ही है तथा आशा भरोसा है वे महापुरूष हर प्रकार से इस लोक तथा परलोक में हम लोगों की संभाल कर रहे हैं तथा करेगें ही । विशेष प्रभु कृपा, प्रभुका नाम ही सबसे बडा धन तथा सबसे बडा बल तथा स्थायी स्तम्भ है दूसरों की आशा निराशा ही है, अतः आप लोग खूब नाम जपे, सुखी, आनन्द रहे, विशेष श्रीराम कृपा ।

आप लोगों का वही

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय अनुज भाई भरत ! श्री द्वारकाधाम

शुभाशीर्वाद ! १५-२-६१

श्री प्रभु कृपा ही जीव मात्र के कल्याण का अेक मात्र साधन है उसकी कृपा की उपलब्धि का अेक ही उपाय है कि मन, वचन, कर्म से सब प्रकार की चतुराई छोड़ दीन बन, आर्त्तता पूर्वक हम श्री प्रभु को, उस सर्व शक्तिमान,

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

सर्वाधार, सर्वेश्वर को सदैव पुकारते रहें । वे जब जैसी स्थिति में रखें उसी में उनकी परम कृपा, परम करूणा का अनुभव करते सदैव सुखी सानन्द बने रहे कारण कि हम उनकी संतान है; वे हमारे पिता है; परमेश्वर हैं सर्वज्ञ सर्वेश्वर है । घट-घट वासी, अविनाशी, अर्न्तयामी हैं वे अकारण कृपा तु परम दयालु हैं, उनके यहाँ जब कीड़ी से लेकर कुंजर तक की सुनवाई हैं, सब के सार संभार के लिए अवकाश है तो वे मुझे ही क्यों कर भूल सकते हैं ? जो वे सहज कृपालु है तो मुझ पर अकृपालु क्यों कर हो सकते हैं ? जब कल्याण स्वरूप हैं, मंगल रूप हैं तो उनका कोई भी विधान किसी भी प्राणि के लिये अमंगल रूप किस प्रकार हो सकता है ? किन्तु हाँ इतना अवश्य है कि अगर हमारे जीवन में कोई अभद्रता अमंगल दिख रहा है, तो वह हमारे पूर्व कृत कर्मों का ही विपाक है, परिणाम है और वह आया भी है हमारे परिमार्जन, परिशुद्धि के लिये ही अग्नि में जलने के बाद ही कुन्दन सुवर्णा परिशुद्ध होता है, उसी प्रकार प्रभु का भजन करने वाला साधक भी श्री प्रभु कृपा द्वारा ही विपत्ति रूपी, विषमता रूपी, प्रतिकूलता रूपी, वियोग विरह रूपि विषम अग्नि में डालकर कुन्दन सरिस विशुद्ध बनाया जाता है । और साधक जल धैर्य, उत्साह, उमंग, शान्तिपूर्वक श्री प्रभु नाम का अखंड आश्रय लिये इस कसौटी पर पूरे पूरे कस जाता है उसी समय श्री प्रभु अपना सर्वस्व दान कर उसे अपना लेते हैं, उसे अपना बना लेते हैं, उसे अपने अभय चरण कमलों का पूर्ण आश्रय प्रदान कर देते हैं जिससे जीव स्वयं आप्तकाम, पूर्ण काम, परम निष्काम बन जाता है । उसे किसी प्रकार की भी विषय कामनायें रहती ही नहीं । जैसा श्री गोस्वामीजी ने लिखा :-

राम विलास राम अनुरागी, तजही वमन इव जन बड़भागी ।
राम चरण पंकज प्रिय जिनही, विषय भोगवस कर ही कि तिनही ॥

यह श्री भरतलाल जी की स्थिति कैसे हुई ? यह समझो, विचारो, वे कौन सा साधन करते थे जिससे समस्त वासनाओं का अभाव होकर अेक ही

परम प्रबल वासना रह गई थी -

मनते सकल वासना भागी, केवल रामचरण लव लागी ।

इसका साधन क्या ? अेक मात्र यही :-

पुलक गात हिय सीय रघुवीरु, नाम जीह जप लोचन नीरु ।

इसका फल क्या ?

भरत सरिस को राम सनेही, जगजपु राम राम जपु जेही ।

बस मानव जीवन का तो लक्ष्य यही है कि सब प्रकार के विघ्न वाधाओं, कठिनाओं, विपत्ति विषमताओं को धैर्य, उत्साह पूर्वक सहन करते श्री प्रभु परायण बने रहों । सतत श्री प्रभु नाम का रट लगाते रहो । तुम तो मेरे भरत भाई हो, वाणो से तुम्हार क्या प्रसंसा करूं, तुम्हारे स्नेह का मर्म हृदय ही जानता है बस ! भरतजी की इच्छा न रहने पर भी श्री रामजी की आज्ञा समझ संसार में रहकर भी संसार सागर से पार 'हो जाओ, श्री प्रभु का परम प्यारा बनजाओ । पूजनीया माताजी भतीजा, पुत्र, परिवार का पालन पोषण श्री प्रभु सेवा ही समझ कर करते, श्री प्रभुनाम रटते रटते इस भयंकर भवाटवी (संसार सागर) से पार हो जाओ । यही शुभ कामना, शुभाशीष, मालिक साहेब वा. ज्वालासिंह मंगल, राम सदन, राम सेवक बुद्धु सिंहजी रामदेवसिंहजी योगीसिंह जी तथा समस्त ग्रामवासियों को मेरा जयश्री राम पूजारी जी को जय श्री सीताराम परम पूजनीया श्री माताजी के दिव्य चरण कमलों में कोटिशः प्रणाम धर्ममयी पुत्री एवं बाल गोपाल को आशीर्वाद । अखंड की पूर्णाहुति १८-२-६१ मंत्र मंदिर स्थापना श्री रामनवमी पर राजेन्द्र रेडियो मध्येस्थ बिजली बाबू रामपुकार सिंह सागर सिंह राम कृपाल श्री प्रहलाद श्री कृपाल वगैरह सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम ! विशष श्री प्रभु कृपा ।

चाह गई चिन्ता मिटी मनुआ वे परवाह

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

पोरबंदर

प्रिय अनुज तथा चि. आत्मज!

शुभाशीर्वाद ! दिनांक १५-९-६१

पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ। भक्तों का जीवन दुख संकटमय ही होता है । जिससे उनके जन्मजन्मान्तरों के दुःसंस्कारों का क्षय होता है । मन, बुद्धि, हृदय पवित्र बनता है। श्री प्रभु के उपर पूर्णभरोसा, आशा श्रद्धा निष्ठा होती है जिससे दुःखरुप संसार तथा शरीर में रहकर भी दुःख अशान्ति का नहीं बल्कि सुख शान्ति का अनुभव होता है । यदापि विषय सुख सर्वथा मिथ्या, अनित्य एवं क्षण भंगुर है फिर विषयी अज्ञानी, भगवदविमुख प्राणियों को तो वही सुख रुप प्रतीत होता है, और जिसके कारण यह प्राणी सत्य विषय सुख संग्रह में ही अपना अमूल्य जीवन यो ही व्यर्थ खो देता है । यह सभी जानते है कि न तो यह शरीर अपना है और न यह संसार अपना है न तो कोई संगा है यह तो पूर्वजन्मों के कर्मसंस्कारानुसार एक दूसरे का संयोग हो गया है । जिसका परिणाम पूरा होने पर वियोग भी हो ही जाएगा। अतः इसके लिए चिन्तातुर न होकर अपने नित्य संगी, सच्चासम्बन्धी श्री प्रभु के साथ ही सम्बन्ध जोड़ने का प्रबल प्रयास करना चाहिए। क्या? धन दौलत से कोई प्राणी सुखी हो सकता है ? दुनिया का कोई भी व्यक्ति या पदार्थ हमे सुखी नही बना सकता, कारण कि जगत स्वयं ही नाशवान तथा दुखरुप है तो उससे सुख की आशा हो ही कैसे सकती है ? जीवन में कसौटियाँ तो अपनी कांच की काया को कंचन बनाने के लिये ही होती है । और आज तक भक्तों के लिए ऐसी ही कसौटियाँ ही होती आई है । इन कसौटियो पर जो श्री प्रभु का आश्रय लेकर उनके परमशक्तिशाली, भवभयहारी परममंगलकारी नाम की डोर पकडकर खरा उतर गया वही प्राणी श्री प्रभु का प्राण प्यारा बन गया । उनका जीवन जन्म सफल सार्थक हो गया । मुसीबतों से विपत्तियों से घभराना नहीं चाहिए, बल्कि उनका हँसते हँसते सहन करने की शक्ति के लिए ही श्री

प्रभु से याचना करनी चाहिए। उनका नाम दीनभाव, आर्त्तनाद और करुणा स्वर से पुकारना चाहिए । वे दयालु है, परमकृपालु है, परम भक्तवत्सल है, दीनबन्धु आरत हरण है । जब प्राणी मात्र का पालन पोषण करते है तो अपने आश्रय लेनेवाले को भूल ही कैसे सकते है। हाँ! इतना अवश्य है कि वे मुझे भौतिक सुख विलास की प्रचुरता न दे सके किन्तु योग क्षेम तो अवश्य ही वहन करेगें क्योकि उनकी यह प्रतिज्ञा है।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जना पर्युपासते ।
तेषा नित्याभिमुक्ताना योग क्षेम वहाम्हम् ।।२२।।

अतः हर प्रकार की सहायता के लिए गीता : ९।२२। मनुष्य की आशात्याग कर श्री प्रभु को ही अपना सर्वसहायक मानना, बनाना चाहिए। वे जिस स्थितिमें रखे उसी में उनकी परम कृपा मान सुख शान्तिपूर्वक जीवनयात्रा चलानी चाहिए। यह जगत और जीवन दोनों क्षण भंगुर तथा विनाशी है अतः इसमें रहकर उस अविनाशी को अपना ही अपनाना परमधर्म, परमकर्म है । विशेष श्री प्रभु कृपा । परमपूज्यनीया मातुश्री के परमपावन चरणकरमलों में मेरा कोटिशः प्रणाम कहना और जैसे बने वैसे उन्हे सुखी शान्त बनाना प्रभु परायण बनाने का खूब चेष्टा करना । सब भूल जाए एक प्रभु नाते याद रखे। श्री द्वारकाधीश प्रभु की दर्शनकी लालसा है तो अपनी अनुकुलता प्रमाणों आ सकते हो । मुझे कोई इतराज नहीं, किन्तु वहाँ की तथा माताजी की सेवा सर्व प्रथम है जब आना हो तो पत्र भेजना। सभी प्रेमियो को जय श्री राम।

हितेच्छु
प्रेम भिक्षु

श्रीराम
"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय बाबू भाई !

श्री कान्दीवल्ली

सप्रेम श्री प्रभु स्मरणं ।

दिनांक १५-३-५३

आप का भेजा हुआ पार्सल मिला, अनेकों भगवत्सरूप भक्ता तथा बालकों में

प्रसाद वितरण हुआ । श्री प्रभु की करुणा का कोई पार नहीं, दया का कोई अन्त नहीं, उनकी कृपा की वृष्टि की तो मानो सतत झड़ी ही लगी रहती है फिर भी अज्ञानी जड़ जीव उस प्रभु करुण वृष्टि का लाभ उठा नहीं सकते, कारण हम लोगों का हृदय डुंगर माफक उत्तंग है जिस कारण वृष्टि जल किञ्चितमात्र रुक नहीं सकता । दूसरी बात ऐसी है कि यह संसार तो एक समुद्र के समान है जिसमें दुसंग रूप वायु के वेग से बासना रूप तरंगे नित्य निरंतर उठती ही रहती है जो अगाध जल राशि समुद्र को भी व्यग्र तथा चंचल बनाये रहती हैं फिर संसार समुद्र की तो बात ही क्या ? कि जिसका प्रत्यक्ष कोई स्थिति न होते हुए भी सदा दुःख देता ही रहता है । उस तरंग के प्रभाव से, प्रबल पवन के वेग से बचने का तो एक ही उपाय है कि हम कोई ओट या आड़ या आश्रय ले लेवें । इस संसार समुद्र से तरने कही, तरंग में भी पड़ कर स्थिर रहने का, तो एक अमोघ उपाय है वही श्री प्रभु नाम की ओट - सूरदास जी कहते है । "**बड़ी है राम नाम की ओट । कारण गये प्रभु काढ़ि देत नहीं, करत कृपा की कोट (किला) सूरदास पारस के प्रर से मिटत लोह की खोट ।" नानक दुखिया सब संसारा, सो सुखिया जो नाम आधारा ।** यह संरार तो ऐसा ही कुछ विचित्र है लेकिन यह विकारी और विनाशी है, इसलिए इसकी ओर न देखकर निरंतर श्री प्रभु की ओर चित्त लगाये रहना, उन्ही की चिन्तन करते रहना, उन्हीं पर पूर्ण श्रद्धा तथा विश्वास रखे रहना, सदा अपने को श्री प्रभु शरण में अभय निर्भय अनुभव करना, अपनी इच्छाओं को उन्हीं की इच्छाओं में विलीन करना तथा उनके समस्त विधान में अपना परम मंगल, परम कल्याण समझना वस इतना धैर्य, साहस, उत्साह तथा अभ्यास आया कि बेड़ा पार :-

चिन्ता क्या भगवान खेवैया । दुख सुख के सागर में पड़कर,
आशा निराशा की लहरों पर, डूबत तैरत आवत नया । चिन्ता क्या...
प्रेम दिलों में मन भगवान में, बढ़े चलो धीरज धर मन में कर ही देगें पार
खेवैया । चिन्ता क्या भगवान खेवैया
सभी बच्चों तथा प्रेमियो को मेरा जय श्री राम ।
आज साझ से ९ दिवस का अखंड चालू हो रहा है ।

विशेष श्री प्रभु कृपा ।

सामान भेजने की कोई आवश्यकता नहीं, रामजी समर्थ हैं और सर्व व्यापक हैं इसलिए कही और कभी भी उनकी कृपा में विश्वास रखने वाले को कमी नहीं, दुःख नही, चिन्ता नहीं । **साई के दरवार में कमी कछु की नाही, यहाँ भोजन पायहि चूक चकारी माहि ।**

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

|| श्री राम ||

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जय श्री राम !

प्रिय बाबू भाई !

पत्र मिला । समाचार मालून हुआ । मुझे उस विषय में कुछ नहीं करना है । मैं संसार और परमात्मा के सामने त्यागी बन कर, असत्य कर्म करने को तैयार नहीं हूँ । अगर आप लोग अेसा करोगें तो मैं आप लोगों को अपना प्रेमी, हितेच्छु न मान कर मेरी तपस्या, भजन को कलंकित कर नरक में डालने वाला ही समझूँगा । जो बात आप को अेक बार समझाकर कह दिया उसके लिये बार बार मेरे पास क्यों लिखते हो । सबको अपना प्रारब्ध भोगना पड़ता है । भोगना चाहिए । गरीबी तो गरीबी पुरुषार्थ करने का नहीं और सुख भोगने की आशा विडम्बना ही तो है ? विशेष की प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

|| श्री राम ||

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय बाबू भाई !

मुजफ्फरपुर

जय श्री राम ।

दिनांक ७-१२-६०

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द मंगल है । आप का २-१२-६० का लिखा हुआ

पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ। आप लोगों का आनन्द मंगल जानकर विशेष आनन्द हुआ। पूजनीया मातृ श्री के दर्शनार्थ आप नहीं आ सकते इसके लिए कोई दुःख की बात नहीं कारण जगत में सुख-दुःख, हानि लाभ, जन्म मरण, संयोग वियोग सबके पूर्वार्जित कर्माधीन है। जब बरवस जीव के समक्ष आया ही जाया करता है। अतः विवेकी मानव इसके लिए हर्ष शोक नहीं मानता बल्कि ज्ञान के सहारे प्रारब्धानुसार ही इन सबका संघटन और विघटन समझकर इन भोगों को भोगे विना छुटकारा नहीं, यह निश्चय जान सदा प्रसन्न रहना है और भक्त भक्ति के सहारे यह समझ और निश्चि जान सदा प्रसन्न रहना है और भक्त भक्ति के सहारे यह समझ और निश्चय करके कि जो कुछ हो रहा है वह सब के सब श्री प्रभु की प्रेरणा अनुसार ही हो रहा है और जब प्रभु मंगलमय है, आनन्दमय हैं, ज्ञानमय हैं तो उनका विधान अमंगलमय कैसे हो सकता है प्रत्युत जो कुछ भी जो हम लोगों की दृष्टि में भला बुरा प्रतीत हो रहा है वे सबके सब भगवद दृष्टि होने पर मंगलमय ही प्रतीत होने लगता है और अेसी अवस्था में भक्त अपने आप को श्री प्रभु की होने लगता है और अेसी अवस्था में भक्त अपने आप को श्री प्रभु की चरणशरण की छाया में अपने को सर्वदा, सदा, सर्वत्र सुरक्षित मानकर अनुभव कर हर हालत में प्रसन्न रह चैन की वंशी बजाते अपनी जीवन यात्रा पूरी कर अपने नित्य घर की ओर प्रस्थान करता है जिस किसी भी हालत में रहे श्री प्रभु का स्मरण अखंड बना रहे। यही मानव जीवन का लक्ष्य तथा फल है इससे सदैव प्रभु नाम रटन, चिन्तन, स्मरण करते रहे। भाई प्रभु लाल को भी मेरा यही संदेशा और जय श्री राम सभी प्रेमियों को यथा योग्य। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय बाबू भाई सपरिवार ।

जय श्री राम ।

नूतन वर्ष जीवन में नूतन उत्साह, उमंग तथा शक्ति प्रदाता बने ऐसी श्री प्रभु से प्रार्थना सहित मेरी शुभकांक्षा । काल की करालता तथा जीवन की क्षणभंगुरता का विचार करते नित्य नूतन जीवन का मार्ग प्रशस्त करना ही जीवन का नूतन दिवस का प्रारंभ तथा उसकी मार्ग तय कर लेना ही जीवन जन्म की सफलता एवं नित्य नवीनता है । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय बाबूभाई !

जय श्री राम !

आप का प्रेम पत्र तथा हरि भाई के लगन सम्बन्धी कल्याण पत्र आज लगभग दो मास पीछे प्राप्त हुआ । पढकर प्रसन्नता हुई तथा आशा एवं विश्वास भी हुआ कि श्री राम प्रभु की कृपा से सब सकुशल सानन्द सम्पन्न हो गया । **"जहाँ सुमति है वहा सम्पति है । जहाँ कुमति है वहाँ विपति है** किन्तु जहाँ **श्री प्रभु का नाम ह** वहाँ की मति तथा गति दोनो विलक्षण है जो जो नित्य आनन्द एवं कल्याणमयी है कारण कि **श्री प्रभु का नाम तो मंगल भवन अमंगल हारी तथा करतल होहि पदारथ चारी** । अतः श्री प्रभु नाम रुप कल्पवृक्ष की छाया रहने वाला नित्य ही अखंड, अमिट, सुखद, सुशीतल छाया वाली रहती है विशेष हरिभाई तथा उनकी पत्नी को मेरी मंगल कामना, राम भजो ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय जयन्ती, गोकुलदास तथा

अन्य ! वेट निवासी प्रेमीगण ! — बगसरा

आशीर्वाद ।

दिनांक ९-१०-६०

सादर सप्रेम जय श्री राम !

आज दिपावली है । कल्ह नूतन वर्ष है - अतः सभी प्रेमियों के लिये नित्य नूतन संदेश - श्री मंगलमय, कल्याणमय, आनन्दमय, परमानन्दमय, दिव्य चिन्मय नाम का रटन, चिन्तन अधिकाधिक करके लोक परलोक, मानव जीवन जन्म सफल बनावे । यहाँ पर गाँवों गाँव श्री प्रभुनाम का अखंड प्रवाह प्रवाहित होने के कारण तथा लोगों के अति आग्रह के बावजूद कुछ दिनों के लिए रुकना पड रहा है । मंत्र मंदिर द्वारका अखंड पूर्णहुति वगैर का विगतवार हरिदास द्वारा मालूम होगा । यशोदा भैया को मेरा हृदय से बारंबार जय श्री कृष्ण । विशेषश्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जड़ेश्वर, वांकानेर

दिनांक २९-१०-६१

प्रिय जयन्ती, बाल गोपाल तथा

अन्य वेटवासी समस्त

अवालवृद्ध नरनारी

आशीर्वाद ।

प्रेमीजन जय श्री राम

श्री प्रभु कृपा ही जीव मात्र के कल्याण का अेकमात्र साधन है और उसकी प्राप्ति का भी साधन अेकमात्र उनका नाम ही है जिसकी प्रत्यक्ष अनुभूति आप लोगों को हो ही चुकी है । श्री वेट धाम में उठार करोड मंत्र है - यह कोई साधारण तत्व नहीं है । आज से तीन वर्ष पहले जब श्री विनोबा भावेजी श्री रामदासजी महाराज

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

के आश्रम काननगढ़ में गये थे और वहाँ कपाट में रामनाम लिखित मंत्र देखा, तो उन्होंने कहा था ओसा नहीं समझना यह कागज पर लिखा हुआ राममनाम कोई काम का नहीं है - यह तो अटम बम्ब का प्रतीक है। इस सत्य को ओखा, बेट, द्वारका, जामनगर ने खूब अनुभवकर लिया है तो बने इतना दृढतापूर्वक श्री प्रभु नाम रटन करना कराता जिससे अपना राष्ट्र का तथा सारा विश्व का कल्याण होवे। सबका नूतन वर्ष श्री प्रभु के मंगलमय नाम के प्रचार विस्तार द्वारा मंगलमय बने असी हार्दिक कामना तथा श्री प्रभु प्रार्थना। श्री बहादुर मास्टरजी को राम राम। यशोदा मैया (हीरा माँ) की तबियत कैसी है। मेरा खूब-खूब जय श्री राम कहना। हिरा माँ, नर्मदा माँ को मेरा जय श्री राम। विशेय श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय जयन्ती, बाल गोपाल तथा अन्य

आशीर्वाद। दिनांक : २३-८-६९

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। हनुमान प्रसाद जो पत्र लेकर जा रहा है, मेरा अत्यन्त प्रेमीजन है। इसे श्री हनुमानदांडी का तथा प्रेमकुटीर का दर्शन करना है। गाड़ी वगैरह जो कुछ कहे वैसी व्यवस्था कर देना। ठहरने, दर्शन सवारी वगैरह की व्यवस्था कर देना मैं भी तीन चार रोज वाद आने का विचार कर रहा हूँ। अेक दिवस द्वारका रुककर, दूसरे ही दिन आने का विचार है। जन्माष्ट्रमी उपर शायद पालेज जाना पड़ेगा। उन लोगों का अति आग्रह है और वहाँ से अहमदाबाद होकर फिर तिथि पर पोरबंदर आ जाऊँगा। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय रामपुकार बाबू,

सादर सप्रेम जय श्री राम !

आप के श्री प्रभु दत्तजी के नाम का पत्र मिला, समाचार मालूम हुआ । मैं ब्रह्मचारीजी के अति आग्रह के कारण उनके उत्सव में आया था किन्तु वहाँ मेरा मन न लगा, इसलिए कुछ दिन रह कर वृन्दावन चला आया और १-४-६५ को मैं जोधपुर (माडवाड) में जाने वाला हूँ । अब वहाँ से जिधर श्री प्रभु की इच्छा होगी उधर ले जायेंगे । आपने लिखा है कि हम लोगों से कुछ भूल हुई हो तो माफ करेंगे । तो मैं क्या लिखू आप लोगों ने मेरे जैसे एक साधारण मनुष्य का अपना होने के नाते जो मान, प्रतिष्ठा, आदर, सत्कार साथही साथ श्री प्रभु नाम रटन करने का जो सौभाग्य प्रदान किया, उसके लिए तो यह शरीर आप लोगों का सदा ऋणी है और रहेगा । कारण मैं तो जन्म से ही निकम्मा रहा न माता पिता की न कुटुम्ब परिवार की न सगे सम्बन्धी की न गांव वस्ती वाले की मुझ से कुछ भी सेवा बन पड़ी फिर भी आप लोगों ने अपना समझकर अपनाया यह आप लोगों की ही महानता उदारता है । साधु तो नहीं बन सका किन्तु साधु का वेष जरूर वन गया है और श्री प्रभु एवं गुरुदेव की कृपा से इस वेष का भी निर्वाह हो जाये तो बहुत है । साधु तातो जब उनकी अहैतु की कृपा होगी तभी आयेगी । चलते वक्त सवा महिने का अखंड करके तो आप लोगों ने मानों मंदिर के उपर कलश चढ़ा दिया । मेरी मूर्खाई से उस समय कुछ भूल हो गयी, जो कुछ लोगों को मैंने कुछ कठोर शब्द भी कहा उसके लिये सदा दिल में एक कस कसी रहती है उन लोगों से भी प्रार्थना है कि इस भूल को क्षमा करेंगे । समय समय का काम करता है । वह भी एक समय था जब कि दो वर्षों तक श्री राम नामृत की अखंड धारा अविरत्न बहती रही । बस अपना समझकर सब

लोग भूल चुक क्षमा की जियेगा और कृपा कीजियेगा जिससे राम नाम की टेक निवह जाये ।

आपका ही

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारका

प्रिय श्री रामपुकारजी तथा

समस्त ग्राम वासियों ।

सादर सप्रेम जय श्री राम ! दिनांक : २६-६-६५

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है मैंने अेक पत्र वृन्दावन से आप के पत्र के उतर में भेजा था मिला होगा आज आपका पत्र मिला समाचार मालूम हुआ । दो दिन पहले हरदेव यहां से गया है उससे भी आप के ग्राम का समाचार मिला था । समता-पिषयता प्रकृति का धर्म है, अखंडता श्री प्रभु का स्वरूप है । श्री राम भगवान को राज्याभिषेक का समाचार सुनकर न प्रसन्नता हुई और न वनवास के समाचार से कुछ अप्रसन्नता हुई । अेसे अखंड अेक रस श्री प्रभु का स्मरण चिन्तन करने से ही अनेक रंगों में पड़ा हुआ जीव धीरे धीरे अभ्यास द्वारा इस द्वन्द से छुटकारा या सकता है । अन्यथा इस जन्म-मरण हानि लाभ सुख-दुःख, हर्ष विषाद, संयोग-वियोग, रूप द्वन्द दवानल, से छुटना सर्वथा असंभव ही है । काल का प्रभाव प्रति दिन बढ़ ही रहा है । इसमें शक नहीं किन्तु हम लोग इस काल के प्रभाव से बचने का भी तो कोई उपाय नहीं करते तो इसमें परमात्मा या काल का क्या दोष ? प्रभु तो न्यायी है, दयालु है । न्याय के अनुसार दण्डरूप शरीर मिला है । दयानुसार सर्वश्रेष्ठ मानवशरीर उसमें भी दिव्य गुण विवेक जिसके द्वारा हम स्वयं सत्यासत्य निर्णय कर, असत्य को त्याग तथा सत्य के साथ अनुराग करके इस दुख मय संसार में भी सुख अनुभव कर सकते हैं । भूतकाल भविष्य काल

पर अपना अधिकार नहीं किन्तु वर्तमान काल को सुधारने में उसका सद्पयोग करने में सर्वथा स्वतंत्र है । आवश्यकता है धैर्य तथा हिम्मत की । सत्संग मिलना कठिन है क्यों कि वह श्री प्रभु कृपा से ही प्राप्त होता है । किन्तु कुसंग का त्याग करना अपने हाथ की बात है । बस ! विचार पूर्वक जीवन व्यतित कीजिये इसमें जीवन की सफलता सार्थकता है । न तो कोई किसी का मित्र है न पुत्र है न सगा न सम्बन्धी है यह तो सब माया की लीला है । आज है कल नहीं । इसके लिये क्या चिन्ता ? जैसा भी समय आवे श्री प्रभु कृपा लीला समझकर पूरा कर लेना चाहिए । यह मनुष्य आँख्र रखते हुए भी कैसा अन्धा है विवेक रखते हुए भी कितना मूर्ख है कि दस बीस पचास वर्ष जहां रहना है वहां के लिये सभी तैयारियाँ करता है किन्तु जहाँ सदा के लिये जाना है वहां की कुछ भी तैयारी नहीं जो कोई भी साथ नहीं आनेवाला, उसके साथ इतना स्नेह, राग और सदा साथ रहने वाला और जो सदा साथ जानेवाला उसकी कोई परवाह नहीं । बस ! वन पड़े इतना भजन कीजिये, जगत का संग कम कीजिये, यही सार है । यो तो उस ग्राम में जन्म होने के कारण उस भूमि तथा वहां के निवासियों का तो मैं ऋणी हूँ श्री प्रभु उसका कल्याण करें, सद्‌बुद्धि भक्ति, सेवा सयंम, सदाचार सद्‌विचार प्रदान करें जब आप लोगों का ऋण बहुत बढ़ गया और में चुकाने में असमर्थ हो गया तभी तो गांव छोड़कर प्रान्त छोड़कर भाग आया फिर भी आप लोगों की इतनी कृपा है कि मेरे ऋणी को याद करने हैं । इसके लिये बार-बार जय श्री राम ।

श्री प्रभु आप लोगों को सद्‌बुद्धि प्रदान करें असी प्रार्थना । परमपूजनीया माताजी के चरणकमलों में अनन्त दण्डवत प्रणाम मैं अभागा हूँ मेरे से माँ की कुछ भी सेवा न वनसकी भाई धन्य है भाग्यशाली है पुण्यशाली है असे संकट समय में भी माँ की सेवा कर रहा है । सच्चे भाई का बन्धु का परिचय दे रहा है । सभी प्रेमियों तथा ग्रामवासियों को यथायोग्य सह जय श्री राम।

आपका ही

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री रामजीमंदिर,
हाजा पटेल की पोल,
अहमदाबाद

प्रिय रामाशंकरजी !

दिनांक २८-३-६६

आशीर्वाद

श्री प्रभु कृपा ही जीव मात्र के कल्याण का अेक मात्र अमोघ साधन होते हुए भी अपनी अज्ञता जड़ता अहमता ममता के कारण उसकी उपलब्धि से वंचित रह अनादि काल से भवाटवी में भटक रहा है । अघड़ा रहा है पछड़ा रहा है और उस समय तक अघड़ाता पछड़ाता ही रहेगा जब तक उस की उपलब्धि द्वारा अपने को उस अनादि अविधा से मुक्त नही करलेता जो जीव मात्र में इस भयंकर संसार चक्र में डाले हुए है । बस ! सभी साधनाओं का एक मात्र फल यही है कि उस महामहिम घट घट वासी परम अविनाशी सर्वाधार सर्वेश्वर की अघट घटना परीयसी विलक्षण माया से मुक्त करानेवाली भक्ति की प्राप्ति हो, जिसकी प्राप्ति भी सीर्फ उसकी कृपा कटाक्ष से ही संभव है यथा "कोई अेक पाव भक्ति जिमि मोरी देखि भक्ति जो छोरै ताहि । राम भक्ति चिन्तामणी सुन्दर बसै गरुड जाके उर अन्तर परम प्रकाश रुप दिन राति नहि कुछ चाहिए दिया धुत बाति । मोह दरिद्र निकट नहिं आवा, लोभ बात नहिं ताहि बुझाना प्रबल अविधा तम मिटिजाई, हरिसकल सुलभ समुदाई । गरल सुधा सम अरिहित होई, ते हि मणि बिन सुख पाव न कोई । व्याप हि मानस रोग न भारी जिनके बस सबजीव दुखारी । राम भक्ति मणी उर बस जाके दुख तब लवकेश कि सपने हु ताके । चतुर शिरोमणी सो जग माहि जो माणी लागि सुजतन कराहि । ऐसी भक्ति रुप नायिका की सौभाग्य करने वाला जिस दिव्य नाम महाराज का जिसने आश्रय ले रखा है, उसके सौभाग्य का तो वर्णन ही कौन कर सकता है ? भक्ति सुतिय कल करन विभूषण, जग हित विमल

विधु पुषण । तभी तो पूज्यपाद आचार्य चरण श्री तुलसीदासजी महाराज लिखते है तुलसी जाके मुखन ते धोखेहु निकसै राम, ताके पग के पगतरि मेरे तन के चाम । आप परम सौभाग्य शाली है जो श्री प्रभु नाम रटन स्मरण चिंतन एवं प्रचार विस्तार द्वारा अपना अभिवृद्धि करते रहे यही हरि से शुभकामना एवं श्री प्रभु प्रार्थना । विशेष श्री प्रभु कृपा सभी प्रेमियों को जय श्री राम।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय रामशंकरबाबू !

टीक्कर,

सप्रेम सस्नेह जय श्री राम । दिनांक २४-११-६७

श्री प्रभु कृपा स सब आनन्द है, उन्ही की अहैतुकी अनुकम्पा प्रेरणा से इस भयंकर कलिकाल में प्राणी मात्र के कल्याणार्थ सर्वशास्त्र संत सम्मत अेक मात्र अमोघ साधन श्री हरिनाम अखंड महायज्ञ का अखंड प्रावह सुचारुरुप से प्रवाहित हो ही रहा है । विभिन्न नई नई जगहों में कभी शहरों में कभी गाँवो में । यत्र तत्र श्री अखंड चालू होने कारण यदा कदा यत्र-तत्र परिभ्रमण करना ही पड़ता है । जिससे पत्र व्यवहार भी व्यवस्थित रुप से नहीं हो पाता । आप का पत्र मिला था किन्तु पत्रोत्तर यथा समय न भेजने का भी यही कारण हुआ, योतो आपकी स्मृति सदैव बनी रही और पत्रोत्तर देने की भी प्रबल इच्छा होने पर भी कुछ आलस्य प्रमाद और अव्यवस्थित स्थिति होने से न भेजा जा सका । वास्तव में पत्रोत्तर बगैरह की भी सच्चे प्रेमी के लिए कोई आवश्यकता नहीं कारण प्रेमी प्रेमास्पद का अन्तर मिलन तो सदा बना ही रहता है । वियोग की दशा में वह प्रेम का लगन और तीव्र और विलक्षण बन जाती है । वैसी दशा में तो किसी प्रकार के प्रत्यक्ष मिलन की अपेक्षा के बजाय वियोग ही (विशेष योग) विशेष सुखकारी अह्लादकारी एवं लाभ

कारी प्रतीत होता है । आपने अपने पत्र में औसा निवेदन किया था इतना नाम स्मरण करने पर भी काम क्रोध आदि विकार निर्मूल नहीं हो रहे हैं तो वास्तव में उन्हे न निर्मूल करने की आवश्यकता है, न कोई उन्हे निर्मूल ही कर सकता है । वहाँ तो सीर्फ **स्थानान्तरण करने की आवश्यकता है । जो हमें भोग की संसार की विषय की कामना है उसे सीर्फ भगवान की कामना में बदल देने** की जरुरत है । जैसे विषय कामना होने पर जो कोई व्यक्ति या पदार्थ उस कामनापूर्ति में विघ्नरुप होता है । उसके प्रति, क्रोध उत्पन्न होता है औऱ जो उसके सहायक बनता है, उसके प्रति लोभ पैदा होता है, दूसरे शब्दो में उसे ही राग औऱ द्वेष कहते है, या शत्रु मित्र कहते है । बस यही कामना बदलकर अगर भगवान में जोड दी जाए तो जो जो व्यक्ति या तत्व भगवत् भजन में विघ्न डालेगा भजन नहीं करने देगा ऐसे बुरें व्यक्तियों पदार्थो, तत्वों या दुर्गुणों पर क्रोध होगा जिससे अनयास ही शत्रुवत उनका त्याग हो जाएगा और सतपुरुषो, सत्य पदार्थो सत्तत्वों एवं सदगुणों में राग प्रेम होने लगेगा । यह सब समझ ने और साधन प्रयत्न करने पर भी ये दुष्ट अंगर अपने उपर आक्रमण करे तो उनकी ओर ध्यान ही न देकर सर्व समर्थ श्री प्रभु एवं उनसे विलक्षण शक्तिशाली, प्रभाव शाली सर्वमंगलकारी, अखिलामंगलहारी, प्रेम प्रमोद प्रसारी श्री मंगलमय कल्याणमय आनन्दमय परमानन्दमय श्री प्रभु नाम का ही दृढ़ आश्रय अटूट श्रध्धा अविचल विश्वास अदभ्य उधोग तथा अखंड प्रयास चालू रखना चाहिए । जैसे गंदीनाली के अन्दर पड़ी हुई गन्दगी रोज रोज सड़ती रहती है और उपर के आवरण के कारण गन्दगी दुर्वास दुर्गन्धी उतनी अधिकरुप से बाहर नही आती किन्तु जब उसी नाली को अन्दर से जमी हुई मैल को गन्दगी को साफ किया जाता है उस समय बाहर चारो ओर भयंकर दुर्गन्धी फैलने लगती है । इसका यह अर्थ नही है कि नाली साफ नहीं हो रही है। नाली अन्दर से साफ हो रही है, इसी कारण बाहर इतनी दुर्गंध मालूम पड़ती है । इसी प्रकार अपने अन्दर मल बिकार जन्म जन्मान्तरों से भरे पड़े हैं जब

नाम रटन स्मरण करने लगते है तब नाम महाराज खोद खोद कर उस लगे हुए मलविकार कामक्रोधादि को बाहर निकालते है । इसी से नाम जापक को साधक को तीव्र साधना, अनुष्ठान करने पर काम क्रोधादि विकारों का विशेष अनुभव होता है इससे घबराना नही । राज देव, बिजली, यमुनाबाबू श्री योगेन्द्रबाबू श्री केदारबाबू वगैरह अन्य सभी प्रेमीजनों को मेरा जय श्री राम।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री संकीर्तन मंदिर,
पोरबंदर

प्रिय कमला शंकर, श्रेष्ठ नारायण,
सुदामा, पान्डेयजी, धर्मदेवजी तथा
अन्य समस्त प्रेमीजन !

आशीर्वाद सह जय श्री राम दिनांक १८-७-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । श्री प्रभु नामका प्रचार प्रसार भी उन्हीं की अहैतुकी प्रेरणा कृपा से प्रतिदिन अनायास ही बढ़ता ही जा रहा है । तुम्हारा पत्र मिला, समाचार मालूम हुआ। अभी तो इतना भरचक प्रोग्राम हो गया है कि विचार करना पड़ रहा है कि क्या करूँ ? कल्ह तीन जगहों का नौ-नौ दिवस का प्रोग्राम है अब किस प्रकार उन जगहों में पहुँचा जाए और किस प्रकार तुम्हारे यहाँ आया जाए ? यह एक समस्या उपस्थित हो गई है । पाटन, जामजोधपुर, रतनपुर, इन तीन जगहो में नौ-नौ दिवस के लिये अति आग्रह है । इसके अलावा वावड़ी, उपलेटा के लिए भी आमंत्रण है । अगर इन सब जगहों का प्रोग्राम रखा जाए तो तुम्हारे यहाँ ठीक समय पर पहुँचना कठिन है । फिर भी तुम्हारे यहाँ का प्रोग्राम निश्चित रखा है इधर उधर से फिर कर -८-८-६८ या ९-८-६८ तक पोरबंदर लौटकर आ जाउँगा । और ९-८-६८ को कीर्ति मेल में यहां से ४ बजे निकल कर सोमनाथ मेल में सवेरे ६ बजे

अहमदाबाद पहुँच जाऊगा । ऐसा अभी तक निश्चित है । बाद मे हेर फेर होने पर पत्र लिखूँगा । तुम भी उसके पहले पत्र पोरबंदर भेजना। वहाँ से किसी को भेजने की आवश्यकता नहीं है। व्यर्थ पैसा क्यों बिगाड़ना । मेरे साथ एक या दो आदमी आयेगा । विशेष श्री प्रभु कपा ।

हितेच्छु
प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय कमला शंकर, श्रेष्ठ नारायण,
पांडेयजी, सुदाम चौवेगी, धर्मदेवजी तथा
अन्य सभी प्रेमीजन !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। मेरा स्वास्थ्य भी अब ठीक हो गया है । पोरबंदर तथा पोरबंदर के आजू बाजू के ग्रामों से होकर लगभग देढ मास वाद द्वारका होते हुए चार दिवस पहले यहाँ आया हूँ । तुम्हारा कुशल समाचार का पत्र द्वारकाजी में मिला था । पोरबंदर के संकिर्तन मंदिर का नूतन निर्माण हो रहा है । श्री द्वारका धाम का मंदिर बड़ा ही भव्य बन गया है। नीचे का सिंहासन का भी बिलकुल परिवर्तन हो गया है । महासंकीर्तन का चित्र भी पुनः अनामल पेन्ट कर दिया गया है । तीनों जगहों में श्री अखंड यज्ञ बड़े ही सुन्दर ढंग से चल रहा है । इस बार विजयादशमी के दिवस से ही कुछ ऐसा समय आया कि न तो स्वास्थ्य ही अच्छा रहा न कही भी व्यवस्थिति प्रोग्राम हो हो सका । श्री प्रभु की मर्जी तुम्हारा चैत्र नवरात्रि का नवाह अखंड अेक कम्पाउन्ड में बड़ा ही सुन्दर रहा इसकी सूचना मिल गई थी। अब १-६-६९ से १५-६-६९ तक महुवा का प्रोग्राम है उसके बाद पुरुषोत्तम मास आ जाता है । वहाँ से सीधे द्वारका लौटने का विचार है ! इसबार श्री गुरुपूर्णिमा

तथा श्री गुरुतिथि का भी उत्सव श्री द्वारका धाम में ही मनाया जाए ऐसा सबों का विचार है । आगे श्री प्रभु इच्छा । तुम लोग खूब आनन्द में होगे। सक्सेना साहब तथा अन्य प्रेमी सभी साहेबों को मेरा जय श्री राम, सभी नाम जापकों प्रेमियो को मेरा श्री राम जय राम जय जय राम। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय वैधजी !

वेरावल

सादर सप्रेम जय श्री राम ! दिनांक ७-११-६८

श्री प्रभु कृपासे सब आनन्द है। आप का कुशल समाचार प्राप्त कर विशेष आनन्द । तलाजा से भी आप का पत्र मिला था, अस्त, व्यस्त स्थिति होने से पत्रोत्तर नहीं दे सका किन्तु आप के चीरंजीवि श्री प्रोफेसर साहेब से मुलाकात हुई उनसे आप का सब समाचार भी कहा, आप का पत्र भी उन्हे पढ़ाया और श्री रामनाम वंदना की पुस्तिकाभी आप के लिये उन्हें प्रदान किया । विशेष क्या लिखू एक ही अर्न्तयामी घट घट में बिराज रहा है और व्यक्त अव्यक्त रुपेण स्वंय सब कुछ कर करा रहा है वही सबका एक मात्र मातापिता, भाई बन्धु, गुरुसुहृदय है और वास्तव में उसी के नाते रिश्ते, अस्तित्व के सहारे अपने सभी का नाता रिस्ता या सम्बन्ध सहारा है अन्यथा इस संसार में न कोई किसी का सगा हैं न कोई किसी का सम्बन्धी ! भ्रान्तिमात्र ही है । आप को ऐसा लगा कि मेरा आगमन आप के निर्मित्त ही हुआ किन्तु मुझे तो ऐसा लगा कि आप जैसे व्यक्ति के समागम से, सत्संग से मेरी महुवा यात्रा सफल हो गई। मै तो एक चिर प्रवासी हूँ अनन्त काल से प्रवास चालू ही है । जब उस अनन्त की, करुणावरुणालय, दीनजनशरणालय, राजराजेन्द्र राजीवलोचन, घटघटवासी, परमअविनाशी राघवेन्द्र की दया द्दष्टि होगी, तभी इस प्रवास से

मुक्त होकर उसकी नित्य अभय, निर्भय चरणशरणरुपि निज धाम की स्वस्वरुपि, स्वधाम की उपलब्धि कर यह अनन्त काल का प्रवासपूर्ण होगा । इस प्रवास के अन्दर उनके अनेक कृपापात्र सजग सचेत प्रावसियों का मंगलमय समागम होगा, यह भी कोई कम आनन्द की बात नहीं । परमभाग्य ही है ? बस अपने लिये तो इतना ही पर्याप्त है कि अपने बाप का, अपने गाम का नाम न भूले, जिसके लिये आप का सतत प्रयास चालू ही है और उसीकी कृपा प्रेरणा से चालू ही रहेगी । जिसे अेकबार उसका इस्क लग गया, उसके लिये विषयरस विषरुपी बन गया । भवसागर सुख ही जानेवाला हैं विशेष श्री प्रभु कृपा । अन्नकूट तक पोरबंदर, द्वारका, जामनगर तक रहुँगा बाद में गुजरात की तरफ जाना होगा । आज पोरबंदर जा रहा हूँ सभी प्रेमियों को मेरा जय श्री राम।

संकीर्तन मंदिर पोरबंदर सौराष्ट्र । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय वैजनाथजी तथा चिरंजीलाल ! दिनांक १५-४-५३

आशीर्वाद !

श्रीराम प्रभु की कृपा से कल्ह से तुम्हारे बंगले श्री अखंड अेक मास के लिये चालू हुआ है किन्तु आज भगवत आदेश हुआ कि सभी लोगों को इस पुरुषोत्तममास में विजय मंत्र लिखना लिखवाना चाहिए। अतः इस भगवत् आदेशानुसार सूचित करता हूँ कि पत्र मिलते ही सपरिवार स्वयं मंत्र लिखना शुरु करते और अपने सगे सम्बन्धियों मित्रों को भी जगह जगह सूचना करके मंत्र लिखाओ। एक मास पीछे मंत्र भेजने की सूचना मिलेगी। हम लोगो की मंत्र संख्या सबसे न्यून रहतीहै जैसा कि परसाल दो वर्षो में देखने में आया। अतः बेगाड़ी न करके सच्चे दिल से और समय लगाकर मंत्र लिखेंगे तो परम

कल्याण होगा । अधिक से अधिक मंत्र लिखो लिखाओ । वत्सराज, राधेश्याम, श्यामसुंदर, युगल चौधरी, सब को सूचित कर देना। राधे बाबू का पत्र दूसरी ओर है दिखा देना ।

तुम्हारा हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय रामनेत तथा बालगोपल !

बम्बई
दि. १४-१-६७

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा सब आनन्द है । मेरे गाँव में कोई खास तकलीफ नहीं था । अेक फोड़ा हो गया था, वह तो बिल्कुल ठीक हो गया । कोई चिन्ता करने जैसी बात नहीं । अभी अधिकतर गुजरात प्रान्त में जाना आना होता है और उसका कोई निश्चित प्रोग्राम भी नहीं रहता है । जहाँ एक दिन के लिये गया, वहाँ आस पास के गाँवों में जाते आते महीनों लग जाता है । राज रोज नई जगहों में जाना और फिर जंगली इलाका । न कोई पत्र व्यवहार हो सके न तार चिठ्ठी भेजी जा सके । तुम्हारा पत्र द्वारका, जामनगर, बड़ौदा से फिरता फिरता आज यहां मिला है २१-१-६७ को फिर गुजरात में जाने वाला हूँ । कामेश्वर हमेशा कभी जोशी के यहां कभी गुलाब कलकता वाला के यहाँ अपनी दीनता रोया ही करता है । कमी कहता है मुझे रहने का घर नहीं है, कभी लिखता हैं बहुत बड़ी तकलीफ है, मैं जो भी जहां भी रखे उसके यहां नौकरी करने को तैयार हूँ चाहे जोशी चाहे बाबूभाई चाहे गुलाब चाहे काकूभाई जो भी नौकरी रखें वहां रहने को तैयार हूँ । इसका मतलब कुछ समझ में नहीं आता । शाले को साथ लेकर द्वारका, जामनगर, वृन्दावन भटकने के लिये पैसा है और घर में खाने के लिये पैसा नहीं, तो ? बनिया बाबा कहने से गुड़ देने वाला जब अपने संगे सम्बन्धी के साथ नहीं बनता तो दूसरा कौन

किसको क्या मदद करे दूसरे आगे रोना अपना दीदा खोना । परम पूजनीय माताजी के पवित्र चरण कमलों में मेरा दण्डवत प्रणाम । उनको खुशी रखना इसी में तुम सबों का कल्याण है । मुझे कोई तकलीफ नहीं मैं पूर्ण आनन्द में हूँ । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम ज़य जय राम"

श्री द्वारका धाम

प्रिय आत्मस्वरुप आत्मज कामेश्वर !

दिनांक : १४-३-६४

आशीर्वाद !

श्री प्रभु की करुणा ही जीव मात्र के परम कल्याण का अेक मात्र साधन है । किन्तु अल्पज्ञ जड़जीव अपनी अनादि जड़ता के कारण उस मंगलमय प्रभु के परम मंगलमय विधान को न समझने के कारण ही अकारण दुःखी सुखी हुआ करता है । अपने मन के अनुकूल परिस्थितियों को पाकर हर्ष का, और मन के प्रतिकूल परिस्थितियों को पाकर विषाद का अनुभव कर सदैव इस द्वान्दात्मक मन की वृत्तियों के संघर्ष में पड़कर कमी दुखी, कभी सुख कभी हर्ष़, कभी विषाद का अनुभव करता जीवन पर्यन्त जीव आकुल व्याकुल एवं अशान्त बना ही रहता है और अन्तोगत्वा इस शरीर, संसार का बलात् त्याग कर अपने भावीजीवन के लिये भी उसी अशान्ति, अधीरता, व्याकुलता, विकलता का बीज बनकर अनेकानेक योनियों में भटकता ही रहता है इसी का नाम भवाटवी याने संसार चक्र, जन्म-मरण का चक्र, संसृति हैं, जिसमें जीव अनादि काल से संसरण कर रहा है और उस समय तक संसरण (भटकना) करता ही रहेगा जब तक उसको उस सत्यतत्व का अविनाशी तत्व का आनन्दमय तत्व का अनुभव न हो जाए, इस परम सत्य की शोध तथा अनुभूति करने के लिए ही श्री प्रभु की अहैतुकी कृपा से जीव को मानव शरीर प्राप्त होता है और

हम लोगों को भी हुआ है । अतः श्री प्रभु की इस परम देन को, अहैतुकी अनुकम्पा के फल की ओर से विमुख उदासीन न होकर बल्कि उसकी ओर पुर्ण सन्मुखता रखते हुए अपने मानव जीवन को सफल सार्थक बनाने का प्रयास अवश्य करना चाहिए । यों तो बहुरंगी मन की लीलाएं बहुरंगी होगी ही उसकी ओर ध्यान न देकर अपने दासरूप मन को अेक रंगी बनाने का ही विशेष प्रयत्न करना चाहिए । जैसे मानव देह अेक उस परम प्रभु की विचित्रकला का प्रत्यक्ष प्रदर्शन तथा जीव के लिए अेक परम देन है, उसमें भी अति विचित्र एवं विलक्षणा इस मानव शरीर में जीव के साथ मन का समावेश है जो जीव मात्र की तो बात ही छोड़ दें, विवेकी मानव मात्र जीव को नट मर्कट की तरह नचाया ही करता है इसी कारण से श्री कबीरजी ने लिखा है :-

बाजीगर के बन्दरा, अेसा जीव मन साथ ।
नाना नाच नचायी के, राखत अपने हाथ ॥
मन के बहुतक रंग है, छिन छिन बदलै सोई ।
अेके रंग में रंग रहा, अेसा विरला कोई ॥
मन के मते न चाहिए, मन के मते अनेक ।
जो मन पर असवार है, सो साधु कोई अेक ।

अतः अपने विवेक विचार सत्य का निश्चय और अपने अविवेकी बहुरंगी मन का अनादि असत्य निश्चय को जोड़ने तथा विवेक द्वारा सत्य निश्चय में जोड़ने का प्रबल प्रयास अभ्यास करते रहना चाहिए, यही मानव जीवन की उपादेयता है । यों तो श्रीराम नाम अढ़तिया जी परम भक्त हो गये हैं उनका सरल एवं परम सार गर्भित उपदेश अेक ही था :-

जा गली में मूत है, वा गली में पूत ।
राम भजे तो पूत है न तो मूत के मूत ॥

हमारी यानी देह की तो उत्पति ही अेक मलीन तत्व एवं स्थल से हुई

है, फिर भी हम अगर चाहें तो पूत याने परम पवित्र बन सकते है । पिता पुत्र का सम्बन्ध भी तो दैहिक होते हुए वस्तुत तात्विक ही है कारण कि वास्तव में पिता पुत्र का आकर्षण का कारण भी **देह नहीं बल्कि आत्मा ही है,** नहीं तो आत्माविहिन पिता पुत्र में शरीर के प्रति भी आकर्षण होना चाहिए किन्तु वह देखने में नही आता । अतः आत्म दृष्टि से तो हम दोनों अेक ही है और अगर यह दृष्टि सुदृढ़ हो गई तो सदैव अेक ही रहेंगे और दूर रहकर भी निकटस्थ ही सदैव है और रहेंगे भी । **तुम जब अपने ही तत्व हो अपराध कैसा और उसकी क्षमा कैसी ?** अपनी समझ का विकास करो और अपने नाम को सार्थक बनाने का यत्न करो इसी के लिए सब प्रयास । तुम कामरूप नहीं हो - कामेश्वर हो, कामनाओं के ईश्वर हो, स्वामी हो, इस रूप को पहचानों इस प्रभु नाम को जीवन में उतारो यही साध्य है । श्री प्रभु का नाम ही ऐहिक एवं परलौकिक जीवन का अेकमात्र साधन है । पूजनीया मातुश्री को कोटिशः साष्टांग प्रणाम भाई भरत तथा बाल गोपाल को यथा योग्य समस्त ग्रामवासियों नाम प्रेमियों को मेरा सादर सप्रेम जय श्री राम पुजारी श्री को जय श्री सीताराम । अखंड यज्ञ की पूर्णाहुति का आमंत्रण जा रहा है विशेष भी प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय रामनेत तथा कामेश्वर !

दिनांक २०-६-६२

आशीर्वाद

भोला का पत्र आया है उसके उपर लिखा हुआ तुम्हार पत्र भी भोला ने साथ ही भेजा है। किन्तु तुम लोगों के पत्र से कोई निश्चित बात समझ में नहीं आती है । मैने इसके पहले एक पत्र रामनेत के नाम से लिखा था किन्तु अभी तक उसका कुछ जवाब नहीं आया । रामनेत का और तुम्हारा पत्र

जोशी के उपर आया था, वह मैने पढा किन्तु किसी को इतना दुराग्रह क्यो करना चाहिए। घर की बात घरमें निपट जावे, तो बाहर फैलाने की क्या आवश्यकता? माताजी का पूरा समाचार दो । अगर मेरा आना तात्कालिक अनिवार्य हो तो अभी आऊँ नहीं तो थोड़े समय बाद में आऊँ, कारण कि छतौनी में ज्यादा दिन रहने पर लोगो का रातदिन आना जाना लगा ही रहेगा और ऐसी स्थिति में अकारण ही बोझ बढ़ेगा। काकू और जोशी कुछ विचार कर रहे थे । परमहंस जी की बात पर बार-बार चिन्ता करने की आवश्यकता नही कारण कि संत तो मस्त होते हैं । अपनी मस्ती में बोलते रहते हैं । उनका रहस्य समझना कठिन है । अगर ऐसा ही हो तो भी अपना क्या चारा है ? जिसका समय पुरा होगा उसको जाना ही पड़ेगा । जो आया है, उस सभी को भी जाना तो है ही, वर्ष दस वर्ष पीछे या आगे । उसके लिए चिन्ता करने की, हर्ष शोक की कोई बात नही हाँ इतना ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि जाने वाले के दिल में कोई वासना न रह जाए अगर वासना रहे भी तो प्रभु प्राप्ति की प्रभु नाम रटन की । उसके लिए अपने से बन पडे उतनी अधिक तत्परता के साथ उन्हे हर प्रकार प्रसन्न रखने की चेष्टा करनी चाहिए और जगत की व्यवहार की बातों को विस्मृत कराकर, सदा श्री प्रभु नाम की स्मृति कराते रहना चाहिए । यही सब से बड़ी में बड़ी सेवा है। यही संतान का माता-पिता संगे सम्बन्धियों के प्रति सच्चा कर्तव्य है । श्री प्रभु में पूर्ण श्रद्धा विश्वास रखनी चाहिए । वे सर्व समर्थ हैं और सदा दीन-दुःखीयों के सहायता के लिये तैयार ही है । बस! जैसा समाचार हो वैसा लिखना, अगर आवश्यक जान पड़े तो अविलम्ब तार करना। पोरबंदर या द्वारका या काकू के पास बम्बई। उसका तार का पता हैः-

काकू के उपर ही तार या टेलीफोन करना। विशेष श्री प्रभु कृपा । पूजनीय माताजी के चरणों कमलों में दण्डवत प्रणाम कहना । सभी प्रेमियों को

जय श्री राम ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

वालूघाट

प्रिय, सुधीर !

दिनांक ३-३-६४

आशीर्वाद !

तुम्हारा २० जनवरी का लिखा हुआ पत्र मिला । तुम्हारा पत्र पढ़ने से ऐसा पता चलता है, इसके पहले का लिखा हुआ मेरे पत्र का अच्छी तरह अध्ययन किया नहीं, नहीं तो तुम्हारी शंकाओं का समूल निराकरण हो जाता । ख्वैर अभी भी समझों तुम्हारे प्रश्नों से ऐसा प्रतीत होता है कि तुम विदेशियों के बाइजाल में फँसते जा रहे हो । अन्यथा इस तरह का प्रश्न असम्भव था । जब कि सैकडों वर्ष पूर्व पूज्य श्री १०८ श्री स्वामी विवेकानन्दजी द्वारा Parliament of Religion विश्व धर्म परिषद में यह सिद्ध कर दिया जा चुका है कि विश्व के अन्दर कोई धर्म नाम को चरितार्थ करने वाला कोई धर्म है तो वह सनातन धर्म ही है जिसे हम मानव धर्म कहते हैं जो मानव धर्म एक मूल वृक्ष के समान हैं और उतने जितने मतमतान्तर यानि धर्म है वे सब के सब उस मूल वृक्ष की शाखाएँ हैं, डालियाँ हैं, एवं पत्तों के सामान हैं । अतः सनातन धर्म ही बाद में मानव धर्म, फिर आर्य धर्म, फिर सिन्धु के किनारे रहने वाले निवासियों को बाहर से आने वाले अनार्यो के शुद्ध शब्द, सिन्धु का हिन्दू अपभ्रंशशब्द का प्रयोग होने से हिन्दू से धर्म कहलाने लगा । जैसे Indias के किनारे रहने वाले लोगों को East India Company के लोग Indians अपभ्रंश शब्द प्रयुक्त करने लगे । अतः संक्षेप में धर्म शब्द का अर्थ है धारणशक्ति, मूल तत्व यानि जिसके अधार पर समस्त सृष्टि के समस्त तत्व अपने अपने स्वरूप में स्थित है, वही मूल तत्व मूलाधार यानि ईश्वर परमात्मा

सृष्टि में सबसे पहले मानव की सृष्टि इसी भारतवर्ष में हुई । उसका प्रत्यक्ष प्रमाण नित्य रहने वाला शब्द के द्वारा ही निश्चित होता है । मनु शब्द से मानव शब्द बना है । अतः जब मनु का अवतार हुआ तभी से मानव अथवा मानवधर्म यानि विश्व धर्म यानि प्राणी मात्र के कल्याण सुख समृद्धि के विकास करनेवाला धर्म का प्रारंम्भ हुआ । जो उसके अरबो वर्ष पूर्व हो चुका था । यही मनु का चलाया हुआ मानव धर्म या वर्तमान हिन्दू मनु का चलाया हुआ मानव धर्म या वर्तमान हिन्दू धर्म है । और यद्यपि हिन्दूओं का भूल ग्रन्थ वेद है जो परमात्मा की मूल वाणो है, पहेल वह लिपि बद्ध नहीं थी । किन्तु कलान्तर में मानव की धारणाशक्ति तथा स्मरण शक्ति तथा मेधाशक्ति क्षीण और निर्बल होने के कारण उसको यानि ऋषियों के अव्यक्त ज्ञानतत्व को जो स्वभाव से ही अनन्त जिसकी अभिव्यक्ति के लिए भाषा भी अपूर्ण है । फिर भी यथा साध्य वेद को अनेकों ऋषियों ने अपने शिष्य प्रशिष्य के द्वारा समान्य जनों के लिए बोध गम्य बनाने के लिए लिपि वद्ध कराया या उसे ग्रन्थ का रूप दिया ।

स्वरूपतः तत्वतः हिन्दूओं का धर्मग्रन्थ और वेद यानि सनातन अनन्त परमात्मा की वाणी है फिर भी आधुनिक विद्वानों तथा धर्मावल्वियों सिद्धान्तों द्वारा वर्तमान जर्मनी में पाये जाने वाला हस्त लिखित अर्थ वेद का ग्रन्थ चार हजार वर्ष का है जिसमें समस्त अस्त्र शस्त्र तथा विज्ञान तत्त्वों का विश्वेषण किया गया है, और इसी ग्रन्थ के अध्ययन तथा अनुसंधान द्वारा वर्तमान भौतिक ऐटम वगैरह के विकास का आधार हिटलर तथा उसके संस्कृत भाषा विज्ञविद्वानों वैज्ञानिकों द्वारा स्थापित किया गया ।

अतः सबसे प्राचीन तथा मूल धर्म कोई है तो हिन्दू धर्म है और सब से प्राचीन और मूलग्रन्थ है तो वह वेद है । जिसमें सब प्रकार के भेद भाव से रहित प्राणी मात्र के लिए सूत्र रूप अंकित उदार भाव भरे पड़े है :-

सर्वे भवन्त सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग् भवेत् ।

ओम् शान्ति शान्ति शान्ति ।

इसाई धर्म मुसलमानों का ही भला चाहता है किन्तु हिन्दु धर्म प्राणी मात्र का कल्याण सुख समृध्दि चाहता है । किसी वर्ग या अमूक समुदाय या जैसे ईश्वर भेदभाव रहित सब का भला करने वाला है उसकी प्रकार हिन्दू धर्म । यही इसकी महानता उदारता, विशालता, तथा अनन्तता का प्रमाण है । जो और कहि नहीं स्वामी विवेकानन्द द्वारा स्थापित वेदान्त Society जो अभी अमेरिका के अन्दर काम कर रही है । यही इसकी प्राचीनता का प्रमाण है ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय केदार ।   महुवा

आशीर्वाद ।   दिनांक : ११-६-६४

श्री प्रभु की कृपा से सब आनन्द है । तुम्हारा पत्र द्वारका होकर आज ही मिला है । और तत्काल ही पत्रोत्तर लिख रहा हूँ । तुम्हारा विवाह तो सम्पन्न हो गया होगा । फिर आशीर्वाद पत्र भेज रहा हूँ । तुम्हारा भावी जीवन नीतिमय, धर्ममय, भक्तिमय, सुखमय, आनन्द मय बने यही हार्दिक सद्भावना सह श्री प्रभु प्रार्थना श्री शंकरजी का उपदेश धारणा कर गृहस्थ्य जीवन बिताओ तो सदा मंगल ही मंगल है । "मंगल भवन अमंगलहारी, उमा सहित जेहि जपत पुरारी ।" गृहस्थ होने पर सपत्ती भजन करना चाहिए जिससे भावी संतती भी भक्ति परायण बने । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गजनारायण !

श्री बेट शंखोद्धार

रमणाद्वीप

आशीर्वाद !

दिनांक ११-५-'५४

श्री प्रभु की लीला, महिमा का कोई अन्त नहीं उनकी करुणा का कोई पार नही, न जाने वे कब क्या करते कराते है। यह किसी जीव को खबर भी कैसे पड़े, वह तो अल्पज्ञ जड़जीव जो ठहरा। आज भी जानकी नवमी के दिव्य शुभ अवसर श्री प्रभु द्वारिकाधीश की कृपा प्रेरणा से सूचित करते महान हर्ष होता है अगामी ज्येष्ठ सुदी दशमी (गंगादशहरा) गुरुवार तदनुसार १०-६-५४ से १३ मास का अनुष्ठान श्री बेटद्वारका के जंगल में वहां से तीन मील पर स्थित श्री हनुमानजी के निर्जन स्थान में उन्ही की कृपा प्रेरणा से प्रारंभ होगा। कष्ठ मौन रहेगा, मिलना जुलना, चिठ्ठी पत्री सब बन्द रहेगा तो आप लोगों को प्रेम भाव हो तो इसी तरह मास तक स्वयं अधिक से अधिक नियम पूर्वक विजय मंत्र लिखे तथा अपने इष्टमित्रों, संगे सम्बन्धियों से लिखवाले, आप लोगों का भी कल्याण और मेरी भी सहायता । परमं पूज्य प्रातःस्मरणीय सदा वंदनीय गुरु स्वरुप श्री गोलमोल बाबा के परम पावन पाद पदमो में मेरा कोटिशः दन्डवत प्रणाम कहना और कहना कि वे आशीर्वाद देवें जो यह अनुष्ठान सानन्द सम्पन्न होवे। वहां बाबा हो तो उनका सेवाशुश्रषा खूब करना, गृहस्थ के लिए यही सबसे बडा धर्म है। मालिक, नथुनी, जग्गनाथ शिवजी, प्रदीपबाबू, मास्टर साहेब, इश्वर बाबू, बैजनाथ गुप्ता, भगवती, तुम्हारा भत्रीजा, रामचरित्र तथा अन्य सभी प्रेमियो को मेरा मंत्र लिखने का संदेशा तथा सदभावना । विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय राधेबाबू,

जय श्रीराम

मंत्र फिर लिखने का फिर आदेश है पत्र पाते मंत्र परिवार सहित लिखना शुरु कर देगे। अभी मेरा अनुष्ठान है। मौन है। स्वयं भोजन बनाना पड़ता है। इस लिए सबके नाम पत्र लिखना कठिन है। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय चिरंजीलाल
तथा वत्सराज जी ! आशीर्वाद दिनांक ८-१२-५०

राम भजो, सब काम करो, यही जीवन जन्म का सार है। ... धर्म, अर्थ काम मोक्ष इसी नाम के भीतर भरा है । किन्तु अपनी श्रद्धा तथा विश्वास ही इसे प्राप्त कराता है। अभी मैं श्री प्रभु एवं गुरुदेव की कृपा से दक्षिण की यात्रा कर रहा हूँ । एक ऐसा प्रेमी मिला जो साधु का बिल्कुल नाम नहीं सुनना चाहता है किन्तु गुरुदेव की कृपा से उसके पास रहकर आया हूँ और उसने २ क्लास में सब यात्रा करा रहा है और सैंकडों रुपया दान में बाँटने के लिए दिया । हर जगह भगवान की पूजा उसके लिये करा देता हूँ ताकि उसकी बुद्धि सुधर जाए । इधर की यात्रा का वर्णन क्या करूँ । कही भी भजन कीर्तन का नाम नहीं, साधु कोई मानता, जानता भी नहीं किन्तु यहां के प्राचीन मंदिर तथा उसके देव का दर्शन अपूर्व ही है । उस छबी का वर्णन क्या करु ? कहीं भी भजन किर्तन का नाम नहीं और सब आनन्द है । श्री रंगजी से आज

श्री रामेश्वरम् के लिये प्रस्थान करूँगा। सब जगह की तुलसी प्रसाद भेज रहा हूँ। अपने पिताजी नारायण, मदन लालजी सब को देना और मेरा जय श्री सीताराम कहना । चिट्ठी लिखने की इच्छा नही होती, किन्तु न जाने क्यो परवश होकर लिख रहा हूँ। विशेष श्री हरि कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

याद - दया - छाया

श्री रामः शरणं ममः

'पहेल राम पीछे काम'

।। श्री राम ।।

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय नथुनीबाबू तथा — श्री संकीर्तनमंदिर, पोरबंदर

बालगोपाल ! — जय श्री राम — दिनांक - ३१-७-६८

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । श्री प्रभु कृपा से नाम महाराज का प्रचार प्रसार दिन प्रतिदिन बगैर प्रयास ही बढ़ता जा रहा है । अभी तो अधिकतर समय गुजरात प्रान्त में ही व्यतीत होता है । सुना है कि पूज्य पाद १०८ श्री गोलमोल बाबा जी वही कुटिया पर इन दिनों बिराजते हैं तो उन्हे मेरा खूब खूब प्रेम विनय हृदयपूर्वक माथा टेकना कहना । श्री गुरुपूर्णिमा का महोत्सव इस बार अभूर्त पूर्व ही हुआ । श्री नाम महाराज के प्रचार के साथ साथ महोत्सव भी दिन प्रति दिन बिलक्षण रूप से बढ़ता ही जा रहा है आपका श्री गुरुपूर्णिमा महोत्सव निमित्त भेजा हुआ पत्र पुष्प के रुप में रकम १००) मंडल के कार्यकर्ता श्री रामजीभाई मोढ़ा को प्राप्त हुआ । आज बाहर से आने पर उन्ही के कहने से पहुँच की जानकारी के लिए लिख रहा हूँ । विशेष श्री

प्रभु कृपा । भजन खूब करना, राम प्यारी को मेरा आशीर्वाद सुख आराम वैभव पाकर श्री प्रभु को भूलना नहीं भजन खूब करना, सब की सेवा करना, यही जीवन की पूंजी है । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय बच्ची !

आशीर्वाद

तुम्हारी श्रद्धा तथा लगन देखकर मुझे जो असीम खुशी हो रही है उसका वर्णन मैं करने में असमर्थ हूँ । अभी तुमने पचास हजार महामंत्र लिखवायी हो इसके लिए तुझे करोड़ो धन्यवाद हैं । मुझे आशा तथा पूर्ण भरोशा है श्री गुरुदेव तथा श्री प्रभु राम तुझे ऐसी शक्ति देगें जिसमें तुम अपना और मेरा भी गौरव बढ़ाओगी । इस महामंत्र का अनन्त फल है फिर भी प्रत्यक्ष फल तो यह देखने में आ रहा है कि तुम्हारे संसार के जीवन साथी भी आज दिन राम प्रभु का नाम रटने तथा उनकी कथा कीर्तन में अपना समय बिताने लगे हैं । और भी जो भी कामना होगी इसी मंत्र के बल पर सब प्रभु पूर्ण करेंगे । श्री प्रभु से कुछ मांगो नही वे अपने आप सब कुछ देंगे । सिर्फ इतनी उससे प्रार्थना करो कि हे प्रभु किसी अवस्थामें तुम्हारा नाम न भूले, सिर्फ नाम रटती रहो और एक लाख इस महामंत्र को लिखकर पूरा करो । ५० हजार लगभग हो चुका है । पचास हजार और लिखना है तुमने जितनी कोपीयाँ लीखी है उनमें चार कोपी में चमड़ा लगा हुआ है जिसके लिए कोई हर्ज नहीं किन्तु आगे से इसका ध्यान रखना घबराओ मत सिर्फ नाम रटती रहो चाहे मन लगे या नहीं नाम रटते रटते मन अपने लगने लगेगा । जब मन ज्यादा चंचल हो तो लगातार नाम धीरे धीरे रटना सब अपने आप ठीक हो जायेगा । और मन

भी पूर्णरुप से लगने लगेगा । घबराहट चिन्ता की कोई बात नही अब तो दोनो आदमी का भजन होने लगा है मुझे पूर्ण आशा है कि तुम लोगो का जीवन सफल और गौरव पूर्ण होगा । कल्ह मैं जाऊंगा तुम्हारी लगन श्रद्धा तथा विश्वास के लिए हृदय से धन्यवाद तथा आशीर्वाद है ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय मुखियाजी !

जामनगर

सप्रेम जय श्रीराम । दिनांक २४-८-९५

श्री प्रभु कृपा ही जीव मात्र के कल्याण का एक मात्र साधन है किन्तु जब तक अपनी अहंता ममता अभिमान का त्याग कर सम्पूर्ण रुपेण जीव उस पर निर्भर नहीं हो जाता तब तक उस कृपा की प्राप्ति जीव के लिए असंभव सी ही रहती है । उसके अभाव जीव का पुरुषार्थ भी निरर्थक सा ही होता है । कारण **"राम कृपा बिनु सुनु खगराई जानि जाई राम प्रभुताई, जाने बिनु न होहि प्रतीति, बिनु प्रतीति नहि होई प्रीति"** तो उस कृपा की प्राप्ति किस प्रकार होती है ? उसे भी श्रीगोस्वामी सुस्पष्ट शब्दो में बतलाते हैं । **"मन, कर्म, बचन छाडि चतुराई भजत कृपा करि है रघुराई ।"** भजन तो भगवान के लिए होना चाहिए, भोग के लिए अपनी कामना सिद्धि के लिए नही कारण **गोविन्द की गति गोविन्द जाने** । अपने को तो प्रत्येक कर्म को भगवत् सेवा समझ कर करना है । और उसमें अपने को एक निमित्त मात्र ही समझना है । अगर मेरी भावना सच्ची है, पवित्र है निष्काम है तो उसका परिणाम भी पवित्र ही होगा । यो तो यह संसार एक नाट्य शाला है, सभी जीव उस सूत्र धार के अधीन हो अपना अपना पार्ट अदा कर रहा है न तो कोई बुरा है, न भला सबके सब प्रभु के लीला पात्र है जो अपना पार्ट जितना सुन्दर करेगा

वह उतनाही उस नाट्यशाला के मालिक का प्यारा बनेगा । आपका नाम स्मरण का नियम तथा लगन देखकर अति प्रसन्नता । मंगल मय प्रभु का विधान मंगल मय ही है । श्री योगेन्द्रबाबू, पडिंतजी श्री गंगा बाबू तथा अन्य सभी प्रेमियों को जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

"श्री गुरुशरणं मम"

"श्री राम जय राम जय जय राम"

२१८ पद में भगवान के चरण कमल का वर्णन है इसलिए ऐसा भाव करना कि हम भगवान के चरण पर अपना माथा रखे हैं और भगवान राम हमारे माथा पर अपने हाथ रखे हुए है । हमें हर प्रकार से रक्षा करने के लिए भरोशा दे रहे है। और जब ध्यान न करना तब वही पर अपने हृदय में जैसे कागज पर लिखती हो वैसे ही अपने भीतर देखना कि हमारे हृदय कमल पर श्री राम यह मंत्र लिखा हुआ है और उसके मनकी सहायता से धीरे धीरे पढते रहना ऐसा करने के लिए उप्साना नहीं धैर्य के साथ अभ्यास करना जब यह साधन कठिन मालूम हो तो धीरे धीरे जीभ से मंत्र जपना और जब यह भी कठिन मालूम हो तो जोर जोर से मंत्र जपना सब काम करते यह मान करना कि हम यह सब संसार का काम भी भगवान की प्रेरणा से ही कर रही हूँ । विशेष क्या लिखूं प्रभु से दीन भाव से प्रार्थना करना उनके आगे अपनी उन्नति के लिए शक्ति चाहना और रोना ही सबसे बडा बल है ।

ऐसे जप जो अवश्य करती होगी प्रभु कृपा से सब होता रहेगा । सब काम करते हुए भी भजन कर सकती हो । उसके लिए एक जगह बैठना या स्नान करना ही कोई जरुरी नहीं है, मंत्र जपना चाहिए हर समय हर अवस्था में इसी से बाहर भीतर सबकी शुद्धि होती है ।

यही अष्टदल कमल का रुप है, हृदय में ऐसे ही कमल का ध्यान करना । इसी कमल के बीच में दिव्य सिंहासन पर श्रीसीतारामजी विराजमान है जहाँ पर करोडो सूर्य से भी अधिक प्रकाश हो रहा है । ऐसा भाव करना ऐसा अभ्यास करने पर जैसा भगवान का बाहर चित्र दिखता है ठीक वैसा ही हृदय में भी दीखने लगेगा । जब रामायण का पाठ करना तब ऐसा भाव करना कि प्रभु मेरे हृदय मैं बैठे औऱ हम उनको सुना रहे हैं । नित्य भजन भी इसी भाव से करना ।

"यह विषय बहुत गुढ है खूब सावधानी से इसे रखना औऱ धीरे धीरे अभ्यास करना इस विषय को जितना गुप्त रखोगी उतना ही अधिक लाभ होगा ।"

श्री रामजानकी मंदिर
श्री छतौनीधाम (प्रबधपुर),
तरियानी, शिवहर (बिहार)
२० मई २००७

"श्री गणेशाय नमः"

श्री सद्गुरुवे हनुमंते नमः

श्री सीताराम चन्द्राभ्यास नमः

श्री राम जय राम जय जय राम

वक्रतुण्डं महाकाय सूर्यकोटि समः प्रभः ।
निर्विध्नं कुरुमें देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥

वंदौ प्रथम श्री गुरुदेव जू के चरण जाकि कृपा पायो हरि शरण
पुनि वंदो सन्तानजू के चरण, मंगल मूल अमंगल हरण
फिर वंदौ भक्तजू के चरण, आरति हरण सुमंगल करण
जनक सुता जग जननि जानकी, अतिसय प्रिये करुणा निधान की ।
ताके युगपद कमल मनाऊँ जाकि कृपा निर्मल मति पाऊँ ॥

पुनि मन वचन कर्म रघुनायक, चरण कमल वंदौ सब लायक ।
राजवी नयन धरे धनुशायक, भक्त विपत्ति भंजन सुखदायक ।।
(नाम) मंगल भवन अमंगल हारि, उमा सहित जेही जपत पुरारि ।
मंगल भवन अमंगल हारि, द्रवहुं सुदशरथ अजिर बिहारी ।।
सबसे पहले इतना स्मरण करने के बाद (मंत्र या नाम रटना)
नाम रटन कीर्तन समाप्त होने पर विनय मंत्र का अत्यंत दीन भाव से

विनय करनाः-

(१) कहाँ जाउँ का सो कहौ को सुनै दीन की ।
त्रिभुवन तुहि गति सब अंग होन की ।।
जग जगदीश धर धरनि धनेरे हैं ।
निराधार के आधार एक गुण गुण तेरे हैं ।।
गजराज का खगराज ताजि धायो को ।
मोसे दोष कोष पोषतो से माय जाय को ।।
मोसे कुर कायर कपूत कौडी आध को ।
कियो बहु मोल तू करैया गीध श्राद्ध को ।।
तुलसी को तेरी बनाये बलि बनेगी ।
प्रभु की विलम्ब अम्ब दोष दुःख जनैगी ।।

(२) केहि भाँति कृपा सिन्धु मेरी और हेरिये ।
मोको और ढौर न सुटेक एख तेरिये ।।
सहस शिला ते अति जड मति भई है ।
कासो कहौ कोने गति वाहन हि दई है ।।
पद राग जाग चहौं कोशिक ज्यों कियो हो ।
कलिमल खल देरिन मारी मति मियो हौं ।।
काम कपीश वालि वलि त्रास त्रस्यो हौं ।
चाहत अनाथ नाथ तेरि वाँह वस्यैं हौं ।।

महा मोह रावण विभिषण ज्यो हयों है ।
त्राहि तुलसीश त्राहि तिहूँ ताप तयों है ॥

(३) तुम सम दीन बन्धु न दीन कोई मोसम, सुन हूँ नृपति रघुराई ।
मोसम कुटिल भौलि मानि नहि जग, तुम सम हरि न हरण कुटिलाई ॥
हौ मन वचन करम पातक रत, तुम कुपालु पतितिन गति दाई ।
हौ अनाथ प्रभु तुम अनाथ हित चित यह सुरति कबहुँ नहि जाई ॥
हौ आरथ आरति नासन तुम, कीरति निगम पुराननि गाई ।
हौ सभोत तुम हरन सकल भय, कारण कवन कृपा बिस राई ॥
तुम सुख धाम राम श्रीम भंजन, हौ अति दुखित त्रिविध श्रीम पाई ।
यह जिय नानि दास तुलसी कहँ, राखहु शरन समुक्ति प्रभुताई ॥

अब गुन मेरे बापजी, वकस गरीब निवाज, जो मैं पूत कपूत हौ तउ पिता को लाज। तू तो समरथ साइयाँ दृढ करि पकरहु बाँह, धुरिहि लो पहुंचाई हौं । जन छाडहू मग माही.

दीन दयालु विरद सम्मारी, हरहु नाथ मम संकट भारी ।
अब प्रभु कृपा करहु एहि भाँति, सब तजि भजन करौ दिन रात्रि ।
जो करनी समझै प्रभु मोरि, नहि निस्तार कल्परात कटोरि (कोटि) ।
अति सय प्रबल देव तब माया, छुटहि राम करहुं जब दाया ।
हाँ जगदीश वीर रघुराया, केहि अपराध विसारे हुं दया ।
आरति हरण शरण सुखदायक, हाँ रघुकुल सरोज दिन नायक ।
अ शरण शरण विरद संभारी मोहि जिनि तजहु भक्त भय हारी ।
नाथ जीव तब माया मोहा, सो निस्तरै तुम्हारे ही छोहा ।
तापर मैं रघुवीर दुहाई , जनौ नहीं कुछ भजन उपाई ।
सेवक सुत पति मातु भरोसे, रहै अशोच बने प्रभु दोषे ।
मोरि सुधारि है सो सब भाँति आसु कृपा नही कृपा अधाति ।
राम सुस्वामी कुसेवक मोसे निज दिशि देखि दयानिधि पोषे ।
रह तन प्रभु चित चूक किये की, करत सुरति सौ बार हिये की .

जन अव गुण प्रभु मान न काउ, दीनबन्धु अति मृदुल स्वभाउ ।
बार-बार माँगै कर जौरे, मन पारि हरै चरण जनि भोरे ।
अब करि कृपा देहु वर यहु, निज पद सरसिज सहज सनेहूँ
पाहिनाथ कहि पाहि गुसाँई भूतल परेउ लकुट की नाई ॥

॥ श्री राम जय राम जय जय राम ॥

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारकाधाम

प्रिय देवदत्त !

आशीर्वाद

दिनांक २५-१०-६८

श्रीप्रभु कृपा से सब आनन्द है आशा है तुम भी श्री प्रभु कृपा से आनन्दपूर्वक होगे । साधु शब्द ही बड़ा महत्व का है जैसे एक श्री राम नाम के अन्दर अनन्त शक्ति शील सौंदर्य निहित है ठीक उसी प्रकार साधु शब्द के अन्दरे अनन्त रहस्य तत्व छिपा हुआ है । साधनात्मक जीवन का ही नाम साधुता है । अगर अपने जीवन में सामान्य व्यक्ति से कुछ भी विशेषता न हो तो साधु में और संसारी में क्या अन्तर है ? कुछ भी नहीं बल्कि उससे अपना जीवन निकृष्ट ही समझना चाहिए कारण जिन वस्तुओं का हमनें एक बार त्याग कर दिया उसकी प्राप्ति उपहास्यपद (लज्जाजनक) है । वास्तव में हम लोगों का जीवन तो कठोर साधनामय संयम मय होना चाहिए । हमेशा शरीर संसार तथा इनके भोगों की क्षणभंङ्गुरता नश्वरता दुःखरुपता पर विचार करते रहना चाहिए जिससे वैराग्य तीव्र बना रहे और हंमेशा श्री प्रभु भजन की तीव्र लालास जाग्रत रहे तथा हृदय दीनतापूर्वक आर्तता पूर्वक विहवलता पूर्वक यही प्रार्थना सदा करता रहे कि **"अब प्रभु कृपा करहूँ यहि भाँति सब तजि भजन करौ दिन राति"** साथ ही साथ श्री प्रभु भजन के प्रताप से इतनी प्रबल शक्ति होती जायेगी और मनोबल इतना प्रबल होता जायेगा कि **अवलौ नशानी अब न नसैहो** बस जागरुक रह कर सचेत हो कर सावधान होकर प्रबल नाम रटन लगाते रहना

चाहिए । उस दिन तुम से बिदा होकर सुखपूर्वक जामनगर पहुँच गया श्री बाला हनुमानजी तथा गाँव में भी दीपावली की चहल-पहल खूब थी ९ बजे से १२ बजे तक जगह जगह औरो के प्रसन्नार्थ जगह जगह भटकना पड़ा । प्रातःकाल नूतन वर्ष के दिन ८ बजे तक मिलने का प्रोग्राम था । श्री बाला हनुमानजी में रामजी और प्रेमजी अेक दिवसपूर्व दिपावली के दिवस रात्रि में ९ बजे जामनगर मोटर लेकर आ गया था । दूसरे दिन ९ बजे जामनगर से चला और खंभालिया होकर ११॥ बजे पोरबंदर पहुँचा वहाँ भी अन्नकुट की तैयारी थी । और सभी प्रेमी जन वही मंदिर में अेकत्रित थे भोजन वगैरह करके लगभग ३ बजे आफ्रिका वाले की मोटर में निकला उसमें तीन चार ऐसे नालायक लोग जो मोटर वाले के लडके का मित्र थ बैठ गये कि न नाम स्मरण करे न कुछ । रामजीने बहुत कहाँ फिर भी अन्टसन्ट बाते करते रहे । सोढाना में नाथा भगत ने अखंड रखा था । और अन्नकुट पड़ा था । वेरावल में आकर मोटर के दोनों चक्कर पंचर हो गया । चक्क बना तो वरढिया आके गाड़ी खराब हो गयी । बड़ी परेशानी जैसी हो गई । किन्तु द्वारकाधीश की ऐसी कृपा सभी पूजारियों तथा गाँववाले ने श्री प्रभु प्रेरणा से अन्नकुट दर्शन के लिए खूला रखा, खूब आनन्द मिला कल्ह रामजी पोरबंदर गया । टाईल्स कल्ह आ गया है वसंतपंचमी ..... संकीर्तन मंदिर का उद्‌घाटन है मंगलवार २८-१०-६८ के मेल से आऊँगा । श्री चौधरीजी पूजारी रामसिंह चंदन आदि तथा सभी नाम प्रेमियों को मेरा जय श्री राम । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय नारायण !

जय श्री हरि

अपनी आत्मा अपने निकट ही है किन्तु उसका ज्ञान न होने से यानि उसकी

विस्मृति हो जाने से ही मनुष्य देह, गेह, पुत्र अलय जगत की मिथ्या वस्तुओं में मोहित
हो अपना आनन्द तथा ज्ञान स्वरुप अपना निजस्वरुप भूल जाता है और मनुष्य संसार
की मिथ्या पदार्थो में जो मृगतृष्णा के जल के समान त्रिकला मिथ्या ही है उसी में फँस
जाता है और ही इस अपनी विषय पीपासा शांति करने के लिए दौड़ते-दौड़ते प्यासा
ही इस नश्वर संसार से चला जाता है और पुनः पुनः जन्म लेता और मरता ही रहता
है इस प्रकार अज्ञानी का संसार चक्र सदा चलता ही रहता है। किन्तु जो इस जगत
के मूलतत्त्व परमात्मा का जो रूप से रहित होते हुए भी रूपवाला और नाम से रहित
होते हुए भी अनेक नाम वाला है उसकी शरण में जाकर जीव शान्त और कृत्य कृत्य
हो जाता है किन्तु जो उसका शरणागत भक्त बन जाता है, वह भले बुरे, संयोग
वियोग, जन्म मरण इन द्वन्दों के चक्र में नहीं पड़ता बल्कि उसी की इन सब
समुन्द्रवत गम्भीर बना रहता है। मैंने तो सुना कि नारायण पुत्र शोक में बहुत व्याकुल
हो रहा है इसलिए मैंने पत्र भी नहीं लिखा क्योंकि जब भगवान का भरोसा रखकर
भी इस तरह आचरण।

विषमता में ही तो शान्त रहना तथा दूसरों को शान्ति प्रदान करना भक्ति
का फल है अतः तुम्हारा नाम "नारायण" इसी का महत्त्व समझों और मस्त
रहो। अगर अभी भी कुछ अधीर और अशान्त बने हो तो प्रभु का नाम रटो
शान्ति मिल जायेगी।

तुम्हारा हितुचेछु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जैतपुर

प्रिय जोशी, रामधुन
तथा बालगोपाल !

आशीर्वाद ! दिनांक : २८-९-६५

तुम्हारा कल्ह रजीर्स्टड पत्र मिला तो एसा प्रतित हुआ कि कुछ बहुत
कीमती वस्तु होगी नही रजीर्स्टड से क्यो आवे, किन्तु खोलने पर निराशा ही

हुई, एक भी पत्र काम का नहीं था। खैर! तुमने जो देश, काल एवं परिस्थिति का हाल लिखा उससे तुम्हारे भीतर कुछ घबडाहट सी लगती है तो भाई। इसमें तो कुछ अपना बल पुरुषार्थ चलने वाला तो है नहीं। श्री प्रभु को जो इच्छा होगी, वही होगा। हमें तो सतत प्रभु स्मरण करते रहना चाहिए जिससे लोक परलोक दोनो बनेगा। जब तक आयु है तब तक काल मुख में भी जाकर कुछ नहीं हो सकता और जब आयु-जीवन यात्रा पूरी हो जायेगी तो सुरक्षित से सुरक्षित स्थान में भी कोई रक्षा नही कर सकता। साथ इस शरीर और संसार का सम्बन्ध भी तो मिथ्या और चंद रोज ही है जिसका जब जहाँ निमित्त होगा वहाँ उसे उस समय जाना ही पडेगा। लडाई का समय भले ही न हो पर मरने वाला तो मरता ही है और समय आने पर मरेगा ही। बलवंत महेता कौन सा युद्ध में क्या था? अगर निरीक्षण करने ही गया हो तो ऐसे समय में कोई बी साधारण बुद्धि विचार वाला भी क्या स्त्री को साथ ले जा सकता था ? किन्तु नहीं उसका समय आ गया था, भवित्वयता उठा ले गया। अतः भव उपस्थित होने पर बने इतनी बचने का प्रयास करना चाहिए और भय नही है तब व्यर्थ उसके चिन्तन से व्यथित क्यो होना चाहिए। श्री प्रभु जो करते हैं और करेगें अपने अपने आश्रयजनो के कल्याण के लिये ही करेगे। हो सके तो तीन-चार पोज जो अच्छा हो उसकी नानी कोपी नीचे पते पर भेजना पताः- श्रीमत भाई मु. वाघब, मोरबी नवरात्री शायद यही पर हो, बाद में मोरबी नडेश्वर होकर पोरबंदर जाऊगा। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेम भिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री संकीर्तन मंदिर, पोरबंदर

दिनांक ६-४-७०

प्रिय गोविन्द !

आशीर्वाद !

श्री प्रभु कृपा से आनन्द है। तुम्हारा पत्र मिला। हृदयगत भाव से अवगत

हुआ सर्वसमर्थ, सर्वाधार, सर्वज्ञ, अखिलेश्वर श्री प्रभु की लीला अवर्णनीय है, [illegible] एवं [illegible] है । कर्म की गति गहन है, विधि का विधान अकल्पनीय, [illegible] दीनजनशरणालय, गजगजेन्द्र, गरीबनिवाज प्रसिद्ध है किन्तु इस करुणावरुणालय, श्री राघवेन्द्र की करुणा भी कुछ कम विलक्षण नहीं, जो सर्व प्रकार से निराधार, निराश्रय प्रत्येक जीव के अन्दर नई शक्ति, स्फूर्ति, उत्साह एवं उमंग का सदा सर्वदा संचार करती ही रहती है । निराधार को आधार प्रदान करती है, निराश्रय को आश्रय देती है पंथच्युत को पथ प्रशस्त करती है, भूले भटके को सच्ची राह दिखाती है, सर्व प्रकार से हारे हुए-निरुत्साही जीव को उत्साह, धैर्य, शक्ति एवं सहिष्णुता प्रदान करती है किन्तु अज्ञ, अल्पज्ञ, जड़जीव अपनी अल्पज्ञता, जड़ता, अहंता एवं ममता के कारण उस महामहिम की इस महती महिमा को न समझने के कारण ही अनादि काल से इस भयंकर भवाटवी (संसार चक्र) में भटक रहा है और उस समय तक इसी प्रकार भटकता ही रहेगा जब तक सर्वतोभावेन उसके शरणापन्न नहीं हो जाता । अतः मनुष्य मात्र के लिये सर्व श्रेयस्कर यही पंथ, यही तंत्र और यही अेक मात्र महामंत्र है कि सदा, सर्वदा, उसके परममंगलमय नाम का रटन, चिन्तन, स्मरण करता हुआ - उसकी कृपा - करुणा का भिखारी बना रहे । वह जब जिस रुप में रखे, उसी में परम संतोष तथा सुख मान कर सदा मस्त रहना चाहिए । सच्चा मर्द वही है जो हर हाल में खुश है । सच्चाभक्त वही है जो श्री प्रभु के प्रत्येक विधान को मंगलमय मान कर और अपने लिये परमकल्याण स्पद समझकर प्रत्येक गति, मति एवं हर परिस्थिति में सदा प्रसन्न रह अपनी जीवन यात्रा यापन किया करता है उसके विधान की विचित्रता, विलक्षणता का भान प्रथम भले ही न होवे किन्तु अन्त में तो समझ में अवश्य ही आता है कि हर विधान के अन्दर उसकी विलक्षणा करुणा ही परिपूर्ण है। उसी करुणा कृपा में पूर्ण श्रद्धा एवं दृढ़ विश्वास रख कर मनुष्य को अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर होते रहना चाहिए । बस ! इसी सिद्धान्त के अनुसार अभी भी अपना जीवन यापन चल

रहा है और उसी की अहेतु की अनुकम्पा के आधार द्वारा कभी सुख, कभी दुख, कभी अनुकूलता, कभी प्रतिकूलता, कभी स्वस्थता, कभी अस्वस्थता की भरती ओट की तरह जीवन नौका कभी अथड़ाती कभी पछड़ाती- कभी [illegible] धीरे धीरे अपनी मंजिले मकसूद की ओर बढ़ रही है । जब तक उसकी कृपा करुणा का आश्रय है तब तक किसी प्रकार का भय और निराशा का अवकाश नही प्रत्युत कृपा बल से सदा अभयता निर्भयता बनी हुई है ।

जो पै कृपा रघुपति कृपालू को, वैर और को कहाँ ग्वैर ।
'होई न वाको' बार भक्त को, जो कोई कोटि उपाय करै ।।
तुलसीदास रघुवीर बाहुबल सदा अभय कबहुँ न डरै ।

बस ! श्री प्रभु के परममंगलमय, कल्याणमय, आनन्दमय श्री नाम महाराज का दृढ़ आश्रय लेकर सदा सर्वदा निर्भय निश्चित बने रहो और यथा शक्ति, हृदयपूर्वक अपने प्रभुप्रदत्त कर्तव्य का पालन करते रहो नाम जपते रहो, काम करते रहो और विषाक का (परिणाम) का परिपाक श्री प्रभु के उपर छोड़ दो ।

चिन्ता क्या भगवान खेवैया ? सुख दुख के सागर में पड़ कर,
आशा निराशा की लहरो पर डूबत तैरत आवत नैया
प्रेम दिलों में मन भगवान में बढ़े चलो धीरज धर मग में
करही देगें पार खेवैया । चिन्ता क्या.....

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

महुवा

प्रिय अयोध्या प्रसाद,

दिनांक १-२-८०

जय श्री राम

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर आनन्द हुआ। अति भावुकता मे आकर मनुष्य भूल कर बैठता है। हंमेशा विवेक से काम लेना चाहिए।

शरीर या संसार की उपाधियों से तंग आकर संसार छोड़ने की कभी भी प्रयास नहीं करना चाहिए बल्कि उसे परम दयालु, परम कृपालु श्री प्रभु का ही विधान समझकर धैर्य पूर्वक दुःख सुख सहन करते हुए श्री प्रभु भजन करते रहना चाहिए। घर में, प्रवृत्ति में रहकर जितना भजन कर सकते हो, उतना सब कुछ छोड़कर निवृत्ति हो जाने पर नहीं कर सकोगे, कारण कि वर्तमान वातावरण अत्यन्त कलुषित बनता जा रहा है। लोगों की मनोवृत्ति पाशविक बनती जा रही है। अतः मै तो यही हार्दिक सलाह दूँगा कि संसार में रहते हुए, काम करते हुए जिस परिस्थिति में श्री प्रभु रखे उसे अपने लिये प्रभु का विधान समझकर उनका स्मरण भजन करते रहो। यही इस समय सर्व श्रेयस्कर मार्ग है। नाम स्मरण, रटन तो कही भी, कभी भी कर सकते हो और कलिकाल में तो यही अेक मात्र आत्मकल्याण का साधन है। अेसा सभी शास्त्र एवं संत घोषित करते हैं तो नाम जपते रहो काम करते रहो। विशेष श्री प्रभु कृपा। अभी दो तीन महिनों से मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। अब अच्छा है।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

द्वारका

प्रिय राम शंकरजी तथा

दिनांक १-३-६९

अन्य प्रेमीजन !

आशीर्वाद - सह - जय श्रीराम !

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है तथा उन्हीं की कृपा प्रेरणा-सहायता द्वारा श्री अखण्ड जप-यज्ञ का प्रचार प्रसार भी अविराम गति से अनायास ही होता जा रहा है ।

आपका दिनांक २५-१-६९ का लिखा हुआ, अखण्ड कराने वाले सज्जनों के लिस्ट-सह-पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ ।

जब तुलसी, नरसी, मीरा, रैदास, कबीर, नानक, तुकाराम, समर्थ रामदास,

रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, रामतीर्थ, ज्ञानेश्वर महाराज, चैतन्य-महाप्रभु जैसे समर्थ पुरुषों की बात पर भी विषयी जीवों ने ध्यान न दिया, उनका भी विरोध, अपमान, तिरस्कार कर द्वन्द्व दावानल में ही जलते रहे, तो आज की तो बात ही क्या कहना ?

किन्तु ऐसे भयंकर कलिकाल में भी जब मेरे द्वारा बगैर शिष्य बनाये, कान फूँके, दक्षिणा लिये लाखों संस्कारी, पुण्यशाली, आबालवृद्ध नर-नारी अहर्निश 'विजय मंत्र' का जप करके अपने को कृतकृत्य मान रहे हैं, दिव्य जीवन का अनुभव कर रहे हैं, फिर मंत्र का और गुरु करने का प्रश्न ही कहाँ रह जाता है । जो शिष्य बनाने आते हैं और आग्रह करके शिष्य परम्परा बढ़ाते हैं, उनकी स्वयं की स्थिति पर विचार कीजिये । सिर्फ स्वार्थ तथा नगद-नारायण की ही बात ! पूर्व में जो आचार्य, सन्त, महात्मा हो गये, वे किसी को शिष्य बनने-बनाने का आग्रह नहीं करते थे, बल्कि उनमें इतनी प्रतिभा होती थी कि उनके प्रभाव से समाज उनकी ओर स्वतः आकृष्ट होता था और स्वेच्छा से अपने कल्याणार्थ उन्हें "गुरु" के रूप में मान लेता था ।

"मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यम्"- मंत्र शब्द का अर्थ ही होता है कि जिसके मनन करने से, जप-अनुष्ठान-आराधना करने से संसार-चक्र के महान दुःख से त्राण होवे, रक्षा होवे ।? पहले महात्मा लोग स्वयं मंत्र का पुरश्चरण-अनुष्ठान करते थे और मंत्र सिद्ध हो जाता था, चैतन्य हो जाता था, तब दूसरों को प्रदान करते थे । बिहार के जितने बड़े-बड़े मठधारी, स्थानधारी थे, उन लोगों के अभी भी कितने शिष्य होंगे । उनके गुरुओं का ही जो हाल हुआ और हो रहा है, वह आप लोगों के सामने ही है, फिर उनके शिष्यों का क्या हाल होगा ?

हृदय से जिसे मान लिया जाय, वही गुरु और जिससे मन को आनन्द प्राप्त हो, वही मंत्र ।

यह मंत्र (श्री राम जय राम जय जय राम) तो चैतन्य हो गया है । करोडों जीवबगैर कहे-सुने इसमें मस्त बन रहे है ।

मेरा तो यही एक मंत्र है, यही एक मंत्र है, यही एक महान मंत्र है । बनने वाला गुरु तो एक बार मंत्र सुनाता है । मैंने तो हजारों बार सुनाया और बोलवाया । फिर संशय कैसा है ?

विशेप प्रभु कृपा
हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

(सन १९६९ रे ग्राम-पंचायत के चुनाव के समय रामशंकर बाबू, मुखिया के पद के प्रत्याशी (Candidate) बनना चाहते थे । उन्होंने श्री महाराज जी के यहाँ इसके लिए आज्ञा प्राप्त करने के उद्देश्य के पत्र लिखा था । उस पत्र के उत्तर में परंम पूज्य बाबा ने उपने विचार लिखा भेजे थे -

प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जामनगर

प्रिय रामशकर बाबू,

दिनांक : ११-४-'६९

आशीर्वाद-सह-श्री राम जय राम जय जय राम ।

श्री राम प्रभु कृपा से सब आनन्द है । २९-३-'६९ का लिखा हुआ पत्र, अखण्ड करने वालों के लिस्ट-सह प्राप्त हुआ । समाचार । मालूम हुआ । मुखिया के पद पर रहने से आथवा चुनाव प्रचार का कार्य करने से अगर भजन में, आराधना में, आत्मकल्याण के मार्ग मे विक्षेप पड़ता हो और भजन अपना अभीष्ट हो, तो अन्य सभी प्रवृत्तियों का त्याग ही कर देना चाहिए । सत्ता, सम्पत्ति, सन्तति, भाइ-बन्धु जो भी भगवत्प्राप्ति में विघ्नरुप प्रतीत होवे, उसे त्याग ही देना चाहिए । अगर उतनी तीव्र लगन,वैराग्य,यानी भगवान के लिए विशेष राग न हो, तो सत्कर्म की प्रवृत्ति के साथ-साथ निवृत्ति का लक्ष्य बनाये रखना चाहिए और शनैः-शंनैः भजन की मात्रा बढ़ाते रहना चाहिए, तो कालान्तर में वैराग्य पुष्ट

होकर तीव्र होकर, प्रभु प्राप्ति के लिए तीव्र लालसा उत्पन्न करेगा। जैसा कि श्रीमद् गोस्वामीजी का अनुभव है-

राम राम जीय जपु, सदा सानुराग रे ।
कलि न विराग, जोग, जाग, तप, त्याग रे ॥

किंतु आगे चलकर कहा है -

राम नाम से विराग, जोग, जाग, जागि है ।
वाम विधि भालहूँ न कर्मदाग दागि है ॥
राम नाम मोदक सनेह-सुधा पागि है ।
पाइ परितोष तू न द्वार-द्वार बागि है ॥
यह तन कर फल विषय न भाई ।
स्वर्गहु स्वल्प अन्त दुखदाई ॥

अपनी स्थिति पर विचार कर ही काम करना चाहिये । क्योंकि जब तक जीव को उसकी वर्तमान स्थिति की अनुभूति नहीं होती, तब तक न तो उसके जीवन में स्वयं प्रगति होती है और न कोई इतर व्यक्ति ही करा सकता है । कर्म कोई भी बाधक नहीं हैं । कर्म के पीछे जो आसक्ति होती है, वहीं साधक या बाधक बनती हैं । निष्काम भाव से, भगवत् भाव से जो कुछ भी किया जाय, सभी भक्ति ही हैं ।

सभी प्रेमियों से मेरा 'जय श्री राम' । श्री द्वारका धाम में अखण्ड बहुत सुन्दर चल रहा हैं । इसके अलावा पोरबन्दर, जामनगर में भी बहुत सुन्दर ढंग से अखण्ड चल रहा हैं । यह सब प्रभु कृपा का फल है ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

(श्री चन्द्रशेखर प्रसाद सिंह, ग्राम-मगहा (ढाका) पूर्व चम्पारण के नाम परम पूज्य श्री महाराज जी के द्वारा लिखे गये अनेक पत्रों में से कुछ पत्रों के आंशिक उद्धरण नीचे जाते हैं) ।

नाम प्रचार के प्रभाव की विलक्षणता

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

द्वारका धाम

दिनांक : २३-९-६६

"........श्री प्रभु के नाम के प्रचार-विस्तार का काम भी उन्हीं की कृपा-प्रेरणा के आधार पर सुचारु रुप से चल रहा हैं । ऐसे भीषण काल में अत्यन्त प्रवृत्ति-परायण विशाल नगरों में भी बगैर पैसे, बगैर याचना, बगैर विज्ञापन के भी श्री प्रभु नाम का प्रचार-प्रसार द्रुतगति से हो रहा हैं । यह सब एकमात्र श्री गुरुदेव के सत्य सकंल्प एवं सत्य संकल्प-स्वरुप श्री प्रभु की कृपा प्रेरणा का ही परिणाम हैं । अन्याथा मेरे जैसे एक सामान्य प्राणी की क्या हस्ती है कि नाम का प्रचार कर सके । हाँ, इतना अवश्य हैं कि उसकी अहैतुकी कृपा से उसके कार्य सम्पादन के लिए यह शरीर निमित्त बन गया है । बन क्या गया हैं, उसी ने बना लिया हैं । बस ! अपने लिये तो यही साधन हैं, यहीं सिध्धि है और यही साध्य है कि हर परिस्थिति-प्रवृत्ति को उसी की करुणा-प्रेरणा समझकर, अपने को एक निमित्त मात्र मानकर निष्काम भाव से, सन्तुष्ट चित्त से, उत्साह-पूर्ण हदय से, अथक श्रम, अडिग श्रद्धा-निष्ठा एवं अचल-अविचल विश्वास-पूर्वक उसकी अनन्य शरण ग्रहण किये रहें । पल-पल में विचार करते रहें कि श्री प्रभु मंगलमय हैं, कल्याणमय हैं, आनन्दमय हैं, ज्ञान-विज्ञानमय हैं एवं जगत के एकमात्र नियामक -पालक हैं । अत: उनका प्रत्येक विधान प्राणिमात्र के कल्याणके लिए ही है । जब तक मन के अनुकूल परिस्थिति में सुख और शान्ति और प्रतिकूल परिस्थिति में दु:ख-अशान्ति का अनुभव होतां हैं तब तक समझाना चाहिये कि

मेरी साधना पूर्ण नहीं, बल्कि अपूर्ण है । कारण, जब भगवान् की सच्ची भक्ति हो जाती है, वह भक्ति भक्तको भगवान् से कभी विभक्त होने नहीं देती । वास्तव में भक्ति शब्द का अर्थ ही है की आत्मसमर्पणपूर्वक सर्वस्व समर्पणपूर्वक उस सत्य के साथ,आत्मा के साथ, परमात्मा के साथ, राम कृष्ण, गोपाल, माधव, मधुसुदन ईश्वर, अल्लाह, गॉड के साथ एक हो जावे, उसी का अंश जीव, अपने अंशी, सत्-चित्-आनन्द, सच्चिदानन्द घन से अविद्या द्वारा, माया द्वारा अनेक जन्मों से वियुक्त हुआ पुनः संयुक्त हो जावे और आवागमन, संसार चक्र से छूट जावे । इसकी प्राप्ति का साधन कलिकाल में एकमात्र श्री प्रभु का नाम है । नाम ही साधन और नाम ही साध्य है...........।"

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

प्राची (मोक्ष विमल) का अपूर्व अखंड कीर्तन

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जूनागढ

दिनांक : ३०-९-६७

"............ऐसे भयंकर कलिकाल में भी श्री अखंण्ड-हरिनाम महायज्ञ का अविरल प्रवाह अजस्रगति से प्रवाहित हो ही रहां है । इस बार श्री गुरु महाराज की तिथि का उत्सव बडा ही विलक्षण हुआ । सारा वेरावल शहर अयोध्यापुरी बन गया था । प्रातःकाल तीन-तीन मंडलियाँ गली-गलीमें प्रभात फेरी में निकलती थीं । हजारों की तायदाद में रात-दिन श्री अखण्ड में भक्तजन भरे रहते थे । नगर कीर्तन का वर्णन क्या लिखूं ? बड़े-बड़े सेठ-साहुकार, पंडित-विद्वान, सताधारी अफसर लोग श्री भगवान्नाम में पागल बने, अपने देह-गेह, सत्ता-संपत्ति का भान भूलकर जन-पथ पर नाच रहे थे । उनके गगन भेदी नाद से दिशायें निनादित

हो रही थीं । उनके मध्यमें पूज्यपाद श्री गुरुदेव महाराज तथा श्री करुणा-वरुणालय दीनजन-शरणालय, राज-राजेन्द्र राजीवलोचन श्री राघवेन्द्र प्रभुकी रथ-स्थित बाँकी झाँकी तो कुछ विलक्षण छटा छिटका रही थी । भारतवर्ष की बात कौन कहे, अफिका तक के प्रेमीजन खासकर इसी उत्सव के लिये आये थे और अपने हृदयमें श्री भगवान्नाम तथा पूज्य गुरुदेव की महती महिमां की अमिट छाप लेकर गये । इसके बाद २४ घंटे का अखण्ड प्राची (मोक्ष विमल) में- जहाँ पर श्री भगवान् ने श्री उद्धवजी को एकादश स्कन्ध श्रीमद्भागवत का अन्तिम अपदेश दिया था- वहाँ रखा गया था । इन स्थलों में भी अनिर्वचनीय आनन्द हुआ । उसके बाद भक्तराज श्री नरसीं मेहताजी की प्राकट्य भूमि श्री जूनागढ़ में २४-९-'६७ से ५-१०-'६७ तक के लिए अखंण्ड रखा गया है । यहाँ खास करके विद्वत् समाज पर खूब प्रभाव पड़ा है । इन सभी जगहों की व्यवस्था करनेवाले प्रोफेसर तथा अफसर लोग ही थे ....।"

संकीर्तन का विलक्षण प्रभाव : भयानक जलाभाव से मुक्ति

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्रीद्वारकाधाम

दिनांक : २१-७-६६

"…….यहाँ श्री गुरु-पुर्णीमा का महोत्सव बड़े हीं सुन्दर रुप से सम्पन्न हुआ । साथ ही श्री प्रभु की प्रेरणा भी कुछ ऐसी विलक्षण हुई किं पुर्णिमा के दूसरे दिंन सवेरे एकाएक १५ मिनट कें भीतर हीं बगैर किसी को सूचना दिए ही पढ़रपुर और संज्जनगढ़ के लीए चल पड़ा । सज्जनगढ़ में श्री समर्थ रामदास, जिन्होंने इस 'विजयमंत्र' (श्री राम जय राम जय जय राम) के द्वारा श्री छत्रपति शिवाजीको अपना नीमित्त बनाकर भारतीय संस्कृति तथा सनातन धर्म का रक्षण किया, उनकी हीं समाधि है । इस बार अनावृष्टि के कारण समस्त गुजरात,

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....
श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

सौराष्ट्र, महाराष्ट्र एवं बम्बई में हाहाकार मचा हुआ था। अगर चार दिवस और वृष्टि में विलंम्ब होता तो बम्बई नगर नष्ट-भ्रष्ट होजाता; क्योंकि वहाँ की म्यूनिसिपल कमिटी ने पानी देना बंद कर दिया था और बम्बई खाली करने का हुक्म भी जारी कर दीया गया था। लगभग पाँच लाख लोग टिकट भी ले चुके थे। इतने लोग कहां जायेगें और कैसे रहेंगे, एक बहुत बड़ी समस्या खड़ी हो गयी थी। निराश होकर सभी धर्म और संप्रदाय के लोग प्रर्थना-भजन भी करने लग गये थे, जिसका परिणाम यह हुआ कि यथा समय पर्याप्त वृष्टि हो गयी और लोगो में नवजीवन का संचार हुआ। इससे पूर्व जब में पंढरपुर गया था, तो वहाँ पर उस समय वृष्टि का नामनिशान नहीं था, चलते समय वृष्टि हुई। फिर भरुच (भृगृक्षेत्र) श्री नर्मदाजी के तट पर आया और वहाँ पर तीन दिवस का अखण्ड प्रारंभ किया और अखण्ड प्रारंभ करने के दो-चार धंटे बाद हीं वृष्टि शुरु हो गई। गुजरात की ओर बढता गया ; पीछे-पीछे, बृष्टि चलती गई। परसों द्वारका पहुँचा। यहाँ पर गत तीन बरसो से वृष्टि नहीं हुई थी। इसके लिए १०८ दिवस का अखण्ड रखा गया हैं। यहाँ कल आते ही पानी हो गया। यह सब श्रीनाम महाराज का प्रताप हैं। कुछ भी असंभव नहीं..........।"

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

संकीर्तन का चमत्कार : भयंकर गोलाबारी में भी जन जीवन की सुरक्षा

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जय हिन्दवाड़ी, जामनगर

दिनांक : १५-९-१९६५

"...........इधर सौराष्ट्र में खासकर जाममगर में पाकिस्तान ने दो बार बम्बार्डमेंट किये हैं। एक तो ठीक श्री गुरु महाराज की जन्म तिथि के दिवस

ही । इससे ऐसा आतंक लोगों में फैल गया कि दूसरे दिन से शहर में भगदड़ मच गई : किन्तु प्रभु-कृपा से इतने भयंकर बम्बार्डमेंट के बावजूद कोई विशेष क्षति नहीं हुई और पाकिस्तान के दो प्लेन यहाँ के सुरक्षादल ने तोड़ डाले । दूसरे दिन श्रीद्वारकाधाम पर उन लोगों ने भयंकर बम-वर्षा की ; किन्तु बिल्कुल अरक्षित होने पर भी वहाँ जनधन की कोई खास हानि नहीं पहुँची । यहाँ तक कि द्वारका में जहाँ माताजी (छगनलाल) के घर पर धुन चल रहा हैं, वह स्थान बस्ती के बिल्कुल बीच में हैं, वहाँ धुन मंण्डपके बाजु (पार्श्वः) के खाली मकान पर बम गिरा, जिसकी दीवाल की बगल में छः बच्चे सोये हुये थे । वह छत टूट, गई दीवार भी गीर पड़ीं; किन्तु किसी बच्चे को कोई हानि नहीं पहुँची, न नाम धुन-मण्डप को, न आजू-बाजू के मकान को हीं क्षति पहुँची । इस प्रकार श्रीप्रभु कृपा एवं भगवन्नाम का प्रत्यक्ष प्रमाण और क्या हो सकता है ?

जबतक श्री महाराजजी की तिथि रहीं, तब तक सात दिवस तक जामनगर में किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं हुई । जब सब पूर्णीमा के दिन (दिनांक १०-९-६५) ससमारोह, निर्विघ्न सम्पन्न हो गया और दूसरे दिन आह्वानित समस्त देवों का विधिपूर्वक विसर्जन कर दिया गया, तो तीसरे दिन रवीवार (दिनांक १२-९-'६५) को संध्या में पुनः पाकिस्तान ने भयंकर बम वर्षा की जो गिरिधारी और द्वारका (मुजफ्फरपुर) तथा यमुना बाबू (शिवहर, सीतामढ़ी) के सम्मुख ही हुआ ।

भय को भयभीत करने वाले, काल के महाकाल श्री प्रभु हैं और उनसे भी श्रेष्ठ समर्थ उनका नाम है, जो सर्व मंगलमय है । ऐसे श्री नाम महाराज का आश्रय लेने वाले को भया अनिष्ट हो ही क्या सकता है ? -अभाव है केवल श्रद्धा, निष्ठा, दृढतां और विश्वास का....।"

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

भगवन्नाम का विरोध करने वाले भ्रममार्गी हैं

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जूनागढ़

दिनांक : २८-९-६४

"...... श्री प्रभुकृपा ही जीवमात्र के कल्याण का एकमात्र साधन होते हुए भी जीव अपनी अल्पज्ञता, जड़ता, अज्ञानता के कारण उस महामहिमामयी कृपासे वंचित रह सदा इस भयंकर भवाटवी में अनन्तकाल से भटक रहा है और उस समय तक भटकता ही रहेगा, जब तक वह पूर्णरूपेणअभिमान शून्य होकर श्री भगवतशरणागत नहीं हो जावे। अभिमान ही जीव और शिव के बीच एक भयंकर आवरण है और इस अनादि मिथ्या आवरण भंग के लिए ही भिन्न भिन्न रुचि एवं संस्कार वाले जीवों के लिए विभिन्न समस्त साधनाएँ हैं। नहीं तो सत्य-परमात्मा-आत्मा तो एक ही है और समस्त प्राचीन एवं आर्वाचीन शास्त्र एवं सन्त भी इस परमसत्य को एक स्वर से अंगीकार करते हैं। फिर भी देश, काल परिस्थिति के अनुसार उस सत्य की उपलब्धि की साधनाओ में भेद करना पड़ता हैं और इसी भेद या परिवर्तन का ज्ञान कराने के लिए समय समय पर भक्तों या संन्तो का अवतार होता हैं, जो अपने अनुभव रूपी प्रयोगशालामें तत्कालीन साधनओ का विश्लेषण, विवेचन, संशोधन, अनुसंधान एवं अनुभूति कर जगत के समक्ष प्रस्तुत करते है और जिज्ञासु मुमुक्षु, संस्कारी जीव साधनाओं का आश्रय ग्रहण कर श्रद्धा-विश्वास पूर्वक श्रवण, मनन, निदिध्यासन द्वारा अपने जीनव को कृतकृत्य बनाते हैं, सदा के लीए कृतार्थ हो जाते हैं। वे जन्म-मरण, जरा-व्याधि उपाधि से सर्वथा विमुक्त हो जाते हैं। उनकी दृष्टि में न कोई अपना है और न पराया। अगर वह भक्त है, तो उसकी दृष्टि में भगवान के आर्थात् अपने इष्टके सिवा कोई अन्य नहीं। सर्वत्र भगवान ही भगवान है। अगर वह ज्ञानी है,

ब्रह्मवादी है, तो उनकी दृष्टि में ब्रह्म के सिवाय, आत्माके सिवाय किसी अन्य का अस्तित्व ही नहीं । फिर भेद और विरोध हो कैसे सकता हैं ? अगर कोइ विरोध करता हैं तो वह न तो भक्तिमार्गी है, न ज्ञानमार्गी हैं, न कर्ममार्गी; वह निरा भ्रममार्गी हैं । स्वयं भ्रम में पड़ा हुआ है और दूसरे अज्ञानी, अभिमानी, विषयी प्राणीयों को भ्रम में डालं कर उनके लीए नरक का मार्ग हीं प्रशस्त कर रहां है । जबकी सबसे बड़ा ब्रह्मवादी आदिशंकराचार्यजी महाराज ने षट्पदी एवं चर्पट पंजरिका की रचना कर अन्त में डंके की चाोट पर यह घोषणा की --

दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनरायातः।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुस्तदपि न मुञ्चत्याशावायुः ॥
भज गोविंदं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मुढ़मते ॥१॥
प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ करणे ।
भज गोविंदं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मुढ़मते ॥२॥
पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननी जठरे शयनम् ।
इह संसारे खलु दुस्तारे कृपयापारे पाहि मुरारे ॥
भज गोविंदं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मुढ़मते ॥८॥

पतंजलि योग सुत्रमें भी -- "तस्य वाचकः प्रणवः" कहा है । अर्थात् उस अव्यक्त परमात्मा का बोध कराने वाला उसका नाम हैं । और जब संज्ञा किसी वस्तुं के नाम को कहते हैं, तो किसी अव्यक्त, व्यापक, अपरिचित, अनजान पदार्थ, व्यक्ति या तत्त्व का बोध करानेवाला उसके नाम द्वारा ही होता है । अन्तर में किसी व्यक्ति, पदार्थ या तत्त्व का रुप विराजमान होने पर भी जबतक नाम का ज्ञान नहीं होतां, तब तक उसकी पूरी-पूरी परख या पहचान नहीं होती । तो परमात्मा जो सर्व व्यापक, अव्यक्त, अगोचर, अविनाशी है, उसका बोध, उसका ज्ञान उसके नाम बगैर कैसे हो सकता हैं ?

'अ' के दृष्टान्त के द्वारा नाम का निरुपण

जैसे 'अ' मूल अक्षर समस्त वर्णो में व्याप्त है फिर उसका भी नाम 'अ'

श्री राम जय राम जय जय राम....श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....श्री राम जय राम जय जय राम....

रखा गया हैं । अगर यह 'अ' नाम न हो, तो सभी वर्णों,' अक्षरों में व्याप्त 'अ' का बोध, पहचान किस प्रकार हो सकता है । अतः ऐसे भगवन्नाम विरोधी भ्रमवादियों, उद्भ्रान्त लोगों के बिवाद में न पड़कर शास्त्र सम्मत सिद्धान्त में विचार और बुद्धि द्वारा निश्चय करके अपनी श्रद्धा, निष्ठा को अविच्छिन्न बनाये रखें । जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

भगवन्नाम प्रचार का उद्देश्य : आत्माकल्याण एवं विश्वकल्याण

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्रीद्वारकाधाम

दिनांक : ९-१२-६४

"आपका समाचार जान विशेष प्रसन्नाता हुई । अपना तो जो भी है कुछ चिन्ता नहीं, अपने प्रेमीजन, भगवत् स्नेहीजन आनन्द-प्रसन्न रहे । बस ! इसी में अपनी प्रसन्नता, अपने जीवन की मुराद । श्रीप्रभुनामरटन, स्मरण, चिन्तन करने -कराने का भी इतर लक्ष्य नहीं ; सिर्फ इतना ही कि सत्शास्त्र एवं सन्तों की अनुभूतियों का आश्रय ले आधि-व्याधि-उपाधि ग्रस्त प्राणी कुछ भी सुख-शान्ति का अनुभव करें-करावें । आत्म-कल्याण के साथ विश्व-कल्याण सम्पादन के भी भागी बनें और इस बढ़ती हुई कलिकाल की भीषण करालता, ईति-भीति, रोग-शोक, भय-वियोग से कुछ भी त्राण पा सकें । इस स्थिति कीं उपलब्धि का एकमात्र अमोघ साधन श्री प्रभुनाम का दृढ़ अबलम्बन ही है- ऐसा सभी सन्तों और शास्त्रों को निश्चित मत हैं ।

बस ! इसी प्रभुनाम का दृढ़ आश्रय ग्रहण किये रहें, इसी में अपने सभी साधनों का पर्यवसान ! श्री प्रभु कृपा बगैर यह सम्भव भी नहीं । जब जीव का अनेक जन्म-जन्मातरों का पुण्य-पुञ्ज उदय होता हैं, तभी जीव की प्रवृत्ति सन्त या भगवान की ओर होती है । अन्यथा तो यह जीव अनादि काल से भव-प्रवाह

में बह ही रहा है और जब तक उसकी अहैतुकी अनुकम्पा न होगीं, तब तक बहता ही रहेगा । कारण कि जीव में, मायाग्रस्त अधोमुख होने से स्वतः सत्कर्म तथा भगवद्धर्म की ओर प्रवृत्त होने की शक्ति ही नहीं । अगर होती तो वह मायावश रहता ही क्यों ? प्रभु की इस माया से त्राण तो उसकी दया से ही होता हैं ....।'

हितच्छु

प्रेमभिक्षु

आधुनीक युग के नकली धर्मगुरुओं से सावधानी

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्रीद्वारका धाम

दिनांक : १-३-६९

"...... संसार का इतना नैतिक पतन हो चुका है कि सत्य, सदाचार-सद्विचार, विवेक-वैराग्य के लिए कहीं स्थान ही दृष्टिगोचर नहीं होता । भगवान के नाम पर, धर्म के नाम पर ही सर्वत्र दम्भ, कपट, पाखण्ड, विश्वासघात, धोखाधड़ी का बाजार गरम हो रहा हैं । नया-नया मत, नया-नया पंथ, नया-नया सन्त ! धर्म और साधुता के नाम पर धर्मगुरुओं में अपने शिष्य मण्डल की वृद्धि के लिए एक होड़-सी लगी हुई है । किसी भी सन्मार्ग में, सत्पंथ में लगे हुए व्यक्तियों को, अपने बुद्धि-कौशल से, खोटी दलील से, तर्क-वितर्क-कुतर्क द्वारा उनकी बुद्धिमें भेद, भ्रम, संशय डालकर, वे जो कुछ भी कर रहे है उससे भी वंचित कर, अपने मार्ग में लगा लेना, यहीं आज की परिपाटी बन गई है । अब राजनीति से तो लोग जानकार हो गए है, भोले -भाले, सीधे-साधे, सरल हृदय धर्म-श्रद्धालु प्रजा को किसी तरह धर्म के, ईश्वर के नाम पर लूटना, धर्मध्वजी, पाखण्डी, कालनेमी साधुओं का यहीं व्यवसाय बन गया है । आपलोगों जैसे समझदार,विवेकी, वीचारवान पुरुषों को इन वेषधारी बाबाओं से सावधान रहना

चाहिए और संशय सन्देह उत्पन्न होने पर प्राचीन ऋषि-महर्षियों के सदुपदेशों, सद्‌शास्त्रों, उनकी वाणियों का पूर्ण आश्रय लेकर श्रद्धा-विश्वास तथा हृदय पूर्वक अपनाते हुए सन्मार्ग पर अविराम गति से बढ़ते रहना चाहिए ।

जिस व्यक्ति विशेष की ओर स्वभाव से हृदय आकृष्ट हो, जिसके दर्शन, स्पर्श तथा वाणी द्वारा स्वाभाविक आकर्षण एवं अन्तः चेतना की जागृति होवे ,वही- "गुरु" ! जिसके प्रदत्त मंत्र द्वारा स्वाभाविक रुप से हृदय एक प्रकार के आह्लाद का, चित एक प्रकार के चैतन्य का, मन एक प्रकार की शांति का, बुद्धि एक प्रकार के निश्चय का शनैः-शनैः अनुभव करने लगे-वही सच्चा मंत्र, सिद्ध मंत्र, चैतन्य मंत्र दुसरी लाइन जिसके सुनने मात्र से ही छोटे-छोटे अबोध बालकों, अनपढ़, अल्पज्ञ, जड़ अज्ञानी नर-नारियों में भी धारणा हो जावे, अल्प अभ्यास से उसका रटन, चिन्तन, स्मरण होने लगे- वही सिद्ध चैतन्य मंत्र । श्री 'विजय मंत्र' श्रीराम जय जय राम का प्रत्यक्ष प्रभाव सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है । बस ! निर्भय होकर 'विजय मंत्र' जपिए, विजय लाभ लीजिए । प्रबल नाम-निष्ठा के लिए गोस्वामीजो की कवितावली और विनय पत्रिका पढ़िए ।"

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

नाम-यश से वितृष्णां अहंकार परित्याग

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारकाधाम

दिनांक : २२-११-६५

"........जामनगर में बम्बार्डमेंट के पश्यात् मै जैतपुर गया । वहाँ से सीधे पोरबन्दर जाना था; किन्तु उस इलाके में प्रचार बढ़ जाने से लगभग एक मास समय लग गया । दीपावली के अवसर पर जामनगर आना पड़ा और वहाँ से द्वितीया के दिवस द्वारका आया । यहाँ पर लोगो में इतना उत्साह और उमंग आया

कि गली-गली में अखण्ड चलने लगा। इसका कारण यह था कि जिस दिन मैं द्वारका आया, उसी दिन बगैर सूचना के लगभग दो मास से चालू अन्धकार-पट (Black-out) निकल गया और सारी द्वारकापुरी में छोटे-बड़े, आबाल-वृद्ध, नर-नारी स्वभाव से कहने लगे-महाराज के आते ही अन्धकार मिट गया! अच्छे-अच्छे पढ़े-लिखे लोग भी, जो कभी विरोधी थे, वे भी कहने लगे- "महाराज! आपके आते ही (Black-out) समाप्त हो गया।" जनता को इसकी खबर नहीं थी, कारण कि उसी दिन संध्या को दिल्ली से आर्डर आया और अन्धकार निकल गया। किन्तुं आने वाले और मेरी प्रशंसा करने वाले लोगों से मैने इतना ही कहां कि मेरी झूठी प्रशंसा करके मुझे क्यों गिराना चाहते हो ?

ना मैं किया न कर सकूँ, साहिब करता मोर।
करत- करावत आप हैं, 'पलटू-पलटू' शोर ॥

"हाँ, श्री द्वारकाधीश प्रभु की इतनी असीम अहैतुकी कृपा अवश्य हैं कि मेरे को यश दिला देते हैं और साथ ही इतनी कृपा-करुणा रखते हैं, जिससे अपने में अहंकार नहीं आतां और यह धारणा बनी रहती हैं कि जो कुछ जीवन में हो रहा हैं, वह सब उनकी कृपा का ही फल हैं, अपने पुरुषार्थ का नहीं। फिर भी पुरुषार्थ तो निरन्तर चालू ही हैं। कारण, मर्त्यलोक, मनुष्य शरीररुपी कर्मभूमि में आकर कोई भी प्राणी एक क्षण भी कर्म किये बगैर रह नहीं सकता। साधन-पुरुषार्थ तो अहंकार मिटाने के लिये ही होतान है, न कि प्रभु-प्राप्ति के लिए। कारण कि प्रभु की प्राप्ति कृपा साध्य हैं साधन-साध्य नहीं। किन्तुं साधन करतें करतें जब निराशापूर्ण दैन्यभाव आकर अहंभाव को ज्यों हीं विलीन कर देता हैं, त्योही आत्मा का, परमात्मा का, सत्य का, अपने इष्ट का प्रकाश हृदयमंदिर में हो जातां हैं, जिसे पाकर जीव अपने को कृतार्थ मानने लग जाता हैं। इसी आधार पर जप, तप, योग, ज्ञान, वगैरह की साधना है। किन्तुं जबतक

अन्तःकरण विमल-विशुद्ध होकर श्री प्रभु के लिए आकुल-व्याकुल नही होता, सच्ची छटपटाहट नही पैदा होती, तब तक संस्कारानुसार साधन मे लगा रहना ही पडता हैं ।"

".......नाम जप में -नाम निरन्तर रटने, जपने, चिन्तन करने के सिवाय दूसरा कोई विधि-विधान नहीं है । हाँ, इतना अवश्य है कि पवित्र स्थल में पवित्रता पूर्वक नाम लिया जाय, तो तात्कालिक अनुभव होता हैं , कारण कि नाम का प्रभाव अन्य शुद्धि में न लगकर मन शुद्धि में ही लगता है ।"

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

मातृभूमि एवं स्वतंत्रता की रक्षा के लिये नाम-प्रचार द्वारा जनजागरण

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जैतपुर (मोरबी)

दिनांक : २१-१०-६५

".......अभी तो इधर तीन-तीन जगहों में अखंड चलन रहा हैं । उसकी पूर्णाहुति का वक्त आ रहा हैं । द्वारका प्रसाद मुजफ्फरपुर वाले का भी एक मास अखंड करने का आग्रह है । अब कहाँ-कहाँ दौड़ा जाय ? कोई सहायक (पूर्ण कालिक और समर्पित-) भी नहीं । अवस्था और शरीर भी अपना काम कर ही रहा है । इस समय भजन के साथ मातृभूमि एवं स्वतंत्रता की रक्षा का भी प्रश्न हैं । जगह-जगह लोगों में जागृत्ति लाने की जरुरत है- श्री प्रभु नाम के दृढ़ आश्रयपूर्वक.....।"

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

अन्तःकरण की शुद्धि के लिये राम-नाम

।। श्री राम ।।

"श्री राम जय राम जय जय राम"

अहमदाबाद

दिनांक : २७-२-६५

"....... श्री प्रभु की कृपा विलक्षण है; किन्तु उनकी लीला विचित्र है। यों तो यश - अपयश, हानी-लाभ, दुःख-सुख, मान-अपमान जीव के अपने कृतकर्मों का ही परिपाक होता हैं; किन्तुं परमात्मा सबके नियन्ता होने के कारण उसके कर्मों के फल का विधाता मान लिया जाता हैं। वास्तव में समझा जाय तो भगवत् सम्बन्धी कर्म यानी भगवत्-साधन-आराधन, का तो सच्चा फल अन्तःकरण की निर्मलता ही है, जिसकी प्राप्ति होने पर प्रभु का, आत्मा का, सत्य का, चेतन का प्रकाश स्वयं ही अन्तःकरण पर पड़ने लगता है - पड़ने क्या लगता है ; प्रकाश पड़ता तो सदा से ही था, किन्तुं माया के, विषय के चिन्तन से चैतन्य आत्मा के प्रकाश ग्रहण की शक्ति चित्तमें-से क्षीण हो जाने के कारण, माया के आवरण द्वारा आच्छादित हो जाने के कारण, प्रकाश या आनन्द अनुभव में ही नहीं आता था। जब अन्तःकरण में से मलीनता निकल गई , तो बिना प्रयास ही उस चैतन्य आत्मा की, परमात्मा की, श्री प्रभु राम की महती महिमां अनुभूत होने लगी। इसके लिए दृढ़ निश्चयपूर्वक एकमात्र नाम-साधना की ही आवश्यकता हैं। वह नाम भी अखण्ड, अजस्र तैल आदावत् होवे, तो तत्काल अनुभव होवे। कारण, कि पहेले-से धनीभूत हुई आसुरी वातावरण को बदलने के लिये सतत और सशक्त ध्वनि की आवश्यकता है ; किन्तुं हम लोगों से ऐसी साधना नहीं होती, अतः विशेष अनुभव नहीं होता........।"

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

जपयज्ञ में अन्य साधनों का सहारा लेना नामापराध हैं

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

"........अगर नाम में सच्ची, निष्कपट, श्रद्धा-निष्ठा होवे और समझता होवे कि नाम रटन (जपयज्ञ) ही सर्वोपरि साधन है, तो दूसरे यज्ञादि का आडम्बर क्यों करें ? नाम-जप में दस नामापराध उनमें यह भी एक जधन्य अपराध है कि "नाम के साथ किसी अन्य साधन-साहाय्य की तुलना करना ।" जब 'जपयज्ञ' भगवान् का साक्षात् स्वरुप ही हैं, जैसा कि गीता १०/२५ श्लोक में भगवान् ने स्वयं कहा हैं, तो फिर इतर यज्ञ-याज्ञ की आवश्यकता ही क्या ? जब सिर्फ नाम के द्वारा भोग-मोक्ष तथा विश्व कल्याण संभव हैं, जैसा कि सभी सन्त तथा सत्शास्त्र कलिकाल के लिये कहते हैं, तो फिर किसी अन्य साधन की आवश्यकता ही क्या ? जब शास्त्र-सन्तका दिव्य तुमुल उद्घोष हैं-

(१) सज्जन पुरुषो की निन्दा करना । (२) जो सुनना न चाहे एसे असत पुरुष को नाम का महात्म्य सुनाना । (३) शिव और विष्णु में भेद बुद्धि करना । (४) श्रुति की आज्ञा न मानना । (५) शास्त्रों की आज्ञा न मानना । (६) आचार्यो के वाक्यों में विश्वास न करना । (७) नाम महाराज को अर्थवाद मानना । (८) नाम का आश्रय लेकर निहित कर्म साधनों त्याग करना । (९) शास्त्र निसिद्ध कर्मो का आचरण करना । (१०) नाम जप की अन्य धर्मो से तुलना करना - ये दशोनामापराध है ।

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम् ।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ॥

"तो दूसरे साधन का नामाराधन के साथन आयोजन क्यों ? इसके अन्दर अपनी स्वर्थपरता, संकीर्णता एवं नाम महिमा की अनभिज्ञता ही है । इस कारण समाज सुधारकों, धर्म प्रचारकों के लिये शास्त्र की आज्ञा है कि ऐसे लोग खूब समझदारी पूर्वक काम करें । पूज्य महात्मा गाँधी जी ने, जिन्हें राम-नाम की सच्ची

निष्ठा थी, क्या कभी यज्ञ-यागादि इतर साधनों का सहारा लिया ? नामाराघन द्वारा स्वतंत्रता की प्राप्ति तथा राम-राम कहते-कहते मौत के आलिंगन द्वारा जीवन मुक्ति का संदेश ....।"

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

भगवान्नाम जप में विधि-विधान नही होता

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय् राम"

श्री बरसाना (मथुरा)

दिनांक : २६-४-६५

"...........श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द हैं । मैनें अहमदाबाद से वृन्दावन आते समय आपको एक पत्र लिखा था । उसमें 'श्रीनाम' -सम्बन्धी सभी बातें तथा होने वाली घार्मिक बिडम्वनाओं के विषय में भी उल्लेख किया था । शास्त्रों तथा सन्तों ने तो कलिकाल को कालिमाओं से बचने का एक ही उपाय बतलाया हैं - "श्रीनाम संकीर्तन", जिसमें अन्य उपचार की आवश्यकता नही । जब **"सर्वदा सर्वकालेषुं सर्वत्र हरि चिन्तनम्"** का वर्णन है, तो खड़े-खड़े या बैठे-बैठे का प्रश्न ही कहाँ रह जाता हैं ? श्री प्रभु नाम लेने में जिस प्रकार भी एकाग्रता बढ़े, वृत्ति अन्तर्मुखी होवे, अधिक समय तक सुखपूर्वक, आनन्दपूर्वक नाम लिया जा सके - वहीं साधन, वहीं उपाय, वहीं विधान हैं । भगवन्नाम लेने, उच्चार करने के सिवाय दूसरा कोई विधान नहीं । कलश, हवन वगैरह यह लोगों का निजी विधान है । शास्त्र का कोई विधान नहीं है । कारण कि आकाश सब से अति सूक्ष्म है, उसकी शुध्दि शब्द के सिवाय अन्य किसी भी भौतिक पदार्थ से नहीं हो सकती । उदाहरणार्थ अगर किसीं दो दल में विवाद होता हो और कर्कश शब्दों के आघात-प्रत्याघातों के फलस्वरुप संधर्ष उत्पन्न हो जाय, तो क्या उस समय धूप जलाने या दीप दिखाने से शान्ति हो सकती है ? उस समय तो

सुमधुर, हितकारी,न्याययुक्त, निःस्वार्थ, समन्वयकारी शब्दों द्वारा ही संघर्ष का शमन किया जा सकता है । जिन लोगों को भगवन्नाम का सच्चा महत्व मालूम नहीं है या जिन्हें श्री भगवन्नाम की ओट में अपना स्वार्थ साधन करना है, वे ही इस प्रकार के सरल, सुगम, सुबोध मार्ग को भी अनेक प्रकार के विधि-विधानों का षड्यंत्र रचकर इसे लोगों के लिए दुर्गम, दुर्बोध और दुष्कर बना देते हैं । श्री रामायणजी, श्रीमद्भागवत, श्री भद्भगवद्गीता इत्यादि किसी भी शास्त्र में 'नाम' लेने के सिवाय दूसरा कोईन विधान नहीं है ।

"मंगल भवन अमंगल हारी । उमा सहित जेहि जपत पुरारी ।।"

जेहि विधि कपट कुरंग संग, धाइ चले श्रीराम ।

सो छवि सीता राखि उर, रटति रहति हरि नाम ।।"

"बैठे देखि कुशासन, जटा मुकुट कृशगात ।

राम राम रघुपति जपत स्रवत नयन जलजात ।।"

श्री भरतलाल जी ने १४ वर्षो तक अखंड जप किया ।

"सुमिरि पवनसुत पावन नामू । अपने वश करि राखेउ रामू ।।"

"तुम पुनि राम नाम दिनराती । सादर जपहुँ अनंग अराती ।।"

इस प्रकार नाम-यज्ञ में कोई दूसरा विधिविधान नहीं । पहलें जीभ से जपे । फिर ज्यों-ज्यों जप दृढ़ होता जायेगा, त्यों-त्यों अन्तर से आप ही आप होने लगेगा । इस प्रकार जब नाम मन में, बुद्धि में, प्राण में, हृदय में रम जायेगा, तो बाहर से अपने लिए उच्चार करने की भी आवश्यकता नहीं रहेगी ।............ यों तो दुँनिया दुरंगी हैं । इसके चक्र में पड़ने की आवश्यकता नहीं है । अपने विचार, अनुभव से जो ठीक लगे और जो शास्त्र-सम्मत हो, उसी में दृढ़तापूर्वक, निष्ठा-लगन से लगे रहनां चाहिएं ।"

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

'हरि व्यापक सर्वत्र समाना'

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो, रूपं-रूपं प्रतिरूपो बभूव ।
एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा, रूपं रूप प्रतिरूपो बहिश्च ॥

(कठ २/२/९)

'एक ही अग्नि निराकार रूप सें सारे ब्राह्माण्ड में व्याप्त है, उसमें कोई भेद नहीं है; परन्तुं वह जब साकार रूप से प्रज्वलित होती हैं, तब उसकी आधारभूत वस्तुंओं का जैसा आकार होता है, वैसा ही आकार अग्नि का भी दृष्टिगोचकर होता है। इसी प्रकार समस्त प्राणियों के अन्तर्यामी परमेश्वर एक हैं और सबमें समभाव से व्याप्त हैं, उनमें किसी प्रकार का कोई भेद नहीं हैं, तथापि वे भिन्न-भिन्न प्रणियों में उन-उन प्राणियों के अनुरुप नाना रूपों में प्रकाशित होते हैं ।'

यच्च किंचित् जगत्सर्व दृश्यते श्रुयतेऽपि वा ।
अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः ॥

(नारायणोपनिषद्)

'जो कुछ हो चुका है, जो कुछ हो रहा है और होने वाला है, वह दिखायी देनेवाला और सुनने में आनेवाला सम्पूर्ण जगत् भगवान् नारायण ही ।'

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारकाधाम, महाजन वाड़ी

दिनांक ५-६-६६

". ....भगवान् सर्व व्यापक है -जैसे दूध में, दहीं में मक्खन ओत-प्रोत है ; काष्ठ में अग्नि सर्वत्र व्याप्त है; तिल में तैल है; आकाश में वायुं है;

शरीर में प्राण हैं; समस्त जीव-धारियों में आत्मां है। किन्तुं बगैर साधन किये, मंथन किये, न दूध-दहीं से मक्खन जुदा होकर प्रकट हो सकतां है, न काष्ठ से अग्नि ही प्रकट हो सकती है और न तिल से तैल निकल सकता है। ठीक उसी प्रकार बगैर साधन, बगैर विवेक-विचार हृदय मंथन के सर्वत्र व्यावक आत्मा, परमात्मा का प्रत्यक्ष होना अशक्य ही नहीं, बल्कि असम्भव है। और ज्यों ज्यों हम विवेक-विचार द्वारा अपने अन्दर प्रवेश करते जाते है, त्यों-त्यों यह अशक्य और असम्भव-सा कर्म भी शक्य और सम्भव बनतां जाता है और इस प्रकार सतत अभ्यास तथा मंथन चालू रखने पर एक ऐसा समय आता है, जब कि उसका साक्षात्कार भी हो ही जाता है। किन्तु आवश्यकता है अदम्य उद्योग की, अटूट श्रद्धा की दृढ़ विश्वास की, सतत प्रयास की। यही जीवन की कसौटी है, मानवतां की पूर्जी है, जीवन-जन्म की सफलता की सार्थकता है........."

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

कलियुग का संक्षिप्त परिचय : विद्वान् एव संत की मान्यताओं में भेद : गुप्त मंत्र एवं नामात्मक मंत्र के जप की विधि में अन्तर

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

जामनगर

दिनांक १५-९-६५

".......आपने अन्धविश्वास की बात लिखी, उसके विषय में क्या कहा जाय ? यह हिन्दूं जाति इतनी पतित और विचार हीन हो गई है कि झूठी धर्म-निष्ठा के नाम पर अधर्म-निष्ठा का प्रचार-विस्तार करती जा रही हैं। इसके फलस्वरुप काल की भयंकर मार इस पर पड़ रही हैं। यह देखकर सच्चे लोगों को पश्चात्ताप के सिवाय और होवे ही क्या ? विचारहीनता और स्वार्थपरायणता, विषयविलासिता, भोग वासना, असत्य के ही संग्रह-संचय के प्रबल प्रयास इनका ही नाम कलिकाल।

आपने नाम-जप के विषय में जो उद्धरण निवेदित किये, उनमें संशय-जैसी कोई बात नहीं । वे दोनो नाम-सम्बन्धी लेख विद्वानों के है, संत के नहीं है ; अतः पूर्ण विश्वासनीय नहीं है । कारण कि विद्वान् अपनी बुद्धि के आधार पर लिखता हैं और सन्त अपनी अनुभूति के आधार पर । विद्वता श्रमसाध्य है ; सन्तपना कृपासाध्य हैं । एक कल्पना प्रसूत, दूसरा अनुभव प्रसूत । अतः सन्त सर्वथा मान्य हैं ।

दूसरी बात, वहाँ 'मंत्र' और 'नाम' का प्रसंग हैं । मंत्र में विधि है, नाम में कोई विधि-विधान नहीं । 'विजय मंत्र' नामात्मक मंत्र है, इसीलिए इसका जप भी हो सकता है और धुन भी । विजय मन्त्र 'श्री राम जय राम जय जय राम' और 'हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे'- ये दोनो नामात्मक मंत्र है । इनसे दोनो हो सकते हैं, जप भी और कीर्तन भी, और किसी भी अवस्था में कहीं भी इन्हें कर सकते हैं । जब सन्त शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास का कथन है -

'भाव कुभाव अनख आलस हूँ । नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ ।।'

....तो संशय के लिये स्थान ही कहाँ रह जाता है ? किसी प्रकार नाम लेना चाहिए । जिसको नाम लेना नहीं है; केवल उपदेश करना है, वे ही इस तरह लिखा करते हैं......।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

दृढ़ नाम-निष्ठा द्वारा नैराश्य एवं चिन्ता से मुक्ति

।। श्री राम ।।

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारकाधाम

दिनांक २६-७-६५

"......श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द ही आनन्द हैं । श्री वृन्दावन से हरद्वार

जाते वक्त मेरे पाँव की एक अंगुली में छोटी-सी फुन्सी हुई और जैसी सराठा में हाथ की अंगुली की स्थिति हुई, वहीं भयंकर स्थिति हरद्वार में पाँव की अंगुली की हो गई । राजदेव (ग्राम-खैर-वादर्प, शिवहर, जिला-सीत्तामढ़ी) साथ में था । उनसे विलक्षण सेवा की । घाव भरते-भरते एक मास समय लग गया । मैनें किसी को भी सूचना नहीं की । कारण, जब श्री प्रभु अन्तर्यामी घट घट वासी साथ में ही है, तो उनका अनादर कर अज्ञानी, अल्पज्ञ, जड़ मनुष्य को सूचना भेजने से लाभ ही क्यां ? अगर ऐसा करें भी तो इस समय मेरे जैसे अकिंचन साधु को पूछने वाले भी कितने हैं ? नहीं हैं, ऐसा बात तो नहीं है; किन्तुं विरले ही हैं - जो सचमुच सत्यानुरागी हैं । जो सर्वशास्त्र सन्त-सम्मत, समस्त वेद शास्त्रों के सार स्वरुप श्री भगवन्नाम में श्रद्धा-निष्ठा का भाव रखने वाले हैं । ऐसे विरले ही श्री प्रभु के लाडले लाल है, जो मरे-जैसे के प्रति भी श्री प्रभुनाम के नाते प्रेम-भाव रखते हैं । नहीं तो इस समय जो भी सत्कर्म या सेवा की जाती है, वह स्वार्थ या कीर्ति के लोभ से ही ; सच्चाई, संयम, सदाचार, सद्विचार से नहीं ; नहीं तो यह राष्ट्र, समाज इतना दुखी होता ही क्यों - जबकि सन्तों का प्रत्यक्ष अनुभव हैं कि इस कराल-कलिकाल में भी जीव श्रीभगवन्नाम का आश्रय लेकर पूरा सुखी हो सकता है और इहलौकिक, पारलौकिक भोगों के साथ भी भगवत्प्रेम तथा भगवद्धाम की प्राप्ति कर सकता है ।

रामनाम कलिकामतरु, सकल सुमंगलकंद ।
तुलसी करतल सिद्धि सब, पगपग परमानन्द ॥ (तुलसी दास)

साधू गांठ न बाँधई, उदर भरातालेय ।
आगे पीछे हरि खड़े , जब मांगे तब देय ॥ (कबीर दास)

कबीर की इस अनुभुति को श्री प्रभु ने मेरे लिये इस बार प्रत्यक्ष करके दिखलाया, जबकि यह शरीर पंगु बनकर दिल्ली के स्टेशन पर बैठा था, एक कदम चलना भी कठिन था और किराये का पैसा भी, जो श्री प्रभुबाबू वकील (मुजफ्फरपुर) के पास था, उसे भी किसी धूर्त ने उनके पास से ठग लिया, उस

समय बिलकुल निराधार बनकर क्या करता ? कुछ समझ में नहीं आ रहा था । कुछ क्षण मन में उसका चिन्तन हुआ, प्रभुं क्या करोगें ? सेकेन्ड मात्र में देखते हैं कि जामनगर का एक प्रेमी खड़ा है । उसके बाद पचासों आये । बस, आनन्द ही आनन्द !............।"

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

अस्वस्थ शरीर फिर भी नाम-प्रचार में निरंतर व्यवस्तता

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री संकीर्तन मंदिर
श्री द्वारका धाम
दिनांक ९-७-६९

"श्री प्रभुकृपा से आनन्द है । आपका बहुत दिनों से कोई समाचार प्राप्त नहीं हुआ है । आशा है, आप सपरिवार, मित्रमंडल सहित सकुशल होगें । मुन्ना का क्या समाचार है ? देश-काल परिस्थिति कैसी है ? भजन तो सुचारु रुप से चलना ही होगा । कुछ समय पहले आपका एक पत्र मिला था । इधर इन दिनों ज्यादातर गाँवों में और जगह-जगह भटकने के कारण तथा अत्यधिक शारीरिक श्रम के कारण थोड़ा स्वास्थ्य बिगड़ गया था । छाती में अत्यधिक ठंढ लग जाने से Tonsil (टौंसिल) में सुजन हो गयी थी और खाँसी बहुत आती थी, जिससे अखण्ड, सत्संग वगैरह में बोलनें में आनन्द नहीं आता था और थोड़ा विक्षेप जैसा लगता था । किसी प्रकार का नियम तो है ही नहीं; - न खाने का, न सोने का, न बोलने का । लगभग बिस वर्षो से रात दिवस यही क्रम चालू हैं । फिर शरीर तो एक यंत्र ही ठहरा, कितना काम करे । साथ ही अब अवस्था भी आ रही है । फिर भी श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द ही है । शरीर रहे, तब

तक भजन, नाम रटन करने कराने दे, तो बस ! यही उनकी महत्ती अनुकम्पा होगी ।"

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

श्री हरीनाम संकीर्तन मंदिर, द्वारकाधाम में अभुतपूर्व चमत्कार

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

अस समय सुप्रसिद्ध समाज सेवी परम पूज्य बाबा के कृपापात्र भक्त श्री हरिदास जमनादास कानाणी, श्री हरिनाम-संकीर्तन मंदिर ट्रष्ट, द्वारका के अध्यक्ष तथा श्री मनुभाई 'हरिधाम' उपव्यवस्थापक थे ।

श्री मनुभाई पर प्रसन्न होकर परम पूज्य बाबा ने उनको 'हरिधाम' उपनाम दिया था ।

श्री मनुभाई 'हरिधाम' ने दिनांक ३०-१०-७३ को श्री रामशंकर बाबू के नाम जो पत्र लिखा था, उस पत्र से निम्नांकित अंश उद्धृत हैं :-

"गत कार्तिक शुक्ल द्वितिया के दिन दिनांक २८-१०-७३ रविवार को सांय ६ बजे यहाँ के अपने श्री हरिनाम संकीर्तन मंदिर, द्वारका में अचानक एक असली बन्दर ने प्रवेश किया । आते ही श्री ठाकुरजी के सिंहासन में जो पूज्य ब्राह्मलीन श्री प्रेमभिक्षु जी महाराज की छाया-प्रतिमा थी, उसको उठाकर उसी स्थान पर वह बैठ गया तथा उस छाया प्रतिमा को अपनी गोद में रखा ; पश्चात् पुष्प की माला उतारकर उसमें से तुलसी पत्र निकालकर खाया तथा वहीं फूलमाला उन्हीं को पहनाकर उन्ही के स्थान पर फिर से प्रतिमा को रख दिया और उन्हें प्रणाम कर विदा हो गया ।

उस समय यह कौतुहल देखने के लिए गाँव के नर-नारी तथा बहुत से बालक एकत्रित हो गये एवं उच्च स्वर से सब लोग पुकारने लगे-

श्री राम जय राम जय जय राम"

(यह स्मरणीय है कि हमारे कई अन्य तीर्थ स्थानों में तो बन्दर पाये जाते हैं, किन्तु श्री द्वारका धाम में बन्दर नहीं पाये जाते ! -लें०)

द्विजेन्द्र

प्रेमभिक्षु

परम पूज्य बाबा के विनोद

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

परम पूज्य बाबा के मुख मण्डल पर तेज एवं प्रसन्नता झलकती थी और भीतर से वे अत्यन्त शान्त एवं गंभीर थे । वे अवसर देखकर कभी-कभी विनोद भी करते थे । अखण्ड नाम धुन के समय कभी कभी भक्तगण फूलों से उनका श्रृंगार कर देते थे और जब वे भावनृत्य में तन्मय हो जाते, तो वह मनोरम दृश्य देखते ही बनता था । महात्मा गाँधी के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा थी । महात्मा गाँधी ने सत्य के प्रयोग के क्रम में अपनी 'आत्मा कथा' में अपने जीवन के गोपनीय बातों को भी अनावृत कर दिया, बीना इसका किंचित् विचार किये कि उसको पढ़कर लोगों की उनके प्रति जो उदात्त धारणा है, उसमें कमी आयेगी । किन्तु इसके बावजूत सत्य के सहारे, राम-नाम के सहारे, आत्मा शुद्धि के सहारे वे विश्ववंद्य महात्मा हो गये ।

परम पूज्य बाबा भी अपने अन्तर की कमजोरियों को अपने प्रेमीजनों के समक्ष प्रकट करने में कभी भी संकोच नहीं करते थे ।

(१) दिनांक १६-४-'-६३ की बात हैं । परम पूज्य बाबा चौकी पर तथा अन्य प्रेमीजन नीचे बैठे हुये थे । सत्संग चल रहा था । इसी क्रम में 'अहंकार' का विषय उठने पर बाबा ने प्रसंगवश कहना प्रारम्भ किया: ।

"मैं नया-नया साधु हुआ था । उस समय मैंने नियम बना लिया था कि मैं स्वत: भिक्षा नहीं करूँगा । स्वेच्छा से कोई मधुकरी प्रदान करेगा तो ग्रहण

कर लूँगा । एक दिवस की बात हैं । मैं गंगा किनारे सूबह में बैठकर जप कर रहा था । मैं दो रोज से भूखा था, इसलिए व्याकुलतावश भजन-ध्यान में मन नहीं लग रहा था । फिर भी नियम तो करना ही था । सामने वहाँ से लगभग पचास गज की दूरी पर व्यापारी की एक नाव पंक में फँस गई थी । उसको निकालने के लिए छः-सात आदमी बड़ी देर से परिश्रम कर रहे थे; किन्तु नाव किनारा नहीं छोड़ती थी । तभी उनमें से एक ने कहां-

मालूम होता हैं, उस साधु आवा ने करिश्मा (जादु-टोना) कर दिया है, इसीलिये नाव टस से मस नहीं हो रही है ।

तो चलें, उसकों कुछ खिला-पिलाकर प्रसन्न करें। संभव है, काम बन जाय ।' -दूसरा बोला ।

मैंने अधखुली आँखों से देखा, दो आदनी मेरी तरफ चले आ रहे थे । मैंने उन दोनों की बातचीत सुनली थी, इसलिए मैं अहंकारवश हो गया । मैं बैठा तो पहले से ही था, अब और अकड़कर बैंठ गया तथा योग मुद्रा में ध्यानस्थ होने का स्वांग रचा (बाबा ने वैसी ही मुद्रा बनाकर उपस्थित लोगों को दिखाते हुए कहा) । वे दोंनो मेंरे करीब आये तथा कुछ देर तक प्रतिक्षारत खड़े रहे । फिर निराश होकर एक ने कहा-

'बाबा ध्यानस्थ है, क्या किया जाय ?'

दूसरे ने जबाब दिया - 'राम-राम बोलो न; संभव है, बाबा का ध्यान उचट जाय ।' पहले ने राम-राम बोलना प्रारम्भ किया ।

"किन्तुं सोया हुआ मनुष्य जाग जाता है, सोने का दिखावा करने वाला थोड़े ही जागता है ? मैं ध्यानस्थ ही बना रहा । अन्त में दूसरे ने कहा-' बाबा ध्यान-मग्न हैं । अतः ध्यान में बाधा मत दो । संभव है, ध्यान भंग होने पर कहीं हमलोंगों को शाप न दे दें । चलो, नाव को निकालने का हमलोग फिर प्रयत्न करें ।"

वे दोनों लौट गये ।

मैं तो भूख से व्याकुल था। पेट में आग जल रही थी। किन्तु मेरे अहंकार ने मुझे धोखा दिया। सामने लाया गया भोजन लौट गया।

मुझे भारी पश्चाताप हुआ तथा अपने अहंकार के उपर क्रोध। किन्तु क्या करता। अवसर गँवा चुका था। मन में हो कि इनकी नावं फिर नहीं निकले और वे दुबारा मेरे पास आवें। भगवत्कृपा से हुआ भी वैसा ही। उनलोगों के द्वारा पूरा जोर लगाने पर भी नाव हिली तक नहीं। वे लोग निराश हो गये और फिर आपसमें बातें करने लगे।

इतना जोर लगाने पर भी नाव नहीं निकल रहीं है, इससे निश्चय होता है कि ठीक उस सधुआबा ने ही करिश्मा कर दिया है - एक ने कहा।

तो चलें, एक बार पुनः चलें और उस साधु को प्रसन्न करने की चेष्टा करें -दूसरा बोला।

इस बार तिन आदमी मेरी ओर चले।

उन लोगों को अपनी ओर आने के लिए कदम बढ़ाते देखा तो मैं आँखें बन्द किये ही धीरे-धीरे राम-राम का उच्चारण करने लगा।

वे लोग मेरे पास आये और राम-राम बोलना प्रारम्भ किया, तो मैंने आँखें खोल दीं।

उनलोगों ने नम्रता पूर्वक प्रणाम किया तथा पर्याप्त फल और मिष्टान्न मेरे सामने रख दिये।

मैंने औपचारिकता का निर्वाह करते हुए कहा- इसकी क्या आवश्यकता थी, क्यों लाये ?

उनलोगों ने सहमते हुए विनयपूर्वक कहां- बाबा, इतनी सेवा स्वीकार करें और आशीर्वाद देने की कृपा करें।

मैं पहले से ही सावधान था। सोचा कि कहीं इस बार भी चूक न जाऊँ इसलीए कहा-दया है, कहो क्या कहना है ?

उन्होंनें कहा बाबा, हम लोग कुछ ही देर पहले यहाँ आये थे; किन्तु आप

ध्यानमग्न थे, इसीलिए लौट गए । हम लोग व्यापारी है । हमारी नाव किनारे पंक में फँस गई है । हजारों प्रयासों के बाद भी निकाली नहीं जा सकी । हमलोगों पर कृपा करें ।

मैंने कहा -कृपाकरने वाले तो परमात्मा हैं ; उनपर भरोसा रखो और पूर्ण विश्वासपूर्वक "जय जय रघुवीर समर्थ" का नारा लगाते हुए एक बार फिर से प्रयास करो । नाम महाराज की कृपा से सफलता मिलेगी । जाओ, अब देर न करो ।

और नाम महाराज की कृपा का ऐसा चमत्कार हुआ कि भगवन्नाम के तुमुल जयघोष के साथ जोर लगाते ही पल भर में नाव पंक से निकल कर गतिशील हो गई ।

(२) दिनांक २६ नवम्बर, १९६२ की बात हैं । परम पूज्य बाबा का सत्संग चल रहा था । उसी समय वासुदेव राय (ग्राम-भग-वानपुर, पूर्व चम्पारण) आये और बाबा को प्रणाम करके बैठ गये । परम पूज्य बाबा ने विनोद के स्वर से पूछा -वासुदेव ! तुम अपने ललाट पर चन्दन तथा गले में तुलसी की कण्ठी क्यों धारण करते हो ? इन्हें धारण करने क्या उद्देश्य है ? इसका क्या रहस्य है ?

वासुदेव राय ने जवाब दिया-बाबा, आपही बताने की कृपा करें ।

बाबा ने कहा -पहने हो तुम और बतलावें हम ?

वासुदेव राय ने पुनः वहीं उक्ति दुहराई ।

बाबा ने कहा- तो सुनो, भगवान को छप्पन व्यंजन का भोग लगाओ ; किन्तु उसमें तुलसी पत्र न डालो, तो क्या भगवान् उसकों ग्रहण करेंगे ?

वासुदेव राय ने उत्तर दिया -नहीं, भगवान तो तुलसी पत्र डालने पर ही ग्रहण करेंगे ।

बाब ने कहा- सो समझ लो कि तुम्हारा शरीर भगवान को भोग लग चुका है, समर्पित हो चुका है । अब इसे विषयादि में न लगा कर प्रभु सेवा में लगाओ । उस प्रभु ने तुम्हारे हृदय में अपना आसन जमा लिया है, ऐसी धारणा

करो ।

(३) शिवहर में अखण्ड चल रहा था । वहीं पर वार्ताक्रम में एक दिवस बाबा ने कहा- मेरे पास अपना है ही क्या ? केवल एक झोला और कमण्डल । बिछावन, कम्बल, तकीया, मसहरी सब तो 'बैकुण्ठ' के ही हैं ।

"रामशंकर बाबू ने कहा- आपके कमण्डल पर भी झगड़ा हैं । रामदेव कहता हैं कि हम उठावेंगे और रघुनाथ शरण कहते है कि हम उठावेंगे ।

बाबा ने जवाब दिया - यह दोनों में से किसी से भी नहीं उठने वाला हैं । (संकेत संन्यास ग्रहण से था) ।

और उस दिन तो सचमुच ही बाबा ने उन दोनों में से किसी को भी कमण्डल उठाने नहीं दिया ।

(४) सन् १९६६ ई० की बात है । राजदेव बाबू (ग्राम-खैरवा-दर्प) पुत्र रघुवीर का यज्ञोपवीत होने वाला था । उस अवसर पर नवाह्न अखण्ड नाम धुन का भी कार्यक्रम रखा या था । राजदेव बाबू ने उक्त यज्ञों में भाग लेने के लिए परम पूज्य बाबा के यहाँ निमंत्रण पत्र भेज दिया था । बाबा ने पत्रोत्तर में लिखा था-बिहार जाने का अभी कोई निश्चय नहीं हैं, समय आने पर देखा जाएगा । जब यज्ञ का समय निकट आया तो राजदेव बाबू, बाबा को बुला लाने, द्वारका गये । वे पहले जामनगर गये और श्री गिरिधर लाल विट्ठलजी जोशी के यहाँ ठहरे । राजदेव बाबू ने जोशी जी से अपने द्वारका जाने का उद्देश्य बतलाया । जोशीजी ने कहा कि बिहार जाने का बाबा का अभी कोई इरादा नहीं हैं । इसलिए उनके जाने की सम्भावना नहीं हैं । इस पर राजदेव बाबू ने कहा-हरद्वार में बाबा के पैर में घाव हो गया था । बुखार भी हो आता था । वे बड़े कष्ट में थे तथा चलने-फिरने में असमर्थ हो गये थे । मैंने पहले भी उनकी सेवा की है और हरद्वार में मास पर्यन्त बहुत सेवा की हैं । मुझे पूर्ण विश्वास है कि बाबा मेरी प्रथंना नही टालेंगे । अगर बाबा नहीं जायेंगें, तो मैं भी घर नहीं लौटूँगा । घर पर कोई रघुवीर को जनेऊ दे देगा ।

जोशीजी ने जवाब दिया- भरतजी भी संकल्प करके चित्रकूट गये थे । उन्हें पूर्ण विश्वास था कि रामजी उन्हें अपने प्राणों से भी बढ़कर मानते हैं, अतः उनकी प्रार्थना की अनसुनी नहीं करेगें । क्या भगवान राम अयोध्या वापस लौटे ?

जोशीजी के कथन से राजदेव बाबू के चेहरे पर उदासी छा गई, फिर भी साहस बटोर कर श्रीद्धारकाधाम और वहाँ से बेट द्धारका गए ।

आप आ गये, रघुवीर को कहाँ छोड़ दिया ?- बाबा ने कहा । (बात यह थी कि राजदेव बाबू अपने एकमात्र पुत्र रघुवीर को बहुत मानते थे और हमेशा साथ ही रखते थे, इसीलिए विनोद के स्वर में बाबा ने पूछा था) ।

दो-तिन दिनों के बाद एक दिन अवसर देखकर राजदेव बाबू ने बाबा से निवेदन किया- बाबा, मेरा भेजा निमंत्रण पत्र तो आपको मिल ही चुका हैं । बहुत विश्वास के साथ में आपको बुलाने आया हुँ । मेरे साथ चलकर मेरे यज्ञ को सफल बनाने की कृपा करें ।

बाबा कुछ देर शांत रहे, फिर बोले-राजदेव, आज तक तुमने मेरी जो सेवा की है, क्या उस सेवा को बेच लेना चाहते हों ? तुम्हारे साथ जाने से तुमहारा ऋण सध जायेगा ?

राजदेव बाबू के पैर तले की मिट्टी खीसकने लगी । वे निःशब्द खड़े रहे ।

बोलो, बोलते क्यों नहीं ? -बाबा ने प्रश्न किया ।

राजदेव बाबू- मेरा अपराध क्षमा करें और अब मुझे घर लौटने की आज्ञा प्रदान करें ।

बेट द्धारका वासियों में से किसी प्रेमी ने बाबा से पूछ दिया-बाबा आप बिहार कब जा रहे हैं ?

बाबा बोले-राजदेव पूछता ही कहाँ हैं ?

तब उस प्रेमी ने राजदेव बाबू से पूछा- आप इतना खर्च बर्दारत करके बाबा को बुलाने के लिये यहाँ आये हैं ; बुलाकर ले क्यों नहीं जाते ?

राजदेव बाबू ने बवाब दिया- हम अपनी सेवा नहीं बेचेंगे। बाबा की इच्छा, जायँ अथवा नहीं जायँ ।

चलने के समय बाबा ने करुणार्द्र होकर कहा- राजदेव, भूलचूक माफ करना ।

बाबा के ये मर्मस्पर्शी शब्द सुनकर राजदेव बाबू की आँखों में आँसू आ गये और बाबा को दण्डवत् कर भारी हृदय से वे वहाँ से विदा हुये । रधुवीर के यज्ञोपवीत के अवसर पर परम पूज्य बाबा ने आशीर्वाद का टेलीग्राम भेज दिया था ।

(५) ग्राम-ढाँगर (सीतामढ़ी) में अखंड नाम धुन चल रहा था . शाम के समय परम पूज्य बाबा सत्संग कर रहे थे । तभी बैकुण्ठ बाबू के एक मित्र वहाँ पहुँचे । वे बाबा का वन्दन करें, उससे पहले ही बाबा ने शिर झुकाकर उनका ही नमन कर लिया । इस पर वे चौंके और सहमते हुये बाबा से बोले -" आपका वन्दन मैं हंमेंशा से करता आ रहा हूँ; मुझसे क्या अपराध हो गया हैं, जो आज आपने ही मेरा वन्दन कर लिया ?"

"इसलिए कि आपकी विजय हुई है और मेरी पराजय हुई हैं" - बाबा ने कहा । मित्र को आश्चर्य हुआ । उन्होंने पुनः जिज्ञासा की- "बाबा, इस रहस्य को स्पष्ट करने को कृपा करें, मेरी समझ में कुछ भी नही आ रहा है ।"

"आपने मेरी दो साल के प्रयत्न पर बात-की-बात में पानी फेर दिया हैं" -बाबा बोले । "गत दो साल में मैने 'वैकुण्ठ' को जितना अपनी ओर मोड़ा था, उससे अधिक आपने पल मात्र में उसे अपनी ओर मोड़ लिया और पंचायत के मुखिया-पद का उम्मीदवार (Candidate) बना दिया । अब आप ही कहिये कि आपकी जीत और मेरी हार हुई कि नहीं ?"

(६) परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री काश्मीरी बाबा की पुण्य-तिथि दिनांक २७-८-६३ से दिनांक ३-९-६३ तक ग्राम-सराठा में मनायी गई थी । इस महोस्तव के अवसर पर परम पूज्य बाबा दिनांक १९-८-६३ को सराठा पधारे थे । यज्ञ की

समाप्ति के पश्चात् उनके दाहिने हाथ में घाव हो गया। ठंडा जल का व्यवहार बराबर करते रहने से घाव में सूजन हो गई और उसमें मवाद पैदा हो गया। अधिक दर्द के कारण बुखार आने लगा। दवा सेवन के लिए डॉक्टर के अनुरोध को वे टालते रहे। केवल ड्रेसिंग से काम न चलने पर दिनांक ११-९-६३ को घाव का ऑपरेशन कर दिया गया। ड्रेसिंग के बाद इन्जेक्शन लगाने के साथ ही उसका रिऐक्शन (Reaction) हो गया और बाबा बेहोश गये। उनकी आँखों की पुतलियाँ उलट गई। वहाँ पर उपस्थित सभी लोग भयभीत और व्याकुल होकर जोरजोर से 'विजय मंत्र' का उच्चार करने लगे। नाम महाराज की कृपा एवं डॉक्टर के उपचार से लगभग पाँच मिनट के बाद बाबा को होश आ गया।

कुछ स्थिर होने के बाद बाबा ने कहा -'चन्द्रशेखर बाबू, आज मेरे शरीर का त्याग हो जाता तो आप बहुत परेशानी और खर्च में पड़ जाते।'

चन्द्रशेखर बाबू ने साश्चर्य पूछा- 'बाबा, सो कैसे ?' बाबा बोले- मेरे शरीर-पात का संवाद मिलते ही गुजरात, सौराष्ट्र और बम्बई से सैंकड़ों प्रेमी-भक्त यहाँ दौड़ पड़ते। तब तो आपको बहुत बड़ा भण्डारा करना पड़ता और यहाँ पर मेरी समाधि भी बनवानी पड़ती !'

अत्यन्त तकलीफ की हालत में भी बाबा के इस विनोद को सुनकर सभी खिलखिलाकर हँस पड़े।

(७) देकुली पोखर का जीर्णोद्धार हो चुका था। वहाँ पर डेढ़ मास पर्यन्त चलने वाला रामधुन तथा भगवान् शंकर का रुद्राभिषेक महायज्ञ भी सम्पन्न हो चुका था। उसके बाद ही ग्राम-कुअमा (सीतामढ़ी) के श्री रामावतार सिंह, बाबा को बुलाकर अपने यहाँ ले गये। वहाँ पर ग्रामवासियों की तरफ से नवाह अखण्ड का आयोजन किया गया था। उस समय भयंकर बाढ़ आयी हुई थी। कुअमा गाँव सब तरफ से बाढ़ के पानी से घिर कर टापू का रुप ले चुका था। बाबा ने मण्डली को नाव पर बैठा दिया। मल्लाह को भी नाव पर बैठ जाने को कहा और बाग-मती नदी की वेगवती धारा के विपरीत खुद नाव खेकर एवं कहीं-कहीं पैदल ही खींच कर चार मील दूर कुअमा गाँव में पहुँचे। ग्यारह दिनों के बाद

बाबा पुनः देकुली महादेव मठ पर वापस लौटे ।

देकुली में पोखर में काम करने वाले श्रमदानियों के लिए जो चना पानी में भिगो कर रखा गया था, इतने दिनों के बाद कुमआ से लौटने पर उनमें बड़े-बड़े अंकुर उग आये थे । बाबा ने कहा कि सभी के लिए आज का भोजन यही रहेगा । शिवहर तथा पिपराही के B.D.O. तथा अन्य अनेक भक्त लोग बाबा के साथ पंगत में बैठे । चना को भूनते समय मिर्च अधिक मात्रा से पड़ गई थी, जिस कारण अधिक तीता हो जाने से लोग खा भी रहे थे और सी-सी भी कर रहे थे । लोगों की आँख और नाक से पानी भी गिर रहा था ।

बाबा ने कहा-"इसमे बेचैन होने की कौन-सी बात है ? अरे, तीता खाओगे तो मीठा मिलेगा !"

और बाबा के कहने के साथ ही ऐसा चमत्कार हुआ कि एक भक्त अकस्मात् सीतामढ़ी से दो हाँड़ी रसगुल्ला लेकर वहाँ आ गये और सभी लोगों का तीता मुँह लगे हाथ मीठा हो गया और लोग इच्छा भर रसगुल्ला खा कर प्रसन्न और तृप्त हो गये !

इस प्रकार परम पूज्य बाबा जिज्ञासुओं में आत्मज्ञान का प्रकाश फैलाते हुए, सहृदय जनों में प्रेम और भक्ति का भाव भरते हुए एवं नाम-पिपासु जनों को निरन्तर भगवन्नामामृत से तृप्त करते हुए भ्रमणशील रहते थे । उनके स्नेह सौहार्दपूर्ण व्यवहार से तथा प्रेमसिक्त वाणी एवं मधुर रहस्यमय विनोद को सुनकर लोग प्रफुल्लित हो जाते थे । बाबा का निर्मल, उदार एवं महान् चरित्र लोगों के लिए अनुकरणीय था । परम पूज्य बाबा के सान्निध्य में रहकर सत्संग एवं भगवन्नाम जपने का जिन्हें सुअवसर प्राप्त हुआ था, वे धन्य हैं !

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गुलाब !

पोरबंदर

आशीर्वाद !

दिनांक २६-५-६४

तुम्हारा पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ । मैं विवाह प्रसंग उपर कही भी जाता नही हूँ फिर भी तुमने समझपूर्वक भी लिखा है कि अगर २९-५-६४ को आ जाओं तो मेरे उपर बड़ी कृपा। आज बाबू भाई वैद्यराज का कोई मोटर लेकर यहाँ आया है और आज साम को खंभालिया के लिये प्रस्थान भी करुँगा तो वहाँ से अपनी सुविधा अनुसार व्यवस्था करने की चेष्ठा करना, तुम्हारा अति आग्रह हो तो घन्टे दो घन्टे के लिए आ जाऊगा और हिम्मत के लगन प्रसंगोपरान्त रखो तो अत्युत्तम विशेष जैसा विचार हो वैसा खंम्भालिया में सूचना देना। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय गुलाब तथा बाल गोपाल !

छतौनी

आशीर्वाद !

दिनांक २५-१०-६३

तुम्हारा २०-१०-६३ का लिखा हुआ पत्र मिला। समाचार मालूम हुआ। गंगासागर का इसबार मौका मिलना कठिन है क्योकि छतौनी का अेक मास का अखंड बढ़ा दिया गया और पूर्णाहुति सवा मास पर होगी पूर्णाहुति ९-१-६४ को यहाँ होगी तब तक यही पर रहना होगा उसकी सूचना दूंगा। बाबू प्रहलाद सिंहजी का लड़का भरत यहाँ आ गया है उसकी क्या इच्छा है यह अभी तक मुझे मालूम नही ? उसके पिता का भी क्या विचार है अभी तक मैने पूछा नही है । बाबूभाई का भेजा हुआ औषधि का पार्सल मिल गया । भजन करना चाहिए यही

मानवजीवन का लक्ष्य है श्री प्रभु नाम स्मरण सरल से सरल भजन का रूप है। मनुष्य जब जहाँ जैसे चाहे वैसे ही कर सकता है। भगवानदास को मेरा जय श्री राम। बालगोपाल को आशीर्वाद। विशेष श्री राम।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री बालूघाट आश्रम

प्रिय बाबूभाई तथा बाल गोपाल !

दिनांक १९-२-६३

आशीर्वाद।

श्री प्रभु कृपा ही जीवमात्र के कल्याण का सुख शान्ति का अेकमात्र उपाय है, उस कृपा की अनुभूति के लिए जीव को श्री प्रभु जिस भी परिस्थिति में रखे, उसी में धैर्य उत्साह एवं विश्वासपूर्वक रहते हुए सदा सर्वदा श्री प्रभु की भक्ति, स्मृति, के लिए हृदय से प्रार्थना करते रहना चाहिए। संसार में सर्वत्र दुख ही दुख है, अशान्ति अशान्ति ही है किन्तु जीव अपने पूर्वकृत कर्मो के संस्काररानुसार अेक दूसरे से सम्बन्ध स्थापित कर, अकारण ही अपनी आसक्ति, ममता, वासना, के कारण सुखी, दुखी, असान्त हुआ करता है। अपने को कर्ता मान लेने ही से भोक्ता का परिणाम भोगना पड़ता है। किन्तु इसी संसार में रहते हुए श्री प्रभु को ही सर्व समर्थ कर्ता, भर्ता, हर्ता, समझ सन्तोषपूर्वक जीवन यापन करने से श्री प्रभु का अखंड स्मरणपूर्वक स्वधर्म का पालन करते रहने से जीव उन्ही की कृपा से सर्व प्रकार की आसक्तियों से मुक्त हो जाता है। जब अपनी शक्ति का भान ही नहीं तो, हर्ष, विषाद कैसा और क्यों ? सृष्टी के नियन्ता द्वारा जो कुछ भी हो रहा है सब जीव मात्र के कल्याणार्थ ही हो रहा है। बस ! अपने जीवन रथ का बागडोर श्री प्रभु के दिव्य कर कमलों में सौपकर निर्भय, निश्चिन्त हो जाना

चाहिए। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय बाबूभाई तथा बाल गोपाल ! श्री रतनपुर

आशीर्वाद । दिनांक ९-७-६७

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है । आज आपके बालकों के विवाह तथा यज्ञोपवित सम्बन्धी पत्रिका मिली है । श्री प्रभ कृपा से यह शुभ मंगलमय प्रसंग निर्विघ्न आनन्दपूर्वक सम्पन्न होवे ऐसी सद्कामना सह श्री प्रभु प्रार्थना । इन बालकों का जीवन धर्ममय, नितिमय, संयम, सदाचार, भक्तिमय, सुखशान्तिमय बने ऐसी ही शुभकामना सह जय श्री राम। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

श्री द्वारकाधाम

प्रिय बाबूभाई !

आशीर्वाद । दिनांक २६-८-५७

आपका पत्र मिला । समाचार मालूम हुआ है । आपने अपने पत्र में अपने अनुजवधुके असमय देहावसान के कारण ही अपनी काफी दिलगीरी प्रगट की

किन्तु भाई ! इसमें दिलगीरी जैसी कोई बात नहीं कारण सृष्टि क अनादि चक्र अव्याहत गति से चल रहा है, उसमें किसीका बल या विद्या काम नही करती। जब जैसी जिस जीव के लिए निर्धारण हो चुकी है, वह होकर ही रहता है। हाँ! स्वयं इस सृष्टिचक्र का नियन्ता ही अपनी स्वेच्छा से किसी जीव के जीवन चक्र के निर्धारित कार्य कलाप को बदल दे, परिवर्तित कर दे तो भले अन्यथा किसी देव दानव, मानव की शक्ति के बाहर की बात है। साथ ही जन्म-मरण, सुख्र-दुःख्र, हानि-लाभ, सोयोग-वियोग, हर्ष-विषाद, शोक-मोह, ज्ञान-अज्ञान तो अेसा सापेक्ष दृन्दात्मक शब्द है कि अेक बगैर दूसरे को रहना ही सर्वदा असम्भव है। जहाँ अेक है वहाँ दूसरा होगा ही । अतः विवेकी पुरुष इसी दृन्दात्मक क्रिया को दुनिया कहते है, इस दुनिया में याने दृन्द मे राग करने वाला राजा, रंक, फकीर सबको अेक ही घाट उतरना पड़ता है याने सतत चिन्ताग्नि में जलना ही पड़ता है। शान्ति का सुख्र का तो अेक ही मार्ग है, कि दृन्दानल प्रभु का तन, मन, वचन से भजन किया जाए। जिससे उनका प्रत्येक विधान मंगलमय प्रतीत होवे, सदा के लिए दिलगीरी की अेक ही दवा है "दिलदार" को अपना दिल देना। विशष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय बाबूभाई !

जय श्री राम ।

आपका पत्र मिला। दुनियाँ दुरंगी है पल-पल में इसका रंग बदलता है इस बदलती दुनियाँ में विरला ही कोई ऐसा होता है जो एक रंग में रहे। लेकिन पुरुष वही है जो अपने रंग से रंगा हुआ रहे, भले ही दुनियाँ बदल जाये । समाचार सब अच्छा है। भजन करना चाहिए चाहे जहाँ भी रहो, जो भी करो । आप के

बहनोई का पत्र मिला लेकिन उनका सरनामा मालूम नहीं नूतन वर्ष के मंगल प्रभात में मेरी यही सद्कामना है कि अधिक से अधिक श्री प्रभु नाम स्मरण करे और जीवन जन्म सफल बनावे-उन्हे भी मेरी सद्कामना, शुभेच्छा, मंगलकामना लिख देना। जोशी तथा आपके समस्त परिवार को मेरी शुभकामना मंगल भावना। विशेष श्री प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय वत्स अनूप !

शुभार्शिवाद ।

भगति, भक्त, भगवन्त, गुरु, चतुर नाम बपु एक ।
तिन्हके पद वंदन किये नाशै विघ्न अनेक ॥

(श्री नाभाजी)

आज श्री मंगलमय, कल्याणमय, परमानंद, श्री प्रभु के दिव्य चरणाविन्द के मृदुल, मंजुल, मनोमुग्धकारी, सर्वतापहारी, नयन अभिय दृगदोष विभजनकारी, भक्तिज्ञान विरागोद् भवकारी, भक्तभय भंजनहारी, जनमनरंजनकारी, दिव्यमकरंद रसना रसिक, दिव्यपद पंकज, परमाप्लावित हृदयकविकुल, चूड़ामणि, भक्तशिरोमणि, प्रातःस्मरणीय, परमअर्चनीय, नित्यवंदनीय, परमकमनीय, सदासर्वदा माननीय, परमादरणीय श्रीमद् गोस्वामी श्री तुलसीदासजी के परममंगलमय आर्विभाव दिवस (श्री तुलसीजयन्ति) के परमपावन, परमामांगलिक शुभ अवसर पर तुम्हारे भक्तिभाव रसविभोर हृदय के निर्मल तारों को झंकृत कर मुझे परम हर्ष होता है। श्री तुलसी जिनके बिना श्री प्रभु को कोई भी पदार्थ ग्राह्य नहीं है तथा उनके दास की वाणी बिना कोई शब्द ग्राह्य नहीं है।

रामनाम बिन गिरा न सोहा, देखि विचार छाड़ि मद मोहा ।
भनित विचित्र सुकविकृति जोउ, रामनाम बिनु सोह न सोउ ॥
विधुवदनी सबभाँति सवारी, सोह न वसन बिना वरनारी ।
सब गुन रहित कुकविकृत बानी, रामनाम जस अंकित जानी ।
सादर कहकि सुनहि बुधताहि, मधुकर सरसि संत गुनग्राही ॥

तुलसीदासजी की महिमा तथा उनके द्वारा किये परम उपकार का वर्णन मेरे जैसा छुद्र प्राणी क्या कर सकता है ? अखिल विश्वोद्‌भासक मार्कण्ड की उपमा किससे की जाय ? यदि उसके समान कोई दूसरा हो तो उपमा की जा सकती है परन्तु वह तो एकमेवाद्धितीय है । इसी तरह जन्म जन्मांतरो से अविद्याग्रस्त प्राणियों के अन्तरमन के घोर तिमिर तरुण अंधकार के तिरोधान तथा प्रकाशरुप दिव्य चिन्मय ज्ञान-भानु के उदय के लिये ही जिस प्रभु के परम लाडिले भक्त श्री तुलसीदासजी का अवतार हुआ उस जीव का जननी जनक का, उस देश का, वेष का, जाति का, वंश का, बंधुबान्धव का यश-गान कौन कर सके ? आज उनका सद्‌गुण सौरभ प्रसरित हो रहा है। उनके ज्ञान गौरव, भाव भक्ति की सर्वत्र प्रशंसा हो रही है । उनके पितृगण कृतकृत्य होकर आनन्दोत्सव मना रहे हैं । यक्ष, गंन्धर्व, किन्नर, उनकी कीर्ति का विस्तार कर रहे हैं । देवता उनके अमर जीवन की अमर गाथा गा-गाकर पुष्पवृष्ठी कर रहे हैं। वंसुधरा अपने नाम की सार्थकता समझकर अपने सद्‌भाग्य के गौरव का अनुभव कर रही हैं । जननी जनक सच्चे पुत्र की प्राप्ति द्वारा अपने जीवन जन्म की खोई हुई निधि को प्राप्त करके कृतकृत्य को प्रगट करके कृतकृत्य होने के लिये मूक आहवान कर रहे हैं । उसकी सुषुप्त ज्ञान उर्मियों को जाग्रत कर रहे हैं । विषय वासनाओं की विषम विषमताओं से दूर हटा रहे हैं । सद्‌विचार, सदाचार, संतोषशीलता का पाठ पढ़ा रहे हैं । जागो ! उठो! खोये हुए को अपनाओं, अपना निर्मल भाग्य जगाओं, भोग रोग को दूर भगाओं, ज्ञान गौरव का शान बढ़ाओं, परम धर्म की ज्योति जगाओं, अपने

स्वतत्व को स्वीकारों, जगत में सच्चा नाम कमाओं, जीवन जन्म सफल बनाओं। अपने परायें का भेद मिटा दो, स्वकीर्ति अमर बनाओं। जागो ! जागो ! बन्धुओ तुलसी का आहवाहन सुन ला—

पुत्रवती युवती जग सोई, रघुवर भक्त जासु सुत होई ।
नतरु बाझ भलि वादि बिआनी, राम बिमुख सुन सुतते हित हानि
जननी जनै तो भक्त जन, क्या दाता क्या सुर
तीन सजावत देश को सती, संत अरु सूर
तीन लजावत देश को, कपटी, कायर, कूर ।।

बस ! आज तो तुलसी के आर्विभाव के अवसर पर हमको उन्ही के शब्दों में जयन्ती मनानी चाहिये। जिस प्रकार पूर्व का विषयासक्त जीवन, अंधकारमय, अशान्तिमय जीवन पीछे के साधनामय जीवन द्वारा परम प्रकाशमय, प्रशांतमय, परमानन्दमय बन गया उसी साधना को सच्चे अर्थ में जीवन बनायें, तो यही तुलसी की तथा अपने जीवन जन्म की सच्ची जयन्ती है। जब तक मेरे जीवन में पराजय का ही परम साम्राज्य फैला हुआ है, परम पराभव के प्रहार पद-पद पर पड़ते हो तो जयन्ती कैसी? जयंती तो तब, जीवन तो तब जब हम महापुरुषों द्वारा बतायें गयें साधनों का सहारा लेकर अपने जीवन संग्राम में जय लाभ प्राप्त करें, विजयवधूवरण करे जभी हमारा जीवन सफल हुआ माना जायेगा, नहीं तो जन्म से मृत्यु, मृत्यु से जन्म तक का अविरत संसार चक्र तो सदैव चलता ही रहेगा।

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननी जठरे शयनम् ।
ईह संसारे खलु दुस्तारे कृपयापारे पाहि मुरारे ।।
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द मूढ़मते ।

इस प्रकार "उस कलि कुटिल जीव निस्तार हित वाल्मिकि तुलसी भयों ।" की दिव्य वाणी अमर संदेश, अमोघ साधन—श्री भगवन्नाम का ही परम आश्रय

ग्रहण करके श्री तुलसी की तरह अपने जीवन को उत्तमोत्तम बनाना चाहिये। उनके शब्दो के अनुसार केवल एक प्रभु नाम द्वारा ही जीव सर्वस्व उपलब्ध कर सकता हैं। जिस प्रकार विनय पद २२८ :

चाटत रह्यो स्वान पातरी ज्यों कवहूँ न पेट भरो।
जौं हौं सुमिरत नाम सुधारस पेखतपरसो धरो।।
स्वास्थ और परमारथहुँ को नहि कुंजरो नरो।

सब अंगहीन, सब साधन विहीन मनवचन मलीन हीन कुल करतूति हौं ।
बुद्ध बल हीन, भाव भक्ति विहीन, हीन गुणज्ञानहीन, हीन भाग हैं विभूतिं हौं ॥
'तुलसी' गरीब की गई बहोरी रामनाम, जाहि जपि जीह राम हूँ को बैठो धुति हौं ।
प्रीति रामनाम सों, प्रतीती रामनाम की प्रसाद रामनाम के पसरि पाप सुति हौं ॥
रामको सपथ, सरबस मेरे रामनाम, कामधेनु कामतरु मो से छीन-छामको

(कवितावली)

इस प्रकार तुलसी जयन्ती द्वारा भी रामनाम की तरह पुज्यबापूजी का अंगुलिनिर्देश रहता था।

जिस प्रकार विनय पत्रिका में गोस्वामी तुलसीदास सभी देवी देवताओं की स्तुति करते परंन्तु सबसे यही मागते है:—

माँगत तुलसीदास कर जोरे ! बसहि रामसिय मानस मोरे ।

देहिमां ! मोहि पन प्रेम यह नेम निज राम धनश्याम तुलसी पपीहा ऐसी ही भूमिका पूज्य बापूजी की है। उनके सभी उत्सव चाहें वह वसंत पंचमी होय, फूल डोल होय, राम नवमी होय, जानकी नोम होय, जन्माष्ठमी होय, राधष्ठमी होय, सबका लक्ष्य अेक ही रहता और उन विविध अवतारों, विभूतिओं, या भक्तों के स्मरण द्वारा नामनिष्ठा की अभिवृद्धि। फूलडोल जैसे उत्सव तो 'रामनाम' की मस्ती का अनोखा रंग भरते। और शरद पूर्णिमा जैसे दिवस 'रामनाम' में रामलीला का समन्वय स्थापित करते । ऐसे दिवसों की अपनी एक परम्परागत विशिष्ठता तो होती ही है फिर भी उसमें सत सानिध्य के बाद आनन्द और

आह्लाद का तो पूछना ही क्या ?

बड़ौदा के जन्माष्ठमी उत्सव का श्री रामभक्त की कलम से लिखा गया वर्णन अपने को भाव तरबोल कर दें ऐसा है। कितने ही का भाव मुझमें जगा। इस विषयमें पहले से उनकी स्वीकृति नहीं ली भक्तों के मना करने पर भी पूज्यश्री को पुष्पों से सज्जित करने का और माली से फूलो का मुकुट, फूलों का पहनावा, गजरा, मुरली आदि बनवाकर मैनें तैयार रखा था, पूज्य श्री ने आते ही धुनि शुरु कर दी। धीरे-धीरे मन मस्ती में मस्त होने लगा और पुष्प का श्रृंगार करने का विचार आया, उनके पास फूल की टोकरी लेकर गया और मैने उनकों मुकुट पहराने के लिये ज्योहि हाथ लम्बा किया उसी वक्त वे बोले कि तू मुझे पागल बना देगा। बस! फिर तो उस दिन के आनन्द का वर्णन कलम नहीं कर सकती।

जन्माष्ठमी के दिन मंडप की सजावट वैकुंठ जैसी हुई थी। चांदी की कमान और ताजी शाकभाजी की गुँथनी से सम्पूर्ण सजावट बड़ौदा के भक्तों ने की थी। पूज्य श्री उसे देखकर भाव विभोर हो गयें और हमको उत्साहित करकें बोल उठे–

'ऐसा उत्सव सत्रह साल में नहीं हुआ ।

ये तो केवल शब्दों में रेखाचित्र हैं परन्तु उत्सवो का अहलाद और उनका योगदान तो शब्दातीत ही रहनेवाला है। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय जयन्ती भाई तथा बालगोपाल ! द्वाराक संकिर्तन

मंदिर ट्रस्ट

आशिर्वाद । दिनांक ५-४-६९

तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि अपना जीवन सुधारने के लिये तुम्हारे हृदय में जिज्ञासा जगी है । सच्ची बात है जब तक अपने कल्याण की कामना जब तक अपने हृदय में जगती नहीं है तब तक कोई भी गुरु या

संत या भगवन्त भी कुछ नहीं कर सकते। और जब सच्ची लालसा किसी भी वस्तु के लिये जगती है जीव उसके लिये व्याकुल होता है। अधीर बनता है। किसी की सहायता के लिये राह जोता है, उस समय राह दिखलाने वाले, सच्चा बोध देनेवाला, सन्मार्ग दर्शन कराने वाला और उस पर (चढ़ानेवाले) आरुढ करानेवाला श्री प्रभु कृपा से बिना बुलावे घर पर आ जाता है और जीवन दीपक की बुझती ज्योत में तेल और वाट डाल कर फिर से सजीव कर देता है।

जागत सोवत हरि भजों हरि हरि दे न विसार ।

डोरी गही हरि नाम की, दया न टूटे तार ।।

और अपने भीतर जिस वस्तु की लालसां, चाहना नहीं है तो मुफ्त मिलने पर भी कीमत नहीं होती। गुरु ज्ञानी, समर्थ मिलने पर भी अगर शिष्य जिज्ञासु, वैराग्यवान न हो तो कोई विशेष लाभ नहीं होता । भगवान और संत तथा गुरु तो कृपा रुप ही हैं – उनसे कृपा याचना करने की आवश्यकता नही होती, सीर्फ उनकी कृपा ग्रहण करने की अपने भीतर लालसा, पात्रता पैदा करने की जरुरत रहती है । **मंत्र मूलं गुर्रोवाक्यं मोक्षमूलं गुर्रोकृपा** । जो गुरुदेव के बताये गये मार्ग पर श्रध्धापूर्वक अनुसरण करता है, उस पर गुरुदेव की कृपा दृष्टि वगैर मांगे अनायास ही होती रहती है । बस ! खूब नाम रटो जपो, सुखी बनो बनाओं यही हार्दिक कामना सह श्री प्रभु प्रार्थना ।

मास्टर तथा उनके साथियों वगैरह सभी प्रोमियों को मेरा यथा योग्य सह श्रीराम जय राम जय जय राम। जेठाभाई को जवाब लिख दिया है कि वैशाख मास विजापुर की सम्भावना नहीं मालूम होती है कारण मेरा स्वास्थ्य थोड़ा बिगड़ गया था और वहाँ गर्मी सख्त पड़ती है । साथ ही वैशाख मास में पोरबंन्दर का वार्षिकोत्सव है और वैशाख सुद सातम की नये मंदिर का शिलान्यास है। आनेजाने की चिंता न करना, कही भी रहकर भजन करो, जब तक भजन करते रहोगे तब तक तुम्हारे साथ हूँ अेसा अनुभव करना। विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय जयन्ती भाई शान्तिभाई, शास्त्रीजी
डायाभाई, मास्टर, जोशी तथा अन्य
वीजापुरवासी नाम प्रेमीजन !

महुवा
C/o. Vinod P Mehta
Esso Agent
जि० भावनगर
दिनांक ५-८-६९

जय श्री राम ।

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। यहाँ आने के बाद अेक Retired Surgeon तथा M.D. दोनों को बम्बई का Report दिखलाया किन्तु उन लोगों ने कहा आप को कुछ नही है जैसे आप पहले रहते थे वैसे Normal जीवन व्यतीत किजिये। आप कहाँ से डॉक्टरो के चक्र में पड़ गये। यहाँ आने पर दवा की Reaction और Weakness के कारण काफी तकलीफ बढ़ गई किन्तु अेक परम भक्त नाम निष्ठ सामान्य वैध की दवा से ४ दिवस में ही काफी सुधारा हो गया। दवा चालु है। १५ दिवस में स्वास्थ्य काफी सुधर गया है सीर्फ कमजोरी है। आप लोगों के भावना सेवा, निष्ठा, तत्परता को कभी भूलने की इच्छा रखने पर भी भूलाई नहीं जा सकती। बस! श्री प्रभु आप लोगों की नाम निष्ठा, सेवावृत्ति को खूब-खूब दृढ़ बनावे, यही हार्दिक सद्भावना सह श्री प्रभु प्रार्थना। विशेष श्री प्रभु कृपा। जो कोई याद करे सभी को मेरा श्री राम जय राम जय जय राम ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय जयन्ती भाई तथा बालगोपाल !

संकिर्तन मंदिर
श्री द्वारकाधाम
दिनांक १७-७

आशिर्वाद ।

श्री प्रभु कृपा से सब आनन्द है। पत्र से समाचार मालूम हुआ। श्री प्रभुनाम

के लिये तुम्हे जो ईतनी लगन गई है - यह सीर्फ अेक मात्र श्री प्रभु की अहैतुकी कृपा का ही फल समझों अन्यथा वर्षो से लोग नाम जपते हैं किन्तु न उनमें किसी प्रकार लगन, श्रद्धा देखने में आती हैं - न जीवन में सत्कर्म ही। नाम रटन तो किसी भी प्रकार किया जाए भाव से कुभाव से, अनरव से आलस से फिर भी हरहालत में जीव का मंगल ही होता है। फिर भी नाम जाप करनेवालें में श्री नाम महाराज के प्रसाद में कृपा में जो भेद होता है। उसका कारण है जपने वालों के संस्कार जैसे कोई स्थान पहले से खूब स्वच्छ निर्मल पवित्र है तो वैसे स्थान में अनभव शीघ्र होता है जिस स्थान में दुर्गन्ध की मात्रा विशेष है तो भी वहाँ पर अल्प मात्रा या समान मात्रा का सुवास भी तत्कालिक सुवास नही फैला सकेगा। ईसी प्रकार नाम जापक का संस्कार और संग सुन्दर हो तो उसे नामामृत्त का स्वाद तत्कालिक ही प्राप्त होने लगता है, और इसके विपरित होने पर **श्री नाम महाराज** का प्रभाव तो अनवरत होता है। किन्तु अनुभूति विलम्ब से होती है, तुम भाग्यशाली पुरायशाली हो जो अल्पकाल के सत्संग से ही **श्री नाम महाराज** में ही इतनी निष्ठा. हो गई है। बस अब मन - **मन** के विकारों, चलताओ– अस्थिरताओं की ओर ध्यान न देकर **श्री नाम महाराज** की ओर दृष्टि बनायें रखो, उन्ही की अहर्निश रटन करते रहों तथा साथ ही साथ यह भी दृढ़ता बनाते रहो कि **श्री नाम महाराज** के रटन में मेरे अन्दर अल्प कोई पाप जरा रह गया है। उनके प्रभाव से अग्नि माला में जलकर सब भस्म हो गये और उन्ही के बल प्रताप से अब पाप कर्म मेरे पास आ नहीं सकते अगर आने की चेष्टा करेगें तो श्री नाम महाराज की कृपाबल से उन्हे मार भगाऊंगा।

'तुलसी' 'र' के कहत ही निकसत पाप पहार।
पुनि आवत पावत नही दिये मकार कपाट ॥
जासु नाम पावक अधतूला सुमिरत सकल सुमंगल भूला ॥

बस खूबनाम का रट लगाये रहो और सब कुछ अपने आप हो जायेगा। जैसे औषध सेवन करने से रोग अव्यक्त रुप पुष्ट और बलवान होकर मूल रुप से चला जाता है, और शरीर के अंदर ज्यो प्रवेश कर जायेगा त्यों-त्यों मनोरोग क्षीण होते होते अनन्तोगत्वा निर्मल और निश्चल बन जायेगा अेसा संतो का अनुभव है।

सभी रसायन हम करि, नहि नाम सम कोय ।
रंचक घटमें संचरै, तो सब तन कंचन होय ॥

जेठाभाई, शान्तिभाई, शास्त्रीजी, मास्टर साहेब, डाक्टर साहेब तथा अन्य सभी प्रेमियों एवं अपने बाल गोपाल को यथा योग्य। सह श्री राम जयराम जय राम । श्री गुरुपूर्णिमा का उत्सव श्री द्वारकाधाम और श्री गुरुतिथि का उत्सव पोरबंन्दर में होगा । विशेष श्री प्रभु कृपा ।

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

॥ श्री राम ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प्रिय रामपुकार बाबू !

श्री डाकोरजी
दिनांक ६-४-६६

आपका प्रेम पत्र प्राप्त हुआ। समाचार मालूम हुआ। श्रद्धेय श्री राम एकबाल सिंहजी का समाचार भी कुछ समय पहले राजदेव खैरवा वाले से मालूम हुआ। अभी तो मै काठियावार से गुजरात में आया हूँ । श्री गुरुदेव एवं श्री प्रभु की कृपा कितनी अनन्त है कि ज्यों ज्यों अवस्था बढ़ती जाती है त्यों त्यों श्री राम नाम प्रचार के लिये श्री प्रभु की प्रेरणा और आदेश भी विचित्र ही होता जाता रहा है। बस मेरी तो प्रभु से प्रार्थना भी यही है कि जब तक शरीर रहे तब तक उनके नाम रटत इसी प्रकार करता करता रहे और नाम रटते-रटते ही उसके चरणाशरण में जाऊँ। आगे श्री उसकी मर्जी । अभी अमदाबाद में था चैत्र राम नवमी करके वहां से लगभग सौ-देढ़सौ प्रेमियों के साथ श्री रामनाम करते पैदल चलकर श्री डाकोर आया और वहां २४ घंटे अखंड करके ध्वजा चढ़ाई गई। यह सब श्री प्रभु की अहैतुकी कृपा का ही फल, अभी तो गुजरात का प्रोग्राम चल रहा है न जाने कब पोरबंन्दर द्वारका जाना होगा आप का पत्र पोरबंन्दर से Redirect होकर आया है पूजनीया माताजी के चरणा कमलों मे दण्डवत् प्रंणाम सभी प्रेमियों को वहां के निवासियों को यथा योग्य सह जय श्री राम।

आपका ही प्रेमभिक्षु

"श्री राम जय राम जय जय राम"

महाराजश्री की अमृतवाणी

(१) भगवन्नामोच्चारण करते समय हृदय गदगद हो जाए, आँखों से अश्रुपात होने लगे तथा शरीर में रोमांच हो तो समझो नाम की सिद्धि हो गई

(२) जो शब्द या नाम अविद्या से मन को बचाए एवं नाम जापक को सर्व प्रकारेण रक्षा करे उसे ही मंत्र कहते है ।

(३) स्वभाविक ही जिनके द्वारा आठो प्रहर नाम जप होता रहता है, उनके लिए अन्य किसी विधि की अवश्यकता नहीं है ।

(४) जीवन का सदुपयोग श्रीराम नाम जपने में ही हैं, यदि प्रमाद वश इस अमूल्य समय को खो दिया तो पश्चाताप के अलावा और क्या हाथ लगेगा ।

(५) काष्ट में अन्तर्निहित अग्नि जैसे घर्षण द्वारा दूध का मक्खन जैसे मन्थन द्वारा प्राप्त होता है, उसी तरह जीव के हृदय में निहित परमात्मा, अखंड नाम - जप द्वारा दृष्टिगोचर होता हैं ।

(६) भगवद् भजन के वास्तविक मर्म को वही जान पाता है जिस पर करुणामय प्रभु / परमात्मा की पूर्ण दया होती है ।

(७) भक्ति भाव को सतत जाग्रत रखने के लिए निष्ठापूर्वक भगवान्नाम का जप करते रहो ।

(८) जप करते समय अपने इष्ट का ध्यान भी अवश्य करते रहो, बिन उसके स्वरूप का चिन्तन किए नाम जप क़ी सिद्धि नहीं मिलती ।

(९) व्यवहार के कर्म करते समय भी नाम - स्मरण करते रहो, जिससे प्रत्येक कार्य भगवान की भक्ति बन जाए ।

(१०) मन रूपी लोहा जब तक शुद्ध न हो जाए तब तक उसे नाम रुपी अग्नि में डुबाए रहो ।

(११) कायिक, वाचिक, मानसिक सभी पाप एकमात्र नाम स्मरण से क्षीण हो जाते हैं ।

(१२) सतत् निष्ठपूर्वक जप करते रहने से हृदय में प्रेम की बाढ़ आ जाती है, तब उस प्रेमाम्बुधि में भगवान्नाम का प्राकट्य होता है ।

(१३) भगवान के सभी नाम मंगलमय परम कल्याणकारक हैं ।

(१४) भगवन्नाम कल्पवृक्ष है । साधक जिस वस्तु की इच्छा करता है, उसे वही प्राप्त हो जाता है ।

(१५) भगवन्नाम जप निरन्तर सदा-सर्वदा उठते-बैठते, सोते-जगते करते रहना चाहिए ।

(१६) प्राण से मुख से, कहते-सुनते, लेते-देते, खाते-पीते सब समय राम का जप करना ही सबसे बड़ा योग है ।

(१७) कामधेनु, कल्पतरु और चिन्तामणी ये तीनों भी हरि की अंतः प्रेरेणा से स्वर्ग लोक में सेवा करने वालों को ही इच्छित फल प्रदान करते हैं; परंतु श्रीराम का मंगलमय नाम पाप पङ्क से निकाल कर पुण्य - लोक प्रदान करता है और पामरों को पण्डित बनाकर पुरुषार्थ प्रदान करता हैं ।

(१८) जो लोग भगवान के नाम का स्मरण करते हैं, भगवान् उनके अपराधों का विस्मरण कर देते हैं ।

(१९) माता-पिता जिस तरह अपनी संतान पर आये भय को दूर कर देते है, उसी प्रकार नाम-जापक भक्त की रक्षा भगवान आगे-पीछे, दायें-बाये, भीतर बाहर हर जगह आकाश की तरह व्याप्त रहकर करते हैं ।

(२०) केवल भगवन्नाम स्मरण द्वारा साधक वैखरी, मध्यमा, पश्यन्ति का अतिक्रमण कर 'परा' में चिर स्थिति प्राप्त कर सकता है ।

(२१) प्रातः, मध्याह्न, सायं तीनों समय नियमपूर्वक नाम स्मरण करना चाहिए ।

(२२) सत्, चित्, आनन्द ब्रह्म के तीन भाव है । सत् भाव में सन्धिनी किया शक्ति, चित् भाव में वह सम्बित ज्ञान शक्ति, जिससे प्रकाश होता है और आनन्द भाव की प्रकाशकारिणी ह्लदिनी शक्ति ब्रह्म के ये तीनों भाव नाम स्मरण द्वारा सहज ही प्राप्त हो जाते है ।

(२३) व्याकुलता पूर्ण नाम कीर्तन का फल तत्काल मिलता है। जब सबकी आशा छोड़कर एकमात्र श्रीराम पर भरोसाकर भक्त एकमन से उन्हें पुकारता है तो धनुर्धारी को भक्त के रक्षार्थ दौड़ना ही पड़ता है।

(२४) येन येन यथा यद् यत्पुरा कर्म सुनिश्चितम् ।
तत् तदेकतरो मुक्ते नित्य विहितमात्मना ॥

'जिस जिस मनुष्य ने अपने-अपने पूर्वजन्मों में जैसे-जैसे कर्म किये हैं, वह अपने ही किये हुए उन कर्मो का फल सदा अकेला ही भोगता है।'

इसलिए प्रभुनाम के दृढ़ अवलम्बन के द्वारा अपने वर्तमान और अगले जन्म को सुधारो।

(२५) कलिकाल का समय महाभयंकर है। इसमें भगवान श्रीराम की प्राप्ति एकमात्र श्रीराम नाम जपने से ही हो जायेगी। इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम उसी पर प्रसन्न होंगे जो उनका पावन नाम मर्यादा पूर्वक जायेगा।

(२६) मनुष्य का हृदय और मन राम नाम से न जुड़ा हो तो, वह निरर्थक है स्मशान में लुढ़कते नरमुण्ड एवं राम नाम विहीन नरमुण्ड में कोई भेद नहीं रह जाता।

(२७) राम नाम का बटन दबाते रहने से हृदय नेत्र का टार्च जल उठता है और जीवन सार्थक हो जाता है।

(२८) भगवान के नाम के बारम्बर स्मरण, चिन्तन और रटन से बाह्य विषयों में लगा हुआ मन अन्तर्मुखी हो जाता है। मन के अन्तर्मुखी होने पर मनुष्यों को अपनी त्रुटियों का भान होता है। निरन्तर नाम जप के प्रभाव से हृदय का मल धूल जाने के कारण निर्मल हो जाता है और मन के निर्मल होने पर प्रभु दर्शन सरल और सुगम बन जाता है।

'निरमल मन जन सो मोहि पावा।'

(२९) राम का नाम लेने पर भी राम के गुणों के साथ सम्बन्ध न जुड़े तो समझो

अभी नाम का प्रवेश तुम्हारे हृदय में नहीं हो सका है । नाम लेते समय संशय, संदेह, भेद आदि उत्पन्न होने लगे तो समझो कि किसी जघन्य पाप का उदय हुआ है । नाम लेते समय विषयों के प्रति वैराग्य, सत्पुरुषों में अनुराग, आत्म - बल, आत्म विश्वास, संतोष, शान्ति तथा निर्भयता का अनुभव हो तो समझो राम के साथ तुम्हारा सम्बन्ध जुड़ गया, प्रभु श्रीराम की मंगलमयी कृपा तुम पर हुई है ।

(३०) संकल्प करो - 'मुझे तो तबतक नाम रटना है जबतक रोम-रोम एवं हड्डी-हड्डी से प्रभु नाम की धुन गुँज न उठे ।'

(३१) अग्नि सब में व्याप्त है । दो लकड़ियों को निरन्तर रगड़ने पर उससे अग्नि प्रकट हो जाती है, अग्नि का प्रकट होना लकड़ी की मजबूती एवं बाहुओं द्वारा होनेवाली घर्षण शक्ति के ऊपर निर्भर है, उसी तरह मन और नाम दोनों को निरन्तर रगड़ो तब नाम धुन का भेद समझ में आयेगा ।

(३२) जब प्रभु के साथ सम्बन्ध दृढ़ हो जाता है तो सांसारिक सम्बन्ध और विचार अपने आप दूर होने लगते हैं । प्रभु के प्रति अनुराग वर्द्धन के लिए नाम-स्मरण ही महान मंत्र है । किन्तु दवा सेवन काल में परहेज और अनुपान की सख्त आवश्यकता होती है, उसी तरह नाम स्मरण करते समय परहेज माने कि जो व्यक्ति विशेष, ग्रन्थ विशेष, स्थल विशेष, भगवान में प्रीति दृढ़ करे उसे अपनाये एवं जो विघ्नरूप अथवा वाधक हो उसका परित्याग करे और अनुपान यह कि गुरु के वचनों में पूर्ण निष्ठा रखते हुए उसका प्राणप्रण से पालन करे । नाम - स्मरण करने पर भी अपनी कमजोरी दूर नहीं हो तो प्रभु की अहैतुकी कृपा पर पूर्ण विश्वास रखते हुए हृदय से रो-रो कर प्रार्थना करो । वे दयामय तुम्हारी साज-सम्भाव अवश्य करेंगे ।

(३३) नाम-जप संकीर्तन Pure nectar (शुद्ध अमृत) है । विशुद्ध भजन-भक्ति भी वही है ।

(३४) श्री राम नाम गंगा जल जैसा पवित्र है । गंगा जल अगर मृतक की खोपड़ी पर डाला जाय तो उसको भी पवित्र कर देता है । नाम-जापक के मस्तिष्क रूपी खोपड़ी में आकर नाम रूपी गंगा जल समस्त विकारों को दूर कर देता है । भगवान का ऐसा पावन नामोच्चार करते समय ऐसी भावना करो कि हमारे सभी पाप-ताप, कलुष-कल्मष दूर हो गए हैं; और बुरे कर्मों को छोड़ने का प्रयास करो; तभी नाम का महात्म्य समझ में आयेगा वैसे तो तोता भी दिन-रात नाम रटता रहता है । पर तोता रटन्त से तो कुछ होने को नहीं है । नाम जप करते समय प्रभु के पावन चरित का ध्यान करो और उसे अपने में उतारो तभी कल्याण होगा ।

(३५) भगवान का नाम भूल जाना ही महा दुःख और अनिष्ट का मूल है और उनका नित्य स्मरण करना ही सच्चा सुखी एवं कल्याण है ।

(३६) सुख धन में, विद्या में, बल में या बुद्धि में नहीं, सच्चा सुख तो प्रभु भक्ति एवं उनकी शरणागति में है।

(३७) मन कोयला जैसा है । कोयला को पानी से लाख धोओ उसका दाग नहीं जाता, परन्तु उसे जब अग्नि से तपाते तो सफेद पाउडर बन जाता है । इसी तरह मन को भी राम नाम रुपी अग्नि में तपाओ, जिससे वह निर्मल बन जाता है ।

(३८) मन जल जैसा है । पाइप को जहाँ गाड़ोगे वहाँ गड़ जायेगा, यदि कीचड़ में गाड़ोगे तो गन्दा पानी निकलेगा और स्वच्छ जल में गाड़ोगे तो निर्मल जल निकलेगा । अतः मन के निर्मल अन्तःकरण रुपी सरोवर में लगाओ ताकि भक्ति की पावन वारिधारा प्रस्फुट हो ।

(३९) जब जब मन में अशान्ति का भाव आए तो समझो हम परमात्मा को भूल गए हैं । अतः सद्यः नाम स्मरण करना प्रारम्भ कर दो, शीघ्र शान्ति मिलेगी ।

(४०) एकान्त किसी स्थान विशेष का नाम नहीं है, एकान्त अपना स्वरुप है । बहुमुखी चित वृत्तियों का एक में लय होने का नाम ही एकान्त है । ऐसा

आन्तरिक एकांत श्री राम नाम उच्चारण करते रहने से स्वतः प्राप्त हो जाता है । नाम उच्चार करते समय ऐसी तन्मयता चाहिए कि तुम्हारी नस नस मे, रग रग मे ध्वनि जाग्रत हो जाए । यह जब तक नहीं होता तब तक जाग्रत रखने का अभ्यास ही अभ्यास निरन्तर चालू रखना चाहिए फिर सर्वत्र आनन्द ही आनन्द और एकान्त ही एकान्त की अनुभूति होगी ।

(४१) भविष्य का ज्ञान किसको है ? वर्तमान को ही सत्य मान कर ज्यादा से ज्यादा समय प्रभु भजन एवं सत्कर्म में लगाना चाहिए ।

In is never too late to mind. Forget the past, care not for future, try to turn the present to your best use.

आर्थत् स्मरण के लिए देर हुई ही नहीं, ऐसा समझो ? भूतकाल को भूल जाओ, भविष्य की चिन्ता छोड़ो, केवल वर्तमान का सदुपयोग हो जाय, इसका ख्याल रखो ।

(४२) मध्य बिन्दु के बिना वृत नहीं हो सकता और वृत में केन्द्र सूक्ष्म होने से दिखाई नहीं पड़ता । उसी तरह सृष्टि में सर्जनहार सूक्ष्म होने से तथा केन्द्र में रहने के कारण नहीं दिखाई पड़ता । वृत की परिधि छोटी करनी हो तो व्यास, त्रिज्या से होकर केन्द्र अथवा मध्य बिन्दु की ओर चलने से परिधि छोटी हो जाती है । इसी तरह संसार चक्र की परिधि छोटी करनी हो तो अंतर्मुख होकर ज्ञान-भक्ति रुपी व्यास - त्रिज्या द्वारा आत्मारुपी केन्द्र की ओर चलने लगो ? जैसे-जैसे त्रिज्या छोटी होती जायेगी, वैसे-वैसे परिधि (संसार चक्र) छोटी होती जायेगी ।....

आत्मा में विलीन होते ही संसार चक्र नष्ट हो जायेगा । "जानत तुम्हहिं तुम्हहि होई जाई ।"

(४३) बेटी जब शादी करने के लयाक हो जाती है तो उसके माता-पिता विवाह रचाकर योग्य पति के यहाँ भेज देते है । विवाह के लिए पहले से ही तैयारियाँ करनी पड़ती है । प्रत्यके जीव बेटी है । उसके पति परमेश्वंर

है । बेटी जब पिता का घर छोड़ कर पति गृह में जाती है तो उसे अपने पितृगृह के रीति-रिवाज छोड़कर पति के घर का रीति-रिवाज अपनाना पड़ता है । तब वह धीरे-धीरे पति की प्यारी बन जाती है । लौकिक नर की प्राप्ति में जब इतनी तैयारियां करनी पड़ती है तो क्या जगतपति करुणामय परमात्मा सहज में ही प्राप्त हो जायेंगे ? स्मरण, मनन, निदिध्यासन, चिन्तन, स्मरण, सदाचरण आदि पति परमेश्वर को अनुकूल बनाने की एवं प्राप्त करने की तैयारियाँ है ।

(४४) मनुष्य इच्छा का दास है, अगर परमात्मा का दास बन जाए तो उसका कल्याण हो जाएगा ।

(४५) जो सर्वत्र है वह स्मरण मात्र से मिलता है ।

(४६) जो मनुष्य भगवान को छोड़कर दूसरी बातों में फँसता ही रहता है वह अपने ही हाथों अपना गला काटता है ।

(४७) भोगों की प्राप्ति में प्रारब्ध एवं कर्मों का सम्बन्ध है; परंतु परमात्मा तत्व की प्राप्ति केवल अनन्य चाह से होती है ।

(४८) क्रोध अपने अवगुणों पर करना चाहिए । दूसरों के अवगुणों पर तो ध्यान न देना ही उचित है ।

(४९) किसीको किञ्चिमात्र भू दुःख न हो, यह भाव महान भजन है, विश्व रुपी भगवान की भक्ति है ।

(५०) सब ओर से विमुख होने पर साधक अपने ही में अपने प्रियतम भगवान को पा लेता है ।

(५१) परमार्थिक मार्ग में साधक को सांसारिक अनुकूलता तभी तक बाधक प्रतीत होती है, जब तक उसमें सांसारिक सुख की कुछ इच्छा या रुचि विद्यमान है ।

(५२) भगवान के साथ हम संसार भी चाहते है, यह हमारी सबसे बड़ी भूल है ।

(५३) शालिग्राम की मूर्ति को धोने से नहीं, मन को धोने से मोक्ष का, मुक्ति

का मार्ग खुलेगा ।

(५४) मंगलमय भगवान अपने ही अंश जीवन का कभी अमङ्गल नहीं करते ।

(५५) भगवान में लगन लगने का सबसे सुगम उपाय है - निरन्तर नाम जप करते हुए भगवान के चरणों में प्रणाम करके उनसे कहते रहना कि - "हे नाथ ! मेरी रक्षा करो जिससे मैं आपकी सेवा में लग जाऊँ।"

(५६) भगवान का विश्वास भगवान से भी बड़ा है; क्योंकि भगवान सदा सर्वत्र रहते हुए भी नहीं मिलते, वे विश्वास से मिल जाते हैं ।

(५७) अपनी कमाई में किसी के हक का एक कण भी न आ जाए - इस बात की पूरी सावधानी रखनी चाहिए । इस वेद वाक्य पर सदा ध्यान रहे **'मागृधः कस्यस्विद्धनम् ।'**

(५८) संसार समुद्र में जो केवल लेना चाहता है वह डूब जाता है और जो केवल देना ही देना चाहता है, वह तर जाता है ।

(५९) सिद्ध भक्त भगवान के पुत्र हैं, और साधक पौत्र । पुत्र से पौत्र अधिक प्यारा होता है ।

(६०) घड़ी की चाभी समाप्त होने पर फिर भरी जा सकती है । परन्तु श्वास यन्त्र की चाभी समाप्त होने पर फिर नहीं लग सकती ।

(६१) संसार में सुखी रहना है तो संसार की सेवा कर दो, संसार से कुछ भी आशा रखोंगे तो रोना पड़ेगा ।

(६२) विषय चिन्तन ही पतन है, भगवच्चिन्तन ही यथार्थ उत्थान है ।

(६३) यदि हम सचेत अवस्था में भगवान को याद करते रहेंगे हमारी अचेत अवस्था में प्रभु हमें याद करेंगे ।

(६४) अमृत का बीज, आत्म तत्व का सार, शुध्य रहस्य श्रीराम-नाम, नाम संकिर्तन साधन है तो बहुत सरल, पर इससे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म हो जाते हैं ।

(६५) साधन में तीन बातें आरम्भ से ही आ जानी चाहिए तभी उसकी साधना बढ़ती है और सफल होती है - श्रद्धा, तत्परता, संयतेन्द्रियता ।

(६६) श्वास जैसे मनुष्य स्वभाविक लेता है - खाते-पीते, सोते-जागते, चलते, उठते-बैठते यहाँ तक कि लड़ते-हँसते सब अवस्थाओं में श्वास स्वभाविक आता है। श्वास ही जीवन है, श्वास रुकने पर घबराहट और बेचैनी हो जाती है। इसी प्रकार भजन के होने में स्वाभाविकता हो और छूटने में बेचैनी हो, वही यथार्थ भजन है।

(६७) जिस प्रकार चित्र की व्याकुल स्थिति संसार की अत्यन्त प्रिय वस्तु के न प्राप्त होने पर होती है, वैसी ही स्थिति भगवान की प्राप्ति न होने पर हो जाय तो भगवान प्रकट हो जायेंगे।

(६८) जो जिह्वा सदा भगवान के नाम रटती रहती है, वही जिह्वा है।

(६९) मनुष्य जीवन की सफलता है - 'भगवान का अपना बन जाने में और भगवान को अपना बना लेने में।'

(७०) एक भजन 'किया जाता हैं' और एक भजन होता है। जो भजन 'होता' है, वही स्वाभाविक भजन है। श्वास लेने में कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता। इसी प्रकार जब भजन जीवन बन जाता है तो वह स्वाभाविक होता है और उसके छूटने पर व्याकुलता होती है।

(७१) श्रद्धा और विश्वास ही भक्ति के प्राण है। श्रद्धा और विश्वास के बिना क्या होगा ? कीर्तन में बैठकर यह समझना चाहिए कि यहाँ किर्तन में भगवान हमारे सामने बैठे हैं। नाम से ही भगवान की प्राप्ति होगी। नाम साक्षात् भगवान है ऐसा दृढ़ विश्वास होना चाहिये।

(७२) भोजन की शुद्धि के लिए आवश्यक है कि वह सत्यता और पवित्रता से उपार्जित की हुई वस्तु हो और वह वस्तु अन्नादि पदार्थ भी पवित्र हो, पवित्रता से ही भोजन बनाया जाय और पवित्र भाव से उसे भगवत्प्रसाद के रूप में खाया जाय। इसी को भोजन की पवित्रता कहते हैं।

(७३) रास्ते पर चलते समय पद-पद पर यज्ञ पुरुष मिलेगा, कलियुग में नाम-निष्ठा ही मुख्य उपाय है।

(७४) बारम्बार भगवान के स्मरण करने से भाव शुद्ध हो जाता है।

(७५) ऐसा विचार करना कि "यह कार्य करके फिर निश्चिन्त होकर भजन करेंगे" सरासर भूल है । जैसे तराजू में दस सेर मेढ़क तौलना कठिन है, क्योंकि जब तक दस मेढ़क पलड़े में रखोगे तब तक पाँच उसमें से कूद जायेंगे, इसी प्रकार माया के कार्य चाहो कि पूरे हो जायें, तो पूरा करना कठिन ही नहीं, असंभव है । लड़की का विवाह किया तो औरत बीमार हो गई, औरत ठीक हुई तो गाय खो गई, गाय मिली तो दीवार गिर गई, आदि-आदि एक न एक झंझट आगे से आगे लगा ही रहेगा । अतः भजन, सत्संग करना, कल पर मत छोड़ो, अभी से प्रारम्भ कर दो ।

(७६) ब्रह्मचर्य और राम - नाम की शक्ति हो तो इस संसार सागर से पार लगा जा सकता है ।

(७७) विषय सुख के लिए हाय-हाय करके हृदय मत जलाओ अभी से राम-राम जपने की आदत डालो, आज से श्रीराम का स्मरण करोंगे तो अन्तकाल में भी तुम्हें भगवान याद आयेंगे ।

(७८) राम राम है क्षुधार्त के लिए अन्न, पिपासित के लिए पानी और रोगी के लिए औषध, केवल राम नाम कहने की चेष्टा करो और नाद सुनो, बस तुम्हें सार तत्त्व की प्राप्ति शीघ्र ही जायेगी ।

(७९) मनुष्य प्रतिदिन मरण की दिशा में अग्रसर हो रहा है । उसे यह बोध नहीं कि मृत्यु को जीतकर अखण्ड आनंद प्राप्त करे । मृत्यु को जीतने का एकमात्र महामन्त्र है - राम-नाम । तुम अविराम राम-राम कहो ।

(८०) किर्तन के समय सांसारिक सुध-बुध न रहे तो विशेष आनन्द की प्राप्ति होती है।

(८१) प्रत्येक कार्य के प्रारम्भ और अन्त में भगवान का स्मरण सच्चे हृदय से करोगें, तो सफलता मिलेगी ।

(८२) परमात्मा श्रीराम मंगलमय एवं दयालु हैं, अतः उनका प्रत्येक विधान नितान्त मंगलमय है - यह जान विपत्ति में घबराओ मत ।

हरि के मन मंगल बसै मंगल ही सब होय ।
अपने मन की होन चहै, मंगल जावे खोय ॥
तेरे मन कछु और है, हरि के मन कछु और ।
हरि के मन की होन दे, मति मचावे शोर ॥

(८३) रामनवमी व्रत अवश्य करो । इस पुण्यतिथि को अहर्निश भगवन्नाम जप करो एवं भगवान के मनोमुग्धकारी बाल-लीला का ध्यान करो ।

(८४) जिसे संसार छोड़ देता है; उसे परमात्मा अपनाते है । वह दया में अशरण शरण हैं । जगत के विमुख होने पर घबराना नहीं चाहिए, बल्कि उससे मन हटाकर प्रभु के पावन नाम का सदैव स्मरण करना चाहिए ।

सुरदाजीने कहा है :-

अप बल, तप बल, बाहुबल चौथा है बल दाम ।
सूर किशोर कृपा ते सब-बल हारे को हरिनाम ॥

(८५) दिन रात शास्त्र चिंतन करने से कुछ हाथ नहीं आता । जीवन में जो आचरित हो जाए वही सार्थक है, बिना क्रिया एवं भावना के तोता-रटन्त से तो मुक्ति देवी कोसो दूर जा खड़ी होती है ।

कबीरदास ने कहा है -

कहता तो बहुत मिला, गहता मिला न कोय ।
सो कहता वहि जान दे, जो नहीं गहता होय ॥

(८६) देश तथा विश्व शान्ति की भावना से खूब भजन करो । आपस का राग-द्वेष भूलकर प्रेम-पूर्वक करुणामय प्रभु को पुकारो ।

(८७) श्री हनुमंतलालजी अतुलित बलधाम हैं, परम समर्थ है । यदि तुम भगवान राम का दर्शन करना चाहते हो तो महाबली की कृपा प्राप्त करो, क्योंकि -

राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिन पैसा रे ॥

"श्री राम जय राम जय जय राम"

प.पू. श्री प्रेमभिक्षुजी महाराज के हस्तलेख (Handwriting) का नमूना

Shree Ram

Shree Ram Jai Ram Jai Jai Ram

Jamanagar

Dear Mahtre, Balbhavani Harow,

To - everyone of Lady [illegible] Jaydayal Poddar [illegible] Shri Ram [illegible] in [illegible] Bhikshu

Hearty Blessings.

It is the only mercy of the Almighty ~~that~~ which acts as healing balm for care-worn and trouble stricken people in the world. In these days of moral degradation when devotees and saints are being seen falling easy prey to worldly allurements and temptation and their lust for hoarding mamon and money daily increases by leaps and bounds, then what to speak of people like us and ~~[illegible]~~ to pave the path of our life

journey. Many so to call
high souls have come
here but at bottom they
seem quite empty. Very
few people have got
firm faith and staunch
belief in their path or
Sadhana. The so called
Bhaktās say something else
and do something other. This
is why this world is now becoming
worse than a hale. So be
firm in determination and
solemn in faith. offer yourself
fully at the feet of Lord and be
happy in every and any circumstance.
Rai. S.K.

A rare entry in Guinness Book of World Records!

By D. D. Purohit

Jamnagar city in Saurashtra region of Gujarat is known for having country's only Ayurveda University. It is also known for its beautiful carving of idols. A cremation ground, surrounded by flower gardens has turned into a place of great tourists' attraction. Tourists or visitors to Jamnagar are baffled to know that a cremation ground could as well be among the sight seeing spots. The city however found a place in the Guinness Book of World Record for achieving a rare and unbelievable feat. And this could be described as a rare entry as well. The city boasts of having a temple, where round the clock chanting of Lord Rama's name is going on from 35 years without any interruption. Situated along a lake, there is a temple set up on August 1, 1964 by a professor turned sage Swami Prem Bhikshu Maharaj hailing from Bihar. It is known all over Gujarat as Shri Bala Hanuman Sankirtan Mandir. Hundreds of devotees during the [illegible] to join round the clock chanting of "Shri Ram Jai Ram, Jai Jai Ram". Maximum attendance is recorded at 5 a.m. everyday.

[illegible] Shri Bala Hanuman Sankirtan Mandir of Jamnagar popularly known as "Chhoti Kashi", the activity of round the clock chanting of Shri Ram Jai Ram, Jai Jai Ram has expanded to Dwarka, Porbandar, Rajkot, Junagadh as also in Prem Bhikshu Maharaj's native village in Bihar.

Figures indicate that the activity has completed 35 years, 12,783 days and 18 [illegible] Swami Prem Bhikshu Maharaj breathed his last on April [illegible] religious programme including a "Maha Yagya" [illegible] anniversary of the [illegible] Jamnagar Municipal Corporation on July [illegible], 1997 [illegible] Prem Bhikshu Marg. Those managing temple's affairs and they have accepted it as their life's mission to keep the flame lighted by late Swami burning and continue round the clock chanting of Lord Rama's name. Nobody asks for any donations from the visitors. Whatever is received is being utilised for humanitarian cause. People in Jamnagar say they were happy that a good activity became known the world over after finding a mention of Guinness Book of World Records.

Shri Balaji Hanuman Mandir

Shri Prem Bhikshuji Maharaj

प.पू. श्री प्रेमभिक्षुजी महाराज के हस्तलेख (Handwriting) का नमूना

"...... भगवान् सर्वव्यापक है जैसे दूध में, दही में मक्खन ओतप्रोत है; काष्ठ में अग्नि सर्वत्र व्याप्त है, तिल में तेल है, आकाश में वायु है, शरीर में प्राण है, समस्त जीवधारियों में आत्मा है; किन्तु बगैर साधन किये, मन्थन किये न दूध से, दही से मक्खन जुदा होकर प्रगट हो सकता है, और न काष्ठ से अग्नि ही प्रगट हो सकती है, न तिल से तेल निकल सकता है; ठीक उसी प्रकार बगैर साधन, बगैर विवेक-विचार-हृदय मंथन के सर्वत्र व्यापक आत्मा, परमात्मा का प्रत्यक्ष होना अशक्य ही नहीं बल्कि असंभव है और ज्यों-ज्यों हम विवेक-विचार द्वारा अपने अन्दर प्रवेश करते जाते हैं, त्यों-त्यों यह अशक्य और असंभव-सा कर्म भी शक्य और संभव बनता जाता है और इस प्रकार सतत् अभ्यास तथा मन्थन चालू रखने पर अेक अैसा समय आता है जबकि उसका साक्षात्कार भी हो ही जाता है; किन्तु आवश्यकता है अदम्य उद्योग की, अटूट श्रद्धा की, दृढ़ विश्वास की, सतत् प्रयास की। यही जीवन की कसौटी है, मानवता की पूंजी है और जीवन-जन्म की सफलता एवं सार्थकता है।"........

हितेच्छु
प्रेमभिक्षु

श्री राम जय राम जय जय राम.... श्री राम जय राम जय जय राम....

॥ श्री राम ॥

"... राम"

... कुछ भी प्रेम हो तो श्री प्रभुनाम का रटन-स्मरण करके स्वयं कृतार्थ होवें, सुखी बनें, औरों को सुखी बनावें अन्यथा मेरे साथ प्रेम या मैत्री का कोई अर्थ नहीं, सब व्यर्थ ही है कारण मैंने तो अपने जीवन जन्म के साफल्य का एक मात्र उपाय साधन श्री नाम महाराज का दृढ़ आश्रय ही माना है, मानता हूँ और जीवन पर्यंत मानता ही रहूँगा। इस कराल कलिकाल के प्रभाव से बचने का, इसके त्रास से छूटने का और संसार चक्र से - जन्म मरण के अनादि चक्र से भी छूटने का संतों तथा शास्त्रों ने भी यही एक मात्र अमोघ साधन निश्चय किया है। अत: श्रद्धा विश्वास पूर्वक नाम रटन करना-कराना ही चाहिए। इसी में अपना तथा जगत् का सच्चा हित, सच्चा कल्याण है विशेष प्रभु कृपा।

हितेच्छु

प्रेमभिक्षु

नामनिष्ठ संत
प. पू. श्री प्रेमभिक्षुजी महाराज
पत्र प्रसादी